अल्लाह तआला
असहाय को सहायता प्रदान करने वाला है

क़ुरआन एवं ह़दीस़ से प्रमाणित अल्लाह तआला के प्यारे व शुभ नाम

लेखकः

डॉक्टर अब्दुल्लाह बिन मुशब्बिब बिन मुसफ़िर अल-क़ह़त़ानी

अनुवादः

साबिर हुसैन मुह़म्मद मुजीबुर रह़मान

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

भूमिका

यह पुस्तक ...

अल्लाह तआला के संग आपकी वह कहानी है

जिसे अल्लाह के प्रत्येक शुभ नाम को जानने के

पश्चात आपकी भावनाएं व्यक्त करती हैं

यह पुस्तक समर्पित है

मेरे माता-पिता को ...

जिनकी दुआओं व प्रार्थनाओं ने आज मुझे इस योग्य बनाया है, वो दुआएं जो आप मेरे लिए अल्लाह तआला से माँगा करते थे, मैं आपके अनुग्रहों तथा एहसान का थोड़ा सा बदला चुकाने में भी असमर्थ हूँ ....

एवं हरेक उस हृदय के नाम जो अपने रब व प्रभु से भलि-भांति परिचित तथा उसके निकट है ....

मैं अपना यह प्रयत्न एवं परिश्रम आप सबके नाम करता हूँ .... और अल्लाह तआला से प्रार्थनारत हूँ कि इसे स्वीकार कर ले! ! ! ! !
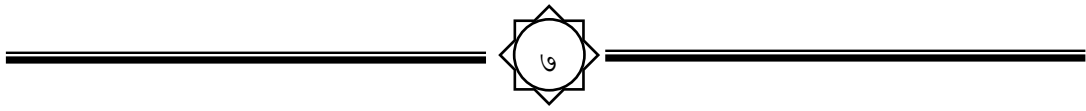
द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना

الحمد لله أولا وآخرا وظاهرا وباطنا، وصلى الله على نبينا محمد وسلم تسليما، أما بعد:

अल्लाह की कृपा एवं दया से थोड़े ही समय में इस पुस्तक के प्रथम संस्करण की 6000 प्रतियां समाप्त हो जाने के कारण इसके दूसरे संस्करण को पुनरावलोकन पश्चात कुछ संशोधन, वृद्धि एवं काट-छाँट के बाद पाठकगण के बीच इसे पुनः प्रस्तुत करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

अल्लाह तआला से यह आशा रखता हूँ कि यह पुस्तक पढ़ने में सुगम, अपने अध्यायों में पूर्ण तथा अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम हो।

ज्ञान के विस्तार एवं पुण्य कमाने की नीयत सेः मैं निम्नांकित शर्तों के साथ इस पुस्तक के प्रकाशण की अनुमति देता हूँ:

किसी प्रकार की वृद्धि अथवा काट-छाँट न की जाए।

पुस्तक की छपाई उत्तम कागज पर की जाए जो इसके योग्य हो।

निम्न मोबाइल नम्बर पर कॉल करके अथवा ईमेल पर संदेश भेज कर अनुमति ले लें, ताकि हमें संतुष्टि हो जाए कि पुस्तक में किसी प्रकार की वृद्धि अथवा काट-छाँट नहीं की गई है।

मोबाईल नम्बरः 00966564570117, ईमेलः ga.1440.ga@gmail.com

मैं धन्यवाद देता हूँ “दार इब्नुल जौज़ी” तथा “मकतबा अल-मुतनब्बी” दम्माम को, भूत काल में उनके द्वारा अंजाम दिए गए प्रयासों के लिए, और अल्लाह तआला से तौफ़ीक़ (अनुग्रह), हिदायत (मार्गदर्शन) तथा क़बूल (स्वीकार्य) की दुआ करता हूँ।

समस्त प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं जो सारे संसार का रब है।

लेखक

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्राक्कथन

الحمد لله، والصلاة والسلام على رسول الله، وعلى آله وصحبه، أما بعد:

ईमान में बढ़ोतरी का एक प्रमुख माध्यम यह है किः पाक व पवित्र अल्लाह तआला को उसके अस्मा (नाम), सिफ़ात (विशेषता) एवं अफ़आल (कर्म) के द्वारा जाना जाये, क्योंकि अल्लाह का प्रत्येक नाम उसका सामीप्य प्राप्त करने का एक द्वार हैः

﴿وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا﴾

अनुवादः (और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो)। सूरह आराफ़ः 180।

(इससे सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि) उस व्यक्ति की क्या फ़ज़ीलत (प्रधानता) होगी जो अल्लाह के उन नामों को कंठस्थ करे? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस है कि आपने फ़रमायाः "अल्लाह के एक कम सौ अर्थात निन्यानवे (99) नाम हैं, जो उनकी गणना करेगा वो जन्नत में प्रवेश पायेगा"। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)।

मैं अल्लाह तआला से दुआ किया करता था कि मुझे इन नामों की गणना एवं संग्रहण का सौभाग्य दे, चुनाँचे (1430) हिजरी में इन नामों से संबंधित मैंने संक्षिप्त पाठ की श्रृंखला आरंभ की, और मुझे भान हुआ कि श्रोताओं के अंदर अल्लाह तआला के अस्मा व सिफ़ात (नाम एवं विशेषता) जानने की अभिलाषा एवं ललक पायी जाता है।

मोमिन क्यों न इन नामों को जानने कि लिए लालायित रहे जब्कि हर नाम को जानने के पश्चात उसके अंदर अल्लाह का प्रेम बढ़ता है एवं उससे भेंट करने की प्रबल इच्छा जाग्रत होती है?!

मोमिन क्यों न इन नामों को जानने कि लिए लालायित रहे जब्कि वो जानता है कि ये अस्मा व सिफ़ातः प्रत्येक दुःखी, पीड़ित, ऋणी, क़ैदी (बंदी) तथा निस्तब्ध लोगों के लिए मुक्ति का कारण हैं?!

मोमिन क्यों न इन नामों को जानने का अभिलाषी रहे जब्कि वह जानता है कि ये अस्मा -ए- हुस्ना (शुभ व सुंदर नाम): संपन्नत, समृद्धि, ख़ुशहाली, उदारता, सौभाग्य एवं ख़ज़ानों की कुंजी हैं?! बल्कि जो व्यक्ति इन नामों से भलि-भांति परिचित हो जाए, सौभाग्य व कल्याण सदेव उसका मुक़द्दर बनी रहती है।

इन्हीं कारणवश मैंने अल्लाह तआला से यह विनती की कि मुझे एक ऐसी पुस्तक के लेखन की तौफ़ीक़ दे जो मेरे लिये एक सुंदर स्मृति चिह्न तथा ज्ञान का ऐसा स्रोत हो जिससे ज्ञान-पिपासु अपनी जिज्ञासा शांत करते रहें। अतः मैं अल्लाह तआला के पाक व पवित्र अस्मा व सिफ़ात से संबंधित केवल मवाद तथा सामग्री संग्रहित करने एवं उसे अपनी लेखन शैली में ढ़ालने में जुट गया, क्योंकि मैं अपनी सीमाएं जानता था कि मेरे अंदर पुस्तक रचने की योग्यता नहीं है क्योंकि मैं इस मैदान का न तो घुड़सवार हूँ एवं न ही प्यादा।

मैंने क्षमता भर दृष्टि में आने वाली सभी सामग्रियों का संयोजन कर लिया, तथा सामग्री संग्रहित करते समय मैंने सामर्थ्य भर इसका भरपूर प्रयास किया कि मेरे द्वारा संग्रहित सामग्री अस्मा व सिफ़ात के अध्याय में सलफ़ सालेहीन (नेक पूर्वजों) के अक़ीदा व आस्था के अनुकूल हो।

तत्पश्चात मैंने इन संग्रहित सामग्रियों को सुंदर, शोभनीय एवं मनभावन रूप में ढ़ालने का प्रयास किया कि जिसमें शब्दों एवं वाक्यों का तेज भी हो तथा भाषा का सौंदर्य भी जिससे झलके, मैंने इस पुस्तक में ऐसी भाषा शैली का प्रयोग करने की चेष्टा की है जो भाषाविद् एवं अवाम दोनों की कसौटी पर खड़ी उतरे, तथा क्लिष्ट भाषा शैली से बचने का प्रयास किया है।

ह़दीस़ों का उल्लेख करते समय मैंने इस बात का ध्यान रखा है कि केवल स़ह़ीह़ एवं ह़सन ह़दीस़ों का ही उल्लेख करूँ, अलबत्ता आस़ार[1] तथा सीरत का वर्णन करते समय मैंने इसका पूर्णरूपेण अनुसरण नहीं किया है।

मेरा प्रयास यह रहा है किः सहज ढ़ंग एवं सरल शब्दों में अपनी बात दूसरों तक पहूँचाई जाये तथा (पाठक के अंदर अपने रब को पहचानने की) ललक उत्पन्न की जाये, इसके अतिरिक्त सरल भाषा शैली का प्रयोग करते हुए कम से कम समय में पाठक के मन-मस्तिष्क तक पहूँचने का मार्ग प्रशस्त किया जाये।

---

[1] सहाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम एवं ताबेईन रहिमहुमुल्लाह तथा उनके बाद के धर्मशास्त्रियों के व्क्तव्य एवं कथन को "आस़ार" कहा जाता है।

मुझे आशा है कि इस पुस्तक के द्वारा (पाठक को) सआदत व सौभाग्य की प्राप्ति होगी, दुःख तथा विपदा के बादल छंट जायेंगे, हार्दिक शांति मिलेगी, ईमान ठोस होगा, ज्ञान में वृद्धि होगी, हृदय (ईमान से) भर उठेगा एवं सोच-विचार करने की क्षमता का विकास होगा।

इस पूरे कार्य का सेहरा केवल महान व सर्वशक्तिमान (अल्लाह) को जाता है, तत्पश्चात उन विद्वानों को जिनकी पुस्तकों से मैंने ज्ञान के मोती चुने हैं, यदि मैं अपने इस प्रयास में सही पथ का पथिक रहा तो यह केवल अल्लाह तबारक व तआला की तौफ़ीक़ का परिणाम है, जिस पर हम उसको धन्यवाद देते हैं, किंतु यदि इसमें किसी प्रकार की कोई त्रुटि रह गई है तो वह मेरी तथा शैतान की ओर से है, अलबत्ता मेरी नीयत केवल भलाई की रही है, मैं अल्लाह तआला से तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूँ तथा उससे क्षमा-याचना करता हूँ।

अंतिम बात यह कि, यह एक अल्प ज्ञानी तथा दुर्बल व्यक्ति की ओर से किया जाने वाला मानवी प्रयास है, जिसके पूर्ण होने पर मैं अल्लाह की प्रशंसा व ह़म्द बयान करता हूँ, अल्लाह के समीप इसके स्वीकार्य होने को ले कर आशान्वित तो हूँ, परंतु इसके अस्वीकार्य हो जाने को ले कर आशंकित भी हूँ, इसके अतिरिक्त मैं अल्लाह तआला को इस बात पर गवाह बनाता हूँ कि मैं अपने पाक व पवित्र रब (पालनहार) से प्रेम करता हूँ तथा उससे अच्छा गुमान रखता हूँ।

मैं अल्लाह से प्रार्थनारत हूँ कि मुझे तथा जिन उलेमा की पुस्तकों से मैंने लाभ उठाया है, और जिन्होंने इस पुस्तक के पुनरवलोकन, शुद्धिकरण, तरतीब, प्रबंधन, क्रमबद्ध करने तथा लेखन एवं प्रकाशन में भाग लिया, या इसके प्रति अपने विचार साझा किये, उन सभी को प्रचुर मात्रा में पुण्य का भागीदार बनाये।

इसके अतिरिक्त मैं अल्लाह तआला से यह भी दुआ करता हूँ कि इस पुस्तक को ह़क़ एवं सत्य की प्रतिकृति बनाये, इसे ख़ालिस़, शुद्ध एवं निश्छल रूप से अपने लिये स्वीकार योग्य बना दे, इसे अपने प्रेम एवं प्रसन्नता को मुझ से निकट करने का माध्यम बना दे, इसे मेरी, मेरे माता-पिता, मेरे शिक्षक गण, मेरे परिवार वाले तथा समस्त मुसलमानों के लिये मग़फ़िरत व क्षमा का कारण बना दे, निःसंदेह वह अत्यधिक सुनने वाला तथा स्वीकार करने वाला है।

आपका भाईः

अब्दुल्लाह बिन मुश्ब्बिब अल-क़ह़त़ानी

qa.1440.qa@gmail.com

मेरे अल्लाह ...

कितना महान स्थान तथा कितना कठिन मामला है!

शब्द जड़ीभूत, हृदय निस्तब्ध, ज़ुबान संज्ञाहीन, वाक्य निस्पंद तथा बुद्धि स्तब्ध है और तेरा दास तेरे दरबार में खड़ा तेरी प्रशंसा व तेरी ह़म्द तथा तेरे समक्ष अपने दिल की तमन्ना पेश करना चाहता है, तू इससे भलि-भांति परिचित है।

ومَا بلَغ المُهدُونَ نَحوَكَ مِدحَةً   وإن أَطنَبُوا، إِن الَّذِي فِيكَ أَعظَمُ

अनुवादः तेरी प्रशंसा करने वाले तेरे गुणों का जितना भी बखान कर लें, वह तेरी प्रशंसा का हक नहीं अदा कर सकते, निस्संदे तेरी ज़ात (अस्तित्व, व्यक्तित्व) समस्त प्रशंसाओं से बढ़ कर है।

हे मेरे पालनहार!

हम जानते हैं कि हमारा तेरी प्रशंसा करना, तेरी महानता का बखान करना, तेरा स्मरण करते जाना, ये सभी तेरी ही कृपा से हैं, तू ने ही इस ओर हमारा मार्गदर्शन किया तथा हमें इसकी योग्यता प्रदान की ...

हम भलि-भांति परिचित हैं -हे हमारे पालक- कि तेरी ज़ात समस्त प्रशंसा करने वालों की प्रशंसा से उच्च व महान है।

हे अल्लाह! तू ने मेरे ऊपर तथा इन शब्दों को पढ़ने वालों के ऊपर जो इनाम व अनुग्रह किया है, उसे स्वीकार कर ले तथा हमारी त्रुटियों को क्षमा कर दे।

إلى الله أُهدِي مِدحَتِي وثَنَائِيَا   وقَولا رَضِيًّا لا يَنِي الدَّهرَ بَاقِيا

अनुवादः मैं अल्लाह की शुश्रूषा व सेवा में अपनी ओर से उसकी प्रशंसा व बड़ाई तथा उसके प्रिय एवं मनभावन बातों को उपहार स्वरूप भेंट करता हूँ, जो संसार की समाप्ती तक शेष रहे।

(1, 2)

(अल्लाह, अल-इलाह जल्ल जलालुहु)

हम एक ऐसे नाम के द्वारा आरंभ कर रहे हैं जो इस सृष्टि में सबसे महान तथा अत्यंत मधुर नाम है, जो नामों में सर्वाधिक प्यारा ... शब्दों में सुंदरतम ... जिससे जिव्हा शीतल हो जाये ... आत्मा को शांति मिले ... तथा जो प्राण के निकट एवं हार्दिक रूप से सबसे प्यारा है।

निश्चित रूप से इससे अभिप्राय उच्च एवं बरकत वाली ज़ात का महान नाम (अल्लाह) है: ﴿ هَلْ تَعْلَمُ لَهُۥ سَمِيًّا ﴾ अनुवादः (क्या आप उसके समक्ष किसी (और नाम) को जानते हैं?)। सूरह मर्यमः 65।

ये अल्लाह तआला का वह नाम है जिसमें उसकी पाक व पवित्र ज़ात, समस्त संसार वासियों से अलग एवं भिन्न है, यह केवल उसी का नाम है, उसके सिवा किसी और से इस नाम का कोई संबंध नहीं, न इस नाम के द्वारा किसी और को पुकारा जा सकता है और न ही उसकी सृष्टि तथा रचना में से कोई इसका दावा कर सकता है, अल्लाह तआला ने जाहिलीय्यत युग वालों के दिलों तथा ज़ुबानों पर इस नाम से स्वयं का नामकरण करने की पाबंदी लगा दी थी।

निस्संदेह अल्लाह तआला की ज़ात तेज, महानता, सुंदरता, प्रताप, उच्च, एवं हैबत वाली है।

مَهمَا رَسَمنَا فِي جَلالِكَ أَحرُفاً قُدسِيَّةً تَشدُو بِهَا الأَروَاحُ

فَلَأَنتَ أَعظَمُ والَمعَانِي كُلُّها يا رَ ب عِندَ جَلالِكَ تَندَاحُ

अनुवादः तेरी शान -ए- किब्रियाई (बड़ाई, महिमा) में हम जितने भी पाक व पवित्र वाक्य लिख लें कि जिन से आत्मा प्रसन्न हो जाये। तेरी महानता इस सबसे बढ़ कर है, हे मेरे पालनहार! तेरे जलाल व तेज के समक्ष सभी अर्थ फीके हैं।

अल्लाह तबारक व तआला के नाम की बरकत का ही कमाल है कि यदि उसे थोड़ी सी चीज़ पर पढ़ा जाता है तो वह उसे अधिक कर देता है, उसका ज़िक्र व स्मरण जब भय के समय किया जाता है तो वह उसे साहस प्रदान करता है, जब विपदा के समय उसका स्मरण किया जाता है तो वह उस विपदा को दूर कर देता है, जब व्याकुलता एवं दुःख के समय उस का स्मरण किया जाता है वह उस दुःख को हर लेता है, जब अभाव एवं तंगी के समय उसे

याद किया जाता है तो वह उस अभाव को प्राचुर्य में परिवर्तित कर देता है, जब कोई दुर्बल उसे पुकारता है तो वह उसे बलशाली बना देता है, जब कोई ज़लील व असम्मानीय उसकी सहायता चाहता है तो वह उसे सम्माननीय तथा आदर के योग्य बना देता है, कोई निर्धन जब उससे गुहार लगाता है तो वह उसे धनवान बना देता है, और कोई पराजित जब उसके समक्ष अपनी बिपता रखता है तो वह उसे विजयी बना देता है।

यही वह नाम है जिसके द्वारा विपदा, संकट एवं आपदा दूर की जाती है, बरकत माँगी जाती है, दुआ एवं प्रार्थना स्वीकार की जाती है, नेकी प्राप्त होती है, बुराईयों से छुटाकार मिलता है तथा फिसलन माफ होती है ... ज्ञात हुआ कि अल्लाह तआला की जलालत -ए-शान (महिमा) से बढ़ कर कुछ भी नहीं !

अल्लाह तबारक व तआला के शुभ नाम (अल्लाह) का मूल रूप "इलाह" है, जोकि माबूद (पूज्य, उपास्य) के अर्थ में है, पाक व पवित्र अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ لَا تَغۡلُواْ فِي دِينِكُمۡ وَلَا تَقُولُواْ عَلَى ٱللَّهِ إِلَّا ٱلۡحَقَّۚ إِنَّمَا ٱلۡمَسِيحُ عِيسَى ٱبۡنُ مَرۡيَمَ رَسُولُ ٱللَّهِ وَكَلِمَتُهُۥٓ أَلۡقَىٰهَآ إِلَىٰ مَرۡيَمَ وَرُوحٞ مِّنۡهُۖ فَـَٔامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦۖ وَلَا تَقُولُواْ ثَلَٰثَةٌۚ ٱنتَهُواْ خَيۡرٗا لَّكُمۡۚ إِنَّمَا ٱللَّهُ إِلَٰهٞ وَٰحِدٞۖ سُبۡحَٰنَهُۥٓ أَن يَكُونَ لَهُۥ وَلَدٞۘ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ وَكِيلٗا ١٧١﴾

अनुवादः (हे अहल -ए- किताब (ईसाइयों!) अपने धर्म में अतिश्योक्ति से काम न लो, और अल्लाह पर केवल सत्य ही बोलो, निःसंदेह मसीह़ मर्यम का पुत्र केवल अल्लाह के रसूल और उसके शब्द हैं, जिसे मर्यम की ओर डाल दिया, तथा उसकी ओर से एक आत्मा हैं, अतः अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और यह न कहो कि (अल्लाह) तीन हैं, इस से रुक जाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, इसके सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है, वह इस से पाक व पवित्र है कि उस का कोई पुत्र हो, आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है, और अल्लाह काम बनाने के लिये काफी है)। सूरह निसाः 171।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं किः "अल्लाह तआला अपनी समस्त मख़लूक़ (सृष्टि, रचना) पर इबादत व पूजा का अधिकार रखने वाला है"।

अल्लाह तबारक व तआला वह सम्माननीय, मोह़तरम तथा प्रियतम है जिसके लिये दिल बेताब रहते हैं, उसके स्मरण एवं सामीप्य से चित्त को प्रसन्नता मिलती है तथा वो उस के लिये लालायित रहते हैं:

﴿وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ ٱللَّهِ ۖ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ ۗ﴾

अनुवादः (कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका साझी बनाते हैं और उनसे, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं, तथा जो ईमान वाले हैं वो अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं)। सूरह बक़रहः 165।

अल्लाह तआला से ही हर प्रकार की आपदा एवं संकट के समय सहायता माँगी जाती हैः

﴿وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ ٱللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْـَٔرُونَ ﴿٥٣﴾﴾

अनुवादः (तुम्हें जो भी सुख-सुविधा प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है, फिर जब तुम्हें दुःख पहुँचता है तो उसी को पुकारते हो)। सूरह नह़्लः 53।

अल्लाह वह है कि जिसकी वास्तविकता को समझने में बुद्धि असमर्थ एवं उसके अस्तित्व का मानसिक भान करने में अक्षम है, मानव बुद्धि उसका अंदाजा नहीं लगा सकती, वह बोधगम्यता से परे है, सृष्टि अपने ज्ञान के आधार पर उस की सही परिकल्पना नहीं कर सकतीः ﴿وَلَا يُحِيطُونَ بِهِۦ عِلْمًا﴾ अनुवादः (और वे उसका पूरा ज्ञान नहीं रखते)। सूरह त़ाहाः 110।

अल्लाह तबारक व तआला वह है जिसे (मानव) हृदय प्रेम, विनम्रता, भय, आशा, महानता, सम्मान तथा आज्ञापालन के भाव से ओत-प्रोत हो कर अपना उपास्य एवं पालनहार मानता है।

वही सच्चा एवं सत्य पूज्य है, उसके अतिरिक्त आकाश एवं धरा में जिसकी भी पूजा की जाती है वह सभी बातिल एवं असत्य पूज्य हैं।

सर्शक्तिमान अल्लाह वह है जो उलूहियत (पूजे जाने) की समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण है, उलूहियत की विशेषता से तात्पर्य यह है किः कमाल व किब्रियाई (पूर्णता एवं

सर्वोच्चता) एवं जमाल व अज़मत (सुंदरता एवं महानता) की विशेषताओं से विशेषित है, एवं इसके विपरीत दुर्गुणों से अल्लाह तआला पाक व बरी है।

- ❒ मानव हृदय उसे अपने पालनहार मानता है तथा उससे मिलने को लालायित रहता है ...

यही कारण है कि बंदा जब (अल्लाह) के नाम के अर्थों को भलि-भांति जान लेता है तो उसका हृदय अपने रब से जुड़ जाता है, फिर वह ऐसे प्रेम, रुचि एवं आनंद के साथ उसके स्मरण में लीन हो जाता है कि उससे बढ़ कर उत्तम एवं आकर्षक वस्तु उसकी दृष्टि में और कोई नहीं होती। यही सर्वोत्तम महान चीज़ है जिसके द्वारा पूजा करने वाले उसकी पूजा करते तथा सामीप्य प्राप्त करने की खोज में रहने वाले उसका सामीप्य प्राप्त करते हैं: ﴿يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ﴾ अनुवादः (वह -अल्लाह- उनसे प्रेम करेगा और वो उससे प्रेम करेंगे)। सूरह माइदाः 54।

यह कैफ़ियत (मनोदशा) उतनी ही पवित्र एवं उत्तम होगी जितनी अल्लाह के असमा व सिफ़ात (नाम एवं विशेषता) के विषय में बंदे का ज्ञान पाक व पवित्र होगा।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: “इस लोक में भी एक स्वर्ग है, जो इस लोक के स्वर्ग में प्रवेश नहीं पा सका वह परलोक वाले स्वर्ग में भी प्रवेश नहीं पा सकता”।

किसी आरिफ़ बिल्लाह (अल्लाह को पहचानने वाले व्यक्ति, ब्रह्मज्ञानी) का कथन है कि: “कभी-कभी दिल की ऐसी सुखद दशा होती है जिसके विषय में मन ही मन मैं कहता हूँ: यदि जन्नत वाले (स्वर्गवासी) भी ऐसी सुखद स्थिति में होंगे तो उनका जीवन आनंदमय बीतेगा”।

इब्ने उयैना रहिमहुल्लाह कहते हैं: “अल्लाह ने बंदों पर इससे उत्तम कोई इनाम नहीं किया कि उन्हें “ला इलाहा इल्लल्लाह” की पहचान कराई, आप कहते हैं किः उनके लिये पारलौकिक जीवन के लिये “ला इलाहा इल्लल्लाह” की वही महत्ता होती है जो महत्ता उनकी लौकिक जीवन के लिये जल की होती है”।

मोमिन इस बात को भलि-भांति जानता है कि यह स्थिति बंदे को अपनी क्षमता से प्राप्त नहीं होती, अपितु अल्लाह ही है जो अपने बंदे से प्रेम रखता है तथा अपनी मुहब्बत उसके दिल में डाल देता है, फिर बंदा जब अल्लाह की तौफ़ीक़ (अनुग्रह, दैवकृपा) से अपने रब से

प्रेम करने लगता है तो अल्लाह तआला उसे एक दूसरे प्रेम (आख़िरत से प्रेम) से नवाज़ता है, और यही है निश्छल तथा निःकपट अनुग्रह एवं इनाम, क्योंकि अल्लाह ही सबब और मुसबब्ब (कारण एवं उस कारण को रचने वाली परिस्थिति) दोनों को रचता है।

❑ इस्म -ए- आज़म (महानतम नाम):

क़ुर्तुबी ने उल्लेख किया है कि कुछ उलेमा के निकट "अल्लाह" नाम ही इस्म -ए- आज़म है, जिसके द्वारा यदि दुआ की जाये तो स्वीकार की जाती है और माँगा जाये तो दिया जाता है।

नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक व्यक्ति को यह कहते हुये सुनाः

اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنِّي أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، الْأَحَدُ الصَّمَدُ، الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ.

"अर्थातः हे अल्लाह! मैं तुझसे माँगता हूँ इस वसीले (माध्यम) से किः मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, तू अकेला एवं ऐसा बेनियाज़ (निःस्पृह) है जिसने न तो किसी को जन्म दिया है और न ही वह जन्म दिया गया है, और न कोई उसके समान व समकक्ष है, यह सुन कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः क़सम है उस रब की जिसके हाथ में मेरी जान है! इस व्यक्ति ने अल्लाह से उसके इस्म -ए- आज़म के वसीले से माँगा है कि जब भी उससे यह नाम ले कर दुआ की जाती है तो वह स्वीकार कर लेता है, और जब भी इसके द्वारा कोई चीज़ माँगी जाती है तो वह प्रदान करता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे "सुनन" वाले एवं इमाम अह़मद ने अपनी "मुसनद" में रिवायत किया है)।

यही एक नाम है जो उन समस्त ह़दीस़ों में वर्णित हुआ है जिनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के इस्म -ए- आज़म की सूचना दी है।

प्रायः सभी "मास़ूर अज़्कार (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित दुआएं)" इसी नाम से सम्बद्ध हैं, चुनाँचे "ला इलाहा इल्लल्लाह", "अल्लाहु अकबर", "अल्ह़म्दुलिल्लाह", "सुब्ह़ानल्लाह", "लाह़ौल वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह", "ह़स्बियल्लाह", "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" तथा "बिस्मिल्लाह" एवं इन जैसे अन्य अज़्कार (स्मरण, स्तुति, जाप) इसी नाम से सम्बद्ध हैं, कोई इससे अलग नहीं है।

यह नाम अल्लाह के अस्मा -ए- हुस्ना की बुनियाद एवं मूल है, चुनाँचे अस्मा -ए- हुस्ना (अच्छे व प्यारे नाम) में से किसी इस्म (नाम) की ओर इस नाम को मंसूब नहीं किया जाता, बल्कि सभी अस्मा -ए- हुस्ना इसी इस्म -ए- अज़ीम (महानतम नाम) की ओर मंसूब होते हैं, इसी कारणवश यह नहीं कहा जाता किः अल्लाह, रहमान अथवा रहीम के नामों में से एक नाम है, अपितु यों कहा जाता है किः रहमान एवं रहीम, अल्लाह के नामों में से हैं:

﴿وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ﴾

अनुवादः (अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं नामों के द्वारा पुकारो)। सूरह आराफ़ः 180।

अल्लाह जल्ला जलालुहु को जिस शब्द के द्वारा सर्वाधिक पुकारा जाता है, वह हैः (अल्लाहुम्मा, अर्थातः हे अल्लाह), रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब से (अल्लाहुम्मा) कह कर अत्यधिक दुआएं किया करते थे।

हसन बस़री रहिमहुल्लाह कहते हैं: "अल्लाहुम्माः सभी दुआओं का मजमूआ एवं संग्रह है, यदि दुआ करने वाला यह कहे किः اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ (हे अल्लाह! मैं तुझ से माँगता हूँ), तो मानो उसने यह कहा किः मैं उस अल्लाह से जिसके लिये समस्त सुदंर नाम तथा उच्च गुण हैं, उसके अस्मा व सिफ़ात के द्वारा प्रार्थना करता हूँ"।

बरकत एवं भलाई पाने के लिये सभी क्रियाओं का आरंभ इसी नाम के द्वारा किया जाता है।

इसके अतिरिक्त क़ुरआन -ए- करीम की सर्वप्रथम आयत में आने वाला सबसे पहला नाम भी यही हैः ﴿بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ١﴾ (बिस्मिल्लाहिरहमानिर्रहीम)

अनुवादः (अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपाशील तथा बड़ा दयावान है)।

अथवा यह आयतः ﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٢﴾

अनुवादः (सभी प्रकार की प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए हैं जो सारे संसार का रब (पालनहार) है)। सूरह फ़ातिहाः 2।

इसी प्रकार से सूरह नास में अवतरित होने वाला सबसे अंतिम नाम भी यही हैः

﴿إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ۝٣﴾

अनुवादः (जो सारे इंसानों का पूज्य है)। सूरह नासः 3।

वह शहादत (गवाही) जो कुफ्र से निकाल कर इस्लाम में दाख़िल कर देती है, उसमें केवल यही नाम आया हैः أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ (अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह), इस नाम के बिना शहादत अर्थात तौह़ीद की गवाही दुरुस्त नहीं होती।

इस महान नाम की एक महानता यह भी है किः अंतिम युग में जब अल्लाह तआला सभी मोमिनों की रूह़ क़ब्ज़ कर (प्राण हर) लेगा तो इस नाम को भी इस धरती से उठा लेगा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान हैः ‘‘महाप्रलय उस समय तक नहीं आयेगा जब तक इस धरा पर कोई अल्लाह अल्लाह कहता होगा’’। (इस ह़दीस़ को मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

यही वह नाम है जो क़ुरआन -ए- करीम में सर्वाधिक बार प्रयोग हुआ है, चुनाँचे 2200 से अधिक स्थानों पर इस नाम का उल्लेख हुआ है।

अल्लाह तआला के फ़रमानः ﴿قُلِ ٱدْعُواْ ٱللَّهَ أَوِ ٱدْعُواْ ٱلرَّحْمَٰنَ﴾ अनुवादः (आप कह दीजिये कि अल्लाह को अल्लाह कह कर पुकारो अथवा रह़मान कह कर)। सूरह इस्राः 110। के विषय में कुछ उलेमा का कहना है किः ‘‘इन दो नामों का विशेष रूप से उल्लेख करना इन दोनों नामों की विशेषता को बतलाता है, इसके अतिरिक्त ‘‘अल्लाह’’ नाम को ‘‘रह़मान’’ नाम पर वरीयता देने का कारण यह है किः अल्लाह का स्मरण करने में वह ‘‘रह़मान’’ से अधिक उच्च व महान है’’।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आपने फ़रमायाः ‘‘तुम्हारे नामों में से अल्लाह के निकट सर्वाधिक प्रिय नामः अब्दुल्लाह एवं अब्दुर्रह़मान हैं’’।

❒ तुम अल्लाह के साथ हो जाओ अल्लाह तुम्हारे साथ हो जायेगा!

बंदा यदि अपनी पसंद एवं स्वत्व से अल्लाह की ओर आकर्षित नहीं होता तो समय का पहिया विपरीत दिशा में घूम जाने पर अवश्य ही अल्लाह की ओर आकर्षित होता है।

قِف بِالخُضُوعِ ونادِ يا الله   إِنَّ الكَرِيمَ يُجِيبُ مَن نَادَاه

وإِذا بُلِيتَ بِغُربَةٍ أو كُربَةٍ   فادعُ الإِلَهَ ونادِ يا الله

अनुवादः (अल्लाह के दरबार में) विनम्रता एवं श्रद्धा के साथ खड़े हो जाओ और या अल्लाह की पुकार लगाओ, निस्संदेह करीम (उदार) अल्लाह अपने पुकारने वाले की सुनता तथा उसे देता है। जब अजनबीपन अथवा किसी संकट में पड़ जाओ तो सच्चे पूज्य को पुकारो एवं “या अल्लाह” की पुकार लगाओ।

जब दुःख एवं गम अपना डेरा डाल दे, हताशा एवं निराशा का अंधकार छा जाये, तक्लीफ़ बढ़ जाये, मामला संगीन हो जाये, रास्ते तंग पड़ जायें एवं युक्तियां असफल हो जायें तो पुकारने वालाः या अल्लाह! की पुकार लगाता है।

जब रोगी का रोग बढ़ जाता एवं वैध निरुपाय हो जाता है तो वह या अल्लाह! की सदा लगाता है, जब समुद्र की कालिमा में कश्ती बेकाबू हो जाती है, पवन जब उसे अपने साथ दाएं-बाएं हिलाने डुलाने लगता है तो पुकारने वालाः या अल्लाह! की पुकार लगाता है। धरती जब सुखाड़ ग्रस्त हो जाती है, पौधे जब कुम्हला जाते हैं, थन शुष्क हो जाते हैं तो पुकारने वालाः या अल्लाह! की पुकार लगाता है।

निःसंदेह वह अल्लाह ही हैः जो विपदा के समय आश्रय देता है, डर एवं भय के समय प्रेम लुटाता है एवं धनाभाव के समय सहायता करता है।

अल्लाह की मशीअत एवं चाहत के बिना कोई किसी को हानि नहीं पहूँचा सकता एवं अल्लाह की मशीअत एवं इच्छा के बिना कोई किसी को लाभ नहीं पहूँचा सकता, अतः अपना दिल केवल अल्लाह से ही जोड़े रखें!

अल्लाह की रस्सी के सिवा सभी रस्सियां टूट जाती हैं और उसके द्वार के सिवा सभी द्वार बंद हो जाते हैं: ﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلۡمُضۡطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكۡشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾ अनुवादः (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब वह उसे पुकारे?!, और दूर करता है दुःख को)। सूरह नम्लः 62।

नसफ़ी रहिमहुल्लाह कहते हैं: “सुयूती रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः जो अल्लाह से बेनियाज़ी तलब करता है, वह मोहताज नहीं होता, जो अल्लाह से सम्मान मांगता है वह कभी अपमानित नहीं होता। हुसैन रहिमहुल्लाह कहते हैं किः बंदा जितना अल्लाह के समक्ष अपनी असहायता एवं निराश्रय को प्रकट करता है, उतना ही अल्लाह के द्वारा वह बेनियाज़ होता है”।

يا صَاحِبَ الهَم إن الهمَّ مُنفَرِجُ   أبشِر بِخَيرٍ فإنَّ الفارِجَ الله

اليأسُ يَقطَعُ أحياناً بِصاحِبِهِ		لاتيأَسَنَّ فإن الكافِيَ الله
اللهُ يُحدِثُ بَعدَ العُسرِ مَيسَرَة		لاتَجزَعَنَّ فإنَّ القَاسِمَ الله
إذا بُلِيتَ فَثِق بِاللهِ وارضَ بِهِ		إنَّ الَّذِي يَكشِفُ البَلوَى هُو الله
واللهِ ما لَكَ غيرُ اللهِ مِن أَحَدٍ		فَحَسبُكَ اللهُ فِي كُل لَكَ الله

अनुवादः हे दुखी मानव! निःसंदेह शीघ्र ही दुःख दूर होगा, भलाई की शुभ-सूचना स्वीकार करो कि दुःख दूर करने वाला अल्लाह है। निराशा कभी-कभी मानव को तोड़ कर रख देती है, अतः कदापि निराश न हो क्योंकि (दुःख दूर करने के लिये) अल्लाह काफी है। अल्लाह तआला परेशानी के पश्चात आसानी पैदा करता है, बिल्कुल न घबरा कि (परेशानी एवं आसानी) को बाँटने वाला अल्लाह है। जब कोई विपदा घेर ले तो अल्लाह पर भरोसा रख एवं उससे राज़ी रह, क्योंकि विपदा को दूर करने वाला अल्लाह ही है। अल्लाह की क़सम अल्लाह के सिवा कोई तेरे काम नहीं आ सकता, प्रत्येक आवश्यकता एवं दुःख में अल्लाह ही तेरे लिये काफी है।

(3)

(अल- रब्ब जल्ल जलालुहु)

❒ रब के द्वार पर दस्तक ...

हे पालनहार! हम तुझ से तेरे सम्मान एवं महानता तथा अपनी हीनता एवं दुर्बलता का वास्ता देते हुए, तेरे सर्वशक्तिमान होने तथा अपनी निर्बलता का रोना रो कर, तेरी बेनियाज़ी जब्कि तेरे समक्ष अपनी असहायता को स्वीकार करते हुए तुझ से सवाल करते हैं, हमारे झूठे एवं पापी ललाट तेरे द्वार पर झुके हुये हैं, हम तेरे सामने नतमस्तक हैं, तेरे तो हमारे अतिरिक्त भी बहुतेरे बंदे हैं परंतु तेरे सिवा हमारा कोई (रब एवं पालनहार) नहीं, तेरे सिवा न मेरे लिये कोई आश्रय है और नही तुझ से बच कर तेरे सिवा कोई ठिकाना।

हम तुझ से दीनहीन एवं मिस्कीन व्यक्ति के समान माँगते हैं, तेरे समक्ष विनम्रता एवं श्रद्धा के साथ विनती करते हैं, और तुझे भयभीत एवं डरे हुये व्यक्ति के समान पुकारते हैं।

तुझ से उन लोगों की तरह सवाल करते हैं जिनकी गरदनें तेरे दर पर झुकी हुई हैं, उनकी नाकें तेरे लिये मिट्टी में पड़ी हुई हैं, उनके नयनों से तेरे भय के कारण अश्रुधाराएं बह रही हैं, उनके हृदय तेरे प्रताप एवं सम्मान के समक्ष बिल्कुल बिछे हुए हैं, कि हे सबसे बड़े दयालु, हे महान कृपालु! तू हमें तथा समस्त मुसलमानों को क्षमा कर दे, और हमें अपनी रह़मत व दया की छाया में श्रण दे।

بِمَن يَستَغِيثُ العَبدُ إلا بِرَ بهِ   وَمَن لِلفَتَى عِندَ الشَّدَائِدِ والكَربِ

وَمَن مالِكُ الدُّنيَا ومَالِكُ أَهلِهَا   وَمَن كَا شفُ البَلوَى عل الُبعدِ والقُرْبِ

وَمَن يَدفَعُ الغَمَّاءَ وَقتَ نُزُولِها   وَهَل ذاكَ إلَّا مِن فِعَالِكَ يا رَ ب

भावार्थः बंदा अपने परवरदिगार के सिवा किस से मदद की गुहार लगाये, कौन है जो दुःखों एवं संकटों के समय मानव के काम आता है। कौन है जो संसार एवं संसार वासियों का स्वामी है, कौन है जो दूरस्थ एवं समीप सभी परेशानियों को दूर करता है। कौन है जो दुःखों के पहाड़ टूटने पर शीघ्र ही उसे दूर कर देता है, हे मेरे पालनहार! यह सब केवल तेरी तदबीर एवं युक्ति से ही अंजाम पाते हैं।

निम्न में हम अल्लाह तआला के जिस सुंदर नाम के विषय में वर्णन करने जा रहे हैं वह हैः अल-रब्ब (रब, पालनहार) तबारक व तआलाः

अल्लाह रब्बुल आलमीन का फ़रमान हैः ﴿رَبُّ ٱلۡمَشۡرِقَيۡنِ وَرَبُّ ٱلۡمَغۡرِبَيۡنِ ١٧﴾

अनुवादः (वह दोनों सूर्योदय के स्थानों तथा दोनों सूर्यास्त के स्थानों का स्वामी है)। सूरह रहमानः 17।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ﴿سَلَٰمٞ قَوۡلٗا مِّن رَّبّٖ رَّحِيمٖ ٥٨﴾

अनुवादः (-उन को- सलाम कहा गया है अति दयावान रब -पालनहार- की ओर से)। सूरह यासीनः 58।

हमारा रब, ख़ालिक़ (रचयिता) एवं मालिक (स्वामी), मुदब्बिर (प्रबंध-कुशल) तथा कारसाज़ है, वह समस्त मालिकों का पालनहार एवं सभी बंदों का पूज्य है, समस्त देशों, रियासतों, राजाओं एवं सभी सेवकों का स्वामी है, वही बंदों के लिए लाभप्रद वस्तुओं का प्रबंध कर्ता एवं उनके मामलों को दुरुस्त रखने वाला है, वही लोक एवं परलोक की व्यवस्था करने वाला है।

❒ बंदों पर उसकी रुबूबियत दो प्रकार की हैः

आम रुबूबियतः जो कि समस्त बंदों के लिए आम व व्यापक है, चाहे नेक (सुकर्मी) हो या बद (कुकर्मी), मोमिन हो या काफिर, आस्तिक हो या नास्तिक यहाँ तक कि निर्जीव वस्तुएं भी इसमें शामिल हैं।

ख़ास रुबूबियतः इससे अभिप्राय यह है किः अल्लाह तबारक व तआला अपने औलिया एवं चयनित बंदों की विशेष देख-रेख करता है, ईमान पर उनका पालन-पोषण करता है एवं उन्हें इसकी तौफ़ीक़ देता है, उनके हृदयों, आत्माओं एवं आचार की शुद्धि फ़रमाता है, तथा उन्हें अंधकार से निकाल कर प्रकाश की ओर लाता है।

संक्षिप्त में कहें तो इसका अर्थ हैः हर प्रकार की भलाई की तौफ़ीक़ एवं सामर्थ्य देना तथा हरेक प्रकार की बुराई से रक्षा करना।

❒ तेरे ही लिये हरेक प्रकार की प्रशंसाएं हैं ...

हमारे पाक व पवित्र रब ने अपनी प्रशंसा यों की है कि वह समस्त लोक का पालनहार हैः

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٢﴾

अनुवादः (समस्त प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह के लिये हैं जो सारे संसार का पालनहार है)। सूरह फ़ातिहाः 2।

उसने अपनी प्रशंसा यों भी की है कि वह अर्श (सिंहासन) का स्वामी हैः

﴿سُبۡحَٰنَ رَبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ رَبِّ ٱلۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُونَ ٨٢﴾

अनुवादः (पवित्र है आकाशों तथा धरती का पालनहार सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो वह कहते हैं)। सूरह ज़ुख़्रुफ़ः 82।

﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ ٱلۡعَرۡشِ ٱلۡعَظِيمِ ۩ ٢٦﴾

अनुवादः (अल्लाह जिस के अतिरिक्त कोई वंदनीय नहीं, जो अर्श -ए- अज़ीम (महा सिंहासन) का स्वामी है)। सूरहः नम्लः 26।

उसने अपनी प्रशंसा इस प्रकार से भी की है कि वह आकाश एवं धरा का पालनहार हैः

﴿سُبۡحَٰنَ رَبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ رَبِّ ٱلۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُونَ ٨٢﴾

अनुवादः (पवित्र है आकाशों तथा धरती का पालनहार सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो वह कहते हैं)। सूरह ज़ुख़्रुफ़ः 82।

इसी कारणवश समस्त प्राणी उस पाक एवं पवित्र रब की प्रशंसा में लीन हैं:

﴿ وَقِيلَ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾

अनुवादः (तथा कह दिया जायेगा कि सभी प्रकार की प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है)। सूरह ज़ुमरः 75।

चुनाँचे इस लोक में भी उसकी प्रशंसा की जाती है एवं परलोक में भी उसकी प्रशंसा की जायेगीः

﴿دَعۡوَىٰهُمۡ فِيهَا سُبۡحَٰنَكَ ٱللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمۡ فِيهَا سَلَٰمٞۚ وَءَاخِرُ دَعۡوَىٰهُمۡ أَنِ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ١٠﴾

अनुवादः (उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगीः हे अल्लाह! तू पवित्र है, और एक दूसरे को उस में उनका आशीर्वाद यह होगाः तुम पर सलामती (शांति) हो, और उनकी प्रार्थना का अंत यह होगाः सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है)। सूरह यूनुसः 10।

❒ ख़ज़ाने की चाभियाँ ...

चूँकि नबियों एवं सालेहीन (नेक लोगों, महात्माओं) को यह मालूम था कि यह नाम दुआ की कुंजी है, इस लिये उन्होंने अपनी दुआओं में इसी नाम के द्वारा अल्लाह के समक्ष विनती एवं प्रार्थना रखी।

नूह अलैहिस्सलाम ने इस नाम से दुआ करते हुए कहाः

﴿رَّبِّ ٱغۡفِرۡ لِي وَلِوَٰلِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيۡتِيَ مُؤۡمِنٗا وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِۖ﴾

अनुवादः (मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझ को तथा मेरे माता-पिता को और उसे जो प्रवेश करे मेरे घर में ईमान ला कर, तथा ईमान वालों एवं ईमान वालियों को)। सूरह नूहः 28।

इब्राहीम एवं इस्माईल अलैहिमस्सलाम ने भी इस नाम से अपने रब को पुकाराः

﴿ رَبَّنَا تَقَبَّلۡ مِنَّآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! तू हम से स्वीकार कर ले, तू ही सुनने वाला एवं जानने वाला है)। सूरह बक़रहः 127।

एवं मुहम्मद मुस़्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी नाम से दुआ करते हुए फ़रमायाः

﴿وَقُل رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنۡ هَمَزَٰتِ ٱلشَّيَٰطِينِ ٩٧ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحۡضُرُونِ ٩٨﴾

अनुवादः (तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से। तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ मेरे पालनहार! कि वो मेरे पास आयें)। सूरह मूमिनूनः 97-98।

❒ हे मेरे परवरदिगार!

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष जब कोई विपदा आ जाती और आप किसी संकट में घिर जाते तो यह दुआ करतेः

لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

अनुवादः अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं जो महान एवं ह़लीम (सहनशील) है, अल्लाह के अलावा कोई सत्य उपास्य नहीं जो महान सिंहासन का स्वामी है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा आराध्य नहीं जो आसमानों एवं ज़मीनों का रब तथा महान व उदार सिंहासन का रब है। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)।

जो व्यक्ति अपनी इच्छा से सर्वशक्तिमान रब के नाम के वसीले एवं माध्यम से दुआ नहीं करता, वह विवश हो कर अनिच्छा से ही सही परंतु इन नामों का सहारा अवश्य लेता है, चुनाँचे रोगी जो बिस्तर पर पड़ा रोग से लड़ रहा होता है, पुकार उठता हैः हे मेरे पालनहार! ऐ मेरे परवरदिगार! फलस्वरूप वह निरोग होने लगता है और उच्च व महान अल्लाह की कृपा से आरोग्य (शिफ़ायाबी) उतरने लगता है।

निर्धन एवं कंगाल व्यक्ति जो अत्यंत मामूली चीज़ों से भी वंचित होता है, वह अल्लाह का नाम ले कर गिड़गिड़ाता है, निर्धनता से हताश हो कर कराहते हुए या रब ... या रब की आवाज़ लगाता है, और देखते ही देखते अल्लाह उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर देता है और महान अल्लाह तआला अपनी कृपा से उसकी निर्धनता समाप्त कर देता है।

भूखा व्यक्ति जब भूख से विचलित एवं दुःख से व्याकुल होता है औरः ऐ रब ... ऐ रब! की सदा लगाता है, तो वह रिज़्क़ (आजीविका) से मालामाल हो जाता है और उस पर अल्लाह की कृपा की वर्षा होने लगती है।

पीड़ित व्यक्ति अपने गर्म आँसू एवं दहकती आह व कराह को छुपाते हुए या रब ... या रब! की पुकार लगा कर अल्लाह से सहायता की गुहार लगाता है तो वह उसकी सहायता का प्रबंध करता एवं उत्तम अंजाम तक पहुँचाता है।

ह़ाफ़िज़ इब्ने रजब रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं: “रुबूबियत का बारंबार स्मरण करते हुए अल्लाह से विनती करना दुआ के स्वीकार्य होने का अत्यंत उत्तम माध्यम है”।

يا رَبِّ نفِّس عَن عُبيدِكَ كُربَة وأَرِحهُ مِمَّا قد عَنَا وَدَهَاه

अनुवादः हे मेरे परवरदिगार! अपने बंदे के कष्ट को दूर कर दे तथा उसे जो (दुःख) मिला है उससे उसे मुक्ति दे।

❑ हम अपने परवरदिगार को भूल जाते हैं!!

हमारा रब कितना महान है! उसका राज पाट कितना विशाल है! उसका स्थान कितना उच्च है! वह अपनी मख़लूक़ (रचना, सृष्टि) से कितना निकट एवं अपने बंदों पर कितना दयालु है!

उच्चतम अल्लाह की रुबूबियतः अज़मत (महानता) व जलाल (प्रताप) वाली रुबूबियत हैः

﴿سَبِّحِ ٱسۡمَ رَبِّكَ ٱلۡأَعۡلَى ١﴾

अनुवादः (अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमिरन करो)। सूरह आलाः 1।

महान अल्लाह की रुबूबियतः बरकत, वृद्धि एवं नवाज़िश की रुबूबियत हैः

﴿تَبَارَكَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾

अनुवादः (वही अल्लाह अति शुभ, संसार का पालनहार है)। सूरह आराफ़ः 54।

महान अल्लाह की रुबूबियतः (दोष को) छुपाने एवं (पापों को) क्षमा करने वाली रुबूबियत हैः

﴿بَلۡدَةٞ طَيِّبَةٞ وَرَبٌّ غَفُورٞ﴾

अनुवादः (यह स्वच्छ नगर और वह अति क्षमी रब है)। सूरह सबाः 15।

सर्वोच्च अल्लाह की रुबूबियतः सर्वशक्तिमान, प्रभुत्व एवं सामर्थ्य वाली रुबूबियत हैः

﴿رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡغَفَّٰرُ ٦٦﴾

अनुवादः (जो परवरदिगार है आसमानों एवं ज़मीन का तथा जो कुछ उनके बीच है, वह अति प्रभावशाली क्षमी है)। सूरह स़ादः 66।

अल्लाह पाक की रुबूबियतः रह़मत (दया) वाली रुबूबियत हैः

﴿رَّبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ٱلرَّحۡمَٰنِ﴾

अनुवादः (आकाशों एवं धरा तथा जो कुछ इन दोनों के बीच है उनका रब है और बड़ी दया करने वाला है)। सूरह नबाः 37।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला की रुबूबियतः दानवीरता एवं सख़ावत वाली रुबूबियत हैः

﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلْإِنسَـٰنُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ ٱلْكَرِيمِ ۝٦﴾

अनुवादः (हे मानव! तुझे अपने रब्ब -ए- करीम (दानी) से किस चीज़ ने बहकाया?) सूरह इनफ़ितारः 6।

अल्लाह तआला के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं जो अकेला एवं तन्हा है। हे हमारे रब जैसी तेरी उपासना होनी चाहिए वैसी हम तेरी उपासना नहीं कर सके!

जो व्यक्ति यह जान ले कि सर्वशक्तिमानः अल्लाह ही सभी मालिकों का मालिक है, वह किसी ग़ैरुल्लाह को अपना मालिक व परवरदिगार नहीं मान सकता, बल्कि वह केवल अल्लाह की रुबूबियत से ही सहमत हो सकता है, और जो व्यक्ति अल्लाह की रुबूबियत से राज़ी हो जाए वही ईमान की मिठास को पा सकता है, इस विषय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है किः "जो अल्लाह की रुबूबियत एवं हुक्मरानी पर तथा इसलाम के दीन (धर्म) होने पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैग़म्बर (दूत) होने पर राज़ी हो गया, उसने ईमान का मज़ा चख लिया"। (मुस्लिम)।

﴿وَقُل رَّبِّ ٱغْفِرْ وَٱرْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ ٱلرَّٰحِمِينَ ۝١١٨﴾

अनुवादः (और कहो कि हे मेरे रब! तू क्षमा कर दे एवं दया कर, और तू ही सभी दयावानों से बढ़ कर उत्तम (दयावान) है)। सूरह मूमिनूनः 118।

ऐ मेरे परवरदिगार! हम तेरी ही कृपा के प्रार्थी हैं, तू एक क्षण के लिए भी हमारी उपेक्षा व अनदेखी न कर, और हमें अपनी दया की छाया में आश्रय दे।

हे हमारे पालनहार! तू माफ़ कर दे और दया कर, तू सभी कृपालुओं से बढ़ कर कृपालु है।

(4, 5)

(अल-अहद, अल-वाहिद जल्ला जलालुहु)

सही बुख़ारी में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “इब्राहीम अलैहिस्सलाम क़यामत के दिन अपने पिता आज़र से जब भेंट करेंगे तो उन के (पिता के) मुख पर स्याही एवं ग़ुबार (धूल) होगा, इब्राहीम अलैहिस्सलाम (अपने पिता से) कहेंगे किः क्या मैंने आप से नहीं कहा था किः मेरा विरोध न कीजिये, वह कहेंगे किः आज मैं तुम्हारा विरोध नहीं करता। इब्राहीम अलैहिस्सलाम (अल्लाह से) कहेंगेः हे मेरे रब! तू ने मुझ से वादा किया था कि क़यामत के दिन तू मुझे अपमानित नहीं करेगा, और आज इस अपमान से बढ़ कर और क्या अपमान होगा कि मेरे पिता तेरी दया से सबसे अधिक दूर हैं? अल्लाह तआला फ़रमायेगाः मैंने काफ़िरों पर जन्नत ह़राम करार दी है। फिर कहा जायेगा किः हे इब्राहीम! तुम्हारे पाँव के नीचे क्या है? वह देखेंगे कि एक ज़ब्ह किया हुआ पशु रक्त में लथ-पथ वहाँ पड़ा हुआ है, और फिर उसके पाँव को पकड़ कर उसे जहन्नम में डाल दिया जायेगा”।

ह़दीस़ में उस पशु का उल्लेख (ذِيْخ, ज़ीख़) शब्द के साथ आया है जिससे अभिप्रायः घने बालों वाला नर भेड़िया है।

हमारा मेहरबान रब सुब्ह़ानहु व तआला इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अपने पिता के विषय में की जाने वाली प्रार्थना स्वीकार नहीं करेगा, क्योंकि उनके पिता की मृत्यु शिर्क करते हुए हुई थी, और अल्लाह तआला ने प्रत्येक काफिर एवं मुश्रिक पर जन्नत को ह़राम व वर्जित करार दिया है, और चूँकि अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम से यह वादा किया था कि उन्हें क़यामत के दिन तिरस्कारित नहीं करेगा, अतः उनके पिता को उस दिन भेड़िया के रूप में परिवर्तित कर दिया जायेगा, उसके पश्चात उसे जहन्नम में डाल दिया जायेगा, जिससे किसी को यह पता नहीं चलेगा कि वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पिता हैं, इस प्रकार से वह अपमान से बच जायेंगे।

मुश्रिक के बारे में जब ख़लीलुल्लाह (अल्लाह के परम मित्र) अर्थात इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सिफ़ारिश स्वीकार नहीं की जायेगी तो ख़लील के अलावा किसी और की सिफ़ारिश कैसे स्वीकार्य हो सकती है?!

अल्लाह पाक का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُۚ وَمَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱفۡتَرَىٰٓ إِثۡمًا عَظِيمًا ٤٨﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह यह नहीं क्षमा करेगा कि (किसी को) उसका साझी बनाया जाये, और उसके सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देगा, और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महा पाप गढ़ लिया)। सूरह निसाः 48।

अतः बंदों पर सर्वप्रथम फ़र्ज़ (दायित्व) यह है किः केवल एक अल्लाह की इबादत व पूजा करे।

अल्लाह तआला ने अपनी प्रशंसा में यह बयान किया है कि वह सर्वशक्तिमान, अहद (अकेला), वाहिद (अद्वैत) हैः

﴿قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ١﴾

अनुवादः (आप कह दीजिये कि वह अल्लाह तआला एक है)। सूरह इख़्लासः 1।

﴿وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُوٓاْ إِلَٰهٗا وَٰحِدٗاۖ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۚ﴾

अनुवादः (उन्हें यही आदेश दिया गया था कि केवल एक अल्लाह की इबादत (वंदना) करें, जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं)। सूरह तौबाः 31।

हम इन दोनों नामों पर थोड़ी देर के लिए ठहर कर ग़ौर करेंगे एवं इन की शीतल छाया में शांति प्राप्त करेंगे, हो न हो अल्लाह तआला हमें अपनी तौहीद को अंगीकार करने तथा उसके अकेला एवं अद्वैत होने पर पूर्णरूपेण ईमान लाने की तौफ़ीक़ दे दे।

हमारा महान व सर्वशक्तिमान रब महानता एवं प्रताप के सभी विशेषण एवं गुण, सर्वोच्चता, किब्रियाई (बड़ाई, महिमा) एवं सुंदरता की सभी विशेषताओं में अकेला है। चुनाँचेः

वह अपनी ज़ात में अकेला है, उसके समान कोई नहीं।

वह अपनी विशेषता में तन्हा है, उसके समतुल्य कोई नहीं।

वह अपने अफ़आल (क्रियाओं) में अकेला है, न तो उसका कोई साझी है एवं न ही सहायक।

वह अपनी उलूहियत में अद्वैत है, न तो प्रेम एवं सम्मान में कोई उसका साझीदार है और न ही विनम्रता एवं शालीनता में।

वह ऐसा अकेला है जिसकी सभी विशेषताएं महानतम हैं, वह हरेक प्रकार की पूर्णता में अद्वैत है, सारी सृष्टि मिल कर भी उसकी विशेषता का पासंग भर भी नहीं जान सकतीं, न ही उसके गुणों का अंश मात्र का भी बोध तथा भान कर सकतीं, और यह तो बड़ी दूर की बात है कि कोई उसकी किसी एक विशेषता में उसके समतुल्य हो जाए।

❒ प्रकृति ...

वहदानियत (एकेश्वरवाद): सभी रसूलों (ईश दूतों) की दावत का सारांश एवं उनकी पैग़म्बरी का आधार हैः

﴿قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾﴾

अनुवादः (आप कह दीजिये कि! मेरे पास तो वह्य (प्रकाशना) की जाती है कि तुम सभों का उपास्य एक ही है, तो क्या तुम भी उसका आज्ञापालन करने वाले हो?)। सूरह अम्बियाः 108।

वहदानियत (एकेश्वरवाद) से अभिप्रायः अल्लाह सुब्हानहु व तआला की वह फ़ितरत एवं नैसर्गिकता है जिस पर अल्लाह तआला ने लोगों को पैदा फ़रमाया, वह वचन एवं प्रतिज्ञा है जो अल्लाह ने उन से लिया, रसूलों की वह दावत है जिस के साथ अल्लाह ने उन्हें अवतरित किया था तथा उन किताबों का उद्देश्य एवं मुराद है जिन्हें अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया।

अल्लाह के एकेश्वरवाद की ख़ातिर ही स्वर्ग एवं नरक की उत्पत्ति की गई, इसी के कारण पुल स़िरात़ कायम किया जायेगा, स़ह़ीफ़े खोले जायेंगे, मीज़ान (तुला) लगाया जायेगा, इसी के कारण मिल्लत में तलवार बे मियान हुई, जिहाद का ध्वज उठाया गया, लोग शहीद हुये, उनके लिये मृत्यु का स्वाद मधुर हो गया तथा मुजाहिदों की जानें मौत का मुहर बन गईः

﴿قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ فَٱسْتَقِيمُوٓا۟ إِلَيْهِ وَٱسْتَغْفِرُوهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ﴿٦﴾﴾

अनुवादः (आप कह दें कि मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा, मेरी ओर वह़्य की जा रही है कि तुम्हारा वंदनीय (माबूद) केवल एक ही है, अतः सीधे हो जाओ उसी की ओर तथा क्षमा माँगो उस से, और विनाश है मुश्रिकों के लिये)। सूरह ह़ा मीम सज्दा (फ़ुस्सिलत): 6।

वह़दानियत (एकेश्वरवाद) को प्रमाणित करते हुए और उसके लिए धर्म को निश्छल एवं शुद्ध करने को वाजिब व अपरिहार्य करार देते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤۡتُواْ ٱلزَّكَوٰةَۚ وَذَٰلِكَ دِينُ ٱلۡقَيِّمَةِ ٥﴾

अनुवादः (और उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वो धर्म को शुद्ध कर रखें, और सब को तज कर केवल अल्लाह की उपासना करें, नमाज़ अदा करें, और ज़कात दें, और यही शाश्वत धर्म है)। सूरह बय्यिनहः 5।

अल्लाह पाक ने अपनी वह़दानियत एवं महानता के समक्ष नतमस्तक होने को अपरिहार्य ठहराया हैः

﴿فَإِلَٰهُكُمۡ إِلَٰهٞ وَٰحِدٞ فَلَهُۥٓ أَسۡلِمُواْۗ وَبَشِّرِ ٱلۡمُخۡبِتِينَ ٣٤﴾

अनुवादः (तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, अतः उसी के आज्ञाकारी रहो, और (हे नबी!) आप शुभ सूचना सुना दें विनीतों को)। सूरह ह़ज्जः 34।

❒ स्पष्ट प्रमाणः

अल्लाह तआला ने मुश्रिकों की आस्थाओं को बात़िल एवं निराधार करार देते हुए फ़रमायाः

﴿وَقَالَ ٱللَّهُ لَا تَتَّخِذُوٓاْ إِلَٰهَيۡنِ ٱثۡنَيۡنِۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٞ وَٰحِدٞ فَإِيَّٰيَ فَٱرۡهَبُونِ ٥١﴾

अनुवादः (और अल्लाह ने कहाः दो पूज्य न बनाओ, वही अकेला पूज्य है, अतः तुम मुझी से डरो)। सूरह नह़लः 51।

﴿ءَأَرۡبَابٞ مُّتَفَرِّقُونَ خَيۡرٌ أَمِ ٱللَّهُ ٱلۡوَٰحِدُ ٱلۡقَهَّارُ﴾

अनुवादः (क्या विभिन्न पूज्य उत्तम हैं, या एक महा प्रभुत्वशाली अल्लाह?)। सूरह यूसुफ़ः 39।

इसके अतिरिक्त उन लोगों का खण्डन भी किया है जो अल्लाह को तीन पूज्यों में तीसरा मानते हैं:

﴿وَلَا تَقُولُوا۟ ثَلَـٰثَةٌ ۚ ٱنتَهُوا۟ خَيْرًا لَّكُمْ ۚ إِنَّمَا ٱللَّهُ إِلَـٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ﴾

अनुवादः (न कहो कि अल्लाह तीन हैं, इससे रुक जाओ कि तुम्हारे लिये इसी में भलाई है, अल्लाह पूजा के योग्य तो केवल एक ही है)। सूरह निसाः 171।

अल्लाह तआला ने हरेक की समानता, साझीदारी, समतुल्यता, सादृश्य एवं साम्य का खण्डन किया है, अतः अल्लाह तआलाः अकेला, तन्हा तथा अद्वैत है जिसके समान एवं समकक्ष कोई नहीं:

﴿هَلْ تَعْلَمُ لَهُۥ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾﴾

अनुवादः (क्या आप उसके समकक्ष किसी को जानते हैं)। सूरह मर्यमः 65।

अल्लाह ने हमें इस बात से मना किया है कि हम उसे किसी मख़लूक़ (रचना) के समान करार दें, (और हम उसकी ज़ात से संबंधित उसी चीज़ को प्रमाणित करें) जिसकी उसने अपने विषय में सूचना दी है, क्योंकि वह अपनी ज़ात के बारे में सबसे अधिक अवगत है।

मानव मस्तिष्क में अल्लाह तआला के संबंध में जो भी (बुरे) विचार आते हैं, अल्लाह तआला उनसे पाक है, क्योंकि उसका न तो कोई साझी है न समतुल्यः

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ﴾

अनुवादः (उस के समान कोई चीज़ नहीं, और वह सुनने वाला देखने वाला है) सूरह शूराः 11।

कोई रचना उसके समान नहीं, उसके लिए सुंदर व शुभ नाम एवं उच्च गुण हैं, उसके लिए कमाल (पूर्णता), जमाल (सुंदरता), अज़मत (महानता), जलाल (प्रताप), शराफ़त (शिष्टता) एवं किब्रियाई (बड़प्पन एवं अभिमान) है।

मुश्रिकों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहाः हमें अपने रब की विशेषता बताओ, क्या वह सोने का है? अथवा लाल पीतल या पीले पीतल का? उनमें से कुछ कहते थे किः ऐ मुहम्मद! हमें अपने रब की वंशावली बताओ।

यहूदी कहते किः हम अल्लाह के पुत्र उज़ैर की वंदना करते हैं, नसारा (ईसाई) कहते किः हम अल्लाह के पुत्र मसीह (ईसा) की उपासना करते हैं, मजूसी कहते किः हम सूर्य एवं चंद्रमा की पूजा करते हैं तथा मुश्रिकीन कहते किः हम मूर्तियों की आराधना करते हैं।

अल्लाह तआला ने उन सभों को उत्तर देते हुए फ़रमायाः

﴿قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١﴾

अनुवादः (आप कह दीजिए कि वह अल्लाह तआला एक ही है)। सूरह इख़्लासः 1।

❒ अल्लाह तआला इन बातों से पाक व पवित्र है ...

उन्होंने सर्वशक्तिमान अल्लाह के विरुद्ध दुस्साहस तथा ऐसा घृणित जुर्म किया कि जिसके कारण संभव है कि आकाश फट पड़े, धरती खंडित हो जाए तथा पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो जाए!! कि उन्होंने यह कहा कि अल्लाह का कोई बेटा है। जो कुछ ये लोग कहते हैं अल्लाह की ज़ात उससे पाक है।

सभी उसकी बादशाहत एवं हुकूमत के अधीन हैं, एवं समस्त लोग उसके समक्ष उपस्थित होने वाले हैं:

﴿لَّقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا إِدًّا ۝٨٩ تَكَادُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ ٱلْأَرْضُ وَتَخِرُّ ٱلْجِبَالُ هَدًّا ۝٩٠ أَن دَعَوْا۟ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ۝٩١ وَمَا يَنۢبَغِى لِلرَّحْمَٰنِ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا ۝٩٢ إِن كُلُّ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ إِلَّآ ءَاتِى ٱلرَّحْمَٰنِ عَبْدًا ۝٩٣ لَّقَدْ أَحْصَىٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝٩٤ وَكُلُّهُمْ ءَاتِيهِ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فَرْدًا ۝٩٥﴾

अनुवादः (वास्तव में तुम एक भारी बात गढ़ लाये हो। समीप है कि इस कथन के कारण आकाश फट पड़ें तथा धरती खंडित हो जाये, और गिर जायें पर्वत कण-कण हो कर। कि वह सिद्ध करने लगे अत्यंत कृपाशील के लिए संतान। तथा नहीं योग्य है अत्यंत कृपाशील के लिए कि वह कोई संतान बनाये। प्रत्येक जो आकाशों एवं धरती में हैं आने वाले हैं अत्यंत

कृपाशील की सेवा में दास बन कर। उसने उन को नियंत्रण में ले रखा है, तथा उन को पूर्णतः गिन रखा है। और प्रत्येक उसके समक्ष आने वाला है प्रलय के दिन अकेला)। सूरह मर्यमः 89-95।

सहीह बुख़ारी में वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आदम की संतान ने मुझे गाली दी, जब्कि उसके लिये अनुचित था कि वह मुझे गाली देता, उसने मुझे झुठलाया और उसके लिए यह भी अनुचित था, उसका झुठलाना यह है कि वह कहता है कि जिस प्रकार से अल्लाह ने मुझे पहली बार पैदा किया, फिर से (मृत्यु पश्चात) वह मुझे पुनर्जीवित नहीं कर सके गा, हालांकि दोबारा पैदा करना पहली बार पैदा करने की तुलना में अधिक कठिन नहीं है। उसकी गाली यह है कि वह कहता है कि अल्लाह के पास संतान है, हालांकि मैं अकेला एवं बेनियाज़ (निःस्पृह) हूँ, न मैंने किसी को जन्म दिया है तथा न ही किसी ने मुझे जन्म दिया है, और न कोई मेरे समतुल्य है"।

इससे ज्ञात हुआ कि सर्वोच्च अल्लाह अकेला एवं सत्य व ह़क़ है, उसका कोई शरीक व साझी नहीं, और न उसकी ज़ात (व्यक्तित्व), सिफ़ात (गुण) अथवा अफ़आल (कर्म) में कोई उसके समान है।

❒ ब्रह्माण्ड उसके एकेश्वरवाद की गवाही देता है ...

ब्रह्माण्ड में जो भी अविष्कार, संयोजन, प्रयोजन, एकता एवं एकरसता पाई जाती है वह सब के सब अपने एक अविष्कारक एवं संयोजन कर्ता को प्रमाणित करती है, इस ब्रह्माण्ड का कर्ता-धर्ता यदि एक से अधिक होता तो इसकी समस्त व्यवस्था तितर-बितर हो जाती, एवं इसके चलने की विधि परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध होती।

﴿لَوۡ كَانَ فِيهِمَآ ءَالِهَةٌ إِلَّا ٱللَّهُ لَفَسَدَتَاۚ فَسُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ رَبِّ ٱلۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُونَ ٢٢﴾

अनुवादः (यदि होते उन दोनों में अन्य पूज्य अल्लाह के सिवा तो निश्चय ही दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती, अतः पवित्र है अल्लाह अर्श (सिंहासन) का स्वामी उन बातों से जो वे बता रहे हैं)। सूरह अम्बियाः 22।

تَأَمَّل فِي نبَاتِ الأَرضِ وانظُر   إلى آثارِ ما صَنَعَ المَلِيكُ
عُيونٌ مِن لُجَينٍ شَاخِصَاتٌ   بِأَحدَاقٍ هِي الذَهَبُ السَبِيكُ
على قَضَبِ الزَّبرجَدِ شَاهِدَاتٌ   بِأَنَّ اللهَ لَيسَ لهُ شَرِيكُ

अनुवादः धरती में उगने वाले पौधों में चिंतन-मनन करो तथा राजा द्वारा बनाई हुई वस्तुओं में सोच-विचार करो। चाँदी के (जैसे सफेद) चक्षु अपनी काली पुतलियों के साथ ऐसे देखते हैं जैसे वह बहुमुल्य पत्थर के तराशे पर सोने की डली हों, ये सब इस बात पर गवाह हैं कि अल्लाह का कोई शरीक व साझी नहीं।

❑ अल्लाह सभी साझीदारों की तुलना में किसी भी प्रकार के साझीदार से सर्वाधिक बेनियाज़ है ...

केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह ही समस्त उपासनाओं के योग्य है, अतः बंदा ग़ैरुल्लाह का रुख़ न करे, और न अल्लाह के सिवा किसी और के लिए कोई इबादत अंजाम दे, चाहे वह नमाज़ हो या दुआ, ज़ब्ह हो या मन्नत, तवक्कुल हो या आशा, भय हो या ख़ुशूअ व विनम्रताः

﴿قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾﴾

अनुवादः (आप कह दें कि निश्चय ही मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिए है। जिसका कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ)। सूरह अनआमः 162-163।

ज्ञात हुआ कि सबसे महत्वपूर्ण मसला यह है किः समस्त प्रकार की पूजा एवं उपासनाओं में केवल एक अल्लाह को अकेला, तन्हा तथा अद्वैत माना जाएः

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾﴾

अनुवादः (मैंने जिन्नातों एवं इंसानों को केवल इसी लिए पैदा किया है कि वह सिर्फ मेरी ही पूजा करें)। सूरह ज़ारियातः 56।

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ﴾

अनुवादः (उन्हें केवल एक अकेले अल्लाह ही की उपासना का आदेश दिया गया था जिसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं)। सूरह तौबाः 31।

चुनाँचे तौहीद सबसे कोमल, सबसे पवित्र, सर्वाधिक निर्मल एवं पारदर्शी वस्तु है, तुच्छ एवं साधारण सी मिलावट भी इसको आहत, गंदा एवं प्रभावित कर देती है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस है कि आप ने फ़रमायाः “जिसने कोई ऐसा कर्म किया जिसमें मेरे संग किसी अन्य को साझी बनाया तो मैं उसको एवं उसके साझी के काम को छोड़ देता हूँ”। (मुस्लिम)।

यह भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस है कि आपने फ़रमायाः “जब अल्लाह तआला लोगों को क़यामत के दिन -जिसके आने में तनिक भी शंका नहीं है- इकट्ठा करेगा तो पुकारने वाला पुकार कर कहेगाः जिसने अल्लाह के लिये कोई कार्य किया तो हो परंतु उसमें किसी अन्य को भी साझी बना लिया हो, तो वह उस अन्य से ही अपने कार्य का बदला माँग ले जिसे उसने अल्लाह का साझी बनाया था, क्योंकि अन्य साझीदारों की तुलना में अल्लाह अपने साझीदार से सर्वाधिक बेनियाज़ (निःस्पृह) है”। (यह हदीस हसन है, इसे अहमद ने “मुसनद” में रिवायत किया है)।

❒ सदुपदेश ...

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह सुन्नत में बहुतेरी ऐसी हदीसें आई हैं जो तौहीद अपनाने को प्रोत्साहित करती हैं एवं इसकी फ़ज़ीलत व प्रधानता का बखान करती हैं, उनमें से कुछ निम्न हैं:

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “जो व्यक्ति दिन भर में सौ दफा यह दुआ पढ़ेगाः

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

“ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु, व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर” (अर्थातः अल्लाह तआला के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, उसका कोई साझी नहीं, राज पाट उसी का है, समस्त प्रशंसाएं उसी के लिए हैं तथा वह हर चीज़ में समर्थ है), तो उसे दस ग़ुलाम व दास स्वतंत्र करने के समान पुण्य मिलेगा, सौ पुण्य उसके नामा -ए- आमाल में लिखी जायेंगी तथा सौ पाप उससे मिटा दी जायेंगी। उस रोज़ दिन भर यह दुआ शैतान से उसकी सुरक्षा करती रहेगी यहाँ तक कि शाम हो जाए और कोई अन्य व्यक्ति उससे बेहतर अमल ले कर न आयेगा, सिवाय उसके जो उससे भी अधिक इस कलमा को पढ़ ले”। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

तिर्मिज़ी एवं अबू दाऊद की रिवायत की हुई ह़दीस़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक व्यक्ति को यह कहते हुए सुनाः

اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّكَ أَنْتَ اللهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، الْأَحَدُ الصَّمَدُ، الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ.

"अर्थातः हे अल्लाह! मैं तुझसे माँगता हूँ इस वसीले (माध्यम) से किः तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, तू अकेला एवं ऐसा बेनियाज़ (निःस्पृह) है जिसने न तो किसी को पैदा किया है और न ही वह पैदा किया गया है, और न कोई उसके समान व समकक्ष है, यह सुन कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः क़सम है उस रब की जिसके हाथ में मेरी जान है! इस व्यक्ति ने अल्लाह से उसके इस्म -ए- आज़म (महानतम नाम) के वसीले से माँगा है कि जब भी उससे यह नाम ले कर दुआ की जाती है तो वह स्वीकार कर लेता है, और जब भी इसके द्वारा कोई चीज़ माँगी जाती है तो वह प्रदान करता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल हुए तो आपने एक व्यक्ति को यह दुआ करते हुए सुनाः

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ يَا اللهُ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَكَ كُفُوًا أَحَدٌ أَنْ تَغْفِرَ لِي ذُنُوبِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

"हे अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ, हे अल्लाह जो अकेला एवं बेनियाज़ है, जिसने न जना और न वह जना गया, और न कोई उसके समान है किः तू मेरे पापों को क्षमा कर दे, निःसंदेह तू बड़ा क्षमी एवं दयालु है। यह सुन कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः इसे क्षमा कर दिया गया, इसे क्षमा कर दिया गया, इसे क्षमा कर दिया गया। तीन बार आपने यह वाक्य दोहराया"। (यह ह़दीस़ सही है, इसे अह़मद ने "मुसनद" में रिवायत किया है)।

ह़ाफ़िज़ इब्ने रजब रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "तौह़ीद के कलमा को अंगीकार कर लेने से, गर्दनों की नरक से मुक्ति अपरिहार्य हो जाती है, तथा गर्दनों की मुक्ति, नरक से (मानव की) मुक्ति को वाजिब ठहराती है"।

वह आगे कहते हैं किः "मग़फ़िरत एवं क्षमा का एक कारण तौह़ीद भी है, अपितु यह सबसे बड़ा कारण है, जिसके अंदर तौह़ीद न हो वह क्षमा से भी मह़रूम एवं वंचित हो जाता

है, और जो व्यक्ति तौहीद को अंगीकार कर ले वह क्षमा के सबसे बड़े कारण को अपना लेता है"।

इमाम इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: "तौह़ीद वह सर्वप्रथम चीज़ है जिसके द्वारा मानव इसलाम धर्म में प्रवेश पाता है, और यह सबसे अंतिम चीज़ है जिसके साथ (मुस्लिम बंदा) संसार से जुदा होता है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिसका अंतिम वाक्य "ला इलाहा इल्लल्लाह" होगा वह जन्नत में प्रवेश पायेगा, ज्ञात हुआ कि कलमा -ए- तौह़ीद का इक़रार ही सर्वप्रथम एवं सबसे अंतिम वाजिब चीज़ है, क्योंकि तौह़ीद हीः सबसे पहली एवं सबसे अंतिम (सर्वाधिक महत्वपूर्ण) चीज़ है"।

आप रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: "जिस प्रकार से तौह़ीद सांसारिक दुःख एवं कष्ट को दूर करती है, उस प्रकार से कोई और चीज़ नहीं करती"।

इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाह आगे लिखते हैं: "कोई मुश्रिक व्यक्ति जन्नत में दाख़िल नहीं होगा, बल्कि इसमें केवल तौह़ीद वाले ही प्रवेश पाएंगे, क्योंकि तौह़ीद ही जन्नत की कुंजी है"।

इब्नुल जौज़ी रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "सुफ़ियान स़ौरी इब्राहीम बिन अदहम के पास आते और कहतेः ऐ इब्राहीम! अल्लाह से दुआ करो कि मेरी मृत्यु तौह़ीद पर हो"।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक व्यक्ति को देखा कि वह दो उँगलियों के इशारे से दुआ करता था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "एक से, एक से"। (यह ह़दीस़ सही है जिसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)। इससे पता चलता है किः जब दुआ में इशारा करे तो केवल एक उँगली से इशारा करे।

ऐ अल्लाह! हम तुझ से सवाल करते हैं, ऐ वाह़िद व तन्हा ... ऐ अकेले ... ऐ बेनियाज़! कि तू हमें उन भाग्यशाली लोगों में सम्मिलित फ़रमा जिन्होंने तुझ से दुआ की और तू ने सुन ली, जिन्होंने तेरे समक्ष विनती की और तू ने उन्हें अपनी रह़मत से मालामाल कर दिया, जिन्होंने तेरी पनाह माँगी और तू ने उन्हें जहन्नम से पनाह दी, और ऐ अल्लाह! संसार के अंदर हमारा अंतिम वाक्य कलमा -ए- तौह़ीद "ला इलाहा इल्लल्लाह" को करार दे, निःसंदेह तू सभी दयालुओं से बढ़ कर दयालु है।

(अल-स़मद जल्ला जलालुहु)

आप को जब कोई आवश्यकता हो, तो (अल्लाह से) आसरा रखो, जो बेनियाज़ है, जब अपना सम्मान खो दें तथा अपमान मुकद्दर हो जाए तो बेनियाज़ (अल्लाह) के द्वार पर दस्तक दें, जब आपका शरीर क्षीण हो जाए तो उसी शक्तिशाली बेनियाज़ अल्लाह से शक्ति प्राप्त करें:

إنَّه الوَاحِدُ الَّذِي لا يُضاهِي   فِي مَعَانِي أَسَمائِهِ والصِّفَاتِ
صَمَدٌ تَصمُدُ البَرَايَا إِلَيهِ   وأَنِيسُ الَّضمَائِرِ الُموحِشاتِ

अनुवादः निःसंदेह (अल्लाह) अकेला व तन्हा है जिसके असमा व स़िफ़ात (नाम एवं विशेषता) के अर्थों में कोई उसका साझी नहीं। वह बेनियाज़ है जिसकी ओर सभी मख़लूक़ (रचना) अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चल कर आते हैं, तथा वह सहमे हुए दिलों को सांत्वना प्रदान करता है।

अल्लाह के नाम अल-स़मद (बेनियाज़) का उल्लेख क़ुरआन एवं ह़दीस़ के नुस़ूस़ (श्लोकों) में कम आया है, परंतु यह नाम एक विशेष प्रकार के जलाल (प्रताप तथा वैभव) को अपने अंदर समेटे हुए है।

अल्लाह पाक का फ़रमान हैः

﴿قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُولَدۡ ۝٣ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدُۢ ۝٤﴾

अनुवादः (-हे ईश दूत!- कह दीजिएः अल्लाह अकेला है। अल्लाह बेनियाज़ (निःस्पृह) है। न उसकी कोई संतान है, और न वह किसी की संतान है। और न उसके बराबर कोई है)। सूरह इख़्लास़ः 1-4।

हमारा पाक व महान रब वह है कि समस्त सृष्टिः मानव तथा दानव बल्कि समस्त लोक एवं परलोक उसके समक्ष नतमसतक होते हैं, अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसकी ओर आकर्षित होते हैं तथा आपदा के समय उसी से सहायता माँगते हैं।

हमारा पाक व महान रब वह सरदार है जो सरदारी के सर्वोच्च स्थान पर आसीन है, ऐसा शरीफ़ है जो अपनी शराफ़त में पूर्ण है, ऐसा महान है जो महानता के सर्वोत्तम स्थान पर पहुँचा हुआ है, ऐसा ह़लीम तथा सहनशील है जो सहनशीलता की पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ

है, और ऐसा बेनियाज़ व निःस्पृह है जिसकी बेनियाज़ी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची हुई है, ये वो विशेषताएं हैं जो उस पाक व महान रब के सिवा किसी और के लिए उचित नहीं।

हमारा पवित्र व महान रब वह है जिसे पेट की आवश्यकता नहीं, वह न तो खाता है और न ही पीता है, वह खिलाता है खाता नहीं, वह अपने सिवा हरेक से बेनियाज़ है, उस पवित्र व महान ज़ात (अस्तित्व, व्यक्तित्व) के अतिरिक्त सभी उसके मोहताज हैं, उसके जैसी कोई चीज़ नहीं, वह अत्यधिक सुनने एवं देखने वाला है।

❒ पर्याप्त उत्तर ...

बैहिक़ी ने रिवायत किया है तथा ह़ाफ़िज़ (इब्ने ह़जर) ने इसे ह़सन कहा है कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने बयान किया किः "यहूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और कहने लगेः हे मुह़म्मद! हमारे समक्ष अपने उस रब की वंशावली बयान करें जिसने आप को दूत बना कर भेजा है, इस पर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने यह आयतें नाज़िल फ़रमाईः

﴿قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ ۝٤﴾

अनुवादः (-हे ईश दूत!- कह दीजिएः अल्लाह अकेला है। अल्लाह बेनियाज़ (निःस्पृह) है। न उसकी कोई संतान है, और न वह किसी की संतान है। और न उसके बराबर कोई है)। सूरह इख़्लासः 1-4।"।

यह एक छोटी सी सूरत है जो अपने अंदर महानता एवं प्रताप के सभी गुण पूर्णरूपेण समेटे हुई है।

इसकी महानता एवं विशेषता यह है कि जो व्यक्ति इसकी तिलावत (पाठ) करता है मानो वह क़ुरआन के एक तिहाई भाग की तिलावत करता है। स़ह़ीहैन (अर्थातः बुख़ारी व मुस्लिम) में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा -ए- किराम से कहाः "क्या तुम में से किसी के लिए संभव नहीं कि वह क़ुरआन के एक तिहाई भाग को एक रात में पढ़ा करे? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया: कोई एक तिहाई क़ुरआन (इतने कम समय में) कैसे पढ़ सकता है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

﴿قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١﴾ (क़ुल हु वल्लाहु अह़द) एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है"। (ह़दीस़ के यह शब्द मुस्लिम ने रिवायत किये हैं)।

कुछ उलेमा का कहना है किः "क़ुरआन तीन भागों में अवतरित हुआः इसका एक तिहाई (तृतीयांश) अह़काम (धार्मिक प्रावधान) पर आधारित है, दूसरी तिहाईः वअद एवं वईद (अच्छे कर्मों पर अच्छाई का वादा तथा बुरे कर्मों पर बुराई की धमकी) पर आधारित है, और तीसरी तिहाईः अस्मा व स़िफ़ात (अल्लाह के शुभ नाम एवं विशेषताएं) पर आधारित है। सूरह इख़्लास़ इन तीन तिहाईयों में से एक तिहाई अर्थात अस्मा व स़िफ़ात को अपने अंदर समोए हुई है, इसी कारणवश इसकी तिलावत क़ुरआन के एक तिहाई भाग की तिलावत करने के समान है"।

स़ह़ीह़ बुख़ारी में है किः "एक स़ह़ाबी -रज़ियल्लाहु अन्हु- अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते थे तथा प्रत्येक नमाज़ में ﴿قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١﴾ (क़ुल हु वल्लाहु अह़द) पढ़ा करते थे, स़ह़ाबा ने इसका उल्लेख नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने किया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः उन से पूछो कि वह ऐसा क्यों करते हैं? जब स़ह़ाबा ने उनसे पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया किः मैं ऐसा इसलिए करता हूँ कि यह अल्लाह की स़िफ़ात (विशेषताओं) पर आधारित है तथा इसका पाठ करना मुझे अति प्रिय है, (यह सुन कर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः उसे सूचना दे दो किः अल्लाह तआला भी उसे प्रिय रखता है"।

❒ हृदयों का समर्पण ...

नेक एवं स़ालेह लोगों के हृदयों में जब यह प्रेम पनपता है तो उन चाहने वालों के अंदर अपने आक़ा व मौला की मोहब्बत के प्रयास को जाग्रत कर देता है।

बंदों के दिल में जब यह प्रेम पनपता है तो उन्हें उसी समय शांति का आभास होता है जब वह अपने आक़ा एवं स्वामी के समक्ष नतमस्तक हो जाएं, उसके घर का तवाफ़ करें तथा चक्कर लगाएं, उसके दरबार में खड़े हों, उसके लिए अपनी नींद तज दें तथा उसके मार्ग में अपने प्राणों की आहुती दें।

उससे प्रेम करने वालों के हृदय उसका स्मरण करने से ही शांत होते हैं, तथा उसकी लालसा रखने वालों की आत्माएं उसके दर्शन से ही तृप्त होती हैं।

إِذَا مَرِضنَا تَدَاوَينا بِذِكرِكُم فَنترُكَ الذِكرَ أحيانا فَنَنتَكِسُ

अनुवादः जब हम बीमार होते हैं तो तेरे स्मरण से अपना उपचार करते हैं, यदा-कदा जब हम तेरे स्मरण से ग़ाफ़िल हो जाते हैं तो रोग पलट कर आ जाता है।

ये नेक लोग (संत) जब समृद्धि एवं संपन्नता में अल्लाह से जुड़े रहते हैं तथा उसी से लौ लगाते हैं तो अल्लाह भी निर्धनता एवं संकट के समय उन्हें याद रखता है, बंदा जितना अपने रब से जुड़ा रहता है तथा उसकी साधना में लीन रहता है उतना ही उसे गौरव, श्रेष्ठता तथा समृद्धि एवं शांति मिलती है।

अल्लाह के नबी इब्राहीम अलैहिस्सलाम विभिन्न परीक्षाओं से गुज़रे, महान अल्लाह ने इन परीक्षाओं के कारण ऐसी श्रेष्ठता प्रदान की कि उन्हें अपना ख़लील (परम मित्र) घोषित कर दियाः

﴿وَٱتَّخَذَ ٱللَّهُ إِبۡرَٰهِيمَ خَلِيلٗا﴾

अनुवादः (अल्लाह तआला ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को अपना परम मित्र बना लिया)। सूरह निसाः 125।

अय्यूब अलैहिस्सलाम उन लोगों के लिए आदर्श हैं जो रोग तथा संकट में घिरे हुए हैं, जब उन्होंने यह कहते हुए अपने पाक व महान रब का सहारा लिया किः

﴿أَنِّي مَسَّنِيَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

अनुवादः (मुझे बीमारी लग गई है तथा तू सभी दयालुओं से बढ़ कर दयालु है)। सूरह अम्बियाः 83।

तो सर्वशक्तिमान व बेनियाज़ रब का उत्तर थाः

﴿فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ فَكَشَفۡنَا مَا بِهِۦ مِن ضُرّٖ﴾

अनुवादः (तो हमने उसकी गुहार सुन ली तथा जो कष्ट उन्हें पहुँचा था उसे दूर कर दिया)। सूरह अम्बियाः 84।

यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में, तीन अंधेरों के अंदर, अपने पाक व महान का रब का सहारा लेते हुए दुआ करते हैं:

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ٨٧ فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ وَنَجَّيۡنَٰهُ مِنَ ٱلۡغَمِّۚ وَكَذَٰلِكَ نُـۨجِي ٱلۡمُؤۡمِنِينَ ٨٨﴾

अनुवादः (तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी हूँ। तब हमने उसकी पुकार सुन ली, तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं ईमान वालों को)। सूरह अम्बियाः 87-88।

समस्त नबियों एवं नेक लोगों की यही परिस्थिति है ... कि जब उन्होंने सुख समृद्धि के समय अपने रब को याद रखा तो दुःख एवं संकट के समय अल्लाह ने भी उन्हें याद रखा।

❑ आख़िर वह क्यों नहीं मानते?!

तेरे सर्वशक्तिमान तथा महान रब ने अपना द्वार केवल औलिया एवं साधु-संतों के लिए ही नहीं अपितु सभी लोगों के लिए खोल रखा है।

यह उसकी मेहरबानी, कृपा तथा दानवीरता है कि मुश्रिकीन के ऊपर भी जब मुसीबतों का पहाड़ टूटता है, संसार उसके लिए तंग हो जाता है तथा मृत्यु को अपनी आँखों के बिल्कुल निकट पाते हैं तो अल्लाह पाक का सहारा लेते हैं तथाः हे अल्लाह ... हे अल्लाह! की रट लगाते हैं, और ऐसा करने पर उन्हें संकट से मुक्ति भी मिल जाती है।

﴿فَإِذَا رَكِبُواْ فِي ٱلۡفُلۡكِ دَعَوُاْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ فَلَمَّا نَجَّىٰهُمۡ إِلَى ٱلۡبَرِّ إِذَا هُمۡ يُشۡرِكُونَ ٦٥﴾

अनुवादः (और जब वह नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिए धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं, फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल की ओर तो वो पुनः शिर्क करने लगते हैं)। सूरह अन्कबूतः 65।

ज्ञात हुआ कि यह मुश्रिकीन (बहुदेववादी) भी -घोर संकट के समय- अल्लाह तआला की तौहीद एवं एकेश्वरवादिता का इकरार करते हैं, बल्कि समस्त ब्रह्माण्ड यदि अपनी इच्छा से महान अल्लाह की ओर नहीं आती तो अनिच्छा से ही सही परंतु उन्हें अल्लाह का सहारा लेने के लिए विवश होना पड़ता है।

❑ शांत रहें ...

सर्शक्तिमान अल्लाह ने, जब विवश हो कर काफिरों द्वारा की गई प्रार्थनाओं को, स्वीकार कर लिया तो भला वह उस व्यक्ति की प्रार्थना को कैसे अस्वीकार करेगा जो अल्लाह की वह़दानियत (एकेश्वरवाद) तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत (ईश दूत होने) की गवाही देता है?!

अतः आप को जब भी कोई आवश्यकता हो तो उसी की ओर रुख़ करें, उसी के द्वार पर अपनी असहायता का प्रदर्शन करें, और यह सदा लगाएं किः हे समद (बेनियाज़)! मेरी विपदा को दूर कर दे। आप अपने दुःख, गम, रोग अथवा ऋण को ले कर कदापि चिंतित न हों क्योंकि आप का रब ऐसा बेनियाज़ है कि यदि आप उससे विनती करेंगे तो वह आपको निराश नहीं करेगा, और न ही वह आपको अपमानित होने देगा। याद रखें कि सर्वश्रेष्ठ इबादत व पूजाः संकट के दूर होने, तथा अनुकूल एवं आदर्श स्थिति आने की, प्रतीक्षा करना है, एक ही स्थिति का सदा बने रहना असंभव है, युग नाम ही है उलट-फेर का, रात्रि की कोख में दिन का उजाला पल रहा होता है, ग़ैब एवं भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है हम इससे अंजान हैं और निस्संदेह प्रत्येक तंगी के साथ आसानी है।

सुनन अबू दाऊद में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल हुए तो एक व्यक्ति को यह दुआ करते हुए सुनाः

اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ يا اللهُ، الْأَحَدُ الصَّمَدُ، الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ. أَنْ تَغْفِرَ لِي ذُنُوبِي، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

"अर्थातः हे अल्लाह! मैं तुझसे माँगता हूँ इस वसीले (माध्यम) से किः तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, तू अकेला एवं ऐसा बेनियाज़ (निःस्पृह) है जिसने न तो किसी को पैदा किया है और न ही वह पैदा किया गया है, और न कोई उसके समान व समकक्ष है, तू मेरे पापों को क्षमा कर दे, निश्चय ही तू बड़ा क्षमी एवं अत्यंत दयावान है। यह सुन कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः इसे क्षमा कर दिया गया ... इसे क्षमा कर दिया गया ... इसे क्षमा कर दिया गया" आपने तीन बार यह वाक्य दोहराया। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

एक दूसरी रिवायत में इस प्रकार वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तू ने अल्लाह से उसके इस्म -ए- आज़म (महानतम नाम) के वसीले से माँगा है कि जब भी उससे यह नाम ले कर दुआ की जाती है तो वह स्वीकार कर लेता है, और जब भी इसके द्वारा कोई चीज़ माँगी जाती है तो वह प्रदान करता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

رُحماكَ يا ربَّ العِبادِ رَجَائِي وَرِضاكَ قَصدِي فاستَجِب لِدُعائِي
نَادَيتُ بِاسمِكَ يا إِلهي ضارِعا إِن لم تُجِبنِي فَمَن يُجِيبُ بُكَائِي؟
أنتَ الكَرِيمُ فلا تَدَعنِي تائِهاً فَلَقَد عَيِيتُ مِن البِعَادِ النَّائِي
ولقد رَجوتُكَ يا إِلَهِي ضارِعاً مُتَذَلِلاً فلا تَرُدَّ رَجَائِي

अनुवादः हे बंदों के पालनहार! मेरी आशा केवल तुझ से ही है, तू मुझ पर दया कर। तेरी प्रसन्नता ही मेरा परम उद्देश्य है, अतः मेरी प्रार्थना स्वीकार कर। मेरे रब! मैंने तेरे नाम से गिड़गिड़ा कर तुझे पुकारा, यदि तू मेरी पुकार को नहीं सुनेगा तो कौन है जो मेरे रुदन-क्रंदन को सुनेगा? तू दाता है, मुझे भटकता हुआ (विवश) मत छोड़, लम्बी दूरी की इस (कठिन) यात्रा से मैं थक चुका हूँ। हे मेरे पूज्य! मैं विनीत एवं आदर भाव के साथ तुझ से यह आशा रख रहा हूँ, तू मुझे निराश न करना।

हे अल्लाह! हे अकेले व तन्हा! हे बेनियाज़! हम तुझ से जन्नत माँगते हैं, तथा हमें हर उस कर्तव्य एवं वक्तव्य को अंजाम देने की तौफ़ीक़ दे, जो हमें जन्नत से निकट कर दे, तथा जहन्नम से हम तेरी पनाह चाहते हैं, और हमें हर उस कर्तव्य एवं वक्तव्य को अंजाम देने से बचने की तौफ़ीक़ दे जो हमें जहन्नम के समीप करे।

(7, 8)

(अल-रह़मान अल-रह़ीम जल्ला जलालुहु)

अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿قُلِ ٱدْعُواْ ٱللَّهَ أَوِ ٱدْعُواْ ٱلرَّحْمَٰنَ أَيًّا مَّا تَدْعُواْ فَلَهُ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ﴾

अनुवादः (हे नबी! आप कह दें कि, तुम अल्लाह को अल्लाह कह कर पुकारो अथवा रह़मान कह कर, जिस नाम से भी तुम पुकारो, समस्त अच्छे व शुभ नाम उसी के हैं)। सूरह बनी इस्राईलः 110।

हमारे नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष जब कोई कठिन व दुष्कर कार्य आ जाता तो आप यह दुआ पढ़तेः "يَا حَيُّ ..يَاقَيُّوْمُ! بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ" "हे चिरजीवी व अमर, हे (आकाश व धरा को) थामने वाले! तेरी रह़मत (कृपा) के वसीला व माध्यम से मैं तेरी सहायता चाहता हूँ"। (इसे इमाम अह़मद ने "मुसनद" में रिवायत किया है)।

रह़मान अर्थात अत्यंत कृपालु व दयालु से क्यों न सहयोग माँगा जाये जब्कि विपत्ति एवं आपदा के समय वही आश्रय देता है, डर एवं भय के समय वही प्रेम एवं सांत्वना प्रदान करता है तथा तंगी एवं कमी के समय वही सहायता व प्रभुत्व देता है!?

अल्लाह तआला ही आज्ञापालन करने वालों के लिए तसल्ली, तुष्टि एवं सांत्वना स्थली है, (शरण की चाह में) भटकने वालों के लिए शरण स्थली है तथा डरे हुए एवं भयभीत लोगों के लिए शरण्य व आश्रय है, निःसंदेह वह समस्त दयालुओं से बढ़ कर दयालु है।

إِلَيهِ وَإلا لَا تُشَدُّ الرَّكَائِبُ　　　وَمِنهُ وَإلا فَالمؤَمَّلُ خائِبُ

अनुवादः यदि यात्रा की जाये तो केवल उसी की ओर, आशा रखी जाये तो सिर्फ उसी से, अन्यथा निराशा के सिवा कुछ हाथ नहीं आता।

﴿وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلرَّحْمَٰنُ ٱلرَّحِيمُ ١٦٣﴾

अनुवादः (तुम सब का पूज्य केवल एक ही पूज्य है, उसके सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं, वह बड़ा कृपाशील अत्यंत दयावान है)। सूरह बक़राः 163।

रह़मतः रुबूबियत की शान तथा उलूहियत की पहचान है, इसी कारणवश अल्लाह तआला ने स्वयं को रह़मान व रह़ीम (बड़ा कृपाशील एवं अत्यंत दयावान) की विशेषता से विशेषित किया है।

हम क़ुरआन की तिलावत (पाठ) का आरंभ अल्लाह तआला के इन्हीं दो नामों के द्वारा करते हैं, जो सबसे महान एवं हृदय के अत्यंत निकट हैं: (बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम, अल्लाह के नाम से प्रारंभ करता हूँ जो बड़ा कृपाशील, अत्यंत दयावान है)।

ये दोनों नाम (अर्थातः रह़मान एवं रह़ीम), "رَحْمَتْ, रह़मत" यौगिक से मुबालिग़ा के रूप में बने हैं, अर्थात ये नाम कृपा की अतिश्योक्ति, पराकाष्ठा एवं उसके चरम रूप को दर्शाते हैं।

रह़मत का शाब्दिक अर्थ होता हैः नम्रता, दयालुता, कृपा, दया, मेहरबानी एवं अनुग्रह इत्यादि।

अल्लाह तआला की रह़मत व्यापक रूप से सभी जीव-जंतु एवं सृष्टि को सम्मिलित हैः

﴿وَرَحۡمَتِي وَسِعَتۡ كُلَّ شَيۡءٖۚ﴾

अनुवादः (मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये है)। सूरह आराफ़ः 156।

﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ﴾

अनुवादः (वास्तव में अल्लाह लोगों के लिए अति करुणामय दयावान है)। सूरह हजः 65।

परंतु अल्लाह तआला ने मोमिनों के लिए अपनी कृपा का सर्वाधिक व उत्कृष्ट भाग आरक्षित कर रखा हैः

﴿وَكَانَ بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ رَحِيمٗا﴾

अनुवादः (अल्लाह तआला मोमिनों के लिए अत्यंत दयावान है)। सूरह अह़ज़ाबः 43।

हमारा पाक व पवित्र रब (पालनहार) रह़मान (दयावान) है, अर्थातः रह़मत (दया) उसकी विशेषता है, वह रह़ीम (दयावान, कृपालु) है, अर्थातः अपने बंदों (भक्तों, साधकों) पर कृपा करता है, अतः वह सभी कृपालुओं से बढ़ कर हम पर कृपा करता है, वह हमारे माता-पिता एवं संतान अपितु स्वयं हमारे अपने आप से बढ़ कर, हम पर अपनी कृपा की वर्षा करता है।

इमाम बुख़ारी ने "अल-अदब अल-मुफ़रद" में वर्णन किया है कि, एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में इस दशा में उपस्थित हुआ कि वह एक शिशु को अपनी छाती से चिमटाये हुये था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से प्रश्न कियाः

क्या तुम्हें इस पर दया आती है? उन्होंने ने उत्तर दियाः हाँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जितनी दया तुम्हें इस पर आती है, उससे कहीं अधिक अल्लाह तआला तुम पर दयावान है, बल्कि वह समस्त दया करने वालों से बढ़ कर दयावान है"। (यह हदीस़ सही है)।

पवित्र अल्लाह तआला का यह नाम (रहमान) केवल उसी के लिए आरक्षित है, अतः किसी के लिए जायज़ व उचित नहीं कि इस नाम के द्वारा अपना नामकरण करे, और न ही उसके सिवाय किसी और को इस विशेषता से विशेषित व सुशोभित किया जायेगाः

﴿قُلِ ٱدۡعُواْ ٱللَّهَ أَوِ ٱدۡعُواْ ٱلرَّحۡمَٰنَۖ أَيّٗا مَّا تَدۡعُواْ فَلَهُ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰۚ﴾

अनुवादः (हे नबी! आप कह दें कि, तुम अल्लाह को अल्लाह कह कर पुकारो अथवा रहमान कह कर, जिस नाम से भी तुम पुकारो, समस्त अच्छे व शुभ नाम उसी के हैं)। सूरह बनी इस्राईलः 110।

उपरोक्त आयत (श्लोक) में अल्लाह तआला ने रहमान नाम को इस्म -ए- जलाला (अर्थात अल्लाह) के समान करार दिया है, जिसमें कोई अन्य अल्लाह तआला का साझी नहीं हो सकता, इसी कारणवश कुछ लोगों का कहना है किः इस्म -ए- आज़म (सबसे महान नाम) से तात्पर्य यही नाम (रहमान) है।

अब रही बात रहीम नाम कीः तो इसके द्वारा मख़लूक़ (मानव जाति) को भी विशेषित किया जा सकता है, जैसाकि अल्लाह तआला के निम्नांकित फ़रमान में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस गुण से विशेषित किया गया हैः

﴿لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولٞ مِّنۡ أَنفُسِكُمۡ عَزِيزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيصٌ عَلَيۡكُم بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ رَءُوفٞ رَّحِيمٞ ١٢٨﴾

((हे ईमान वालों!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है, उसको वह बात बहुत भारी लगती है जिस से तुम्हें दुःख हो, वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखते हैं, और ईमान वालों के लिए करुणामय दयावान हैं)। सूरह तौबाः 128।

इस आधार पर किसी व्यक्ति विशेष के विषय में इस प्रकार से कहने में कोई हर्ज नहीं है किः अमूक व्यक्ति "रहीम" है, परंतु यह कहना अनुचित होगा कि अमूक व्यक्ति "रहमान" है।

अल्लाह तआला की रहमत (कृपा) के दो प्रकार हैं:

आम व व्यापक रहमतः इससे अभिप्राय वह रहमत है जो सभी जीव-जंतु एवं सृष्टि के लिए आम व व्यापक है, चुनाँचे समस्त जीव-जंतु अल्लाह की रहमत से लाभांवित हो रहे हैं, वह इस प्रकार से कि अल्लाह तआला ने ही उनकी रचना की, उनका लालन-पालन किया, उन्हें जीविका दी तथा इसके अतिरिक्त अन्य नेमतों (अनुग्रहों) द्वारा उन्हें समृद्ध किया।

﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾

अनुवादः (वास्तव में अल्लाह लोगों के लिए अति करुणामय दयावान है)। सूरह बक़राः 143।

﴿إِنَّهُۥ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا﴾

अनुवादः (वास्तव में वह तुम्हारे लिए अति दयावान है)। सूरह बनी इस्राईलः 66।

विशेष रहमतः इससे अभिप्रेत वह रहमत है जिसके द्वारा लोक परलोक में सफलता का सौभाग्य प्राप्त होता है, यह रहमत केवल अल्लाह के विशेष मोमिन बंदों (भक्तों, साधकों) को ही नसीब होती हैः

﴿وَكَانَ بِٱلْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا﴾

(अल्लाह तआला मोमिनों के लिए अत्यंत दयावान है)। सूरह अहज़ाबः 43।

﴿يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَٰنٍ وَجَنَّٰتٍ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿٢١﴾﴾

(उन को उन का रब (पालनहार) शुभ सूचना देता है अपनी दया एवं प्रसन्नता की, तथा ऐसी जन्नतों (स्वर्गों) की जिन में स्थायी सुख के साधन हैं)। सूरह तौबाः 21।

निःसंदेह वह अत्यंत दयावान है ...

वह (अल्लाह) इस बात के सर्वाधिक योग्य है कि उसका स्मरण किया जाये, उसकी उपासना की जाये तथा उसकी कृपा, अनुग्रहता एवं दयालुता पर उसको धन्यवाद दिया जाये।

आप जिधर भी अपनी दृष्टि घुमायेंगे चहुँ ओर समस्त लोक में आपको उसकी कृपा बिखरी हुई दृष्टिगोचर होगी, इस ब्रह्माण्ड में अल्लाह की कृपा का सबसे उत्तम रूप उसकी अवतरित की हुई वह्य (प्रकाशना) है।

﴿وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ تِبْيَٰنًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ﴾

अनुवादः (हमने आप पर यह पुस्तक (क़ुरआन) अवतरित की है जो प्रत्येक विषय का खुला विवरण है, तथा मार्गदर्शन एवं दया और शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिए)। सूरह नह़्लः 89।

जब धरती की कोख बंजर हो जाती है, पौधे मुरझा व कुम्हला जाते हैं, स्तन सूख जाता है, आपदा बड़ी हो जाती है और परीक्षण कठिन हो जाता है तो अल्लाह तआला की रह़मत की बरखा बरसती हैः

﴿وَهُوَ ٱلَّذِي يُنَزِّلُ ٱلْغَيْثَ مِنۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوا۟ وَيَنشُرُ رَحْمَتَهُۥ ۚ وَهُوَ ٱلْوَلِيُّ ٱلْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾﴾

अनुवादः (वही है जो वर्षा करता है इसके पश्चात कि लोग निराश हो जायें, तथा फैला देता है अपनी दया, और वही संरक्षक सराहनीय है)। सूरह शूराः 28।

जब अज़ाब (यातना, दंड) आता है और पुरुष विलाप करने लगते हैं, महिलाएं रूदन-क्रंदन करने लगती हैं, बालक एवं बालिकाएं भय तथा चिंता से उद्विग्न एवं व्याकुल हो जाती हैं, वातावरण में चहुँ ओर भय एवं डर की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तो ऐसे समय में अल्लाह के मुख़लिस़ (निष्ठावान, निश्छल) भक्तों पर उसकी कृपा अवतरित होती हैः

﴿وَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا﴾

अनुवादः (और जब हमारा आदेश (अज़ाब, दंड) आ पहूँचा तो हमने हूद को और जो उनके संग ईमान लाये थे सभी को अपनी दया से बचा लिया)। सूरह हूदः 58।

﴿وَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا﴾

अनुवादः (और जब हमारा आदेश (अज़ाब, दंड) आ गया, तो हमने शुऐब को, और जो उनके साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया)। सूरह हूदः 94।

कोई भी अभिलाषा व लालसा रह़मान (अल्लाह) के मार्ग से गुज़रे बिना गंतव्य तक नहीं पहुँच सकती, कोई भी आवश्यकता रह़मान के द्वार को खटखटाए बिना पूर्ण नहीं हो सकती, यह असंभव है कि कोई भी चीज़ रह़मान (की रह़मत) के बिना अस्तित्व में आ जाये,

क्योंकि वही एक अकेला रह़मान (अत्यंत दयालु) है जिसकी पाक व पवित्र ज़ात (अस्तित्व, व्यक्तित्व) के बिना न तो जीवन में किसी चीज़ के करने की शक्ति है और न ही सामर्थ्य।

अतः उसने अपनी रह़मत से हमारे लिए रसूलों को नाज़िल फ़रमाया।

अपनी रह़मत से हमारे लिए किताबें अवतरित की।

अपनी रह़मत से हमें गुमराही व पथभ्रष्टता से निकाल कर (दीन -ए- इस्लाम की) हिदायत (मार्गदर्शन) प्रदान की।

अपनी रह़मत से हमें अज्ञानता के अंधकार से निकाल कर (ह़क़ अर्थात सत्य की ओर) मार्गदर्शित किया।

अपनी रह़मत से हमें उस चीज़ का ज्ञान प्रदान किया जिससे हम अनभिज्ञ थे।

अपनी रहमत से सूर्य एवं चंद्रमा की रचना की, रात एवं दिन का प्रबंधन किया तथा धरती को फ़र्श व बिछौना बना दिया।

अपनी रह़मत से जन्नत (स्वर्ग) को उत्पन्न किया, तत्पश्चात उसे जन्नतियों (स्वर्ग वासियों) से आबाद करेगा एवं उन्हें अति उत्तम जीवन प्रदान करेगा।

उसकी रह़मत ही है किः उसने सौ रह़मतें पैदा की, हरेक रह़मत आकाश एवं धरा के मध्य विस्तार तथा फैलाव के समान है, उन सौ रह़मतों में से केवल एक रह़मत को धरती पर नाज़िल फ़रमाया तथा उसे जीव-जंतुओं के बीच बाँट दिया ताकि वो एक-दूजे पर रह़म करें, इसी एक रह़मत के कारण माता अपने बच्चे पर रह़म करती है, एवं इसी कारणवश समस्त ब्रह्माण्ड का संचालन तथा प्रबंधन सुचारू रूप से हो रहा है।

❒ शुभ-सूचनाः

अल्लाह तआला की रह़मत (कृपा) के असीम व व्यापक होने को जानने के लिए निम्न आयत में गहन सोच-विचार करने की आवश्यकता हैः

﴿قُلۡ يَٰعِبَادِيَ ٱلَّذِينَ أَسۡرَفُواْ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمۡ لَا تَقۡنَطُواْ مِن رَّحۡمَةِ ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَغۡفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًاۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلۡغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ٥٣﴾

अनुवादः (आप कह दें मेरे उन भक्तों से जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश न हो अल्लाह की दया से, वास्तव में अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को, निश्चय ही वह अति क्षमी दयावान है)। सूरह ज़ुमरः 53।

सही ह़दीस़ से प्रमाणित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "यदि मोमिन को यह भान हो जाये कि अल्लाह के यहाँ कैसी-कैसी यातनाएं हैं तो कोई भी जन्नत (स्वर्ग) की आशा न रखे, और यदि काफ़िर यह जान ले अल्लाह की रह़मत (कृपा) कितनी असीम व अपरंपार है तो जन्नत में प्रवेश पाने से कोई भी निराश न हो"।

यह रह़मतें: सम्मान, प्रभुत्व तथा गर्व वाले एवं सर्वशक्तिमान की ओर से मिलने वाली रह़मतें हैं, न कि दुर्बल व कमज़ोर की रह़मतें।

﴿وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ٩﴾

अनुवादः (निःसंदेह आप का रब (पालनहार) ही प्रभुत्वशाली अति दयावान है)। सूरह शुअराः 9।

وأَشْهَدُ أنَّ اللهَ لا رَبَّ غيرَه   كَرِيمٌ رَحيمٌ يُرتَجَي وَيُؤَمَّلُ

अनुवादः मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई रब व पालनहार नहीं, वह दानवीर एवं अति दयावान है, उसी से उम्मीद व आशा रखी जाती है।

❒ रह़मत की कुंजियाँ:

अल्लाह तआला हम से तथा हमारी उपासनाओं से बेनियाज़ (निःस्पृह) है, हम केवल उसकी दया के सहारे ही जन्नत में प्रवेश पा सकते हैं, यहाँ तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अल्लाह की रह़मत एवं दया के कारण ही जन्नत (स्वर्ग) में प्रवेश पाएंगे। स़ह़ीह़ैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "किसी का कर्म उसे जन्नत में प्रवेश नहीं दिला पायेगा, सहाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछाः हे अल्लाह के रसूल! आपका भी नहीं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः नहीं, मेरा भी नहीं, सिवाय इसके कि मेरे ऊपर अल्लाह तआला अपनी कृपा व दया करे"।

जो व्यक्ति इस वास्तविकता से भली-भांति परिचित हो जाए उसे उपासना व पूजा में आशा व उम्मीद का दामन नहीं छोड़ना चाहिए, पाक व पवित्र अल्लाह की कृपा से जुड़े रहना

चाहिए एवं उसे पाने के लिए हरेक जतन करना चाहिए जो कि तक़्वा व ख़शीयत (धार्मिकता एवं अल्लाह से भय), ईमान एवं आज्ञापालन तथा पूजा-अर्चना करने से प्राप्त होती है, इन्हीं चीज़ों के द्वारा अल्लाह की कृपा का पात्र बना जाता हैः

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ﴾

अनुवादः (मेरी दया प्रत्येक वस्तु को अपने घेरा में लिये हुए है, मैं उसे उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो अवज्ञा से बचेंगे, तथा ज़कात (दान) देंगे, और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे)। सूरह आराफ़ः 156।

अल्लाह की कृपा व दया, अल्लाह के आदेशों के अनुपालन एवं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने से, प्राप्त होती है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ١٣٢﴾

अनुवादः (अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी बने रहो, ताकि तुम पर दया की जाए)। सूरह आले इमरानः 132।

﴿إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह की दया सदाचारियों के समीप है)। सूरह आराफ़ः 56।

﴿لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾

अनुवादः (तुम अल्लाह से क्षमा क्यों नहीं माँगते, ताकि तुम पर दया की जाए)। सूरह नम्लः 46।

पाक व पवित्र अल्लाह का स्मरण करने एवं अधिकाधिक दुआ (प्रार्थना) करने से भी अल्लाह की रहमत व दया प्राप्त होती है।

सुनन अबू दाऊद में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस़ वर्णित है किः "दुःख एवं विपदा में घिरे हुए लोगों के लिये यह दुआ हैः

اللهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو، فَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ، وَأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ
अर्थातः हे अल्लाह! मैं केवल तेरी ही कृपा व दया की आशा रखता हूँ, एक क्षण के लिए भी तू मेरी उपेक्षा व अनदेखी न कर, मेरे समस्त कार्य दुरुस्त व ठीक कर दे, तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद (सत्य पूज्य) नहीं"। (यह ह़दीस़ ह़सन है)।

अल्लाह की रह़मत, दया व कृपा केवल उन्हीं बंदों को प्राप्त होती है जो दूसरों पर रह़म करते हैं, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ है किः "अल्लाह तआला केवल उन्हीं बंदों पर दया करता है जो दूसरों पर दया करते हैं"। (इस ह़दीस़ को बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)। उदाहरण स्वरूप उस व्यभिचारी महिला को ही ले लीजिए जो जन्नत में केवल इस लिए प्रवेश पा गई कि उसने एक प्यासे कुत्ते पर दया करते हुए अपने मोज़े में पानी भर कर उस की प्यास बुझाई थी।

❒ शैतान तुम्हारे हौसला को पस्त न कर दे!

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो विपदा, परेशानी, दुःख, संकट एवं विपत्ति के समय अपने ईमान से विमुखता प्रकट करने लगते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि अल्लाह तआला उन पर स्वयं उनके अपने आप से भी अधिक दयालु व मेहरबान है! चुनाँचे वो रह़मान (अत्यंत दयावान) के द्वार को नहीं खटखटाते एवं न ही उसकी दया की आशा रखते हैं, जिसके फलस्वरूप वो शैतान के बहकावे में आ जाते हैं, बल्कि कभी-कभी तो शैतान उसे विनाश के दहाने तक पहूँचा देता है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَلَا تَقْتُلُوٓاْ أَنفُسَكُمْۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا﴾

अनुवादः (आत्महत्या न करो, वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिए अति दयावान है)। सूरह निसाः 29।

आप अपने आपको अक़ीदा (आस्था) की इस ख़राबी से बचाएं कि आप का गुनाह -चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो-, अल्लाह की रह़मत व दया से बढ़ कर है! शैतान आपको इसी भ्रम में डालना चाहता है, उसकी इच्छा यही है कि आपके पापों को आपकी दृष्टि में बड़ा जब्कि अल्लाह तआला की रह़मत व दया को मामूली बना दे।

अल्लाह तआला की रह़मत, दया व कृपा आपके पाप बल्कि हरेक पाप से अधिक बड़ा एवं व्यापक है, वह व्यक्ति जिसने निन्यानवे लोगों को क़त्ल करने के पश्चात सौ की

गिनती भी पूर्ण कर ली थी, परंतु अल्लाह तआला ने जब उसकी तौबा[1] की सच्चाई को देखा तो ऐसा जघन्य अपराध अंजाम देने वाले व्यक्ति को भी क्षमा कर दिया।

وإنَّني بِكَ اللهُمَّ رَبِّي لَوَاثِقُ   ومَا لِي بِبَابٍ غَيرَ بَابِكَ مَدخلُ

अनुवादः हे अल्लाह! मैं तुझ पर पूर्ण विश्वास रखता हूँ, तेरे द्वार के सिवा मेरे लिए कोई अन्य द्वार नहीं जहाँ मैं प्रवेश पा सकूँ।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿يَوۡمَ نَحۡشُرُ ٱلۡمُتَّقِينَ إِلَى ٱلرَّحۡمَٰنِ وَفۡدٗا ٨٥﴾

अनुवादः (जिस दिन हम एकत्रित कर देंगे आज्ञाकारियों को अत्यंत कृपाशील की ओर अतिथि बना कर)। सूरह मरियमः 85।

यह कितना बड़ा वादा है! वो कितने महान अतिथि होंगे! उस समय कितना सुंदर अनुभव होगा! अल्लाह तआला मुझे तथा आप सभी को अतिथि वाले उस समूह में शामिल फ़रमाये। आमीन।

हे अल्लाह! यदि हम इस योग्य नहीं कि तेरी रह़मत व कृपा को पा सकें, तो तेरी रह़मत व कृपा इस योग्य तो अवश्य है कि वह हमें पा ले, तेरी रह़मत हरेक वस्तु को अपने घेरा में लिये हुए है, हे सभी कृपालुओं से बढ़ कर कृपालु! हमें दुनियाँ व आख़िरत (लोक परलोक) में अपनी रह़मत में ढ़ाँप ले।

---

(1) प्रायश्चित, पछतावा, किसी अनुचित कार्य को भविष्य में न करने की शपथपूर्वक दृढ़-प्रतिज्ञा।

(9)

(अल-ह़य्य जल्ला जलालुहु)

जब दुःख एवं संकट के बादल आप के चहुँ ओर घिर जाते हैं तथा चिंता की बेड़ियाँ आप को जकड़ लेती हैं, मुक्ति के सारे मार्ग आप के समक्ष बंद प्रतीत होते हैं, आपको घुटन का अनुभव होने लगता है, मानो आत्मा शरीर का साथ छोड़ रही हो, ऐसा आभासा होता है कि विकट परिस्थितियां आपका गला घोंटने को तत्पर हैं तथा आप को सांस लेने में कठिनाई हो रही है, दुनियाँ आपके लिए तंग हो जाती है, लोग आप के आस-पास से दूर हो जाते हैं, आप एकाकी जीवन जीने को विवश हैं, न कोई आप का दिल बहलाता है न ही कोई सांत्वना देता है, उस समय आपको मृत्यु का पूर्ण विश्वास हो जाता है ...

ऐसी विषम परिस्थिति में आपका रब आप के शांति एवं समृद्धि के द्वार खोलता है, आपके भीतर आशा एवं शांति की आत्मा जाग्रत करता है, आपकी ओर मदद का हाथ बढ़ाता है, आपको जीवनदान देता है जब्कि मृत्यु को आप अपनी आँखों से देख चुके होते हैं, आप (रब की इस कृपा पर उसे धन्यवाद देते हुए) सअश्रु उसके समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं, और आपकी ज़ुबान इन वाक्यों को दोहराने लगती हैः हे चिरजीवी! हे आकाश एवं धरा को थामने वाले! तेरे ही लिए हर प्रकार का शुक्रिया एवं धन्यवाद है।

यह स्थिति तभी उत्पन्न होती है जब आप उस अमर अल्लाह पर भरोसा करते हैं जिसे मृत्यु नहीं आ सकतीः

﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْحَىِّ ٱلَّذِى لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِۦ ۚ وَكَفَىٰ بِهِۦ بِذُنُوبِ عِبَادِهِۦ خَبِيرًا ۝٥٨﴾

अनुवादः (आप भरोसा कीजिए उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गुणगान कीजिए उसकी प्रशंसा सहित, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को) सूरह फ़ुर्क़ानः 58।

हमारे पाक व पवित्र परवरदिगार ने अपनी ज़ात के लिए सिफ़त -ए- ह़यात (जीवित रहने की विशेषता) को प्रमाणित किया है, इस से अभिप्राय ऐसा जीवन है जो भूत काल में न तो कभी समाप्त हुई थी एवं न ही वह भविष्य में कभी समाप्त होगी, न उसके अंदर किसी प्रकार

की कोई त्रुटि है न ही ऐब, न उसे ग़फ़लत, संज्ञाहीनता तथा लाचारी पेश आती है, न ही उसे निद्रा एवं ऊँघ लगती है, और न ही उसे किसी भी सूरत में मृत्यु आने वाली हैः

﴿لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَّهُۥ﴾

अनुवादः (उसे ऊँघ तथा नींद नहीं आती)। सूरह बक़रहः 255।

महान एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह का जीवन मख़लूक़ (जीव-जंतु, रचना, सृष्टि) की समानता से पाक हैः

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ﴾

अनुवादः (उस के समान कोई चीज़ नहीं, वह बहुत सुनने एवं देखने वाला है)। सूरह शूराः 11)।

वह ऐसी ज़िंदगी है जो अल्लाह पाक व बरतर की सभी स़िफ़ात -ए- कमाल (पूर्णता की चरम सीमा से अलंकृत विशेषता) को लाज़िम है, जैसे उसका इल्म, उसकी समाअत व बस़ारत (सुनने तथा देखने की क्षमता), उसकी क़ुदरत (सामर्थ्य), उसका इरादा, तथा अपनी मर्ज़ी से वह जिस पर चाहे उस पर उस का रहम करना, एवं इन जैसी अन्य स़िफ़ात -ए- कमाल।

हमारा महान व सर्शक्तिमान अल्लाह अमर हैः जिससे ज़िंदगी नियत स्थान पर स्थिर है, जिसकी वजह से सभी जीवित प्राणी ज़िंदा हैं, उसके सिवा हरेक का जीवन अल्लाह पाक द्वारा जीवित रखने के कारण ही बरकरार है, जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿وَكُنتُمْ أَمْوَٰتًا فَأَحْيَٰكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾

अनुवादः (तुम मृत थे उसने तुम्हें जीवित किया, फिर तुम्हें मार डालेगा, तत्पश्चात जीवित करेगा, और तुम पुनः उसी की ओर लौटाए जाओगे)। सूरह बक़रहः 28।

हमारा पाक परवरदिगार वह है जो आत्माओं को ज्ञान बोध, मार्गदर्शन एवं ईमान की ज्योति से जीवनदान प्रदान करता है।

हमारा सर्वोच्च व महान रब वह है जो स्वर्गवासियों को सदा बाकी रहने वाली ज़िंदगी देगा, अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَإِنَّ ٱلدَّارَ ٱلْـَٔاخِرَةَ لَهِىَ ٱلْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾﴾

(आख़िरत का जीवन ही वास्तविक जीवन है, काश! ये जानते होते)। सूरह अन्कबूतः 64।

❒ स्पष्ट सबूतः

चिरजीवी एवं अमर वह (अल्लाह) है जिसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, जो उस पर भरोसा करता है उसके लिए वह काफी होता है, उसके इरादा पर किसी का ज़ोर नहीं चलता, उसे कोई चीज़ विवश नहीं कर सकती, वह संकटों को दूर करता एवं असहाय की फरियाद सुनता है, वही हड्डियों को सड़ने के पश्चात पुनः जीवित करेगा, जिस प्रकार से प्रथम बार प्राणियों का पैदा किया था उसी प्रकार से दोबारा उन्हें पैदा करेगा, दोबारा पैदा करना उसके लिए अधिक सरल है, वह हिकमत (तत्वदर्शिता) एवं विवेक वाला है जो कोई चीज़ बेकार पैदा नहीं करता एवं न ही किसी चीज़ को बेकार होने देता है।

इब्ने जरीर एवं बैहिक़ी ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से एक रिवायत नक़ल की है, जिसमें वह कहते हैं किः "आस़ बिन वाइल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा एक सड़ी हुई जर्जर हड्डी को उठा कर अपने हाथ से मसल दिया और (मरणोपरांत पुनः जीवित किए जाने का इंकार करते हुए) कहने लगाः कौन है जो इन सड़ी हुई हड्डियों को चूर-चूर हो जाने के बाद जीवित करेगा? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "हाँ, अल्लाह इसे पुनः जीवित करेगा, फिर तुम्हें मृत्यु देगा, तत्पश्चात तुम्हें जीवित करेगा, फिर तुम्हें जहन्नम में दाख़िल करेगा", इसके बाद अल्लाह तआला ने इस आयत से ले कर (सूरह यासीन की) अंतिम आयत तक नाज़िल फ़रमाईः

﴿أَوَلَمْ يَرَ ٱلْإِنسَـٰنُ أَنَّا خَلَقْنَـٰهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾﴾

अनुवादः (क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया? फिर भी वह खुला झगड़ालु है)। सूरह यासीनः 77। (यह ह़दीस़ सही है, इसे ह़ाकिम ने रिवायत किया है तथा इसको स़ह़ीह़ कहा है, और ज़हबी ने उनका समर्थन किया है)।

मानव कितना बड़ा कृतघ्न एवं ना शुक्रा है! अपनी पैदाइश को भूल गया तथा अपने पैदा करने वाला का इंकार करने लगा, जिस (अल्लाह) ने उसे पहली बार पैदा फ़रमाया, वही (अल्लाह) उसे दोबारा भी जीवित करेगा, क्योंकि पहली बार पैदा करने की तुलना में दूसरी

बार पैदा करना अधिक सरल है, और अल्लाह के लिए तो दोनों ही बार पैदा करना अत्यंत सरल है, क्योंकि पहली बार पैदा करना तथा दोबारा ज़िंदा करना, अल्लाह तआला के निकट दोनों ही एक समान हैं:

﴿وَهُوَ ٱلَّذِى يَبۡدَؤُاْ ٱلۡخَلۡقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ وَهُوَ أَهۡوَنُ عَلَيۡهِ﴾

अनुवादः (वही है जो पहली बार मख़लूक़ (प्राणियों) को पैदा करता है फिर उसे दोबारा पैदा करेगा, और यह तो उस पर बहुत आसान है) सूरह रूमः 27।

इज़्ज़त व सम्मान उसी के लिए है, क़ुदरत (शक्ति) एवं वैभव, महानता व अभिमान तथा राज-पाट सब उसी के लिए हैं, निर्णय उसी का चलता है और सभी क़ूव्वत उसी के लिए है, हर प्रकार की पाकी व बड़ाई उसी के लिए उचित है, वह कितान महान है! उसकी बादशाहत कैसी विशाल एवं उसका मर्तबा व रुत्बा कितना बुलंद है!।

❐ ब्रह्माण्ड की पुकार ...

पाक है वह ज़ात जिसने हर प्राणी को एक विशेष प्रकार का जीवन दिया, चुनाँचे फ़िरश्तों का जीवन मानव के जीवन से सम्यक भिन्न है, जिन्नातों का जीवन इंसानों के जीवन से जुदा है, पशु पक्षियों का जीवन इंसान, जिन्नात एवं फरिश्तों के जीवन से पूर्णतः अलग है। यहाँ तक कि निर्जीव वस्तुओं पर भी अल्लाह के नाम (ह़य्य अर्थात अमर व चिरजीवी) का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है, उनके अंदर भी एक प्रकार का जीवन पाया जाता है, उन निर्जीव वस्तुओं में भी उनके अनुकूल जीवन पाया जाता है, उदाहरण स्वरूप मूसा अलैहिस्सलाम की अस़ा (लाठी) को ले लिजिए, जिसके विषय में अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿فَأَلۡقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِىَ تَلۡقَفُ مَا يَأۡفِكُونَ ۝٤٥﴾

अनुवादः (अब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वह बना रहे थे)। सूरह शुअराः 45।

वृक्षों के अंदर भी एक विशेष प्रकार का जीवन पाया जाता है[1], इसीलिए खजूर का एक तना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वियोग में रोने लगा, स़ह़ीह़ बुख़ारी में आया है किः "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खजूर के एक तना से लग कर ख़ुत्बा

---

[1] वर्ष 1901 में 10 मई को भारतीय वैज्ञानिक सर जगदीश चंद्र बोस ने लंदन की रॉयल सोसाइटी में आविष्कार क्रेस्कोग्राफ के द्वारा यह साबित कर दिया था कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है। अनुवादक।

(भाषण) देते थे, जब मिम्बर (मंच) तैयार हो गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर से ख़ुत्बा देने लगे, इस पर वह तना रोने लगा तो आप ने उस पर अपना हाथ रखा (जिससे उसका रोना बंद हो गया)"। सुनन की रिवायत में है किः "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस तना के पास आए और उसे अपनी गोद में ले लिया तो वह शांत हो गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः यदि मैं इसे अपनी गोद में न लेता तो यह क़यामत तक रोता रहता"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने माजह ने रिवायत किया है)।

वृक्ष के इस बेज़ुबान धड़ के अंदर जीवन का पाया जाना क्या महान अल्लाह की निशानी नहीं है जो इस बात को प्रमाणित करती है कि वह अमर है, उसके सिवाय कोई सत्य पूज्य नहीं?!

وَفِي كُل شيَءٍ لَهُ آيَةٌ   تَدُلُّ عَلى أَنَّهُ الوَاحِدُ

अनुवादः हरेक वस्तु में उसकी निशानी मौजूद है, जो इस बात को प्रमाणित करती है कि वह तन्हा एवं अकेला है।

❒ चाहने वालों के हृदय ...

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

اللهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِعِزَّتِكَ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَنْ تُضِلَّنِي، أَنْتَ الْحَيُّ الَّذِي لَا يَمُوتُ، وَالْجِنُّ وَالْإِنْسُ يَمُوتُونَ

अर्थातः हे अल्लाह ! मैं तेरी इज़्ज़त की पनाह माँगता हूँ, तेरे सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं, इस बात से कि तू मुझे पथभ्रष्ट कर दे, तू वह ज़िंदा है जो कभी नहीं मरता, जब्कि जिन्न एवं इंसान मर जाते हैं। (इस ह़दीस़ को मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

इसमें कोई संदेह नहीं कि हिदायत व मार्गदर्शनः दिलों के ज़िंदा रहने का नाम है, जो कि उस अमर व चिरजीवी (अल्लाह) से मिलती है जिसके सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, चुनाँचे जो व्यक्ति हिदायत (मार्गदर्शन) का इच्छुक हो उसे चाहिए कि अमर तथा सदा जीवित रहने वाले अल्लाह से ही इसकी आशा रखे एवं उसी से माँगे, क्योंकि सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿هُوَ ٱلْحَىُّ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَٱدْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ ۗ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٦٥﴾﴾

अनुवादः (वह जीवित है, कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं है उसके सिवा, अतः विशेष रूप से उसकी वंदना करते हुए उसी को पुकारो, सब प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार अल्लाह के लिए है)। सूरह ग़ाफ़िरः 65।

हृदय जब ईमान एव अल्लाह की महानता के बोध से भरा होता है, तो जीवन सुखमय एवं संसार मधुर हो जाता है, बसीरत (दूरदृष्टि) बढ़ जाती है, दुःख एवं संकट के बादल छँट जाते हैं, चिंताओं से मुक्ति मिल जाती है तथा जीवन सुमधुर हो जाता है।

अल्लाह तआला के शुभ नाम मोमिनों के दिलों में प्रेम एवं चाहत उत्पन्न करते हैं, चुनाँचे वो इस लोक में भी भाग्यशाली होते हैं एवं परलोक में भी भाग्यशाली होंगेः

﴿مَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾﴾

अनुवादः (जो भी नेक अमल (सदाचार) करेगा, चाहे वह नर हो अथवा नारी, और ईमान वाला हो तो हम उसे स्वच्छ जीवन व्यतीत करायेंगे, और उन्हें उनका पारिश्रमिक उनके उत्तम कर्मों के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे)। सूरह नह़्लः 97।

इसके विपरीत जो व्यक्ति कुफ्र करता है, उसका जीवन दुःखमय एवं तंग हो जाता है, लोक एवं परलोक दोनों स्थानों पर उसका जीवन कठिन हो जाता है, क्योंकि अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِى فَإِنَّ لَهُۥ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ أَعْمَىٰ ﴿١٢٤﴾﴾

अनुवादः (जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण से, तो उसी का सांसारिक जीवन संकीर्ण (तंग) होगा, तथा हम उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अंधा कर के)। सूरह त़ाहाः 124।

यद्यपि वह अपने चरणों के सहारे चल-फिर रहा हो तथापि उसकी गिनती मृत लोगों में ही होती हैः

﴿أَمْوَٰتٌ غَيْرُ أَحْيَآءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾﴾

अनुवादः (मृत हैं जीवित नहीं, उन्हें तो यह भी भान नहीं कि कब उठाये जायेंगे)। सूरह नह़्लः 21।

لیسَ مَن مَاتَ فَاستَرَاحَ بِمَیّتٍ وإنَّما الَمیّتُ مَیّتُ الأحیاءِ

अनुवादः मृत वह नहीं है जो मरणोपरांत सुख-चैन (की बरज़ख़) वाली ज़िंदगी में चला जाता है, अपितु वास्तविक मृत वह है जो जीवित रह कर भी मृत में गिना जाता है।

❒ उसके समक्ष विनम्रता अपनाएं!

मुसनद अहमद में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब कोई कठिनाई पेश आती तो आप यह दुआ पढ़तेः

"يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ! بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ" "हे चिरजीवी व अमर! हे (आकाश व धरा को) थामने वाले! तेरी रहमत (कृपा) के वसीला व माध्यम से मैं तेरी सहायता चाहता हूँ"। (यह हदीस़ हसन है)।

इमाम नसई ने रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी सुपुत्री फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहाः "तुम्हें कौन सी चीज़ मेरी वस़ीयत पर अमल करने से रोकती है? तुम प्रातः काल एवं सांय काल में यह दुआ पढ़ा करोः "।

"يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ! بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ، أَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ، وَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ"

अनुवादः हे अमर एवं सदा जीवित रहने वाले! मैं तेरी रहमत के वास्ते से तेरी सहायता चाहती हूँ, मेरे सभी कार्य दुरुस्त फ़रमा दे, मुझे एक क्षण के लिए भी नज़र अंदाज़ न कर। (यह हदीस़ स़हीह़ है)।

तिर्मिज़ी एवं हाकिम रहिमहुमल्लाह ने इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो व्यक्ति यह कहेः

"أَسْتَغْفِرُ اللهَ العَظِيْمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ"

अर्थातः मैं क्षमा चाहता हूँ उस महान एवं उच्च अल्लाह से जिसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, जो जीवित है एवं प्रत्येक वस्तु का प्रबंधन करने वाला है, और मैं उसी के समक्ष तौबा करता हूँ, तो उसे क्षमा कर दिया जायेगा, यद्यपि वह सेना (अर्थात युद्ध) से भाग कर ही क्यों न आया हो। (यह हदीस़ स़हीह़ है)।

सुनन नसई में अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस़ है कि एक व्यक्ति ने दुआ में यह कहाः

"اللَّهمَّ إنّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْد، لا إله إلاَّ أَنْتَ الْمَنَّان، بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ، يَا ذَا الْجَلالِ وَالإكْرَام، يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ"

अर्थातः हे अल्लाह! मैं तुझ से माँगता हूँ इसलिए कि तेरे ही लिए सभी प्रशंसाएं हैं, सिवाय तेरे कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू बड़ा एहसान व उपकार करने वाला है, तू ही आसमानों एवं ज़मीन को अनोखे ढ़ंग से उत्पन्न करने वाला है, हे सम्मान एवं प्रताप तथा उपकार वाले, सदा जीवित रहने वाले एवं हरेक वस्तु का प्रबंधन करने वाले!। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह दुआ सुनी तो फ़रमायाः “इसने अल्लाह के उस महान नाम के द्वारा दुआ किया है कि जिसके द्वारा यदि दुआ की जाए तो वह स्वीकार करता है एवं जब इसके द्वारा माँगा जाए तो वह देता है”।

इब्नुल क़य्यिम रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: “स़िफ़त -ए- ह़यात (सदा जीवित रहने की विशेषता) सभी कामिल स़िफ़तों (पूर्ण विशेषताओं) को सम्मिलित है एवं उनको लाज़िम है, तथा स़िफ़त -ए- क़य्यूमियत (प्रत्येक वस्तुओं के उत्तम प्रबंधन का गुण) अफ़आल (क्रिया) से संबंधित सभी विशेषताओं को शामिल है, इस लिए (ये दोनों मिल कर) अल्लाह का इस्म -ए- आज़म (सबसे महान नाम) ठहरे कि जिनके द्वारा यदि दुआ की जाती है तो वह स्वीकार करता है और जब इनके द्वारा माँगा जाता है तो वह प्रदान करता है, वह नाम हैः अल-ह़य्य, अल-क़य्यूम (अर्थातः अमर एवं चिरजीवी तथा प्रत्येक वस्तुओं का उत्तम प्रबंधन करने वाला)”।

हे अल्लाह! मैं इस बात से तेरी इज़्ज़त एवं सम्मान की पनाह चाहता हूँ, तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, कि तू मुझे कुमार्ग कर दे, तू ही सदा जीवित रहने वाला है जिसे मौत नहीं आती, जब्कि इंसान एवं जिन्नात तो नश्वर हैं।

हे अल्लाह! हे अमर! हे प्रत्येक वस्तु की निगरानी करने वाले! तेरी रह़मत के वसीले से तेरी सहायता का इच्छुक हूँ, मेरे सभी कार्य दुरुस्त फ़रमा दे।

(10)

(अल-क़य्यूम जल्ल जलालुहु)

يا مُبدعَ الأَكوانِ أنتَ الوَاحِدُ　　　كلُّ الوُجُودِ عل وُجُودِكَ شاهِدُ
ياحَيُّ يا قَيُّومُ أنتَ المرتَجى　　　وإلى عُلاكَ عَلَا الجَبِينُ السَّاجِدُ

अनुवादः हे समस्त लोक को उत्पन्न करने वाले! तू तन्हा व अकेला है, हरेक प्राणी तेरे वजूद पर गवाह है। हे चिरजीवी! हे प्रत्येक चीज़ के निगहबान! तुझ से ही आशाएं जुड़ी हुई हैं, तेरी ही बुलंदी की ओर सज्दा करने (नतमस्तक होने) वालों के ललाट उठते हैं।

सुनन तिर्मिज़ी में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को नमाज़ के अंदर यह दुआ करते हुए सुनाः

"اللَّهمَّ إنّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْد، لا إله إلاَّ أَنْتَ الْمَنَّان، بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالأرْضِ، يَا ذَا الْجَلالِ وَالإكْرَام، يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ"

अर्थातः हे अल्लाह! मैं तुझ से माँगता हूँ इसलिए कि तेरे ही लिए सभी प्रशंसाएं हैं, सिवाय तेरे कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू बड़ा एहसान व उपकार करने वाला है, तू ही आसमानों एवं ज़मीन को अनोखे ढ़ंग से उत्पन्न करने वाला है, हे सम्मान एवं प्रताप तथा उपकार वाले, सदा जीवित रहने वाले एवं हरेक वस्तु का प्रबंधन करने वाले!।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह दुआ सुनी तो फ़रमायाः "इसने अल्लाह के उस महान नाम के द्वारा दुआ किया है कि जिसके द्वारा यदि दुआ की जाए तो वह स्वीकार करता है एवं जब इसके द्वारा माँगा जाए तो वह देता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से, यह संदेश है हर उस व्यक्ति के नाम, जो अपने जीवन में परेशानी का सामना कर रहा है किः अपने रब से जुड़ जाओ, उसके अतिरिक्त हरेक से अपने दिल को ख़ाली कर लो, फिर उस (अल्लाह) को यह कह कर पुकारोः (हे अमर व चिरजीवी ... हे हर वस्तु को नियत स्थान पर स्थिर रखने वाले!) क्योंकि वही है जो आपकी दुआओं को स्वीकार करता है एवं आपकी उम्मीदों से बढ़ कर आपको नवाज़ता है।

إلَيهِ وإلَّا لا تُشَدُّ الرَّكَائِبُ　　　ومِنهُ وإلَّا فالُمؤَمِّلُ خائِبُ

अनुवादः उसके अतिरिक्त किसी और की तरफ यात्रा करना उचित नहीं एवं न ही उसके सिवा किसी और से आशा रखना सही है, अन्यथा (उसके सिवा किसी और से) आशा रखने वाला निराश ही होता है।

आईये हम अल्लाह के सुंदर व शुभ नामों में से एक महान नाम में चिंतन-मनन करते हैं, और वह हैः (अल-क़य्यूम, अर्थात प्रत्येक वस्तु का उत्तम प्रबंधन करने वाला)।

अल्लाह पाक का फ़रमान हैः

﴿وَعَنَتِ ٱلْوُجُوهُ لِلْحَيِّ ٱلْقَيُّومِ﴾

अनुवादः (सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी अल्लाह के लिए)। सूरह ताहाः 111।

हमारा सम्माननीय रब (अपनी ज़ात एवं वजूद के साथ) मुतलक (व्यापक) तौर पर स्वयं अपने आप कायम है, उसे कायम एवं स्थिर रहने के लिए किसी अन्य की आवश्यकता नहीं, वह अपनी ज़ात के सिवा बाकी सब से बेनियाज़ व निःस्पृह हैः

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ أَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ إِلَى ٱللَّهِ ۖ وَٱللَّهُ هُوَ ٱلْغَنِيُّ ٱلْحَمِيدُ ﴿١٥﴾﴾

अनुवादः (हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह के, तथा अल्लाह ही निःस्वार्थ प्रशंसित है)। सूरह फ़ातिरः 15।

हमारा महान एवं उच्च रब वह है जिस के द्वारा आकाश एवं धरा के सभी प्राणी स्थिर हैं, उनके अस्तित्व का आधार केवल अल्लाह की ही ज़ात है, वह सब के सब पूर्णतया अल्लाह के मोहताज हैं, और अल्लाह तआला हर आधार पर उनसे बेनियाज़ है, यहाँ तक कि अर्श (सिंहासन) एवं उसको थामने वाले फ़रिश्ते भी (अल्लाह के ही कारण अस्तित्व में हैं), क्योंकि अर्श अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल से ही कायम है और अर्श को थामने वाले भी केवल महान अल्लाह के द्वारा ही बरकरार हैं।

हमारा पालनहार वह बुज़ुर्ग व महान (अल्लाह) है जो समस्त लोक एवं परलोक तथा उनके अंदर रहने वाले सभी प्राणियों का निगरान है, सभी परिस्थितियों में अल्लाह ही उनकी निगरानी करता है, उनके मामलों का प्रबंधन करता है, उन्हें जीविका प्रदान करता है तथा उनकी सुरक्षा करता है, एवं जीवन संबंधित सभी मामलों में हर समय एवं हर लम्हा उनकी देख-रेख करता है।

बल्कि अल्लाह तआला ही अपने बंदों की सुरक्षा करता है, उनके कर्मों एवं वक्तव्यों तथा उनकी नेकियों और गुनाहों को शुमार करता है, और वही आख़िरत के दिन उनके कर्मों का फल देगाः

﴿أَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا۟ لِلَّهِ شُرَكَآءَ قُلْ سَمُّوهُمْ ۚ أَمْ تُنَبِّـُٔونَهُۥ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى ٱلْأَرْضِ أَم بِظَـٰهِرٍ مِّنَ ٱلْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا۟ عَنِ ٱلسَّبِيلِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِنْ هَادٍ ۝٣٣﴾

अनुवादः (तो क्या जो प्रत्येक प्राणी के करतूत से अवगत है, और उन्होंने (उस) अल्लाह का साझी बना लिया है, आप कहिए कि उन के नाम बताओ, या तुम उस चीज़ से सूचित कर रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता, या ओछी बात करते हो? बल्कि काफ़िरों के लिए उन के छल सुशोभित बना दिये गये हैं, और सीधी राह से रोक दिये गये हैं, तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं)। सूरह रअदः 33।

उसके कमाल -ए- उलूहियत की दलील है किः बिना किसी स्तंभ के केवल उसके आदेश एवं क़ुदरत से धरती और आकाश स्थिर हो गये, तथा अपने स्थान पर जम गएः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُمْسِكُ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن زَالَتَآ إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝٤١﴾

अनुवादः (अल्लाह ही रोकता है आकाशों एवं धरती को खिसक जाने से, और यदि खिसक जायें वे दोनों तो नहीं रोक सकेगा उनको कोई उस (अल्लाह) के पश्चात, वास्तव में वह अत्यंत सहनशील क्षमाशील है)। सूरह फ़ातिरः 41।

❒ इबादत एवं पूजा के सबसे योग्य ...

वह अल्लाह सुब्हानहु व तआला ही है जोः अमर, सदा जीवित रहने वाला तथा चिर स्थिर है, समस्त लोक का पालनहार है, सभी दया करने वालों से बढ़ कर दयालु है, सभी सामर्थ्यवानों से बढ़ कर सामर्थ्यवान है, सभी हाकिमों का हाकिम है, उसी के लिए आरक्षित है ख़ालिक़ (उत्पत्ति करने वाला) तथा हाकिम होना, एवं वही लाभ-हानि का मालिक है।

जो मानव स्वभाव में सुप्रसिद्ध है ... बुद्धि ने जिसका इकरार किया, इस संसार की सभी चीज़ें जिस को प्रमाणित करती हैं, जिसके वजूद एवं सभी भाव-भंगिमा पर उसकी निगरानी की गवाही हरेक प्राणी ने दी ... जो असहाय एवं दुखियारे की पुकार को सुनता है जब वह उसे पुकारे, आशावान की मदद करता है जब वह उसे निदा लगाए, परेशानी को दूर करता, आपदा से मुक्ति देता एवं पापों का क्षमा करता है।

किसी भी प्रकार की विपदा के समय उसी से सहायता माँगी जाती है तथा हर प्रकार की भलाई एवं दानवीरता के लिए वह सुप्रसिद्ध है।

जिसके समक्ष सभी मुख विनीत हो कर झुके हुए हैं तथा सभी ध्वनियां पस्त हैं:

﴿وَعَنَتِ ٱلْوُجُوهُ لِلْحَيِّ ٱلْقَيُّومِ﴾

अनुवादः (सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी अल्लाह के लिए)। सूरह ताहाः 111।

वह इस बात के सर्वाधिक योग्य है कि उस का स्मरण किया जाए, उसकी उपासना की जाए, उसकी प्रशंसा की जाए, उसको धन्यवाद दिया जाए, जिनसे मदद चाही जाती है उनमें वह सर्वाधिक मदद करने वाला है, सबसे कृपालु व दयालु बादशाह, सबसे बड़ा दानी, सक्षम होने के बावजूद सबसे अधिक क्षमा करने वाला, नवाज़िश तथा अनुकंपा के लिए जिनका भी रुख़ किया जाता है उनमें सर्वाधिक नवाज़ने वाला, एवं प्रतिशोध लेने वालों में सबसे ज्यादा न्यायप्रिय है।

वह इल्म होने के बावजूद सहनशीलता अपनाता है, सक्षम होते हुए भी क्षमा कर देता है, अपनी शक्ति एवं वैभव के बाद भी माफ कर देता है तथा अपनी ह़िकमत एवं बुद्धिमत्ता के आधार पर ही किसी को वंचित करता है।

वह अल्लाह है जो अमर एवं सदा जीवित रहने वाला तथा चिर स्थिर है, कोई उसका शरीक व साझी नहीं, वह तन्हा व अकेला है जिसके समतुल्य कोई नहीं:

﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَيُّ ٱلْقَيُّومُ﴾

अनुवादः (अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थाई है)। सूरह बक़रहः 255।

अल्लाह ने सोच-विचार करने वालों के लिए अपना मार्दर्शन बिल्कुल स्पष्ट कर दिया, बस़ीरत (दूर दृष्टि) रखने वालों के लिए अपने लक्षण एवं चिह्न जाहिर कर दिए, ज्ञानियों के लिए अपनी निशानियां खोल-खोल कर बयान कर दीं, अत्याचारियों के लिए माज़रत एवं क्षमा याचना के सभी दरवाज़े बंद कर दिए, इंकार करने वालों की सभी दलीलों को बातिल एवं प्रभावहीन कर दिया, चुनाँचे रुबूबियत की निशानियां स्पष्ट हो गईं एवं उलूहियत के प्रमाण खुल कर सामने आ गए।

महान अल्लाह तो वह है जो अपनी मख़लूक़ (रचना) को स्थिर रखता है, वह उनका मोहताज नहीं, अपितु वो सब उसके मोहताज हैं: निकटवर्ति फ़रिश्ते एवं अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों के साथ-साथ आकाश एवं धरा के सभी प्राणी उसी के ऊपर आश्रित हैं:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ أَنتُمُ ٱلۡفُقَرَآءُ إِلَى ٱللَّهِۖ وَٱللَّهُ هُوَ ٱلۡغَنِيُّ ٱلۡحَمِيدُ ١٥﴾

अनुवादः (हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह के, तथा अल्लाह ही निःस्वार्थ प्रशंसित है)। सूरह फ़ात़िरः 15।

इज़्ज़त व सम्मान उसी के लिए है, महानता व अभिमान उसी को शोभता है, हुकूमत व राज-पाट उसी का है, निर्णय उसी के चलते हैं, शक्ति उसी के पास है, हर प्रकार की पाकी एवं पवित्रता उसी के लिए है ... वह अपनी विशेषताओं एवं कर्मों में पूर्ण हैः

﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ﴾

अनुवादः (अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थाई है, उसे ऊँघ एवं निद्रा नहीं आती, आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है)। सूरह बक़रहः 255।

अतः अल्लाह तआला को न तो नींद आती है एवं न ही उसे यह शोभता है कि वह सोए, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "अल्लाह सोता नहीं और उसके लिए उचित भी नहीं कि वह सोए, मीज़ान (तुला) को ऊपर नीचे करता है, रात्रि का कर्म दिन के कर्म के पूर्व तथा दिन का कर्म रात्रि के कर्म के पूर्व उस तक पहुँचा दिया जाता है, उसका ह़िजाब नूर है, यदि वह उसे हटा दे तो उसके मुख की आभा उन सभी प्राणियों को जहाँ तक उसकी दृष्टि पहुँचे जला कर राख कर दे"। (मुस्लिम)।

पाक है वह ज़ात जिसके नूर से आकाश एवं धरा रौशन तथा ज्योतिर्मय हैं एवं जिसके मुख की आभा से अंधेरे प्रकाशमान हैं, चिरजीवी व अमर तथा हर वस्तु की निगरानी करने वाला अल्लाह पाक है।

❒ निश्चिंत रहें!

जिस व्यक्ति को यह विश्वास हो जाए कि प्रत्येक वस्तु की देख-रेख करने वाला अल्लाह ही है, तो मख़लूक़ से मोह भंग हो कर उसका हृदय पूर्णरूपेण अपने उत्पत्ति कर्ता, जीविका प्रदान करने वाले तथा समस्त लोक का उत्तम ढ़ंग से प्रबंधन करने वाले अल्लाह से जुड़ जाता है। दिल के अंदर एक ऐसी तड़प भी है जिसे न तो धन सम्पदा शांत कर सकती है, न सांसारिक उच्च पद, न क्षणिक सामग्री तथा न ही शोहरत व प्रसिद्धि।

इसको शांति केवल उसी समय मिल सकती है जब अल्लाह तआला पर ईमान लाया जाए, उस पर इत्मीनान रखा जाए एवं उसी पर तवक्कुल व भरोसा किया जाए।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान हैः

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَتَطۡمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكۡرِ ٱللَّهِۗ أَلَا بِذِكۡرِ ٱللَّهِ تَطۡمَئِنُّ ٱلۡقُلُوبُ ٢٨﴾

अनुवादः (वह लोग जो ईमान लाये, तथा जिन के दिल अल्लाह के स्मरण से संतुष्ट होते हैं, सुन लो! अल्लाह के स्मरण से ही दिलों को संतोष मिलता है)। सूरह रअदः 28।

हे अल्लाह! हे चिरजीवी ... हे प्रत्येक वस्तु की निगरानी करने वाले! हम तेरे समक्ष प्रार्थनारत हैं कि तू हमारे पापों को क्षमा कर दे, हमारे गुनाहों पर पर्दा डाल दे, अपने आज्ञापालन पर हमारी सहायता कर, हमें जन्नत में प्रवेश दिला तथा जहन्नम से हमें निजात दे।

(11, 12)

(अल-मलिक, अल-मलीक जल्ल जलालुहु)

सहीह बुख़ारी में इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है, वह कहते हैं किः "यहूदी धर्मशास्त्रियों में से एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहाः हे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हम तौरात में लिखा हुआ पाते हैं कि (क़्यामत के दिन) अल्लाह तआला आसमानों को एक ऊँगली पर रख लेगा, धरती को एक ऊँगली पर, वृक्षों को एक ऊँगली पर, पानी एवं मिट्टी (अर्थात धरती) को एक ऊँगली पर तथा सभी प्राणियों को एक ऊँगली पर, फिर फ़रमायेगा किः मैं ही बादशाह हूँ, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस पर हंस दिये और आपके सामने के दांत दिखाई देने लगे। आपका यह हंसना उस यहूदी धर्मशास्त्री की पुष्टि के रूप में था, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयत की तिलावत कीः

﴿وَمَا قَدَرُواْ ٱللَّهَ حَقَّ قَدۡرِهِۦ وَٱلۡأَرۡضُ جَمِيعٗا قَبۡضَتُهُۥ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطۡوِيَّٰتُۢ بِيَمِينِهِۦۚ سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ٦٧﴾

अनुवादः (उन्होंने अल्लाह का वैसा सम्मान नहीं किया जैसा उसका सम्मान करना चाहिए था, और धरती पूरी उसकी एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन, तथा आकाश लिपटे हुए होंगे उसके हाथ में, वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं)। सूरह ज़ुमरः 67"।

अल्लाह जिस महानता का पात्र है उसे केवल वही जानता है ... !

उसके ज्ञान का बोध, उसके सिवा कोई और नहीं कर सकता ... !

उसकी स्थिति का सही अंदाज़ा उसके सिवा कोई नहीं लगा सकता ... !

उसके सिवा सही ढ़ंग से कोई भी उसकी प्रशंसा नहीं कर सकता ... !

फ़साहत, प्रभावी भाषा, रचनात्मकता एवं सभी अलंकार उसकी महानता के समक्ष अपनी विवशता एवं लाचारी का ऐलान करते हैं ... !

हमारे हृदय इस समय शर्म तथा लज्जा का अनुभव कर रहे हैं जब्कि हम महाराजा (अल्लाह) के उचित गुण का बखान करना चाहते हैं! हमारे लिए यह सम्मान की बात है कि हम उस महान एवं सर्वोच्च अल्लाह के वैभव तथा प्रताप के सामने अपनी नाक रगड़ें, हमारी

ज़ुबान एवं कलम को उसकी प्रशंसा करने का सम्मान प्राप्त हो, यदि हम उसकी बड़ाई, पाकी एवं बुज़ुर्गी का बखान करें तो यह भी हमारे ऊपर उस पाक व महान का उपकार ही है।

ومَا بلَغَ ا لُمهدُونَ نَحوَكَ مِدحَة وإن أَطنَبُوا، إنَّ الَّذِ ي فِيكَ أَعظمُ

अनुवादः तेरी प्रशंसा करने वाले चाहे जितनी भी प्रशंसा कर लें, वो तेरी प्रशंसा का हक नहीं अदा कर सकते, निःसंदेह तेरी ज़ात (समस्त प्रशंसाओं से) बढ़ कर है।

❒ अल्लाह के शुभ नामः अल-मलिक (बादशाह) की शीतल छाया में ...

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡمَلِكُ﴾

अनुवादः (वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, बादशाह है)। सूरह ह़श्रः 23।

हमार रब वह है जो अपनी बादशाहत में अपना हुक्म चलाता है, वह सभी राजाओं का राजा है, उसकी बादशाहत पूर्ण है, वह क़यामत के दिन का मालिक है, वह समस्त प्राणियों का बादशाह है, उसके ऊपर कोई बादशाह नहीं, हर चीज़ उसके मातहत है, वह हर चीज़ का अधिकार रखता है, उस पाक, पवित्र एवं महान (अल्लाह) को रोकने वाला कोई नहीं।

مَلِكٌ عَزِيزٌ لا يُفارِقُ عِزَّهُ يُقضَى ويُرجَى عِندَهُ الغُفرَانُ
مَلِكٌ لَهُ ظهرُ الفَضَاءِ وبَطنُه لم تُبلِ جِدَّةَ مُلكِهِ الأَزمَانُ
مَلِكٌ هُوَ المَلِكُ الذِي مِن حِلمِهِ يُعصَى يُحسن بلائه وَيُخَانُ
يَبلَى لِكُلِّ مُسلطَنٍ سُلطانه والله لا يَبلَى لهُ سُلطانُ

अनुवादः वह प्रभुत्व रखने वाला बादशाह है, जो अपने प्रभुत्व को कभी छोड़ नहीं सकता, उसी के पास क्षमा करने का निर्णय होता है एवं उसी से आशा रखी जाती है। वह ऐसा बादशाह है कि फ़ज़ा के बाहर एवं अंदर (अर्थात आसमान एवं ज़मीन) उसी की मिल्कियत में है, उसकी बादशाहत के नयेपन को ज़माने की गर्दिश प्रभावित नहीं करती। वह ऐसा राजा है कि उसकी सहनशीलता इस हद तक पहुँची हुई है कि वह परीक्षा के रूप में (बंदे को) पाप एवं विश्वासघात की (छूट देता है)। हरेक बादशाह की बादशाहत कमज़ोर पड़ती है एवं वह मैली तथा गदली हो जाती है, किंतु अल्लाह की बादशाहत कभी मैली नहीं होती।

ज्ञात हुआ कि वास्तविक बादशाहत केवल एक अल्लाह की ही है, जिसमें उसका कोई शरीक एवं साझी नहीं, उसके अतिरिक्त जिस को भी किसी चीज़ की मिल्कियत मिलती है वह अल्लाह तआला के प्रदान करने से ही मिलती है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

इर्शाद हैः "अल्लाह तआला के सिवा कोई वास्तविक स्वामी नहीं", एक रिवायत में इस प्रकार है किः "अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक बादशाह नहीं"। (ये दोनों ह़दीसें मुस्लिम ने रिवायत की हैं)।

﴿قُلِ ٱللَّهُمَّ مَٰلِكَ ٱلۡمُلۡكِ تُؤۡتِي ٱلۡمُلۡكَ مَن تَشَآءُ وَتَنزِعُ ٱلۡمُلۡكَ مِمَّن تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَآءُۖ بِيَدِكَ ٱلۡخَيۡرُۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ٢٦﴾

अनुवादः (-हे नबी!- कहोः हे अल्लाह! राज्य के अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य दे और जिस से चाहे राज्य छीन ले, तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहे अपमान दे, तेरे ही हाथ में भलाई है, निःसंदेह तू जो चाहे कर सकता है)। सूरह आल -ए- इमरानः 26।

चुनाँचे हमारा महान व सर्वशक्तिमान रब ही आकाश एवं धरा के ख़ज़ानों का स्वामी है, उसी के हाथ में हर प्रकार की भलाई है, वह जिसे चाहता है भरपूर जीविका व रोज़ी देता है।

वह अल्लाह ही है जो जीवन-मरण एवं मरणोपरांत जीवनका स्वामी है, हर प्रकार की लाभ-हानि उसी के स्वामित्व में है, सभी मामले उसी की ओर लौटते हैं।

वह अपने आधिपत्य में जैसे चाहता है हेर-फेर करता है, वह हर रोज़ एक नई शान में होता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "उसकी शान में से यह है कि वह किसी के पाप को क्षमा कर देता है, किसी की विपदा को दूर कर देता है, किसी क़ौम को बुलंदी एवं किसी को गौण कर देता है"। (सुनन इब्ने माजह)।

यह अल्लाह पाक की बादशाहत है, जिसे चाहता है नवाज़ता हैः

﴿وَٱللَّهُ يُؤۡتِي مُلۡكَهُۥ مَن يَشَآءُۚ﴾

अनुवादः (अल्लाह जिसे चाहे अपना मुल्क दे)। सूरह बक़रहः 247।

मुसनद अह़मद में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "ज़माना अर्थात युग को गाली न दो, क्योंकि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता हैः मैं ही युग हूँ, दिन व रात मेरी ही मिल्कियत हैं, मैं ही उनको नया एवं पुराना करता हू (अर्थात दिन एवं रात्रि को उलट-फेर करता हूँ), और मैं ही (पुराने) राजाओं के पश्चात (नये) राजा चुनता हूँ"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है एवं इसका प्रारंभिक भाग स़ह़ीह़ मुस्लिम में भी है)।

أينَ الملُوكُ ذَوُو التيجَانِ مِن يَمن   وأَينَ مِنهُم أَكَاليلٌ وتيجَانُ

أَتَى على الكُل أَمرٌ لا مَرَدَّ لَه   حتَّى قَضَوا فَكَأَنَّ القَومَ مَا كَانُوا

अनुवादः यमन के ताजदार (मुकुट धारी) राजा कहाँ गए एवं उनके शाही मुकुट कहाँ हैं? उन सब पर ऐसा समय आया जिसे वो टाल नहीं सके यहाँ तक कि वो ऐसे मिटे मानो इसके पूर्व उनका कोई वजूद ही नहीं था।

❒ शैतान ने उनके लिए उनके कुकर्मों को सुसज्जित बना दिया ...

जब अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को क्षणिक राज-पाट दिया तो वह समझने लगा कि वही वास्तविक स्वामी है, चुनाँचे लोगों पर अभिमान, अत्याचार एवं ज़्यादती करने लगा, उसकी स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि वह अपने लिए बादशाहत एवं उलूहियत का दावा करने लगाः

﴿وَقَالَ فِرۡعَوۡنُ يَٰٓأَيُّهَا ٱلۡمَلَأُ مَا عَلِمۡتُ لَكُم مِّنۡ إِلَٰهٍ غَيۡرِي﴾

अनुवादः (फ़िरऔन कहने लगा, हे दरबारियों! मैं तो अपने सिवा किसी को तुम्हारा आराध्य नहीं जानता)। सूरह क़ससः 38।

इसी कारणवश सर्वशक्तिमान अल्लाह ने उसका नाश कर दिया एवं क़यामत तक आने वाले सभी राजाओं महाराजाओं के लिए उसे एक इबरत (सीख) बना दिया, ताकि उनका राज-पाट उन्हें उद्दंडता में लिप्त कर के उनकी वास्तविकता, कमज़ोरी, दुर्बलता एवं जिसका वादा किया गया है उस क़यामत के दिन से लापरवाह न कर दे।

यद्यपि सांसारिक राजाओं महाराजाओं को इस जीवन में बादशाहत ही की तरह स्वतंत्रता एवं प्रभुत्व प्राप्त होता है, जिसके आधार पर वो ज़ीमन जायदाद, गढ़ी, महल एवं उपवन तथा सोने चाँदी के स्वामी होते हैं, तथापि उनके पास केवल दो ही विकल्प होते हैं: या तो ये राज-पाट उन से दूर हो जाये अथवा वह इस राज-पाट से किसी कारणवश दूर हो जाएं, क्योंकि यह नष्ट होने वाला राज-पाट एवं ऐसा ऋण है जिसे लौटाया जाना अनिवार्य है।

अल्लाह तआला ने उन्हें यह याद दिलाया है कि अंततः उन्हें लौट कर अल्लाह की ओर ही जाना हैः

﴿وَلِلَّهِ مُلۡكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَاۖ وَإِلَيۡهِ ٱلۡمَصِيرُ﴾

अनुवादः (आकाश एवं धरा तथा उनके बीच जो कुछ है सभी अल्लाह की मिल्कियत है एवं उसी की ओर लौटना है)। सूरह माइदहः 18।

❒ क़्यामत के दिन का मालिक ...

क़्यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह तआला अपने दाहिने हाथ में आसमानों को एवं दूसरे हाथ में ज़मीन को उठायेगा, जैसाकि अल्लाह जल्ला शानुहु का फ़रमान हैः

﴿وَمَا قَدَرُواْ ٱللَّهَ حَقَّ قَدۡرِهِۦ وَٱلۡأَرۡضُ جَمِيعٗا قَبۡضَتُهُۥ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطۡوِيَّٰتُۢ بِيَمِينِهِۦۚ سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ٦٧﴾

अनुवादः (उन्होंने अल्लाह का वैसा सम्मान नहीं किया जैसा उसका सम्मान करना चाहिए था, और धरती पूरी उसकी एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन, तथा आकाश लिपटे हुए होंगे उसके हाथ में, वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं)। सूरह ज़ुमरः 67"।

स़ह़ीहैन (बुख़ारी एवं मुस्लिम) में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़्यामत के दिन अल्लाह तआला ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लेगा एवं आसमान को अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा, फिर फ़रमायेगाः वास्तविक बादशाह मैं हूँ, ज़मीन (दुनियाँ) के बादशाह कहाँ हैं?"।

स़ह़ीह़ मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की यह ह़दीस़ आई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़्यामत के दिन अल्लाह तआला आसमानों को लपेट लेगा तथा उनको दाहिने हाथ में ले लेगा, फिर फ़रमायेगाः मैं बादशाह हूँ, कहाँ हैं ताकत वाले? कहाँ हैं घमंड करने वाले? तत्पश्चात बाएं हाथ से ज़मीन को लपेट लेगा, फिर फ़रमायेगाः मैं बादशाह हूँ, कहाँ हैं ताकत वाले? कहाँ हैं अभिमान एवं घमंड करने वाले?"।

क़्यामत के दिन रब्बुल आलमीन यह सदा लगाएगाः ﴿لِّمَنِ ٱلۡمُلۡكُ ٱلۡيَوۡمَۖ﴾ अनुवादः (आज किसका राज-पाट है?!)। सूरह ग़ाफ़िरः 16।

कोई उत्तर नहीं दे सकेगा, फिर अल्लाह तआला स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर देते हुए फ़रमायेगाः ﴿لِلَّهِ ٱلۡوَٰحِدِ ٱلۡقَهَّارِ﴾ अनुवादः ((आज राज-पाट) केवल अकेले प्रभुत्वशाली अल्लाह का है)। सूरह ग़ाफ़िरः 16।

❑ उसका राज-पाट तथा बादशाहत मुकम्मल व पूर्ण हैः

सर्वशक्तिमान अल्लाह ही वास्तविक बादशाह है, और वह हमारी इबादत से बेनियाज़ है, परंतु बंदों पर उसके उत्तम दयालुता एवं उपकार का एक रूप यह भी है किः उसने अपने नाम मलिक (अर्थात बादशाह) को अपने अन्य नामों के साथ जोड़ कर बयान किया है ताकि दिलों को शांति मिले एवं उससे मिलने की ललक उत्पन्न हो, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान हैः ﴿ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝٣ مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ۝٤﴾ अनुवादः (अति दयालु निहायत कृपालु। बदले के दिन (अर्थात क़्यामत) का मालिक है)। सूरह फ़ातिह़ाः 3-4।

एक स्थान पर अल्लाह रब्बुल आलमीन फ़रमाता हैः

﴿هُوَ ٱلرَّحۡمَٰنُ ٱلرَّحِيمُ ۝٢٢ هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡمَلِكُ﴾

अनुवादः (अत्यंत कृपाशील एवं बड़ा दयावान है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, बादशाह है)। सूरह ह़श्रः 22-23।

इस प्रकार से अल्लाह तआला हमें यह सूचना दे रहा है कि बादशाहत बिना भलाई व उपकार के, तथा दया एवं करुणा के बिना पूर्णरूपेण मोहक एवं मनोहर नहीं होती, इसलिए अल्लाह तआला दयालु व कृपालु बादशाह है।

हमारे महान रब की बादशाहत किसी भी प्रकार की त्रुटि से पाक हैः

﴿يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ ٱلۡمَلِكِ ٱلۡقُدُّوسِ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡحَكِيمِ ۝١﴾

अनुवादः (अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं वो सब चीज़ें जो आकाशों तथा धरती में हैं, जो अधिपति, अति पवित्र, प्रभावशाली गुणी (दक्ष) है)। सूरह जुमुआः 1।

चूँकि सांसारिक राजाओं महाराजाओं के अंदर अनेक प्रकार की त्रुटियाँ होती हैं, जैसे घमंड व अभिमान, अपनी मनमानी करने का रोग एवं अत्याचारी होना, इसलिए अल्लाह तआला ने हमें यह सूचना दी है कि उसकी बादशाहत अपने चरम को पहुँची हुई है, जिसके अंदर पूर्णता के सभी गुण अति उत्तम रूप में विधमान हैं, इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब वित्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो तीन बार यह दुआ पढ़तेः ‘‘सुब्ह़ानल मलिकिल क़ुद्दूस, "سُبحانَ المَلِكِ القُدُوس" (अर्थातः पाकी व पवित्रता है उस बादशाह के

लिए जो (किसी भी प्रकार की त्रुटि से) पुनीत एवं पाक है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इमाम नसई ने रिवायत किया है)।

बंदे पर वाजिब है कि अल्लाह की बादशाही एवं उसकी रह़मत व दया पर, सदैव उसकी ह़म्द व प्रशंसा करता रहे, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿لَهُ ٱلْمُلْكُ وَلَهُ ٱلْحَمْدُ﴾

अनुवादः (उसी का राज-पाट है तथा उसी की तारीफ़ व प्रशंसा है)। सूरह तग़ाबुनः 1।

वह अपनी बादशाहत में प्रशंसनीय है, क्योंकि जो बादशाहत प्रशंसा रहित हो उसमें त्रुटि का पाया जाना अनिवार्य है, जब्कि बादशाहत के साथ प्रशंसा एवं तारीफ़ का पाया जाना पूर्णता की चरम सीमा तथा प्रताप व जलाल की पराकाष्ठा है।

उसकी बादशाहत की महानता का आलम यह है किः जब कोई उससे आश्रय माँगता है तो वह उसे आश्रय प्रदान करता है, और अल्लाह जिसका सर्वनाश करना चाहे उसे कोई आश्रय नहीं दे सकता और न ही उसकी रक्षा कर सकता हैः

﴿قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾﴾

अनुवादः (आप उन से पूछिये कि समस्त चीज़ों का अधिकार किसके हाथ में है? जो पनाह देता है एवं जिसके विरुद्ध किसी को पनाह नहीं दिया जाता, यदि तुम जानते हो (तो बताओ)। सूरह मूमिनूनः 88।

يا مالِكا هُوَ بِالنَّواصِي آخذُ وقَضاؤُهُ فِي كُل شيءٍ نافِذُ
أنَا عَائِذٌ بِكَ يا كَرِيمُ ولم يَخِب عَبدٌ بِعِزّكَ مُستَجِيرٌ عَائِذُ

अनुवादः हे वास्तविक बादशाह जो सभी ललाटों (मानवों) का स्वामी है, और जिसका निर्णय हर चीज़ में चलता है। हे अति दयालु (रब) मैं तेरी पनाह का तलबगार हूँ, वह बंदा कभी अपमानित नहीं हो सकता जो तेरी इज़्ज़त व प्रताप की पनाह में आए।

❒ हे रब! जिसका राज-पाट कभी समाप्त नहीं होगा ...

सीरत लिखने वालों ने लिखा है किः "जब हारून रशीद ने अपना मह़ल बनवाया जो इतना शानदार था कि उस जैसा सुंदर व आलीशान मह़ल उन्होंने अपने युग में कहीं नहीं देखा

था, तो लोग उसे शुभकामना देने के लिए आए, उन लोगों के साथ अबुल अताहिया भी था, उसने खड़े हो कर यह पंक्तियां कहीः

عِش ما بَدا لَكَ سَالِمًا   فِي ظِلِّ شاهِقَةِ القُصُورِ
يَسعَى إِلَيكَ بِما اشتهَيتَ   لَدَى الرَّوَاحِ وَفِي البُكُورِ
يَجرِى عَلَيكَ بِما أَرَدتَ   معَ الغُدُوِّ مَعَ البُكُورِ
فإذا النُّفُوسُ تَقَعقَعَت   فِي ظِل حَشرَجَةِ الصُّدُورِ
فَهُناكَ تَعلَمُ مَوقِناً   مَا كُنتَ إلا فِي غُرُورِ

अनुवादः आलीशान महल व गढ़ी की छाँव में जब तक चाहो कुशल-क्षेम व सलामती के साथ रहो।

सुबह व शाम तेरी मर्जी के अनुसार तेरी सेवा की जाती रहेगी।

प्रत्येक सुबह तुझे तेरी चाहत के सामान उपलब्ध कराए जाते रहेंगे।

जब सीने से आत्मा निकलते समय रूह़ बेचैन हो जायेगी।

तब विश्वास हो जायेगा कि तुम केवल धोखा में थे।

यह सुन कर हारू रशीद रोने लगे यहाँ तक कि बेसुध हो कर ज़मीन पर गिर गए, और एक महीन के अंदर ही उनकी मृत्यु हो गई।

यह उस हारून की स्थिति है जिसने बादल से कहा थाः "तू चाहे जहाँ भी बरसे (उससे उगने वाले अनाज का) टेक्स मेरे पास पहुँच कर रहेगा"! वह हारून ... जो एक वर्ष हज करता था तथा दूसरे वर्ष युद्ध में शामिल होता था!

अब्दुल मलिक बिन मरवान जो इस्लामी दुनियाँ का शासक था जब वह मरणासन्न हुआ तो उसने अपने महल के निकट एक धोबी को देखा जो प्रसन्नचित्त मुद्रा में गुनगुनाते हुए जा रहा है, इस पर अब्दुल मलिक ने कहाः काश मैं एक धोबी होता! काश मैं बादशाहत एवं ख़िलाफ़त से अंजान रहता! फिर उसके प्राण पखेरु उड़ गए।

कोई यह कहता हुआ (सुना गया) किः ऐ वह! कि जिसकी बादशाहत कभी समाप्त होने वाली नहीं, उस पर रह़म फ़रमा जिसकी बादशाहत समाप्त हो चुकी, जब सईद बिन मुसय्यिब रह़िमहुल्लाह ने ये बातें सुनी तो जवाब में कहाः "सभी प्रकार की प्रशंसाएं उस अल्लाह के

लिए है जिसने इन (सांसारिक राजाओं महाराजाओं) को मरणासन्न स्थिति में हमारी ओर फिरने पर विवश कियी और हमें उनकी पनाह लेने पर विवश नहीं किया"।

❒ बादशाह के द्वार को खटखटाइए!

मेरे प्रिय पाठकगण! रोग समाप्त एवं संकट दूर हो जाता है, गुनाह माफ हो जाता है, ऋण अदा हो जाता है, क़ैदी को रिहाई मिल जाती है, भटका हुआ घर वापस आ जाता है, गुनाहगार तौबा कर लेता एवं निर्धन धनवान हो जाता है ... ये सब पाक व पवित्र शहंशाह (अल्लाह) के हाथ में है, इसलिए हर घड़ी हर क्षण, विशेष रूप से रात के अंतिम पहर में आप अल्लाह की ही पनाह माँगिए एवं उसी से आशा रखिये, अल्लाह तआला हर रात आसमान -ए- दुनियाँ (सांसारिक आकाश) पर नाज़िल होता है एवं यह पुकार लगाता है किः "मैं बादशाह हूँ, मैं बादशाह हूँ, कौन है जो मुझे पुकारे और मैं उसकी दुआ स्वीकार करूँ? कौन है जो मुझ से माँगे और मैं उसे नवाज़ दूँ? कौन है जो मुझसे क्षमा माँगे और मैं उसे क्षमा कर दूँ? फज्र के समय तक अल्लाह तआला यही निदा लगाता रहता है"।

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कि सभी प्राणियों में सर्वाधिक अल्लाह को जानने वाले एवं सबसे ज्यादा रब के उपासक थे, उन्होंने हमें प्रेरणा दी है कि हम नमाज़ से फारिग होने के पश्चात अति शीघ्र, एवं रात्रि को निद्रा से जागने के समय हम अल्लाह तआला की बादशाही का इकरार करें, उसका गुणगान करें, हमारी प्रातः काल एवं सांय काल की दुआओं में यह शामिल हो तथा यात्रा से लौटने के पश्चात भी हम इसे दोहराएं, इसके अतिरिक्त यदि आप दिन भर में सौ बार इसका विर्द और वज़ीफ़ा करें तो आप सफल लोगों में से हैं:

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस हैः "जो व्यक्ति दिन भर में सौ बार यह दुआ पढ़ेगाः

لا إله إلا اللهُ، وَحْدَهُ لا شريكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، ولَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلى كُلِّ شَيءٍ قديرٌ

अर्थातः (अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, उसका कोई साझी नहीं, मुल्क उसी का है, सभी प्रशंसाएं उसी के लिए हैं और वह हर चीज़ करने में सक्षम है), तो उसे दस दास स्वतंत्र करने के समान पुण्य मिलेगा, सौ नेकियां उसके नाम -ए- आमाल में लिखी जायेंगी एवं सौ बुराईयां उससे मिटा दी जायंगी, उस रोज़ दिन भर यह दुआ शैतान से उसकी सुरक्षा करती

रहेगी, यहाँ तक कि शाम हो जाए, और कोई व्यक्ति उससे बेहतर कर्म ले कर नहीं आयेगा, सिवाय उसके जो उससे भी अधिक इस दुआ को पढ़ ले"।

हे अल्लाह ! हे क़यामत के दिन के मालिक! जीवन के अंतिम क्षण को हमारे जीवन का सबसे उत्तम भाग बना दे, और हे समस्त लोक के पालनहार! हमारे लिए हिसाब किताब को सरल कर दे।

(13)

(अल-सुब्बूह़ जल्ल जलालुहु)

उलेमा कहते हैं किः तौह़ीद -ए- अस्मा व स़िफ़ात दो स्तंभों पर आधारित है, और यही तौह़ीद का सार भी हैः

1- अस्मा व स़िफ़ात (नाम तथा विशेषता) एवं अफ़आल (कर्म) में अल्लाह तआला का कमाल (पूर्ण एवं अति उत्तम होना) प्रमाणित करना।

2- अल्लाह तआला को उन समस्त ऐब एवं त्रुटियों से पाक व पवित्र मानना जो उसकी ज़ात, स़िफ़ात एवं अफ़आल के कमाल के विरुद्ध हैं।

हमारे ऊपर अल्लाह की रह़मत व कृपा ही है कि उसने हमें इसका ढ़ंग भी सिखलाया और वह यह है कि हम उसकी तस्बीह़ (स्मरण) किया करें, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान हैः ﴿وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾﴾ अनुवादः (सुबह शाम उसकी पाकी बयान करो)। सूरह अह़ज़ाबः 42।

سُبحَان مَن هُوَ لا يَزَالُ مُسَبحاً   أبدًا وليس لِغَيرِهِ السُّبحان

سُبحانَ مَن فِي ذِكرِهِ طُرقِ الرِضا   منه وفيهِ الرُّوحُ والرَّيْانُ

अनुवादः पाक है वह ज़ात जिसकी सदैव पवित्रता बयान की जाती रहती है, उसके सिवा किसी और के लिए पाकी नहीं है। पाक व दोष रहित है वह ज़ात जिस का स्मरण करने से उसकी रज़ा, प्रसन्नता एवं राह़त व ख़ुशी प्राप्त होती है।

हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ एवं सज्दे में यह दुआ पढ़ा करते थेः سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ (अर्थातः फ़रिश्तों एवं जिब्रील का रब हर प्रकार के ऐब, दोष एवं त्रुटि से पाक है)। (मुस्लिम)।

अरबी शब्द कोष के अनुसार, तस्बीह़ का शाब्दिक अर्थ होता हैः पाकी व पवित्रता बयान करना, सब्बह़ल्लाह (سبَّح الله) का अर्थ होता हैः उसने अल्लाह को हर प्रकार के ऐब एवं दोष से पाक करार दिया।

हमारा महान व सर्शक्तिमान रब हर ऐब, दोष एवं त्रुटि से पाक व पवित्र है, उस पाक व पवित्र के लिए कमाल -ए- मुत़लक़ (व्यापक पूर्णता) है।

❑ तू अधिक योग्य है ...

समस्त ब्रहाम्णड एक इबादत गाह (पूजा स्थल) है, इसमें बसने वाला प्रत्येक प्राणी अल्लाह की पाकी व पवित्रता का बखान करता है, और यह अल्लाह की सबसे बड़ी इबादत व पूजा है।

आसमान में रहने वाले इन फ़रिश्तों को ही देख लें:

﴿قَالُوٓاْ أَتَجۡعَلُ فِيهَا مَن يُفۡسِدُ فِيهَا وَيَسۡفِكُ ٱلدِّمَآءَ وَنَحۡنُ نُسَبِّحُ بِحَمۡدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَۖ قَالَ إِنِّيٓ أَعۡلَمُ مَا لَا تَعۡلَمُونَ﴾

अनुवादः (उन फ़रिश्तों ने कहाः क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं? (अल्लाह ने) कहाः जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते)। सूरह बक़रहः 30।

ब्रह्माण्ड की हरेक वस्तु अपने ख़ालिक़ (उत्पत्ति कर्ता) की पाकी बयान करती है, एवं सदैव पूर्णरूपेण अपने ख़ालिक़ का स्मरण करती रहती है, सिवाय कुफ्र करने वाले इंसान एवं जिन्नात के।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿تُسَبِّحُ لَهُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ ٱلسَّبۡعُ وَٱلۡأَرۡضُ وَمَن فِيهِنَّۚ وَإِن مِّن شَيۡءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهِۦ وَلَٰكِن لَّا تَفۡقَهُونَ تَسۡبِيحَهُمۡۚ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورٗا ٤٤﴾

अनुवादः (उसकी पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है, और नहीं है कोई चीज़ परंतु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किंतु तुम उनके पवित्रता गान को समझते नहीं हो, वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है)। सूरह बनी इस्राईलः 44।

अल्लाह तबारक व तआला हरेक प्रकार की तस्बीह, स्मरण (ज़िक्र) एवं पाकीज़गी का अधिकारी है, क्योंकि वह अपनी ज़ात एवं सिफ़ात में कामिल व पूर्ण है।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः “एक चींटी ने एक नबी को काट लिया था, तो उनके आदेश पर

चींटियों के सारे घर जला दिये गये, इस पर अल्लाह तआला ने उनके पास वह्य (प्रकाशना) भेजी कि यदि तुम्हें एक चींटी ने काट लिया तो तुमने एक ऐसे जीव को जला कर राख कर दिया जो अल्लाह तआला की तस्बीह़ बयान करता था"। (इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है, एवं उपरोक्त शब्द बुख़ारी के हैं)।

पर्वत एवं पक्षि भी अल्लाह की तस्बीह़ बयान करते हैं, बल्कि हरेक जीव-जंतु अल्लाह की तस्बीह़ बयान करती हैः

﴿وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُۥدَ ٱلْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَٱلطَّيْرَ ۚ وَكُنَّا فَٰعِلِينَ﴾

अनुवादः (और हमने अधीन कर दिया था दाऊद के साथ पर्वतों को जो (अल्लाह की पवित्रता का) वर्णन करते थे तथा पक्षियों को, और हम ही इस कार्य के करने वाले थे)। सूरह अम्बियाः 79।

हम इंसान तो इस बात के अधिक हकदार हैं कि अल्लाह तआला की तस्बीह़ बयना किया करें।

किसी सलफ़ (नेक पूर्वज) का कथन हैः "क्या तुम में से किसी को लज्जा नहीं आती कि उसकी सवारी जिस पर वह सवार होता है तथा वह वस्त्र जिसे वह धारण करता है, वो उससे अधिक अल्लाह का स्मरण करते हैं"।

❒ सुनने वाले कान एवं श्रवणेंद्रिय ...

जब नेक व सालेह लोगों (साधु संतों) को पुण्य का ज्ञान प्राप्त होता है, और वह यह जान जाते हैं कि तस्बीह़ करना अल्लाह के निकट सबसे प्रिय क्रिया है तो वह हर स्थिति में तस्बीह़ करने में एक दूसरे से आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा करते हैं, क्योंकि बड़ी सरलता के साथ मिलने वाली नेमत है यह, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ है किः "दो कलेमा ज़ुबान पर हल्के हैं किंतु तराज़ु पर (आख़िरत में) भारी होंगे, और अल्लाह रह़मान के यहाँ सबसे प्रिय हैं, वह यह हैं: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ, सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही सुब्हानिल्लाहिल अज़ीम, (अर्थातः अल्लाह की पवित्रता का गुणगान करता हूँ एवं उसकी प्रशंसा करता हूँ, महान अल्लाह की महानता का बखान करता हूँ)। (इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "जिसने दिन भर में सौ बार سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ, सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिहि, (अर्थातः अल्लाह की पवित्रता का गुणगान करता हूँ) कहा, तो उसके गुनाह माफ कर दिए जाते हैं, चाहे वह समुद्र की झाग के समान ही क्यों न हों"। (इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क्या तुम में से कोई इस बात से विवश है कि प्रत्येक दिन हज़ार नेकियां एवं पुण्य कमाए? आपके पास मौजूद (सहाबा में से) किसी ने प्रश्न कियाः हम में से कोई कैस हज़ार नेकियां कमा सकता है? आप ने फ़रमायाः जो सौ बार सुब्ह़ानल्लाह कहे तो उस के लिए हज़ार नेकियां लिखी जायेंगी और उसके हज़ार गुनाह मिटा दिये जायेंगे"। (मुस्लिम)।

❒ सौभाग्यशालिता की कुंजीः

अल्लाह तआला की तस्बीह़ बयान करनाः शेष व बाकी रहने वाले पुण्यों में से है।

तस्बीह़ः आज्ञाकारियों के लिए सांत्वना का सामान, अमन चाहने वालों के लिए आश्रय, एवं भयभीत लोगों के लिए ठिकाना है, तस्बीह़ करने वाले जानते हैं कि हर ऐब एवं दोष से जिस अल्लाह की वह तस्बीह़ और पाकी बयान करते हैं, वहीः परेशानी के समय उन्हें पनाह देता, डर के समय उन्हें दिलासा देता एवं निर्धनता के समय उसकी सहायता करता है।

तस्बीह़ करने वालों की दुआएं क्यों स्वीकार न हों जब्कि वही लोग समृद्धि एवं सम्पन्नता की स्थिति में अल्लाह का स्मरण करते हैं तो भला परेशानी एवं विपदा के समय अल्लाह उन्हें क्यों न याद रखे?!

अल्लाह तआला ने अपने नबी यूनुस बिन मत्ता के विषय में फ़रमायाः

﴿فَلَوْلَآ أَنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلْمُسَبِّحِينَ ١٤٣ لَلَبِثَ فِى بَطْنِهِۦٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ١٤٤﴾

अनुवादः (यदि वह पवित्रता का बखान करने वालों में से न होते। तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक उस (मछली) के पेट में ही रहते)। सूरह स़ाफ़्फ़ातः 143-144।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं: "अल्लाह की तस्बीह़ से समुद्र की मछलियां शांत हो जाती थीं, तो भला उन्हें क्यों न शांति मिलती, अल्लाह पाक के ज़िक्र से मेंढ़कों की टरटराहट बंद हो जाती थी, तो सम्माननीय यूनुस अलैहिस्सलाम की बेचैनी क्यों कम न होती"।

ह़सन फ़रमाते हैं किः “मछली के पेट में यूनुस अलैहिस्सलाम ने कोई नमाज़ नहीं पढ़ी थी, किंतु उन्होंने सुख एवं समृद्धि वाली परिस्थिति में किये गये अपने कर्मों को (वसीला के रूप में) पेश किया तो अल्लाह ने उसके कारण उन्हें दुःख एवं संकट की घड़ी में याद रखा”।

अल-करजी कहते हैं किः “यह इस बात का प्रमाण है कि तस्बीह़ एवं तहलील (“सुब्ह़ानल्लाह” तथा “ला इलाहा इल्लल्लाह”) का वज़ीफ़ा पढ़ने से दुःखों के बादल छँट जाते हैं एवं आफत व विपदा से मुक्ति मिल जाती है”।

अस़र (सलफ़ के कथन) में आया है किः “बंदा जब नेक व सालेह़ होता है तो वह आसमान में प्रसिद्ध हो जाता है”। और तस्बीह़ करना भी एक नेक अमल है, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान हैः ﴿ وَٱلۡعَمَلُ ٱلصَّٰلِحُ يَرۡفَعُهُۥۚ ﴾ अनुवादः (और नेक अमल (सद कर्म) उनको बुलंद करता है)। सूरह फ़ात़िरः 10।

तस्बीह़ करने से बंदे को रिज़्क़ एवं जीविका मिलती है, “अल-अदब अल-मुफ़रद” में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ आई है किः ٌنَ ِ وِّدِه□, सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिहि, हरेक प्राणी कि नमाज़ (पूजा) है और इस के द्वारा प्रत्येक जीव-जंतु को जीविका मिलती है। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

तू पाक व पवित्र है!

अल्लाह के लिए उतनी पाकी व पवित्रता है जितनी आसमान में जीव-जंतु हैं।

अल्लाह के लिए उतनी पाकी व पवित्रता है जितनी धरती में जीव-जंतु हैं।

अल्लाह के लिए उतनी पाकी व पवित्रता है जितनी आकाश एवं धरा के बीच में जीव-जंतु हैं।

अल्लाह के लिए उतनी पाकी व पवित्रता है जितनी उसकी उत्पन्न की हुई जीव-जंतुओं की संख्या है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने दासों को यह आदेश दिया किः सुबह शाम अधिकाधिक अपने रब की तस्बीह़ बयान किया करें, अतः फ़रमायाः

﴿فَسُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ حِينَ تُمۡسُونَ وَحِينَ تُصۡبِحُونَ ١٧﴾ अनुवादः (अल्लाह की तस्बीह़ पढ़ा करो जब तुम शाम करो और जब सुबह करो)। सूरह रूमः 18।

एक स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ﴿وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾﴾ अनुवादः (सुबह शाम उसकी पाकी बयान करो)। सूरह अह़ज़ाबः 42।

तस्बीह़ की महत्ता के दृष्टिगत स्वर्ग वासियों को तस्बीह़ का उसी प्रकार से इलहाम (अर्थातः ईश्वर की ओर से हृदय में डाली हुई बात) किया जायेगा, जिस प्रकार से उन्हें सांस लेने का इलहाम किया जायेगाः

﴿دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾﴾

अनुवादः (उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगीः हे अल्लाह! तू पवित्र है, और एक दूसरे को उस में उनका आशीर्वाद यह होगाः तुम पर सलामती (शांति) हो, और उनकी प्रार्थना का अंत यह होगाः सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है)। सूरह यूनुसः 10।

इब्ने रजब रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: "किसी भी आमाल (कर्म) को अंजाम दे कर निश्चिंत हुआ जा सकता है, परंतु ज़िक्र की कोई सीमा व समाप्ती नहीं है, सभी कर्मो का सिलसिला संसार की समाप्ती के साथ समाप्त हो जायेगा, आख़िरत (परलोक) में कोई अमल बाकी नहीं रहेगा सिवाय ज़िक्र (स्मरण) के, ज़िक्र का सिलसिला समाप्त होने वाला नहीं वरन यह अनवरत चलती रहने वाली चीज़ है"।

मोमिन अल्लाह का ज़िक्र (स्मरण) करते हुए जीता है, इसी पर उसकी मृत्यु होती है तथा इसी के साथ उसे पुनर्जीवित किया जायेगा।

سُبحانَ مَن سَبَّحَتهُ أَلسُنُ الأُمَمِ ... تَسبِيحَ حَمدٍ بِما أَولَى مِن النِعَمِ

سُبحَانَ مَن سَبَّحَتهُ أَلسُنٌ عَرَفَت ... بِأَنَّ تَسبِيحَهُ مِن أَفضَلِ العِصَمِ

سُبحَانَ مَن إِن يَشَأ يُخزِ المُسِيءَ وَإِن ... يَشأ عَفَا عَن كَبِيرِ الإِثمِ واللَّمَمِ

سُبحَانَ مَن مِنهُ نَرجُو عَفوَ مُقتَدِرٍ ... ونَستَعِيذُ بِهِ مِن بَطشِ مُنتَقِمِ

अनुवादः पाक व पवित्र है वह ज़ात जिसकी तस्बीह़ व स्मरण में सभी प्राणी लगे हुए हैं, उसने जो नियामतें दी हैं (उन पर उसकी) प्रशंसा करते हुए उसकी पाकी बयान करते हैं। पाक है वह ज़ात जिसका स्मरण ऐसी ज़ुबानें करती हैं जो जानती हैं कि उसका स्मरण करना सुरक्षा के सर्वोत्तम प्रबंधों में से है। पाक है वह (अल्लाह) जो अपनी चाहत के अनुसार पापी व कुकर्मी को अपमानित करता है एवं अपने इरादा से (जिसके चाहता है) बड़े से बड़े एवं छोटे से छोटे गुनाह माफ कर देता है। पाक है वह (अल्लाह) जिससे हम यह आशा रखते हैं कि वह सक्षम होने के पश्चात भी हमें क्षमा कर दे, एवं प्रतिशोध लेने वालों की गिरफ्त से हम उसकी पनाह चाहते हैं।

अल्लाह तआला हमें उन लोगों में शामिल फ़रमाए जो प्रशंसा एवं पवित्रता के साथ उसका स्मरण करते हैं, उसके असमा व सिफ़ात पर विश्वास रखते हैं, उसकी तौह़ीद एव महानता का बोध रखते हैं, निःसंदेह वह सब कुछ सुनने वाला एवं अति निकट है।

﴿فَسُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ حِينَ تُمۡسُونَ وَحِينَ تُصۡبِحُونَ ١٧ وَلَهُ ٱلۡحَمۡدُ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَعَشِيّٗا وَحِينَ تُظۡهِرُونَ ١٨﴾

अनुवादः (अतः तुम अल्लाह की पवित्रता का गुणगान संध्या एवं सवेरे किया करो। तथा उसी की प्रशंसा है आकाशों तथा धरती में तीसरे पहर तथा जब दोपहर हो)। सूरह रूमः 17-18।

(14)

(अल-कुद्दूस जल्ल जलालुहु)

आज ही अपनी जान की खरीदारी कर लो! क्योंकि बाज़ार सजा हुआ है, कीमत भी मौजूद है, सामान भी उपलब्ध है, इस बाज़ार पर एवं इन सामानों पर एक ऐसा दिन भी आने वाला है जिस दिन न तो थोड़ी कीमत मिलेगी न ज़्यादाः

﴿ذَٰلِكَ يَوۡمُ ٱلتَّغَابُنِۗ﴾ अनुवादः (वही दिन है हार-जीत का)। सूरह तग़ाबुनः 9।

﴿وَيَوۡمَ يَعَضُّ ٱلظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيۡهِ يَقُولُ يَٰلَيۡتَنِي ٱتَّخَذۡتُ مَعَ ٱلرَّسُولِ سَبِيلٗا ٢٧﴾

अनुवादः (उस दिन अत्याचारी अपने दोनों हाथ चबायेगा, वह कहेगाः क्या ही अच्छा होता कि मैंने रसूल का साथ दिया होता)। सूरह फ़ुर्क़ानः 27।

إِذَا أنتَ لم تَرحَل بزادٍ مِن التُّقَى وأَبصَرتَ يومَ الحَشرِ مَن قَد تَزَوَّدا

نَدِمتَ عَلى أَن لَا تَكُونَ كَمِثلِهِ وأَنَّكَ لَمَ تَرصُد لِمَا كانَ أَرصَدَا

अनुवादः यदि तुम (अंतिम) यात्रा पर त़कवा का तोशा (पाथेय) ले कर नहीं निकलोगे और क़्यामत के दिन तक़्वा के तोशा से लैस लोगों को देखोगे। तो तुम्हें इस बात पर ग्लानी होगी कि तुम उनके समान नहीं हो सके, तथा जिस चीज़ की तैयारी उन लोगों ने की तुम उसकी तैयारी नहीं कर सके।

आइये हम अल्लाह के सुंदर नामों में से एक ऐसे नाम के विषय में चिंतन-मनन करते हैं जो हमें उसके निकट कर दे।

यह नाम तौह़ीद -ए- इलाही का सार एवं तौह़ीद -ए- अस्मा व स़िफ़ात का एक अति महत्वपूर्ण स्तंभ है, और वह नाम हैः अल-क़ुद्दूस (अति पवित्र) जल्ल जलालुहु।

अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡمَلِكُ ٱلۡقُدُّوسُ﴾

अनुवादः (वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, बादशाह, अति पवित्र)। सूरह ह़श्रः 23।

स़ह़ीह़ मुस्लिम में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ एवं सज्दा में यह दुआ पढ़ा करते थेः سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ (अर्थातः फ़रिश्तों एवं जिब्रील का रब हर प्रकार के दोष, कमी एवं त्रुटि से पाक है)।

मुस्नद अह़मद में वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब वित्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो यह दुआ पढ़तेः

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ، سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ، سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ (अर्थातः पाकी व पवित्रता उस बादशाह के लिए जो सभी प्रकार के दोष एवं त्रुटि से पाक है)। (यह ह़दीस़ सह़ी है)।

अरबी शब्द कोष के अनुसार "الْقُدُّوسِ, क़ुद्दूस" का शाब्दिक अर्थ होता हैः त़हारत, पाकीज़गी एवं पवित्रता, इसी प्रकार से यह बरकत एवं कुशल मंगल के अर्थ में भी प्रयोग किया जाता है।

हमारा पाक व महान रब क़ुद्दूस है, अर्थातः वह हर प्रकार के ऐब एवं त्रुटि से दोष रहित, पत्नी, संतान एवं साझी व भागी से कोसों दूर, सभी प्रकार की प्रधानता एवं सदगुण से परिपूर्ण तथा प्रत्येक कामिल व पूर्ण विशेषताओं से विशेषित है।

हमारा पाक परवरदिगार ऐसा बरकत वाला है कि आकाश एवं धरा में हर समय उसकी बरकत प्रचुर मात्रा में फैली रहती है, उसका नाम "मुबारक" है, उसके अफ़आल (क्रिया), उसकी ज़ात (व्यक्तित्व) एवं गुण सभी उच्च कोटि के एवं बरकत वाले हैं, वही है जो अपनी ह़िकमत एवं तत्वदर्शिता के अंतर्गत अपनी मख़लूक़ (रचना, प्राणी, सृष्टि) में से जिसे चाहता है पाक व पवित्र करता हैः

﴿إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيُذۡهِبَ عَنكُمُ ٱلرِّجۡسَ أَهۡلَ ٱلۡبَيۡتِ وَيُطَهِّرَكُمۡ تَطۡهِيرٗا﴾

अनुवादः (अल्लाह चाहता है कि मलिनता को दूर कर दे तुम से, हे नबी की घर वालियों! तथा तुम्हें पवित्र कर दे अति पवित्र)। सूरह अह़ज़ाबः 33।

❒ वह अति पाक व पवित्र है!

हमारा महान रब इस बात के योग्य है कि सभी जीव-जंतु उसकी पाकी, पवित्रता एवं महानता का बखान करें। पाकी बयान करनाः आसमान में रहने वाले फ़रिश्तों की इबादत व पूजा हैः

﴿وَنَحۡنُ نُسَبِّحُ بِحَمۡدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَۖ﴾

अनुवादः (हम तेरी तस्बीह़, पाकीज़गी एवं ह़म्द बयान करने वाले हैं)। सूरह बक़रहः 30।

सम्स्त ब्रह्माण्ड सर्वशक्तिमान अल्लाह की तस्बीह़ व पाकी बयान करता हैः

﴿يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۖ لَهُ ٱلۡمُلۡكُ وَلَهُ ٱلۡحَمۡدُۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ ١﴾

अनुवादः (अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती है, प्रत्येक चीज़ जो आकाशों में है तथा जो धरती में है, उसी का राज्य है, और उसी के लिए प्रशंसा है, तथा वह जो चाहे कर सकता है)। सूरह तग़ाबुनः 1।

﴿تُسَبِّحُ لَهُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ ٱلسَّبۡعُ وَٱلۡأَرۡضُ وَمَن فِيهِنَّۚ وَإِن مِّن شَيۡءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهِۦ﴾

अनुवादः (उसकी पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है, और नहीं है कोई चीज़ परंतु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है)। सूरह बनी इस्राईलः 44।

❑ आप अधिक योग्य हैं ...

सभी प्राणियों में आदम की संतान (मानव जाति) ही इस बात के सर्वाधिक योग्य है कि वह अल्लाह की पाकी व पवित्रता का अधिकाधिक बखान करे।

सर्वशक्तिमान अल्लाह की पाकी बयान करने का ढ़ंग यह है किः

उससे प्रेम किया जाए, हर प्रकार के ऐब, दोष एवं त्रुटि से उसको पाक मानते हुए उसकी बड़ाई का गुणगान किया जाए।

उसके लिए वह समस्त विशेषताएं प्रमाणित की जाएं जिन्हें उसने अपने लिए और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके लिए प्रमाणित किये हैं।

किसी भी प्राणी को उसके समान करार देने का खण्डन किया जाएः

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ﴾

अनुवादः (उस के समान कोई चीज़ नहीं, वह बहुत सुनने एवं देखने वाला है)। सूरह शूराः 11)।

हर प्रकार की साझेदारी एवं भागीदारी से उसको पाक माना जाए, इसके अतिरिक्त उसकी शरीअत (धर्मविधान) को ही अंतिम सत्य माना जाए एवं उससे प्रसन्न रहा जाए तथा उस महान अल्लाह के प्रति मन में द्वेष एवं बदगुमानी रखने से बचा जाए।

जिसने अल्लाह के प्रति ऐसा गुमान रखा जो अल्लाह व उसके रसूल द्वारा बताए हुए अल्लाह की विशेषताओं के विरुद्ध हो, अथवा उसने उन विशेषताओं की वास्तविकता को अर्थहीन करार दिया जिन से अल्लाह ने अपने आप को विशेषित किया है या रसूलों ने उन विशेषताओं से अल्लाह को सुशोभित किया है तो उसने अल्लाह के साथ बदगुमानी रखी।

هذا وَمِن أَوصَافِهِ القُدُّوسُ ذُو   التَّنزِيهِ بِالتَّعظِيمِ للرَّحمنِ

अनुवादः इसके अतिरिक्त अल्लाह रहमान की एक विशेषता यह है कि वह क़ुद्दूस (अति पवित्र) है, वह रहमान (दयालु) इस बात के योग्य है कि उसकी महानता का बखान करने के साथ उसकी पवित्रता बयान की जाए।

❑ इस कर्म में आपकी भागीदारी ...

मोमिन आज्ञापालन के द्वारा, अवज्ञा एवं नाफ़रमानी से दूर रह कर, दिलों में लगने वाले ज़ंग को दूर कर के, हराम माल खाने से बचने के द्वारा एवं शुबुहात (शंकाओं) से अपने धन को बचा कर रखने के द्वारा अपने आप को पाक व पवित्र रखता है, यही वह मोमिन है जिसकी प्रशंसा करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः

﴿قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّىٰهَا ۝٩ وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّىٰهَا ۝١٠﴾

अनुवादः (वह सफल हो गया जिसने अपने जीव का शुद्धिकरण किया। तथा वह क्षति में पड़ गया जिसने उसे (पाप) में धंसा दिया)। सूरह शम्सः 9-10।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से बयान किया कि उन्हें फ़िरऔन के पास भेजने का क्या उद्देश्य था, वह यह था किः वह सर्वशक्तिमान अल्लाह की पाकी व पवित्रता का बखान कर के अपने नफ्स (स्वंय अपने आप) की शुद्धि करेः

﴿ٱذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ۝١٧ فَقُلْ هَل لَّكَ إِلَىٰٓ أَن تَزَكَّىٰ ۝١٨ وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ۝١٩﴾

अनुवादः (फ़िरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है। तथा उससे कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहोगे? और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाउँ तो तुम डरोगे?) सूरह नाज़िआतः 17-19।

यही कारण है कि इस ईमानी पवित्रता एवं इस्लाह़ के बिना सफल होना असंभव हैः

﴿قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ۝١٤ وَذَكَرَ ٱسْمَ رَبِّهِۦ فَصَلَّىٰ ۝١٥﴾

अनुवादः (वह सफल हो गया जिसने अपना शुद्धिकरण किया। तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज़ पढ़ी)। सूरह आलाः 14-15।

बल्कि वह समुदाय जो ज़ुल्म व अत्याचार करने का अभ्यस्त हो जाता है, उसकी पवित्रता छिन जाती है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आपने फ़रमायाः "अल्लाह उस समुदाय को पाक व पवित्र नहीं करता जिसका कमज़ोर तबका उसके मज़बूत तबका से अपना अधिकार न प्राप्त कर पाता हो"। इस ह़दीस़ को बैहिक़ी ने "अल-सुनन अल-कुब्रा" में रिवायत किया है। इसके अतिरिक्त स़ह़ीह़ ह़दीस़ से यह भी प्रमाणित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह उस समुदाय को कैसे पाक व पवित्र करे जिसके मज़बूत तबका से उसके कमज़ोर तबका का अधिकार न लिया जाता हो"।

जब अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को पत्र लिखा कि वह इराक से पावन धरती की ओर पलायन कर जाएं, तो सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अलंकार से पूर्ण ऐसा उत्तर दिया कि जिससे इस्लाह़, पाकीज़गी एवं पवित्रता का अर्थ स्पष्ट हो जाता है, आपने फ़रमायाः "धरती किसी को पावन नहीं बनाती, अपितु मानव का कर्म उसे पावन व पवित्र बनाता है"।

سُبحَانَ مَن هُوَ لا يَزالُ وَرِزقُه   للعالَمِينَ بِهِ عَلَيه ضَمانُ
سُبحَانَ مَن يُعطِي المُنَى بِخواطِرٍ   فِي النَّفسِ لَم يَنطِق بِهِنَّ لِسَانُ

अनुवादः पाक है वह ज़ात जिसने प्रारंभ से समस्त लोक वासियों के लिए अपनी जीविका की ज़मानत ले रखी है। पवित्र है वह ज़ात जो दिल एवं मन-मस्तिष्क में आने वाली आकांक्षाओं को ज़ुबान पर आने के पूर्व ही पूर्ण कर देता है।

हे अल्लाह! हे सुब्बूह (पावन व पवित्र) ... हे क़ुद्दूस (सभी प्रकार की त्रुटियों से दोष रहित)! हम तुझसे दुआ माँगते हैं कि हमें पाक कर दे, हे सभी दयालुओं से बढ़ कर दयालु! हमारे पापों को क्षमा कर दे तथा हम पर कृपा कर।

(15)

(अल-सलाम जल्ल जलालुहु)

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “अल-सलामः अल्लाह तआला का एक नाम है जिसे अल्लाह ने ज़मीन पर उतारा है, इसलिए आपस में सलाम फैलाओ”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इमाम बुख़ारी ने “अल-अदब अल-मुफ़रद” में रिवायत किया है)।

मोमिन अल्लाह तआला से सदैव लोक एवं परलोक में सलामती, शांति एवं कुशल-क्षेम का सवाल करता है, सांसारिक सलामती दो प्रकार की हैः ज़ाहिरी (बाह्य) एवं बात़िनी (आंतरिक):

ज़ाहिरी सलामती से अभिप्राय हैः हरेक प्रकार के रोग एवं अप्रिय घटना से बचाव।

इस लोक की बात़िनी सलामती का आशय हैः कुफ्र व बिदअत, अवज्ञा व अवहेलना से दीन व ईमान (धर्म व आस्था) की सलामती। यह चीज़ जिसकी एक मोमिन दुआ करता है वह ईमान का सबसे मजबूत कड़ा है, यदि यह सही रहा तो आप क़ल्ब -ए- सलीम (शुद्ध हृदय) से सुशोभित होंगे एवं दारुस्सलाम (जन्नत) में प्रवेश पाएंगे।

हर व्यक्ति सलामती व शांति की खोज में है, और अल्लाह तआला ही सलाम (हर ऐब, दोष एवं त्रुटि से पाक) है।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं: “ऐसे बहुतेरे लोग है जिन्होंने इस नाम को कंठस्थ तो कर लिया परंतु इसके अंदर जो गूढ़ अर्थ छिपा हुआ है उससे अनभिज्ञ हैं”।

महान अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلْمُؤْمِنُ ٱلْمُهَيْمِنُ﴾

अनुवादः (वह अल्लाह ही है जिसके अतिरिक्त नहीं है कोई सच्चा वंदनीय, वह सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शांति प्रदान करने वाला, रक्षक है)। सूरह ह़श्रः 23।

ज्ञात हुआ कि हमारा अज़ीज़ रब “सलाम”: जो हर प्रकार के ऐब, दोष एवं त्रुटि से पवित्र है, क्योंकि वह अपनी ज़ात, स़िफात एवं अफ़आल (कर्म) में अकेला है।

सलामत का शाब्दिक अर्थ हैः बराअत, पाकी एवं पवित्रता, तथा एक कथन के अनुसारः आफ़ियत व सलामती है।

وَهُوَ السَّلَامُ عَلَى الحَقِيقَةِ سَالِمٌ مِن كُلِّ تَمْثِيلٍ وَمِن نُقصَانِ

अनुवादः वह (अल्लाह) वास्तविक अर्थों में अल-सलाम (शांति) है, जो हर प्रकार की तशबीह (समानता), तमसील (समतुल्य) तथा ऐब एवं त्रुटि से पाक है।

इस नाम के द्वारा नामकरण करने वालों में से, इस नाम के सही अर्थों के सर्वाधिक योग्य हमारा महान अल्लाह है।

❑ (अल्लाह के शुभ नाम) अल-सलाम (शांति) की शीतल छाया में ...

महान अल्लाह की विशेषताओं में इस नाम के प्रभाव पर गौर करें! अल्लाह का जीवनः मृत्यु, उँघ एवं नींद से पाक है, उसकी निगरानी एवं क़ुदरतः थकावट एवं आलस्य से पाक है।

अल्लाह के इल्म (ज्ञान) पर सोच-विचार करें! जो कि इस बात से पाक है कि कोई वस्तु उससे ओझल हो, या उससे भूल-चूक हो, अथवा उसे याद करने एवं सोचने की आवश्यकता पड़ेः

﴿وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي ٱلْأَرْضِ وَلَا فِي ٱلسَّمَآءِ وَلَآ أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مُّبِينٍ﴾

अनुवादः (आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी हुई नहीं रहती और न आकाश में न इससे कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है)। सूरह यूनुसः 61।

﴿وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا﴾

अनुवादः (तेरा पालनहार भूलने वाला नहीं)। सूरह मर्यमः 64।

रब का कलाम झूठ एवं ज़ुल्म से पाक है, अपितु उसका कलाम सच्चाई एवं इंसाफ के आधार पर पूर्ण हैः

﴿وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا﴾

अनुवादः (आप के रब का कलाम (बात) सत्य तथा न्याय आधारित है)। सूरह अन्आमः 115।

उसकी समृद्धि एवं बेनियाज़ी दूसरे की अंश मात्र मोहताजी से भी पाक है, बल्कि उसके सिवा सभी जीव-जंतु उसके मोहताज हैं, और वह हरेक से बेनियाज़ व निःस्पृह है।

उसकी बादशाहत इस बात से पाक है कि कोई उसमें उससे झगड़े, या उसका शरीक तथा सहायक हो।

उसकी सहनशीलता, उसके क्षमा करने एवं माफ करने की शक्ति किसी भी प्रकार की सहायता एवं बदले की चाहत से पाक है, जब्कि इसके विपरीत उसके सिवा लोग जब माफ करते हैं तो उसके पीछे सहायत या बदले की चाहत छिपी होती है।

यहाँ तक कि उसका अज़ाब, यातना एवं इंतक़ाम भी इस बात से पाक है कि वो ज़ुल्म व अत्याचार, आत्म संतुष्टि, क्रोध तथा कठोरता व निर्दयता पर आधारित हों, बल्कि यह उसकी हिकमत एवं न्याय पर आधारित हैं:

﴿وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّٰمٍ لِّلۡعَبِيدِ﴾

अनुवादः (आपका रब बंदों पर अत्याचार करने वाला नहीं)। सूरह फ़ुस्सिलतः 46।

आप अल्लाह के फैसले एवं उसकी तक़दीर पर ग़ौर करें! आप उसे ज़ुल्म, अत्याचार एवं उद्दंडता से कोसों दूर पाएंगे।

अल्लाह की शरीअत एवं उसके दीन (धर्म) पर विचार करें! आप उसे हर प्रकार के विरोधाभास, भिन्नता एवं बाधा व विकार से पाक पाएंगेः

﴿أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ ٱلۡقُرۡءَانَۚ وَلَوۡ كَانَ مِنۡ عِندِ غَيۡرِ ٱللَّهِ لَوَجَدُواْ فِيهِ ٱخۡتِلَٰفٗا كَثِيرٗا ٨٢﴾

अनुवादः (क्या वह क़ुरआन (के अर्थों) पर सोच विचार नहीं करते? यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उसमें बहतु सी प्रतिकूल (बे मेल) बातें पाते)। सूरह निसाः 82।

अल्लाह का अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर बैठना) व बुलंद होना इस बात से पाक है कि उसे किसी ऐसे वस्तु की आवश्यकता है जो उसे उठाए और जिस पर वह मुस्तवी हो, बल्कि अर्श उसका मोहताज है तथा उसको उठाने वाले फ़रिश्ते भी उसके मोहताज हैं, वह अर्श (सिंहासन) से और उसको थामने वाले फ़रिश्तों से बल्कि अपने सिवा हरेक से बेनियाज़ व निःस्पृह है।

उसकी समाअत व बसारत (दृश्य-श्रव्य अर्थात सुनने एवं देखने की शक्ति) इस बात से पाक है कि उस पर कोई चीज़ दुविधाजनक हो या कोई बात उसे अर्थहीन रूप में मालूम हो।

यहाँ तक कि अपने औलिया (नेक लोगों, महात्माओं) से उसका प्रेम भी उन गंदगियों से पाक है जो मख़लूक़ के आपसी प्रेम में हुआ करती है, जैसे आवश्यकता पूर्ति के लिए किसी से प्रेम करना, चापलूसी करते हुए किसी से प्रेम दर्शाना तथा उसका सामीप्य प्राप्त कर के उससे कोई लाभ हासिल करना।

❒ प्रेम करने वालों का पुरस्कार व बदलाः

अल्लाह तआला ने अपने नबियों एवं रसूलों पर उनके ईमान एवं सदकर्म के कारण सलामती भेजी है, ताकि लोग उनका अनुसरण करें तथा कोई उनको बुराई के साथ न याद करेः

﴿وَسَلَٰمٌ عَلَى ٱلۡمُرۡسَلِينَ ١٨١﴾ अनुवादः (रसूलों पर सलाम है)। सूरह स़ाफ़्फ़ातः 181।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने यह़्या अलैहिस्सलाम को सम्मानित किया एवं विभिन्न स्थान पर उन्हें सलामती प्रदान की। किसी ने कहा है किः तीन परिस्थितियां मख़लूक़ (प्राणी) के लिए बड़ी भयंकर होती हैं: जब मानव जन्म लेता है तो वह स्वयं को माँ के गर्भाश्य से बाहर पाता है, जब मृत्यु का पंजा उसे अपनी गिरफ्त में लेता है तो वह ऐसे जीव को देखता है जिन्हें पहले कभी नहीं देखा होता है, एवं जब उसे क़ब्र से पुनः जीवित कर के उठाया जायेगा तो वह स्वयं को मैदान -ए- ह़श्र की हौलनाकी एवं भयावहता में घिरा हुआ पायेगाः

﴿وَسَلَٰمٌ عَلَيۡهِ يَوۡمَ وُلِدَ وَيَوۡمَ يَمُوتُ وَيَوۡمَ يُبۡعَثُ حَيّٗا ١٥﴾

अनुवादः (उस पर सलाम है जिस दिन वह पैदा हुए और जिस दिन वह मरे तथा जिस दिन पुनर्जीवित किए जाएंगे)। सूरह मर्यमः 15।

जो व्यक्ति अल्लाह पाक की हिदायत व मार्दर्शन पर चलेगा वह उसके क्रोध, गुस्सा एवं यातना से सुरक्षित रहेगा, यही अर्थ है अल्लाह के इस फ़रमान काः

﴿وَٱلسَّلَٰمُ عَلَىٰ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلْهُدَىٰٓ﴾

अनुवादः (सलामती है उसके लिए जिसने हिदायत व मार्गदर्शन का अनुसरण किया)। सूरह ताहाः 47।

जन्नत सलामती एवं शांति का घर हैः

﴿لَهُمْ دَارُ ٱلسَّلَٰمِ عِندَ رَبِّهِمْ﴾

अनुवादः (उन लोगों के लिए उनके रब के पास सलामती का घर है) सूरह अनआमः 127।

अल्लाह तबारक व तआला जन्नत में अपने बंदों पर सलाम पेश करेगाः

﴿سَلَٰمٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ ٥٨﴾

अनुवादः (अति दयालु रब की ओर से उन्हें "सलाम" कहा जायेगा)। सूरह यासीनः 58।

फ़रिश्ते जब अल्लाह के नेक बंदों की रूह निकालने आते हैं तो उन्हें सलामती की शुभ-सूचना एवं सांत्वना देते हैं:

﴿ٱلَّذِينَ تَتَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَٰمٌ عَلَيْكُمُ ٱدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ٣٢﴾

अनुवादः (जिनके प्राण फ़रिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे स्वच्छ-पवित्र हैं, तो कहते हैं: तुम पर शांति हो, तुम अपने सुकर्मों के बदले स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ)। सूरह नह्लः 32।

❒ इस नाम में आपका हिस्सा ...

अल्लाह तआला के नाम (अस्सलाम) के द्वारा इबादत व पूजा करने का एक ढ़ंग यह भी है किः मुस्लिम बंदे का दिल एवं ज़ुबान दूसरे मुसलमान के प्रति हर प्रकार की बुराई एवं

द्वेष से पवित्र हो, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान हैः "मुसलमान वह है जिसके ज़ुबान एवं हाथ से दूसरे मुसलमान बचे रहें, तथा मुहाजिर (पलायन कर्ता, शरणार्थी) वह है जो उन कुकर्मों को छोड़ दे जिन से अल्लाह ने रोका है"। (इस ह़दीस़ को बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

मोमिन केवल इसी पर बस न करे कि उसकी यातना से दूसरे सुरक्षित रहें अपितु इस महान नाम का हक अदा करना भी उस पर वाजिब है, जैसाकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ हैः "अस्सलामः अल्लाह तआला का शुभ नाम है, जिसे अल्लाह ने धरती पर उतारा है, अतः आपस में सलाम फैलाओ"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे बुख़ारी ने "अल-अदब अल-मुफ़रद" में रिवायत किया है)।

सलाम (अर्थातः अस्सलामु अलैकुम) कहने की एक फ़ज़ीलत यह है कि यह दारुस्सलाम (जन्नत) तक पहुँचाता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ हैः "तुम जन्नत में उस समय तक नहीं जा सकते जब तक ईमान न ले आओ, और तुम (पूर्ण) मोमिन उस समय तक नहीं बन सकते जब तक तुम आपस में एक दूसरे से प्रेम न करने लगो, क्या मैं तुम्हें ऐसा कार्य न बताऊँ कि यदि तुम उसे करने लगो तो आपस में एक दूजे से प्रेम करने लगोगेः आपस में सलाम को फैलाओ"।

❒ सोचनीय विषय ...

यह कहना सही नहीं है किः अल्लाह पर सलाम हो!

क्योंकि सलामती व शांति अल्लाह ही से प्राप्त होती है तथा उसी के लिए हर प्रकार की सलामती है, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को यह कहते हुए सुना किः हे अल्लाह तुम पर सलाम हो! तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "ऐसा न कहो किः अल्लाह पर सलाम हो, क्योंकि अल्लाह तो स्वयं सलाम है, बल्कि यह कहोः

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अत्तहियातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैयिबातु, अस्सलामु अलैका अय्युहन नबिय्यु व रहमतुल्लाही व बरकातुहू, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहु, (अर्थातः बोल से

अदा होने वाली और शरीर से अदा होने वाली तथा धन से संबंधित सभी इबादतें अल्लाह के लिए हैं, आप पर हे नबी सलाम हो और अल्लाह की रह़मत व बरकत नाज़िल हो, हम पर एवं अल्लाह के नेक बंदों पर सलाम हो, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं तथा मैं गवाही देता हूँ कि मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बंदे एवं रसूल हैं) "। (इस ह़दीस़ का बुख़ारी एवं मुस्लिम ने लगभग ऐसे ही शब्दों के साथ रिवायत किया है)।

एक रिवायत में यह वृद्धि आई हैः "क्योंकि जब तुम इस प्रकार से कहोगे तो आकाश एवं धरती में रहने वाले अल्लाह के हर नेक बंदे को यह शामिल हो जायेग"। (इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

हे अल्लाह! तू सलाम है, तुझ से ही सलामती व शांति है, हे इज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाले! तेरी ज़ात बड़ी बरकत वाली है।

हे अल्लाह! हमारे लिए हमारे धर्म को बचा के रख जो हमारे लिए सुरक्ष कवच है, हमारे लिए हमारे संसार को दुरुस्त फ़रमा दे जिसमें हमारी जीविका है, हमारे लिए हमारी आख़िरत को संवार दे जहाँ हमें लौट कर जाना है, और हे हमारे पालनहार! हमें सलामती व शांति के घर (जन्नत) में प्रवेश दिला, निःसंदेह तू हर चीज़ में सक्षम है।

(16)

(अल-मोमिन जल्ल जलालुहु)

पर्वत की चोटियों के ऊपर दृश्य बदलता हैः सुःख एवं समृद्धि का सूर्य उदय होता है, टीलों की बुलंदियों पर प्रकाश की किरणें अपनी छटा बिखेरती हैं, एवं दुःख तथा संकट के हर द्वार पर सुख एवं संपन्नता का उपहार ले कर दस्तक देती है।

अपनी आँखें खोलें, दोनों हाथ ऊपर उठाएं, दुःख को अपने ऊपर काबू न पाने दें, तथा नाउम्मीदी एवं निराशा को अपने निकट न आने दें, क्योंकि वह (रब मौजूद) है, जो आपको अमन चैन दे, एवं आपके दुःख दर्द को समझ सके ... निःसंदेह वह अमन शांति देने वाला सर्वशक्तिमान अल्लाह है।

मछलियां, समुद्र में रहने वाले जीव, पशु-पक्षि तथा दरिंदे सभी अमन देने वाले पाक व पवित्र (अल्लाह) से ही अमन शांति की आशा रखते हैं।

आप भी उसी अमन देने वाले महान (पालनहार) की ओर रुख करें, उसके समक्ष अपनी दुर्दशा का रोना रोएं, क्येंकि उसकी ओर से प्राप्त होने वाली कुशादगी व समृद्धि पलक झपकते ही अदृश्य हो जाने वाली बिजली की चमक से भी अधिक तेज़ है, तथा हर क्षण उसकी कृपा की बरखा बरसती रहती है।

अल-मोमिन अज़्ज़ व जल्लः महान अल्लाह का एक शुभ नाम है, जैसाकि अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلْمُؤْمِنُ ٱلْمُهَيْمِنُ﴾

अनुवादः (वह अल्लाह ही है जिसके अतिरिक्त नहीं है कोई सच्चा वंदनीय, वह सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शांति प्रदान करने वाला, रक्षक है)। सूरह ह़श्रः 23।

अल-मोमिन ऐसा नाम है जो क़ुरआन की केवल एक आयत में वर्णित हुआ है, इसका उल्लेख भयभीत एवं डरे हुए लोगों को अमन एवं सांत्वना देने, आशा रखने वालों को सुरक्षा एवं निर्भयता प्रदान करने तथा दुखियारों के दुखों को हर कर उसे सुख में बदल देने वाले के रूप में हुआ है।

❒ अल्लाह के शुभ नाम (अल-मोमिन) की छाँव में ... सोच-विचार के कुछ क्षणः

ज्ञानी लोग कहते हैं किः अल-मोमिन के दो अर्थ हैं:

पहला अर्थः तस्दीक़ एवं पुष्टि करने के हैं, जब से अल्लाह ने जीव-जंतुओं को उत्पन्न किया तब से ले कर क़्यामत के दिन तक की सबसे बड़ी पुष्टि यह है किः महानतम अल्लाह ने अपनी ज़ात (स्वत्व) की पुष्टि की, अपने लिए वह़दानियत (एकेश्वरवाद) एवं सभी प्रकार की इबादत तथा पूजा में अपने एकाकी होने की गवाही दी, कमाल व जलाल (पूर्णता एवं प्रताप) के द्वारा अपनी प्रशंसा की, अल्लाह रब्बुल आलमीन अपने बारे में इर्शाद फ़रमाता हैः

﴿شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ﴾

अनुवादः (अल्लाह इस बात की गवाही देता है कि उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं)। सूरह आले इमरानः 18।

सबसे महान बादशाह (अल्लाह) जो कि समस्त लोक का पालनहार है, उसकी यह महान गवाही है, जो कि उच्चकोटि के मामले की गवाही है, और वह हैः अल्लाह की तौह़ीद, उसके लिए दीन को निश्छल एवं ख़ालिस करने तथा इंसाफ पर बरकरार रहने की गवाही।

وَأَشهَدُ أَنَّ اللهَ لا رَبَّ غيرُهُ   كريمٌ رَحيمٌ يُرتَجى وَيُؤَمَّلُ

अनुवादः मैं यह गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पालनहार नहीं, वह दानी, दयालु एवं मेहरबान है, उसी से आशाएं एवं आकांक्षाएं रखी जाती हैं।

वही महान अल्लाह है जिसने अपने कथन एवं वादा को सच ठहरायाः

﴿وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ ٱللَّهِ قِيلًا﴾

अनुवादः (और कौन है जो अपनी बात में अल्लाह से सच्चा हो)। सूरह निसाः 122।

उसने नबियों के हाथों स्पष्ट एवं रौशन निशानियां जाहिर कर के उनकी पुष्टि कीः

﴿قَدْ جِئْتُكُم بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ﴾

अनुवादः (मैं तुम्हारे रब की निशानी लाया हूँ)। सूरह आले इमरानः 49)।

﴿وَأَتَيْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ وَإِنَّا لَصَٰدِقُونَ ۝٦٤﴾

अनुवादः (हम तो तेरे पास बिल्कुल खुला व स्पष्ट सत्य ले कर आए हैं और हैं भी बिल्कुल सत्यवादी)। सूरह हिज्रः 64।

अल्लाह तआला ने अपने दासों से संसार में विजय एवं प्रभुत्व, धरती की बादशाहत एवं आख़िरत में सवाब तथा पुण्य का जो वादा किया है, वह पालनहार उन वादों को सच करता है, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता हैः

﴿ثُمَّ صَدَقْنَٰهُمُ ٱلْوَعْدَ فَأَنجَيْنَٰهُمْ وَمَن نَّشَآءُ وَأَهْلَكْنَا ٱلْمُسْرِفِينَ ﴿٩﴾﴾

अनुवादः (फिर हमने उन से किए हुए सभी वादे सच्चे किये, उन्हें तथा जिन जिन को हमने चाहा निजात दी तथा हद से बढ़ जाने वालों का नाश कर दिया)। सूरह अम्बियाः 9।

और काफिरों को (हमारे पालनहार ने) लोक एवं परलोक में जिस सज़ा एवं अपमान की धमकी दी है, वह उसे भी पूरा करता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ أَصْحَٰبَ ٱلنَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا۟ نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾﴾

अनुवादः (स्वर्गवासी नरकवासियों को पुकारेंगे कि हम को हमारे पालनहार ने जो वचन दिया था उसे हम ने सच्चा पाया, तो क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें जो वचन दिया था उसे तुमने सच्चा पाया? वह कहेंगे कि हाँ, फिर उनके बीच एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अल्लाह की ओर से धिक्कार है उन अत्याचारियों पर)। सूरह आराफ़ः 44।

महान अल्लाह की सारी सूचनाएं दुरुस्त एवं सत्य हैं।

وإنِ بِكَ اللّٰهُم رَبّي لَوَاثِقٌ ومَا لِي بِبَابٍ غيرَ بابِكَ مَدخلُ

अनुवादः ऐ अल्लाह! मेरे परवरदिगार! मुझे तेरे ऊपर पूर्ण विश्वास है तेरे द्वार के सिवा मेरे लिए कोई द्वार नहीं कि जहाँ मैं प्रवेश पा सकूँ।

अल्लाह तआला उन लोगों से प्रेम करता है जो अपनी बातों एवं वादों में सत्यवादी होते हैं:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَكُونُوا۟ مَعَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿١١٩﴾﴾

अनुवादः (हे ईमान वालों! अल्लाह तआला से डरो एवं सत्यवादियों के संग रहो)। सूरह तौबाः 119।

अल-मोमिन का दूसरा अर्थः अमन व शांति देने के हैं, जो कि डराने व भयभीत करने के विपरीत हैः ﴿وَءَامَنَهُم مِّنۡ خَوۡفِۭ﴾ अनुवादः (और भय तथा डर में अमन व शांति दिया)। सूरह क़ुरैशः 4।

लोगों की स्थिति यह है कि उनमें कोई रोगी है, तो कोई दवा की कमी से जूझ रहा है, कोई शत्रुओं के प्रभुत्व से परेशान है, कोई ऐसी निर्धनता में लिप्त है जो (जीवन की रंगीनी) को भुला दे, कोई मृत्यु का सामना कर रहा है, वह सभी अमन की खोज में ही खाने का प्रबंध करते हैं, उसी के कारण महल एवं अस्पताल बनाते हैं, बंद एवं डैम तैयार करते हैं, तथा अमन एवं शांति की खोज में ही विभिन्न समाज एवं देश के कमज़ोर लोग कभी-कभी शक्तिशाली लोगों का आश्रय लेने को विवश होते हैं।

और जिस समय यह सारी शक्तियां ढ़ेर हो जाती हैं, वास्तविकता खुल कर सामने आ जाती है, उनके पास इसके सिवाय और कोई चारा नहीं रहता कि पाक व उच्च मोमिन (अमन व शांति देने वाले रब) की पनाह लें: जो अपने बंदों को अमन से नवाज़ता है, वो उससे फरार होने के पश्चात फिर उसी की ओर पलट कर आते हैं, जो उनका ही नहीं वरन समस्त संसार का ख़ालिक़ व उत्पत्ति कर्ता है, जो हर चीज़ का निगरान है तथा सभी बंदों के ललाट उसी के हाथ में हैं।

जब क़्यामत के दिन सर्वशक्तिमान अल्लाह का अज़ाब आयेगा, तो कोई न होगा जो लोगों को अमन दे सके एवं न ही इंसानों के पास कोई ऐसी शक्ति होगी जो उस अज़ाब को दूर कर सकेः

﴿ءَأَمِنتُم مَّن فِي ٱلسَّمَآءِ أَن يَخۡسِفَ بِكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ١٦ أَمۡ أَمِنتُم مَّن فِي ٱلسَّمَآءِ أَن يُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ حَاصِبٗاۖ فَسَتَعۡلَمُونَ كَيۡفَ نَذِيرِ ١٧﴾

अनुवादः (क्या तुम निर्भय हो गये हो उस से जो आकाश में है कि वह धँसा दे धरती में फिर वह अचानक काँपने लगे। अथवा निर्भय हो गये उस से जो आकाश में है कि वह भेज दे तुम पर पथरीली वायु तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कैसा रहा मेरा सावधान करना?)। सूरह मुल्कः 16-17।

❑ तीन स्थानः

लोग तीन स्थान पर अमन शांति की खोज करते हैं, और यह तीनों स्थान सर्वशक्तिमान (अल्लाह) के ही हाथ में हैं जो हर चीज़ में सक्षम है और जो तक़वा (सदाचार) अपनाने वाले अपने औलिया (नेक लोगों) को ही इससे नवाज़ता हैः

पहला स्थानः सभी प्रकार का सांसारिक अमन चैनः

﴿وَلَوۡ أَنَّ أَهۡلَ ٱلۡقُرَىٰٓ ءَامَنُواْ وَٱتَّقَوۡاْ لَفَتَحۡنَا عَلَيۡهِم بَرَكَٰتٖ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ﴾

अनुवादः (और यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मों से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की संपन्नता के द्वार खोल देते)। सूरह आराफ़ः 96।

दूसरा स्थानः मरणासन्न स्थिति में, जब मलकुल मौत (मौत का फ़रिश्ता) उतरता है तथा बरज़ख़ में जब (सवाल जवाब करने वाले) दो फ़रिश्तों से सामना होता हैः

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُواْ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسۡتَقَٰمُواْ تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُواْ وَلَا تَحۡزَنُواْ وَأَبۡشِرُواْ بِٱلۡجَنَّةِ ٱلَّتِي كُنتُمۡ تُوعَدُونَ ٣٠﴾

अनुवादः (निश्चय ही जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर इसी पर स्थिर रह गये तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है)। सूरह ह़ा मीम सज्दाः 30।

तीसरा स्थानः आख़िरत में सबसे बड़ी भयावहता के समय, जहाँ परहेज़गारों एवं सदाचारियों को सबसे बड़ा अमन प्रदान किया जायेगा, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿لَا يَحۡزُنُهُمُ ٱلۡفَزَعُ ٱلۡأَكۡبَرُ وَتَتَلَقَّىٰهُمُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ هَٰذَا يَوۡمُكُمُ ٱلَّذِي كُنتُمۡ تُوعَدُونَ ١٠٣﴾

अनुवादः (उन्हें उदासीन नहीं करेगी (प्रलय के दिन की) बड़ी व्यग्रता, तथा फरिश्ते उन्हें हाथों हाथ ले लेंगे (और कहेंगे): यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुम्हें वचन दिया जा रहा था)। सूरह अम्बियाः 103।

केवल मुवह़्ह़िद बंदे को ही अमन प्रदान किया जायेगाः

﴿مَن جَآءَ بِٱلۡحَسَنَةِ فَلَهُۥ خَيۡرٞ مِّنۡهَا وَهُم مِّن فَزَعٖ يَوۡمَئِذٍ ءَامِنُونَ ٨٩﴾

अनुवादः (जो भलाई लायेगा, तो उसके लिए उस से उत्तम (प्रतिफल) है और वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय रहने वाले होंगे)। सूरह नम्लः 89।

आपके ईमान के बराबर आपको अमन मिलेगा, क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَلَمۡ يَلۡبِسُوٓاْ إِيمَٰنَهُم بِظُلۡمٍ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلۡأَمۡنُ وَهُم مُّهۡتَدُونَ ٨٢﴾

अनुवादः (जो लोग ईमान लाये, और अपने ईमान को ज़ुल्म (अत्याचार अर्थात शिर्क) से लिप्त नहीं किया, उन्हीं के लिए शांति है, तथा वही मार्गदर्शन पर हैं)। सूरह अनआमः 82।

❒ इसमें आपकी भागीदारी ...

मोमिनों के लिए इस महान का नाम का लाभ यह है किः वो यह जान लें कि दुःख, संकट, आपादा एवं विपत्ति के समय उसे जो अमन देता है तथा संकट से उबारता है वह सर्वशक्तिमान अल्लाह ही है, इसी प्रकार से यह भी मस्तिष्क में बैठा लें किः जैसा कर्म होगा फल भी वैसा ही मिलेगा, इसलिए (जो सच्चे मोमिन हैं) वह अल्लाह के पास जो अमन है उसे पाने की चाहत व इच्छा में तथा क़यामत के दिन अमन छिन जाने के भय से लोगों को अपनी बुराइयों से महफ़ूज़ व सुरक्षित रखते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आपने फ़रमायाः “क्या मैं तुम्हें सच्चा मोमिन (के गुण) न बताऊँ? सच्चा मोमिन वह है जिस (की बुराई) से लोगों की जान एवं उनके धन सुरक्षित हों, तथा सच्चा मुसलमान वह है जिसके ज़ुबान एवं हाथ (की बुराई) से लोग सुरक्षित रहें”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अह़मद ने “मुसनद” में रिवायत किया है)।

हे अल्लाह! हमें अपने देश में शांत व समृद्धि वाला जीवन प्रदान कर ... हे अल्लाह! हमें हर प्रकार के भय से मुक्ति दे, हमारा नाम -ए- आमाल हमारे दाहिने हाथ में दे तथा हमारा हिसाब आसान फ़रमाना।

(17)

(अल-मुहैमिन जल्ल जलालुहु)

यह संदेश है हर उस व्यक्ति के नाम जो जीवन से ऊब चुका है, अपनी जिंदगी से उकताया हुआ है, दिवा रात्रि से तंग आ चुका है, दुःख तकलीफ का स्वाद भोग चुका है ... ऐसे व्यक्ति के लिए शुभ सूचना है कि स्पष्ट एवं खुली सफलता आपकी प्रतीक्षा में है, सहायता एवं मदद आपके अति निकट है, दुःख के पश्चात सुख एवं परेशानी के पश्चात आसानी संसार की रीत है।

आशा कि एक किरण है जो अपनी आभा बिखेर रही है, आपके समक्ष उमंगों से परिपूर्ण उज्जवल भविष्य एवं सच्चा वादा हैः

﴿وَعۡدَ ٱللَّهِۖ لَا يُخۡلِفُ ٱللَّهُ وَعۡدَهُۥ﴾

अनुवादः (अल्लाह का वादा है, अल्लाह तआला अपने वादा को नहीं तोड़ता)। सूरह रूमः 6।

क्या आपके स्वामी एवं आक़ा ने यह नहीं फ़रमायाः

﴿وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ﴾

अनुवादः (और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो)। सूरह आराफ़ः 180।

यदि उन शुभ नामों के द्वारा अल्लाह को पुकारेंगे तो उसका परिणाम क्या होगा?

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ﴾

अनुवादः (तुम्हारे रब का आदेश पारित हो चुका कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा)। सूरह ग़ाफ़िरः 60।

आइये इस स्थान पर ठहर कर अल्लाह के एक शुभ नामः अल-मुहैमिन (अर्थातः निगहबान, निगराँ, रक्षक) के विषय में ज्ञान अर्जित कर के उसका सामीप्य प्राप्त करने की चेष्टा करें।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल को उसके सुंदर एवं शुभ नामों एवं विशेषताओं के साथ जानना: दीन का मूल आधार, हिदायत व मार्गदर्शन की बुनियाद तथा हृदय एवं बुद्धि को प्राप्त होने वाली सर्वोत्तम एवं सबसे वाजिब चीज़ है।

अल्लाह तआला के शुभ नामः अल-मुहैमिन का उल्लेख सूरह हश्र के अंत में आया हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلْمُؤْمِنُ ٱلْمُهَيْمِنُ﴾

अनुवादः (वह अल्लाह ही है जिसके अतिरिक्त नहीं है कोई सच्चा वंदनीय, वह सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शांति प्रदान करने वाला, रक्षक है)। सूरह हश्रः 23।

हमारा रक्षक व निगहबान वह है जोः अपनी मख़लूक़ (रचना) के सभी मामलों का प्रबंधन करता है, चुनाँचे वह समस्त अदृश्य मामलों एवं दिलों के भेद से परिचित है, उसका ज्ञान प्रत्येक वस्तु को अपने घेरा में लिए हुए है, वह सभी जीव-जंतुओं के कर्मों का अवलोकन कर रहा है, उनके जो भी कर्तव्य एवं वक्तव्य हैं वह उन सब का निरीक्षक है, उनका कोई भी कर्म उससे छिप्त नहीं, उससे कोई भी चीज़ कण भर भी अदृश्य नहीं, न ज़मीन में तथा न ही आसमान में:

﴿وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فِى ٱلسَّمَآءِ وَلَآ أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ﴾

अनुवादः (आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी हुई नहीं रहती और न आकाश में न इससे कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है)। सूरह यूनुसः 61।

बंदों की सभी परिस्थितियां, उसके दिन व रात की क्रिया प्रतिक्रिया, उसकी आंतरिक व बाह्य स्थिति, उसकी यात्रा एवं ठहरने की दशा, इन सभी से ग़ैब को जानने वाला (रब) भली भांति परिचित है तथा उन्हें (बंदा के नाम -ए- आमाल में) लिख रहा है।

﴿فَإِنَّهُۥ يَعْلَمُ ٱلسِّرَّ وَأَخْفَى﴾

अनुवादः (वास्तव में वह जानता है भेद को तथा अत्यधिक छुपे भेद को)। सूरह ताहाः 7।

❑ निःसंदेह वह मुहैमिन (रक्षक) हैः

मुनाफ़िक़ों (पाखण्डियों) के एक समूह ने रात के अंधेरे में (मोमिनों के विरुद्ध) षड्यंत्र रचा एवं साज़िश की, किंतु (सुबह होते ही) अल्लामुल ग़ुयूब (भेदों को जानने वाले रब) ने उनकी साज़िश को बेनकाब कर दिया, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿يَسْتَخْفُونَ مِنَ ٱلنَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ ٱللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ ٱلْقَوْلِ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝١٠٨﴾

अनुवादः (वह (अपने करतूत) लोगों से छिपा सकते हैं किंतु अल्लाह से नहीं छुपा सकते, और वह उनके साथ होता है, जब वह रात में उस बात का परामर्श करते हैं जिससे वह प्रसन्न नहीं होता, तथा अल्लाह उसे घेरे हुये है जो वो कर रहे हैं)। सूरह निसाः 108।

बद्र युद्ध के पश्चात उमैर बिन वहब एवं स़फ़वान बिन उमैया रात के अंधेरे में काबा के पास बैठ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आक्रमण करने का षड्यंत्र रच रहे थे, अल्लाह तआला ने अपने रसूल को उनके षड्यंत्र की सूचना दे दी एवं उनकी इस साज़िश से आपको अवगत करायाः

مَلِيكٌ على عَرشِ السَّماءِ مُهَيمِنٌ   لِعِزَّتِهِ تَعنُو الوُجُوهُ وَتَسجُدُ

अनुवादः अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर विराजमान) बादशाह (अल्लाह) हर चीज़ का रक्षक है, उसकी महानता एवं वैभव के समक्ष समस्त सृष्टि नतमस्तक है।

हाँ, निश्चय ही वह सर्वशक्तिमान (अल्लाह) निगहबान एवं रक्षक है, अमीन तथा गवाह है, प्राणियों के सभी कर्मों का अवलोकन कर रहा है।

❑ निश्चिंत रहें!

हे वो लोग! कि जिनके नयन से अश्रुधारा बह रही है! अपने आँसुओं को पोंछ लें, चक्षुओं को राहत पहुँचाएं एवं निश्चिंत हो जाएं! क्योंकि जिसने आपकी उत्पत्ति की तथा वजूद में लाया वह आपकी निगहबानी कर रहा है एवं मोह तथा कृपा सहित वह आपकी देख रेख कर रहा है।

हे दास! निश्चिंत रह, क्योंकि भाग्य का निर्णय लिया जा चुका है, (अल्लाह ने) जो चुना वह घटित हो चुका है, तथा (रब की) कृपा भी प्राप्त हो चुकी है।

(थोड़ा सोचिए कि!) कितनी बार हमें मृत्यु का भय हुआ किंतु हम मरे नहीं!

कई दफा हमारे सारे मार्ग अवरुद्ध हो गए, सारी युक्तियां असफल हो गईं, तथा हमारी दृष्टि में यह संसार (अपनी चमक दमक के बावजूद) अंधकारमय हो गया, कि सहसा सहायता व मदद, भलाई व अच्छाई तथा शुभ सूचना ने हमारे द्वार को खटखटायाः

﴿قُلِ ٱللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنۡهَا وَمِن كُلِّ كَرۡبٖ ثُمَّ أَنتُمۡ تُشۡرِكُونَ ٦٤﴾

अनुवादः (आप कह दीजिए कि अल्लाह ही तुम्हें उन से मुक्ति देता है एवं हर संकट से, तत्पश्चात तुम शिर्क (बहुदेववादिता) करने लगते हो)। सूरह अनआमः 64।

कई बार ऐसा हुआ की हमारे सामने संसार अंधकारमय हो गया, आकाश एवं धरती अपने विस्तार के बावजूद हम पर तंग हो गये, फिर देखते ही देखते ख़ैर व भलाई तथा सुख समृद्धि के द्वार खुलने लगेः

﴿وَإِن يَمۡسَسۡكَ ٱللَّهُ بِضُرّٖ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَۖ وَإِن يُرِدۡكَ بِخَيۡرٖ فَلَا رَآدَّ لِفَضۡلِهِۦۚ يُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦۚ وَهُوَ ٱلۡغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ١٠٧﴾

अनुवादः (यदि अल्लाह आप को कोई दुःख पहुँचाना चाहे तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं, और यदि आप को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उस भलाई को रोकने वाला नहीं, वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है, तथा वह क्षमाशील दयावान है)। सूरह यूनुसः 107।

हमारा सर्वशक्तिमान पालनहार निगहबान है, समस्त इज़्ज़त सम्मान तथा प्रभुत्व एवं बुलंदी उसी के लिए है, एवं उसी से उदारता तथा ख़ुशहाली मिलती है।

इब्ने कसीर ने वह्ब बिन मुनब्बिह का एक कथन नकल किया है, वह कहते हैं किः "अल्लाह तआला अपनी एक किताब में फ़रमाता हैः मेरी इज़्ज़त व जलाल (सम्मान एवं प्रताप) की क़सम! जो बंदा मेरी पनाह हासिल करता है, और उसके विरुद्ध ज़मीन एवं आसमान मिल कर भी षड्यंत्र करते हैं, तो मैं आसमान एवं धरती के बीच से उसके लिए आसानी एवं मुक्ति का मार्ग पैदा कर देता हँ, मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! जो बंदा मेरे अतिरिक्त किसी और का आश्रय ढूँढ़ता है, मैं उसके पाँव के नीचे से ज़मीन निकाल देता देता"।

جَلالُكَ يا مُهَيمِنُ لا يَبِيدُ ومُلكُكَ دَائِمٌ أبدًا جَدِيدُ
وحُكمُكَ نَافِذٌ فِي كُل أَمرٍ ولَيسَ يَكُونُ إلا مَا تُرِيدُ
قَصَدتُ إِلى الُملُوكِ فَكُلُّ بَابٍ عَلَيهِ حَاجِبٌ فَظٌّ شديدُ
وبَابُكَ مَعدِنٌ لِلجُودِ يَا مَن إِلَيهِ يَقصِدُ العَبدُ الطَّرِيدُ

अनुवादः हे रक्षक! तेरा वैभव कभी समाप्त होने वाला नहीं, तेरा राज-पाट सदा बाकी एवं नया रहने वाला है। हरेक चीज़ में तेरा निर्णय ही चलता है, और वही होता है जो केवल तू चाहे। मैंने (संसार के) विभिन्न राजाओं के दरबार में जाने का प्रयास किया तो देखा कि वहाँ पर कठोर एवं हष्ट-पुष्ट पहरेदार तैनात हैं। और हे वह (रब!) कि (ज़माने से) दुत्कारा हुआ बंदा जिसकी ओर आशावान हो कर आता है, तेरा द्वार तो हर प्रकार की दयालुता एवं दानवीरता का श्रोत है।

❑ मोक्ष व मुक्ति की रस्सी ...

हमारे महान रब ने अपनी किताब (क़ुरआन) को पिछली सभी किताबों का रक्षक करार दिया हैः

﴿وَأَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ مُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَمُهَيۡمِنًا عَلَيۡهِۖ﴾

अनुवादः (और (हे नबी!) हमने आपकी ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (क़ुरआन) उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक है)। सूरह माइदाः 48।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि क़ुरआन अपने से पूर्व की सभी किताबों के लिए निर्णायक है, उन किताबों में जो उत्तम (आदेश एवं उपदेश आधारित) बातें थीं, उनके साथ अवतरित हुआ है, (उन आदेशों एवं उपदेशों में से) जिसको क़ुरआन ने मंसूख़ (निरस्त) कर दिया वह मंसूख़ है, क़ुरआन ने बनी इस्राईल के सामने अधिकांशतः उन चीज़ों को बयान कर दिया जिनमें वो मतभेद करते थे, चुनाँचे उनकी तह़रीफ़ (हेर-फेर) को स्पष्ट कर दिया एवं पूर्व की किताबों में जो ह़क़ व सत्य था उससे पर्दा उठा दिया।

जो मुसलमान इस पर ईमान लाता है, अल्लाह की किताब उसके दिल में प्रेम एवं इस बात पर अल्लाह की प्रशंसा करने तथा धन्यवाद देने के भाव जागृत करता है कि अल्लाह ने उसे ईमान की हिदायत दी, और यही वह चीज़ है जिसकी आशा प्रत्येक मोमिन रखता है,

तथा मोमिन हर रकअत में इसकी दुआ करता है: ﴿ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلۡمُسۡتَقِيمَ ٦﴾ अनुवादः (हमें सीधा मार्ग दिखा)। सूरह फ़ातिहाः 6।

हे रक्षक एवं निगहबान! हमें उन लोगों में शामिल फ़रमा जिन्हें तू ने हिदायत दी एवं अपने संरक्षण में रखा, हमें, हमारे माता-पिता एवं सभी मुसलमानों को क्षमा कर दे।

(18)

(अल-अज़ीज़ जल्ल जलालुहु)

ह़ाकिम ने अल-मुस्तदरक में वर्णन किया है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जब शाम (सीरिया) आए तो (मार्ग में) एक नहर पड़ गया, चुनाँचे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी ऊँटनी से उतरे, अपने मोज़े उतारे, फिर अपनी सवारी की नकेल थामी एवं नहर (पार करने के लिए उस) में उतर गए।

अबू उबैदा बिन जर्राह़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहाः "हे अमीरुल मोमिनीन (मोमिनों के सरदार)! आपने इस देश के रहवासियों के सामने एक बड़ा काम अंजाम दिया, अपने मोज़े उतार दिए, सवारी को अपने आगे कर दिया तथा नहर में उतर गए"।

इस पर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके सीने पर अपना हाथ मारा और कहाः "उफ्फ! हे अबू उबैदा! काश कि यह बात तुम्हारे सिवा कोई और कहता, तुम सबसे कमतर (तुच्छ) लोग थे लेकिन अल्लाह ने इसलाम के द्वारा सम्मान एवं सर्वोच्चता प्रदान की, तुम यदि इसके सिवा किसी और चीज़ में सम्मान खोजोगे तो अल्लाह तआला तुम्हें अपमानित कर देगा"।

अल्लाह तबारक व तआला का फ़रमान हैः ﴿مَن كَانَ يُرِيدُ ٱلْعِزَّةَ فَلِلَّهِ ٱلْعِزَّةُ جَمِيعًا﴾

अनुवादः (जो व्यक्ति सम्मान प्राप्त करना चाहता हो, तो अल्लाह तआला ही के लिए सारा सम्मान है)। सूरह फ़ात़िरः 10।

हमारे सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपनी बुलंद ज़ात की प्रशंसा करते हुए फ़रमायाः

﴿وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ۝٩﴾

अनुवादः (निःसंदेह तेरा रब ही प्रभुत्व वाला एवं अति दयालु है)। सूरह शुअराः 9।

﴿لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ﴾

अनुवादः (कोई पूज्य नहीं परंतु वही, वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है)। सूरह आले इमरानः 6।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने सात आसमानों के ऊपर से हमें यह आदेश दिया है कि हम इसे जान लें तथा इसका विश्वास रखें:

﴿وَٱعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾

अनुवादः (जान रखो कि अल्लाह तआला प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है)। सूरह बक़रहः 260।

बरकत व बुलंदी वाला हमारा प्रभुत्वशाली परवरदिगार वह है जो इज्जत व सम्मान के सभी सर्वोच्च अर्थों एवं उसके सर्वोत्तम कमाल तथा पूर्णता से -विशेषता एवं मिल्कियत दोनों आधार पर- परिपूर्ण हैः

अल्लाह तबारक व तआला का फ़रमान हैः ﴿مَن كَانَ يُرِيدُ ٱلۡعِزَّةَ فَلِلَّهِ ٱلۡعِزَّةُ جَمِيعًاۚ﴾

अनुवादः (जो व्यक्ति सम्मान प्राप्त करना चाहता हो, तो अल्लाह तआला ही के लिए सारा सम्मान है)। सूरह फ़ातिरः 10।

उसके लिए प्रभुत्व एवं सर्वोच्चता का सम्मान है, चुनाँचे वह अपने शत्रुओं पर विजयी एवं प्रभुत्व प्राप्त है।

उसके लिए सुरक्षा एवं संरक्षण का सम्मान है, चुनाँचे कोई प्राणी उस पाक परवरदिगार तक नहीं पहुँच सकता, वह अपनी ज़ात के साथ बेनियाज़ है।

उसके शक्ति एवं सामर्थ्य का सम्मान है, उसके सामर्थ्य के सामने सारी कठिन समस्याएं सरल हो जाती हैं तथा उसकी शक्ति के समक्ष सारी कठोरताएं विनम्र हो जाती हैं।

हमारा सर्वशक्तिमान पालनहार प्रभुत्वशाली है, जब शत्रुओं से प्रतिशोध लेता है तो बड़ी भयंकर यातना देता है।

वह महान है जो अपने बंदों में से जिसे चाहता है सम्मानित करता है।

वह सम्माननीय है जिसका पड़ोसी (उसका आश्रय लेने वाला) पराजित एवं पीड़ित नहीं होता तथा न ही उसके अंसार व मददगार अपमानित होते हैं।

وَهُوَ العَزِيزُ فَلَن يُرامُ جَنابُه   أَنَّى يرُامُ جَنابُ ذِي السُّلطَانِ
وَهُو العَزِيزُ القَاهِرُ الغَلَّابُ لَمْ   يَغلِبهُ شيءٌ هذهِ صِفتانِ
وهُو العَزِيزُ بِقُوَّةٍ هِيَ وَصفُه   فَالعِزُّ حِينَئِذٍ ثَلاثُ مَعَانِ
وَهِي الَّتِي كَمُلَت لَهُ سُبحَانَه   مِن كُل وَجهٍ عَادِمِ النُّقصَانِ

अनुवादः वह ऐसा प्रभुत्वशाली है कि जिसके ऊपर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, (उस जैसे) बादशाह की इज़्ज़त व प्रभुत्व पर भला कोई कैसे प्रभुत्व पा सकता है?! वह विजयी एवं धराशायी करने वाला है, उस पर कोई चीज़ प्रभुत्व नहीं पा सकती, ये दोनों उसकी विशेषताएं हैं। वह शक्ति एवं सामर्थ्य के साथ प्रभुत्वशाली है, यह शक्ति उसकी विशेषता है, अतः (जिस इज़्ज़त व सामर्थ्य से वह विशेषित है उस) इज़्ज़त के तीन अर्थ हैं। यह इज़्ज़त, शक्ति व सामर्थ्य उस पाक ज़ात के लिए चहुँ ओर से कामिल व पूर्ण है, इसमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं।

❐ सामर्थ्य एवं प्रभुत्व वाले (रब) की सुरक्षा में:

मोमिनों को जब यह ज्ञात हो गया और वह इस पर ईमान ले आए कि सम्मान केवल अल्लाह ही से मिलता है, तो वह सम्माननीय सर्वशक्तिमान (अल्लाह) के समक्ष नतमस्तक हो गए, उससे विनती करने लगे, उसकी सुरक्षा में आने को आतुर हो गए, उसी की इज़्ज़त की पनाह खोजने लगे तथा उसी से इज़्ज़त व सम्मान की प्रार्थना करने लगे, क्योंकि उन्होंने उस महान व अति प्रभुत्वशाली रब के इस फ़रमान की तिलावत (पाठ) कीः

﴿مَن كَانَ يُرِيدُ ٱلۡعِزَّةَ فَلِلَّهِ ٱلۡعِزَّةُ جَمِيعًاۚ﴾

अनुवादः (जो व्यक्ति सम्मान प्राप्त करना चाहता हो, तो अल्लाह तआला ही के लिए सारा सम्मान है)। सूरह फ़ातिरः 10।

मदाइनी ने अपनी पुस्तक में एक घटना का उल्लेख किया हैः "यमन में एक व्यक्ति हज्जाज के पास उसके भाई मुहम्मद बिन यूसुफ़ की शिकायत ले कर आया, तो देखा कि हज्जाज मिम्बर (मंच) पर है, अतः वह उसके निकट गया तथा उसके भाई मुहम्मद की शिकायत करने लगा, इस पर हज्जाज ने उसे क़ैद करने का आदेश दिया, जब वह मिम्बर से उतरा तो अति क्रोधित हो कर उसे बुलाया और कहने लगाः तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि मेरे भाई की शिकायत करो?! उसने उत्तर दिया किः अल्लाह की क़सम यदि आपकी पनाह मिल जाए तो मैं आपके भाई से भी अधिक सम्माननीय हूँ, यह सुन कर हज्जाज ने कहाः इसे आज़ाद कर दो"।

لا تَسقِني كَأسَ الحَياةِ بِذِلَّةٍ   بَل فاسقِني بِالعِزِ كَأسَ الحَنظَلِ

अनुवादः मुझे अपमानित कर के यदि अमृत भी पिलाना हो तो मत पिलाओ, परंतु सम्मान के साथ यदि चाहो तो विष का जाम भी पिला दो।

मुसलमान के हृदय में (अल्लाह के) इस नाम का सम्मान जितना अधिक होगा उतना ही वह उसे जीवन में उतारने के लिए प्रयासरत रहेगा, तथा उसी के समान उसे सम्मान एवं इज़्ज़त भी मिलेगीः ﴿وَلِلَّهِ ٱلۡعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِۦ وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ﴾ अनुवादः (सम्मान तो केवल अल्लाह तआला के लिए, उसके रसूल के लिए तथा ईमान वालों के लिए है)। सूरह मुनाफ़िक़ूनः 8।

मानव जाती में सर्वाधिक सम्मानितः नबी हैं तत्पश्चात वो मोमिन हैं जिनको उच्च स्थान प्राप्त हो।

इसी कारणवश लोक एवं परलोक में भाग्यशाली वही है जिसे अल्लाह भाग्यशाली बनाएः

﴿قُلِ ٱللَّهُمَّ مَٰلِكَ ٱلۡمُلۡكِ تُؤۡتِي ٱلۡمُلۡكَ مَن تَشَآءُ وَتَنزِعُ ٱلۡمُلۡكَ مِمَّن تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَآءُۖ بِيَدِكَ ٱلۡخَيۡرُۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ٢٦﴾

अनुवादः (हे (नबी) कहियेः हे अल्लाह! राज्य के अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य दे, और जिससे चाहे राज्य छीन ले, तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहे अपमान दे, तेरे ही हाथ में भलाई है, निःसंदेह तू जो चाहे कर सकता है)। सूरह आले इमरानः 26।

❑ सम्मान व सौभाग्य उसे पाने की चेष्टा करने वालों के लिए हैः

जिसने अल्लाह तआला के सिवा किसी और से सम्मानित करने की चाह रखी, उसने समाप्ति की ओर अग्रसर बादशाहत एवं विनाश की ओर बढ़ती शक्ति से सम्मानित करने की आकांक्षा रखी।

भला कोई व्यक्ति अल्लाह के समक्ष कैसे टिक सकता एवं उस पर कैसे प्रभुत्व पा सकता है? फ़िरऔन के समुदाय के लोगों ने फ़िरऔन से सम्मान की चाह रखीः

﴿وَقَالُواْ بِعِزَّةِ فِرۡعَوۡنَ إِنَّا لَنَحۡنُ ٱلۡغَٰلِبُونَ﴾

अनुवादः (कहने लगे फ़िरऔन के सम्मान की क़सम! निश्चय ही हम विजयी होंगे)। सूरह शुअराः 44।

तो इसका परिणाम क्या निकलाः

﴿فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝٤٥﴾

अनुवादः (अब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वो बना रहे थे)। सूरह शुअराः 45।

बहुतेरे लोग काफिरों एवं दीन -ए- इस्लाम के शत्रुओं के पास सम्मान खोजते हैं, ऐसे लोग अल्लाह का वैसा आदर नहीं करते जैसा उसका आदर होना चाहिए न ही उसे सही ढ़ंग से जानते हैं, अन्यथा वो लोग उनके दिलों में निहायत ही घटिया होते जिनसे वह दोस्ती गांठते हैं, चाहे वो कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों, उनके अनुसरण कर्ताओं की संख्या चाहे कितनी ही अधिक क्यों न हो, सर्वशक्तिमान अल्लाह के सम्मान, शक्ति, सामर्थ्य, किब्रियाई, क़ुदरत एवं प्रभुत्व के समक्ष इसका कोई महत्व नहीं।

अल्लाह तआला ने सूचना दी है कि वह जिस सम्मान एवं समृद्धि की खोज में हैं, वह अल्लाह के सिवा किसी और से नहीं मिल सकती, बल्कि ऐसे लोगों कि स्थिति मुनाफ़िक़ों के जैसी हो चुकी है कि जिनका बाह्य रूप उनके आंतिरकि मनोभाव से बिल्कुल मेल नहीं खाताः

﴿بَشِّرِ ٱلْمُنَٰفِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝١٣٨ ٱلَّذِينَ يَتَّخِذُونَ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِندَهُمُ ٱلْعِزَّةَ فَإِنَّ ٱلْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۝١٣٩﴾

अनुवादः (-हे नबी!- आप मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) को सूचना दे दें कि उन्हीं के लिए दुखदायी यातना है। जो ईमान वालों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना सहायक मित्र बनाते हैं, क्या वह उन के पास मान सम्मान चाहते हैं? तो -जान लो- निःसंदेह सब मान सम्मान अल्लाह ही के लिए है)। सूरह निसाः 138-139।

कुछ लोग ऐसे भी है जो अपने व्यक्तित्व तथा अपने वंश पर अभिमान करते हैं, मुसनद अह़मद में उबैई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः दो व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में अपने वंश एवं ख़ानदान पर अभिमान करने लगे, उन में से एक ने कहाः मैं अमूक पुत्र अमूक पुत्र अमूक हूँ, तू कौन है, तेरी माता को भी कोई नहीं जानता?!

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “मूसा अलैहिस्सलाम के युग में भी दो लोगों ने आपस में वंश एवं ख़ानदान पर अभिमान किया था, एक ने कहाः मैं अमूक पुत्र अमूक हूँ, यहाँ तक कि उसने अपने नौ पूर्वजों के नाम गिना दिये, (फिर सामने वाले

से पूछा किः) तुम कौन हो, तुम्हारी माँ को भी कोई नहीं जानता?! दूसरे ने कहाः मैं अमूक पुत्र अमूक पुत्र इसलाम हूँ", इसके पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "फिर अल्लाह तआला ने उन दोनों के विषय में मूसा अलैहिस्सलाम पर वह़्य (प्रकाशना) भेजी कि ऐ वह! जिसने अपने नौ पूर्जों से अपना संबंध जोड़ा, वह नौ के नौ जहन्नम में जाएंगे, और तू उनका दसवाँ होगा, और हे वह! कि जिसने अपना संबंध केवल दो लोगों से जोड़ा, वह दोनों जन्नत में जाएंगे, और तू उनका तीसरा होगा"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

किसी महापुरुष ने कहा हैः जिसको अपने पद का अभिमान हो उसे फ़िरऔन से इबरत (शिक्षा, सीख) पकड़नी चाहिए, जिसे अपने धन-संपदा पर घमंड हो उसे क़ारून की दुर्दशा नहीं भूलनी चाहिए, तथा जिसे अपने वंश एवं वर्ण का अहंकार हो वह अबू लहब की दुर्गति को न भूले। फिर उसे विश्वास हो जाएगा कि वास्तविक सम्मान व प्रतिष्ठा केवल तक़्वा तथा सदाचार अपनाने से ही प्राप्त होती है।

किसी ने सच कहा हैः "हम एक ऐसी क़ौम हैं जिसे अल्लाह तआला ने इसलाम के द्वारा सम्मान व आदर प्रदान किया है, अतः यदि हमने इसके सिवा किसी और चीज़ के द्वारा सम्मान पाने की चेष्ठा की तो अल्लाह हमें अपमानित कर देगा"।

वर्तमान युग में उम्मत -ए- इसलामिया के तिरस्कार एवं अपमान का सबसे बड़ा कारण यही है किः उसने अल्लाह तआला से उस प्रकार से सम्मान पाने का प्रयास नहीं किया जैसा प्रयास होना चाहिए था।

❒ वही आपको सम्मान तथा आदर प्रदान करता है ...

जब काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धमकी देना आरंभ किया, आपके विरुद्ध अपशब्द बोलने लगे, अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके उस पर इतराने लगे तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल को सांत्वना देते हुए यह आयत (श्लोक) नाज़िल फ़रमाईः

﴿وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ ٱلْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ٦٥﴾

अनुवादः (-हे नबी- उन की बातें आपको उदासीन न करे, वास्तव में सभी प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है, और वह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है)। सूरह यूनुसः 65।

ज्यों ज्यों ईमान में वृद्धि होती है त्यों त्यों मोमिन के हृदय में सम्मान बढ़ता जाता है, (अल्लाह की) सहायता, विजय एवं प्रभुत्व पर उसका विश्वास बढ़ता चला जाता है, सर्शक्तिमान अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَمَا جَعَلَهُ ٱللَّهُ إِلَّا بُشۡرَىٰ لَكُمۡ وَلِتَطۡمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِۦۗ وَمَا ٱلنَّصۡرُ إِلَّا مِنۡ عِندِ ٱللَّهِ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡحَكِيمِ ١٢٦﴾

अनुवादः (और अल्लाह ने इस को तुम्हारे लिए केवल शुभ सूचना बनाया है, और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये, और समर्थन तो केवल अल्लाह ही के पास है, जो प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है)। सूरह आले इमरानः 126।

इसके अतिरिक्त अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फ़रमायाः

﴿وَلَيَنصُرَنَّ ٱللَّهُ مَن يَنصُرُهُۥٓۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ٤٠﴾

अनुवादः (अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा जो उस (के सत्य) की सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है)। सूरह हज्जः 40।

जिसको ईमान की दौलत मिल गई, उसे सम्मान भी प्राप्त हो गया तथा जिसे सम्मान व आदर मिल गया उसे अल्लाह की मुहब्बत मिल गई, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿فَسَوۡفَ يَأۡتِي ٱللَّهُ بِقَوۡمٖ يُحِبُّهُمۡ وَيُحِبُّونَهُۥٓ أَذِلَّةٍ عَلَى ٱلۡمُؤۡمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى ٱلۡكَٰفِرِينَ﴾

अनुवादः (अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा करेगा, जिन से वह प्रेम करेगा, और वो उस से प्रेम करेंगे, वो लोग ईमान वालों के लिए कोमल तथा काफ़िरों के लिए कठोर होंगे)। सूरह माइदाः 54।

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "जो लोक एवं परलोक में सम्मान एवं आदर पाना चाहता हो, उसे चाहिए कि अल्लाह पाक का आज्ञापालन करे, इसी के द्वारा इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि पाक व पवित्र अल्लाह ही लोक एवं परलोक का स्वामी है, तथा समस्त सम्मान एवं आदर उसी के अधिकार में है, जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿فَإِنَّ ٱلۡعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعٗا﴾

अनुवादः (निःसंदेह सब मान सम्मान अल्लाह ही के लिए है)। सूरह निसाः 139।

इब्राहीम अल-ख़व्वास़ रहि़महुल्लाह फ़रमाते हैं किः "मोमिन जितना अल्लाह के आदेशों का सम्मान करता है उतना ही अल्लाह तआला उसे अपने सम्मान से नवाज़ता है तथा दूसरे मोमिनों के दिलों में उसके लिए आदर पैदा कर देता है, अल्लाह तआला के इस फ़रमान का यही आशय हैः ﴿وَلِلَّهِ ٱلْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِۦ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ﴾ अनुवादः (सम्मान तो केवल अल्लाह तआला के लिए, उसके रसूल के लिए तथा ईमान वालों के लिए है, परंतु मुनाफ़िक़ीन इससे अनभिज्ञ हैं)। सूरह मुनाफ़िक़ूनः 8"।

❐ सम्मान एवं आदर कि कुंजियाँ:

आदर तथा सम्मान उसी समय मिलेगा जब उसे प्राप्त करने के माध्यमों को अपनाया जायेगाः

सर्वप्रथमः ईमान पर जमे रहना, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَلِلَّهِ ٱلْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِۦ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ﴾

अनुवादः (सम्मान तो केवल अल्लाह तआला के लिए, उसके रसूल के लिए तथा ईमान वालों के लिए है, परंतु मुनाफ़िक़ीन इससे अनभिज्ञ हैं)। सूरह मुनाफ़िक़ूनः 8"।

मोमिनों के प्रति विनम्रता अपनाई जाए, अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का इर्शाद हैः

﴿أَذِلَّةٍ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ﴾

अनुवादः (वो ईमान वालों के लिए कोमल तथा काफ़िरों के लिए कठोर होंगे)। सूरह माइदाः 54।

अपने अंदर क्षमा करने एवं माफ़ कर देने की क्षमता का विस्तार किया जाए, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ हैः "जो बंदा माफ कर देता है अल्लाह उसकी इज़्ज़त बढ़ा देता है"। (मुस्लिम)।

दुआ के दौरान इस नाम (अल-अज़ीज़) के वसीले से अल्लाह का सामीप्य प्राप्त किया जाए, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ करते हुए कहा थाः

﴿رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَٱغْفِرْ لَنَا رَبَّنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ۝٥﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! हमें न बना परीक्षा (का साधन) काफ़िरों के लिए और हमें क्षमा कर दे, हे हमारे रब! वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली गुणी है)। सूरह मुम्तह़िनाः 5।

इसी नाम के वसीला से अर्श (सिंहासन) को थामने वाले फ़रिश्ते मोमिनों के लिए दुआ करते हैं:

﴿رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّٰتِ عَدْنٍ ٱلَّتِى وَعَدتَّهُمْ وَمَن صَلَحَ مِنْ ءَابَآئِهِمْ وَأَزْوَٰجِهِمْ وَذُرِّيَّٰتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ۝٨﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! तथा प्रवेश करा दे उन्हें उन स्थाई स्वर्गों में जिन का तू ने उनको वचन दिया है, तथा जो सदाचारी हैं उन के पूर्वजों तथा पत्नियों और उनकी संतानों में से, निश्चय ही तू सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है)। सूरह ग़ाफ़िरः 8।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात के समय जब नींद से जागते तो यह दुआ पढ़तेः لا إله إلاَّ الله الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ، رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّار , (अर्थातः अकेले एवं प्रभुत्वशाली अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, जो पालनहार है आसमानों का और धरती का तथा जो कुछ उनके बीच है, वह बड़ा ज़बरदस्त एवं क्षमा करने वाला है)।

एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होता है तथा दर्द की शिकायत करता है, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे यह शिक्षा देते हैं कि अल्लाह की "इज़्ज़त" के वसीले से उसकी इबादत करे, उस व्यक्ति से हमारे प्रियतम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: "उस स्थान पर अपना हाथ रखो (जहाँ दर्द होता है) तथा सात बार यह दुआ पढ़ोः بِسْمِ اللهِ أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللهِ، وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ، وَأُحَاذِرُ अर्थातः अल्लाह के नाम से, मैं अल्लाह की इज़्ज़त और उसकी क़ुदरत की पनाह माँगता हूँ, उस तक्लीफ की बुराई से जो मैं अनुभव कर रहा हूँ, और जिससे डरता हूँ"। (मुस्लिम)।

❒ ज़रा सोचें!

अल्लाह तआला का शुभ नाम अल-अज़ीज़ (प्रभुत्वशाली) उसके इन नामों के साथ वर्णित हुआ हैः अल-क़वी (शक्तिशाली), अल-ह़कीम (ह़िकमत वाला, तत्वदर्शी), अल-अलीम (जानने वाला, ज्ञाता), अल-ह़मीद (प्रशंसनीय), अल-ग़फ़ूर (क्षमा करने वाल), अल-वह्हाब (नवाज़ने वाला, प्रदान करने वाला), अल-मुक़तदिर (क़ुदरत एवं सामर्थ्य वाला)।

अल्लाह की क़सम! यह हमारे ऊपर अल्लाह की दया की पराकाष्ठा है तथा उसके उपकार एवं एहसान की चरम सीमा है।

यह इस बात का प्रमाण है कि: हमारे रब के असमा (नाम) एवं उसके सिफ़ात (विशेषताएं, गुण) कामिल व पूर्ण हैं, तथा वह परस्पर एक दूसरे को सम्मिलित हैं, वह सर्वशक्तिशाली पवित्र रब अपनी इज़्ज़त (सामर्थ्य व शक्ति), अपने प्रताप एवं वैभव तथा अपनी पकड़ में पूर्ण होने के साथ ही अपनी हिकमत एवं इल्म में भी कामिल है, अपने बंदों पर अति दयालु एवं कृपालु है, अपने मामलों में अति प्रशंसनीय है, अपने अक़वाल व अफ़आल (वक्तव्य एवं कर्म) तथा अपने अहकाम (आदेशों) में स्तुत्य व सराहनीय है।

उसकी इज़्ज़त: हिकमत, रहमत एवं इंसाफ पर आधारित है:

﴿لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

अनुवाद: (कोई पूज्य नहीं परंतु वही, वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है)। सूरह आले इमरान: 6।

चूँकि उसकी इज़्ज़त: कमाल (पूर्णता) एवं महानता व प्रताप वाली इज़्ज़त है, इसलिए वह इस बात के योग्य है कि सदा उसकी प्रशंसा की जाए, अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡحَمِيدِ﴾ अनुवाद: (जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है)। सूरह इब्राहीम: 1।

يا مالِكا هُوَ بِالنَّواصِي آخذُ   وقَضاؤُهُ فِي كُل شيءٍ نَافِذُ
أنَا عَائِذٌ بِكَ يا كَرِيمُ ولم يَخِب   عَبدٌ بِعِزِّكَ مُستَجِيرٌ عَائِذُ

अनुवाद: हे वास्तविक बादशाह जो सभी ललाटों (मानवों) का स्वामी है, और जिसका निर्णय हर चीज़ में चलता है। हे अति दयालु (रब)! मैं तेरी पनाह का तलबगार हूँ, और वह बंदा कभी अपमानित नहीं हो सकता जो तेरी इज़्ज़त व प्रताप की पनाह में आए।

﴿سُبۡحَٰنَ رَبِّكَ رَبِّ ٱلۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝١٨٠ وَسَلَٰمٌ عَلَى ٱلۡمُرۡسَلِينَ ۝١٨١ وَٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ۝١٨٢﴾

अनुवाद: (पवित्र है आप का पालनहार गौरव का स्वामी उस बात से जो वह बना रहे हैं। तथा सलाम है रसूलों पर। और सभी प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार के लिए है)। सूरह साफ़्फ़ात: 180-182।

हे अल्लाह! हे प्रभुत्वशाली! हमें अपने आज्ञापालन के द्वारा सम्मान एवं सर्वोच्चता प्रदान कर तथा अपनी अवज्ञा की वजह से हमें अपमानित न कर।

(19)

(अल-जब्बार जल्ल जलालुहु)

जब ज़माना मुँह फेर ले, भाई जब आपकी उपेक्षा करें, अंधेरा जब अपना डेरा डाल दे, (आपके) दिन रात बदल जाएं, बीमारियां दुगनी हो जाएं, संकट बढ़ जाए, तो आप यह पुकार लगाएं: हे अल्लाह! हे टूटे दिलों को जोड़ने वाले ... मेरे नुक़सान की भरपाई कर दे, मेरी दुर्बलता पर दया कर ... फिर अल्लाह आपकी अवश्य सुनेगा।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल स्यवं अपने बारे में इर्शाद फ़रमाता हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلْمُؤْمِنُ ٱلْمُهَيْمِنُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْجَبَّارُ ٱلْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾﴾

अनुवादः (वह अल्लाह ही है जिसके अतिरिक्त नहीं है कोई सच्चा वंदनीय, वह सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शांति प्रदान करने वाला, रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली, बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला, बड़ाई वाला है, पवित्र है अल्लाह उस से जिसे वे (उसका) साझी बनाते हैं)। सूरह हश्रः 23।

पाक व पवित्र "जब्बार" वह हैः जो टूटे दिलों को जोड़ता है, निर्धन को धनवान बनाता है, हरेक कठिनाई को सरलता में परिवर्तित कर देता है, तथा ऐसे हृदयों की विनती एवं दुहाई को विशेष रूप से सुनता है जो उसकी महानता एवं प्रताप के समक्ष विनीत व झुके रहते हैं।

पाक व पवित्र "जब्बार" वह हैः जो हर चीज़ पर ग़लबा व प्रभुत्व रखने वाला है, जिसके समक्ष प्रत्येक चीज़ नतमस्तक हैं।

पाक व पवित्र "जब्बार" वह हैः जो हरेक चीज़ पर तथा अपनी मख़लूक़ (सृष्टि, रचना) पर बुलंद तथा अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर विराजमान) है।

हमारे परवरदिगार के लिए ही हर प्रकार की महानता, बड़ाई, अभिमान, दंभ है, वह अपनी बड़ाई व किब्रियाई के द्वारा हरेक अत्याचारी एवं अभिमानी पर हावी है, और अपनी अज़मत व महानता के द्वारा उन सभी पर बुलंद है।

सर्वशक्तिशाली अल्लाह ने इस नाम (जब्बार) के द्वारा अपनी प्रशंसा की है, महान अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡجَبَّارُ ٱلۡمُتَكَبِّرُۚ﴾

अनुवादः (प्रभावशाली, शक्तिशाली, बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला)। सूरह ह़श्रः 23।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दा एवं रुकूअ में यह दुआ पढ़ा करते थेः سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ وَالْمَلَكُوتِ، وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ (सुब्ह़ान ज़िल जबरूति वल मलकूति वल किब्रियाइ वल अज़मति), अर्थातः पाक व पवित्र है वह ज़ात जो बड़ाई व बादशाही तथा अज़मत व किब्रियाई वाला है)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

❒ उसकी जब्बार (शक्तिशाली होने को दर्शाने) वाली विशेषता में हस्तक्षेप न करें!

जब्बार (ज़ोरावर, बलवान, शक्तिशाली): (यह विशेषता) अल्लाह के लिए प्रशंसा एवं कमाल (पूर्णता) वाली विशेषता है, जब्कि इस विशेषता से यदि कोई मानव विशेषित होता है तो सामान्य रूप से यहः (उसके लिए) निंदा, दोष एवं ऐब से परिपूर्ण विशेषता होती है, क्या आप नहीं देखते कि जो इंसान यह दावा करता है कि वह जब्बार (बलवान) हैः उसे खटमल भी दुःख पहुँचा देता है, साधारण कीड़ा भी उसके शरीर को खा जाता है, मक्खी (तक) उसे बेबस कर देती है, वह भूख से निढ़ाल एवं पेट (अधिक) भर जाने पर बेहाल हो जाता है?!

इसी कारणवश रसूलों ने अपने समुदाय के लोगों को इस बात से रोका कि वो इस धरती पर अकारण एवं नाह़क़ (अभिमान एवं अत्याचार करते) फिरें, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَإِذَا بَطَشۡتُم بَطَشۡتُمۡ جَبَّارِينَ ١٣٠﴾

अनुवादः (और जब किसी को पकड़ते हो तो पकड़ते हो महा अत्याचारी बन कर)। सूरह शुअराः 130।

जो व्यक्ति अहंकार व घमण्ड करता है, उसके दिल पर अल्लाह तआला मुहर लगा देता हैः

﴿كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ﴾

अनुवादः (इसी प्रकार अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक अहंकारी अत्याचारी के दिल पर)। सूरह मोमिनः 35।

सर्शक्तिशाली अल्लाह ने अभिमाना एवं घमण्डी लोगों को अज़ाब (यातना) की धमकी दी हैः

﴿وَٱسْتَفْتَحُوا۟ وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝١٥ مِّن وَرَآئِهِۦ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّآءٍ صَدِيدٍ ۝١٦﴾

अनुवादः (और उन (रसूलों) ने विजय की प्रार्थना की, तो सभी उद्दंड विरोधी असफल हो गये। उसके आगे नरक है उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा)। सूरह इब्राहीमः 15-16।

ह़दीस़ में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़्यामत के दिन जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी उसकी दो आँखें होंगी जो देखेंगी, दो कान होंगे जो सुनेंगे तथा एक ज़ुबान होगी जो बोलेगी, वह कहेगीः मुझे तीन प्रकार के लोगों पर मुसल्लत किया (थोपा) गया हैः हर उद्दंड अत्याचारी पर, हर उस व्यक्ति पर जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को पुकारता हो, तथा चित्रकार पर"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आपने फ़रमायाः "जन्नत एवं जहन्नम ने वाद-विवाद किया, जहन्नम ने कहाः मैं घमण्डियों एवं अभिमानियों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई हूँ"। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

कहाँ हैं घमण्ड करने वाले लोग?!...

कहाँ हैं अत्याचार एवं ज़ुल्म करने वाले लोग?!...

أَينَ الْمُلُوكُ وأَبناءُ الْمُلُوكِ وَمَن ‌ ‌ ‌ كانَت تَخِرُّ لهُ الأَذقَانُ إِذعاناً
صَاحَت بِهِم حادثاتُ الدَّهرِ فانقَلَبُوا ‌ ‌ ‌ مُستَبدِلِينَ مِن الأَوطَانِ لِلأَوطَانِ

अनुवादः कहाँ हैं सांसारिक राजा महाराजा तथा उनके राजकुमार और वह लोग जिसके समक्ष (उसके सम्मान में) ठुड्डियाँ झुकी रहती थीं। ज़माने की गर्दिशों (कालचक्र) ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया और वह एक दुनियाँ से दूसरी दुनियाँ की तरफ चल बसे।

❒ आसमान के द्वार पर दस्तक दें!

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاجْبُرْنِي، وَاهْدِنِي، وَارْزُقْنِي (अर्थातः हे अल्लाह! मुझे माफ कर दे, मुझ पर दया कर, मेरे नुकसान की भरपाई कर दे, मुझे हिदायत दे तथा मुझे रिज़्क व जीविका प्रदान कर)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

जीवन में विभिन्न प्रकार की हानियों का सामना होता है, हर दिन हम इस जीवन के दुःख एवं तक्लीफ़ से टूटते बिखरते हैं, हमें हर क्षण अल्लाह तआला की आवश्यकता रहती है, ताकि वह हमारे नुकसान की भरपाई फ़रमा दे एवं हमारी दुर्बलता को शक्ति में परिवर्तित कर दे।

شبابٌ وشيْبٌ وافتِقَارٌ وثَروَة   فَلِلَّهِ هَذا الدَّهرُ كَيفَ تَرَدَّدَا؟!

अनुवादः युवावस्था, वृद्धावस्था, निर्धनता एवं संपन्नता, अललाह! अल्लाह! यह ज़माना कैसे-कैसे रूप बदलता है?!

रोगी मृत्यु शय्या पर पड़ा रोग से लड़ता हुआ, हे अल्लाह! (हे अल्लाह!) की पुकार लगाता है, फिर देखते ही देखते "जब्बार (हर क्षति को दूर करने वाला)" उसके रोग को दूर करता एवं उसे अपनी ओर से आरोग्य प्रदान करता है।

निर्धन एवं असहाय पूर्णतः (जीवन से) हार जाता है, (यहाँ तक कि) उसके पास फूटी कौड़ी भी नहीं होती, निर्धनता एवं कंगाली के कारण आहें भरता एवं दरिद्रता व फ़ाक़ा की मार से रोता बिलकता है, ऐसे में वह आसमान की ओर निगाह उठाता और पुकारता हैः हे अल्लाह! फिर "जब्बार (हर हानि की भरपाई करना वाला रब)" उसके नुकसान की भरपाई कर देता है, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति फ़रमाता है तथा उसकी दरिद्रता दूर कर देता है।

पीड़ित व मज़लूम व्यक्ति पराजित हो कर निढ़ाल हो जाता है, अपने रूदन-क्रंदन को छुपाए रहता एवं अपने आँसू पोछता रहता है, और ऐसे में अल्लाह के द्वार पर स्वयं को सौंपते हुए पुकारता हैः हे अल्लाह! फिर "जब्बार (ज़ोरावर एवं बलशाली रब)" उसका बदला लेता, अपनी सेना भेजता एवं अपनी मदद नाज़िल फ़रमाता है।

क़ैद व बंद का शिकार व्यक्ति सलाख़ों के पीछे टूटे दिलों के साथ, बेड़ियों में जकड़ा हुआ, ज़ंजीर में बंधा हुआ है, ऐसी परिस्थिति में निदा लगाता हैः हे अल्लाह! फि होता यह है कि "जब्बार (टूटे हुए दिलों को जोड़ने वाला रब)" उसकी परेशानी को दूर करता एवं उसके

लिए दरवाज़ा खोल देता है, फिर बेड़ियां खुलने लगतीं हैं तथा समृद्धि एवं शांति का संचार होने लगता है।

बाँझ इंसान निराशा के अथाह समुद्र में गोता लगाता हुआ, चहुँ ओर से दुखों से घिरा हुआ, आशा की डोर क्षीण हुई चुकी होती है, ऐसे में वह मुसल्ला (जाए नमाज़) लेता एवं देर तक (सज्दे में) रोता रहता और यह पुकार लगाता है किः "हे मेरे पालनहार! मुझे अपने पास से पाकीज़ा एवं पवित्र संतान प्रदान कर", फिर "जब्बार (हर प्रकार की क्षति को दूर करने वाला)" उसकी व्याकुलता पर दया करता है, और अपना आदेश पारित करता एवं अपनी मदद व सहायता भेजता है, अंततः जो चीज़ उस (की आशाओं) से दूर थी वह प्रत्यक्ष दिखाई देने लगती है, होंटों पर मुस्कान बिखरने लगती है, एवं गर्भ ठहर जाता है।

निस्संदेह वह महा शक्तिशाली जब्बार ही हैः जो हर गिरह को खोलता, टूटे दिलों, टूटी हड्डियों एवं बिखरे हुए लोगों को जोड़ता है, अश्रुओं को रोकता, दुःख एवं संकट को दूर कर के ख़ुशी एवं प्रसन्नता नाज़िल फ़रमाता है।

सब के सब उसको ही पुकारते हैं किः मेरी क्षति की भरपाई कर तथा मेरी अशक्तता एवं दुर्बलता पर दया कर!

﴿يَسْـَٔلُهُۥ مَن فِى ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِى شَأْنٍ ۝٢٩﴾

अनुवादः (उसी से माँगते हैं जो आकाशों तथा धरती में है, प्रत्येक दिन वह एक नये शान (कार्य) में है)। सूरह रहमानः 29।

وإذَا العِنَايَةُ لاحَظَتكَ عُيُونُهَا　　　نَم فَالحَوَادِثُ كُلُّهُنَّ أَمَانُ

अनुवादः जब आपको (अल्लाह की) इनायत (अनुग्रह) मिल जाये तो आप (शांति की नींद) सो जाएं, क्योंकि उसके बाद सभी हादसे (स्वयं) सुरक्षा (प्रदान करने वाले) होंगे।

हर वह क्षति जो आपको अल्लाह के दरबार में ला खड़ा करे, वह (क्षति नहीं, अपितु) भरपाई है, यद्यपि वह तक्लीफ का कारण ही क्यों न हो।

सर्वशक्तिशाली अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَإِن مِّن شَىْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَآئِنُهُۥ وَمَا نُنَزِّلُهُۥٓ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝٢١﴾

अनुवादः (और कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जिसके कोष हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं)। सूरह हिज्रः 21।

उसी पाक, पवित्र तथा महान (रब) के हाथ में आसानी व समृद्धि की चाभियाँ हैं, जब दर्द व ग़म आप को निढ़ाल कर दे, तो उसी बादशाह, ज्ञानी, दिलों को जोड़ने एवं क्षति की भरपाई करने वाले (रब) से लौ व ध्यान लगाएं तथा उसी से आशा रखते हुए यह विनती करें: ऐ टूटे हुए दिलों को जोड़ने वाले! मेरी क्षति की भरपाई कर दे, मेरी दुर्बलता पर दया कर तथा मेरे दुःख को सुख में परिवर्तित कर देः

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾

अनुवादः (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब वह उसे पुकारे?!, और दूर करता है दुःख को)। सूरह नम्लः 62।

وَلَرُبَّ نازِلَةٍ يَضِيقُ بِها الفَتَى ذَرعاً وَعِندَ اللهِ مِنهَا المَخْرَجُ
ضَاقَت فَلَمَّا استَحكَمَت حَلَقَاتُها فُرِجَت وكان يَظُنُّها لا تُفرَجُ

अनुवादः कितने ही दुःख तथा कष्ट ऐसे हैं कि जिनसे मानव तंग आ जाता है, जब्कि अल्लाह के पास उसका समाधान उपलब्ध होता है। जब तंगी बढ़ जाती है एवं उसकी जड़ें बलवान हो जाती हैं, तब वह (तंगी) खुशहाली में परिवर्तित होने लगती है जब्कि मानव समझ रहा होता है कि यह तंगी दूर नहीं होगी।

❒ आप बलसम (दुखियारों के लिए प्रसन्नता का कारण) बन कर रहें!

याद रखें किः आफत व परेशानी, दुनियाँ में पनपने वाली क्षति एवं नुकसान हैं, इसलिए जब किसी मानव को किसी कष्ट में देखें तो आप (उसके प्रति) ऐसा आदमी बन जाएं जिसे अल्लाह उसकी क्षति के लिए प्रयोग करे, क्योंकि (इसका) अच्छा व बड़ा बदला क़्यामत के दिन मिलने वाला है जिस दिन सब के सब ऐसे व्यक्ति की खोज में होंगे जो उनकी क्षति की भरपाई कर सके।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आपने फ़रमायाः “जो व्यक्ति किसी मुसलमान के एक दुःख को दूर करे, अल्लाह तआला उसकी क़्यामत के दुखों में से बड़े दुःख को दूर फ़रमा देगा”। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

﴿وَأَحۡسِن كَمَآ أَحۡسَنَ ٱللَّهُ إِلَيۡكَۖ﴾

अनुवादः (और उपकार कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है)। सूरह क़सस़ः 77।

﴿وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾

अनुवादः (और अल्लाह तआला सदाचारियों (उपकार करने वालों) से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरानः 134।

كُن بَلسَماً إن صَارَ غَيرُكَ أَرقَماً وحَلاوَةً إن صَارَ غَيرُكَ عَلقَماً

अनुवादः (जब ज़माना आपके लिए साँप बन जाए तो आप उसका बलसम (विषहर) बन जाएं, यदि दूसरे लोग (का व्यवहार) आपके संग कटु हैं तो आप (उनके लिए) मधुर (व्यवहारी) बन जाएं।

या अल्लाह! ऐ टूटे दिलों को जोड़ने वाले, हमारे (जीवन की) टूट फूट को जोड़ दे, हमारी दुर्बलता तथा निर्बलता पर दया कर, और हे सभी दयालुओं से बढ़ कर दयालु! अपनी दया से हमारे पापों को क्षमा कर दे।

(20)

(अल-मुतकब्बिर जल्ल जलालुहु)

बड़ाई, किब्रियाई, अभिमान एवं दंभ केवल एक अकेले सर्वशक्तिमान महान अल्लाह के लिए है, अल्लाह तआला अपनी प्रशंसा करते हुए फ़रमाता हैः

﴿وَلَهُ ٱلْكِبْرِيَآءُ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٣٧﴾﴾

अनुवादः (और उसी की महिमा है आकाशों तथा धरती में और वही प्रबल एवं सब गुणों को जानने वाला है)। सूरह जासियहः 37।

एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلْمُؤْمِنُ ٱلْمُهَيْمِنُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْجَبَّارُ ٱلْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾﴾

अनुवादः (वह अल्लाह ही है जिसके अतिरिक्त नहीं है कोई सच्चा वंदनीय, वह सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शांति प्रदान करने वाला, रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली, बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला, बड़ाई वाला है, पवित्र है अल्लाह उस से जिसे वे (उसका) साझी बनाते हैं)। सूरह ह़श्रः 23।

हमारा महान रब हर प्रकार की बुराई से पाक, सभी तरह की त्रुटियों एवं दोष से रहित एवं बंदों पर ज़ुल्म व अत्याचार से निष्कलंक है।

हमारा महान रब व प्रभु वह है जो उद्दंड प्राणियों पर उस समय अपनी महानता प्रकट करता है जब वह अल्लाह की अज़मत तथा महानता को उससे छीनना चाहते (अर्थात इसका दावा करते) हैं।

वह महान सर्वशक्तिमान (रब) हर प्रकार की बुराई से पाक व बरी तथा उन सभी निंदनीय, दुर्गुणों व बुरी विशेषताओं से निष्कलंक है जो उसकी शान के विरुद्ध हैं।

किब्रियाई (बड़ाई) का मूल अर्थः सुरक्षा एवं ह़िफ़ाज़त है, हमारा सर्वशक्तिशाली पालनहार हर प्रकार के दोष, बुराई एवं ऐब से पाक है।

❑ विनीत एवं श्रद्धा वाली दासता व बंदगी ...

अल्लाह के शुभ नाम (अल-मुतकब्बिर) में अरबी वर्णमाला का एक शब्द (ت, ता) है, यह (शब्द) अपनाने तथा तकल्लुफ़ के अर्थ में नहीं है, जैसे कहा जाता है कि: (فلان يتعظم) (अर्थातः अमूक व्यक्ति बड़प्पन का दिखावा कर रहा है) जब्कि वह बड़ा है नहीं, (अल-मुतकब्बिर) में जो (ت, ता) है वह विशेषता एवं व्यक्तिवादिता को दर्शाता है।

तकब्बुर एवं किब्रियाई तथा अभिमान केवल अल्लाह तआला को ही शोभा देता है, क्योंकि वह एक अकेला (वास्तविक) बादशाह है तथा उसके अतिरिक्त सभी उसके दास हैं, उसके सिवा समस्त उसके मातहत हैं, वह तंहा ख़ालिक़ व रचनाकार है, उसके सिवा सभी उसकी रचना एवं मख़लूक़ हैं, वह अकेले कमाल व जमाल (पूर्णता एवं सुंदरता) तथा अज़मत व जलाल (महानता एवं प्रताप) की सभी विशेषताओं में अकेला है।

इसी कारणवश सर्वशक्तिमान अल्लाह ने इस विशेषता को अपने लिए आरक्षित किया है, तथा (उसके अतिरिक्त) जो भी अपने आपको इस विशेषता से विशेषित करने की चेष्ठा करे, उसे कड़े दंड की धमकी दी है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस है कि आपने फ़रमायाः "अल्लाह तआला फ़रमाता हैः किब्रियाई (बड़ाई अर्थात अभिमान व घमण्ड) मेरी चादर है, तथा अज़मत (अर्थात महानता) मेरा तहबंद (अधोवस्त्र, तहमद) है, जो इन दोनों में किसी एक के लिए भी मुझ से झगड़े (अर्थात इन में किसी एक का दावा करे) मैं उसको जहन्नम में डाल दूँगा"। (यह हदीस सहीह है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

अल्लामा ख़त्ताबी लिखते हैं: "इस हदीस में चादर एवं तहबंद को उदाहरणस्वरूप पेश करने का कारण यह है किः जिस प्रकार से व्यक्ति अपनी चादर एवं तहबंद में किसी को साझी नहीं बनाता, ठीक उसी प्रकार से अज़मत एवं किब्रियाई में कोई मख़लूक़ (रचना) मेरा (अर्थात अल्लाह का) साझीदार नहीं बन सकता, वल्लाहु आलम (अल्लाह अधिक जानता है)"।

मख़लूक़ (रचना) का स्थान यह है किः वह सम्माननीय एवं पूजित (रब) तथा महानतम व सर्वोच्च स्थान पर पदासीन (अल्लाह) के समक्ष विनीत, विनम्र, अनुनय, विनय एवं श्रद्धा भाव अपनाए, रुकूअ तथा सज्दा (में जाने) के समय तकबीर (अल्लाहु अकबर, अर्थात अल्लाह सबसे बड़ा है) कहने तथा रुकूअ एवं सज्दा की स्थिति में अल्लाह की अज़मत एवं किब्रियाई का स्मरण करने में संभवतः यही राज़ निहित है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ एवं सज्दा में यह दुआ पढ़ा करते थेः

سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ وَالْمَلَكُوتِ، وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ (सुब्हान ज़िल जबरूति वल मलकूति वल किब्रियाइ वल अज़मति), अर्थातः पाक व पवित्र है वह ज़ात जो बड़ाई व बादशाही तथा अज़मत व किब्रियाई वाला है)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

महान एवं सर्वशक्तिशाली अल्लाह तआला ने अपने नबियों एवं नेक बंदों को किब्र (घमण्ड) एवं अभिमान से सुरक्षित रखा, बल्कि वो सभी किब्र, ग़ुरूर एवं अहंकार से अल्लाह की शरण माँगा करते थेः

﴿وَقَالَ مُوسَىٰٓ إِنِّي عُذۡتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٖ لَّا يُؤۡمِنُ بِيَوۡمِ ٱلۡحِسَابِ ٢٧﴾

अनुवादः (तथा मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः मैंने शरण ली है अपने रब तथा तुम्हारे पालनहार की प्रत्येक अहंकारी से जो ईमान नहीं रखता हिसाब के दिन पर)। सूरह ग़ाफ़िरः 27।

❒ इन दंडों एवं यातनाओं पर ग़ौर करें:

जिस व्यक्ति के अंदर यह अवगुण (अहंकार एवं अभिमान) उत्पन्न हो जाये उसके अंदर बिगाड़ पैदा हो जाता है, उसकी सदाचारिता व भद्रता जाती रहती है, तथा उसके दिल पर ज़ंग (मैल) जम जाता हैः

﴿كَذَٰلِكَ يَطۡبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلۡبِ مُتَكَبِّرٖ جَبَّارٖ﴾

अनुवादः (इसी प्रकार अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक अहंकारी अत्याचारी के दिल पर)। सूरह ग़ाफ़िरः 35।

इसी प्रकार से पाक व महान रब ने फ़रमायाः

﴿إِن فِي صُدُورِهِمۡ إِلَّا كِبۡرٞ مَّا هُم بِبَٰلِغِيهِ﴾

अनुवादः (उनके दिलों में बड़ाई के सिवा कुछ नहीं है, जिस तक वो पहुँचने वाले नहीं हैं)। सूरह ग़ाफ़िरः 56।

इब्लीस अहंकारियों एवं अभिमानियों का अगुवा हैः

﴿إِلَّآ إِبۡلِيسَ ٱسۡتَكۡبَرَ وَكَانَ مِنَ ٱلۡكَٰفِرِينَ ٧٤﴾

अनुवादः (इब्लीस के सिवा, उसने अभिमान किया और हो गया काफ़िरों में से)। सूरह स़ादः 74।

तकब्बुर तथा अहंकार करना घमंडी राजाओं में पाया जाने वाला अवगुण है, जैसे फ़िरऔन तथा उस जैसे अन्य दुर्जन एवं उद्दंड राजा, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَٱسۡتَكۡبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُۥ فِي ٱلۡأَرۡضِ بِغَيۡرِ ٱلۡحَقِّ وَظَنُّوٓاْ أَنَّهُمۡ إِلَيۡنَا لَا يُرۡجَعُونَ ٣٩﴾

अनुवादः (तथा घमंड किया उसने एवं उस की सेनाओं ने धरती में अवैध, और उन्होंने समझा कि वह हमारी ओर वापिस नहीं लाये जायेंगे)। सूरह क़स़स़ः 39।

जिसके पास धन-संपदा तथा आल-औलाद की बाहुल्यता हो, और वह अल्लाह तआला के समक्ष (अहंकार में डूब कर) इस का प्रदर्शन करे तो ऐसे व्यक्ति के हृदय में तकब्बुर (अहंकार) अपनी पैठ बना लेता है जो उसे सत्य को अपनाने से रोकता है, जैसाकि वलीद बिन मुग़ीरा के साथ हुआः ﴿ثُمَّ أَدۡبَرَ وَٱسۡتَكۡبَرَ ٢٣﴾ अनुवादः (फिर पीछे हट गया तथा अहंकार किया)। सूरह मुद्दस़्स़िरः 23।

अहंकार एवं घमंडः सत्य को झुठलाने वाले समुदायों के विनाश का कारण है

﴿فَأَمَّا عَادٞ فَٱسۡتَكۡبَرُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ بِغَيۡرِ ٱلۡحَقِّ﴾

अनुवादः (रहे आद तो उन्होंने अभिमान किया धरती में अवैध)। सूरह ह़ा मीम सज्दाः 15।

महान अल्लाह ने स़ालेह़ अलैहिस्सलाम के समुदाय के विषय में इर्शाद फ़रमायाः

﴿قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسۡتَكۡبَرُوٓاْ إِنَّا بِٱلَّذِيٓ ءَامَنتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ ٧٦﴾

अनुवादः (वो अहंकारी लोग कहने लगे कि तुम जिस बात पर ईमान लाये हो हम तो उसके इंकारी हैं)। सूरह आराफ़ः 76।

अहंकारियों का ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना हैः

﴿أَلَيۡسَ فِي جَهَنَّمَ مَثۡوٗى لِّلۡمُتَكَبِّرِينَ﴾

अनुवादः (क्या अहंकार करने वालों का ठिकाना जहन्नम नहीं है?)। सूरह ज़ुमरः 60।

तिर्मिज़ी में वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “अहंकारियों को क़्यामत के दिन ह़श्र के मैदान में छोटी-छोटी चींटियों के समान लोगों के रूप में लाया जायेगा, उन्हें हर स्थान पर अपमान ढ़ाँपे रहेगी, तत्पश्चात वो जहन्नम के एक ऐसे क़ैद ख़ाने की ओर हंका कर ले जाये जायेंगे जिसका नाम “बूलस” है, उसमें उन्हें भड़कती हुई आग उबालेगी, वो उसमें जहन्नमियों के घावों के पीप पीयेंगे जिसे “त़ीनतुल ख़बाल” कहते हैं (अर्थातः सड़ी हुई दुर्गंधित कीचड़)”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)। अल्लाह तआला इससे हमारी रक्षा करे।

❒ उपचारः

जो अहंकार के रोग से पीड़ित हो उसे चाहिए कि अपने अंतर्मन में झाँके तथा उस पर बुद्धिजीवियों के समान सोच-विचार करे, न कि पशुओं के समान केवल अपने ऊपरी भाग पर ही ध्यान केंद्रित किये रहे!

अपने अस्तित्व की वास्तविकता में चिंतन-मनन करे कि वह कहाँ से उत्पन्न हुआ है?! इस क्षणिक संसार में उसका अंजाम क्या होना है ... एक दूर्गंधित मुरदार एवं मृत!

ब्यान किया जाता है किः “मुत़र्रिफ़ बिन अब्दुल्लाह अल-शिख़्ख़ीर ने मुहल्लब बिन अबू सुफ़रा को देखा कि उसके शरीर पर (उसके क़द से लम्बा) एक वस्त्र है जिसे वह घसीट रहा है तथा अहंकार भाव से चल रहा है, तो उन्होंने कहाः हे अबू अब्दुल्लाह! तुम इस प्रकार से क्यों चल रहे हो जिससे अल्लाह और उसके रसूल घृणा करते हैं?

मुहल्लब ने कहाः क्या आप मुझे नहीं जानते?

तो उन्होंने प्रतिउत्तर देते हुए कहाः तुझे मैं भलिभांति जानता हूँ, तुम्हारी उत्पत्ति एक फ़ासिद (खोटे) शुक्राणु से हुई, तुम्हारा अंत एक दुर्गंधित मुरदार के रूप में होगा, तथा इन दोनों के बीच की स्थिति यह है कि तुम्हारे शरीर में मल-मूत्र भरे रहते हैं”।

لَو فَكَّرَ النَّاسُ فِيمَا فِي بُطُونِهِم ما استَشعَرَ الكِبرَ شُبَّانٌ وَلَا شِيبٌ

अनुवादः यदि लोग केवल उस चीज़ के बारे में ग़ौर कर लें जो उनके उदर अर्थात आमाश्य में भरी रहती है तो न कोई युवक अहंकार करेगा और न ही कोई वृद्ध।

अल्लामा मुनावी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: “मानव को चाहिए कि वह किसी को तुच्छ एवं हेय न समझे, क्योंकि जिसे वह हीन समझ रहा है संभव है कि वह उससे अधिक पाक दिल व सहृदय, नेक अमल करने वाला व सदाचारी तथा मुख़लिस़ नीयत का व

निष्ठावान हो, क्योंकि अल्लाह तआला के बंदों को तुच्छ समझने से हानि एवं अपमान का सामना करना पड़ता है"।

इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "(अल्लाह से) भय खाने वाला गुनाहगार व पापी, अहंकार करने वाले इबादत गुज़ार व उपासक से उत्तम है"।

बुद्धिजीवियों को चाहिए कि विनम्रता एवं शिष्टता अपनाएं, उलेमा की संगोष्ठी में बैठें, दुर्बलों के साथ रहें, रोगियों की तीमारदारी करें, मृत्युशय्या पर पड़े एवं दुःख से पीड़ित लोगों को (सीख लेने की दृष्टि से) देखें, अभिमानियों एवं अहंकारियों की जीवनी का अध्ययन करें कि वो कैसे थे? तथा उनका क्या अंजाम हुआ।

كَأَنَّكَ لَمْ تَسمَع بِأَخبَارِ مَن مَضَى　　　وَلَمْ تَرَ فِي البَاقِينَ ما يَصنَعُ الدَّهرُ

فَإِن كُنتَ لَا تَدرِي فَتِلكَ دِيَارُهُم　　　مَحَاهَا مَجَالُ الرِّيحِ بَعدَكَ والقَبرُ

अनुवादः तुम्हारा यह अहंकार बता रहा है कि मानो तुमने बीती हुई कौमों के इतिहास के विषय में नहीं सुना, तथा न ही जीवित लोगों में यह ग़ौर किया कि समय किस प्रकार से अपने जलवे दिखाता है। यदि तुम इससे अनभिज्ञ हो तो देखो ये उनके घर एवं बस्तियाँ हैं जिन्हें हवा के थपेड़ों ने अस्तित्वहीन कर दिया है, तथा ये उनकी क़ब्रें हैं।

ऐ अल्लाह! हम तुझ से तेरे नाम "मुतकब्बिर (अभिमानी)" के वसीले एवं माध्यम से यह दुआ करता हैं किः तू हमारी कमज़ोरी एवं दुर्बलता पर रह़म फ़रमा, हमारे ऐब पर पर्दा डाल दे, हमारे पापों को क्षमा कर दे, और ऐ सारे संसार के पालनहार! तकब्बुर, अहंकार, घमण्ड एवं अभिमान से हमारी सुरक्षा कर।

(21, 22)

(अल-ख़ालिक़, अल-ख़ल्लाक़ जल्ल जलालुहु)

تِلكَ الطَّبِيعَةُ قِف بِنَا يَا سَارِي حَتَّى أُرِيكَ بَدِيعَ صُنعِ البَارِي
الأَرضُ حَولَكَ وَالسَّماءُ اهتَزَّتَا لِرَوائِعِ الآيَاتِ وَالآثَارِ
سُبحَانَ مَنْ خَلَقَ الوُجُودَ مُصَوِّرًا تِلكَ الدُّمَى وَمُقَدِّرَ الأَقدَارِ

अनुवादः हे रात्रि के यात्रि! यह अल्लाह की प्रकृति (रचना) है, थोड़ी देर रुक जा कि मैं तुझे रचनाकार (अल्लाह) की रचना के अनुपम नमूने दिखा सकूँ, तेरे आस-पास की धरा एवं आकाश (उसकी) अद्वितीय आयतों, चिन्हों एवं निशानियों से थर्रा गए, पाक है वह (अल्लाह) जिसने रक्त के लोथड़े से रंग-रूप बना कर (मानव को) अस्तित्व दिया, तथा तक़दीर (भाग्य) मुक़द्दर किया।

आकाश एवं धरा किसने पैदा किया? दाना एवं गुठली को किसने उत्पन्न किया? कौन है जिसने अंधकारमय रात्रि से उज्जवल सुबह को रौशन किया, रात को शांति एवं सुकून की चीज़ बनाया, सूरज एवं चाँद को हिसाब से रखा? कौन है जिसने मानव की उत्पत्ति को मिट्टी से आरंभ किया? किसने समस्त मानव जाति केवल एक जान से उत्पन्न फ़रमाया? कौन है जिसने प्रत्येक वस्तु को रूप प्रदान किया फिर सही पथ की ओर मार्गदर्शन किया?

﴿هَٰذَا خَلْقُ ٱللَّهِ فَأَرُونِى مَاذَا خَلَقَ ٱلَّذِينَ مِن دُونِهِۦ﴾

अनुवादः (यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्होंने जो उसके अतिरिक्त है?)। सूरह लुक़मानः 11।

पाक व पवित्र है वह ज़ात (व्यक्तित्व) जिसकी महानता ने ज्ञानियों की बुद्धियों को आश्चर्यचकित कर दिया!

पाक व पवित्र है वह ज़ात (व्यक्तित्व) जिसकी अनुपम रचनाओं ने सोच-विचार करने वालों के ज्ञान चक्षु खोल दिये!

पाक व पवित्र है वह ज़ात (व्यक्तित्व) जिसकी तजल्लियात (प्रकाश, झाँकी, महिमा, आभा) ने (सटीक मार्गदर्शन के) पथिक की दृष्टि को पूर्णतः खोल दिया!

﴿فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحۡسَنُ ٱلۡخَٰلِقِينَ ١٤﴾

अनुवादः (बरकतों वाला है वह अल्लाह जो सबसे उत्तम पैदा करने वाला है)। सूरह मोमिनूनः 14।

निम्न में हम अल्लाह तआला के दो महान व पवित्र नामः (अल-ख़ालिक़ एवं अल-ख़ल्लाक़ -पैदा करने वाला- जल्ल जलालुहु) में चिंतन-मनन करेंगे।

सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ رَبَّكَ هُوَ ٱلۡخَلَّٰقُ ٱلۡعَلِيمُ ٨٦﴾

अनुवादः (निः संदेह तेरा रब व पालनहार ही पैदा करने वाला एवं जानने वाला है)। सूरह हिज्रः 86।

एक स्थान पर अल्लाह रब्बुल आलमीन का इर्शाद हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلۡخَٰلِقُ ٱلۡبَارِئُ ٱلۡمُصَوِّرُ﴾

अनुवादः (वही उत्पन्न करने वाला, वजूद देने वाला, रूप गढ़ने वाला है)। सूरह ह़श्रः 24।

हमारा पालनहार वही है जो समस्त वस्तुओं को अनिस्तित्व से अस्तित्व में लाया, तथा उन्हें अनुपम एवं अनोखे अंदाज़ में जिसकी पूर्व में कोई मिसाल नहीं थी पैदा फ़रमाया, पाक व पवित्र अल्लाह तआला के अफ़आल (कर्म) उसी रूप में तय पाते हैं जिस रूप में वह निर्धारित करता है।

❒ ख़ालिक़ (रचयिता) की महानता ...

ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु उसी की पैदा की हुई है, तथा प्रत्येक मख़लूक़ व रचना उसकी उलूहियत व रुबूबियत का इकरार करती है, हर वह चीज़ जिसे अपने आस-पास देख रहे -और जिसे नहीं देख पा रहे- हैं वो सभी अल्लाह के वजूद व अस्तित्व का प्रमाण हैं, उसने समस्त सृष्टि को पैदा किया, उन्हें वजूद में लाया, अपनी ह़िकमत व तत्वदर्शिता से उन्हें (दुरुस्त, समतल व) बराबर किया तथा रंग रूप प्रदान किया, वह (अल्लाह) सदा से इस महान स़िफ़त व विशेषता से विशेषित था एवं रहेगा।

उसने हड्डी पर मांस चढ़ाया, मांस पर चमड़ा पैदा किया, पशुओं को बाल एवं खाल का वस्त्र पहनाया, माँ के गर्भाशय में पल रहे शिशु में जीवन का संचार किया, फिर उसे गर्भाशय से बाहर लाया, जीविका प्रदान की, उसकी सुरक्षा की, उसे ज्ञान दिया, मानव को उत्तम रूप में पैदा किया, उसके दो चक्षु बनाये, ज़ुबान तथा होंठ बनाए, और (सुपथ एवं कुपथ) दोनों मार्ग दिखला दियेः

﴿ٱلَّذِى خَلَقَكَ فَسَوَّىٰكَ فَعَدَلَكَ ۝٧ فِىٓ أَىِّ صُورَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝٨﴾

अनुवादः (जिसने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया। जिस रूप में चाहा बना दिया)। सूरह इन्फ़ितारः 7-8।

﴿فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحْسَنُ ٱلْخَٰلِقِينَ ۝١٤﴾

अनुवादः (बरकतों वाला है वह अल्लाह जो सबसे उत्तम पैदा करने वाला है)। सूरह मोमिनूनः 14।

وكَذَلِكَ يَشهَدُ أَنهُ سُبحَانَه   الخَلَّاقُ بَاعِثُ هذهِ الأَبْدَانِ

अनुवादः इसी प्रकार से यह इस बात पर गवाह है कि उसी पाक व पवित्र (रब) ने (समस्त प्राणी) को उत्पन्न किया तथा (शरीर को) अस्तित्व प्रदान किया।

हमारे पाक परवरदिगार ने मख़लूक़ (प्राणियों) को इसी लिए पैदा फ़रमाया ताकि वो उसकी मारफ़त, पहचान एवं उसके बारे में ज्ञान अर्जित करें तथा केवल उसी की इबादत करें:

﴿وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝٥٦﴾

अनुवादः (हमने मानव एवं दानव को केवल इसलिए पैदा किया है कि वो मेरी इबादत व उपासना करें)। सूरह ज़ारियातः 56।

❒ ब्रह्माण्ड का सामंजस्य ...

ये समस्त ब्रह्माण्ड, यूँ ही बेकार, निरर्थक, तथा खेल-कूद के लिए नहीं उत्पन्न की गई हैं -अल्लाह तआला इससे पाक व उच्च है!- अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर का फ़रमान हैः

﴿وَمَا خَلَقْنَا ٱلسَّمَآءَ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَٰعِبِينَ ۝١٦﴾

अनुवादः (हमने आसमान व ज़मीन तथा उनके मध्य की चीज़ों को खेलते हुए नहीं बनाया है)। सूरह अम्बियाः 16।

इस ब्रह्माण्ड में उपस्थित समस्त वस्तु अल्लाह रब्बुल आलमीन की उच्च विशेषताओं की गवाह हैं, ये सभी अस्मा -ए- हुस्ना (अच्छे व प्यारे नाम) की वास्तविकता को इंगित करतीं, उनकी बोली बोलतीं एवं उन की प्रमाणिकता को साबित करती हैं।

تَأَمَّل سُطُورَ الكَائِنَاتِ فَإِنَّهَا مِنَ المَلِكِ الأَعلَى إِلَيكَ رَسَائِل

وَقَد خُطَّ فِيهَا لَو تَأَمَّلتَ خَطَّهَا أَلا كُلُّ شيءٍ مَا خلا اللهَ بَاطِلُ

تُشِيرُ بِإِثباتِ الصفاتِ لِرَبِّهَا فَصَامِتُها يَهدِي وَمَن هُو قَائِلُ

अनुवादः ब्रह्माण्ड में (अल्लाह की लिखी हुई) पंक्तियों में विचार करें, क्योंकि वो सर्वोच्च बादशाह की ओर से आपके लिए संदेश हैं। यदि आप चिंतन-मनन करेंगे तो उसके अंदर आपको यह लिखा हुआ मिलेगा किः अल्लाह के सिवा हरेक चीज़ (पूज्य, माबूद, उपास्य) बातिल, मिथ्या, व निराधार है। यह कायनात अपने पालनहार की सिफ़ात (विशेषताओं) को प्रमाणित करती है, इसमें जो बेज़ुबान (प्राणी) हैं वो भी (अल्लाह की ओर) मार्गदर्शन करते हैं, तथा वो (प्राणी भी) जो बोल सकते हैं।

सर्वोच्च सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾﴾

अनुवादः (निश्चय ही हमने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से)। सूरह क़मरः 49।

डॉक्टरों का कहना है किः "हलक़ के सुराख़ (छिद्र) को अत्यंत सूक्ष्म व बारीक अनुमान से पैदा किया गया है, क्योंकि यदि वह उस अनुमान से थोड़ा सा भी अधिक खुला हुआ होता जिस पर वह अभी मौजूद है तो मानव की आवाज़ गायब हो जाती, तथा जिस अनुमान पर अभी वह है यदि उससे थोड़ा सा भी और अधिक सँकरा होता तो साँस लेना दूभर हो जाता"। ज्ञात हुआ कि (इसमें तनिक भी कमी बेशी करने का परिणाम यह होगा कि) साँस लेने में आसानी होगी तो ध्वनी समाप्त हो जायेगी, अथवा ध्वनी यदि सरल होगी तो साँस लेना दुष्कर हो जायेगा।

﴿صُنْعَ ٱللَّهِ ٱلَّذِىٓ أَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ۚ إِنَّهُۥ خَبِيرٌۢ بِمَا تَفْعَلُونَ﴾

अनुवादः (यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज़ को, निश्चय वह भलि-भाँति सूचित है उससे जो तुम कर रहे हो)। सूरह नम्लः 88।

अभी हमारी देखने की जो शक्ति है यदि वह अपनी निर्धारित सीमा से आगे बढ़ जाये तो हमारा जीवन नरक बन जायेगा!

जब आप पानी भरे ग्लास को देखते हैं, जिसे आप पीते हैं, तो आप को वह बिल्कुल साफ़, उजला, मीठा एवं शोभनीय दिखाई देता है, यदि आपकी देखने की क्षमता यदि अपनी निर्धारित सीमा से बढ़ जाये तथा मौजूदा हालत से अधिक हो जाये तो आपको उस गलास के अंदर आश्चर्यजनक एवं विचित्र कीटाणु दिखाई देने लगेंगे, आपको असंख्य जीवित प्राणी एवं अहानिकारक कीटाणु दृष्टिगोचर होने लगेंगे, जिसके बाद आप उस पानी को पी नहीं पायेंगेः

﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾﴾

अनुवादः (निश्चय ही हमने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से)। सूरह क़मरः 49।

यदि आपकी सुनने की क्षमता निर्धारित सीमा से अधिक बढ़ जाये तो आप रात को सो नहीं पायेंगे, क्योंकि हर प्रकार की ध्वनी आपके कानों तक पहुँचने लगेंगी, बल्कि आप के आमाशय में जो पाचन शक्ति की व्यवस्था है, केवल उसकी आवाज़ का अनुमान लगाएं तो वह एक बड़ी फैक्टरी की आवाज़ मालूम होने लगेगीः

﴿وَفِي أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾﴾

अनुवादः (तथा तुम्हारे भीतर (भी), फिर क्या तुम देखते नहीं)। सूरह ज़ारियातः 21।

﴿هَٰذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ﴾

अनुवादः (यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्होंने जो उसके अतिरिक्त है?)। सूरह लुक़मानः 11।

आपको ऐसे लोगों पर आश्चर्य होगा जिनकी फितरत बदल चुकी है, तथा उनकी अंतरात्मा बीमार हो चुकी है! वह अल्लाह तआला के विषय में वाद-विवाद तथा कुतर्क करते हैं, जब्कि अल्लाह की निशानी उनके दिलों में बैठ चुकी हैं:

﴿وَجَحَدُوا۟ بِهَا وَٱسْتَيْقَنَتْهَآ أَنفُسُهُمْ﴾

अनुवादः (तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें जब्कि उनके दिलों ने उनका विश्वास कर लिया)। सूरह नम्लः 14।

﴿وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ ٱللَّهُ ۚ قُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾﴾

अनुवादः (यदि आप उनसे प्रश्न करें कि किसने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, तो आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, बल्कि उनमें अधिकतर ज्ञान नहीं रखते)। सूरह लुक़्मानः 25।

❐ आप निश्चिंत रहें!

मोमिन यह जानता है कि ख़ालिक़ (रचयिता, अल्लाह) से ही उसे सम्मान व आदर प्राप्त होता है, इसलिए उसका चित्त शांत रहता है, वह जानता है कि जिस (अल्लाह) ने उसे पैदा किया है वह उससे ग़ाफ़िल, लापरवाह व असावधान नहीं होगा, बल्कि अल्लाह तआला उसकी सुरक्षा करता है, मोमिन के लिये उसकी तंगी व समृद्धि, निर्धनता व धन-सम्पदा तथा ऐश्वर्य व अनैश्वर्य सभी स्थितियां उसके लिये भलाई ही लाती हैं:

﴿أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ ٱللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾﴾

अनुवादः (सुनो! जो अल्लाह के मित्र हैं, न उन्हें कोई भय होगा, और न वो उदासीन होंगे)। सूरह यूनुसः 62।

हे अल्लाह! हम तुझसे तेरे नाम "अल-ख़ालिक़ (पैदा करने वाला)" के वसीला से यह दुआ करते हैं कि तू हमें अपने वलियों (मित्रों) में शामिल फ़रमा ले।

(23)

(अल-बारी जल्ल जलालुहु)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सह़ीह़ ह़दीस़ है कि आपने फ़रमायाः "सुलैमान पुत्र दाऊद अलैहिमस्सलाम ने फ़रमायाः आज रात्रि मैं अपनी सौ (100) अथवा (रावी अर्थात वाचक को संदेह था) निन्यानवे (99) पत्नियों के पास जाऊँगा तथा हर पत्नी एक घुड़सवार पैदा करेगी जो अल्लाह के मार्ग में जिहाद करेंगे। उनके साथी ने कहा किः इन शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) भी कह लीजिये, किंतु उन्होंने इन शा अल्लाह नहीं कहा, चुनाँचे केवल एक पत्नी ही गर्भवती हुई तथा उनसे भी विकलांग व अपूर्ण बच्चा पैदा हुआ। (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः) उस ज़ात (व्यक्तित्व) की क़सम जिसके हाथ में मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जान है! यदि सुलैमान अलैहिस्सलाम उस समय इन शा अल्लाह कह लेते तो (समस्त पत्नियों के यहाँ बच्चे पैदा होते और) सभी घोड़ों पर सवार हो कर अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

सर्वोच्च व महा शक्तिशाली अल्लाह के सिवा किसी और द्वार से बंदे की कोई आवश्यकता पूरी नहीं हो सकती, अल्लाह तआला वह हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلْخَٰلِقُ ٱلْبَارِئُ ٱلْمُصَوِّرُ ۖ لَهُ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾﴾

अनुवादः (वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप देने वाला, उसी के लिए शुभ नाम है, उस की पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में हैं, और वह प्रभावशाली हिक्मत (तत्तवदर्शिता) वाला है)। सूरह ह़श्रः 24।

ऐ अल्लाह! हर प्रकार की पशंसा तेरे ही लिए है, तू ने हमें अस्तित्व में ला कर हम पर एह़सान व उपकार किया, जब्कि हम कोई उल्लेखनीय वस्तु न थेः

﴿هَلْ أَتَىٰ عَلَى ٱلْإِنسَٰنِ حِينٌ مِّنَ ٱلدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْـًٔا مَّذْكُورًا ﴿١﴾﴾

अनुवादः (क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर युग का एक समय जब वह कोई विचर्चित वस्तु न था)। सूरह दहः 1।

सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला ने अपनी सर्वोच्च ज़ात (अस्तित्व) की प्रशंसा अपने महान नाम (अल-बारी -अस्तित्व में लाने वाला-, जल्ल जलालुहु) से की है, अल्लाह का इर्शाद हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلۡخَٰلِقُ ٱلۡبَارِئُ ٱلۡمُصَوِّرُۖ﴾

अनुवादः (वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप गढ़ने वाला)। सूरह ह़श्रः 24।

अरबी भाषा के शब्दः "अल-बरा" के दो अर्थ हैं: प्रथमः पैदा व उत्पन्न करना।

दूसराः किसी वस्तु से दूरी एवं विमुखता प्रकट करना।

अरबी भाषा के शब्दः "बरी" का अर्थ हैः पाक-साफ़, पवित्र एवं दोषमुक्त होना।

हमारा (अल-बारी -वजूद बख़्शने वाला-) परवरदिगारः अनिस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला है, वही है जिसने कुछ प्राणी को कुछ प्राणियों पर फ़ज़ीलत व प्रधानता दी है, हर लिंग को दूसरे लिंग से विशिष्टता प्रदान की है, हर प्राणी का ऐसा रूप गढ़ा जो उसकी उत्पत्ति एवं प्रकृति व स्वभाव के हिसाब से बिल्कुल उचित है, वह प्रत्येक वस्तु को अनिस्तित्व से अस्तित्व में लाता तथा उसे ऐसी विशेषताओं के साथ पैदा करता है जो उसे अन्य प्राणियों से अलग करती है।

उस पाक व पवित्र (अल्लाह) ने प्राणियों को सभी प्रकार के विरोधाभास एवं अनियमितता से दोषरहित उत्पन्न किया हैः

﴿ٱلَّذِي خَلَقَ سَبۡعَ سَمَٰوَٰتٖ طِبَاقٗاۖ مَّا تَرَىٰ فِي خَلۡقِ ٱلرَّحۡمَٰنِ مِن تَفَٰوُتٖۖ فَٱرۡجِعِ ٱلۡبَصَرَ هَلۡ تَرَىٰ مِن فُطُورٖ ٣﴾

अनुवादः (जिसने उत्पन्न किये सात आकाश ऊपर तले, तो क्या तुम देखते हो अत्यंत कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असंगति? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दराड़?)। सूरहः मुल्कः 3।

हमारा (अल-बारी -वजूद बख़्शने वाला-) परवरदिगारः अपनी ज़ात (व्यक्तित्व), स़िफ़ात (विशेषता) एवं अफ़आल (कर्म) में हर प्रकार के दोष, त्रुटि एवं ऐब से पाक व पवित्र है।

وَفِي اسْمِهِ البَارِي يُرَى كُلُّ خَلقِهِ وَأَلطَافُهُ تَترَى دَومًا وَتَنزِلُ

فَسُبحَانَ مَن كُلُّ الوَرَى سَجَدُوا لَه إِذَا سَبَّحُوا أَو كَبَّرُوا أَو هَلَّلُوا

अनुवादः उसके नाम “अल-बारी” की आभा में समस्त प्राणी दिखाई देते हैं, उसकी कृपा सदा बारंबार अवतरित होती रहती है। पाक है वह ज़ात जिसके समक्ष समस्त सृष्टि नतमस्तक होती हैं, जब वो तस्बीह़ (सुब्ह़ानल्लाह), तकबीर (अल्लाहु अकबर) अथवा तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह) कहती हैं।

हमारे पाक व पवित्र पालनहार का फ़रमान हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلۡخَٰلِقُ ٱلۡبَارِئُ ٱلۡمُصَوِّرُۖ﴾

अनुवादः (वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप गढ़ने वाला)। सूरह ह़श्रः 24।

अरबी भाषा के शब्दः “خلق ख़ल्क़” का अर्थ हैः (अपनी मशीअत, चाहत व इरादा के अनुसार) अनुमान लगाना।

अरबी भाषा के शब्दः “برأ बरआ” का अर्थ हैः अनिस्तित्व से अस्तित्व में लाना।

अरबी भाषा के शब्दः “تصوير तस़्वीर” का अर्थ हैः रंग रूप गढ़ना।

चुनाँचे सर्वोच्च सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला जब किसी वस्तु को पैदा करना चाहता तो अपने इल्म व ह़िकमत (ज्ञान व तत्वदर्शिता) से उसका अनुमान लगाता है, फिर पाक व उच्च (रब) अपने अनुमान के अनुसार एवं अपनी मशीअत व इरादा के आधार पर जिस रंग रूप में चाहता है उसे अस्तित्व में लाता है।

❒ अचानक से संयोगवश नहीं ...

किसी ह़कीम (ज्ञानी) से प्रश्न किया गया किः आपने अल्लाह को कैसे जाना? तो उन्होंने उत्तर दिया किः उन पत्रों व संदेशों के द्वारा जो प्रकृति के कलम से ब्रह्माण्ड के पत्तों पर लिखे गये हैं:

﴿ٱلَّذِيٓ أَحۡسَنَ كُلَّ شَيۡءٍ خَلَقَهُۥۖ﴾

अनुवादः (जिसने सुंदर बनाई प्रत्येक चीज़ जो उत्पन्न की)। सूरह सज्दाः 7।

﴿مَا خَلَقْنَٰهُمَآ إِلَّا بِٱلْحَقِّ﴾

अनुवादः (हमने नहीं पैदा किया है उन दोनों को परंतु सत्य के आधार पर)। सूरह दुख़ानः 39।

تَأمَّل فِي نَبَاتِ الأَرضِ وانظُر إلى آثارِ ما خَلَقَ المَلِيكُ
عُيونٌ مِن لُجَينٍ شَاخِصَاتٌ بِأَحدَاقٍ هِي الذَهَبُ السَبِيكُ
على كَثَبِ الزَّبرجَدِ شَاهِدَاتٌ بِأَنَّ اللهَ لَيسَ لهُ شَرِيكُ

अनुवादः धरती में उगने वाले पौधों में चिंतन-मनन करो तथा बादशाह द्वारा बनाई हुई वस्तुओं में सोच-विचार करो। चाँदी के (जैसे सफेद) चक्षु अपनी काली पुतलियों के साथ ऐसे देखते हैं जैसे वह बहुमुल्य पत्थर के तराशे व ढ़ेर पर सोने की डली हों, ये सब इस बात पर गवाह हैं कि अल्लाह का कोई शरीक व साझी नहीं।

﴿قُلِ ٱنظُرُواْ مَاذَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِۚ﴾

अनुवादः (हे नबी!) उन से कहें कि उसे देखो जो आकाशों एवं धरती में है)। सूरह यूनुसः 101।

क्या ब्रह्माण्ड में उसकी शिल्पकारी, अनुपम रचना, आश्चर्यजनक क़ुदरत और हिकमत के निशान व चिह्न के अलावा भी कोई चीज़ है?! (उसके सिवा) कौन है जो उलूहियत, बंदगी व दासता किये जाने के अधिक योग्य है?! क्या जो पैदा करता है वह इस बात के सर्वाधिक योग्य नहीं कि उसकी इबादत व पूजा की जाये, उसकी प्रशंसा की जाये तथा उसकी तौहीद व एकेश्वरवाद पर कायम रहा जाये?!

अधिकतर लोग जानते हैं कि अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है, फिर भी वो शिर्क करते हैं:

﴿وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِٱللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشْرِكُونَ ۝١٠٦﴾

अनुवादः (उन में से अधिकांश लोग अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद मुश्रिक ही हैं)। सूरह यूसुफ़ः 106।

लोगों के दो प्रकार हैं:

मोमिनीनः जो सर्वोत्तम प्राणी हैं।

मुश्रिकीनः जो दुष्टतम प्राणी हैं।

बंदा को चाहिए कि अपने कर्म में सोच-विचार करे, यदि वह नेक व भला हो तो अल्लाह की प्रशंसा करे कि उसने उसे इस नेकी व भलाई के योग्य बनाया, यदि वह अपनी इच्छाओं के पीछे भागने लगे तथा उसे अल्लाह के तक़्वा व डर का लगाम न लगाए तो वह दुष्टतम प्राणियों में से हो जायेगा।

इसी कारणवश मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने समुदाय के लोगों को यह आदेश दिया था कि वह पैदा करने वाले (अल-बारी) के समक्ष तौबा करें, क्योंकि उन्होंने अल्लाह पर ईमान लाने से विमुखता प्रकट कर के अपने आभूषण से बछड़े के रूप में एक मूर्ति बना लिया थाः

﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦ يَٰقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنفُسَكُم بِٱتِّخَاذِكُمُ ٱلْعِجْلَ فَتُوبُوٓا۟ إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَٱقْتُلُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِندَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾﴾

अनुवादः (तथा (याद करो) जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी जाति के लोगों से कहाः तुम ने बछड़े को पूज्य बना कर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वह यह कि आपस में एक दूसरे को वध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है, फिर उसने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील दयावान है)। सूरह बक़रहः 54।

मोमिन जब भी अल्लाह के अस्मा -ए- हुस्ना (अच्छे व प्यारे नाम) में से किसी से परिचित होता तथा उसे जान लेता है, तो उसके निकट उसका स्थान व दर्जा एवं उसका सम्मान और अधिक बढ़ जाता है, उसके अंदर महान अल्लाह के लिए अभिरुची तथा उसका प्रेम और अधिक प्रगाढ़ हो जाता है, तथा इस नाम को जानने के कारण वह अल्लाह तआला के और अधिक निकट हो जाता है।

उसे यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि सर्वशक्तिमान सम्माननीय अल्लाह तआला हरेक चीज़ करने में सक्षम व समर्थ है।

हे अल्लाह! हे पैदा करने वाले! हमारे ऊपर दया कर तथा अपनी कृपा अवतरित कर।

(24)

(**अल-मुस़व्विर** जल्ल जलालुहु)

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "सर्वशक्तिशाली अल्लाह तआला ने अपनी किताब में बंदों को जिस चीज़ में चिंतन-मनन करने की दावत दी है, यदि आप उस में चिंतन-मनन करेंगे तो आप को सर्वशक्तिमान अल्लाह की पहचान, उसके कमाल (पूर्णता) एवं तेज व प्रताप की विशेषताओं का ज्ञान अर्जित होगा"।

كَم فِي كِتَابِ الكَونِ مِن عِبَرٍ لِأُولِي النُّهَى والبحثِ والنَّظرِ

فِي الأ رضِ فِي الآفاقِ قاطِبَةً فِي النَّفسِ فِي الأَصواتِ فِي الصُّوَرِ

अनुवादः ब्रह्माण्ड की पुस्तक में बुद्धिजीवियों, शोधकों एवं चिंतकों के लिए असंख्य अद्भुत एवं शिक्षाप्रद वस्तुएं मौजूद हैं, धरती के अंदर, समस्त क्षितिज में, मानव के अंदर, ध्वनी, रंग रूप एवं चित्रों में (बल्कि हर चीज़ में इबरत व शिक्षा मौजूद है)।

आइये हम अल्लाह तआला के एक महान नाम (अल-मुस़व्विर -अर्थातः चित्रकार-जल्ल जलालुहु) में सोच विचार करें।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلْخَٰلِقُ ٱلْبَارِئُ ٱلْمُصَوِّرُ﴾

अनुवादः (वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप गढ़ने वाला)। सूरह ह़श्रः 24।

हमारा पाक व पवित्र परवरदिगार वह है जिसने अपनी मशीअत, इरादा व इच्छा से प्राणियों का मनाचाहा रंग रूप बनाया, संसार की सभी चीज़ों को (विभिन्न) रंग रूप में गढ़ा, उन्हें ठीक व दुरुस्त किया और हरेक चीज़ को एक विशेष रंग रूप एवं अनुपम ढ़ाँचे में ढ़ाला जिस से वह विभिन्न प्रकार की असंख्य प्राणियों के मध्य विशिष्ट बनी रहती है, सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला ने हरेक सूरत को अपनी इच्छा से जिस प्रकार चाहा एवं जिस रंग रूप में चाहा ढ़ाल दिया, वह अपने इरादे को जिस प्रकार से चाहता है कार्यान्वयन करता हैः

अनुवादः (जिस रूप में चाहा बना दिया)। सूरह इन्फ़ितारः 8।

हमारा पाक व पवित्र पालनहार वह है जिसने अपनी मख़्लूक़ (प्राणी) को उत्पन्न किया, उन्हें अपने अनुमान, ज्ञान एवं दया के अनुसार ऐसा रंग रूप एवं कद काठ में बराबर बनाया जो उस प्राणी के लिए बेहतर व उचित हो, चुनाँचे वो अलग-अलग रंग रूप एवं कद काठ में अवतरित हुईं, कोई लम्बी तो कोई नाटी, कोई सुरूप तो कोई कुरूप, कोई पुल्लिंग तो कोई स्त्रीलिंग, हरेक का अपना एक विशिष्ट रंग रूप एवं कद काठ है।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ﴾

अनुवादः (हमने तुम को पैदा किया, फिर हमने ही तुम्हारी सूरत बनाई)। सूरह आराफ़ः 11।

एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ﴾

अनुवादः (उसी ने तुम्हारे चित्र बनाये, तथा अति सुंदर बनाया, और उसी की ओर लौटना है)। सूरह तग़ाबुनः 3।

يَا عَالِمَ الغَيبِ مِنَّا والشَّهادَةِ يَا رَبَّ البَرِيَّةِ تَركِيباً وتَصويراً
شَهِدتُ أَنَّكَ فَرْدٌ وَاحِدٌ أَحَدٌ شَهَادَةً لَمْ تَكُن مَيْناً ولا زُورًا
وَجَّهتُ وَجهِي فِي سِرِّي وَفِي عَلَنِي إِلَيكَ حَمْدا وَتَهْلِيلًا وَتَكبِيرًا

अनुवादः हे हमारे दृश्य एवं छिप्त (ग़ैब व हाज़िर) को जानने वाले, हे समस्त सृष्टि के पालनहार, उन्हें जोड़ने एवं रंग रूप देने वाले। मैं गवाही देता हूँ किः निःसंदेह तू अकेला, अद्वैत एवं तंहा है, यह ऐसी गवाही है जिसमें झूठ, असत्य एवं अनृत का अंश मात्र भी नहीं है। मैं गोपनीय एवं प्रकाशनीय, आंतरिक एवं बाह्य दोनों स्थिति में प्रशंसा (ह़म्द) तथा तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह) व तकबीर (अल्लाहु अकबर) के साथ तेरी ओर ही रुख़ करता हूँ।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ ۖ﴾

अनुवादः (वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप गढ़ने वाला)। सूरह ह़श्रः 24।

ये तीनों महान नाम (अल-ख़ालिक़, अल-बारी, अल-मुस़व्विर) जब एक साथ प्रयोग हों तो उनमें से हरेक का अलग-अलग अर्थ होता है, चुनाँचे इस आयत में, ख़ल्क़ (خلق) का अर्थः अनुमान लगाना, बरआ (برأ) का अर्थः पैदा करना, तथा तस़्वीर (تصوير) का अर्थः रंग रूप गढ़ना है। और यदि इन सभी महान नामों का प्रयोग अलग-अलग किया जाये तो तीनों का अर्थ एक ही होता है।

हमारे महान व पवित्र रब ने अपने इरादा, मशीअत व इच्छा से (प्राणियों का) अनुमान लगाया, तत्पश्चात उसे उत्पन्न किया एवं अस्तित्व में लाया, फिर हरेक प्राणी को उसके उचित रंग रूप एवं कद काठ में ढ़ालाः

﴿سُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ﴾

(-अल्लाह तआला के- जो गुण ये बताते हैं उन से अल्लाह पाक (दोषरहित एवं बेनियाज़) है)। सूरह मोमिनूनः 91।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दा में यह दुआ पढ़ा करते थेः

«اللهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، تَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ»

(अर्थातः ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिये सज्दा किया, तुझ पर ईमान लाया, तथा तेरा अनुयायी एवं फरमाँबरदार हुआ, मेरे मुख ने सज्दा किया (शीश नवाया) उस ज़ात का जिसने उसे पैदा किया फिर उसकी सूरत बनाई, उसके कान और आँख फाड़े, अल्लाह की ज़ात बरकत वाली है, वह उत्तम उत्पत्तिकर्ता है)। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

❒ सम्पूर्ण प्रमाणः

मानव की उत्पत्तिः खोज बीन करने वालों के लिए एक निशानी, सीख लेने वालों के लिए सीख व इबरत, तथा सदुपदेश स्वीकार करने वालों के लिए सर्वोत्तम सदुपदेश हैः

﴿وَفِيٓ أَنفُسِكُمۡۚ أَفَلَا تُبۡصِرُونَ ٢١﴾

अनुवादः (तथा तुम्हारे भीतर (भी), फिर क्या तुम देखते नहीं)। सूरह ज़ारियातः 21।

मानव शरीर एवं उसकी उत्पत्ति में: उसके ख़ालिक़ (उत्पत्तिकर्ता) एवं पैदा करने वाले की सबसे बड़ी निशानी मौजूद है।

मानव के सर्वाधिक निकटः उसकी अपनी ज़ात है, जिसके अंदर अल्लाह जल्ल जलालुहु की महानता के ऐसे अनुपम व अनोखे प्रमाण विद्यमान हैं कि उनमें से चंद पर ही सोच-विचार करने में बहुतेरे जीवन बीत जायेंगे, किंतु मानव है कि इससे विमुख है, यदि वह तनिक भी सोच-विचार से काम ले तो कुफ्र व उद्दंडता से पूर्णतः रुक जायेगाः

﴿قُتِلَ ٱلۡإِنسَٰنُ مَآ أَكۡفَرَهُۥ ۝١٧ مِنۡ أَيِّ شَيۡءٍ خَلَقَهُۥ ۝١٨ مِن نُّطۡفَةٍ خَلَقَهُۥ فَقَدَّرَهُۥ ۝١٩ ثُمَّ ٱلسَّبِيلَ يَسَّرَهُۥ ۝٢٠ ثُمَّ أَمَاتَهُۥ فَأَقۡبَرَهُۥ ۝٢١ ثُمَّ إِذَا شَآءَ أَنشَرَهُۥ ۝٢٢﴾

अनुवादः (इंसान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है। उसे किस वस्तु से (अल्लाह ने) पैदा किया। उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उसका भाग्य बनाया। फिर उस के लिये मार्ग सरल किया। फिर मौत दी तत्पश्चात समाधि में डाल दिया। फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा)। सूरह अबसः 17-22।

इस पृथ्वी लोक पर सात अरब से अधिक मानव बसते हैं, उन में से हरेक अपने रंग-रूप, कद-काठी, आवरण, निशान व चिह्न तथा शकल-सूरत में एक-दूजे से भिन्न हैं, जब्कि सभी के माता-पिता एक हैं: आदम तथा ह़व्वा, लेकिन यह अल्लाह पाक की (अद्भुत) शिल्पकारी हैः

﴿صُنۡعَ ٱللَّهِ ٱلَّذِيٓ أَتۡقَنَ كُلَّ شَيۡءٍۚ إِنَّهُۥ خَبِيرُۢ بِمَا تَفۡعَلُونَ﴾

अनुवादः (यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज़ को, निश्चय वह भलि-भाँति सूचित है उससे जो तुम कर रहे हो)। सूरह नम्लः 88।

क्या यह इस बात का तक़ाज़ा नहीं करता है कि हम अल्लाह का शुक्र अदा करें?! बंदा जब माता के गर्भाशय में शुक्राणु के रूप में होता है, तब से ही उस पर अल्लाह पाक का इनाम व अनुग्रह अवतरित होने लगता है, (शुक्राणु के बाद अल्लाह तआला) उसके कान और आँख बनाता है, फिर उस में प्राण फूँकता है, तत्पश्चात उसे दाना-पानी से नवाज़ता है, (संसार में पधारने के पश्चात) उसे वस्त्र व पोशाक तथा आश्रय व ठिकाना प्रदान करता है, (अपने अनुग्रह से वह) उसके लिए काफी होता है, जो चीज़ भी वह अल्लाह से माँगता है अल्लाह तआला उसे प्रदान करता हैः

﴿أَلَمْ نَجْعَل لَّهُۥ عَيْنَيْنِ ۝٨ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝٩ وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ ۝١٠﴾

अनुवादः (क्या हमने उसकी दो आँखें नहीं बनाईं। और ज़ुबान व होंठ (नहीं बनाए)। हमने दिखा दिये उसको (हिदायत व गुमराही के) दोनों रास्ते)। सूरह बलदः 8-10।

शुक्र अदा करने का एक उत्तम ढंग यह है किः अल्लाह तआला की नियामतों को उसके आज्ञापालन व इबादत के लिए प्रयोग में लाया जाये तथा उन्हें रब की अवज्ञा एवं नाफ़रमानी के कामों से दूर रखा जाए।

❒ अंतिम बात यह कि ...

बुद्धिजीवी किसी के रंग रूप का उपहास नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि उसे अल्लाह ने पैदा किया हैः

﴿هُوَ ٱلَّذِى يُصَوِّرُكُمْ فِى ٱلْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ۝٦﴾

अनुवादः (वह माँ के पेट में तुम्हारा रूप जिस तरह चाहता है बनाता है, कोई पूज्य नहीं परंतु वही, वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है)। सूरह आले इमरानः 6।

वह अल्लाह ही है जो पैदा करता, अस्तित्व में लाता तथा रंग-रूप गढ़ता है, इसलिए कुरूप व्यक्ति का इसमें कोई दोष नहीं कि उसकी कुरूपता के कारण उसका उपहास किया जाये एवं उसको धिक्कारा जाये, और न सुंदर व्यक्ति का उसकी सुंदरता में कोई किरदार एवं अधिकार है कि जिस पर उसको धन्यवाद दिया जाये।

किसी व्यक्ति ने एक ह़कीम (ज्ञानी) से कहाः "हे कुरूप मानव! तो ह़कीम ने उत्तर दियाः मेरे मुख की आकृति व बनावट मेरे हाथ में न थी कि मैं उसे सुंदर बनाता, जिसने किसी मख़लूक़ (रचना) की निंदा की, उसने उसके ख़ालिक़ (रचयिता) की निंदा की", ह़दीस़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला ने प्रत्येक वस्तु को सुंदर पैदा किया है"। (अल्लामा अलबानी ने इसका उल्लेख "अल-सिलसिला अल-स़ह़ीह़ा" में किया है)।

जब आप ऐसे व्यक्ति को देखें जो किसी संकट में फँसा हुआ हो, तो अल्लाह तआला की प्रशंसा व स्तुति करें कि उसने आपको उस संकट से बचा कर रखा। एक कहावत है किः "अपने भाई का परिहास न करो, कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह उसे उस संकट से उबार दे तथा तुझे उस संकट में डाल दे"।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहा करते थे किः "विपदा एवं परीक्षा (इंसान की) बात के साथ जुड़ी हुई है, यदि मैं किसी कुत्ते का उपहास करूँ तो मुझे डर है कि कहीं मैं भी कुत्ता न बना दिया जाऊँ"।

इब्राहीम नख़ई रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "मैं कोई दोषपूर्ण वस्तु देखता हूँ तो केवल इस भय से उसके विषय में कुछ नहीं बोलता कि कहीं मैं भी उस जैसी विपदा में न पड़ जाऊँ"।

ऐ अल्लाह! ऐ ख़ालिक़! ऐ अस्तित्व में लाने वाले तथा रूप बनाने वाले (पालनहार)! हम तेरे समक्ष प्रार्थी हैं कि हमें अपने सर्वोत्तम मख़लूक़ (रचनाओं) में गिन, तथा उस दिन हम पर दया कर जिस दिन हम तेरे समक्ष पेश किये जायेंगे।

(25)

(अल-अफ़ुव्व जल्ल जलालुहु)

जब पापियों ने यह आयत सुनीः

﴿فَأُوْلَٰٓئِكَ عَسَى ٱللَّهُ أَن يَعۡفُوَ عَنۡهُمۡۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَفُوًّا غَفُورٗا ٩٩﴾

अनुवादः (तो आशा है कि अल्लाह उनको क्षमा कर देगा, निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानि क्षमाशील है)। सूरह निसाः 99।

तो उन्होंने (दुआ के लिए) अपनी हथेलियाँ उठा लीं, रब के समक्ष अपने शिकवे दर्ज कराए, उसके द्वार से अपनी सवारियाँ बाँध दीं, उसके दरबार में श्रण लिया, अधिकाधिक इस्तिग़फ़ार व क्षमा याचना किये तथा पुकार उठेः हे क्षमा करने वाले .. हे माफ करने वाले! हमारे लिये तेरे सिवा कोई और नहीं।

क्षमा करने वाले सख़ी व दाता ने जब उनकी दुर्दशा एवं उनके अंदर (की व्याकुलता को) देखा तो उनके पापों को क्षमा कर दिया, उनके कुकर्म माफ कर दिये तथा उनके दर्जा व श्रेणी को बुलंद कर दिया।

पाक व पवित्र है अनदेखा करने वाला! पाक है वह (पालनहार) जिसने उन्हें अपनी माफी के लिये चुना तथा अपनी मग़फिरत के लिए निर्वाचन किया!

जब आप पर विपदा आ जाये, आप संकटों के घेरे में आ जायें, गुनाहों का बोझ आप को बोझल कर दे, तो उसका नाम ले कर (उसे) पुकारें, तथा उस से क्षमा व माफी की याचना करें।

يَا رَبِّ إِن عَظُمَت ذُنُوبِي كَثرَةً　　فَلَقَد عَلِمتُ بِأَنَّ عَفوَكَ أَعظَمُ

إِن كَانَ لَا يَرجُوكَ إِلا مُحْسِنٌ　　فَبِمَن يَلُوذُ وَيَستَجِيرُ الُمجرِمُ

أَدعُوكَ رَبِّ كَمَا أَمَرتَ تَضَرُّعًا　　فَإِذَا رَدَدتَ يَدِي فَمَن ذَا يَرحَمُ

अनुवादः हे पालनहार! यदि मेरे पाप बहुत ज़्यादा हैं तो मुझे मालूम है कि तेरी माफी उससे कहीं अधिक बढ़ कर है, यदि तेरी (माफी की) आशा केवल नेक व सदाचारी ही कर सकता हो तो मुजरिम व दुराचारी आख़िर किस की शरण में जाएं। हे मेरे पालनहार! मैं तुझ से

वैसे ही विनम्रता एवं श्रद्धा के साथ प्रार्थना करता हूँ जिस प्रकार से तूने आदेश दिया है, यदि तू मुझे (ख़ाली हाथ) लौटा देगा तो कौन है जो मुझ पर दया करेगा।

सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह माफ करने वाला क्षमी है)। सूरह हजः 60।

हमारा पाक व पवित्र पालनहार अपने बंदे व दास के गुनाहों को इतना अधिक क्षमा करता है जिसकी कोई सीमा नहीं, चुनाँचे वह उच्च व बुलंद (परवरदिगार) गुनाहों को माफ करता तथा उनके प्रभाव को भी बंदों से पूर्णरूपेण दूर कर देता है, क़्यामत के दिन बंदों से उन गुनाहों का हिसाब नहीं लेगा, अपितु उन्हें किरामन कातेबीन (कर्मों का लेखा जोखा रखने वाले फ़रिश्ते) के रजिस्टर से मिटा देता है, बल्कि बंदों के दिलों से भी उनकी याद को भुला देता है ताकि वो उनको याद कर के लज्जित न हुआ करें, इसके अतिरिक्त हर गुनाह के स्थान पर एक नेकी दर्ज फ़रमाता है।

हमारा पाक व सर्वोच्च परवरदिगार सदा से इस मामला में सुप्रसिद्ध रहा है और रहेगा कि वह अत्यधिक क्षमा करने वाला, बंदों के गुनाहों को माफ करने वाला, और हर उस व्यक्ति को अपनी माफी से अनुग्रहित करने वाला है जो उसकी मग़फिरत, रहमत, क्षमा, दया एवं दान के लिए लालायित हो, अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति से माफी व क्षमा का वादा किया है जो माफी के माध्यमों को अपनाए।

अल्लाह पाक आसानी व सरलता को पसंद फ़रमाता है, इस प्रकार से कि बंदा जब किसी कमी, कोताही एवं कमज़ोरी में पड़ जाता है तो उस पर वाजिबात व अनिवार्य चीज़ों की अदायगी को सरल बना देता है, चुनाँचे अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति पर वुज़ू को वाजिब व अनिवार्य करार दिया है जो नमाज़ तो पढ़ना चाहता है किंतु वुज़ू न किये हुआ हो, परंतु ऐसे व्यक्ति से (इस अनिवार्यता को) समाप्त कर दिया है जिसके पास पानी न हो, (और वुज़ू के स्थान पर) उसके लिये तयम्मुम को मशरूअ (शरीअत का प्रावधान, उचित) करार दिया है, और ऐसा केवल बंदों की कमज़ोरी व असहायता को देखते हुए किया है।

कहा गया हैः अफ़्व (अनदेखी करना) अपने अंदर मग़फ़िरत (माफ़ करने) से अधिक व्यापक अर्थ रखता है, क्योंकि मग़फ़िरत (माफ़ी) में (गुनाहों) पर पर्दा डालने का अर्थ पाया

जाता है, जब्कि अफ़्व (अनदेखी करना) में (गुनाहों को) मिटाने का अर्थ पाया जाता है, और मिटाना, पर्दा डालने से अधिक व्यापक अर्थ रखता है।

अल्लाह के अफ़्व (अनदेखी करना) के दो प्रकार हैं:

आम व व्यापक अफ़्व (अनदेखी करना, माफ़ करना): वह यह है कि अल्लाह तआला मोमिन व काफ़िर सभी की अनदेखी करता है, वह इस प्रकार से कि उन दंडों को उन से दूर कर देता है जो सबब व कारण से जुड़ी हुई हैं, और जिसका तकाजा यह है कि उन्हें नियामत व अनुग्रह से वंचित कर दिया जाये। चुनाँचे ये मुजरिम, गाली-गलोज एवं शिर्क (बहुदेववादिता) के द्वारा अल्लाह को पीड़ा पहुँचाते हैं और इसके बावजूद अल्लाह तआला उन्हें स्वस्थ एवं निरोग रखता है तथा उन्हें जीविका प्रदान करता है, उन्हें सांसारिक सुविधा देता है, उन्हें अपने अफ़्व, अनदेखी, क्षमा एवं माफी के द्वारा उन्हें छूट देता है, परंतु उनसे लापरवाह नहीं होता, अल्लाह की नवाज़िश, अनुग्रह एवं नियामत की वर्षा बंदों पर बारंबार बरस रही है, बंदों के कुकृत्य अल्लाह तक पहुँच रहे हैं, अल्लाह तआला बंदों की इबादत व पूजा से बेनियाज़ व निःस्पृह है, वह अपनी नियामत व नवाज़िश के द्वारा उन पर मेहरबानी करता है, और वो अवज्ञा एवं कृघ्नता के द्वारा घृणा एवं नफरत प्रकट करते हैं, जब्कि वो सभी अल्लाह के मोहताज हैं।

ख़ुसूसी व विशेष अफ़्व (अनदेखी करना, माफ़ करना): वह यह है कि अल्लाह तआला उन मोमिन बंदों को अपनी मग़फ़िरत व क्षमा से अनुग्रहित करता है जो तौबा, इस्तिग़फार एवं क्षमा याचना करते, प्रार्थना करते, इबादत, पूजा तथा उपासना में लीन रहते और संकट में घिर जाने पर अल्लाह से पुण्य की आशा रखते हैं।

❑ निःसंदेह वह अफ़्व व दरगुज़र करने वाला है ...

अल्लाह तआला के अफ़्व (अनदेखी, माफी) की महानता व उदारता है किः वह जिसको इस परलोक में माफी दे देता है, तो वह इससे कहीं अधिक दानी व दाता है कि क़यामत के दिन अपने माफी से फिर जाए, वह दानवीर तथा दाता है, अपने माफी को वापस नहीं लेता, यह अल्लाह तआला की सुन्नत (तरीका, ढ़ंग, रीत) है जिसे वह अपने वलियों के प्रति अपनाता है।

उस पाक व उच्च की यह शान व वैभव है किः जिस प्रकार से वह इस लोक में तौबा करने वाले गुनाहगारों को माफ करता है, उसी प्रकार से वह सर्वशक्तिशाली परलोक में भी उन मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) बंदों को माफ करेगा जो अनवरत पाप किये जा रहे थे।

उस महान व सर्वोच्च (पालनहार) की महानता व शान है किः बंदा का जुर्म चाहे जितना भी बड़ा हो, वह उसे क्षमा कर देता है, यहाँ तक कि (अल्लाह) पाक व पवित्र अपने ह़क़ से भी अनदेखी कर देता है, उसके गुनाहों को नेकियों में बदल देता है, उस महान सर्वशक्तिशाली अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाह पर ऐसा बदला दे!? यदि उसके अफ़्व, अनदेखी व क्षमा की महानता न होती तो धरती वासियों के कुकर्मों के कारण यह धरती लोक कब की इसके वासियों सहित धँस चुकी होती।

उस सर्वशक्तिमान (परवरदिगार) के अफ़्व एवं क्षमा की शान यह है किः उसने अपने बंदों का मार्गदर्शन उन माध्यमों की ओर किया है जिनके द्वारा वह उसके दानवीरता के अनुग्रह से लाभांवित हो सकें, जैसे (उन) कर्मों, नैतिकताओं, कथनों एवं कृत्यों की ओर (मार्गदर्शन किया है जिनसे अल्लाह की माफी प्राप्त होती है), बंदा जब अधिकाधिक सदाचार करता है तो उसकी नेकियाँ बहुतेरी गुनाहों पर भारी पड़ जाती हैं।

❒ उसकी ओर लौट जायें!

क्षमा करने वाला महान व पवित्र (परवरदिगार) सात आसमानों के ऊपर से आप को इस फ़रमान के द्वार संबोधित करता हैः

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ﴾

अनुवादः (तुम्हारे रब का आदेश पारित हो चुका कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा)। सूरह ग़ाफ़िरः 60।

आखिर कौन सी चीज़ है जो उसकी दानवीरता को पाने से आपको पीछे खींचती है? कौन सी चीज़ आप को अल्लाह के समक्ष विनम्रता, श्रद्धा तथा तौबा व इस्तिग़फ़ार करने वालों के काफिला व समूह में शामिल होने से बाधा बनती है?

जब लोग सांसारिक राजाओं के द्वार पर दस्तक देते तथा उनके दरबार में अपमान एवं उपेक्षा के बावजूद खड़े रहते हैं, तो राजाओं के राजा (महाराजा), सत्य पूज्य, सबसे बड़े दानवीर, माफ व क्षमा करने वाले (अल्लाह) के दरबार में विनम्रता, श्रद्धा एवं दीनता के साथ खड़े हो जायें जिसके हाथ में समृद्धि, सम्पन्नता एवं सुख की कुंजियाँ, सौभाग्यशालिता व सफलता, माफी व क्षमा (का अधिकार) है।

﴿أَلَمۡ يَعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ هُوَ يَقۡبَلُ ٱلتَّوۡبَةَ عَنۡ عِبَادِهِۦ﴾

अनुवादः (क्या उनको यह खबर नहीं कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा को स्वीकार करता है)। सूरह तौबाः 104।

बिलाल बिन सअद ने कहाः "तुम्हारे लिये एक ऐसा परवरदिगार है जो जल्दी किसी को दण्ड नहीं देता, भूल-चूक को क्षमा कर देता, तौबा स्वीकार करता, अपने पास आने वालों को तवज्जो तथा अनुग्रह प्रदान करता तथा उससे पीठ फेरने वालों पर मेहरबानी करता है"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

"اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي"

(अर्थातः ऐ अल्लाह! तू बड़ा क्षमी है, क्षमा को प्रिय रखता है, मुझे भी क्षमा कर दे)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है)।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "यदि अल्लाह तआला आपको दरगुज़र व अनदेखी कर दे तो बिना माँगे ही आपकी आवश्यकताएं पूर्ण होने लगेंगी"।

सुफ़ियान स़ौरी रह़िमहुल्लाह का कथन हैः "मुझे यह पसंद नहीं कि मेरे हिसाब किताब का मामला मेरे माता-पिता के हवाले कर दिया जाये, क्योंकि मुझे मालूम है कि महान अल्लाह तआला उन से भी अधिक मुझ पर दयावान है"।

وَلَمَّا قَسَا قَلْبِي وضَاقَت مَذَاهِبِي　　جَعَلتُ رَجَائِي نَحوَ عَفوِكَ سُلَّمَا
تَعَاظَمَنِي ذَنبِي فَلَمَّا قَرَنتُه　　بِعَفوِكَ رَبِّي صَارَ عَفوُكَ أَعظَمَا
وَمَا زِلتُ ذَا عَفوٍ عَنِ الذَّنبِ لَم تَزَل　　تَجُودُ وَتَعفُو مِنَّة وَتَكَرُّمًا

अनुवादः जब मेरा हृदय कठोर हो गया तथा मेरे सभी मार्ग अवरुद्ध हो गये, तो तेरे अफ़्व, दरगुज़र व माफी तक पहुँचने के लिये मैंने आशा को अपनी सीढ़ी बना लिया। मेरे ऊपर पापों का ढ़ेर लग गया, किंतु हे मेरे पालनहार! जब मैंने अपने पापों की तुलना तेरे अफ़्व, दरगुज़र व माफी से की तो तेरी माफी उससे कहीं बढ़ कर नज़र आई। तू सदा पापों को क्षमा करता रहा है, और अब भी अपने फ़ज़्ल व कृपा के आधार पर दानवीरता, दयालुता तथा माफी के दरिया बहा रहा है।

❒ अफ़्व, दरगुज़र व क्षमा की कुंजी ...

उलेमा कहते हैं किः सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला के निकट प्रियतम प्राणी वह है जो उन विशेषताओं से विशेषित हो जिनकी माँग अल्लाह के अस्मा व स़िफ़ात (नाम व गुण)

करते हैं, अतः अल्लाह बुज़ुर्ग व रहीम (अत्यंत दयालु) है और रहम करने वालों को पसंद फ़रमाता है, वह अनदेखी करने वाला है और अनदेखी करने वालों को पसंद फ़रमाता है, अल्लाह तआला अपने बंदे के साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वह अल्लाह की मख़लूक़ के साथ व्यवहार करता है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ لِنتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ ٱلْقَلْبِ لَٱنفَضُّوا۟ مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَٱعْفُ عَنْهُمْ وَٱسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى ٱلْأَمْرِ ۖ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾﴾

अनुवादः (अल्लाह की दया के कारण ही आप उन के लिये कोमल (सुशील) हो गये, और यदि आप अक्खड़ तथा कठोर हृदय होते तो वो आपके पास से बिखर जाते, अतः उन्हें क्षमा कर दें, और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करें, तथा उन से भी (किसी) मामले में परामर्श लिया करें, फिर जब कोई ढ़ृढ़ संकल्प कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, निस्संदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरानः 159।

सक्षम होने के बावजूद क्षमा कर देना, तक़वा के निकटतम श्रेणी में से है, बल्कि अल्लाह तआला की दानवीरता व दयालुता यह है किः वह बंदों की माफी का बदला उससे कहीं बड़ी माफी से देता है, अल्लाह जल्ल शानुहु का इर्शाद हैः

﴿إِن تُبْدُوا۟ خَيْرًا أَوْ تُخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا۟ عَن سُوٓءٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ﴿١٤٩﴾﴾

अनुवादः (यदि तुम कोई भली बात खुल कर करो अथवा उसे गुप्त करो या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी सर्व शक्तिशाली है)। सूरह निसाः 149।

अबू बक्र स़िद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह क़सम उठा लिया कि मिस्तह़ (जो उनके संबंधी थे) का खर्चा बंद कर देंगे, और यह उस समय हुआ जब उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धर्मपत्नी, मोमिनों की माता आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर प्रसिद्ध इफ्क नामक घटना में बोहतान व इलज़ाम लगया था, तो इस घटना के संबंध में अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿وَلَا يَأۡتَلِ أُوْلُواْ ٱلۡفَضۡلِ مِنكُمۡ وَٱلسَّعَةِ أَن يُؤۡتُوٓاْ أُوْلِي ٱلۡقُرۡبَىٰ وَٱلۡمَسَٰكِينَ وَٱلۡمُهَٰجِرِينَ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِۖ وَلۡيَعۡفُواْ وَلۡيَصۡفَحُوٓاْۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغۡفِرَ ٱللَّهُ لَكُمۡۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٌ ٢٢﴾

अनुवादः (और न शपथ लें तुम में से धनी और सुखी कि नहीं देंगे समीपवर्तियों तथा निर्धनों को और जो हिजरत कर गये अल्लाह की राह में, और चाहिये कि क्षमा कर दें तथा जाने दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे, और अल्लाह अति क्षमी सहनशील है)। सूरह नूरः 22।

जो व्यक्ति अल्लाह के अफ़्व व दरगुज़र की आशा में (किसी को) क्षमा कर दे, उसे अल्लाह पाक लोक परलोक में उसकी आशाओं से बढ़ कर नवाज़ता है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आपने फ़रमायाः "माफ करने से अल्लाह बंदे के सम्मान व आदर को और बढ़ा देता है"। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

इमाम नौवी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "जो व्यक्ति अफ़्व व दरगुज़र करने में प्रसिद्ध हो, वह सरदारी के पद पर आसीन होता तथा दिलों में बड़ा उच्च स्थान बना लेता है, इसके अतिरिक्त उसके सम्मान व आदर में वृद्धि भी होती है"।

उमवी ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान ने (एक बार) बड़ा उत्तम भाषण दिया, भाषण देते हुए वह सहसा रुक गये और धुआंधार रोने लगे, फिर फ़रमायाः "हे मेरे पालनहार! मैंने महा पाप किये हैं, किंतु तेरा थोड़ा सा अफ़्व व दरगुज़र भी मेरे समस्त पापों से बढ़ कर है, तू अपने मामूली अफ़्व व दरगुज़र के द्वारा मेरे बड़े गुनाहों को माफ कर दे"। यह बात ह़सन बस़री रह़िमहुल्लाह को मालूम हुई तो वह भी रोने लगे और फ़रमायाः "यदि कोई बात सुनहरे अक्षरों में लिखी जाती तो यह बात लिखी जाती"।

एक देहाती ने प्रार्थना करते हुए कहाः "हे अल्लाह! तू ने हमें यह आदेश दिया है कि जो व्यक्ति हम पर अत्याचार करे, हम उसे अनदेखा कर दें, हमने अपनी जान पर अत्याचार किया है तो तू हमें अनदेखा कर दे"।

हम तुझ से दुआ करते हैं:

﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَآ أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٢٣﴾﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! हमने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया और यदि तू हमें क्षमा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य ही नाश हो जायेंगे)। सूरह आराफ़ः 23।

हे अल्लाह! वस्तुतः तू अत्यंत क्षमी है, क्षमा को प्रिय रखता है, तू हमें भी क्षमा कर दे, हे सभी दयालुओं से बढ़ कर दयालु!

(26, 27)

(अल-ग़फ़ूर, अल-ग़फ़्फ़ार जल्ल जलालुहु)

त़बरानी में स़ह़ीह़ सनद से अबू त़वील रज़ियल्लाहु अन्हु की ह़दीस़ आई है किः वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये तथा कहाः "ऐसे आदमी के विषय में आपकी क्या राय है जिसने सभी कुकर्म कर लिया हो, कोई भी कुकर्म उससे छूटा न हो, और इस सिलसिले में उसने अपनी हर छोटी बड़ी (बुरी) इच्छा पूरी कर ली हो, क्या ऐसे व्यक्ति के लिए भी तौबा है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क्या तुम मुसलमान हो गये हो? उन्होंने कहाः निस्संदेह मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं और निश्चय ही आप अल्लाह के रसूल हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः हाँ (ऐसे व्यक्ति की तौबा स्वीकार की जा सकती है, परंतु यह आवश्यक है कि) तू नेक अमल करता रह, बुराई करना छोड़ दे, अल्लाह तआला तेरे समस्त गुनाहों को नेकी में परिवर्तित कर देगा", उन्होंने कहाः मेरे सभी फरेबों एवं कुकर्मों को भी (नेकियों से बदल दिया जायेगा?) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः हाँ, उन्होंने कहाः अल्लाहु अकबर (अल्लाह सबसे बड़ा है), फिर वह अल्लाहु अकबर कहते रहे यहाँ तक कि निगाह से ओझल हो गये"।

وَإِنِّي لَأَدعُو اللهَ أَطلُبُ عَفوَه   وَأَعلَمُ أَنَّ اللهَ يَعفُو وَيَغفِرُ

لَئِن أَعظَمَ النَّاسُ الذُّنُوبَ فَإِنَّهَا   وَإِن عَظُمَت فَفِي رَحمَةِ اللهِ تَصغرُ

अनुवादः मैं अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ, उससे मग़फ़िरत माँगता हूँ, मैं जानता हूँ कि अल्लाह दरगुज़र करता और क्षमा करता है। लोगों ने यदि बड़े-बड़े गुनाह अंजाम दिये हैं, तो (याद रखें कि) उनके गुनाह यद्यपि बड़े हैं तथापि अल्लाह की रह़मत व दया की तुलना में वह सब अत्यंत मामूली व महत्वहीन हैं।

हमारा विषय वस्तु वह महान नाम है कि जब कोई पापी और मोमिन उस नाम को सुनता है तो उसका हृदय उससे जुड़ जाता है, वह अत्यंत प्रसन्नता अनुभव करता है तथा उसके सामने आशाओं के द्वार खुल जाते हैं, अल्लाह तआला का वह महान नाम हैः (अल-ग़फ़ूर, अल-ग़फ़्फ़ार (अत्यधिक क्षमाशील) जल्ल जलालुहु)।

अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿نَبِّئْ عِبَادِىٓ أَنِّىٓ أَنَا ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ۝٤٩﴾

अनुवादः (मेरे बंदों को सूचना दे दो कि मैं अत्यंत क्षमी तथा अति दयालु हूँ)। सूरह हिज्रः 49।

एक स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠﴾

अनुवादः (मैंने कहा कि अपने रब से क्षमा याचना करो, निस्संदेह वह अति क्षमी है)। सूरह नूहः 10।

अल्लाह तआला का कथन हैः

﴿إِنَّ رَبَّكَ وَٰسِعُ ٱلْمَغْفِرَةِ﴾

अनुवादः (वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है)। सूरह नज्मः 32।

अरबी भाषा के शब्द "غفر, ग़फ़र" का मूल अर्थ शब्दकोष के अनुसारः छुपाने एवं ढ़ाँकने के होते हैं।

हमारा पाक व पवित्र परवरदिगार अपने बंदों के गुनाहों को छुपाता और उन पर अपना पर्दा डाल देता है, चुनाँचे उसके सिवा किसी और को उनके गुनाहों की भनक तक नहीं लगती, वह (अल्लाह) बंदे के गुनाहों और पापों को माफ कर देता है।

वह महान व सर्वशक्तिशाली (परवरदिगार) बंदों के गुनाहों को बार-बार बल्कि इतनी बार माफ करता है जिसका कोई शुमार नहीं, जब-जब बंदा गुनाहों से तौबा करता है, तब-तब वह महान अल्लाह की क्षमा से लाभांवित होता है।

❒ (रब का) दरबार खुला हुआ है ...

हाफ़िज़ त़बरानी आदि ने उल्लेख किया है किः एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहाः "हे अल्लाह के रसूल! हम में से कोई गुनाह करता है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "उसका गुनाह लिख दिया जाता है", उन्होंने पुनः प्रश्न कियाः वह उससे तौबा, इस्तिग़फ़ार व क्षमा याचना करता है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः उसे क्षमा कर दिया जाता है तथा उसकी तौबा

स्वीकार कर ली जाती है, अल्लाह उस समय तक नहीं उकताता जब तक तुम नहीं उकता जाते"। (यह ह़दीस़ ह़सन है, और अल-मोअजम अल-कबीर तथा अल-मोअजम अल-औसत़ में वर्णित है)।

وَهُوَ الغَفُورُ فَلَو أَتَى بِقُرَابِهَا   مِن غَيرِ شِركٍ بَل مِن العِصيَانِ

لَأَتَاهُ بِالغُفرَانِ مِلءَ قُرَابِهَا   سُبحَانَهُ هُوَ وَاسِعَ الغُفرَانِ

अनुवादः वह (अल्लाह) अत्यधिक क्षमी है, यदि (बंदा) शिर्क (बहुदेववादिता) के सिवा कोई और पाप धरती (की विशालता के) समान भी कर ले और अल्लाह से भेंट करे, तो अल्लाह उसे धरती समान क्षमा व माफी से नवाज़ेगा, पाक है वह रब जो बड़ा क्षमी अत्यंत माफ करने वाला है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला ने हर तौबा व प्रायश्चित्त करने वाले पापी एवं कुकर्मी के लिए अपना द्वार खोल रखा है, पाक व पवित्र पालनहार का फ़रमान हैः

﴿قُلْ يَٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾﴾

अनुवादः (आप कह दें मेरे उन भक्तों से जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश न हो अल्लाह की दया से, वास्तव में अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को, निश्चय वह अति क्षमी दयावान है)। सूरह ज़ुमरः 53।

उसकी दया की पराकाष्ठा देखिये कि उसने सात आसमानों के ऊपर से उन लोगों को तौबा की दावत दी है जो अल्लाह को तीन (पूज्यों) में तीसरा करार देते हैं, ताकि अल्लाह उन्हें क्षमा कर दे, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى ٱللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٤﴾﴾

अनुवादः (वह अल्लाह से तौबा तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जब्कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है)। सूरह माइदाः 74।

सभी लोगों के पाप क्षमा हो सकते हैं, सिवाय उस व्यक्ति के जो शिर्क करते हुये अल्लाह से मिलेगाः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُۚ وَمَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱفۡتَرَىٰٓ إِثۡمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह यह नहीं क्षमा करेगा कि (किसी को) उसका साझी बनाया जाये, और उसके सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देगा, और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महा पाप गढ़ लिया)। सूरह निसाः 48।

इस विषयवस्तु की बहुतेरी आयतें (श्लोक) हैं:

अब रही बात ह़दीस़ की, तो ह़दीस़ -ए- क़ुदसी में आया है किः "अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता हैः "हे आदम के संतान! जब तक तू मुझसे दुआएं करता रहेगा और मुझ से अपनी आशाएं एवं आस रखेगा मैं तुझे क्षमा करता रहूँगा, चाहे तेरे पाप किसी भी दर्जा को पहुँचे हुए हों, मुझे किसी बात की परवाह नहीं, हे आदम के संतान! यदि तेरे पाप आकाश (की ऊँचाई) छूने लगें फिर तू मुझ से माफी माँगे तो मैं तुझे माफ कर दूँगा और मुझे किसी बात की परवाह नहीं होगी, हे आदम के संतान! यदि तू धरती समान भी पाप कर बैठे तत्पश्चात मुझ से (क्षमा याचना करते हुए) मिले, और (परंतु शर्त यह है कि) मेरे संग किसी प्रकार का शिर्क न किया हो तो मैं तेरे पास उसके समान क्षमा ले कर आऊँगा (और तुझे माफ कर दूँगा)"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

यह ह़दीस़ उस व्यक्ति के बारे में है जो पापों से अपना पल्ला झाड़ कर ढ़ृढ़ निश्चय के साथ क्षमा याचना करे कि दोबारा उस पाप की ओर पलट कर भी नहीं देखेगा, और सच्चे हृदय से तौबा करे, तो जब अल्लाह उस की सच्चाई को देखेगा तो उसकी बुराईयों को नेकियों में बदल देगा, यह बंदों पर उसकी दानवीरता व दयालुता (का एक रूप) है।

❒ उम्मीद का दामन मत छोड़िये!

नेक अमल व सदकर्म पापों को मिटा देते हैं, पाक व पवित्र (पालनहार) का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱلۡحَسَنَٰتِ يُذۡهِبۡنَ ٱلسَّيِّـَٔاتِ﴾

अनुवादः (निस्संदेह नेकियां बुराईयों को दूर कर देती हैं)। सूरह हूदः 114।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ हैः “बुराई (जो तुम से हो जाये, उस) के बाद भलाई (नेकी) करो जो बुराई को समाप्त कर देती है”। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

इंसान को जो भी दुःख तक्लीफ पहुँचती है -चाहे वह उसके अपने आप से संबंधित हो, अथवा घर-परिवार से या धन-सम्पदा से- वह उसके पापों की क्षमा का कारण बनती है, बशर्ते कि वह उस में सवाब व पुण्य की नीयत करे, धैर्य रखे, तथा सर्वोच्च अल्लाह के निर्णय से सहमत व राज़ी रहे।

सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला को अपने बंदे के द्वारा तौबा व प्रायश्चित्त करने से उस व्यक्ति से अधिक प्रसन्नता होती है जो बिल्कुल चटियल व उजाड़ मरूस्थल में अपनी सवारी खो देता है जिस पर उसका खाना और पानी होता है, फिर (अचानक) उसे अपनी सवारी मिल जाती है, (तो जितनी प्रसन्नता उसको सहसा सवारी मिलने से होती है उससे अधिक प्रसन्नता अल्लाह को उस समय होती है जब कोई भक्त उसके समक्ष तौबा करता है)।

पाप चाहे जितना भी बड़ा हो, या बंदा जितनी बार भी उसको अंजाम दे ले, अल्लाह तआला की रह़मत व दया उससे कहीं अधिक उदार, व्यापक व बड़ी है, बस शर्त यह है कि बंदा तौबा व इस्तिग़फ़ार करता रहे।

अनुवादः (मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये है)। सूरह आराफ़ः 156।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप अपने महान रब से रिवायत करते हैं, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः “एक बंदे ने पाप किया और कहाः हे अल्लाह! मुझे क्षमा कर दे, पाक परवरदिगार ने फ़रमायाः मेरे बंदे ने पाप किया और वह जानता है कि उसका एक मालिक है जो पापों को क्षमा करता है तथा पाप करने पर दंड देता है, उसने फिर गुनाह किया और कहाः हे मेरे पालनहार! मेरे पापों को क्षमा कर दे, तो अल्लाह तआला ने फ़रमायाः मेरे बंदे ने पाप किया और वह जानता है कि उसका एक मालिक है जो पापों को क्षमा करता है तथा पाप करने पर दंड देता है, उसने पुनः एक बार फिर पाप किया और कहाः हे मेरे पालनहार! मेरे पापों को क्षमा कर दे, तो अल्लाह तआला ने फ़रमायाः मेरे बंदे ने पाप किया और वह जानता है कि उसका एक मालिक है जो पापों को क्षमा करता है तथा पाप करने पर दंड देता है, हे भक्त! अब तू चाहे जो कर्म कर, मैंने तुझे क्षमा कर दिया”। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

अर्थातः जब तक वह तौबा, इस्तिग़फ़ार व प्रायश्चित्त करता रहेगा (उसे यह शुभ सूचना मिलती रहेगा)।

अपने आक़ा व मौला के समक्ष विनम्रता, श्रद्धा एवं ख़ाकसारी अपनायें।

अल्लाह तआला का द्वार सभी तौबा व प्रायश्चित्त करने वालों के लिये खुला हुआ है, वह सदा से अति दानी, एवं अत्यंत क्षमाशील है और रहेगा, उसने हर उस व्यक्ति से क्षमा व माफी का वादा किया है, जो क्षमा के माध्यमों को अपनाएः

﴿وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ثُمَّ ٱهۡتَدَىٰ ۝٨٢﴾

अनुवादः (और मैं निश्चय ही बड़ा क्षमाशील हूँ उसके लिये जिस ने क्षमा याचना की, तथा ईमान लाया और सदाचार किया फिर सुपथ रहा)। सूरह ताहाः 82।

जिसके पाप तथा कुकर्म इतने अधिक हों जिसकी गणना करना दुष्कर हो जाये, तो उसे चाहिये कि उन सभी पापों से अल्लाह की क्षमा चाहे जो अल्लाह के ज्ञान में हैं, क्योंकि अल्लाह हर चीज़ को जानता और उसे शुमार करता है।

इसका कदापि यह अर्थ नहीं है किः मुस्लिम बंदा पाप के मामले में अति करने लगे, और इस बात को हुज्जत बना कर अल्लाह की अवज्ञा का दुस्साहस करता रहे किः अल्लाह तआला तो अत्यधिक क्षमा करने वाला, अति दयालु है! क्योंकि अल्लाह पाक का फ़रमान हैः

﴿رَّبُّكُمۡ أَعۡلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمۡۚ إِن تَكُونُواْ صَٰلِحِينَ فَإِنَّهُۥ كَانَ لِلۡأَوَّٰبِينَ غَفُورٗا﴾

अनुवादः (तुम्हारा पालनहार अधिक जानता है जो कुछ तुम्हारी अंतरात्माओं (मन) में है, यदि तुम सदाचारी रहे, तो वह अपनी ओर ध्यानमग्न रहने वालों के लिये अति क्षमावान है)। सूरह बनी इस्राईलः 25।

फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "गुनाह को छोड़े बिना क्षमा चाहना ... झूठे लोगों की तौबा है"।

❑ मोक्ष व मुक्ति की रस्सी (को थामे रहें) ...

अल्लाह तआला ने सभी प्राणियों को तौबा, इस्तिग़फ़ार व क्षमा याचना करने का आदेश दिया है, उनमें अम्बिया -ए- किराम सर्वप्रथम हैं:

﴿فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا ١٠﴾

अनुवादः (मैंने कहाः क्षमा माँगो अपने पालनहार से, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील है)। सूरह नूहः 10।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आपने फ़रमायाः "अल्लाह की क़सम! मैं दिन भर में सत्तर से अधिक बार अल्लाह से तौबा, इस्तिग़फ़ार व क्षमा याचना करता हूँ"। (इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है)।

जब यह नबियों की स्थिति है, तो उन के बाद वाले (जो उनसे निम्न श्रेणी के हैं वो) तो तौबा, इस्तिग़फ़ार व क्षमा याचना के अधिक पात्र हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अली बिन अबू त़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा किः "क्या मैं तुम को ऐसा कलेमा व वाक्य न सिखा दूँ कि उन वाक्यों को जब तुम कहोगे तो तुम्हारे गुनाह अल्लाह क्षमा कर देगा, यद्यपि तुम उन लोगों में से हो जिनके पाप पूर्व में ही क्षमा किये जा चुके हैं? आप ने फ़रमायाः "कहो! "।

لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّٰهُ العَلِيُّ العَظِيمُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّٰهُ الحَلِيمُ الكَرِيمُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّٰهُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ العَرْشِ العَظِيمِ

अनुवादः अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं जो सर्वोच्च व महान है, अल्लाह के अलावा कोई सत्य उपास्य नहीं जो ह़लीम (सहनशील) व करीम (दयालु व मेहरबान) है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा आराध्य नहीं, अल्लाह तआला पाक व पवित्र है, वह महान व उदार सिंहासन का रब है। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: "आश्चर्य है ऐसे व्यक्ति पर जो नाश व हलाक हो जाता है, जब्कि उसके पास मोक्ष का मार्ग मौजूद होता है! प्रश्न किया गयाः वह क्या है? उन्होंने फ़रमायाः इस्तिग़फार (प्रायश्चित्त व क्षमा याचना)"।

शैख़ुल इस्लाम रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: "पाप, दुःखों एवं संकटों का कारण है, इस्तिग़फार (प्रायश्चित्त व क्षमा याचना) दुःखों एवं संकटों के कारणों को दूर कर देता है, जैसाकि सर्वशक्तिशाली अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمَا كَانَ ٱللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ٣٣﴾

अनुवादः (और अल्लाह उन्हें यातना देने वाला नहीं है जब तक कि वह क्षमा याचना कर रहे हों)। सूरह अनफ़ालः 33"।

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह लिखते हैं: "जो व्यक्ति इस सिफ़त (विशेषता), अर्थात इस्तिग़फार (प्रायश्चित्त व क्षमा याचना) की विशेषता से विशेषित हो, अल्लाह तआला उसके लिये जीविकोपार्जन के साधन को सरल कर देता है, उसके मामलों को आसान कर देता है, उसे स्वस्थ, निरोग व हृष्ट-पुष्ट रखता है"।

أَشكُو إِلَيكَ ذُنُوبًا لَستُ أُنكِرُها   وَقَد رَجَوتُكَ يَا ذَا الْمَنِّ تَغفِرُهَا

مِن قَبلِ سُؤلِكَ لِي فِي الحَشرِ يَا أَمَلِي   يَومَ الجَزَاءِ عَلى الأَهوَالِ تَذكُرُهَا

أَرجُوكَ تَغفِرُها فِي الحَشرِ يَا أَمَلِي   إِذ كُنتَ سُؤلِي كَما فِي الأَرضِ تَستُرُهَا

अनुवादः मैं तुझ से ऐसे पापों की (माफी) की विनती करता हूँ जिन से मुझे इंकार नहीं, हे फ़ज़्ल व एहसान (अनुग्रह) वाले (रब) मुझे तुझ से यह उम्मीद है कि तू उन पापों को क्षमा कर देगा। हे मेरी आशा! (उन पापों को क्षमा कर दे) इससे पूर्व कि ह़श्र के मैदान में, क़यामत के दिन, हौलनाक व भयंकर परिस्थिति में उन पापों के विषय में तू मुझ से पूछताछ करे। मैं आशा करता हूँ हे मेरी उम्मीद! कि तू ह़श्र में भी यदि मुझ से पूछताछ करेगा तो तू उन पापों को क्षमा कर देगा, उसी प्रकार से जिस प्रकार से तू ने इस लोक में उन पर पर्दा डाले रखा।

"ला इलाहा इल्लल्लाह" के इकरार के साथ इस्तिग़फार (प्रायश्चित्त व क्षमा याचना) करने का जो भेद व गूढ़ अर्थ है, उसे अल्लाह तआला ने इस आयत में बयान फ़रमाया हैः

﴿فَٱعۡلَمۡ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ وَٱسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۢبِكَ وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِۗ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ مُتَقَلَّبَكُمۡ وَمَثۡوَىٰكُمۡ ١٩﴾

अनुवादः (तो (हे नबी!) आप विश्वास रखिये कि नहीं है कोई वंदनीय अल्लाह के सिवा तथा क्षमा माँगिये अपने पाप के लिये, और ईमान वाले पुरुषों एवं महिलाओं के लिये, और अल्लाह जानता है तुम्हारे फिरने तथा रहने के स्थान को)। सूरह मुह़म्मदः 19।

"निस्संदेह तौह़ीद, शिर्क की जड़ को समाप्त कर देता है तथा इस्तिग़फार (प्रायश्चित्त व क्षमा याचना) शिर्क की शाखाओं को मिटा देता है, सर्वोत्तम व सर्वाधिक सार्थक ह़म्द व प्रशंसा यह है किः "ला इलाहा इल्लल्लाह" का स्मरण किया जाये, और सबसे मानीख़ेज़ (अर्थजनक) दुआ यह है किः अल्लाह से मग़फ़िरत तलब की जाये, इसलिये अल्लाह ने आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तौह़ीद पर कायम रहने एवं अपने मोमिन भाइयों एवं बहनों के लिये मग़फ़िरत व क्षमा याचना करने का आदेश दिया''।

हे अल्लाह! समस्त संसार के पालनहार! हमें, हमारे माता-पिता तथा सभी मुसलमानों को क्षमा कर दे।

(28)

(अल-कबीर जल्ल जलालुहु)

❒ पालनहार के द्वार पर ...

आपका महान व उच्च परवरदिगार महानता, किब्रियाई, साम्राज्य एवं बादशाहत का मालिक है, वह (सबसे) बड़ा और (सबसे) बुलंद व उत्तुंग है। अपनी आवश्यकताएं उसी के द्वार पर पेश करें, अपने दिल को उसके सामने बिछा दें, उसके समक्ष विनती, श्रद्धा एवं विनम्रता अपनायें, वह आपकी आवश्यकताओं को पूर्ण करेगा, आपके रोग को दूर कर देगा, आपके ऋण अदा कर देगा एवं आपके क्षोभ व मलाल को दूर कर के होंटों पर मुस्कान बिखेर देगा ...

निस्संदेह वह बुज़ुर्ग व सर्वोच्च अल्लाह (सब से) बड़ा है।

(सब से) बड़े अल्लाह के सामने जब आप अपनी आशाओं को पेश करेंगे ... तो वह वास्तविकता में परिवर्तित हो जायेंगी।

आपकी उम्मीदें चाहे जितनी भी बड़ी हों, वह (सब से) बड़े अल्लाह के समक्ष ... अत्यंत तुच्छ हैं।

(सब से) बड़े अल्लाह के सक्ष आप अपनी जो भी इच्छाएं प्रकट करेंगे ... वह आपको प्रदान की जायेंगी, आप की लालसा, अभिरूचि एवं तमन्नाओं को पूरा किया जायेगा।

वह (सब से) बड़ा, महान व सर्वशक्तिशालीः भय एवं दहशत के समय आपकी शरणस्थली एवं आश्रय है, कठिन समय में वह आपकी सहायता करता है ... निःसंदेह वह अल्लाह (सब से) बड़ा हैः

﴿عَٰلِمُ ٱلۡغَيۡبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ ٱلۡكَبِيرُ ٱلۡمُتَعَالِ ۝٩﴾

अनुवादः (वह सब छुपे और खुले (प्रत्यक्ष) को जानने वाला बड़ा महान सर्वोच्च है)। सूरह रअदः 9।

हमारा महान व सर्वोच्च रब (सब से) बड़ा है, वह अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) में उच्चता के सर्वोच्च शिखर पर है, व्यापक व समग्र रूप से उस सर्वोच्च ज़ात से बुलंद, बड़ा व महान कोई भी नहीं:

﴿وَمَا قَدَرُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِۦ وَٱلْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ وَٱلسَّمَـٰوَٰتُ مَطْوِيَّـٰتٌۢ بِيَمِينِهِۦ ۚ﴾ [سورة الزمر:67].

(और उन्होंने अल्लाह का जैसा आदर होना चाहिये था वैसा आदर नहीं किया, समस्त भूमि क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और सारा आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा हुआ होगा)। सूरह ज़ुमरः 67।

हमारा सर्वोच्च व महान रब अपनी विशेषताओं (सिफ़तों) में (सब से) बड़ा है, उसकी समस्त विशेषताएं कमाल (पूर्ण) तथा प्रताप, तेज व ओजस्व आधारित हैं, उनमें न उसका कोई साझी है, न समकक्ष, न समान और न भागी।

हमारा सर्वोच्च व महान परवरदिगार वह है जो अपने अफ़आल (कर्मों) में (सब से) बड़ा है, उसकी मख़लूक़ व रचना की महानता उसके अफ़आल की महानता का प्रमाण हैः

﴿لَخَلْقُ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ ٱلنَّاسِ وَلَـٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ٥٧﴾

अनुवादः (मनुष्य की उत्पत्ति से अधिक बड़ा कार्य आकाश व धरा की उत्पत्ति है, किंतु (ये अलग बात है कि) अधिकतर लोग इससे अनभिज्ञ हैं)। सूरह ग़ाफ़िरः 57।

हमारा बुज़ुर्ग व उच्च परवरदिगार (सब से) बड़ा, (सब से) महान है तथा किब्रियाई का मालिक है, जिसके वैभव, तेज एवं प्रताप के समक्ष सभी बड़े (प्राणी) तुच्छ व बौने हैं।

हमारा सर्वशक्तिशाली रब हर प्रकार के दोष, बुराई एवं ऐब से पाक है।

हमारा महान रब वह है जो सभी प्रकार के दुर्गुण, त्रुटि, अवगुण व अत्याचार से पवित्र हैः ﴿ٱلْكَبِيرُ ٱلْمُتَعَالِ﴾ अनुवादः (वह बड़ा महान सर्वोच्च है)। सूरह रअदः 9।

﴿فَٱلْحُكْمُ لِلَّهِ ٱلْعَلِىِّ ٱلْكَبِيرِ ١٢﴾

अनुवादः (आदेश देने का अधिकार अल्लाह को है जो सर्वोच्च सर्वमहान है)। सूरह मोमिनः 12।

لَكَ الحَمدُ والنَّعماءُ والمُلكُ رَبَّنا وَلَا شيءَ أَعلى مِنكَ مَجْدًا وأَمجَدُ

فَسُبحَانَ مَن لَا يَقدِرُ الخَلقُ قَدرَه وَمَن هُو فَوقَ العَرشِ فَردٌ مُوَحَّدُ

अनुवादः हे हमारे रब! तेरे ही लिये हर प्रकार की प्रशंसा, स्तुति, नियामत, नवाज़िश, साम्राज्य व राज-पाट है, आदर सम्मान में तुझ से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं, तू सबसे सम्माननीय व आदरणीय है। पाक है वह रब कि मख़लूक़ व रचना ने जिसका वैसा सम्मान नहीं किया जैसा उसका सम्मान होना चाहिये था, वह सिंहासन पर अकेला है, वह अद्वैत व तंहा है।

❒ हमारी बुद्धि असमर्थ है!

अल्लाह पाकः इस बात से बड़ा है कि हम उसकी ज़ात व स़िफ़ात (व्यक्तित्व व विशेषता) की कैफियत, विवरण एवं वास्तविकता को जान सकें, इसी कारणवश हमें अल्लाह की ज़ात व स़िफ़ात (व्यक्तित्व व विशेषता) में सोच-विचार करने से रोका गया है, क्योंकि हम अपनी संकुचित व सीमित बुद्धि से उसकी वास्तविकता का अनुमान नहीं लगा सकते। त़बरानी ने "अल-औसत़" में रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला की नियामतों व अनुग्रहों में चिंतन-मनन करो, अल्लाह की ज़ात व स़िफ़ात (व्यक्तित्व व विशेषता) में चिंतन-मनन न करो"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

सर्वशक्तिमान, महान व सर्वोच्च अल्लाह तआला की जलालत (महानता, ओजस्व, तेज) व किब्रियाई, वैभव व प्रताप से पूर्णतः उसके सिवा कोई परिचित नहीं, न ही निकटवर्ती फ़रिश्ते एवं न ही अवतरित रसूल, क्योंकि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इसे केवल अपने लिये आरक्षित कर रखा है।

❒ सबसे गूढ़ वाक्य ...

अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला अपनी ज़ात, क़द्र, सम्मान, आदर, प्रताप एवं महानता में सब से बड़ा है, इसीलिए कहा जाता है किः सम्मान, आदर तथा महानता का बोध कराने वाला सबसे गूढ़ वाक्य अरबों के निकट (अल्लाहु अकबर) है, क्योंकि यह वाक्य अज़मत की स़िफ़त (महानता के विशेषण) से, (अर्थात अल्लाहु आज़म से) अधिक व्यापक व प्रभावशाली है, जब हम (अल्लाहु अकबर) कहते हैं तो उसमें अज़मत व महानता का अर्थ तो शामिल होता ही है, इसके अतिरिक्त सम्मान के अन्य अर्थ भी इसमें सारगर्भित होते हैं।

यही कारण है कि नमाज़ एवं अज़ान में जो कलेमा (वाक्य) मशरूअ (जायज़, निश्चित) किया गया है वह हैः (अल्लाहु अकबर), क्योंकि यह (अल्लाहु आज़म) से अधिक व्यापक व प्रभावशाली है, जैसाकि ह़दीस़ में आया हैः "किब्रियाई (बड़ाई अर्थात अभिमान व घमण्ड)

मेरी चादर है, तथा अज़मत (अर्थात महानता) मेरा तहबंद (अधोवस्त्र, तहमद) है, जो इन दोनों में किसी एक के लिए भी मुझ से झगड़े (अर्थात इन में किसी एक का दावा करे) मैं उसको जहन्नम में डाल दूँगा"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: "अल्लाह ने अज़मत को तहमद से तथा किब्रियाई को चादर से तश्बीह (उपमा) दी है, और यह बात सर्वज्ञ है किः चादर का स्थान (वस्त्र में) अधिक है, ठीक इसी प्रकार से चूँकि तकबीर शब्द में ताज़ीम शब्द की तुलना में बलाग़त (अलंकार विद्या) व गूढ़ अर्थ अधिक पाया जाता है, इस लिए तकबीर शब्द का उल्लेख किया, जिसमें ताज़ीम भी सम्मिलित है"।

❒ बादशाह के पास जाने की कुंजीः

यही कारण है कि नमाज़ में प्रवेश करने के लिये इसी कलेमा को मशरूअ (जायज़) करार दिया गया, मुसलमान उसी प्रकार से (नमाज़ में) प्रवेश करता है जिस प्रकार से दास अपने स्वामी के पास प्रवेश करता है, जब मुसलमान अल्लाह के पास प्रवेश करने का सम्मान प्राप्त करता है, तो उसके लिये सबसे व्यापक व प्रभावशाली कलेमा (वाक्य) मशरूअ किया गया है (जिसके द्वारा वह प्रवेश करता है), और वह हैः (अल्लाहु अकबर), (मानो) वह अपने अंतर्मन में कह रहा होता है किः "अल्लाहु अकबर, मैं इस वाक्य के द्वारा अपने मौला, रचयिता, एवं जीविका प्रदान करने वाले के पास दाख़िल हो रहा हूँ, अल्लाह तआला, जीवन की सभी व्यस्तताओं से बढ़ कर है", जब वह इस कलेमा को इख़्लास़ व निष्ठा भाव के साथ (एवं उसके अर्थों में विचार करते हुए) कहता है, तो उसके हृदय में अल्लाह की अज़मत व महानता बढ़ जाती है, उसके शारीरिक अंगों पर ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ (विनम्रता एवं श्रद्धा भाव) स्पष्ट होने लगता है, वह अल्लाह से लज्जा अनुभव करने लगता है, अल्लाह का वक़ार, बड़प्पन व किब्रियाई उसे इस बात से रोके रखती है कि उसका हृदय किसी और वस्तु में व्यस्त हो जाये, इस वाक्य की महानता ही है कि इसके द्वारा मुसलमान विभिन्न प्रकार की इबादत व उपासनाएं अंजाम देता है, ताकि अल्लाह तआला की प्रसन्नता व रज़ा उसे प्राप्त हो।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः ﴿وَرِضۡوَٰنٞ مِّنَ ٱللَّهِ أَكۡبَرُۚ﴾ अनुवादः (अल्लाह की रज़ामंदी व प्रसन्नता सबसे उत्तम वस्तु है)। सूरह तौबाः 72। अल्लाह का अपने भक्त से प्रसन्न हो जाना, स्वर्ग एवं उसकी नियामतों से भी बढ़ कर है, क्योंकि रज़ा (प्रसन्नता) अल्लाह की स़िफ़त (विशेषता) है और स्वर्ग उसकी मख़लूक़ व रचना है।

आदर सम्मान उसे मिलता है जो (सब से) बड़े (अल्लाह) की शरण में आ जाये।

जब यह कलेमा (अल्लाहु अकबर) दिल में बैठ जाता है तो मोमिन को इसके द्वारा आदर सम्मान प्राप्त होता है, वह अल्लाह पर भरोसा, एतमाद, तवक्कुल एवं विश्वास करने लगता है, अल्लाह की बड़ाई व महानता के सामने हरेक वस्तु तुच्छ हो जाती है।

सीरत व जीवनी लिखने वालों ने लिखा है किः "जब ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने मक़ाम -ए- इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ अदा कर ली तो यमन का एक निर्धन व्यक्ति आया और ख़ाना -ए- काबा का त़वाफ़ (परिक्रमा) करने लगा, त़वाफ़ के दौरान एक नेज़ा (बरछी) यमनी निर्धन व्यक्ति के कपड़े से उलझ गया और ह़ज्जाज के शरीर में लग गया, ह़ज्जाज भयभीत हो गया, और कहने लगाः इसे पकड़ो! फौज ने उसे पकड़ लिया, ह़ज्जाज ने कहाः इसे मेरे निकट लाओ, उन्होंने उस निर्धन व्यक्ति को ह़ज्जाज के निकट कर दिया।

ह़ज्जाज ने कहाः क्या तुम मुझे जानते हो? निर्धन व्यक्ति ने कहाः मैं तुम्हें नहीं जानता, ह़ज्जाज ने कहाः यमन में तुम्हारा शासक कौन है? निर्धन व्यक्ति ने कहाः ह़ज्जाज का भाई मुह़म्मद बिन यूसुफ़, जो उसी के समान अत्याचारी है बल्कि उससे भी बुरा है।

ह़ज्जाज ने कहाः क्या तुम्हें नहीं मालूम कि मैं ही उसका भाई हूँ? निर्धन व्यक्ति ने कहाः क्या तुम ह़ज्जाज हो? उन्होंने कहाः हाँ, निर्धन ने कहाः तुम बहुत बुरे हो! तथा तुम्हारा भाई भी अति दुष्ट है! ह़ज्जाज ने कहाः तुमने मेरे भाई को यमन में किस हालत में छोड़ा? निर्धन ने कहाः मैंने उसे इस हाल में छोड़ा कि वह बड़े तोंद वाला मोटा तगड़ा था।

ह़ज्जाज ने कहाः मैंने तुम से उसके स्वास्थय के बारे में नहीं पूछा, अपितु उसके न्याय प्रक्रिया एवं इंसाफ के विषय में पूछ रहा हूँ।

निर्धन ने कहाः मैंने उसे अत्याचार करते हुए छोड़ा है।

ह़ज्जाज ने कहाः क्या तुम्हें नहीं पता कि वह मेरा भाई है? क्या तुम्हें मुझ से तनिक भी भय नहीं लगता?

निर्धन ने कहाः क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारा भाई तुम्हारे द्वारा इससे अधिक सम्माननीय व शक्तिशाली है जितना मैं (अल्लाह) अकेले व अद्वैत के द्वारा सम्माननीय व शक्तिशाली हूँ"।

इस कथा के वाचक (रावी) त़ावूस रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "अल्लाह की क़सम! (यह सुन कर) मेरे रोंगटे खड़े हो गये, इसके बाद ह़ज्जाज ने उस निर्धन व्यक्ति को रिहा कर दिया, फिर वह काबा का त़वाफ़ करने लगा और उसके दिल में अल्लाह के सिवाय किसी का भय न था"।

أَكفَافهُم بِدِماءِ البَذلِ قَد صُبِغَت   اللهُ أَكبرُ مِن سَلسَالِها رَشَفُوا

فِي كَفِّكَ الشَّهمِ مِن حَبلِ الهُدَى طَرَفٌ   عَلى الصِّراطِ وَفِي أَروَاحِنَا طَرَفُ

अनुवादः उनके कफ़न दानवीरता एवं सख़ावत के रक्त से रंगे हुए हैं, और वो स्वयं अल्लाहु अकबर के सरोवर व स्रोत से सैराब हुए हैं। सुपथ व सीधे मार्ग की ओर हिदायत व मार्गदर्शन की रस्सी का एक सिरा उस की शक्तिशाली हथेली में है, जब्कि उसका दूसरा सिरा हमारी रूहों में (धंसे) हुए हैं।

कौन सा ऐसा बड़ा कार्य, कौन सी ऐसा बड़ी विपदा, और कौन सा ऐसा दुःख व कष्ट है, जो (सब से) बड़े अल्लाह के लिये दुष्कर है?

ज्ञात हुआ कि सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला ही (सब से) बड़ा है, (उस के सिवा) जो भी बड़ी वस्तु आप देखते, या उसके विषय में सुनते या जानते हैं, उसका रब व पालनहार अल्लाह ही है, और वह उन सब से बढ़ कर है, फिर भला संकट व दुःख के लिये यह कैसे संभव हो सकता है कि सर्वशक्तिशाली, सर्वमहान, सर्वोच्च तथा अति सम्माननीय अल्लाह के इरादे का समक्ष यह डट सकें?

सर्वशक्तिमान व सर्वोच्च अल्लाह (सब से) बड़ा है, वही है जो आपकी समस्याओं का समाधान कर सकता है, आपके समस्त दुःखों को सुखों में परिवर्तित कर सकता है, आपकी हर इच्छा व तमन्ना को पूरी कर सकता है, आपके सभी आँसुओं को मुस्कान में बदल सकता है।

فَالزَم يَدَيكَ بِحَبلِ اللهِ مُعتَصِمًا   فَإِنَّهُ الرُّكنُ إِن خَانَتكَ أَركَانُ

अनुवादः दृढ़ता के साथ अपने दोनों हाथों से अल्लाह की रस्सी को थाम लें, क्योंकि जब सभी सहारे साथ छोड़ दें तो वही एक सहारा (बचता) है (जो आप के काम आ सके)।

हे अल्लाह ! हम तुझ से तेरे महान नाम (अल-कबीर) के वसीले व माध्यम से प्रश्न करते हैं किः जन्नत में प्रवेश दिला कर तथा जहन्नम से मुक्ति दे कर हमारे ऊपर एहसान व अनुग्रह फ़रमा।

(29, 30, 31)

(अल-आला, अल-अली, अल-मुतआल जल्ल जलालुहु)

जब संकट के बादल घिरते हैं, विपदा का सामना होता है तथा आकस्मिक दुर्घटना पेश आती है, तो दिल (रब्बे) आला की ओर आकृष्ट होता है, हाथ उच्च व महान (पालनहार) की ओर उठ जाते हैं, तथा दृष्टि बुलंद, सर्वोच्च एवं शिखर पर आसीन (परवरदिगार) की ओर दुःख के बादल छँटने की प्रतीक्षा में आकाश की ओर देखने लगती है।

हमारा महान अल्लाह वह है जोः आला (सर्वोच्च), अली (बुलंद) तथा मुतआल (सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान) है। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ﴾

अनुवादः (वही सर्वोच्च महान है)। सूरह बक़राः 255।

एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿سَبِّحِ ٱسْمَ رَبِّكَ ٱلْأَعْلَى ۝١﴾

अनुवादः (अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमिरन करो)। सूरह आलाः 1।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का कथन हैः

﴿عَٰلِمُ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ ٱلْكَبِيرُ ٱلْمُتَعَالِ ۝٩﴾

अनुवादः (वह सब छुपे और खुले (प्रत्यक्ष व परोक्ष) को जानने वाला बड़ा महान सर्वोच्च है)। सूरह रअदः 9।

ज्ञात हुआ कि हमारा पालनहार आला (सर्वोच्च), अली (बुलंद) तथा मुतआल (सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान) हैः जिससे अधिक बुलंद व उच्च कोई नहीं, उसके लिये हर प्रकार की बुलंदी व उच्चता व्यापक व समग्र रूप से हैः

ज़ात (व्यक्तित्व) की उच्चताः अर्थात हमारा पाक व पवित्र रब अर्श पर विराजमान है, अपनी मख़लूक़ (रचना) से अलग तथा समस्त ब्रह्माण्ड से बुलंद हैः

﴿ٱلرَّحْمَٰنُ عَلَى ٱلْعَرْشِ ٱسْتَوَىٰ ۝٥﴾

अनुवादः (रह़मान (अर्थातः अत्यंत कृपाशील अल्लाह), अर्श (सिंहासन) पर मुस्तवी (स्थिर) है)। सूरह ताहाः 5।

स्थान व दर्जा की उच्चताः अर्थात अल्लाह तआला बड़ा प्रतिष्ठित व आदर-सत्कार वाला है, उसकी सभी विशेषताएं पूर्णता के शिखर पर स्थिर, तथा महानता की पराकाष्ठा को पहुँची हुई हैं, किसी मख़लूक़ व रचना की विशेषता न तो उसकी विशेषताओं के समान हो सकती हैं और न ही समतुल्य, बल्कि (सभी) बंदे (मिल कर भी) अल्लाह पाक की किसी एक विशेषता का भी ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकतेः

﴿وَلَا يُحِيطُونَ بِهِۦ عِلۡمٗا﴾

अनुवादः (और वे उसका पूरा ज्ञान नहीं रखते)। सूरह ताहाः 110।

ग़लबा व प्रभुत्व की उच्चताः अर्थात हमारा पाक व पवित्र रब हरेक चीज़ पर ग़ालिब है, समस्त ब्रह्माण्ड उसके समक्ष नतमस्तक है, सभी के सभी उसके प्रभुत्व व साम्राज्य तथा महानता व बड़ाई के अधीन हैं:

﴿وَهُوَ ٱلۡقَاهِرُ فَوۡقَ عِبَادِهِۦۚ وَهُوَ ٱلۡحَكِيمُ ٱلۡخَبِيرُ ١٨﴾

अनुवादः (तथा वही है, जो अपने भक्तों पर पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचति है)। सूरह अनआमः 18।

عَلى السَّماوَاتِ فَوقَ العَرشِ مُرتَفِعًا مُبَايِنًا لجَميعِ الخَلقِ مُتَّصِفًا
بِكُل أَوصَافِهِ العُليَا الَّتِي كَمُلَت وَلَيسَ هَذا بِحَمدِ اللهِ فِيهِ خَفَا

अनुवादः (अल्लाह) आसमानों पर, अर्श (सिंहासन) के ऊपर बुलंद है, सभी प्राणियों से अलग है, अपनी सभी उच्च विशेषताओं से विशेषित है, और सभी प्रशंसाएं अल्लाह के लिये हैं (अलह़म्दुलिल्लाह) यह कोई छिप्त व गुप्त चीज़ नहीं है।

❒ अल्लाह कहाँ है?!

स़ह़ीह़ मुस्लिम में एक बुज़ुर्ग व आदरणीय स़ह़ाबी मुआविया बिन ह़कम अल-सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः ... "हे अल्लाह के रसूल! मेरे पास एक दासी है जो मेरी कुछ बकरियों को चराती है। एक दिन मैंने बकरियों का हिसाब लिया तो एक बकरी कम पाया जिसे भेड़िया ले जा चुका था। चूँकि मैं भी एक इंसान हूँ, अतः मुझे इस बात पर

क्रोध आ गया तथा मैंने उसे एक चांटा मार दिया। वह कहते हैं कि यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नागवार लगी, तो मैंने अर्ज़ किया: हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या मैं उसे आज़ाद न कर दूँ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उसे मेरे पास ले कर आओ, अतः मैं उसे आपके पास लेकर आया तो आपने उससे प्रश्न किया: अल्लाह कहाँ है? तो उस दासी ने उत्तर दिया कि: अल्लाह आसमान में है, आपने पुनः प्रश्न किया: मैं कौन हूँ? तो उसने कहा कि: आप अल्लाह के रसूल हैं। यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: इसे स्वतंत्र कर दो, क्योंकि यह मोमिना (ईमान वाली महिला) है"।

अल्लाह के आसमान में होने का अर्थ यह है कि: आसमान के ऊपर बुलंदी में है, ह़दीस़ में जो शब्द आया है वह (فِي फ़ी, अर्थात: में) आया है जो कि (على अला, अर्थात: ऊपर) के अर्थ में है, जैसा कि यह शब्द अल्लाह तआला के इस फ़रमान में भी आया है:

﴿وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ﴾

अनुवाद: (मैं तुम सभों को खजूर के तनों पर सूली चढ़ा दूँगा)। सूरह त़ाहा: 71।

कोई इस भ्रम में न पड़ जाये कि आसमान, अल्लाह तआला को अपने घेरा में लिये हुए है, अल्लाह तआला इससे उच्च व बुलंद है कि कोई मख़लूक़ व रचना उसे अपने घेरे में ले।

प्रिय पाठकगण! मैं यहाँ रुक कर आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि: क्या सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला ने जिन विशेषताओं से स्वयं को विशेषित किया है, उन विशेषताओं के विलोम से अल्लाह तआला को विशेषित करना जायज़ व उचित है, जैसे यह कहना कि अल्लाह तआला हर जगह मौजूद है?

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह "मज्मूअ अल-फ़तावा" में कहते हैं कि: "अल्लाह पाक व पवित्र ने अपनी ज़ात को बुलंदी से विशेषित किया है, और यह उन विशेषताओं में से है जिनके द्वारा अल्लाह तआला की प्रशंसा व उस का गुणगान किया जाता है, क्योंकि यह एक स़िफ़त -ए- कमाल (सम्पूर्ण विशेषता) है, इसी प्रकार से अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात को अज़ीम (महान), अलीम (सर्वज्ञ), क़दीर (हर चीज़ करने में सक्षम), अज़ीज़ (ग़ालिब व प्रभुत्वशाली), ह़लीम (शालीन व सहनशील), ह़य्य (अमर), क़य्यूम (प्रत्येक चीज़ को थाम कर रखने वाला) और इस प्रकार की अन्य विशेषताओं से विशेषित किया है जो उसके सुंदर नामों की आभा हैं।

यह जायज़ व उचित नहीं कि उन विशेषताओं के विलोम से अल्लाह तआला को विशेषित किया जाये, चुनाँचे "उच्च" के विलोम "निम्न" से अल्लाह तआला को विशेषित करना जायज़ नहीं तथा न ही "क़वी (शक्तिशाली)" के विलोम "ज़ईफ़ व कमज़ोर (दुर्बल)" से उसे विशेषित करना जायज़ है।

बल्कि अल्लाह तआला उन समस्त दोषों एवं दुर्गुणों से पाक व पवित्र है जो उसकी प्रमाणित स़िफ़त -ए- कमाल (सम्पूर्ण विशेषताओं) के विरुद्ध हैं"।

هَذَا وَمِن تَوحِيدِهِم: إِثباتُ أَوصَافِ الكَمَالِ لِرَبِّنَا الرَّحمَنِ
كعُلُوِّهِ سُبحانَهُ فَوقَ السَّماواتِ العُلَى بَل فَوقَ كُلِّ مَكانِ
فَهُو العَلِيُّ بِذَاتِهِ سُبحانَه إِذ يَستَحِيلُ خِلافُ ذا بِبَيانِ
وَهُو الَّذِي حَقًّا عَلى العَرشِ استَوَى قَد قَامَ بِالتَّدبِيرِ لِلأَكوَانِ

अनुवादः उसके सिवा (अहले सुन्नत वल जमात के निकट) तौह़ीद (का तकाजा) यह भी है किः हमारे रब्ब, रह़मान के लिए स़िफ़त -ए- कमाल (पूर्ण विशेषताओं) को प्रमाणित किया जाये, जैसे यह कि अल्लाह पाक, बुलंद आसमानों के ऊपर बल्कि हर स्थान से ऊपर, बुलंद है, चुनाँचे अल्लाह पाक अपनी ज़ात के साथ बुलंद व उच्च है, इसके विपरीत (अर्थातः अनुच्च, नीचा, निम्न, अल्लाह तआला के लिये) असंभव है, दलील से यह साबित है। वही है जो वास्तव में अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर विराजमान) है, तथा समस्त ब्रह्माण्ड का प्रबंध कर रहा है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ رَبَّكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ﴾

अनुवादः (निस्संदेह तुम्हारा रब वही है जिसने आसमानों एवं ज़मीन को छः दिनों में उत्पन्न किया, तत्पश्चात अर्श पर मुस्तवी हुआ)। सूरह आराफ़ः 54।

अल्लाह पाक ने अपनी किताब क़ुरआन में जिब्रील एवं अन्य फ़रिश्तों के उतरने का उल्लेख किया हैः

﴿تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝٤﴾

अनुवादः (उस में(प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने के लिये) फ़रिश्ते तथा रूह़ (जिब्रील) अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते हैं)। सूरह क़द्रः 4।

और यह बात सर्वज्ञ है कि उतारने (तथा उतरने) का काम बुलंदी से नीचे की ओर ही होता है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया है कि फरिश्ते उसकी ओर चढ़ते हैं:

﴿تَعۡرُجُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ إِلَيۡهِ فِي يَوۡمٖ كَانَ مِقۡدَارُهُۥ خَمۡسِينَ أَلۡفَ سَنَةٖ ۝٤﴾

अनुवादः (चढ़ते हैं फरिश्ते तथा रूह़ जिसकी ओर, एक दिन में जिसका माप पचास हज़ार वर्ष है)। सूरह मआरिजः 4।

एक स्थान पर अल्लाह तआला ने उल्लेख किया है कि नेक अमल (सदकर्म) तथा पवित्र बात उसकी ओर चढ़ते हैं:

﴿إِلَيۡهِ يَصۡعَدُ ٱلۡكَلِمُ ٱلطَّيِّبُ وَٱلۡعَمَلُ ٱلصَّٰلِحُ يَرۡفَعُهُۥۚ﴾

अनुवादः (और उसी की ओर चढ़ते हैं पवित्र वाक्य तथा सत्कर्म ही उन को ऊपर ले जाता है)। सूरह फ़ातिरः 10।

❒ आख़िर अमल व कर्म किस की ओर बुलंद किये जाते हैं?

यदि हमारा पाक व पवित्र रब स्वयं हर स्थान पर मौजूद होता तो उतारने की क्या आवश्यकता थी? (अल्लाह तआला उनकी इस प्रकार की बातों से बुलंद व उच्च है)।

हमारा महान व उच्च रब समानता एवं समतुल्य होने जैसे दोषों से भी दोषरहित है।

हमारा सर्वशक्तिशाली पालनहार पत्नी एवं संतान से भी पाक व पवित्र हैः

﴿وَأَنَّهُۥ تَعَٰلَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا ٱتَّخَذَ صَٰحِبَةٗ وَلَا وَلَدٗا ۝٣﴾

अनुवादः (निःसंदेह महान है हमारे पालनहार की महिमा, नहीं बनाई है उसने कोई संगिनी (पत्नी) और न कोई संतान)। सूरह जिन्नः 3।

हमारा पाक व पवित्र रब अपनी इबादत व पूजा में साझीदार व भागीदार के ऐब से भी पाक व बुलंद हैः

﴿فَلَمَّآ ءَاتَىٰهُمَا صَٰلِحًا جَعَلَا لَهُۥ شُرَكَآءَ فِيمَآ ءَاتَىٰهُمَاۚ فَتَعَٰلَى ٱللَّهُ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ١٩٠﴾

(जब अल्लाह तआला ने उन्हें स्वस्थ शिशु दिया तो उन्होंने इस कृपा में दूसरों को अल्लाह का शरीक (साझी) बना दिया, अल्लाह पाक व पवित्र है उनके शिर्क से)। सूरह आराफ़ः 190।

❒ मार्ग ...

जो व्यक्ति इन तीन नामों: आला (सर्वोच्च), अली (बुलंद) तथा मुतआल (सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान) से परिचित हो जाये वह यह भी जान लेगा कि अल्लाह तआला अपनी सि़फ़ात -ए- कामिलह (सम्पूर्ण व मुकम्मल विशेषताओं) के द्वारा बुलंद व ऊँचा है, दोषपूर्ण व अपूर्ण विशेषताओं से पाक व पवित्र तथा अपनी मख़लूक़ (रचना) से बुलंद व उच्च है।

तथा जो व्यक्ति भी इस वास्तविकता का हक अदा करे -ज्ञान एवं उपासना दोनों आधार पर- तो इसके द्वारा उसे बेनियाज़ी व निःस्पृहता प्राप्त होगी, और वह मान सम्मान के उच्च शिखर पर विराजमान होगाः

﴿وَرَفَعۡنَٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ٥٧﴾

अनुवादः (और हमने उसे बहुत ऊँचे स्थान पर बुलंद किया)। सूरह मर्यमः 57।

लोक परलोक की बुलंदी व उच्चता निम्नांकित कार्यों से प्राप्त होती हैः

ईमान सेः

﴿وَمَن يَأۡتِهِۦ مُؤۡمِنًا قَدۡ عَمِلَ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَأُوْلَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلدَّرَجَٰتُ ٱلۡعُلَىٰ ٧٥﴾

अनुवादः (जो उसके पास ईमान ले कर आयेगा, तो उन्हीं के लिये उच्च श्रेणियाँ होंगी)। सूरह त़ाहाः 75।

इल्म व ज्ञान सेः

﴿يَرۡفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مِنكُمۡ وَٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡعِلۡمَ دَرَجَٰتٖۚ﴾

अनुवादः (ऊँचा कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है)। सूरह मुजादलाः 11।

विनम्रता व शालीनता सेः

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आपने फ़रमायाः "जो व्यक्ति अल्लाह के लिये विनम्रता व शालीनता अपनाता है, तो अल्लाह तआला उसके रुतबा व प्रतिष्ठा को बुलंद कर देता है"। (मुस्लिम)।

जब एक स़ह़ाबी ने जन्नत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत तलब की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अधिकाधिक सज्दा करने के द्वारा मेरी सहायत करो"। (मुस्लिम)। इसके अतिरिक्त सज्दा में (سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى, सुब्ह़ान रब्बियल आला, अर्थातः मेरा पालनहार पाक व पवित्र तथा उच्च व बुलंद है) का विर्द (जाप) करना भी (बुलंदी व उच्चता पाने का एक माध्यम है), अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿سَبِّحِ ٱسۡمَ رَبِّكَ ٱلۡأَعۡلَى ١﴾

अनुवादः (अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमिरन करो)। सूरह आलाः 1।

कुछ लोगों ने सज्दा में यह दुआ पढ़ने का कारण यह बताया है किः यह बंदे का अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के लिये अपने सबसे सम्माननीय अंग मुख के द्वारा विनम्रता एवं सरलता अपनाने की पराकाष्ठा है, इस प्रकार से कि (उसकी प्रसन्नता के लिए) अपना मुख धरती पर रख देता है, तो इस स्थिति में कि वह बेइंतहा पस्ती व निचाई की दशा में हो, यही उचित है कि अपने रब की यह स्तुति करे कि वह महान रब आला (सर्वोच्च) है।

चूँकि सज्दा की स्थिति में बंदा (इतना अधिक विनम्र भाव अपनाता है, इसीलिये) वह अल्लाह तआला के अत्यधिक निकट होता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं किः "बंदा अपने रब के सबसे निकट सज्दा की स्थिति में होता है, अतः (सज्दा में) तुम लोग अधिकाधिक दुआ किया करो"। (मुस्लिम)।

❒ आशाओं को पहुँच चुके ...

जब आप यह जान चुके कि समस्त ब्रह्माण्ड को चलाने वाला, सर्वोच्च तथा सब से आला (अल्लाह तआला) है जिसके हाथ में आसमानों एवं ज़मीन की मिल्कियत है ...

तो हे रोगी! आरोग्य देने वाला आकाश में है, हे निर्धन! धनवान बनाने वाला आसमान में है! हे दुःखी! दुःखों को हरने वाला गगन में है, हे बाँझ! संतान देने वाला नभ में है, हे ऋणी! जीविका प्रदान करने वाला आसमान में है, हे पीड़ित! पीड़ा को दूर करने वाला अंबर में है ...

इसलिए अपने मुख एवं हृदय के साथ आसमान की ओर ध्यान लगाओ, बुलंद व ऊँचे एवं सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान (अल्लाह) को पुकार, प्रसन्न हो जा कि तुझे अल्लाह तआला ने अपने इस फ़रमान के द्वारा सात आसमानों के ऊपर से शुभ सूचना दी हैः

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ١٨٦﴾

अनुवादः (-हे नबी!- जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय ही मैं समीप हूँ, मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ, अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वह सीधी राह पायें)। सूरह बक़राः 186।

لَكَ الحَمدُ يا ذَا الجُودِ والمَجْدِ والعُلَا　　تبَارَكتَ تُعطِي مَن تَشاءُ وتَمنعُ

إلهَي لَئِن جَلَّت وَجَمّت خطِيئَتِي　　فَعَفوُكَ عَن ذَنبِي أَجَلُّ وَأَوسَعُ

إلَهي تَرَى حَالِي وَفقرِي وَفاقَتِي　　وَأَنتَ مُنَاجَاتِي الخَفِيَّةَ تَسمَعُ

إلهَي لَئِن خَيَّبْتَنِي أَو طردتَنِي　　فَمَن ذَا الَّذِي أَرجُو وَمَن لِي يَشفَعُ

अनुवादः हे दानवीर, महान व उच्च स्थान वाले! तेरे लिये ही हर प्रकार की प्रशंसा व स्तुति है, तू बरकत वाला है, जिसे चाहता है प्रदान करता है तथा जिसे चाहता है वंचित कर देता है। हे मेरे पूज्य! यद्यपि मेरे पाप अत्यधिक हैं तथापि तेरी क्षमा मेरे पाप से कहीं विशाल एवं महान है। हे मेरे उपास्य! तू मेरी स्थिति तथा निर्धनता व दरिद्रता को देख रहा है एवं तू मेरी छिप्त सरगोशियों को भी सुनता है। हे मेरे आराध्य! यदि तू ने मुझे निराश कर दिया अथवा ठुकरा दिया तो कौन है जिस से मैं आशा रखूँ और कौन है जो मेरी सिफ़ारिश करे।

हे अल्लाह! हम तुझ से तेरे महान नाम (आला, सर्वोच्च) के वसीला व माध्यम से दुआ करते हैं कि लोक परलोक में हमारा स्थान उच्च कर दे।

(32, 33)

(अल-क़ाहिर, अल-क़ह्हार जल्ल जलालुहु)

अबू याला ने अपनी "मुसनद" में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, वह कहते हैं कि: "फ़िरऔन ने अपनी पत्नी के हाथ एवं पाँव को चार कीलों से बाँध रखा था, जब (फ़िरऔन के) लोग उनसे अलग होते तो फ़रिश्ते उनको साया करते थे, उन्होंने (फ़िरऔन की पत्नी ने) कहा:

﴿رَبِّ ٱبۡنِ لِي عِندَكَ بَيۡتٗا فِي ٱلۡجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِن فِرۡعَوۡنَ وَعَمَلِهِۦ وَنَجِّنِي مِنَ ٱلۡقَوۡمِ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

अनुवाद: (हे मेरे पालनहार! मेरे लिये अपने स्वर्ग में मकान बना और मुझे फ़िरऔन से तथा उसके (कु) कर्म से बचा, तथा मुझे अत्याचारी समुदाय से मुक्ति दे")।

उद्दंडी फ़िरऔन के घर से इस धरती की एक महान क्रांतिकारी महिला प्रकट हुईं, एवं उसके महल से ही मूसा अलैहिस्सलाम निकले।

वह फ़िरऔन जिसने कहा था:

﴿سَنُقَتِّلُ أَبۡنَآءَهُمۡ وَنَسۡتَحۡيِۦ نِسَآءَهُمۡ وَإِنَّا فَوۡقَهُمۡ قَٰهِرُونَ﴾

अनुवाद: (हम अभी उनके पुत्रों का वध करना आरंभ कर देंगे तथा महिलाओं को जीवित रहने देंगे और हम को उन पर हर प्रकार का प्रभुत्व प्राप्त है)। सूरह आराफ़: 127।

प्रभुत्वशाली व शक्तिशाली (अल्लाह) ने इस अत्याचारी एवं स्वयंभू को पराजित व पस्त कर दिया, तथा बाद में आने वाले लोगों के लिये उसे इबरत व सीख बना दिया:

﴿فَٱلۡيَوۡمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنۡ خَلۡفَكَ ءَايَةٗۚ وَإِنَّ كَثِيرٗا مِّنَ ٱلنَّاسِ عَنۡ ءَايَٰتِنَا لَغَٰفِلُونَ ٩٢﴾

अनुवाद: (तो आज हम तेरे शव को बचा लेंगे ताकि तू उनके लिये जो तेरे पश्चात होंगे, एक (शिक्षाप्रद) निशानी बने, और वास्तव में बहुत से लोग हमारी निशानियों से अचेत रहते हैं)। सूरह यूनुस: 92।

अल्लाह पाक ने अपनी बुलंद व उच्च ज़ात की तारीफ़ करते हुए फ़रमायाः

﴿وَهُوَ ٱلۡقَاهِرُ فَوۡقَ عِبَادِهِۦۚ وَهُوَ ٱلۡحَكِيمُ ٱلۡخَبِيرُ ١٨﴾

अनुवादः (तथा वही है, जो अपने भक्तों पर पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचति है)। सूरह अनआमः 18।

हमारा महान सर्वशक्तिमान परवरदिगार अपनी बादशाहत के द्वारा विजयी व प्रभुत्वशाली है, समस्त ब्रह्माण्ड में जैसे चाहता है वैसे हेर-फेर करता है, उसके इरादा पर कोई चीज़ विजय नहीं पा सकती।

अल्लाह तआला ने सभी उद्दंडी शासकों को परास्त कर दिया, सांसारिक राजाओं की कमर तोड़ दी, उसके समक्ष सभी तने हुए सिर नतमस्तक हो गये, उसकी महानता के सामने सभी कठिनाईयां सरलता में परिवर्तित हो गईं, उसके लिये सभी मुख विनम्रता व शालीनता के साथ झुक गईं, सभी प्राणी उसके दरबार में शीश नवाने लगे, तथा उसकी महानता, तेज एवं प्रताप के समक्ष शिष्टाचार अपनाते हुए बिछ गये।

हमारा पाक व महान परवरदिगार वह है जिसके समक्ष सारे प्राणी नतमस्तक तथा उसकी शक्ती एवं पूर्ण सामर्थ्य के आगे पस्त रहते हैं।

(अल्लाह) सर्वशक्तिमान समस्त लोक परलोक पर प्रभुत्व रखने वाला है, हर प्रकार की हलचल उसकी अनुमति व आज्ञा से ही होती है, वह जो चाहता है वह होता है और जो नहीं चाहता वह नहीं होता, यही अर्थ है हमारे सर्वशक्तिमान पाक परवरदिगार के इन दो नामों: (अल-क़ाहिर व अल-क़हहार (प्रभुत्वशाली, बलवान व शक्तशाली) का।

وَكَذَا القَهَّارُ مِن أَوصَافِهِ   فَالخَلقُ مَقهُورُونَ بِالسُّلطانِ

لَو لَمْ يَكُن حَيًّا عَزِيزا قَادِرًا   مَا كَانَ فِي قَهرٍ ولا سُلطَانِ

अनुवादः इसी प्रकार से क़हहार (ज़ोरावर, बलवान, शक्तिशाली होना) भी उसकी एक विशेषता है, मख़लूक़ (उसकी बादशाहत से) परास्त हैं। यदि वह चिरजीवी व अमर, बलवान व शक्तिशाली, तथा प्रभुत्व व क़ुदरत रखने वाला नहीं होता तो प्रभुत्व व श्रेष्ठता तथा साम्राज्य व शासन का अधिकारी नहीं होता।

❒ निस्संदेह वह बलशाली व ज़ोरावर हैः

कौन है जो लाचार व बेबस की दुआ को सुनता तथा उसकी परेशानी को दूर करता है? कौन है जो हड्डियों के सड़ जाने के पश्चात पुनः जीवित करता है, जिस प्रकार से मख़लूक़ (प्राणियों) को प्रथम बार उत्पन्न किया थी उसी प्रकार से दोबारा उत्पन्न करेगा, और दोबारा उत्पन्न करना उसके लिए अधिक सरल है? कौन है जो पीड़ित को आश्रय देता है जब उस पर अत्याचार किया जाता है? कौन है जो दुर्बलों के काम आता है जब उस पर ज़ुल्म किया जाता है?

हमारा बलशाली व महान पालनहार प्रभुत्वशाली, ज़ोरावर तथा हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है, जो किसी भी वस्तु को बेकार पैदा नहीं करता, और न किसी चीज़ को व्यर्थ होने देता है, किसी कार्य को उसी समय स्वीकार करता या किसी कृत्य को उसी वक्त मशरूअ व जायज़ ठहराता है जब उसमें हिकमतें हों, (यह अलग बात है कि) कोई उन्हें जान पाता है तो कोई उनसे अनभिज्ञ रहता है।

إِلَيكَ جَمِيعُ الأَمرِ يَرجِعُ كُلُّه   وَمِنكَ الأَمَانِي تُرتَجى والبَشائِرُ

अनुवादः तेरी ही ओर सभी मामले लौट कर जाते हैं और तुझ से ही समस्त आशाओं (के पूर्ण होने) एवं शुभ सूचनाओं की उम्मीद रखी जाती है।

अब भला कौन है जो तौहीद और उपासना के योग्य हो? क्या अल्लाह अकेले व अद्वैत, प्रभुत्वशाली व बलशाली ही (इसके योग्य) नहीं, जो बेमिसाल है?!

इसी बिंदु को ले कर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कारावास में अपने साथियों से वाद-विवाद किया और फ़रमायाः

﴿يَٰصَٰحِبَيِ ٱلسِّجۡنِ ءَأَرۡبَابٞ مُّتَفَرِّقُونَ خَيۡرٌ أَمِ ٱللَّهُ ٱلۡوَٰحِدُ ٱلۡقَهَّارُ ٣٩﴾

अनुवादः (हे मेरे क़ैद के दोनों साथियों! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम हैं या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह?!) सूरह यूसुफ़ः 39।

क्या आपने ऐसा कोई पराजित व परास्त भी देखा है जो स्वयं को लाभ-हानि पहुँचाने की क्षमता रखता हो? भला पराजित व निर्बल व्यक्ति से कैसे फ़रियाद की जा सकती और कैसे उस पर तवक्कुल व भरोसा किया जा सकता है, जब्कि अल्लाह वह है जो अकेला, तंहा, अद्वैत, ज़ोरावर और प्रभुत्वशाली है?!

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब (रात के समय) अचानक नींद से जागते तो यह दुआ पढ़ा करते थेः

"لا إله إلاَّ الله الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ، رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّار"

अनुवादः (अर्थातः अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं जो अकेला व अद्वैत ज़ोरावर व प्रभुत्वशाली है, जो पालनहार है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उसके बीच है, वह बड़ा बलशाली तथा अति क्षमाशील है)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने ह़िब्बान ने रिवायत किया है)।

❒ अपने मामलों को उसी के सुपुर्द कर दें ...

चूँकि मोमिन इस बात से भलि भांति परिचित होता है कि अल्लाह ही अकेला व अद्वैत ज़ोरावर व प्रभुत्वशाली है, इसीलिए वह उसके समक्ष आत्मसमर्पण कर देता है, अपने मामलों को उसके हवाले कर देता है, उसी पर भरोसा करता है, अल्लाह तआला के सिवा किसी की महानता का बखान नहीं करता तथा न उसके सिवा किसी से भय खाता है, कमज़ोर व दुर्बल प्राणियों का भय (उसके ह्रदय से) निकल जाता है, चाहे वह शक्तिशाली व बलशाली होने का ढिंढोरा पीटते रहें।

फ़िरऔन के जादूगरों को ही देख लें कि जब उनके दिलों में ईमान बैठ गया और वो यह जान गये कि अल्लाह तआला ही अकेला व तंहा प्रभुत्वशाली व ज़ोरावर है तो इस लोक के उद्दंडी राजा फ़िरऔन की धमकी पर उन्होंने यह जवाब दियाः

﴿قَالُواْ لَا ضَيۡرَۖ إِنَّآ إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ٥٠﴾

अनुवादः (उन्होंने कहाः कोई हर्ज नहीं, हम तो अपने रब की ओर लौटने वाले हैं) । सूरह शोअराः 50।

बलशाली व महान अल्लाहो अत्याचारी, उद्दंडी, कृतघ्न व अवज्ञाकारी पर प्रभुत्व व गलबा रखता हैः

﴿وَهُوَ ٱلۡقَاهِرُ فَوۡقَ عِبَادِهِۦۚ وَهُوَ ٱلۡحَكِيمُ ٱلۡخَبِيرُ ١٨﴾

अनुवादः (तथा वही है, जो अपने भक्तों पर पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचति है)। सूरह अनआमः 18।

अल्लाह तआला ने नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय को तूफ़ान के द्वारा विनाश कर दिया, स़ालेह़ अलैहिस्सलाम के समुदाय को कर्कश ध्वनी (चिंघाड़) के द्वारा नाश कर दिया, आद अलैहिस्सलाम के समुदाय को तेज़ आँधी के द्वारा, लूत अलैहिस्सलाम के समुदाय पर पत्थर बरसा कर, क़ारून को धरती में धँसा कर, सबा समुदाय को भूख-प्यास तथा जीविका में तंगी के द्वारा, बनी इस्राईल पर भय व शत्रुओं को प्रभुत्व दे कर, अत्यधिक रक्तपात के द्वारा, तथा उनके एक समुदाय को मस्ख़ व विकृत तथा ताऊन (प्लेग) के द्वारा परास्त कर दिया।

(इन घटनाओं में) बलशाली व सर्वोच्च अल्लाह तआला का ग़लबा, प्रभुत्व व बरतरी स्पष्ट है:

﴿وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ﴾

अनुवादः (हमने उन पर अत्याचार नहीं किया, अपितु वो स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार करते रहे)। सूरह नह़्लः 118।

अल्लाह वह है जिसका क़हर व ग़लबा (प्रभुत्व व प्रबलता) मख़लूक़ के ग़लबा को परास्त कर देता है और उसकी शक्ति के सामने सभी प्राणियों की शक्तियां क्षीण हो जाती हैं:

﴿لِّمَنِ ٱلْمُلْكُ ٱلْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ ٱلْوَٰحِدِ ٱلْقَهَّارِ﴾

अनुवादः (आज किस की बादशाही है? केवल एक अल्लाह प्रभुत्वशाली की)। सूरह ग़ाफ़िरः 16।

अल्लामा राज़ी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: "इस संबोधन के समय अत्याचारी शासक तथा ज़ालिम राजा कहाँ होंगे?!

इस तंबीह व फटकार के समक्ष अम्बिया व रुसुल तथा निकटवर्ती फरिश्ते क्या कर सकेंगे?!

उस समय पथभ्रष्ट व नास्तिक लोग, तौह़ीद परस्त व सुपथ लोग कहाँ होंगे?!

आदम (अलैहिस्सलाम) एवं उनका वंश कहाँ होंगे?!

इब्लीस एवं उसके चेले-चपाटे कहाँ होंगे?!

(ऐसा प्रतीत होगा कि) मानो वो सभी नाश एवं बर्बाद हो चुके हों!

प्राण पखेरु उड़ जायेंगे, जान निकल जायेगी, शरीर व ढ़ाँचे बर्बाद हो जायेंगे, जोड़-जोड़ अलग हो जायेंगे, और केवल वह (अल्लाह) बाकी रहेगा जो सदा से मौजूद है तथा सदा मौजूद रहेगा"।

यह आवश्यक नहीं कि सभी निर्णय इस लोक में ही हो जायें, कुछ अत्याचार ऐसे भी हैं जिनकी पेशी क़्यामत के दिन पुनः होगी, और यह ऐसी वास्तविकता है जिसकी मार अत्याचारियों के दिलों पर गर्म तपते हुए हथोड़ों से भी अधिक कष्टकर हैः

﴿وَأَنَّ مَرَدَّنَآ إِلَى ٱللَّهِ﴾

अनुवादः (यह (भी निश्चित बात है) कि हम सब का लौटना अल्लाह की ओर है)। सूरह ग़ाफ़िरः 43।

इमाम शाफ़ई रहिमहुल्लाह का कथन हैः "क़ुरआन की एक आयत (श्लोक) ऐसी है जो अत्याचारी के दिल के लिये बाण व तीर के समान है जब्कि पीड़ित के लिए मलहम की तरह है, उनसे प्रश्न किया गयाः वह कौन सी आयत है? आप रहिमहुल्लाह ने उत्तर दियाः वह अल्लाह तआला का यह फ़रमान हैः

﴿وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا﴾

अनुवादः (तेरा पालनहार भूलने वाला नहीं)। सूरह मर्यमः 64"।

हे अल्लाह! हे प्रभुत्व व उच्चता, महानता व किब्रियाई वाले रब! दुष्टों की दुष्टता तथा मक्कारों की मक्कारी से हमें सुरक्षित रख।

(34)

(अल-वह्हाब जल्ल जलालुहु)

وَكَذلِكَ الوَهّابُ مِن أَسمائِهِ فَانظُر مَواهِبَهُ مَدَى الأَزمانِ
أَهلُ السَّمواتِ العُلَا والأَرضِ عَن تِلكَ المَواهِبُ لَيسَ يَنفَكّانِ

अनुवादः इसी प्रकार से वह्हाब (दाता) भी उसके महान नामों में से एक है, हर युग में उसकी जो कृपा व अनुग्रह होते रहे हैं, उन पर विचार करें। बुलंद आसमान हो या (पस्त) ज़मीन, उसकी कृपा से कोई भी (एक क्षण के लिये) ख़ाली नहीं।

अल्लाह तआला अपनी उच्च व बुलंद ज़ात की प्रशंसा करते हुए फ़रमाता हैः

﴿أَمۡ عِندَهُمۡ خَزَآئِنُ رَحۡمَةِ رَبِّكَ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡوَهَّابِ ۝٩﴾

अनुवादः (अथवा उनके पास हैं आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष?)। सूरह स़ादः 9।

हमारा बुज़ुर्ग व बरतर परवरदिगार बड़ा दानी व दाता है, उसकी कृपा व दया आकाश व धरा के समस्त प्राणियों को सम्मिलित है, उसकी नवाज़िश न वर्तमान में रुकी हुई है और न भविष्य में रुकेगी, वह बिना माँगे और बिना किसी वास्ते के भी नवाज़ता है, बगैर किसी कारण और बिना किसी तदबीर के भी कृपा करता हैः

﴿رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوبَنَا بَعۡدَ إِذۡ هَدَيۡتَنَا وَهَبۡ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحۡمَةًۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡوَهَّابُ ۝٨﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर, वास्तव में तू बहुत बड़ा दाता है)। सूरह आले इमरानः 8।

﴿أَمۡ عِندَهُمۡ خَزَآئِنُ رَحۡمَةِ رَبِّكَ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡوَهَّابِ ۝٩﴾

अनुवादः (अथवा उनके पास हैं आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष?)। सूरह स़ादः 9।

निःसंदेह वह अत्यधिक देने वाला वाला दानवीर हैः

पाक व पवित्र है वह महान रचयिता, दानवीर, दाता तथा बड़ी कृपा करने वाला।

सख़ावत व दानशीलताः उसकी एक विशेषता है, जूद (उदार व सख़ी): उसका एक महान गुण है, प्रदान करनाः उसकी बड़ी नवाज़िशों में से है, भला उससे बड़ा सख़ी व दाता कौन हो सकता है?

मख़लूक़ात (मानव) उसकी अवज्ञा करती हैं, और वह (अल्लाह) उनकी निगरानी करता है, उनके बिस्तरों पर (और उन के घरों में) उनकी ऐसी सुरक्षा करता है कि मानो उन्होंने उसकी अवज्ञा की ही न हो, वह उनकी ऐसी देख-भाल करता है कि मानो उन्होंने कोई पाप किया ही नहीं है, वह पापी एवं कुकर्मी को भी अपनी कृपा व अनुग्रह से नवाज़ता है।

कौन है जिसने उससे दुआ की हो और उसने स्वीकार न किया हो? कौन है जिसने उससे माँगा हो और उसने दिया न हो? कौन है जिसने उसके द्वार को खटखटाया हो और उसने दुत्कार दिया हो?

سُبْحَانَ مَن يُعطِي الُمنَى بِخَواطِرِ   فِي النَّفسِ لَمْ يَنطِق بِهِنَّ لِسانُ
سُبحانَ مَن هُوَ لَا يَزَالُ وَرِزْقُهُ   لِلعالَمِينَ بِهِ عَلَيهِ ضَمَانُ

अनुवादः पाक है वह ज़ात जो दिल एवं कल्पना में आने वाली इच्छाओं को ज़ुबान पर आने से पहले ही पूरी कर देता है। पवित्र है वह ज़ात जिसने अनंत काल से समस्त लोक वासियों के लिये अपने रिज़्क़ व जीविका की ज़मानत ले रखी है।

अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर की नियामतें बंदे पर उसी समय से बरसने लगती हैं जब वह माँ के गर्भाशय में होता है, फिर अल्लाह उसके कान और आँख बनाता है, और उसमें रूह फूँकता है, फिर उसके खाने पीने का प्रबंध करता है, (संसार में पधारने के बाद) उसे वस्त्र व परिधान, घर-बार प्रदान करता तथा (अपनी दया व कृपा से) उसके लिये पर्याप्त होता है, और उसे हर वह चीज़ देता है जो वह उससे माँगता है।

अल्लाह तआला अपने बंदे के संबंध में फ़रमाता हैः

﴿أَلَمْ نَجْعَل لَّهُۥ عَيْنَيْنِ ۝٨ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝٩ وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ ۝١٠﴾

अनुवादः (क्या हमने उसकी दो आँखें नहीं बनाईं। और ज़ुबान व होंठ (नहीं बनाए)। हमने दिखा दिये उसको (हिदायत व गुमराही के) दोनों रास्ते)। सूरह बलदः 8-10।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ أَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ إِلَى ٱللَّهِ ۖ وَٱللَّهُ هُوَ ٱلْغَنِىُّ ٱلْحَمِيدُ ۝١٥﴾

अनुवादः (हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह के, तथा अल्लाह ही निःस्वार्थ प्रशंसित है)। सूरह फ़ातिरः 15।

उसी ने तुझे पैदा किया तथा जीविका प्रदान की, वही जीवन एवं मृत्यु का स्वामी है, तुम्हारे ऊपर अनुग्रह करता व कृपा बरसाता है, वही रोगी और निरोग बनाता है, वही भूख देता तथा भूख मिटाता है, प्यास देने वाला तथा प्यास बुझाने वाला, वही हंसाता और रुलाता है, उसने ही तुम्हें वह सिखाया जिसे तुम नहीं जानते थे, उसी ने तुम्हें उससे परिचित कराया जिससे तुम अनभिज्ञ थे, एवं तुम्हारे लिये जीविका के साधन को सरल कर दिया।

उसने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की, तुम्हारी पुकार का उत्तर दिया, तुम्हारे शत्रु को परास्त व पराजित कर दिया, तुम्हारे लिये रसूल को अवतरित किया, तुम्हें (अपनी) किताब का ज्ञान दिया, और (सीधे) मार्ग की ओर मार्गदर्शन किया ... इन अनुग्रहों के बाद भी तुम उसकी अवज्ञा करते हो?!

﴿قُتِلَ ٱلۡإِنسَٰنُ مَآ أَكۡفَرَهُۥ ١٧﴾

अनुवादः (इंसान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है)। सूरह अबसः 17।

❒ पालनहार के द्वार पर …

क्या संसार आपके लिये तंग हो चुका है?

क्या आप रोग से जूझ रहे हैं?

क्या क़र्ज़ के बोझ ने आपको निढ़ाल कर दिया है?

क्या निर्धनता व दरिद्रता ने आपकी कमर तोड़ दी है?

क्या आप पत्नी एवं संतान की इच्छा रखते हैं?

क्या आपका मन विचलित एवं विचार अस्त-व्यस्त है?

तो आप अभी इसी समय (अल्लाह) वह्हाब (प्रदान करने वाले) से विनती कीजिये, उस (पालनहार से) जो बहुत अधिक अनुग्रह करने वाला है, केवल अपने हाथ उठाइये, उसके द्वार पर खड़े हो जाइये, उसके प्रभुत्व की शरण में आइये, फिर देखिये कि किस प्रकार भूख तृप्ति और प्यास सैराबी में परिवर्तित हो जाती है, आँखों की रूठी हुई नींद वापस आ जाती है,

रोग के पश्चात निरोग व आरोग्य प्राप्त होता है, गुमशुदा घर लौट आता है, दिग्भ्रमित मार्गदर्शन पाता है, क़ैदी रिहा होता है तथा अंधकार छँट कर उजाला पैदा होता है।

निस्संदेह वह पाक व पवित्र "अल्लाह" बड़ा दाता है, जो आँसू को मुस्कान में, भय को अभय में, आतंक को अमन में परिवर्तित कर देता है, रात के अंधकार को भोर के उजियारे से बदल देता है, दुःखी मानव को सहसा प्राप्त होने वाली दुःख के बादल छँटने की शुभ सूचना सुनाता है, और संकट में घिरे हुये दुखियारे पर अपनी छिप्त कृपा व दया प्रदान कर के उसे संकट से उबारता है।

अल्लाह तआला के कोष भरे हुए हैं, वह कभी ख़ाली नहीं होते, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान हैः

﴿ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ﴾

अनुवादः (मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा)। सूरह ग़ाफ़िरः 60।

जो व्यक्ति अल्लाह तआला से प्रार्थना करे उसे चाहिये कि पूर्ण विश्वास के साथ प्रार्थना करे, क्योंकि अल्लाह के समक्ष कोई चीज़ बड़ी नहीं! सुलैमान अलैहिस्सलाम को देखिये कि वह कैसे अल्लाह तआला से लोक परलोक की भलाई माँग रहे हैं:

﴿قَالَ رَبِّ ٱغۡفِرۡ لِي وَهَبۡ لِي مُلۡكٗا لَّا يَنۢبَغِي لِأَحَدٖ مِّنۢ بَعۡدِيٓۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡوَهَّابُ ٣٥﴾

अनुवादः (उसने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! मुझ को क्षमा कर दे, तथा मुझे प्रदान कर ऐसा राज्य जो उचित न हो किसी के लिये मेरे पश्चात, वास्तव में तू ही अति प्रदाता है)। सूरह स़ादः 35।

ज़करीय्या अलैहिस्सलाम वयोवृद्ध हो चुके हैं और उनकी पत्नी बाँझ हैं, इसके बावजूद अल्लाह तआला से प्रार्थना करते हैं:

﴿رَبِّ هَبۡ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةٗ طَيِّبَةًۖ إِنَّكَ سَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ﴾

अनुवादः (हे मेरे रब! मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान कर, निस्संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है)। सूरह आले इमरानः 38।

❑ वह्हाब (अत्यधिक प्रदान करने वाले पालनहार) की ओर प्रस्थान करें!

राज-पाट, साम्राज्य, धन-सम्पदा, घर-परिवार तथा स्वास्थ व निरोग, सभी कुछ, पाक व सर्वोच्च बादशाह तथा महान दाता (अल्लाह) की ओर से प्राप्त होती हैं:

﴿وَٱللَّهُ يُؤۡتِي مُلۡكَهُۥ مَن يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ﴾

अनुवादः (अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी है)। सूरह बक़राः 247।

वह महान प्रार्थना जो भक्त अपने रब व स्वामी से करता हैः वह उन उलेमा व धर्मशास्त्रियों की प्रार्थना है जो प्यारे नामों (अस्मा -ए- हुस्ना) से अल्लाह को पुकारने का राज़ जानते हैं, और अल्लाह तआला से (सत्य मार्ग पर) अडिग रहने तथा दया व कृपा की दुआ करते हैं:

﴿رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوبَنَا بَعۡدَ إِذۡ هَدَيۡتَنَا وَهَبۡ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحۡمَةًۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡوَهَّابُ ٨﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर, वास्तव में तू बहुत बड़ा दाता है)। सूरह आले इमरानः 8।

इस प्रार्थना की महत्ता को देखते हुए अल्लाह तआला ने इसे प्रत्येक रकअत में मशरूअ (धार्मिक प्रावधान) करार दिया है, हम (प्रत्येक नमाज़ में) यह प्रार्थना करते और आशा रखते हैं कि अल्लाह हमें इससे नवाज़ेगा, इससे अभिप्राय सुपथ व मार्गदर्शन की प्रार्थना हैः

﴿ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلۡمُسۡتَقِيمَ ٦﴾

अनुवादः (हमें सीधी (और सच्ची) राह दिखा)। सूरह फ़ातिहाः 6।

❑ भेद, दुआ की मिठास में छिपा है!

अल्लाह तआला हर उस व्यक्ति को पसंद करता है जो उससे माँगे, बल्कि यदि लोग उससे दुआ नहीं करते तो वह उनकी परवाह करना छोड़ देता हैः

﴿قُلۡ مَا يَعۡبَؤُاْ بِكُمۡ رَبِّي لَوۡلَا دُعَآؤُكُمۡۖ فَقَدۡ كَذَّبۡتُمۡ فَسَوۡفَ يَكُونُ لِزَامَۢا ٧٧﴾

अनुवादः (हे नबी!) आप कह दें कि यदि तुम्हारा उसे पुकारना न हो तो मेरा पालनहार तुम्हारी क्या परवाह करेगा? तुमने तो झुठला दिया है, तो शीघ्र ही (उसका दण्ड) चिपक जाने वाला होगा)। सूरह फ़ुर्क़ानः 77।

जिन दुआओं के द्वारा अल्लाह तआला का सामीप्य प्राप्त किया जा सकता है, उनमें यह दुआ भी है जिसकी शिक्षा हमें अल्लाह तआला ने अपने इस फ़रमान में दी है:

﴿رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝٧٤﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों तथा संतानों से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें आज्ञाकारियों का अग्रणी बना दे)। सूरह फ़ुर्क़ानः 74।

बल्कि अल्लाह तआला ने इस दुआ के पश्चात जन्नत का वादा फ़रमाया है:

﴿أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۝٧٥﴾

अनुवादः (यही लोग उच्च भवन अपने धैर्य के बदले में पायेंगे, और स्वागत किये जायेंगे उस में आशीर्वाद तथा सलाम के साथ)। सूरह फ़ुर्क़ानः 75।

जो अल्लाह से जुड़ जाये, और अपने अहम संकट की घड़ी में उसी से आशा रखे, सदा उसी के द्वार पर दस्तक दे, अपनी असहायता प्रकट करे, उससे प्रार्थना और लम्बी सरगोशी व स्तुति गान करे, तो उसे अल्लाह तआला सम्मान व आदर प्रदान करता, उसकी सुरक्षा करता, उसकी आशाओं से बढ़ कर उसे नवाज़ता तथा जीवन भर उसका सहायक व मददगार रहता है।

❒ राज़ की बात ...

हमारा महान व सर्वशक्तिशाली रब संसार में आज़माइश व परीक्षा के रूप में अनुग्रह व नवाज़िशें करता है, जब्कि परलोक में स़वाब व अज्र तथा बदले के रूप में नियामतों से अनुग्रहित करेगा।

चुनाँचे अल्लाह अपनी मशीअत व इरादा से संसार में नियामतें देता है तथा अपनी ह़िकमत व तत्वदर्शिता के आधार पर इसके द्वारा लोगों को आज़माता है, ताकि बंदा दुआ व मुनाजात तथा आशा व उम्मीद के द्वारा अल्लाह से जुड़ा रहे, दुआ एवं क़ज़ा (निर्णय) के मध्य रह कर उसकी तौह़ीद पर कायम रहे, और उस पर ईमान लाये तथा इस प्रकार से सौभाग्यशाली जीवन व्यतीत करे।

यह सबसे बड़ी नवाज़िश एवं महानतम उपहार है, बशर्ते कि बंदा परीक्षा व आज़माइश की वास्तविकता से परिचित हो।

जब बंदा इससे परिचित होगा तो यह महान नाम (अल-वह्हाब) बंदा के अंदर अपने रब के प्रति प्रेम उत्पन्न करेगा, उसकी स्तुति व प्रशंसा तथा उसका धन्यवाद अदा करने को प्रेरित करेगा तथा सदा उससे जुड़े रहने पर उभारेगा।

لَكَ الحَمدُ اللَّهُمَّ يَا خيرَ وَاهِبٍ وَيَا خيرَ مَرجُوٍّ لِنَيلِ الْمَآرِبِ
وَيَا خيرَ مَن يُرجَى لِكَشفِ مُلِمَّةٍ وَيَا خيرَ مَن يُسدِي العَطَا وَالَمواهِب

अनुवादः हे अल्लाह! हे सबसे उत्तम अनुग्रह करने वाले! तेरे ही लिये हर प्रकार की स्तुति व प्रशंसा है, हे वह सर्वोत्तम ज़ात (व्यक्तित्व) जिससे आवयश्यकताओं की पूर्ति की आशा रखी जाती है। हे वह सर्वश्रेष्ठ ज़ात जिससे पीड़ा हरने की आकांक्षा रखी जाती है, और हे वह सर्वोत्तम पालनहार! जो नियामतों एवं अनुकंपाओं से नवाज़ता है।

हे अल्लाह! हमें अपने पास से कृपा व दया प्रदान कर, निस्संदेह तू अत्यधिक देने वाला दाता है, और हे समस्त ब्रह्माण्ड के पालनहार! हमें, हमारे माता-पिता तथा समस्त मुसलमानों को क्षमा कर दे।

(35)

(अल-रज़्ज़ाक़ जल्ल जलालुहु)

भूख के पश्चात तृप्ति, प्यास के पश्चात सैराबी, निर्धनता के पश्चात समृद्धि, अनिद्रा व जाग्रति के पश्चात (शांतिपूर्ण) नींद तथा रोग के पश्चात निरोग प्राप्त होता है ... क़र्ज़ अदा हो जायेगा, जीविका में बढ़ोतरी होगी, क़ैदी को रिहाई मिलेगी, तथा अंधकार का बादल छँट जायेगाः

﴿فَعَسَى ٱللَّهُ أَن يَأْتِىَ بِٱلْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِۦ﴾

अनुवादः (दूर नहीं कि अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान करेगा, अथवा उसके पास से कोई बात हो जायेगी)। सूरह माइदाः 52।

जब आवश्यकताएं आपको अपने घेरे में ले लें, संकटों के बादल घिर जायें, दुःखों के पहाड़ आप पर टूट पड़ें, क़र्ज़ में आप आकंठ डूबे हुए हों तथा जीविका अर्जित करना कठिन हो जाये, तो ऐसे में रज़्ज़ाक़ (बाहुल्यता के साथ जीविका प्रदान करने वाले) की ओर प्रस्थान करें, जो संकटों को दूर करने वाला, पीड़ा को हरने वाला तथा असहाय की पुकार को सुनने वाला है।

रज़्ज़ाक़ (बाहुल्यता के साथ जीविका प्रदान करने वाले अल्लाह) को करीब से जानें, इस महान नाम (रज़्ज़ाक़) की शीतल छाया में जीवन व्यतीत करें, (यह ऐसा नाम है कि) यदि किसी के कान में पड़ जाये तो उसका ह्रदय शांति तथा आत्मा सुकून का अनुभव करती है, और उसकी दशा पूर्णतः बदल जाती है।

﴿إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلرَّزَّاقُ ذُو ٱلْقُوَّةِ ٱلْمَتِينُ ۝٥٨﴾

अनुवादः (निस्संदेह अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान है)। सूरह ज़ारियातः 58।

हमारी जीविका का प्रबंध करने वाला पालनहार वह है जिसने (समस्त प्राणियों की) जीविका का उत्तरदायित्व ले रखा है, वह हरेक वस्तु को संभालने वाला है, उसका रिज़्क़ तथा उसकी रह़मत सभी प्राणियों को सम्मिलित हैं, अल्लाह तआला ने अपने रिज़्क़ को काफ़िर को छोड़ कर केवल मोमिन के लिये, अथवा अपने शत्रुओं से विमुख हो कर केवल अपने वली (दोस्तों) के लिये आरक्षित नहीं किया है, बल्कि वह दुर्बल व कमज़ोर को भी उसी

प्रकार से रिज़्क़ देता है जिस प्रकार से शक्तिशाली व बलशाली को रिज़्क़ देता है, गर्भाशय में पल रहे भ्रूण को रिज़्क़ देता है, पक्षियों को उनके घोंसलों में, साँपों को उनके बिलों में, तथा मछलियों को समुद्र में रिज़्क़ पहुँचाता हैः

﴿وَكَأَيِّن مِّن دَآبَّةٍ لَّا تَحۡمِلُ رِزۡقَهَا ٱللَّهُ يَرۡزُقُهَا وَإِيَّاكُمۡۚ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ ٦٠﴾

अनुवादः (कितने ही जीव हैं जो नहीं लादे फिरते अपनी जीविका, अल्लाह ही उन्हें जीविका प्रदान करता है तथा तुमको, और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है)। सूरह अन्कबूतः 60।

यह महान नाम, क़ुरआन -ए- करीम में एक स्थान पर एकवचन तथा पाँच स्थान पर बहुवचन के साथ आया है।

(रज़्ज़ाक़) मुबालग़ा (अतिश्योक्ति को दर्शाने) वाले वचन (सेग़ा) के साथ आया है, ताकि आप शांत-चित्त हो जायें, और आप यह जान लें कि अल्लाह तआला सख़ी व दाता है, और ताकि भक्तों के हृदय का जुड़ाव केवल उसी महान अल्लाह के साथ रहे।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः "एक व्यक्ति किसी आवश्यकता के तहत वन की ओर निकल गया, उसकी पत्नी ने कहाः हे अल्लाह! हम को रिज़्क़ दे ताकि हम आटा गूंथ कर रोटियाँ पका सकें। जब वह व्यक्ति वापस आया तो देखता है कि टब (तसला, बरतन) आटे से भरा हुआ है, तंदूर में (पशु की) पसलियों का भुना हुआ मांस मौजूद है और चक्की अनाज पीस रही है। उसने प्रश्न कियाः यह रिज़्क़ कहाँ से आ गया? उसकी पत्नी ने उत्तर दियाः यह अल्लाह का प्रदान किया हुआ रिज़्क़ है, जब उसने आस-पास से चक्की साफ की (तो वह रुक गई)। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "यदि वह इसे उसी स्थिति में छोड़े रखता तो क़्यामत के दिन तक वह चक्की आटा पीसती रहती"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे त़बरानी ने "अल-मोअजम अल-औसत़" में रिवायत किया है)।

❒ भाग्य लिखा जा चुका है ...

لَو كَانَ فِي صَخْرَةٍ فِي البَحرِ رَاسِيَةٍ ... صَمَّاءَ مَلْمُومَةٍ مُلْسٌ نوَاحِيها

رِزْقٌ لِعَبدٍ يَراهُ اللهُ لَانفَلَقَت ... حَتَّى تُؤَدِّي إِلَيهِ كُلَّ مَا فِيهَا

أَو كَان بَينَ طِباقِ السَّبعِ مَسلَكُهَا ... لَسَهَّلَ اللهُ فِي الْمَرْقَى مَراقِيهَا

حَتَّى تنَالَ الَّذِي فِي اللَّوحِ خُطَّ لهَا ... فَإِن أَتَتْهُ وَ إِلا سَوفَ يَأتِيهَا

अनुवादः यदि अल्लाह के किसी बंदे का रिज़्क़ समुद्र की तह में जमी हुई ठोस चट्टान के अंदर हो जिसके आस पास कोई पेड़ पौधा न हो, तो यह चट्टान फट पड़ेगी ताकि उसमें जिस बंदे का रिज़्क़ है वह उस तक पहुँच सके। या सात तह (धरती) के बीच भी उस तक पहुँचने का मार्ग हो तो अल्लाह तआला उसके लिये मार्ग खोल देगा, ताकि लौह़ -ए- मह़फ़ूज़ में उसका जो रिज़्क़ लिखा गया है वह उसे प्राप्त कर सके, यदि वह अपने रिज़्क़ तक नहीं भी पहुँच सकता तो उसका रिज़्क़ उस तक अवश्य पहुँच कर रहेगा।

स़ह़ीह़ बुख़ारी में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला ने गर्भाशय में एक फ़रिश्ता नियुक्त कर रखा है, और वह कहता रहता है किः हे रब! यह शुक्राणु ठहर गया है, हे रब! अब अलक़ा (जमा हुआ रक्त, बीज) बन गया है, हे रब! अब मुज़ग़ा (मांस का लोथड़ा, भ्रूणवस्था) बन गया है, फिर जब अल्लाह तआला चाहता है कि उसकी उत्पत्ति को पूर्ण करे तो वह पूछता है किः हे रब! लड़का है अथवा लड़की? सज्जन है अथवा दुष्ट? इसकी मृत्यु कब होगी? इस प्रकार से यह सब बातें माँ के पेट में ही लिख दी जाती हैं"।

ज्ञात हुआ कि आपका रिज़्क़ सुरक्षित है, न तो लालची का लालच उसे (समय से पहले) खींच कर ला सकता है एवं न अप्रिय रखने वाले की अप्रियता उसे फेर सकता है।

ह़दीस़ में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "रिज़्क़ बंदे को उसी प्रकार से मिल कर रहता है जिस प्रकार से मृत्यु उसे आ कर रहती है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने ह़िब्बान ने रिवायत किया है)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आपने फ़रमायाः "कोई उस समय तक मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा जब तक वह अपनी रोज़ी व जीविका (खा कर) पूरी न कर ले"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने माजह ने रिवायत किया है)।

अल्लाह तआला (बंदों के) रिज़्क़ को एक अनुमान के साथ उतारता है, क्योंकि वह उनकी स्थिति एवं हित-अहित से भलि भांति परिचित हैः

﴿ وَلَوْ بَسَطَ ٱللَّهُ ٱلرِّزْقَ لِعِبَادِهِۦ لَبَغَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَٰكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ۚ إِنَّهُۥ بِعِبَادِهِۦ خَبِيرٌۢ بَصِيرٌ ٢٧ ﴾

अनुवादः (और यदि फैला देता अल्लाह जीविका अपने भक्तों के लिये तो वह विद्रोह कर देते धरती में, परंतु वह उतारता है एक अनुमान से जैसे वह चाहता है, वास्तव में वह अपने भक्तों से भलि-भाँति सूचित है (तथा) उन्हें देख रहा है)। सूरह शूराः 27।

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह लिखते हैं किः "(अल्लाह) सूचित है और देख रहा है कि कौन समृद्धि के योग्य है तथा कौन निर्धनता के"।

❒ कोष भरे हुये हैं ...

अल्लाह का रिज़्क़ समाप्त नहीं होता, तथा इसमें (अल्लाह के लिये) कोई बोझ, तक्लीफ़ और कष्ट भी नहीं, बल्कि अल्लाह तआला बिना किसी कष्ट तथा थकान के (सभी को) रिज़्क़ प्रदान करता है।

ह़दीस़ -ए- क़ुदसी में आया है किः "हे मेरे भक्तों! यदि तुम्हारे अग्रज व पूर्वज, इंसान व जिन्नात (मानव तथा दानव) एक मैदान में खड़े हों, फिर मुझ से माँगना आरंभ करें और मैं प्रत्येक की माँग पूरी कर दूँ, फिर भी मेरे पास जो कुछ है वह कम न होगा, मगर उतना ही जितना समुद्र में सूई डुबा कर निकाल लो (तो जितना समुद्र का जल कम होगा उतना भी मेरा ख़ज़ाना कम न होगा)"। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया)।

अल्लाह तआला समस्त प्राणियों को जीविका तो प्रदान करता ही है, साथ ही वह अति सहनशील व सहिष्णु भी है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप फ़रमाते हैं किः "कष्टदायक बातों को सुन कर उस पर धैर्य व सब्र करने वाला अल्लाह तआला से बढ़ कर कोई नहीं, (मुश्रिकीन) लोग कहते हैं किः अल्लाह संतान रखता है, और फिर भी वह उन्हें स्वास्थ, आरोग्य तथा जीविका प्रदान करता है"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

❒ तनिक ठहर कर सोचें!

आजीविका की बाहुल्यता अल्लाह तआला के प्रेम की निशानी नहीं! यह तो काफ़िर एवं मूर्ख लोगों का वहम व भ्रम है किः रिज़्क़ की बाहुल्यता अल्लाह के प्रेम व प्रसन्नता का प्रमाण है, क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَقَالُوا۟ نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَٰلًا وَأَوْلَٰدًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٥﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّى يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾﴾

अनुवादः (तथा कहा कि हम अधिक हैं तुम से धन और संतान में, तथा हम यातना ग्रस्त होने वाले नहीं हैं। आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, और नाप कर देता है, किंतु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते)। सूरह सबाः 35-36।

﴿ فَأَمَّا ٱلْإِنسَٰنُ إِذَا مَا ٱبْتَلَىٰهُ رَبُّهُۥ فَأَكْرَمَهُۥ وَنَعَّمَهُۥ فَيَقُولُ رَبِّىٓ أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾ وَأَمَّآ إِذَا مَا ٱبْتَلَىٰهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُۥ فَيَقُولُ رَبِّىٓ أَهَٰنَنِ ﴿١٦﴾ ﴾

अनुवादः (परंतु जब इंसान की उसका पालनहार परीक्षा लेता है और उसे सम्मान और धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया। परंतु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया)। सूरह फ़ज्रः 15-16।

❒ रिज़्क़ की कुंजियाँ ...

बंदे को सौभाग्यशाली बनाने वाला, शांति प्रदान करने वाला एक बड़ा माध्यम यह है किः वह अपने रब का सहारा ले, अपने राज़िक़ (आजीविका प्रदान करने वाले) पर भरोसा करे और उसी की देख-रेख व अभिभावकता को पर्याप्त समझेः

﴿ إِنَّ وَلِـِّۧىَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى نَزَّلَ ٱلْكِتَٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١٩٦﴾ ﴾

अनुवादः (निस्संदेह मेरा पालनहार अल्लाह है जिस ने यह किताब नाज़िल फ़रमाई और वह नेक बंदों की मदद करता है)। सूरह आराफ़ः 196।

जब अल्लाह तआला बंदे की सरपरस्ती व निगरानी करता है तो उसके दिल में तक़्वा, खशीयत तथा भय पैदा कर देता है, जोकि आजीविका प्राप्त होने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि यह इकोनॉमिक्स व अर्थशास्त्र के सभी नियमों से बढ़ कर हैः

﴿ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ ٱلْقُرَىٰٓ ءَامَنُوا۟ وَٱتَّقَوْا۟ لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَٰتٍ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا۟ فَأَخَذْنَٰهُم بِمَا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾ ﴾

अनुवादः (यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मों से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पन्नता के द्वार खोल देते, परंतु उन्होंने झुठला दिया, अतः हम ने उन के कर्तूतों के कारण उन्हें (यातनाओं में) घेर लिया)। सूरह आराफ़ः 96।

﴿وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجۡعَل لَّهُۥ مَخۡرَجٗا ۝٢ وَيَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُۚ﴾

अनुवादः (जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय। और उसको जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो)। सूरह त़लाक़ः 2-3।

इस ब्रह्माण्ड में अल्लाह तआला की सुन्नत व तरीका रहा है किः रिज़्क़ (जीविका), आज्ञाकारिता व फरमाँबरदारी से जुड़ा हुआ हैः

﴿وَلَوۡ أَنَّهُمۡ أَقَامُواْ ٱلتَّوۡرَىٰةَ وَٱلۡإِنجِيلَ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِم مِّن رَّبِّهِمۡ لَأَكَلُواْ مِن فَوۡقِهِمۡ وَمِن تَحۡتِ أَرۡجُلِهِمۚ﴾

अनुवादः (यदि वह स्थापित रखते तौरात और इंजील को, और जो भी उन की ओर उतारा गया है, उन के पालनहार की ओर से, तो अवश्य उन को अपने ऊपर (आकाश) से, तथा पैरों के नीचे (धरती) से जीविका मिलती)। सूरह माइदाः 66।

इसी प्रकार से इसके विपरीत भी (सुन्नत व तरीका रहा है) कि पापों से रिज़्क़ का द्वार बंद होता है तथा बरकत समाप्त हो जाती हैः

﴿ظَهَرَ ٱلۡفَسَادُ فِي ٱلۡبَرِّ وَٱلۡبَحۡرِ بِمَا كَسَبَتۡ أَيۡدِي ٱلنَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعۡضَ ٱلَّذِي عَمِلُواْ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُونَ ۝٤١﴾

अनुवादः (फैल गया उपद्रव जल तथा थल में लोगों की करतूतों के कारण, ताकि वह चखाये उन को उनका कुछ कर्म, संभवतः वो रुक जायें)। सूरह रूमः 41।

❒ भूला हुआ रिज़्क़ः

सदाचार, देश में अमन-चैन, शारीरिक स्वास्थ, दिन भर की आजीविका और ग़ज़ा, दोस्त व मित्र से भेंट, भाई की मौजूदगी, पुत्र की मुस्कान, पतिव्रता व नेक पत्नी, भला मित्र, आत्मा की शांति, देखने वाले नयन, बोलने वाली जिह्वा, सुनने वाले कान, शांतिपूर्ण निद्रा और इन सब से बढ़ कर वहः जिस पर अल्लाह तआला ने यह कृपा किया है कि उसके माता-पिता अथवा उनमें से कोई एक जीवित हैं (ये सभी अल्लाह तआला द्वारा प्रदान किये हुये ऐसे रिज़्क़ हैं जिन्हें हमने भुला दिया है)।

وَإِذَا رُزِقتَ خلِيقَة مَحْمُودَةً   فَقَد اصطَفَاكَ مُقَسِّمُ الأَرزَاقِ
فَالنَّاسُ هَذا حَظُّهُ مَالٌ وَذا   عِلمٌ وَذاكَ مَكَارِمُ الأَخلاقِ

अनुवादः यदि आप को शिष्टाचार व सदाचार का रिज़्क़ मिला है तो (समझ लें कि) रिज़्क़ बाँटने वाले (अल्लाह) ने आप को चुन लिया है। क्योंकि किसी के भाग्य में धन आता है तो किसी के भाग्य में विद्या और किसी के भाग्य में शिष्टाचार व सदाचार।

❒ अंतिम बात ...

बंदा को इस बात से सावधान रहना चाहिये कि कहीं शैतान जीविका के मामले में उसे भयभीत न कर दे, क्योंकि सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ٱلشَّيۡطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلۡفَقۡرَ وَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغۡفِرَةٗ مِّنۡهُ وَفَضۡلٗاۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٞ ٢٦٨﴾

अनुवादः (शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, तथा निर्लज्जता के लिये उकसाता है, और अल्लाह तुम को अपनी क्षमा तथा (अपनी ओर से) और अधिक देने का वचन देता है, एवं अल्लाह विशाल ज्ञानी है)। सूरह बक़रहः 268।

किसी सलफ़ अर्थात पुनीत पूर्वज का कथन है किः "आजीविका के मामले में लोग इब्लीस (शैतान) को सच्चा मानते और अल्लाह को झुठलाते हैं"।

النَّفسُ تَجزَعُ أَن تَكُوْنَ فَقِيرَة   وَالفَقرُ خيرٌ مِن غِنىً يُطغِيهَا
وَغِنَى النَّفسِ هُو الكَافِي فَإِن   أَبَت فَجَمِيعُ مَا فِي الأَرضِ لا يَكفِيهَا

अनुवादः इंसान को निर्धनता से डर लगता है, जब्कि निर्धनता ऐसी धन-संपदा से उत्तम है जो इंसान को उद्दंडता में लिप्त कर दे। दिल की दौलत (इंसान के लिये) काफी है, यदि दिल की दौलत हासिल न हो तो इस धरती की समस्त संपत्ति भी उसके लिये अपर्याप्त है।

हे अल्लाह! हमें हिदायत, सुपथ, तक़्वा, ख़शीयत व डर, मान-मर्यादा, धन-सम्पदा तथा बेनियाज़ी व निःस्पृहता प्रदान कर, तू सभी दाताओं से बढ़ कर दाता व सर्वोत्तम है।

(36)

(अल-फ़त्ताह़ जल्ल जलालुहु)

हे वह मानव जो संसार से ऊब चुका तथा जीवन से निराश हो चुका है, दिन-रात के दुःखों से तंग आ चुका है, तथा पीड़ा व संकट में घिरा हुआ है! स्पष्ट एवं दृष्टिगोचर होने वाला विजय आने वाला है, मदद व सहायता आपके निकट आ चुकी है, तंगी के पश्चात समृद्धि एवं संकट के पश्चात आसानी आ कर रहती है, आपके आगे एवं पीछे एक छिप्त व गुप्त मेहरबानी व कृपा है (जो आप को अपने घेरे मे लिये हुई है), आपके समक्ष उज्ज्वल व दीप्त तथा (उमंगों से) भरा भविष्य एवं सच्चा वादा हैः

﴿وَعْدَ ٱللَّهِ لَا يُخْلِفُ ٱللَّهُ وَعْدَهُۥ﴾

अनुवादः (यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन के)। सूरह रूमः 6।

अल-फ़त्ताह़ (निर्णय करने वाले तथा उदारता, कुशादगी व ख़ुशहाली पैदा करने वाले अल्लाह) का साथ यदि आप को मिल जाये तो आप की दरिद्रता एवं तंगी, समृद्धि एवं ख़ुशहाली में परिवर्तित हो जायेगी, और आपका दुःख व पीड़ा सुख व आनंद में परिवर्तित हो जायेगा।

अल्लाह तआला अपने बारे में इर्शाद फ़रमाता हैः ﴿وَهُوَ ٱلْفَتَّاحُ ٱلْعَلِيمُ﴾ (वही अति निर्णय कारी सर्वज्ञ है)। सूरह सबाः 26।

हमारा महान व बलशाली पालनहार हृदय के बंद द्वार को मार्गदर्शन, सत्यवादिता, ईमान व तक़्वा से खोलता है।

हमारा सर्वशक्तिमान रब वह है जो परलोक में अपने बंदों के बीच सच्चा फैसला करेगा, ऐसा फैसला जिस में अत्याचार व ज़ुल्म की कोई मिलावट नहीं होगी, बल्कि वह इंसाफ व न्याय तथा सच्चाई व हक पर आधारित होगा, और अल्लाह तआला सर्वोत्तम फैसला करने वाला हैः

﴿قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِٱلْحَقِّ وَهُوَ ٱلْفَتَّاحُ ٱلْعَلِيمُ ۝٢٦﴾

अनुवादः (आप कह दें कि एकत्रित कर देगा हमें हमारा पालनहार, फिर निर्णय कर देगा हमारे बीच सत्य के साथ, तथा वही अति निर्णय कारी सर्वज्ञ है)। सूरह सबाः 26।

हमारा पाक परवरदिगार अपने भक्तों के संकटों को दूर करता, (उन्हें) शीघ्र ही ख़ुशहाली प्रदान करता, दुःखों को हरता, अपनी कृपा की बरखा बरसाता, आजीविका के द्वार खोलता और अपने बंदों को संसार में ऐसे सभी साधन उपलब्ध कराता है जिन से उनका जीवन अच्छे ढ़ंग से व्यतीत हो सकेः

﴿مَّا يَفْتَحِ ٱللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُۥ مِنۢ بَعْدِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ۝٢﴾

अनुवादः (जो खोल दे अल्लाह लोगों के लिये अपनी दया तो उसे कोई रोकने वाला नहीं, तथा जिसे रोक दे तो कोई खोलने वाला नहीं उसका उसके पश्चात, तथा वही प्रभावशाली चतुर है)। सूरह फ़ातिरः 2।

हमारा पाक व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो नबियों एवं वलियों तथा नेक बंदों के लिये ज्ञान, हिकमत, तथा दूरदर्शिता के द्वार खोल देता हैः

﴿وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ ٱللَّهُ ۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ﴾

अनुवादः (अल्लाह से डरो, और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है, और निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानता है)। सूरह बक़रहः 282।

हमारा महान व पवित्र रब वह है जो अपने नेक व सदाचारी मोमिन बंदों को विभिन्न देशों एवं इलाकों में विजय व प्रभुत्व प्रदान करता हैः

﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝١﴾

अनुवादः (हे नबी!) हमने विजय प्रदान कर दी आप को खुली विजय)। सूरह फ़त्हः 1।

हमारा पाक व पवित्र परवरदिगार वह है जो मोहलत, आज़माइश एवं परीक्षा के रूप में पापियों एवं कुकर्मियों को भी विभिन्न प्रकार की नियामतों से मालामाल करता हैः

﴿فَلَمَّا نَسُوا۟ مَا ذُكِّرُوا۟ بِهِۦ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَٰبَ كُلِّ شَىْءٍ حَتَّىٰٓ إِذَا فَرِحُوا۟ بِمَآ أُوتُوٓا۟ أَخَذْنَٰهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾﴾

अनुवादः (तो जब उन्होंने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक(सुख-सुविधा) के द्वार खोल दिये, यहाँ तक कि जब जो कुछ वह दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वह निराश हो कर रह गये)। सूरह अनआमः 46।

وَكَذَا الفَتَّاحُ مِن أَسمَائِهِ   وَالفَتحُ فِي أَوصَافِهِ أَمرانِ
فَتحٌ بِحُكْمٍ وَهُوَ شرعُ إِلهِنَا   وَالفَتحُ بِالأَقدارِ فَتحٌ ثَانِي
والرَّبُّ فَتَّاحٌ بِذَينِ كِلَيهِمَا   عَدلًا وَإِحسانًا مِنَ الرَّحمنِ

अनुवादः इसी प्रकार से फ़त्ताह़ भी अल्लाह के (महान) नामों में से है, उसकी स़िफ़ात (विशेषताओं) में फ़त्ह़ के दो अर्थ हैं। एक फ़त्ह़, फैसला करने के अर्थ में, इससे अभिप्राय अल्लाह की शरीअत है, दूसरी फ़त्ह़ तक़दीर (भाग्य) के आधार पर कुशादगी, उदारता व ख़ुशहाली से अनुग्रहित करने के अर्थ में है। रब तआला इन दोनों अर्थों में फ़त्ताह़ है, रह़मान (इन दोनों अर्थों में) न्याय व इंसाफ़ एवं भलाई व एह़सान से काम लेता है।

❒ एक वास्तविकता ...

अल्लाह तआला का महान नाम (अल-फ़त्ताह़) की परिभाषा में विद्यानों ने (अनेक) कथन नकल किये हैं, वही यहाँ भी उल्लेख किये गये हैं, तथा यही सबसे उत्तम परिभाषा भी है, किंतु निम्न में हम अल्लाह तआला के इस फ़रमान में चिंतन-मनन करेंगेः

﴿مَّا يَفْتَحِ ٱللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُۥ مِنۢ بَعْدِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٢﴾﴾

अनुवादः (जो खोल दे अल्लाह लोगों के लिये अपनी दया तो उसे कोई रोकने वाला नहीं, तथा जिसे रोक दे तो कोई खोलने वाला नहीं उसका उसके पश्चात, तथा वही प्रभावशाली चतुर है)। सूरह फ़ात़िरः 2।

यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसे मोमिन बंदा को सदा अपने मन मस्तिष्क में बैठा लेनी चाहिये किः कोई भी इच्छा अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला के सिवा किसी और से पूर्ण

नहीं हो सकती, न कोई आवश्यकता अल्लाह तआला के दरबार के सिवा कहीं और मुकम्मल हो सकती है, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के (आदेश के) बिना किसी चीज़ का अस्तित्व में आना असंभव है, क्योंकि वही तंहा व अकेला सर्वशक्तिशाली तथा सर्वोच्च है जिसके बिना किसी शक्ति और बल का कोई अस्तित्व नहीं।

उस बुलंद व उच्च (अल्लाह) की शक्ति के बिना न कोई कोशिका हिल-डुल सकती है, न कोई कण अस्तित्व में आ सकता है, न पानी की एक बूँद धूँआ बन सकती है एवं न वृक्ष का कोई पत्ता झड़ सकता है।

समस्त संसार मिल कर भी सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला के इरादा के बिना न तो आप को कोई हानि पहुँचा सकता है और न अल्लाह द्वारा भाग्य में लिखी हुई कोई संकट टाल सकता है।

किसी सलफ़ (पुनीत पूर्वज) ने अपने बंधु के नाम यह (सदुपदेश) लिखा किः अम्मा बाद (स्तुति व प्रशंसा के पश्चात), यदि अल्लाह तआला आपके साथ है तो आप किस से भय खाते हैं? और यदि अल्लाह तआला आपके विरुद्ध हो जाये तो कौन है जिस से आप आशा करेंगे?!

❒ सारी कुंजियाँ उसी के हाथ में हैं ...

रोगी को दर्द जब पीड़ा देता, भूख-प्यास से वह व्याकुल हो जाता, संसार उसके लिये तंग हो जाती, वैद्य उपचार करने में लाचार हो जाते तथा उसके लिये सभी दवायें असफल हो जाती हैं, तो फिर रह़मान (अति कृपालु), फ़त्ताह़ (निर्णय करने वाला तथा कुशादगी पैदा करने वाला), अलीम (सर्वज्ञ), तथा निरोग करने वाला (अल्लाह) किसी माध्यम के द्वारा, अथवा किसी महत्वहीन कारण के ज़रिये अथवा निकटतम सबब के द्वारा अथवा बिना किसी सबब के ही उसे आरोग्य तथा स्वास्थ्य प्रदान करता है, निस्संदेह वह महान व शक्तिशाली (हर चीज़ का निर्णय करने वाला तथा प्रत्येक) द्वार को खोलने वाला है।

विषम परिस्थिति से आप व्याकुल हो जाते हैं, आप पर दुःख-दर्द, संकट व विपदा के बारंबार आक्रमण होते हैं, आपके हृदय में कष्ट व व्यथा का सैलाब आ जाता है, आपके सामने (मोक्ष व मुक्ति) का द्वार बंद हो जाता है, यहाँ तक कि आप यह समझने लगते हैं कि इस पीड़ा से निकलने का कोई मार्ग नहीं, फिर देखते ही देखते उदारता व खुशहाली पैदा करने वाला (अल्लाह) बड़ी सरलता के साथ अपनी उदारता व सहायता का मार्ग आप के लिये प्रशस्त कर देता है, और वह जो चाहता है वह अवश्य होता है।

आप को निर्धनता व दरिद्रता अपने घेरे में ले लेती है, ऋण में आप आकंठ डूब जाते हैं, आपका चेहरा-मोहरा व स्वरूप तक बदल जाता है, अपने बच्चों को याद कर के आपका दिल टूट जाता है (आप निराश हो जाते हैं), क़र्ज देने वालों से आप भय खाते हैं, बुद्धि विचलित तथा विचार उद्विग्न और सभी द्वार बंद प्रतीत होते हैं।

ऐसी स्थिति में उदारता, कुशादगी व खुशहाली पैदा करने वाला सर्वशक्तिशाली व महाबली (अल्लाह) गुप्त रूप से कुशादगी पैदा करता है, फिर ऋण अदा हो जाता, निर्धनता दूर हो जाती है तथा मन शांति का अनुभव करता है ... निस्संदेह वह फ़त्ताह़ (कुशादगी पैदा करने वाला, अल्लाह) ही है जिसने आप के लिये आजीविका के द्वार खोल दिये।

बेटा आँखों से ओझल हो जाता, पिता यात्रा पर निकल जाते हैं, मित्र गण साथ छोड़ जाते हैं, और समस्त संसार आपसे अपना पल्ला झाड़ लेती है, जिससे दम घुटने लगता है, विचार अस्त-व्यस्त हो जाते हैं, और जब-जब आँखों से ओझल (बेटे एवं पिता) की याद आती है तब-तब दिल थर्रा जाता है, ऐसे में मोमिन बंदा, बादशाह और फ़त्ताह़ (कुशादगी पैदा करने वाला, अल्लाह) के समक्ष आत्मसमर्पण कर देता है, उससे प्रार्थना करता है कि आँखों से ओझल (बेटे एवं पिता) को लौटा दे तथा उसे अपनी सुरक्षा में रखे, चाहे वह कैद हो अथवा यात्री, फिर देखते ही देखते सात आसमानों के ऊपर से शुभ सूचना उतरती है, गायब लौट आता है, कैदी रिहा हो जाता है और प्रियतम पलट कर आ जाता हैः

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾

अनुवादः (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना को सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुःख को)। सूरह नम्लः 62।

❒ उसी से आशा रखें ...

बेशक वह महाबली व महान (अल्लाह) अल-फ़त्ताह़ (निर्णय करने वाला तथा उदारता, कुशादगी व ख़ुशहाली पैदा करने वाला अल्लाह) और अलीम (सर्वज्ञ) है, उसकी शान व वैभव अति महान, उसकी लीला अपरम्पार, उसका स्थान अति उच्च है, वह अपनी मख़लूक़ (रचना) के अति निकट तथा अपने भक्तों के लिये अति कृपालु है।

फ़त्ताह़ (कुशादगी पैदा करने वाले, अल्लाह) का द्वार खुला हुआ है, जब आप को रस्सी सख्त व कठोर लगने लगे तो समझ लें कि वह टूटने वाली है, जब अंधकार पूर्णतः छा जाये तो उजियारे की शुभ सूचना स्वीकार करें, जब सख़ी व दाता और फ़त्ताह़ (कुशादगी पैदा

करने वाला, अल्लाह) आपके साथ है तो आप व्याकुल न हों, कौन सी ऐसी असंभव चीज़ है जो सदा असंभव ही रहती है। याद रखें कि सर्वश्रेष्ठ इबादत व पूजाः संकट के दूर होने, तथा अनुकूल एवं आदर्श स्थिति आने की, प्रतीक्षा करना है, एक ही स्थिति का सदा बने रहना असंभव है, युग नाम ही है उलट-फेर का, रात्रि की कोख में दिन का उजाला पल रहा होता है, ग़ैब एवं भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है हम इससे अंजान हैं और फ़त्ताह़ (कुशादगी पैदा करने वाले, अल्लाह) की विशेषता यह है किः ﴿كُلَّ يَوۡمٍ هُوَ فِي شَأۡنٖ﴾ अनुवादः (प्रत्येक दिन वह एक नये शान (कार्य) में है)। सूरह रह़मानः 29।

﴿لَعَلَّ ٱللَّهَ يُحۡدِثُ بَعۡدَ ذَٰلِكَ أَمۡرٗا﴾

अनुवादः (संभवतः अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात)। सूरह त़लाक़ः 1।

﴿فَإِنَّ مَعَ ٱلۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۝٥ إِنَّ مَعَ ٱلۡعُسۡرِ يُسۡرٗا ۝٦﴾

अनुवादः (निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी भी है। निस्संदेह कठिनाई के साथ आसानी भी है)। सूरह शर्ह़ः 5-6।

قُل لِلطَّبِيبِ تَخَطَّفَتْهُ يَدُ الرَّدَى ... مَن يَا طَبِيبُ بِطِبِّهِ أَرْدَاكَا؟

قُل لِلمَرِيضِ نَجا وَعُوفِي بَعدَما ... عَجَزَت فُنُونُ الطِبِّ: مَن عَافَاكَا؟

قُل لِلصَّحِيحِ يَمُوتُ لَا مِن عِلَّةٍ ... مَن بِالْمَنَايَا يَا صَحِيحُ دَهَاكَا؟

هَذِي عَجَائِبُ طَالَمَا أُخِذَت بِها ... عَينَاكَ وَانفَتَحَت بِها أُذُنَاكَا

يَا أَيُّهَا الإِنسانُ مَهلا مَا الَّذِي ... بِاللهِ جَلَّ جَلالُهُ أَغرَاكَا؟

अनुवादः उस वैद्य से पूछिये जिसे विनाश ने अपने पंजे में दबोच लिया कि, हे वैद्य! कौन है जिस ने आप की वैद्यता के बावजूद आपका नाश कर दिया। उस रोगी से पूछिये जो स्वस्थ एवं निरोग हो गया जब्कि वैद्यता की सभी युक्तियाँ (उसके उपचार से) निराश हो चुकी थीं, कि किसने तुझे स्वस्थ व निरोग बनाया। उस तंदुरुस्त से पूछिये जो किसी बीमारी के बिना ही काल के गाल में समा गया, कि हे तंदुरुस्त मानव! किसने तुझे मृत्यु का शिकार बना लिया? यदि आपके नयन तथा कान खुले हों तो (प्रकृति के ये शिक्षाप्रद) आश्चर्य (सीख लेने के लिये पर्याप्त) हैं। हे मानव! होश में आओ, आख़िर किसा चीज़ ने तुझे सर्वशक्तिशाली व महाबली अल्लाह से बेसुध व ग़ाफ़िल कर रखा है।

❒ विशेष सहायता व विजय!

फ़त्ताह़ (निर्णय करने वाले रब) की ओर से आजीविका बँट चुकी है, एक व्यक्ति ऐसा है जिसके लिये लम्बी नमाज़ का द्वार खोल दिया गया है जब्कि अधिकाधिक रोज़े रखना उसके लिये कठिन है, दूसरा व्यक्ति वह है जिसके लिये सदक़ा व ख़ैरात तथा दान पुण्य के द्वार खोल दिये गये हैं जब्कि विद्या का द्वार उसके लिये बंद है, तीसरा वह है जिसके लिये क़ुरआन को सरल कर दिया गया है जब्कि अन्य सदकर्मों की उसे तौफ़ीक़ व अनुग्रह नहीं मिलता, कोई ऐसा है जिसके लिये माता-पिता के आज्ञापालन का द्वार खोल दिया गया है ... मुबारकबादी, बधाई व शुभकामना है उसके लिये जिसके लिये (सदकर्म के उपरोक्त) द्वार खोल दिये गये।

فَإِذَا أَحَبَّ اللهُ بَاطِنَ عَبدِهِ   ظَهَرت عَلَيهِ مَوَاهِبَ الفَتَّاحِ
وَإِذَا صَفَتْ للهِ نِيَّةُ مُصلِحٍ   مَالَ العِبَادُ عَلَيهِ بِالأَرواحِ

अनुवादः अल्लाह जब अपने भक्त के बात़िन व अंतर्मन को पसंद करता है तो उस पर फ़त्ताह़ (कुशादगी पैदा करने वाले, अल्लाह) की कृपा दृष्टिगोचर होने लगती है। जब किसी समाजसुधारक व उपदेशक की नीयत ख़ालिस व निश्छल होती है तो बंदे उसके लिये अपने प्राण की आहुति तक देने लगते हैं।

हे अल्लाह! हमारे ऊपर आकाश व धरा की बरकत (के द्वार) खोल दे, हमारे लिये अपनी दया के दरवाज़े खोल दे, और हे फ़त्ताह़ व अलीम (प्रभुत्व, विजय एवं विद्या तथा तत्वदर्शिता के स्वामी)! हमें ख़ैर व भलाई के द्वार खोलने वाला तथा बुराई व कुकर्म के द्वार बंद करने वाला बना।

(37)

(अल-समीअ जल्ल जलालुहु)

जिस प्रकार से अल्लाह चाहता है कि आप इस बात से परिचित हों को वह अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर विराजमान) है, ठीक उसी प्रकार से वह यह भी चाहता है कि आप यह विश्वास रखें कि वह आपको देखता व सुनता है। आपकी बातों को सुनता तथा आपके कर्मों को देखता है, आपका कोई भेद उससे छुपा नहीं है, आप जो सरगोशी करते हैं और उसे पुकारते हैं, वह उसे सुनता है, आपके मन-मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले विचार भी उसके समक्ष स्पष्ट हैं, आपकी प्रार्थना सुनी जाती है, आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है, आपका इस्तिग़फ़ार व क्षमा याचना स्वीकार की जाती है और तौबा व प्रायश्चित्त को क़बूल किया जाता है।

क्या दुःख दर्द एवं संताप ने आप को चूर-चूर कर दिया है? क्या आपकी आत्मा अल्लाह के शौक व रुचि में व्याकुल हो रही है? तो विश्वास रखिये की अल्लाह तआला आपकी कराह को सुन रहा है, वह आप के अति निकट है, आपकी प्रार्थना को स्वीकार करता है, आपके दुःखों व पीड़ा को हरता है, निस्संदेह वह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है।

अल्लाह तआला ने स्वयं अपनी प्रशंसा करते हुए फ़रमाया हैः

﴿وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ﴾

अनुवादः (वह ख़ूब सुनने वाला सर्वज्ञ है)। सूरह ब़करहः 137।

क़ुरआन -ए- करीम में अल्लाह तआला का नाम (अल-समीअ) 45 स्थान पर आया है।

हमारा पाक, पवित्र व सर्वशक्तिशाली रब समीअ (हर ध्वनी को सुनने वाला) है, उसकी समाअत (सुनने की क्षमता) सभी सुनी जाने वाली चीज़ों को अपने घेरे में लिये हुये है, चुनाँचे लोक परलोक में जितनी भी ध्वनियाँ हैं चाहे वो छिप्त हों अथवा स्पष्ट, वह सब को सुनता है, सारी ध्वनियाँ मानो उसके लिये एक ही ध्वनी के समान हैं, उस पर (विभिन्न) ध्वनियाँ परस्पर गड्ड मड्ड नहीं होतीं, और न कोई भाषा उससे छिप्त है, निकट हो अथवा दूरस्थ, गुप्त हो अथवा स्पष्ट, सभी ध्वनियाँ उसके समीप एक समान हैं। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿سَوَآءٞ مِّنكُم مَّنۡ أَسَرَّ ٱلۡقَوۡلَ وَمَن جَهَرَ بِهِۦ وَمَنۡ هُوَ مُسۡتَخۡفِۭ بِٱلَّيۡلِ وَسَارِبُۢ بِٱلنَّهَارِ ۝١٠﴾

अनुवादः (उसके लिये बराबर है तुम में से जो बात चुपके से बोले और जो पुकार कर बोले, तथा कोई रात के अँधेरे में छुपा हो या दिन के उजाले में चल रहा हो)। सूरह रअदः 10।

इस महान नाम में ख़ालिक़ व मख़्लूक़ (रचना व रचयिता अर्थात अल्लाह तआला एवं भक्तों) के बीच समानता का कदापि यह अर्थ नहीं है किः दोनों के एक दूसरे के समान व समतुल्य हैं, अल्लाह तआला -इस प्रकार की समानता से बहुत ज़्यादा पाक, पवित्र व बुलंद है- क्योंकि मख़लूक़ की विशेषताएं उसकी कमज़ोरी, दुर्बलता, लाचारी व असहायता एवं उसके स्वभाव व पैदाइश के अनुसार होती हैं, जब्कि ख़ालिक़ की विशेषताएं उस सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान महा शक्तिशाली (अल्लाह) के कमाल (पूर्णता), जलाल (तेज) एवं प्रताप की शान के अनुसार होती हैं:

﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ﴾

अनुवादः (उस के समान कोई चीज़ नहीं, और वह सुनने वाला देखने वाला है) सूरह शूराः 11।

यहाँ अवतरित शब्दः "سمع समअ" सुनने एवं इह़ाता करने तथा (किसी चीज़ को) अपने घेरा में लेने के अर्थ में प्रयोग हो रहा हैः

﴿قَدۡ سَمِعَ ٱللَّهُ قَوۡلَ ٱلَّتِي تُجَٰدِلُكَ فِي زَوۡجِهَا وَتَشۡتَكِيٓ إِلَى ٱللَّهِ وَٱللَّهُ يَسۡمَعُ تَحَاوُرَكُمَآۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعُۢ بَصِيرٌ ۝١﴾

अनुवादः (हे नबी!) अल्लाह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने पति के विषय में, तथा गुहार लगा रही थी अल्लाह से, और अल्लाह सुन रहा था तुम दोनों का वार्तालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने-देखने वाला है)। सूरह मुजादलाः 1।

और यह शब्द ("سمع समअ") क़बूल एवं स्वीकार करने के अर्थ में भी प्रयोग होता हैः

﴿إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ﴾

अनुवादः (वास्तव में मेरा पालनहार प्रार्थना अवश्य सुनने वाला है)। सूरह इब्राहीमः 39।

وَهُوَ السَّمِيعُ يرَى وَيَسمَعُ كُلَّ مَا   فِي الكَونِ مِن سِرٍ وَمِن إعلانِ
وَلِكُل صَوتٍ مِنهُ سَمْعٌ حَاضِرٌ   فَالسرُّ وَالإعلانُ مُستَوِيانِ
والسَّمعُ مِنهُ وَاسِعُ الأَصواتِ لَا   يَخْفَى عَلَيهِ بَعِيدُها وَالدَّانِي

अनुवादः वह अत्यधिक सुनने वाला है, ब्रह्माण्ड में जितनी भी छिप्त एवं स्पष्ट चीज़ें हैं, (वह) सभी को सुनता व देखता है। हर ध्वनी के लिए उसकी समाअत (सुनने की क्षमता) है, (उस के लिये) गुप्त व स्पष्ट दोनों (ध्वनियाँ) एक समान हैं। उसकी समाअत सभी ध्वनियों को शामिल है, न तो दूर की ध्वनी उससे छुपी हुई और न समीप की।

निस्संदे अल्लाह तआला बड़ा ही सुनने वाला और अति निकट हैः

स़ही़हैन में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स़ह़ाबा -ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को ऊँचे स्वर में प्रार्थना करते हुए सुना तो फ़रमायाः "लोगों! अपने ऊपर दया करो, तुम किसी बहरे अथवा गायब रब को नहीं पुकार रहे हो, बल्कि तुम तो उस ज़ात को पुकारते हो जो अत्यधिक सुनने वाला, और अत्यधिक देखने वाला है"। बंदा जैसे ही प्रार्थना समाप्त करता है उसी समय से स्वीकार्यता के प्रभाव स्पष्ट दिखने लगते हैं ... क्योंकि रब तआला (प्रार्थनाओं को) सुनने वाला और (परिस्थितियों को) ख़ूब जानने वाला है।

वह असहाय व दीन हीनों की पुकार को सुनता, हाजतमंदों व कष्टग्रस्तों की प्रार्थना को स्वीकार करता, दुखियारों की सहायता करता, प्रशंसा व स्तुति करने वालों की प्रशंसा व स्तुति, दुआ करने वालों की दुआ तथा अंधकारमय रात में ठोस चट्टान पर रेंगती हुई अति स्याह चींटी की सरसराहट को भी सुनता है, यहाँ तक कि मन में उत्पन्न होने वाले विचार तथा अंतर्मन की सरगोशी को भी सुनता है।

एक महिला आती है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने पति के विषय में तकरार करने लगती है, -इससे आशय ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा हैं- आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा (उसी) घर के एक कोने में मौजूद होती हैं किंतु उनके कहे अनुसार वह कुछ बात सुन पाती हैं और कुछ नहीं सुन पाती हैं, इस तकरार के पश्चात जिब्रील अलैहिस्सलाम मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अल्लाह तआला का यह फ़रमान ले कर अवतरित होते हैं:

﴿قَدْ سَمِعَ ٱللَّهُ قَوْلَ ٱلَّتِى تُجَٰدِلُكَ فِى زَوْجِهَا وَتَشْتَكِىٓ إِلَى ٱللَّهِ وَٱللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَآ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌۢ بَصِيرٌ ۝١﴾

अनुवादः (हे नबी!) अल्लाह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने पति के विषय में, तथा गुहार लगा रही थी अल्लाह से, और अल्लाह सुन रहा था तुम दोनों के वार्तालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने-देखने वाला है)। सूरह मुजादलाः 1।

आख़िर कितनी आश्चर्यजनक निकटता, कितना महान ज्ञान तथा कितनी समग्र व शक्तिशाली समाअत (श्रव्य, सुनने की क्षमता) है!

अल्लाह तआला का अपने औलिया की (पुकार) सुनने से अभिप्राय यह है किः वह उन की पुकार को स्वीकार करता, उनकी सुरक्षा करता तथा उन्हें अपनी तौफ़ीक़ व अनुग्रह प्रदान करता है, यह ऐसी समाअत है जो उनके भय को शांति में परिवर्तित कर देती है, जिस प्रकार से (अल्लाह तआला ने) मूसा अलैहिस्सलाम के भय को शांति में परिवर्तित कर दिया था जब उन्होंने फ़िरऔन के पास जाने से अपने भयभीत होने का अंदेशा प्रकट किया था, तो सर्वशक्तिशाली व सर्वोच्च अल्लाह तआला ने उन से फ़रमायाः

﴿قَالَ لَا تَخَافَآ ۖ إِنَّنِى مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۝٤٦﴾

अनुवादः (तुम तनिक भी भय न करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ और सुनता देखता रहूँगा)। सूरह ताहाः 46।

अल्लाह तआला ही उनका रक्षक, तथा उनके लिये पर्याप्त है, जब अल्लाह ही पर्याप्त है तो फिक्र की क्या बात है!

❐ उदारता व समृद्धि की कुंजियाँ:

जब आप भयभीत हों, संकट के बादल घिर आयें तो उस महान नाम के वसीला व माध्यम से अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करने की चेष्टा कीजिये, जैसाकि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने किया, अल्लाह ही सरगोशी को सुनता, विवशता व दीनहीनता के समय प्रार्थना को स्वीकार करता तथा संकटों को टालता है, अपना दुखड़ा व व्यथा किसी और को न सुनायें, रब के समक्ष नतमस्तक हो जायें, उसकी दहलीज़ पर डेरा डाल दें, उससे वार्तालाप करें और उसके सामने रोयें, फिर उदारता, कुशादगी एवं समृद्धि की प्रतीक्षा करें।

ज़करीय्या अलैहिस्सलाम ने जब चुपके-चुपके अल्लाह को पुकारा तो उसने उनके दिल की आरज़ू पूरी फ़रमा दीः

﴿إِذۡ نَادَىٰ رَبَّهُۥ نِدَآءً خَفِيّٗا ٣﴾

अनुवादः (जब उसने अपने रब से चुपके-चुपके दुआ की थी)। सूरह मर्यमः 3।

जब उन्होंने अपने रब के समक्ष उस के इस महान नाम का वसीला देते हुए रो-रो कर प्रार्थना की तो अल्लाह तआला ने उन्हें सदाचारी व नेक संतान प्रदान कियाः

﴿رَبِّ هَبۡ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةٗ طَيِّبَةًۖ إِنَّكَ سَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ﴾

अनुवादः (मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान कर, निस्संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है)। सूरह आले इमरानः 38।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने पुत्र इस्माईल अलैहिस्सलाम के साथ जब काबा का निर्माण पूर्ण कर लिया तो अल्लाह से इसी महान नाम के वसीला व माध्यम से दुआ कीः

﴿رَبَّنَا تَقَبَّلۡ مِنَّآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! तू हमारी ओर से स्वीकार कर ले, तू ही सुनने वाला तथा जानने वाला है)। सूरह बक़रहः 127।

और इसी महान नाम के द्वारा इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने प्रार्थना स्वीकार हो जाने के पश्चात शुक्र भी अदा कियाः

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى ٱلۡكِبَرِ إِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَۚ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ ٣٩﴾

अनुवादः (अल्लाह के लिये प्रशंसा है कि जिसने मुझे वृद्धावस्था में इस्माईल व इस्हाक़ (अलैहिमस्सलाम) प्रदान किया, निस्संदेह मेरा पालनहार (अल्लाह) प्रार्थनाओं को सुनने वाला है)। सूरह इब्राहीमः 39।

इमरान की पत्नी ने जब अपने गर्भाशय में पल रहे शिशु को अल्लाह तआला के लिये आज़ाद व मुक्त करने की मन्नत मानी तो अपने पालनहार से इसी महान नाम के द्वारा अपने इस कर्म के स्वीकार्य होने की प्रार्थना कीः

﴿إِذۡ قَالَتِ ٱمۡرَأَتُ عِمۡرَٰنَ رَبِّ إِنِّي نَذَرۡتُ لَكَ مَا فِي بَطۡنِي مُحَرَّرٗا فَتَقَبَّلۡ مِنِّيٓۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ ٣٥﴾

अनुवादः (जब इमरान की पत्नी ने कहाः हे मेरे रब! जो मेरे गर्भ में है, मैंने तेरे लिये उसे मुक्त करने की मनौती मान ली है, तू इसे मुझ से स्वीकार कर ले, वास्तव में तू ही सब कुछ सुनता और जानता है)। सूरह आले इमरानः 35।

अपने विरुद्ध किये जा रहे षड्यंत्रो से जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के लिये यह संसार तंग पड़ गया तो उन्होंने अपने रब से यों प्रार्थना कीः

﴿قَالَ رَبِّ ٱلسِّجۡنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدۡعُونَنِيٓ إِلَيۡهِۖ وَإِلَّا تَصۡرِفۡ عَنِّي كَيۡدَهُنَّ أَصۡبُ إِلَيۡهِنَّ وَأَكُن مِّنَ ٱلۡجَٰهِلِينَ ٣٣ فَٱسۡتَجَابَ لَهُۥ رَبُّهُۥ فَصَرَفَ عَنۡهُ كَيۡدَهُنَّۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ ٣٤﴾

अनुवादः (यूसुफ़ -अलैहिस्सलाम- ने प्रार्थना कीः हे मेरे रब! मुझे क़ैद उस से अधिक प्रिय है जिसकी ओर ये महिलायें मुझे बुला रही हैं, और यदि तू ने मुझ से इन के छल को दूर नहीं किया तो मैं उन की ओर झुक पड़ूँगा, और अज्ञानियों में से हो जाऊँगा। तो उस के पालनहार ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया, और उससे उन के छल को दूर कर दिया, वास्तव में वह बड़ा सुनने वाला जानने वाला है)। सूरह यूसुफ़ः 33-34।

यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में पुकार उठेः

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

अनुवादः (नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी हूँ)। सूरह अम्बियाः 87।

तीन तह अंधकार से उठने वाली यह मद्धम ध्वनी आसमान को चीरती हुई (रब तक जा पहुँची), अंततः सुनने वाले और जानने वाले (अल्लाह) ने उन्हें इस पीड़ा से मुक्ति प्रदान कीः

﴿فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ وَنَجَّيۡنَٰهُ مِنَ ٱلۡغَمِّۚ﴾

अनुवादः (तब हम ने उसकी पुकार सुन ली तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से)। सूरह अम्बियाः 88।

अल्लाह तआला अपने भक्तों को इसीलिये परीक्षा एवं आज़माइश से गुज़ारता है ताकि उस से फरियाद, रोना-गिड़गिड़ाना तथा क्षमा याचना को सुने, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿قَالَ إِنَّمَآ أَشۡكُواْ بَثِّي وَحُزۡنِيٓ إِلَى ٱللَّهِ وَأَعۡلَمُ مِنَ ٱللَّهِ مَا لَا تَعۡلَمُونَ ٨٦﴾

अनुवादः (उस (याक़ूब अलैहिस्सलाम) ने कहाः मैं अपनी आपदा तथा पीड़ा की शिकायत अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता, और अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते)। सूरह यूसुफ़ः 86।

❒ अल-समीअ (अत्यधिक सुनने वाला, अल्लाह) आप का रक्षक है ...

इंसानों एवं जिन्नातों के शैतान आप पर टूट पड़ते हैं, और आप को वसवसा एवं भ्रम तथा ज़ुल्म व अत्याचार का इतना निशाना बनाते हैं कि आप पीड़ित व दुःखी हो जाते हैं, (ऐसे में) अल्लाह आप को उन (की बुराई व दुष्टता) से (सुरक्षित रहने के लिये) दो नामों के वसीला व माध्यम से अपनी मदद एवं सहायता माँगने का आदेश देता है, वो दो नाम ये हैं: अल-समीअ, अल-अलीम (ख़ूब सुनने वाला एवं सर्वज्ञ) हैः

﴿وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ ٱلشَّيۡطَٰنِ نَزۡغٌ فَٱسۡتَعِذۡ بِٱللَّهِۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٢٠٠﴾

अनुवादः (और यदि शैतान आप को उकसाये तो अल्लाह से शरण माँगिये, निःसंदेह वह सब कुछ सुनने जानने वाला है)। सूरह आराफ़ः 200।

काबा के पास दो स़क़फ़ी और एक क़ुरैशी अथवा दो क़ुरैशी तथा एक स़क़फ़ी एकत्र होते हैं और स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के विषय में चर्चा करते हुए कहते हैं किः उनकी तोंदें बड़ी हैं तथा उनमें बुद्धि की कमी है। उनमें से एक ने कहाः तुम्हारे क्या विचार हैं कि वह अल्लाह सब कुछ सुनता है जो हम बोलते हैं?

दूसरे ने कहाः जब हम ज़ोर से बोलते हैं तो सुनता है, परंतु यदि हम धीरे बोलें तो नहीं सुनता है।

तीसरे ने कहाः यदि वह हमारे ज़ोर से बोलने को सुनता है तो वह हमारे धीरे से बोलने को भी सुनता है! इस पर अल्लाह तआला ने यह आयतें नाज़िल फ़रमाईः

﴿وَمَا كُنتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَن يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ أَبْصَٰرُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِن ظَنَنتُمْ أَنَّ ٱللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾ وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ ٱلَّذِى ظَنَنتُم بِرَبِّكُمْ أَرْدَىٰكُمْ فَأَصْبَحْتُم مِّنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٢٣﴾﴾

अनुवादः (तथा तुम (पाप करते समय) छुपते नहीं थे कि कहीं साक्ष्य न दें तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँख एवं तुम्हारी खालें, परंतु तुम समझते रहे कि अल्लाह नहीं जानता उस में से अधिकतर बातों को जो तुम करते हो। इसी कुविचार ने जो तुम ने किया अपने पालनहार के विषय में तुम्हें नाश कर दिया और तुम हानि उठाने वालों में से हो गये)। सूरह फ़ुस्सिलतः 22-23।

❒ सदुपदेश व नसीहत ...

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रात की नमाज़ के लिये खड़े होते तो इन दो नामों (अल-समीअ अल-अलीम) के वसीला व माध्यम से अल्लाह की पनाह व शरण माँगते और कहतेः

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ

(अर्थातः मैं अल्लाह समीअ अलीम (अत्यधिक सुनने वाला तथा जानने वाला) की पनाह चाहता हूँ शैतान मरदूद (धिक्कारित) से, उसके वसवसों व भ्रम से, उसके किब्र व अहंकार से तथा उसके जादू से)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

इसके अतिरिक्त इन दो नामों (अल-समीअ अल-अलीम) के द्वारा हर प्रकार की हानि में पड़ने से भी पनाह माँगते थे, (आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ है): जो व्यक्ति तीन बार यह दुआ पढ़ेः

بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (अर्थातः उस अल्लाह के नाम के द्वारा (पनाह माँगता हूँ) जिस का नाम लेने से

आकाश व धरा की कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचा सकती है, वह समीअ अलीम (अत्यधिक सुनने वाला तथा जानने वाला) है)। तो उसे सुबह तक अचानक कोई विपदा नहीं पहुँचेगी, और जो व्यक्ति तीन बार प्रातः इसे पढ़े तो उसे शाम तक अचानक कोई मुसीबत नहीं पहुँचेगी। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

इस नाम (अल-समीअ (ख़ूब सुनने वाला, के अर्थ को समझ लेने व इस) को अनुभव करने से आप सदा अल्लाह पाक के निकट रहेंगे।

हे मेरे पालनहार! हे सुनने वाले ... हे जानने वाले! हमें उन लोगों में शामिल फ़रमा जिन्होंने तुझ से दुआ की और तू ने स्वीकार कर लिया, तुझ से विनती की और तू ने उन पर कृपा की।

(38)

(अल-बसीर जल्ल जलालुहु)

अबू नुऐम ने (अल-हिलया) में उल्लेख किया है किः “अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु एक रात मदीना की गलियों में भ्रमण कर रहे थे, सहसा सुनते हैं कि एक वृद्ध महिला अपनी पुत्री से कह रही हैः “दूध में पानी मिला दो, बेटी कहती हैः क्या आप को नहीं पता कि उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने दूध में पानी मिलाने से रोका है? बूढ़ी महिला ने कहा किः उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) हमें थोड़े देख रहा है? इस पर पुत्री -जिसको यह पूर्ण विश्वास होता है कि सर्वज्ञ अल्लाह उन्हें देख रहा है- ने कहाः यदि हमें उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) नहीं देख रहा है तो क्या हुआ, उमर का रब तो हमें देख रहा है!”।

कुछ लोग इस संसार में ऐश्वर्य पूर्ण व वैभव शाली जीवन जीतें है, वो सदा अमन व शांति पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं, सत्य के मार्ग पर डटे रहते एवं इबादत व उपासना से लाभांवित होते हैं, इसका कारण केवल यह है कि वो जानते हैं किः अल्लाह उनके समस्त कर्मों को देख रहा है”।

महाबली व सर्वोच्च अल्लाह तआला का महान नाम (अल-बसीर अर्थातः ख़ूब देखने वाला) क़ुरआन में बयालीस (42) स्थान पर आया हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٞ﴾

अनुवादः (निस्संदेह अल्लाह तुम्हारे कर्मों को ख़ूब देख रहा है)। सूरह बक़रहः 110।

हमारा पालनहार वह है जो हरेक चीज़ को ख़ूब अच्छे से देख रहा है, चाहे वह सूक्ष्म से सूक्ष्म एवं अत्यंत मामूली ही क्यों न हो, चुनाँचे अति अंधेरी रात में ठोस चट्टान पर रेंगने वाली काली चींटी को भी वह देखता है, सात तह ज़मीन के अंदर (के जीवों) और सात आसमानों के ऊपर (के जीवों को) भी अच्छे से देखता है।

वह ख़ूब देखने वाला तथा सभी परिस्थितियों से भलि भाँति परिचित है, छिप्त चीज़ों से सूचित तथा गुप्त वस्तुओं से आगाह व सचेत है।

وَهُوَ البَصِيرُ يَرَى دَبِيبَ النَّملَةِ   السَّوداءِ تَحْتَ الصَّخْرِ والصُّوَّانِ

وَيَرى مَجارِي القُوتِ فِي أَعضائِها   وَيَرَى عُرُوقَ بَيَاضِهَا بِعَيَانِ

وَيَرَى خيَانَاتِ العُيُون بِلَحظِهَا   وَيَرَى كَذَاكَ تَقَلُّبَ الأَجفَانِ

अनुवादः वह ख़ूब देखने वाला है, अत्यंत काली चींटी की रेंग को भी पत्थर और चट्टान के नीचे देखता है। उसके अंगों में आहार पहुँचने के मार्गों और उसके शरीर की रगों को भी वह बिल्कुल स्पष्ट रूप से देखता है। वह आँखों की ख़्यानत (विश्वासघात) को अति शीघ्र देखता है और इसी प्रकार से पलक (निमेषक) की हरकत को भी देखता है।

हमारे पाक व पवित्र परवरदिगार ने अपनी सर्वशक्तिशाली ज़ात के लिये स़िफ़त -ए-बस़ारत (देखने की क्षमता) को प्रमाणित किया है, चुनाँचे अल्लाह की दो वास्तविक आँखे हैं, जो उस की पाक व सर्वशक्तिशाली ज़ात (व्यक्तित्व) की शान के अनुसार हैं, हम उस पर ईमान लाते हैं, बिना किसी तअ़तील (निरस्तिकरण) एवं बिना किसी तश्बीह (समानता) व तावील (मनमानी व्याख्या) केः

﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ﴾

अनुवादः (उस के समान कोई चीज़ नहीं, और वह सुनने वाला देखने वाला है) सूरह शूराः 11।

बंदों पर अल्लाह तआला की कृपा है कि वह उन्हें दया व रह़मत के साथ संबोधित करता है, उन्हें आज्ञाकारी, अनुपालन व इख़्लास़ पर उभारता है, जब्कि वह उनकी इबादत व पूजा से बेनियाज़ व निःस्पृह है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने अपनी सम्माननीय किताब (क़ुरआन) में चालीस से अधिक स्थान पर इस संबोधन से संबोधित किया हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٞ﴾

अनुवादः (निस्संदेह अल्लाह तुम्हारे कर्मों को ख़ूब देख रहा है)। सूरह बक़रहः 110।

ताकि मोमिन को याद दिलाये तथा अचेत को सचेत करे कि अल्लाह तआला उनके सभी कर्मों से भलि भाँति परिचित है।

❒ आज्ञापालन की मिठास ...

जो व्यक्ति यह जान ले कि उस का रब उस (के कर्मों) से परिचित है, उसे इस बात से लज्जा आयेगी कि अल्लाह तआला उसे कुकर्म करते हुये देखे, अथवा ऐसा कृत्य करते हुये देखे जो उसे पसंद नहीं, जो व्यक्ति यह जान ले कि अल्लाह तआला उसे देख रहा है, वह अपने कर्मों एवं इबादतों को उत्तम ढ़ंग से इख़्लास व निष्ठा के साथ अदा करेगा, ताकि "एह़सान" के स्थान को पा सके, जो कि अनुपालन व भक्ति का उच्चतम स्थान है, जिसके

विषय में हमारे प्रिय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तुम अल्लाह की इबादत व उपासना इस प्रकार से करो कि मानो तुम उसे देख रहे हो और यदि यह भावना नहीं उत्पन्न हो सके तो (यह ध्यान रखो) कि वह तुम्हें अवश्य देख रहा है"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

जो व्यक्ति यह जान ले कि अल्लाह उसे तथा उसकी पीड़ा को देख रहा है, उसके हृदय को शांति, आत्मा को सुकून मिलेगा और उसे यह विश्वास हो जायेगा कि शीघ्र ही कुशादगी व समृद्धि प्राप्त होने वाली है।

जो व्यक्ति यह जान ले कि अल्लाह उसे देख रहा है, उसे इस बात से लज्जा आयेगी कि अल्लाह उसे कथनी एवं करनी में ख़्यानत व विश्वासघात करते हुये देखे।

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपने कुछ साथियों के साथ मक्का की यात्रा पर निकले, पथ में उन्होंने विश्राम करने के लिये पड़ाव डाला, उनके पास पहाड़ी से उतर कर एक चरवाहा आया, उससे इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहाः हे चरवाहे! हम से एक बकरी बेच दो! चरवाहे ने कहाः मैं दास हूँ (अर्थात अपने स्वामी की बकरियाँ चराता हूँ)।

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उससे कहाः अपने स्वामी से कह देना किः बकरी को भेड़िये ने खा लिया।

इस पर चरवाहे ने कहाः और अल्लाह कहाँ है?! (अर्थातः अल्लाह तो देख रहा है)।

यह उत्तर सुन कर इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा रोने लगे, तथा उस दास को उसके स्वामी से ख़रीद कर स्वतंत्र कर दिया।

إِذَا مَا خلَوتَ الدَّهرَ يَومًا فَلا تَقُل   خَلَوتُ وَلَكِن قُل عَلَيَّ رَقِيبُ
وَلَا تَحْسَبَنَّ اللهَ يَغفَلُ سَاعَة   وَلا أَنَّ مَا يخفَى عَلَيهِ يَغِيبُ

अनुवादः संसार के अंदर जब कभी तन्हाई व एकांत में रहो तो यह मत कहो कि मैं एकांतावास में हूँ, अपितु यह कहो कि मेरे ऊपर एक निगहबान है (जो मुझे देख रहा है)। यह कदापि मत समझो कि वह (अल्लाह) एक क्षण के लिये भी ग़ाफ़िल व असावधान होता है और न ही उस (के इल्म व ज्ञान) से कोई चीज़ छिप्त व गुप्त है।

किसी ने एक ग्रामीण महिला को अपनी ओर आकर्षित करते हुये कहाः हमें सितारों के सिवा कोई नहीं देख रहा है, तो उस महिला ने उत्तर दिया किः सितारों को प्रज्वलित करने वाला कहाँ है?!

किसी ने कहाः जो अपने ध्यान व कल्पना में अल्लाह तआला को निगराँ व निरीक्षक समझता है, अल्लाह तआला उसके शारीरिक अंगों की गतिविधि (तक) में उसकी सुरक्षा करता है।

यदि आप उन सात प्रकार के लोगों (की स्थिति) में विचार करेंगे जिन्हें अल्लाह उस दिन अपनी छाया में जगह देगा जिस दिन उस की छाया के सिवा कोई छाया न होगी, तो आपको दृष्टिगोचर होगा कि जो चीज़ उन सबमें एक समान है वह यह किः उन्होंने इस बात पर पूर्ण ईमान रखा कि अल्लाह तआला उन्हें देख रहा है, चुनाँचे उन्होंने अल्लाह की ऐसी ही इबादत व पूजा की मानो वो अल्लाह को देख रहे हों, (जिसके फलस्वरूप) वह इस उच्च स्थान के भागी बने।

इसी महान नाम (अल-बसीर, ख़ूब देखने वाले) के वसीला व माध्यम से मूसा अलैहिस्सलाम के समुदाय के एक नेक व सदाचारी मानुष ने महान व सर्शक्तिमान अल्लाह तआला से विनती करते हुये तथा फ़िरऔन एवं उसके समुदाय की धूर्तता से अल्लाह की पनाह व शरण माँगते हुये कहा थाः

﴿وَأُفَوِّضُ أَمۡرِيٓ إِلَى ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ بَصِيرُۢ بِٱلۡعِبَادِ﴾

अनुवादः (मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ, निस्संदेह अल्लाह बंदों को देख रहा है)। सूरह ग़ाफ़िरः 44।

इस प्रार्थना का परिणाम क्या निकला?

अल्लाह तआला ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कीः

﴿فَوَقَىٰهُ ٱللَّهُ سَيِّـَٔاتِ مَا مَكَرُواْۖ وَحَاقَ بِـَٔالِ فِرۡعَوۡنَ سُوٓءُ ٱلۡعَذَابِ ٤٥﴾

अनुवादः (तो अल्लाह ने उसे सुरक्षित कर दिया उन के षड्यंत्र की बुराईयों से, और घेर लिया फ़िरऔनियों को बुरी यातना ने)। सूरह ग़ाफ़िरः 45।

يَا مَن يَرَى صَفَّ البَعُوضِ جَنَاحَها   فِي ظُلْمَةِ اللَّيلِ البَهِيمِ الأَلِيلِ
وَيَرَى نِيَاطَ عُرُوقِهَا فِي نَحْرِهَا   وَالْمُخَّ مِن تِلكَ العِظامِ النُّحَلِ
اُمْنُنْ عَلَيَّ بِتَوبَةٍ تَمْحُو بِهَا   مَا كَانَ مِنِّي فِي الزَمانِ الأَوَّلِ

हे वह (रब कि)! जो अत्यंत काली रात्रि में मच्छर के पर फैलाने को देखता है, उसके गले में मौजूद शह -ए- रग (प्राणनाड़ी) तथा उसकी सूक्ष्म हड्डियों के अंदर गूदा को भी देखता है। मुझे तू ऐसी तौबा से नवाज़ जिसके द्वारा तू मेरे पिछले सभी पापों को क्षमा कर दे।

❒ सदुपदेश व सीख!

मोमिन एकांतावास व तंहाई के पापों तथा उन पर बिना तौबा किये बारंबार उसी पाप को दोहराने से बचता तथा सावधान रहता है, "अल-स़ह़ीह़" में स़ौबान रज़ियल्लाहु अन्हु की ह़दीस़ आई है, वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मैं अपनी उम्मत के ऐसे लोगों को जानता हूँ जो क़्यामत के दिन तिहामा के पहाड़ों के समान नेकियाँ ले कर आयेंगे, (परंतु) अल्लाह तआला उनको वायुमंडल में उड़ते हुये कण के समान बना देगा" स़ौबान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः अल्लाह के रसूल! उन लोगों की स्थिति हम से बयान कीजिये तथा स्पष्ट रूप से समझाईये ताकि अज्ञानता एवं अनभिज्ञता के कारण कहीं ऐसा न हो कि हम उन लोगों में से हो जायें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जान लो कि, वे तुम्हारे भाईयों में से ही हैं, और तुम्हारे समुदाय में से हैं, वो भी रातों को ऐसे ही इबादत व उपासना करेंगे जैसे तुम इबादत करते हो, किंतु वो ऐसे लोग हैं कि जब तंहाई में होंगे तो ह़राम व वर्जित कार्यों को अंजाम देंगे"। (इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है)। ऐसे लोग जो रियाकारी व पाखण्ड करते हैं, वो अल्लाह का ज़िक्र व स्मरण बहुत कम ही क्या करते हैं।

तंहाई व एकांतावास इंसान को या तो सर्वोच्चता का शिखर प्रदान करती है अथवा उसे पाताल में झोंक देती है, जो व्यक्ति तंहाई में अल्लाह तआला का सम्मान करता है, लोग सभा में उसका सम्मान करते हैं।

इब्ने रजब ह़ंबली फ़रमाते हैं किः "निफ़ाक़ -ए- अस़ग़र (छोटा पाखण्ड) के सभी भेदों का संदर्भ व स्रोत, एकांतावास व सभा का परस्पर विरोधाभास ही है"।

इसके अतिरिक्त वह लिखते हैं किः ""ह़ुस्न -ए- ख़ात्मा, अर्थातः अच्छी मृत्यु" उसी व्यक्ति को प्राप्त होती है जिसका एकांतावास अच्छा रहा हो, क्योंकि मृत्यु के समय तकल्लुफ व बनावट संभव नहीं, इसलिये उस समय वही बात (ज़ुबान से) निकलती है जो दिल के सबसे अंदर वाले भाग में बैठी हुई होती है"।

हे अल्लाह! हे ख़ूब देखने वाले! हमारी कमज़ोरी व दुर्बलता पर दया कर, हमारी कोताही, कमी व फिसलन को दरगुज़र व अनदेखा कर दे, और हे समस्त संसार को पालने वाले! हमें इस्लाम की हालत में मृत्यु दे।

(39)

(अल-तव्वाब जल्ल जलालुहु)

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का कथन है किः “तौबा व प्रायश्चित्त करने वालों की सभा में बैठा करो, क्योंकि उन (की संगत) से हृदय में कोमलता उत्पन्न होती है”।

أَسأتُ وَلَمْ أُحسِن، وَجِئتُكَ تَائِبًا وَأَنَّى لِعَبدٍ مِن مَوَالِيهِ مَهرَبُ
يُؤَمِّلُ غُفرانًا فَإن خَابَ ظَنُّه فَما أَحدٌ مِنهُ عَلى الأَرضِ أَخْيَبُ

अनुवादः मैंने कुकर्म किया तथा सदकर्म न कर सका (परंतु) मैं तेरे द्वार पर तौबा व प्रायश्चित्त करते हुये आया हूँ, भला किसी दास को भी अपने स्वामी से छुटकारा मिल सकता है?!। वह मग़फ़िरत व क्षमा की आशा लिये हुये (तेरे द्वार पर आया) है, यदि उसकी आशा पूर्ण न हो सकी तो इस धरती पर उससे बड़ा हानि उठाने वाला कोई नहीं।

आईये हम अल्लाह तआला के एक महान नाम (अल-तव्वाब, अधिकाधिक तौबा व प्रायश्चित्त स्वीकार करने वाला) के विषय में चर्चा करते हैं।

अल्लाह तआला का यह महान नाम (अल-तव्वाब, अधिकाधिक तौबा व प्रायश्चित्त स्वीकार करने वाला) कितना सुंदर व प्यारा है! जो पापियों को यह आशा दिलाता है कि वो फिर से नये ढ़ंग से अपने जीवन को प्रारंभ करें एवं नाकामी, असफलता तथा अंधकार से बाहर निकलें:

﴿أَلَمْ يَعْلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ ٱلتَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِۦ وَيَأْخُذُ ٱلصَّدَقَٰتِ وَأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ١٠٤﴾

अनुवादः (क्या वो नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता तथा (उन के) दानों व सदकों को क़बूल करता है? और वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान है)। सूरह तौबाः 104।

हमारा महान व पवित्र परवरदिगार वह है जो तौबा को स्वीकार करता है, उसने अपनी ज़ात को तव्वाब (अधिकाधिक तौबा व प्रायश्चित्त स्वीकार करने वाला) की विशेषता से विशेषित किया है, जो कि मुबालग़ा व अतिश्योक्ति को दर्शाने वाला वचन है, क्योंकि वह बंदों की तौबा को बहुत ज़्यादा स्वीकार करता है, और चूँकि बंदे बार-बार गुनाहों में लिप्त हो

जाते हैं, इसलिये भी (तौबा क़बूल करने की विशेषता) मुबालग़ा व अतिश्योक्ति के साथ अवतरित हुई है, ताकि अल्लाह तआला बड़े-बड़े गुनाहों व महा पापों को भी अपनी व्यापक व समग्र क्षमा व तौबा से माफ कर दे।

अल्लाह तआला सदा तौबा करने वालों की तौबा को स्वीकार करता तथा पापियों के पापों को क्षमा कर देता है, यहाँ तक कि बंदा यदि बार-बार तौबा करे तो अल्लाह तआला उसे बार-बार स्वीकार करता है, और इस सिलसिले की कोई निश्चित सीमा नहीं है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿فَمَن تَابَ مِنۢ بَعۡدِ ظُلۡمِهِۦ وَأَصۡلَحَ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَتُوبُ عَلَيۡهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٞ رَّحِيمٌ ٣٩﴾

अनुवादः (फिर जो अपने अत्याचार (चोरी) के पश्चात तौबा (क्षमा याचना) कर ले, और अपने को सुधार ले, तो अल्लाह उस की तौबा को स्वीकार कर लेगा, निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है)। सूरह माइदाः 39।

“अल-मुस्तदरक” में आया है किः एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहने लगाः “हे अल्लाह के रसूल! हम में से कोई गुनाह करता है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “उसका गुनाह लिख दिया जाता है”, उन्होंने पुनः प्रश्न कियाः वह उससे तौबा, इस्तिग़फ़ार व क्षमा याचना करता है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः उसे क्षमा कर दिया जाता है तथा उसकी तौबा स्वीकार कर ली जाती है, अल्लाह उस समय तक नहीं उकताता जब तक तुम नहीं उकता जाते”। (यह ह़दीस़ ह़सन है)।

ज्ञात हुआ कि जो सच्चे हृदय से तौबा व प्रायश्चित्त करता है, अल्लाह उसे सहर्ष स्वीकार करता है।

❒ अल्लाह तआला कितना सख़ी व दाता है!

अल्लाह तआला की सख़ावत व दयालुता पर विचार कीजिये कि अल्लाह अपने बंदे पर कितना कृपालु है कि उसकी तौबा से पहले भी और उसके बाद भी उसे स्वीकार करता है, चुनाँचे बंदा जब-जब तौबा करता है तो उसकी तौबा पाक व उच्च रब की दो स्वीकार्यता के मध्य होती हैः तौबा के पूर्व तथा तौबा के पश्चात।

अल्लाह तआला बंदों के द्वारा तौबा व प्रायश्चित्त करने के पूर्व ही उसकी तौबा को स्वीकार कर लेता हैः वह इस प्रकार से कि उसे इस (तौबा) की अनुमति, अनुग्रह व इलहाम (अंतर्मन में बात डालने का कार्य) करता है, उसके हृदय में तौबा की भावना उत्पन्न करता है, फिर बंदा तौबा करता है जोकि पूर्णतः करीम, दयालु, कृपालु व तौबा स्वीकार करने वाले अल्लाह की तौफ़ीक़ व अनुग्रह होता है।

फिर बंदा जब वास्तव में तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसकी तौबा को स्वीकार करता है, और उसके पापों एवं गुनाहों को क्षमा करता है, पाक व पवित्र अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوٓاْ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ﴾

अनुवादः (फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें, वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है)। सूरह तौबाः 104।

अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वही अपने फ़ज़्ल, अनुग्रह व एहसान से, पहले तौबा (की तौफ़ीक़ देता है) और फिर बाद में उसे स्वीकार करता है।

وَكَذَلِكَ التَوَّابُ مِن أَوصَافِهِ   وَالتَّوبُ فِي أَوصَافِهِ نَوعَانِ
إِذنٌ بِتَوبَةِ عَبدِهِ وَقَبُولِهَا   بَعدَ المَتَابِ بِمِنَّةِ المَنَّانِ

अनुवादः इसी प्रकार से तव्वाब (अधिकाधिक तौबा स्वीकार करने वाला) उसकी सिफ़ात (विशेषताओं) में से है, उसकी सिफ़त -ए- तौबा के दो प्रकार हैं: बंदा को तौबा की अनुमति (व तौफ़ीक़) देना, तथा तौबा के मन्नान (अनुग्रही) का अपने फ़ज़्ल, एहसान व अनुग्रह से उसे स्वीकार करना।

अन्य नेक अमल व सदकर्म की भी यही स्थिति है कि (पहले) अल्लाह बंदे को उसकी तौफ़ीक़ देता है, तत्पश्चात उस पर सवाब व पुण्य से नवाज़ता है, ज्ञात हुआ कि आरंभ से ही अल्लाह इनाम व एहसान करता और अपनी सख़ावत, दयालुता व दानवीरता की बरखा बरसाता है।

❑ सदुपदेश, नसीहत व सीख!

तौबा करनाः सभी इंसानों पर, जीवन के सभी पड़ाव में वाजिब व अनिवार्य है, चाहे मोमिन हो अथवा पापी, क्योंकि अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَتُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ ٱلْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾

अनुवादः (तुम सब मिल कर अल्लाह से क्षमा माँगो, हे ईमान वालो! ताकि तुम सफल हो जाओ)। सूरह नूरः 31।

तौबा करना, नक़्स, कमी व अपूर्णता (की बात) नहीं, अपितु कमाल व पूर्णता (की बात) है, जिसे अल्लाह तआला पसंद फ़रमाता है, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلتَّوَّٰبِينَ وَيُحِبُّ ٱلْمُتَطَهِّرِينَ﴾

अनुवादः (अल्लाह तौबा करने वालों को और पाक रहने वालों को प्रिय रखता है)। सूरह बक़रहः 222।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का इर्शाद हैः

﴿لَّقَد تَّابَ ٱللَّهُ عَلَى ٱلنَّبِىِّ وَٱلْمُهَٰجِرِينَ وَٱلْأَنصَارِ﴾

अनुवादः (अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अंसार पर दया की (अर्थात उनके तौबा को स्वीकार किया)। सूरह तौबाः 117।

अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम के विषय में फ़रमायाः

﴿فَتَلَقَّىٰٓ ءَادَمُ مِن رَّبِّهِۦ كَلِمَٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ﴾

अनुवादः (आदम ने अपने रब से चंद वाक्य सीख लिये, और अल्लाह ने उनकी तौबा को स्वीकार कर लिया)। सूरह बक़रहः 37।

इब्राहीम व इस्माईल अलैहिमस्सलाम के बारे में अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَآ إِنَّكَ أَنتَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ﴾

अनुवादः (हमें हमारे (हज्ज) की विधियाँ बता दे, तथा हमें क्षमा कर, वास्तव में तू अति क्षमी दयावान है)। सूरह बक़रहः 128।

और मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿فَلَمَّآ أَفَاقَ قَالَ سُبْحَٰنَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا۠ أَوَّلُ ٱلْمُؤْمِنِينَ﴾

अनुवादः (जब (मूसा अलैहिस्सलाम) चेतना में आये तो कहाः तू पवित्र है, मैं तुझ से क्षमा माँगता हूँ, तथा मैं सर्वप्रथम ईमान लाने वालों में से हूँ)। सूरह आराफ़ः 143।

यह तो सर्वविदित है किः अम्बिया -ए- किराम इस बात से मासूम व निर्दोष थे कि उनके पापों पर (अल्लाह) उन्हें सावधान न करे, चाहे वह कबीरा गुनाह हो अथवा सग़ीरा गुनाह, उनके विषय में तौबा की जो सूचना दी गई है, (उससे अभिप्राय यह है कि) इससे उनका दर्जा उच्च होता है एवं उनकी नेकियों व पुण्य में वृद्धि होती है।

स़हीह़ बुख़ारी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ आई है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह की क़सम! मैं दिन भर में सत्तर से अधिक बार अल्लाह से तौबा, इस्तिग़फ़ार व क्षमा याचना करता हूँ"।

❑ यदि तुम गुनाह नहीं करते ...

अल्लाह तआला इस बात से भलि भांति परिचित है कि उसके बंदे कमी व कोताही से पाक नहीं, (वास्तव में) अल्लाह तआला ने उन्हें ऐसा ही पैदा फ़रमाया है, ताकि उन पर अपनी दया, मग़फ़िरत व क्षमा प्रकट कर सके, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़हीह़ ह़दीस़ है किः "यदि तुम्हारे वो गुनाह न होते जिन्हें अल्लाह तआला क्षमा करता है, तो अल्लाह एक ऐसा समुदाय उत्पन्न करता जो गुनाह करते और अल्लाह तआला उन्हें क्षमा करता"। (मुस्लिम)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद हैः "आदम अलैहिस्सलाम के सभी संतान गुनाहगार व पापी हैं, और उन गुनाहगारों में सबसे उत्तम वो हैं जो तौबा करते हैं"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

अल्लाह तआला ने अपनी प्रशंसा यों की है कि वह बंदों की तौबा को स्वीकार करता है, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान हैः

﴿غَافِرِ ٱلذَّنۢبِ وَقَابِلِ ٱلتَّوۡبِ شَدِيدِ ٱلۡعِقَابِ ذِى ٱلطَّوۡلِۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ إِلَيۡهِ ٱلۡمَصِيرُ ٣﴾

अनुवादः (पाप क्षमा करने, तौबा स्वीकार करने, क्षमायाचना के स्वीकारी, कड़ी यातना देने वाला, समाई वाला जिसके सिवा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, उसी की ओर (सभी को) जाना है)। सूरह मोमिनः 3।

अल्लाह तआला चाहता है कि उसके बंदे यह जान लें कि वह उनकी तौबा को क़बूल करता है चाहे उनके गुनाह बड़े व संगीन ही क्यों न हों:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يَغۡفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًاۚ﴾

अनुवादः (निस्संदेह अल्लाह समस्त पापों को क्षमा कर देता है)। सूरह ज़ुमरः 53।

हमारा परवरदिगार हम से एवं हमारी इबादतों व पूजा से बेनियाज़ व निःस्पृह है, इस के बावजूद भी बंदा जब तौबा करता है तो अल्लाह अत्यधिक प्रसन्न होता है, क्योंकि अल्लाह अति दयालु व दाता है! अल्लाह तआला अति सुंदर है! अल्लाह तआला अति कृपालु व मेहरबान है!

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला अपने मोमिन बंदे की तौबा से उस व्यक्ति से अधिक प्रसन्न होता है जो एक चटियल मैदान व मरुस्थल में (जहाँ न छाया हो न जल) सो जाये, और उसके साथ उसका ऊँट हो जिस पर उसका खाना और पानी हो, जब वह जागे तो अपना ऊँट न पाये, फिर उसको ढूँढ़े यहाँ तक कि प्यासा हो जाये, तत्पश्चात (अपने मन में) कहे कि मैं जहाँ था वहीं लौट जाऊँ और सोते-सोते मर जाऊँ, इसके बाद वह मरने के लिये अपना सिर अपनी भुजाओं पर रखे, फिर जो निद्रा भंग हो तो अपना ऊँट अपने पास पाये, उस पर उसका तोशा (पाथेय) भी हो, खाना और पानी भी, तो अल्लाह तआला को मोमिन बंदे की तौबा से उससे अधिक प्रसन्नता होती है जितनी उस व्यक्ति को अपने ऊँट एवं पाथेय व तोशा मिलने से होती है"।

इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "प्रत्येक तौबा करने वाला व्यक्ति अल्लाह का प्रिय है": ﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلتَّوَّٰبِينَ وَيُحِبُّ ٱلۡمُتَطَهِّرِينَ﴾ अनुवादः (अल्लाह तौबा करने वालों को और पाक रहने वालों को प्रिय रखता है)। सूरह बक़रहः 222।

जो (अल्लाह) बंदों के प्रति इतना दयालु व कृपालु है, वह इस बात के योग्य है किः उससे से असीमित प्रेम रखा जाये, केवल उसी की इबादत व पूजा की जाये, उसके साथ किसी को शरीक न किया जाये, और हाँ, इस प्रेम का प्रभाव भी दिखना चाहिये, वह इस प्रकार से कि हम उसके लिये इबादत व पूजा को ख़ालिस व निश्छल रखें, उसके आज्ञापालन के द्वारा उसका सामीप्य प्राप्त करें, वह जिन लोगों एवं जिन कर्मों को प्रिय रखता है हम भी उन्हें प्रिय रखें, वह जिन लोगों एवं जिन कर्मों को अप्रिय रखता है हम भी उन्हें अप्रिय रखें।

बिलाल बिन सअद कहते हैं किः “तुम्हारे लिये एक ऐसा पालनहार है जो तुम में से किसी को जल्दी दंड नहीं देता, अपितु वह पापों व फिसलन को क्षमा करता, तौबा को स्वीकार करता, (उसकी ओर) झुकने वलों का स्वागत करता और (उस से) पीठ फेरने वालों पर प्रेम व दया बरसाता हैः

﴿وَهُوَ ٱلَّذِى يَقْبَلُ ٱلتَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِۦ وَيَعْفُوا۟ عَنِ ٱلسَّيِّـَٔاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾﴾

अनुवादः (वही है जो स्वीकार करता है अपने भक्तों की तौबा, तथा क्षमा करता है दोषों को और जानता है जो कुछ तुम करते हो)। सूरह शूराः 25।

❒ अल्लाह तआला के द्वार पर ...

तौबा यह है किः उल्लंघन से अनुपालन की ओर, कुकर्म से सदकर्म की ओर, तथा अवज्ञा की वह़शत से रह़मान के आज्ञापालन व प्रेम की ओर भागा जाये।

निस्संदेह तौबा (यह है कि) ख़ालिक़ (रचयिता) से उसी के द्वार की तरफ और जब्बार (समस्त दोषों को दूर करने वाले अल्लाह) से उसी के दरबार की ओर भाग कर आश्रय लिया जाये, उसके क्रोध व गुस्सा से उसकी प्रसन्नता व रज़ामंदी की तथा उसकी यातना से उसकी सलामती, आफ़ियत व कल्याण की ओर शरण ली जाये, हम (सही ढ़ंग से) उसकी प्रशंसा करने में असमर्थ हैं, हमारे लिये उसके सिवा कोई शरण स्थली नहीं, और न (उस से दूर हो कर) उस के सिवा कहीं और कोई आश्रय हैः

﴿فَفِرُّوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ ۖ إِنِّى لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾﴾

अनुवादः (तो तुम दौड़ो अल्लाह की ओर, वास्तव में मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ)। सूरह ज़ारियातः 50।

يا ربِّ إِن عَظُمَت ذُنُوبِي كَثرَةً   فَلَقَد عَلِمتُ بِأَنَّ عَفوَكَ أَعظَمُ
إِن كَانَ لَا يَرجُوكَ إِلَّا مُحْسِنٌ   فَبِمَن يَلُوذُ وَيَستَجِيرُ المُجرِمُ

अनुवादः हे मेरे पालनहार! यदि मेरे पाप अत्यधिक हैं, तो मुझे पता है कि तेरी माफी व क्षमा इससे कहीं बढ़ कर है। यदि तेरी क्षमा की आशा केवल सदकर्मी व नेक ही कर सकता है तो मुजरिम व पापी आख़िर किसकी शरण में जायें!।

अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि: “आश्चर्य है ऐसे व्यक्ति पर जो नाश व हलाक हो जाता है, जब्कि उसके पास मोक्ष का मार्ग मौजूद होता है! प्रश्न किया गया: वह क्या है? उन्होंने फ़रमाया: इस्तिग़फार (प्रायश्चित्त व क्षमा याचना)”।

इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह लिखते हैं कि: “मुस्लिम बंदे को अधिकतर जो चीज़ पाप करने पर उभारती है वह है तौबा (के भरोसे पर रहना), यदि वह यह विश्वास कर ले कि बहुत संभव है कि उसे तौबा की मोहलत ही न मिल सके, तो उसका भय बेकाबू हो जायेगा”।

सच्ची तौबा तभी संभव है जब: पाप को छोड़ दिया जाये, उस पर पश्चात्ताप व लज्जा प्रकट की जाये, दोबारा उस पाप को न दोहराने का दृढ़ निश्चय किया जाये, उसके स्थान पर सदकर्म किया जाये, और यदि उस पाप व गुनाह का संबंध बंदों के अधिकार से हो तो उस व्यक्ति विशेष से सुलह की जाये।

शक़ीक़ बलख़ी रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि: “तौबा की निशानी यह है कि: पिछले पापों पर रोये, पुनः उस पाप को दोहराने से भय खाये, दुष्टों की संगत को छोड़ दे तथा सज्जनों की संगत में रहे”।

सच्ची तौबा स्वीकार की जाती है, सिवाय दो वक्त के: जब सूर्य पश्चिम से निकल जाये तथा जब इंसान मृत्यु शय्या पर हो।

❒ सचेत करने वाली तंबीह व सावधानी ...

अल्लाह तआला बहुधा अपने मोमिन बंदे को ऐसी परीक्षा व आज़माइश में डाल देता है, जिसके कारण वह तौबा व क्षमा याचना को तैयार होता है, ताकि वह उबूदियत, बंदगी व दासता के सर्वोच्च दर्जा को पहुँच सके, अपने परवरदिगार की बारगाह में विनम्रता व श्रद्धा प्रकट करे तथा उसके समक्ष तौबा करे।

कितने ऐसे इंसान हैं जो अल्लाह से दूर हो गये, फिर अल्लाह तआला ने उनका जीवन कष्टदायक कर दिया ताकि वो उसकी ओर लौट कर आयें, फिर जब वो लौट कर आ गये, उसके सामीप्य से लाभांवित हुये, इस्तिक़ामत, दृढ़ता व तौबा की नियामत का अनुभव किया, तो उस संकट और विपदा पर अल्लाह का शुक्र अदा किया जो उनकी मुक्ति व सफलता का कारण बनी:

﴿وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ ٱلْعَذَابِ ٱلْأَدْنَىٰ دُونَ ٱلْعَذَابِ ٱلْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾﴾

अनुवादः (और हम अवश्य चखायेंगे उन को सांसारिक यातना, बड़ी यातना से पूर्व ताकि वो लौट कर आ जायें)। सूरह सज्दाः 21।

यदि आप को आपके पापों, गुनाहों एवं उद्दंडता पर छोड़ दिया जाये और आप तौबा न करें, इसके बावजूद भी (यदि आप) नियामतों से लाभांवित होते रहें तो समझ लीजिये कि आप अल्लाह के निकट अप्रिय व घृणित व्यक्ति हैं, और यह नियामतें, मोहलत, छूट एवं ढ़ील के रूप में आप को मिल रही हैं, क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿فَلَمَّا نَسُوا۟ مَا ذُكِّرُوا۟ بِهِۦ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَٰبَ كُلِّ شَىْءٍ حَتَّىٰٓ إِذَا فَرِحُوا۟ بِمَآ أُوتُوٓا۟ أَخَذْنَـٰهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾﴾

अनुवादः (तो जब उन्होंने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक (सुख-सुविधा) के द्वार खोल दिये, यहाँ तक कि जब जो कुछ वो दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वो निराश हो कर रह गये)। सूरह अनआमः 44।

जब आप तौबा करें, तो अल्लाह से अडिगता व दृढ़ता की भी प्रार्थना करें, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह प्रार्थना किया करते थेः

اللَّهُمَّ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ! ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ

(अर्थातः ऐ अल्लाह! ऐ दिलों को फेरने वाले! मेरे दिल को अपने दीन (धर्म) पर अडिग रख)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे बुख़ारी ने "अल-अदब अल-मुफ़रद" में रिवायत किया है)।

हे अल्लाह! हमारी तौबा को स्वीकार कर ले, निस्संदेह तू तौबा स्वीकार करने वाला अति दयालु है, हमें एवं हमारे माता-पिता को क्षमा कर दे, निश्चय ही तू बड़ा क्षमाशील व अत्यंत कृपालु है।

(40)

(अल-अलीम जल्ल जलालुहु)

हृदयों में ऐसी भावनाएं व एहसास तथा इरादा व दृढ़ निश्चय छिपे होते हैं जिन तक न कान पहुँच सकते हैं न दृष्टि की रसाई हो सकती है, परंतु बड़ी हिकमत व तत्वदर्शिता वाला तथा सर्वज्ञ (अल्लाह तआला) इन सबसे भलि भाँति परिचित होता है।

दिलों में विचार के समूह छिपे होते हैं, परंतु उसके बारे में न किसी निकटवर्ती फ़रिश्ता को जानकारी होती है और न किसी अवतरित नबी को, न ही किसी निकटतम मित्र को, न किसी माहिर धर्मशास्त्री को अथवा किसी उद्दंड शैतान को, परंतु ग़ैब व छिप्त का ज्ञान रखने वाला अल्लाह इन सब बातों से भलि भाँति परिचित होता है।

(पेट में पलने वाला) बच्चा अपनी माता के गर्भाशय के अंदर परत दर परत झिल्लियों में लिपटा हुआ होता है, किसी को नहीं पता होता कि वह जीवित है अथवा मृत? नर है या मादा? सज्जन है अथवा दुष्ट? उसकी मृत्यु, उसकी आजीविका एवं आयु का भी पता नहीं होता! परंतु इन समस्त चीज़ों की जानकारी उस ज़ात को होती है जिसका ज्ञान हर चीज़ को अपने घेरा में लिये हुये हैः

﴿وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٌ﴾

अनुवादः (अल्लाह हर चीज़ से भलि भाँति परिचित है)। सूरह बक़रहः 282।

❒ ज्ञान अज्ञानता का विलोम है।

हमारे महान, पाक व पवित्र रब का इल्म व ज्ञान, आंतरिक व बाह्य, स्पष्ट व छिप्त सभी को शामिल है, लोक व परलोक सभी उसके ज्ञान में समाहित हैं, उसका ज्ञान भूत, वर्तमान तथा भविष्य सभी को अपने घेरा में लिये हुये है, (अल्लाह) पाक व पवित्र का फ़रमान हैः

﴿يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِۦ عِلۡمٗا ١١٠﴾

अनुवादः (वह जानता है जो कुछ उनके आगे तथा पीछे है, और वो उसका पूरा ज्ञान नहीं रखते)। सूरह ताहाः 110।

वह सर्वशक्तिशाली व महाबली अपनी मख़लूक़ (रचना) के हृदय में छिप्त ईमान व कुफ़्र, हक़ व बातिल (सत्य व असत्य) तथा भलाई एवं बुराई से भलि-भाँति परिचित हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمُۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ﴾

अनुवादः (अल्लाह दिलों के भेद को भलि भाँति जानता है)। सूरह आले इमरानः 119।

﴿وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٞ﴾

अनुवादः (अल्लाह हर चीज़ से भलि भाँति परिचित है)। सूरह बक़रहः 282।

सरगोशी व फुसफुसाहट उसके निकट स्पष्ट, राज़ उसके निकट प्रकट तथा छिप्त उसके लिये विदित है।

وَهُوَ العَلِيمُ أَحاطَ عِلمًا بِالَّذِي ... فِي الكَونِ مِن سِرٍّ ومِن إِعلانِ
وبِكُل شيءٍ عِلمُه سُبحانَه ... قَاصِي الأمورِ لَدَيهِ قَبلَ الدَّانِي
لَا جَهلَ يَسبِقُ عِلمَه كلَّا وَلَا ... يَنسَى كَمَا الإِنسانُ ذو نِسيانِ

अनुवादः वह व्यापक एवं समग्र ज्ञान वाला है जो संसार की हर गुप्त व छिप्त चीज़ से परिचित है। उस पाक व पवित्र ज़ात का इल्म (ज्ञान) हरेक चीज़ को सम्मिलित है, दूरस्थ वस्तु उसके समीप निकटतम वस्तु से (अधिक) स्पष्ट हैं। उसका ज्ञान सदा से है तथा सदा रहने वाला है, वह मानव की भांति भूल-चूक का शिकार नहीं होता।

❒ निस्संदेह वह सर्वज्ञ हैः

(वृक्ष से) पत्ते का झड़ना उसके ज्ञान में है, (मन-मस्तिष्क में जो) विचार आता है वह उसके ज्ञान में है, (ज़ुबान से जो) बात निकलती है वह उसके ज्ञान में है, (दिल में जो) हम नीयत करते हैं वह उसको जानता है, (वर्षा की जो) बूँद बरसती है वह उसे भी जानता है।

वह जीवित-मृत, सूखा-भीगा, उपस्थित-अनुपस्थित, छिप्त-स्पष्ट एवं कमी-बेशी (हर चीज़) से भलि भांति परिचित है।

﴿وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلۡغَيۡبِ لَا يَعۡلَمُهَآ إِلَّا هُوَۚ وَيَعۡلَمُ مَا فِي ٱلۡبَرِّ وَٱلۡبَحۡرِۚ وَمَا تَسۡقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعۡلَمُهَا وَلَا حَبَّةٖ فِي ظُلُمَٰتِ ٱلۡأَرۡضِ وَلَا رَطۡبٖ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَٰبٖ مُّبِينٖ ٥٩﴾

अनुवादः (उसी (अल्लाह) के पास ग़ैब (परोक्ष, छिप्त) की कुंजियाँ हैं, उन्हें केवल वही जानता है, तथा जो कुछ थल एवं जल में है, वह सब का ज्ञान रखता है, और कोई पत्ता नहीं गिरता परंतु उसे वह जानता है, और न कोई अन्न जो धरती के अंधेरों में हो, और न कोई आर्द्र (भीगा) और शुष्क (सूखा) है, परंतु वह एक खुली पुस्तक में है)। सूरह अनआमः ।

कुछ स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने मन ही मन में कुछ बातें कीं, परंतु उन्हें प्रकट नहीं किया, बल्कि उन्हें छिपाया और राज़ में रखा तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाईः

﴿عَلِمَ ٱللَّهُ أَنَّكُمۡ كُنتُمۡ تَخۡتَانُونَ أَنفُسَكُمۡ﴾

अनुवादः (अल्लाह को ज्ञान हो गया कि तुम अपना उपभोग कर रहे थे)। सूरह बक़रहः 187।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी किसी पत्नी से राज़ की कोई बात की, (तो उन्होंने वह राज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी पत्नी को बता दिया, जब उन्होंने उस राज़ को खोल दिया और अल्लाह ने इस परिस्थित से अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचित कर दिया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पत्नी को) वह बात कुछ तो बताई और कुछ न बताई तो वह पूछने लगीं किः इसकी सूचना आप को किसने दी? (तो आपने उत्तर देते हुआ कहाः)

﴿قَالَ نَبَّأَنِيَ ٱلۡعَلِيمُ ٱلۡخَبِيرُ﴾

अनुवादः (सर्वज्ञ व सर्वसूचति (अल्लाह) ने मुझे इसकी सूचना दी है)। सूरह तह़रीमः 3।

बद्र युद्ध के पश्चात उमैर बिन वहब एवं स़फ़वान बिन उमैय्या रात्रि के समय काबा के पास बैठे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वध का षड्यंत्र रच रहे थे, तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके इस षड्यंत्र की सूचना दे दी, और उनके इस दुष्टता से आपको अवगत करा दियाः

﴿قَالَ رَبِّي يَعۡلَمُ ٱلۡقَوۡلَ فِي ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ ۝٤﴾

अनुवादः (आप कह दें किः मेरा पालनहार जानता है प्रत्येक बात को जो आकाश तथा धरती में है, और वह सब सुनने जानने वाला है)। सूरह अम्बियाः 4।

तबूक में मुनाफ़िक़ों ने आपस में काना-फूसी की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, स़हाबा -ए- किराम तथा दीन -ए- इस्लाम की बुराई एवं उनकी चुग़ली की, तो ग़ैबों व छिप्ते बातों को जानने वाले (अल्लाह) ने अपने रसूल को उन (मुनाफ़िक़ों) की चाल, षड्यंत्र, धूर्तता एवं उपहास से आप को सूचित कर दियाः

﴿أَلَمْ يَعْلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ عَلَّٰمُ ٱلْغُيُوبِ ٧٨﴾

अनुवादः (क्या उन्हें इस का ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उनके भेद की बातें तथा सुनगुन को भी जानता है? और वह सभी भेदों का अति ज्ञानी है)। सूरह तौबाः 78।

❒ अल्लाह तआला का ज्ञान सम्पूर्ण तथा प्रत्येक चीज़ को सम्मिलित है!

﴿إِنَّمَآ إِلَٰهُكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ٩٨﴾

अनुवादः (निस्संदेह तुम सभी का माबूद व पूज्य बस अल्लाह ही है, कोई पूज्य नहीं है उसके सिवा, वह समोये हुये है प्रत्येक वस्तु को (अपने) ज्ञान में)। सूरह त़ाहाः 98।

अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला के कमाल -ए- इल्म (सम्पूर्ण ज्ञान) में उसकी कोई मख़लूक़ (रचना) उस जैसी नहीं:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ﴾

अनुवादः (उस के समान कोई चीज़ नहीं, और वह सुनने वाला देखने वाला है) सूरह शूराः 11।

﴿فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُواْ فَجَعَلَ مِن دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا﴾

अनुवादः (वह जानता है जिसको तुम नहीं जानते, इसलिये प्रदान कर दी तुम्हें इस (मस्जिद -ए- ह़राम में प्रवेश) के पूर्व एक समीप (जल्दी) की विजय)। सूरह फ़त्ह़ः 27।

यदि इंसान के पास किसी चीज़ का ज्ञान है तो यह अल्लाह पाक व पवित्र के ज्ञान का नतीजा है, क्योंकि हर प्रकार की शरई (धर्म से संबंधित) एवं क़दरी (ब्रह्माण्ड से संबंधित) ज्ञान का स्रोत अल्लाह ही है, जो प्रभुत्वशाली व तत्वदर्शी हैः

﴿قَالُواْ سُبۡحَٰنَكَ لَا عِلۡمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمۡتَنَآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡعَلِيمُ ٱلۡحَكِيمُ ٣٢﴾

अनुवादः (सब ने कहाः तू पवित्र है, हम तो उतना ही जानते हैं जितना तू ने हमें सिखाया है, वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ है)। सूरह बक़रहः 32।

एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿وَعَلَّمَكَ مَا لَمۡ تَكُن تَعۡلَمُۚ﴾

अनुवादः (तुझे वह सिखाया जिसे तू नहीं जानता था)। सूरह निसाः 113।

यदि (सभी) लोग अपने ज्ञान एवं अपने पास मौजूद सूचना इकट्ठी कर लें तो ये अल्लाह के अथाह ज्ञान व सूचना के समक्ष अत्यंति तुच्छ प्रमाणित होंगीः

﴿وَيَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنۡ أَمۡرِ رَبِّي وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلۡعِلۡمِ إِلَّا قَلِيلٗا ٨٥﴾

अनुवादः (-हे नबी!- लोग आप से रूह (आत्मा) के विषय में पूछते हैं, आप कह दें किः रूह मेरे रब के आदेश से है, और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया है वह बहुत थोड़ा है)। सूरह बनी इस्राईलः 85।

आदरणीय ख़िज्र एवं मूसा अलैहिस्सलाम जब नाव पर सवार हुये और उन्होंने एक चिड़िया को देखा जो नाव के किनारे बैठी थी और समुद्र में एक या दो चोंच मारी थी, तब ख़िज्र ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा किः हे मूसा! (अलैहिस्सलाम) मेरे और आपके ज्ञान ने अल्लाह के ज्ञान में से उतना भी कम नहीं किया जितना इस चिड़िया ने अपनी चोंच से समुद्र का पानी कम किया।

❒ एक वास्तविकता ...

समस्त ग़ैबी व छिप्त ज्ञान हमारे महान व सर्वशक्तिशाली पालनहार के लिये आरक्षित हैं:

﴿وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلۡغَيۡبِ لَا يَعۡلَمُهَآ إِلَّا هُوَۚ﴾

अनुवादः (उसी (अल्लाह) के पास ग़ैब (परोक्ष, छिप्त) की कुंजियाँ हैं, उन्हें केवल वही जानता है)। सूरह अनआमः 59।

उनमें से पाँच चीज़ों का उल्लेख (इस आयत में) किया हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥ عِلۡمُ ٱلسَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ ٱلۡغَيۡثَ وَيَعۡلَمُ مَا فِي ٱلۡأَرۡحَامِۖ وَمَا تَدۡرِي نَفۡسٞ مَّاذَا تَكۡسِبُ غَدٗاۖ وَمَا تَدۡرِي نَفۡسُۢ بِأَيِّ أَرۡضٖ تَمُوتُۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرُۢ ٣٤﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह ही के पास है प्रलय का (सटीक) ज्ञान, और वही उतारता है वर्षा, और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है, और नहीं जानता कोई प्राणी कि वह क्या कमायेगा कल, और नहीं जानता कोई प्राणी कि किस धरती में मरेगा, वास्तव में अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला सब से सूचित है)। सूरह लुक़्मानः 34।

ये पाँच ग़ैब की वो कुंजियाँ हैं जिनका ज्ञान व सूचना केवल अल्लाह को ही हैः

1- क़्यामत (प्रलय) का ज्ञानः पारलौकिक जीवन की मूल कुंजी।
2- बारिश बरसानाः धरती को पेड़-पौधे के द्वारा जीवन प्रदान करने की कुंजी।
3- गर्भाशय में पल रहे शिशु का ज्ञानः सांसारिक जीवन की कुंजी।
4- भविष्य का ज्ञानः भविष्य के आजीविका की कुंजी।
5- मृत्यु को प्राप्त होने वाली धरती का ज्ञानः बरज़ख़ी (पारलौकिक) जीवन की कुंजी एवं (मृतक) प्रत्येक इंसान की अलग क़्यामत का ज्ञान।

इसमें कोई संदेह नहीं कि ग़ैब के इल्म व ज्ञान का दायरा व अधिकार क्षेत्र इससे कहीं बड़ा, व्यापक एवं समग्र है कि उसे केवल इन्हीं मामलों तक सीमित कर दिया जाये। आयत में सूचना देने से अभिप्राय कुछ महत्वपूर्ण चीज़ों का उल्लेख करना है, न कि प्रत्येक चीज़ का इहाता व घेरा करना, जैसाकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः

﴿قُل لَّا يَعۡلَمُ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ ٱلۡغَيۡبَ إِلَّا ٱللَّهُۚ وَمَا يَشۡعُرُونَ أَيَّانَ يُبۡعَثُونَ ٦٥﴾

अनुवादः (आप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा, और वे नहीं जानते कि कब फिर जीवित किये जायेंगे)। सूरह नम्लः 65।

जो यह दावा करता है कि अल्लाह पाक, पवित्र व सर्वज्ञ के सिवा भी कोई है जिसे ग़ैब का इल्म व ज्ञान है, तो निस्संदेह उसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित

शरीअत व धर्म का इंकार किया। अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ग़ैब का कोई ज्ञान नहीं रखते थे, सिवाय उतना जितना अल्लाह तआला ने उन्हें बता दिया हो, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं किः “जिसने यह दावा किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसी चीज़ों के विषय में सूचना देते हैं जो कल घटित होने वाली हैं, तो उस ने अल्लाह पर बड़ा बोहतान व झूठ बाँधा”,

﴿ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ ٱلْغَيْبَ لَٱسْتَكْثَرْتُ مِنَ ٱلْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِىَ ٱلسُّوٓءُ إِنْ أَنَا۠ إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴾

अनुवादः (यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता तो मैं बहुत सा लाभ अर्जित कर लेता, और मुझे कोई हानि नहीं पहुँचती, मैं तो केवल लोगों को सावधान करने तथा शुभसूचना देने वाला हूँ जो ईमान (विश्वास) रखते हैं)। सूरह आराफ़ः 188।

(तो अब) भला उनके विषय में ग़ैब जानने का दावा कैसे किया जा सकता है जो अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से कम दर्जा के हैं?!

❒ इस महान नाम (अलीम, सर्वज्ञ) में आपका हिस्सा!

अल्लाह तआला जिसे ज्ञान से अनुग्रहित करता है यद्यपि वह अल्प ही क्यों न हो, उसे उच्च स्थान प्रदान करता हैः

﴿ يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ ﴾

अनुवादः (ऊँचा कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है)। सूरह मुजादलाः 11।

यदि कोई आलिम व ज्ञानी हो, परहेज़गार व सदाचारी हो, अल्लाह की पहचान रखता (ब्रह्मज्ञानी) हो, उसके अधिकारों को अदा करता हो (तो उसके सर्वोच्चता का क्या कहना!) ये वो लोग हैं जिन्होंने अल्लाह के इल्म व ज्ञान पर विश्वास रखा, (जिस से) अल्लाह के प्रति उनकी ख़शीयत (भय) व महानता का भाव और बढ़ गया, इसीलिये अल्लाह तआला ने सात आसमानों के ऊपर से ऐसे लोगों की प्रशंसा करते हुये फ़रमाया हैः

﴿ إِنَّمَا يَخْشَى ٱللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ ٱلْعُلَمَٰٓؤُا۟ ﴾

अनुवादः (अल्लाह से (वास्तव में) उसके वही बंदे डरते हैं जो इल्म व ज्ञान रखते हैं)। सूरह फ़ातिरः 28।

ज्ञात हुआ कि इल्म व ज्ञानः सभी पुनीत व अच्छी ख़सलतो व स्वभावों का आधार है, जो मानव को सर्वोच्चता के शिखर तक पहुँचाता है।

मानव इस स्थान पर तभी विराजमान हो सकता है जब वह ज्ञानी हो, सदा अल्लाह से ज्ञान में वृद्धि की दुआ करे, और हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस दुआ को अपना जाप व वज़ीफ़ा बना ले जिसकी शिक्षा अल्लाह तआला ने आपको दी हैः

﴿وَقُل رَّبِّ زِدۡنِي عِلۡمٗا﴾

अनुवादः (यह प्रार्थना किया करो किः मेरे रब! मेरे ज्ञान में वृद्धि कर)। सूरह ताहाः 114।

इब्ने हज़्म रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "सर्वश्रेष्ठ व सबसे महान ज्ञान एवं विद्या वह है जो आपको अपने रब के निकट ले आये"।

इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "यदि अधिकतर लोग इस स्वाद -ज्ञान अर्जित करने का स्वाद- एवं इसकी महानता से अनभिज्ञ न होते तो, इसको अर्जित करने के लिये एक दूसरे से तलवारबाज़ी करते, परंतु इसे अप्रियता के पर्दा से घेर दिया गया है एवं लोगों पर अज्ञानता का ऐसा पर्दा डाल दिया गया है जिसने उन्हें इस स्वाद व आनंद से वंचित कर दिया है, ताकि अल्लाह तआला जिसे चाहे उसे इस (इल्म व ज्ञान) से अनुग्रहित करे, अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल, एहसान व कृपा वाला है"।

हे अल्लाह! हे व्यापक व समूचित ज्ञान रखने वाले (रब)! हमें उस ज्ञान से अनुग्रहित कर जो हमारे लिये लाभप्रद हो, हमें उस ज्ञान से लाभंवित कर जो तू ने हमें सिखाया है एवं हमारे ज्ञान में वृद्धि कर।

(41)

(अल-अज़ीम जल्ल जलालुहु)

❒ तू पाक व पवित्र है, हे महान व सर्वोच्च!

जिससे चाहता है राज-पाट छीन लेता है, धन-सम्पदा देने के पश्चात निर्धन व दरिद्र बना देता है, उच्चता के पश्चात नीचता तथा शक्ति व बल के पश्चात निर्बलता व दुर्बलता से दोचार करता है, जिसे चाहता है बुलंदी प्रदान करता है, जिसे चाहता है अपनी तौफ़ीक़ से अनुग्रहित करता है, जिसे चाहता है लोगों में उसे स्वीकार्य बना देता है, जिसे चाहता है नवाज़ देता है और जिसे चाहता है वंचित रखता है, तेरे ही हाथ में हर प्रकार की भलाई है, निस्संदेह तू हरेक चीज़ करने में सक्षम व समर्थ है।

तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, तू महान, सर्वोच्च एवं ह़लीम, सहनशील व शालीन है।

عَظُمَت صِفاتُكَ يا عَظِيمُ فَجَلَّ أَن يُحصِي الثَّناءَ عَليكَ فِيها قَائِل

अनुवादः हे महान व उच्च (रब)! तेरी स़िफ़ात व विशेषतायें इतनी महान व वैभवशाली हैं कि किसी के वश में नहीं कि तेरी इन विशेषताओं की वैसी प्रशंसा कर सके जैसी उनकी प्रशंसा होनी चाहिये।

अल-अज़ीम (अज़्ज़ व जल्ल): यह अल्लाह के सुंदर नामों में से है, यह हमारे महान व सर्वोच्च पालनहार का एक महानतम नाम है, जो अपने दामन में अज़मत व जलाल (महानता व प्रताप) तथा महाबल व सरदारी के अर्थों को समेटे हुये है।

(यह ऐसा नाम है जो) हैबत, धाक व तेज की पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ है, इसके अक्षरों में शक्ति तथा अर्थों में सर्वोच्चता पाई जाती है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

अनुवादः (वही सर्वोच्च महान है)। सूरह बक़राः 255।

अल-अज़ीम (अज़्ज़ व जल्ल): अज़मत वाला एवं महान है, उसकी शान निराली है, उसकी लीला अपरम्पार है, उसका स्थान बुलंद है, वह बुद्धि की पकड़ से काफी ऊपर है, जिसकी वास्तविकता व विवरण की कल्पना करना एवं पता लगाना असंभव है।

हमारा परवरदिगार अपनी ज़ात में अज़ीम व महान है, अज़मत व जलाल (महानता व प्रताप) में उसके समान कोई नहीं।

उसकी अज़मत व महानता ही है किः सभी आसमान व ज़मीन उसकी हथेली में राई के दाने से भी तुच्छ हैं:

﴿وَمَا قَدَرُواْ ٱللَّهَ حَقَّ قَدۡرِهِۦ وَٱلۡأَرۡضُ جَمِيعٗا قَبۡضَتُهُۥ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطۡوِيَّٰتُۢ بِيَمِينِهِۦۚ سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ٦٧﴾

अनुवादः (और उन्होंने अल्लाह का जैसा आदर होना चाहिये था वैसा आदर नहीं किया, समस्त भूमि क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और सारा आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा हुआ होगा, वह पाक और पवित्र है तथा मुश्रिकीन जिन चीज़ों को उसका साझीदार बनाते हैं वह उससे बढ़कर है)। सूरह ज़ुमरः 67।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "(अल्लाह तआला की विशाल व लम्बी-चौड़ी) कुर्सी की तुलना में सात आसमान ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में कोई छल्ला पड़ा हो, और अल्लाह तआला की कुर्सी उसके अर्श (सिंहासन) की तुलना में यों है जैसे लोहे का एक छल्ला किसी चटियल मैदान में डाल दिया गया हो"। (यह हदीस सहीह है, इसे इब्ने अबू शैबा ने रिवायत किया है)।

कुर्सी और अर्श की जब यह महानता है -जो कि अल्लाह तआला की मख़लूक़ व रचना है- तो अल्लाह पाक व पवित्र की महानता कैसी होगी, जिसके लिये सर्वोत्तम मिसाल व उदाहरण है, जो अर्श पर मुसतवी (सिंहासन पर विराजमान) है, और जो महा शक्तिशाली अपनी सभी रचनाओं से उच्च है!

हमारा महान व सर्वशक्तिशाली पालनहार अपनी सिफ़ात व विशेषताओं में महान है, वह कमाल व पूर्णता की सभी विशेषताओं से विशेषित है, अपनी रहमत व दया, क़ुद्रत व सामर्थ्य, अपनी नवाज़िश व अनुग्रह, एवं जलाल व जमाल (प्रताप व सुंदरता) में सबसे महान व सर्वोच्च है।

हदीस -ए- क़ुदसी (अर्थात वह हदीस जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब से वर्णन करते हैं) में आया हैः"अल्लाह तआला फ़रमाता हैः किब्रियाई (बड़ाई अर्थात अभिमान व घमण्ड) मेरी चादर है, तथा अज़मत (अर्थात महानता) मेरा तहबंद (अधोवस्त्र,

तहमद) है, जो इन दोनों में किसी एक के लिए भी मुझ से झगड़े (अर्थात इन में किसी एक का दावा करे) मैं उसको जहन्नम में डाल दूँगा"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

हमारा परवरदिगार अपने अफ़आल (कर्मों) में महानतम व सर्वोच्च है, क्योंकि यह अफ़आल (अल्लाह के) न्याय व तत्वदर्शिता, फ़ज़्ल व एह़सान एवं इरादा व मशीअत की व्यापकता व विस्तार को प्रमाणित करती हैं।

وَهُو العَظِيمُ بِكُل مَعنًى يُوجِبُ   التَّعظِيمَ لا يُحْصِيهِ مِن إنسانِ

अनुवादः आदर को वाजिब व अनिवार्य ठहराने वाले सभी अर्थों के साथ वह महान है, उसकी महानता के उन अर्थों को मानव गिन नहीं सकता है।

अल्लाह तआला अपनी महानता में सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान हैः

﴿وَمَا قَدَرُواْ ٱللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِۦ وَٱلْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطْوِيَّٰتٌۢ بِيَمِينِهِۦۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ٦٧﴾

अनुवादः (उन्होंने अल्लाह का वैसा सम्मान नहीं किया जैसा उसका सम्मान करना चाहिए था, और धरती पूरी उसकी एक मुठ्ठी में होगी प्रलय के दिन, तथा आकाश लिपटे हुए होंगे उसके हाथ में, वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं)। सूरह ज़ुमरः 67।

❐ हाथ उठा कर (दुआ करें)!

प्रार्थनायें चाहे जितनी बड़ी एवं अधिक हों, वो अल्लाह के लिये बड़ी नहीं होतीं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ हैः "तुम में से जब कोई दुआ करे तो इस प्रकार से न कहे कि, हे अल्लाह! यदि तू चाहे तो मुझे क्षमा कर दे, बल्कि यक़ीन व विश्वास के साथ दुआ करे और अपनी इच्छा प्रकट करे क्योंकि अल्लाह तआला जो कुछ भी प्रदान करता है, वह उस के लिये बड़ी बात नहीं"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

हमारा पालनहार अपनी रह़मत व कृपा, मग़फ़िरत व क्षमा में महान है, अपनी शालीनता व उदारता में महान है, उसके लिये यह कदापि कठिन नहीं कि वह बंदे को क्षमा कर दे।

स़ह़ीह़ैन के अंदर सिफ़ारिश वाली ह़दीस़ में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः (अल्लाह तआला कहेगाः) "हे मुहम्मद! अपना सिर उठाओ, जो कहोगे

सुना जायेगा, जो माँगोगे दिया जायेगा, जो सिफ़ारिश करोगे स्वीकार किया जायेगा। मैं कहूँगाः हे रब! मुझे उन के विषय में भी अनुमति दीजीये जिन्होंने "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहा है। अल्लाह तआला फ़रमायेगाः मेरी इज़्ज़त (सर्वशक्तिमान होने), मेरे जलाल (प्रताप), मेरी किब्रियाई (बड़प्पन), मेरी बड़ाई की क़सम! इसमें से (मैं) उन्हें भी निकालूँगा जिन्होंने कलेमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहा है"।

وَلَمَّا قَسَا قَلبِي وَضَاقَت مَذَاهِبِي جَعلتُ رَجَائِي نَحوَ عَفوِكَ سُلَّمَا
تَعَاظَمَنِي ذَنبِي فَلمَّا قَرَنتُه بِعَفوِكَ رَبِّي صَارَ عَفوُكَ أَعظَمَا

अनुवादः जब मेरा हृदय कठोर हो गया तथा मेरे सभी मार्ग अवरुद्ध हो गये, तो तेरे अफ़्व, दरगुज़र व माफी तक पहुँचने के लिये मैंने आशा को अपनी सीढ़ी बना लिया। मेरे ऊपर पापों का ढ़ेर लग गया, किंतु हे मेरे पालनहार! जब मैंने अपने पापों की तुलना तेरे अफ़्व, दरगुज़र व माफी से की तो तेरी माफी उससे कहीं बढ़ कर नज़र आई।

❒ जिसने महानतम व सर्वोच्च (रब) की शरण ली, वह मुक्ति पा गया ...

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है किः "आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मस्जिद में पधारते तो यह दुआ पढ़तेः

"أعوذُ باللهِ العظيمِ، وبوجهِهِ الكريم، وسُلطانِه القديم، من الشَّيطانِ الرَّجيم"

(अर्थातः मैं महान अल्लाह की, उसकी करीम व उदार ज़ात व व्यक्तित्व की तथा उसकी प्राचीन बादशाहत की शरण चाहता हूँ, धिक्कारित व दुत्कारे हुये शैतान से)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जब मस्जिद में प्रवेश करने वाला व्यक्ति यह दुआ पढ़ता है तो शैतान कहता किः अब वह दिन भर के लिये मेरी बुराई व दुष्टता से सुरक्षित हो गया)"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

जो व्यक्ति अपनी ज़ुबान से महान व सर्वशक्तिशाली अल्लाह की महानता का बखान करे, उसका स्तुति गान करे, क़्यामत के दिन उसका मीज़ान (तराज़ू, तुला) भारी होगा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप ने फ़रमायाः "दो कलेमा (जाप, वाक्य) ऐसे हैं, जो ज़ुबान पर बड़े हल्के एवं मीज़ान में बड़े भारी तथा रह़मान (अल्लाह) को अति प्रिय हैं: سُبْحَانَ اللهِ وبِحَمْدِهِ ، سُبحانَ اللهِ العظيم सुब्ह़ानल्लाहिल अज़ीम, सुब्ह़ानल्लाह व बिह़म्दिहि (अर्थातः अल्लाह तआला की पाकी व पवित्रता का बखान करता

हूँ तथा उसकी प्रशंसा व स्तुति करता हूँ, पाक व पवित्र अल्लाह की महनता का बखान करता हूँ"।

बल्कि अल्लाह तआला ने अपने बंदों को इस नाम की तस्बीह़ व जाप करने का आदेश दिया है, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान हैः

﴿فَسَبِّحۡ بِٱسۡمِ رَبِّكَ ٱلۡعَظِيمِ ۝٧٤﴾

(अतः हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की)। सूरह वाक़िआः 74।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी अपनी उम्मत को यह आदेश दिया है कि वह नमाज़ में इस महान नाम की तस्बीह़ व जाप किया करें: "रुकूअ में पाक व पवित्र रब की महानता का बखान करो"। (मुस्लिम)।

❒ समृद्धि व खुशहाली की चाभी!

जब कोई आकस्मिक आपदा आ जाये, दम घुटने लगे तथा आप चिंता से व्याकुल हो जायें, तो यह दुआ पढ़ें:

لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ وَالْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

अनुवादः अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं जो महान एवं ह़लीम (सहनशील) है, अल्लाह के अलावा कोई सत्य उपास्य नहीं जो महान सिंहासन का स्वामी है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा आराध्य नहीं जो आसमानों का रब एवं ज़मीन का रब तथा महान व उदार सिंहासन का रब है। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)।

यदि किसी शासक से भय लगे (तो जान लीजिये कि) अल्लाह का शासन सबसे बड़ा है, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु यह दुआ किया करते थेः

اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، كُنْ لِي جَارًا مِنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ وَأَحْزَابِهِ مِنْ خَلَائِقِكَ، أَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ أَحَدٌ مِنْهُمْ أَوْ يَطْغَى، عَزَّ جَارُكَ، وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ

(अर्थातः हे अल्लाह! सात आसमानों एवं अर्श -ए- अज़ीम (महान सिंहासन) के रब! अमूक पुत्र अमूक एवं उसके समूह से -जो कि तेरी ही रचना हैं- मुझे अपना आश्रय दे कि उन

में से कोई मुझ पर अत्याचार अथवा उद्दंडता दिखाये, तेरा आश्रय बड़ा शक्तिशाली है, तेरी स्तुति व प्रशंसा बड़ी महान है, और तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भोर एवं सांझ (धरती में) धँसने से अल्लाह की अज़मत व महानता की शरण माँगा करते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमातेः

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي

(अर्थातः मैं तेरी अज़मत व महानता की शरण चाहता हूँ, इस बात से कि मैं अचानक अपने नीचे से पकड़ लिया जाऊँ)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

यही कारण है कि जो (अल्लाह) अज़ीम, महान व सर्वोच्च की शरण में आ जाये, उसका सामीप्य प्राप्त करने का प्रयास करे, और परहेज़गारों व सदाचारियों में शामिल हो जाये तो वह इस लोक में अमन व शांति से लाभांवित होता है तथा परलोक में स़वाब व पुण्य का लाभार्थी होगा, अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يُكَفِّرۡ عَنۡهُ سَيِّـَٔاتِهِۦ وَيُعۡظِمۡ لَهُۥٓ أَجۡرًا﴾

अनुवादः (जो अल्लाह का तक़्वा अपनायेगा (डरेगा) वह (अल्लाह) क्षमा कर देगा उस से उस के दोषों को तथा प्रदान करेगा उसे बड़ा प्रतिफल)। सूरह त़लाक़ः 5।

अल्लाह तआला के निकट सबसे बड़ा दर्जा उन लोगों का है जिन के बारे में महान व सर्वोच्च अल्लाह फ़रमाता हैः

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَهَاجَرُواْ وَجَٰهَدُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ بِأَمۡوَٰلِهِمۡ وَأَنفُسِهِمۡ أَعۡظَمُ دَرَجَةً عِندَ ٱللَّهِۚ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡفَآئِزُونَ ٢٠﴾

अनुवादः (जो लोग ईमान लाये तथा हिजरत कर गये, और अल्लाह के मार्ग में अपने धनों एवं प्राणों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उन का बहुत बड़ा पद है, और वही सफल होने वाले हैं)। सूरह तौबाः 20।

जो अल्लाह के साथ शिर्क (बहुदेववादिता) करे और महान व सर्वोच्च अल्लाह पर उसका ईमान व विश्वास कम हो जाये, तो उसको बदला व प्रतिफल भी उसी के समान मिलेगा जोकि जहन्नम (नरक) है -अल्लाह तआला इससे हमारी सुरक्षा करे-:

﴿خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝٣٠ ثُمَّ ٱلْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝٣١ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَٱسْلُكُوهُ ۝٣٢ إِنَّهُۥ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ ٱلْعَظِيمِ ۝٣٣﴾

अनुवादः (-आदेश होगा कि- उसे पकड़ो तथा उसके गले में तौक (पट्टा) डाल दो। फिर नरक में उसे झोंक दो। तत्पश्चात उसे एक ज़ंजीर, जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ है, में जकड़ दो। वह ईमान नहीं रखता था महिमाशाली अल्लाह पर)। सूरह ह़ाक़्क़ाः 30-33।

❒ मुस्लिम बंदा अपने रब का सम्मान व आदर कैसे करे?!

महान व सर्वोच्च अल्लाह के सम्मान व आदर का ढ़ंग यह है किः उसके अस्मा व स़िफ़ात (प्यारे नामों एवं विशेषताओं) का सम्मान किया जाये, दिल से उसका सम्मान करने का तरीका यह है कि उससे प्रेम रखा जाये, उसकी महानता का एतराफ़ व इकरार किया जाये तथा उस के लिये विनम्रता व श्रद्धा अपनाई जाये, "मुसनद अह़मद" में आया है किः जो व्यक्ति बड़ा बन कर तथा अकड़ कर चले, वह अल्लाह को इस हाल में मिलेगा कि वह (अल्लाह) उस पर अति क्रोधित होगा। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

महान व सर्वोच्च अल्लाह के सम्मान व आदर का ढ़ंग यह भी है किः ज़ुबान से (उसकी महानता का बखान किया जाये तथा) अधिकाधिक उसका ज़िक्र व स्मरण किया जायेः

﴿فَسَبِّحْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلْعَظِيمِ ۝٧٤﴾

(अतः हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की)। सूरह वाक़िआः 74।

शारीरिक अंगों द्वारा सर्वशक्तिशाली व महान अल्लाह के आदर सत्कार का ढ़ंग यह भी है किः अल्लाह के आज्ञापालन में इन (शारीरिक अंगों) का प्रयोग किया जाये, उसका आदर यह है कि उसके आदेशों का अनुपालन किया जाये, उसके आदेशों का उल्लंघन न किया जाये, उसका स्मरण व ज़िक्र किया जाये, उसे भूला न जाये, उसका शुक्र व धन्यवाद अदा किया जाये, उसका कृतघ्न व नाशुक्रा न बना जाये।

महान व सर्वोच्च अल्लाह के सम्मान व आदर का ढ़ंग यह भी है किः उसके रसूलों, फ़रिश्तों एवं इबादतों का सम्मान व आदर किया जाये, जैसे नमाज़, ज़कात, रोज़ा, हज एवं

उमरा तथा इन जैसी अन्य दीनी शआइर अर्थात धार्मिक प्रतिकों व चिह्नों तथा अह़काम अर्थात धार्मिक प्रावधानों का सम्मान किया जायेः

﴿ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ شَعَٰٓئِرَ ٱللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقۡوَى ٱلۡقُلُوبِ ٣٢﴾

अनुवादः (यह (अल्लाह का आदेश है), और जो आदर करे अल्लाह के प्रतीकों (निशानियों) का, तो निःसंदेह यह दिलों के आज्ञाकारी होने की बात है)। सूरह हजः 32।

सर्वशक्तिशाली व महान अल्लाह के आदर सत्कार का तरीका यह भी है कि उसकी किताब का सम्मान किया जाये, क्योंकि महान व सर्वोच्च अल्लाह ने अपनी सम्माननीय किताब को महान कहा हैः

﴿وَلَقَدۡ ءَاتَيۡنَٰكَ سَبۡعٗا مِّنَ ٱلۡمَثَانِي وَٱلۡقُرۡءَانَ ٱلۡعَظِيمَ ٨٧﴾

अनुवादः (-हे नबी!- हम ने आप को सात ऐसी आयतें दी हैं जो बारंबार दोहराई जाती हैं, तथा महा क़ुरआन प्रदान किया है)। सूरह ह़िज्रः 87।

महाबली व महाशक्तिशाली अल्लाह के आदर सत्कार का एक ढ़ंग यह भी है किः उसकी ह़ुरमतों (वर्जनाओं व निषेधों) एवं मोमिनों की ह़ुरमतों का सम्मान किया जायेः

﴿ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ حُرُمَٰتِ ٱللَّهِ فَهُوَ خَيۡرٞ لَّهُۥ عِندَ رَبِّهِۦۗ﴾

अनुवादः (यह है (आदेश) और जो अल्लाह के निर्धारित किये प्रतिबंधों का आदर करे, तो यह उसके लिये अच्छा है उसके पालनहार के पास)। सूरह हज्जः 30।

सर्वशक्तिशाली व महान अल्लाह के आदर सत्कार का तरीका यह भी है किः बंदा उसके कलाम, कथन व आदेश पर किसी के कलाम, कथन व आदेश को वरीयता न दे, चाहे वह जिस पद पर भी आसीन होः

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تُقَدِّمُواْ بَيۡنَ يَدَيِ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦۖ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٞ ١﴾

अनुवादः (हे लोगों! जो ईमान लाये हो आगे न बढ़ो अल्लाह तथा उस के रसूल से और डरो अल्लाह से, वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है)। सूरह ह़ुजुरातः 1।

يَا فَاطِرَ الخلقِ البَدِيعِ وكَافِلا   رِزقَ الْجَمِيعِ سَحابُ جُودِكَ هَاطِلٌ
عَظُمَت صِفاتُكَ يَا عَظِيمُ فَجَلَّ أَن   يُحْصِي الثَّناءَ عَليكَ فِيها قَائل
هَا قَد أَتَيتُ وَحُسنُ ظَنِّي شَافِعِي   وَسائِلِي نَدِمٌ وَدَمعٌ سَائِلٌ
فَاغفِر لِعَبدِك مَا مَضى وارْزُقهُ تَو   فِيقًا لِما تَرضَى فَفضلُكَ كَامِلٌ
وَافعَل بِهِ مَا أَنتَ أَهلُ جَمِيلِهِ   وَالظنُ كُلُّ الظَنِّ أَنَّكَ فَاعِلٌ

अनुवादः ऐ अनमोल व अनुपम मख़लूक़ (रचना) के रचयिता तथा समस्त प्राणियों की आजीविका की ज़मानत लेने वाले (पालनहार!) तेरी सख़ावत व उदारता का बादल (हर समय) बरसता रहता है। हे महान व सर्वोच्च (परवरदिगार)! तेरी सिफ़ात व विशेषताएं बड़ा महान, विशाल एवं उच्च हैं, कोई प्रशंसक व स्तुति गान करने वाला तेरी प्रशंसा व स्तुति गान का हक नहीं अदा कर सकता। मैं तेरे दरबार में आ चुका हूँ, (तेरे विषय में) मेरा हुस्न -ए- ज़न्न (अच्छी उम्मीद) मेरा सिफ़ारिशी (अभिस्तावक) है, नदामत, पश्चात्ताप व लज्जा एवं बहते आँसू मेरे माध्यम हैं। तू अपने बंदे के समस्त पिछली गुनाहों को माफ़ कर दे और उसे अपने प्रिय कर्म की तौफ़ीक़ प्रदान कर, तेरा फ़ज़्ल, एहसान व कृपा कमाल व पूर्णता को पहुँचा हुआ है। उसके साथ फ़ज़्ल, एहसान व कृपा का मामला कर जिसके तू योग्य है, (मुझे) पूर्ण विश्वास है कि तू ऐसा अवश्य ऐसा करेगा।

हे महान व सर्वोच्च अल्लाह! मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि तू हमें उन परहेज़गारों व सदाचारियों में शामिल फ़रमा जो नियामतों वाली जन्नत से लाभांवित होंगे।

(42)

(अल-क़वी जल्ल जलालुहु)

يَا رَب عُدتُ إِلى رِحَابِكَ تَائِبًا ‏ ‏ مُستَسلِمًا مُستَمسِكًا بِعُرَاكَا

مَا لِي وَما لِلأَقوِياءِ وَأَنتَ يَا ‏ ‏ رَبِّي عَظِيمُ الشأنِ ما أَقوَاكَا

إِنِّي أَوَيتُ لِكُلِّ مَأوى فِي الحياةِ ‏ ‏ فَمَا رَأيتُ أَعَزَّ مِن مَأوَاكَا

अनुवादः हे मेरे पालनहार! मैं प्रायश्चित्त कर के, आत्मसमर्पण के साथ, एवं तेरे बंधन को थामे हुये तेरे दरबार में वापस आ चुका हूँ। (तेरे समक्ष) मेरी एवं अन्य शक्तिशाली लोगों की क्या बिसात, हे मेरे पालनहार! तू अति वैभवशाली व महान है, तू महाशक्तिशाली व महाबली है, मैंने संसार के सभी दरबार में जा कर देख लिया, तेरे दरबार से अधिक सम्माननीय आश्रय व पनाह कहीं नहीं दिखाई दिया।

हम अपने उस पाक, पवित्र व उच्च रब की बात कर रहे हैं, जिसका फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلرَّزَّاقُ ذُو ٱلْقُوَّةِ ٱلْمَتِينُ ۝٥٨﴾

अनुवादः (निस्संदेह अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान है)। सूरह ज़ारियातः 58।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿وَرَدَّ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا۟ خَيْرًا ۚ وَكَفَى ٱللَّهُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ٱلْقِتَالَ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۝٢٥﴾

अनुवादः (तथा फेर दिया अल्लाह ने काफ़िरों को (मदीना से) उन के क्रोध के साथ, वह नहीं प्राप्त कर सके कोई भलाई, और पर्याप्त हो गया अल्लाह ईमान वालों के लिये युद्ध में, और अल्लाह अति शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली है)। सूरह अहज़ाबः 25।

एक स्थान पर अल्लाह रब्बुल आलमीन का इर्शाद हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ قَوِىٌّ عَزِيزٌ﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह महाशक्तिशाली व ज़बरदस्त है)। सूरह हदीदः 25।

हमारा महाबली व महाशक्तिशाली रब वह है जिसे न कोई कमज़ोरी लगती है और न दुर्बलता तथा न कोताही, और न ही वह उकताहट व सुस्ती से प्रभावित होता है।

हमारा सर्वशक्तिशाली व महान अल्लाह वह है जिस पर कोई विजय व प्रभुत्व नहीं प्राप्त कर सकता, न कोई उसे (अपने इरादा से) रोक सकता है, न कोई उस (की मशीअत व चाह) को फेर सकता है, और न कोई उसके फैसले को टाल सकता है, उसके लिये पूर्ण शक्ति व बल तथा मुकम्मल इरादा व मशीअत है।

वह सर्वशक्तिशाली व महान (अल्लाह) शक्ति व बल में इंतहा को पहुँचा हुआ है।

हमारा सर्वशक्तिशाली व महान परवरदिगार अपनी शक्ति में पूर्ण व कामिल है, प्रत्येक चीज़ पर प्रभुत्व रखने वाला है, उसे किसी भी स्थिति में थकान नहीं आती और न वह विवश होता है, वह पाक व उच्च (अल्लाह) जिस समय चाहता है, धरती या आकाश में अपना आदेश प्रचलित कर देता है।

वह सर्वशक्तिशाली व महान (अल्लाह) अपनी पकड़ व दंड में भी शक्तिशाली व महाबली है।

वह सभी शक्तियों में अलग हैः

(सभी शक्तियाँ अल्लाह ही को है)। सूरह बक़रहः 165।

وَهُوَ القَوِيُّ بِقُوَّةٍ فِي وَصفِهِ   وَعَلَيكَ يَقدِرُ يا أَخا السُّلطَانِ

अनुवादः वह महाशक्तिशाली व महाबली है, अपनी स़िफ़त व विशेषता में शक्ति व बल से विशेषित है, हे (सांसारिक) बादशाह! वह तुझे परास्त करने में भी सक्षम है।

❒ सारी शक्ति व सामर्थ्य उसी से प्राप्त होती हैं ...

हमारे दिल आख़िर उससे क्यों न जुड़े रहें?! हम अपनी सांसारिक गतिविधियों एवं आवश्यकताओं में उस पर ही क्यों न भरोसा करें?! हम उसकी शक्ति व बल, समृद्धि व बेनियाज़ी के बेहद मोहताज हैं!!

हमें केवल उस पाक, पवित्र व महान (अल्लाह) की शक्ति व तौफ़ीक़ से ही (किसी काम की) शक्ति, सामर्थ्य व तौफ़ीक़ मिलती है, उस (की तौफ़ीक़ व शक्ति ही) से हमें पापों से बचने एवं अपने नफ़्स (अपने आप) की बुराई व दुष्टता को दूर करने की क्षमता प्राप्त होती है।

यह वह शक्ति है जिस से महान व सर्वशक्तिशाली अल्लाह जिसको चाहता है नवाज़ देता है, ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार से आम जीविका (को अपनी मख़लूक़ व रचना के मध्य बाँटता है)।

इंसान दुर्बल (प्राणी) है ... वह कमज़ोर पैदा हुआ, निर्बलता की स्थिति में उसका जन्म हुआ और निर्बलता की स्थिति ही में वह मरता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَخُلِقَ ٱلۡإِنسَٰنُ ضَعِيفٗا﴾

अनुवादः (इंसान कमज़ोर पैदा किया गया है)। सूरह निसाः 28।

एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿ٱللَّهُ ٱلَّذِي خَلَقَكُم مِّن ضَعۡفٖ ثُمَّ جَعَلَ مِنۢ بَعۡدِ ضَعۡفٖ قُوَّةٗ ثُمَّ جَعَلَ مِنۢ بَعۡدِ قُوَّةٖ ضَعۡفٗا وَشَيۡبَةٗۚ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُۚ وَهُوَ ٱلۡعَلِيمُ ٱلۡقَدِيرُ ٥٤﴾

अनुवादः (अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया तुम्हें निर्बल दशा से फिर प्रदान किया निर्बलता के पश्चात बल, तत्पश्चात कर दिया बल के पश्चात निर्बल एवं बूढ़ा, वह उत्पन्न करता है जो चाहता है, और वही सर्वज्ञ सब सामर्थ्य रखने वाला है)। सूरह रूमः 54।

❒ अल्लाह तआला के दिन रात ...

जब बहुतेरे लोगों ने इस वास्तविकता को भुला दिया -कि इंसाम मूल रूप से निर्बल प्राणी है और प्रत्येक कार्य करने की क्षमता व सामर्थ्य अल्लाह तआला से ही प्राप्त होती है- तो शैतान ने उन्हें अपनी शक्ति के अहंकार में इतना लीन व लिप्त कर दिया कि वो महान सर्वशक्तिशाली अल्लाह के बल व शक्ति को भूल गये, परिणामस्वरूप अपनी गुमराही व दिग्भ्रमिता में भटकते रहे! ...

उदाहरणस्वरूप आद समुदाय को ही देख लें जिसके बारे में महाशक्तिशाली अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿فَأَمَّا عَادٌ فَٱسۡتَكۡبَرُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ بِغَيۡرِ ٱلۡحَقِّ وَقَالُواْ مَنۡ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةًۖ أَوَلَمۡ يَرَوۡاْ أَنَّ ٱللَّهَ ٱلَّذِي خَلَقَهُمۡ هُوَ أَشَدُّ مِنۡهُمۡ قُوَّةٗۖ وَكَانُواْ بِـَٔايَٰتِنَا يَجۡحَدُونَ ١٥﴾

अनुवादः (रहे आद, तो उन्होंने अभिमान किया धरती में अवैध, तथा कहा कि कौन हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिस ने उन को पैदा किया है उन से अधिक है बल में, तथा हमारी आयतों को नकारते रहे)। सूरह ह़ा मीम सज्दाः 15।

जब हूद अलैहिस्सलाम ने उन से कहा किः अल्लाह से डरो एवं केवल उसी की इबादत व उपासना करो तो वह कहने लगेः

﴿مَنۡ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةًۖ﴾

अनुवादः (हम से शक्तिशाली व ज़ोरावर कौन है?)।

हमने बंदों को परास्त कर दिया, हम अपनी शक्ति व बल से किसी भी अज़ाब व यातना को टाल सकते हैं!!... उन्हें उनकी शारीरिक लम्बाई-चौड़ाई व कद-काठ ने धोखे में डाल दिया, इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं किः "उन में का सबसे लम्बा व्यक्ति सौ गज़ का था, जब्कि सबसे नाटा व्यक्ति साठ गज़ का था"।

जब उनका चैलेंज व चुनौती अपनी सीमा को पार कर गया तथा वो अवज्ञा एवं उद्दंडता की पराकाष्ठा को पहुँच गये तो महान व सर्वशक्तिशाली अल्लाह ने उन पर अपनी एक फौज भेज दीः (और वह थी) नहूसत व अमंगल दिन में तेज़ आंधी व तूफ़ान, सर्वशक्तिशाली व महान अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿فَأَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ رِيحٗا صَرۡصَرٗا فِيٓ أَيَّامٖ نَّحِسَاتٖ لِّنُذِيقَهُمۡ عَذَابَ ٱلۡخِزۡيِ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَاۖ وَلَعَذَابُ ٱلۡأٓخِرَةِ أَخۡزَىٰۖ وَهُمۡ لَا يُنصَرُونَ ١٦﴾

अनुवादः (अंततः हम ने भेज दी उन पर प्रचण्ड वायु कुछ अशुभ दिनों में, ताकि चखायें उन्हें अपमानकारी यातना सांसारिक जीवन में, और आख़िरत (परलोक) की यातना अधिक अपमानकारी है, तथा उन्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी)। सूरह ह़ा मीम सज्दाः 16।

सम्पूर्ण इतिहास में इस धरा पर अल्लाह तआला की यह सुन्नत रही है किः जो व्यक्ति अपनी शक्ति व बल पर अहंकार करता है उसका परिणाम आद समुदाय के समान ही होता है

कि उसे ज़बरदस्त, महाशक्तिशाली व ज़ोरावर बादशाह (अल्लाह) की शक्ति अपने शिकंजे में ले लेती है।

इसीलिये अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फ़रमायाः

﴿قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ ثُمَّ ٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَـٰقِبَةُ ٱلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾﴾

अनुवादः (हे नबी!, उन से कहो कि धरती में फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का दुष्परिणाम क्या हुआ?)। सूरह अनआमः 10।

संभवतः वह पिछले समुदाय के दुष्परिणाम से सीख लें! बहुतेरे समुदाय ने अल्लाह और उसके रसूलों का इंकार किया, अपनी शक्ति व बल, वैभव व ऐश्वर्य एवं सांसारिक भवनों पर अहंकार करते रहे, फिर बड़े प्रभुत्वशाली व ज़बरदस्त पकड़ने वाले अल्लाह ने उन्हें पकड़ लियाः

﴿فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنۢبِهِۦ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُم مَّنْ أَخَذَتْهُ ٱلصَّيْحَةُ وَمِنْهُم مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ ٱلْأَرْضَ وَمِنْهُم مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَـٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾﴾

अनुवादः (प्रत्येक को हमने पकड़ लिया उसके पाप के कारण, तो इन में से कुछ पर पत्थर बरसाये, और उन में से कुछ को पकड़ा कड़ी व कर्कश ध्वनी ने तथा कुछ को धंसा दिया धरती में, और कुछ को डुबो दिया, एवं नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता परंतु वो स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे)। सूरह अन्कबूतः 40।

मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को अह़ज़ाब युद्ध के समय अपने घेरे में ले लिया ताकि उनके अस्तित्व को इस धरती से मिटा दें, परंतु अल्लाह तआला ने आँधी के रूप में अपनी एक फौज भेजी जिसने उन्हें मदीना के आस-पास से फरार होने पर विवश कर दियाः

﴿وَرَدَّ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا۟ خَيْرًا ۚ وَكَفَى ٱللَّهُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ٱلْقِتَالَ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ﴿٢٥﴾﴾

अनुवादः (तथा फेर दिया अल्लाह ने काफ़िरों को (मदीना से) उन के क्रोध के साथ, वह नहीं प्राप्त कर सके कोई भलाई, और पर्याप्त हो गया अल्लाह ईमान वालों के लिये युद्ध में, और अल्लाह अति शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली है)। सूरह अह़ज़ाबः 25।

एक बच्चा, अपने समय के शासक का सर्वनाश कर देता है, पानी एक समुदाय का नाश कर देता है, समुद्र सम्पूर्ण सेना को पूर्णतः तबाह कर देता है, मच्छर नमरूद को अपमानित व विवश कर देता है, धरती क़ारून को निगल जाती है और पक्षी अबरहा को रौंद देते हैं ...

निस्संदेह वह (अल्लाह) बड़ा शक्तिशाली है, वह महान व सर्वोच्च अपनी शक्ति से आप को आश्चर्य में डाल देगा।

إِلَى اللهِ كُلُّ الأَمرِ فِي الخلقِ كُلِه   وَلَيسَ إِلَى الخَلقِ شَيءٌ مِن الأَمرِ

अनुवादः समस्त प्राणियों के सभी मामले अल्लाह ही के हाथ में हैं, मख़लूक़ व प्राणी के वश में कुछ भी नहीं।

❒ क्या मैं आप को न बता दूँ?!

अल्लाह तआला का महान नाम (अल-क़वी, महाशक्तिशाली एवं महाबली) के संबंध में बंदों का ज्ञान जितना बढ़ेगा उसी के समान महान सर्वोच्च अल्लाह तआला पर उसका भरोसा भी बढ़ेगा, वह अपनी शक्ति उसी (अल्लाह) से हासिल करेगा, वह इस प्रकार से कि वह अपनी शक्ति एवं बल को कुछ भी नहीं समझेगा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप ने अपने स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमायाः "मैं तुम्हें एक ऐसा कलेमा (जाप) न बता दूँ जो जन्नत के कोषों में से एक कोष है? वह है "ला ह़ौल व ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह, لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ"।" अर्थातः एक स्थिति से दूसरी स्थिति की ओर जाने की शक्ति व सामर्थ्य केवल एक महान व सर्वोच्च अल्लाह की सहायता व मदद एवं उसकी तौफ़ीक़ व ताईद से ही प्राप्त होती है। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है, एवं उपरोक्त शब्द बुख़ारी के हैं)।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "कठिन मामलों को सुलझाने में, कष्टों को झेलने में, बादशाहों और रोबदार व्यक्तित्व से भेंट करने में, कठिन एवं दुशवार मरहलों को तय करने में एवं निर्धनता व दरिद्रता को दूर करने में इस कलेमा (जाप) का आश्चर्यजनक प्रभाव प्रकट होता है"।

महान व सर्वशक्तिशाली (अल्लाह) को यह प्रिय है कि वो आपको विनम्रता व शालीनता के साथ उसकी शक्ति व बल का जिक्र व उल्लेख करते हुये देखेः

﴿وَلَوْلَآ إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ ٱللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِٱللَّهِ ۚ إِن تَرَنِ أَنَا۠ أَقَلَّ مِنكَ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٣٩﴾﴾

अनुवादः (और क्यों नहीं जब तुम ने अपने बाग़ में प्रवेश किया, तो कहा कि जो अल्लाह चाहे, अल्लाह की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता, यदि तू मुझे देखता है कि मैं तुझ से कम हूँ धन तथा संतान में)। सूरह कह्फ़ः 39।

अल्लाह तआला अपने विनीत व विनम्र बंदों से प्रेम तो करता ही है, साथ ही वह शक्तिशाली मोमिनों को भी प्रिय रखता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "शक्तिशाली मोमिन अल्लाह तआला के निकट दुर्बल मोमिन से उत्तम व प्यारा है, और दोनों में से प्रत्येक में ख़ैर व भलाई है"। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

ये दोनों विशेषताएं -विनम्रता व शक्ति- अल्लाह तआला के निम्न फ़रमान में एक साथ प्रयुक्त हुये हैं:

﴿أَذِلَّةٍ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ﴾

अनुवादः (वो ईमान वालों के लिये कोमल तथा काफ़िरों के लिये कठोर होंगे)। सूरह माइदाः 54।

मुस्लिम उम्मत की शक्ति व बल का आधार केवल ज्ञान एवं कर्म पर है, क्योंकि अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَأَعِدُّوا۟ لَهُم مَّا ٱسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ ٱلْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِۦ عَدُوَّ ٱللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَءَاخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ ٱللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا۟ مِن شَىْءٍ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾﴾

अनुवादः (तथा तुम से जितनी हो सके उन के लिये शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिये घोड़े तैयार रखो, जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को और इन के सिवा दूसरों को डराओ जिन को तुम नहीं जानते, उन्हें अल्लाह ही जानता है, और अल्लाह की राह में तुम जो भी व्यय (ख़र्च) करोगे तो तुम्हें पूरा मिलेगा, और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा)। सूरह अनफ़ालः 60।

तुम अल्लाह के लिये वैसे हो जाओ जैसे वह चाहता है, वह तुम्हारे लिये तुम्हारी चाहत व इरादा से बढ़ कर हो जायेगा! हे अल्लाह! हे शक्तिशाली व महाबली ... ज़बरदस्त! हमें अत्याचारियों पर विजय व प्रभुत्व प्रदान कर।

(43)

(अल-मतीन जल्ल जलालुहु)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः “एक व्यक्ति किसी आवश्यकता के तहत वन की ओर निकल गया, उसकी पत्नी ने कहाः हे अल्लाह! हम को रिज़्क़ दे ताकि हम आटा गूंथ कर रोटियाँ पका सकें। जब वह व्यक्ति वापस आया तो देखता है कि टब (तसला, बरतन) आटे से भरा हुआ है, तंदूर में (पशु की) पसलियों का भुना हुआ मांस मौजूद है और चक्की अनाज पीस रही है। उसने प्रश्न कियाः यह रिज़्क़ कहाँ से आ गया? उसकी पत्नी ने उत्तर दियाः यह अल्लाह का प्रदान किया हुआ रिज़्क़ है, जब उसने आस-पास से चक्की साफ की (तो वह रुक गई)। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “यदि वह इसे उसी स्थिति में छोड़े रखता तो क़यामत के दिन तक वह चक्की आटा पीसती रहती”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे त़बरानी ने “अल-मोअजम अल-औसत़” में रिवायत किया है)।

यह उस व्यक्ति के लिये संदेश है जो ग़म से निढ़ाल हो, जिसकी स्थिति कमज़ोर व दुर्बल हो चुकी हो, जो जीवन से तंग आ चुका हो, अपने रात-दिन (की नीरसता) से ऊब चुका हो, दुःख व पीड़ा का कड़वा घोंट अपने गले से नीचे उतार रहा हो, उसके लिये शुभ सूचना है कि निकटतम विजय व सहायता एवं स्पष्ट सफलता उसकी दहलीज़ व ड्योढ़ी पर है, तंगी के पश्चात समृद्धि, कड़े समय के पश्चात आसानी एवं कमज़ोरी व दुर्बलता के पश्चात बल व शक्ति प्राप्त हो कर रहती हैः

﴿وَعۡدَ ٱللَّهِۖ لَا يُخۡلِفُ ٱللَّهُ وَعۡدَهُۥ﴾

अनुवादः (अल्लाह का वादा है, अल्लाह तआला अपने वादा को नहीं तोड़ता)। सूरह रूमः 6।

आइये हम अल्लाह तआला के अच्छे व प्यारे नामों में से एक महान नामः (अल-मतीन, अर्थातः बलवान व ज़ोरावर) में सोच-विचार करें।

﴿إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلرَّزَّاقُ ذُو ٱلۡقُوَّةِ ٱلۡمَتِينُ ۝٥٨﴾

अनुवादः (निस्संदेह अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान है)। सूरह ज़ारियातः 58।

हमारा पाक परवरदिगार, अल-मतीन, अर्थातः ज़ोरावर एवं बलवान है।

वह पाक व पवित्र अपने बल व सामर्थ्य में कमाल व पूर्णता की पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ है, चुनाँचे वह बड़ा बलवान व महा शक्तिशाली है, उसकी शक्ति कभी समाप्त नहीं हो सकती, न उसे अपने कार्यों में कोई कठिनाई एवं थकान होती है, हर प्रकार की बड़ाई व वैभव उसी के लिये है, वह अपने मामलों पर ग़ालिब व प्रभावशाली है, वह ऐसी शक्ति व सामर्थ्य का स्वामी है जिसे कभी किसी प्रकार की विवशता नहीं हो सकती।

❒ वो कहाँ हैं?!

अल्लाह तआला ने हमें यह बताया है कि वह पाक, पवित्र व बलवान (अल-मतीन, अर्थातः ज़ोरावार) हैः उन समुदायों के लिये जो उसके आदेश से विमुखता प्रकट करें एवं उसके रसूलों की अवज्ञा करें, इसके अतिरिक्त अपनी शक्ति व सामर्थ्य का दावा करें, अल्लाह तआला ऐसे समुदाय की बड़ी कड़ी ख़बर लेता हैः

﴿فَأَمَّا عَادٌ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَقَالُوا۟ مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّ ٱللَّهَ ٱلَّذِى خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَا يَجْحَدُونَ ۝١٥﴾

अनुवादः (रहे आद, तो उन्होंने अभिमान किया धरती में अवैध, तथा कहा कि कौन हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिस ने उन को पैदा किया है उन से अधिक है बल में, तथा हमारी आयतों को नकारते रहे)। सूरह ह़ा मीम सज्दाः 15।

उनका अंजाम क्या हुआ, इसको सर्वशक्तिशाली व महान अल्लाह ने यों बयान किया हैः

﴿فَأَصْبَحُوا۟ لَا يُرَىٰٓ إِلَّا مَسَـٰكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْقَوْمَ ٱلْمُجْرِمِينَ﴾

अनुवादः (तो वे ऐसे हो गये कि नहीं दिखाई देता था कुछ उन के घरों के अतिरिक्त, इसी प्रकार हम बदला दिया करते हैं अपराधी लोगों को)। सूरह अह़क़ाफ़ः 25।

أَينَ الُملوكُ وَمَن بِالأَرضِ قَد عَمَرُوا قَد فَارَقُوا مَا بَنَوا فِيهَا وَمَا عَمَرُوا

وَأَصبَحُوا رَهنَ قَبرٍ بِالَّذِي عَمِلُوا عَادُوا رَمِيمًا بِهِ مِن بَعدِ مَا دَثَرُوا

أينَ العَساكِرُ مَا رَدَّت وَمَا نَفَعَت أَينَ مَا جَمَعُوا فِيهَا وَمَا ادَّخَرُوا

أَتَاهُم أَمرُ رَب العَرشِ فِي عَجَلٍ لَم يُنجِهِم مِنهُ أَموالٌ وَلَا نَصَرُوا

अनुवादः सांसारिक शासक, एवं धरती को (नित नये) भवनों से आबाद कर वाले लोग कहाँ हैं?! वो अपने बनाये हुये भवनों एवं अपनी बनाई हुई (बस्तियों) को छोड़ कर (सदैव के ठिकाना की ओर) कूच कर गये। वो अपने कर्म के बदले क़ब्र (समाधि) के गिरवी हो गये, (उनकी हड्डियाँ गल कर) बे निशाँ (गुमनाम, नामरहित) हो गईं और वो क़ब्र के अंदर मिट्टी हो गये। (शक्तिशाली) सेना कहाँ हैं?! (उनकी शक्ति व बल) न तो (उनकी मृत्यु को) टाल सकी और न उन्हें कोई लाभ पहुँचा सकी, कहाँ है (वह धन-सम्पदा) जो उन्होंने संसार में जमा व संग्रहित किया था?!। अर्श (सिंहासन) वाले (परवरदिगार) का आदेश उन्हें अचानक आ पहुँचा, फिर न तो धन-सम्पदा उन्हें (मृत्य व नाश से) बचा सकी और न ही (संसार वासियों ने) उनकी कोई सहायता की।

❒ आपकी इच्छा पूर्ण हो कर रहेगी ...

सच्चा एवं वास्तविक मोमिन जानता एवं विश्वास रखता है किः महान व सर्वोच्च अल्लाह महा बली, महा शक्तिशाली एवं ज़ोरावर है, अल्लाह तआला प्रत्येक चीज़ करने में सक्षम है, वह इच्छाओं को पूर्ण करता है, दूर को निकट एवं स्वप्न को वास्तविकता में परिवर्तित कर देता है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखिये कि वह अपने परिवार समेत मरुस्थल में आते हैं, इस मरुस्थल में निर्बल पत्नी व दुर्बल दूध पीते बच्चे को बसाते हैं, और अल्लाह की शक्ति व सामर्थ्य पर भरोसा करते हुये कहते हैं:

﴿رَّبَّنَآ إِنِّيٓ أَسۡكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيۡرِ ذِي زَرۡعٍ عِندَ بَيۡتِكَ ٱلۡمُحَرَّمِ﴾

अनुवादः (हमारे पालनहार! मैंने अपने कुछ संतान मरुस्थल की एक वादी (उपत्यका) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास बसा दिये हैं)। सूरह इब्राहीमः 37।

हे मेरे परवरदिगार! मैंने उन्हें तेरे दरबार से निकट कर दिया है, और तेरे सिवा हरेक से उनकी आशा समाप्त कर दी हैः

﴿رَبَّنَا لِيُقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ﴾

अनुवादः (ताकि वो नमाज़ की स्थापना करें)।

मेरे पालनहार! ताकि वो तेरी सेवा करें, क्योंकि तू उनकी सेवा का मुझ से एवं उनसे अधिक पात्र हैः

﴿فَٱجۡعَلۡ أَفۡـِٔدَةٗ مِّنَ ٱلنَّاسِ تَهۡوِيٓ إِلَيۡهِمۡ﴾

अनुवादः (अतः लोगों के दिलों को उन की ओर आकर्षित कर दे)। सूरह इब्राहीमः 37।

जब उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो बंदों को उनके लिये उपस्थित कर दे, निस्संदेह तू हरेक चीज़ करने में सक्षम व समर्थ है।

यदि आप दुर्बल व निर्बल हैं तो आपका रब महा बली व महा शक्तिशाली है, इसलिये भयभीत न हों! क्योंकि आप सर्वशक्तिमान व ज़ोरावर (पालनहार) के बंदे हैं, जो अल्लाह पर भरोसा करता है, अल्लाह उसके लिये पर्याप्त होता है, जो अल्लाह के द्वारा बेनियाज़ी हासिल करता है, अल्लाह उसे बेनियाज़ कर देता है, महान व सर्वोच्च अल्लाह को इस बात पर ग़ैरत व लज्जा आती है कि मोमिन का हृदय उसके सिवा किसी और से जुड़े, वह उसके सिवा किसी और पर भरोसा करे, अथवा उसको छोड़ कर किसी और की पैरवी व अनुसरण करे, या उसके सिवा किसी और के समक्ष हाथ फैलाये।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़िस्सा अति उत्तम एवं बिल्कुल स्पष्ट क़िस्सों में से एक है, क्योंकि इसके अंदर एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति की ओर, एक परीक्षा से दूसरी परीक्षा फिर पुरस्कार व इनाम की तरफ, पस्ती व उतार से ऊँचाई व चढ़ाव की ओर, दासता से शासन की ओर, जुदाई व अलगाव से इत्तेहाद व जुड़ाव की ओर, दुःख व पीड़ा से प्रसन्नता एवं आनंद की ओर, खुशहाली से भूख मरी की ओर एवं फिर खुशहाली की ओर, तथा इंकार से इकरार की ओर पलटने की विभिन्न घटनाएं व परिस्थितियाँ आई हैं।

आप महा शक्तिशाली व महाबली (अल्लाह) को छोड़ कर अपनी शिकायत कमज़ोर व दुर्बल मानवों के समक्ष न पेश करें।

وَإِذا شَكَوتَ إِلى ابنِ آدَم إِنَّما   تَشكُو الرَّحِيمَ إِلى الَّذِي لا يَرحَمُ

अनुवादः यदि आप आदम के संतान के सामने शिकायत करते हैं तो मानो आप रहीम व दयालु (अल्लाह से मुँह मोड़ कर) ऐसे व्यक्ति से शिकायत करते हैं जो दया नहीं करता।

शक्ति व बल इसमें निहित है कि आप समस्त प्राणियों को छोड़ कर महान व सर्वोच्च अल्लाह से जुड़ जायें, व्यक्तिगत रूप से भी एवं सामूहिक रूप से भी, इस्लामी उम्मत की

दुर्दशा को क्या आप नहीं देखते कि जब उन्होंने अल्लाह तआला पर एतमाद व भरोसा करना छोड़ दिया, तथा अपनी उम्मीदें व आशायें शत्रुओं से रखने लगे?! तो अल्लाह के निकट रुस्वा व अपमानित तो हुए ही, शत्रुओं की नज़रों में भी गिर गये! परिणामस्वरूप अपमान व तिरस्कार वाला जीवन जीने को विवश हैं, उनका सम्मान व वैभव उस समय तक बहाल नहीं हो सकता जब तक वो केवल महा शक्तिशाली, महाबलि व ज़ोरावर अकेले अल्लाह सुब्हानहु व तआला से अपना संबंध पुनः न जोड़ लें।

महान व सर्वोच्च अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ كَتَبَ ٱللَّهُ لَأَغۡلِبَنَّ أَنَا۠ وَرُسُلِيٓۚ إِنَّ ٱللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٞ ٢١ ﴾

अनुवादः (लिख रखा है अल्लाह ने कि अवश्य मैं प्रभावशाली (विजयी) रहूँगा तथा मेरे रसूल, वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है)। सूरह मुजादलाः 21।

हे अल्लाह! हम तुझ से तेरे महान नाम (अल-मतीन, अर्थातः महा शक्तिशाली, महाबलि व ज़ोरावर) के वसीला व माध्यम से प्रार्थना करते हैं किः तू हमें, हमारे माता-पिता तथा समस्त मुसलमानों को क्षमा कर दे।

(44, 45, 46)

(अल-क़ादिर, अल-क़दीर, अल-मुक़तदिर जल्ल जलालुहु)

जो व्यक्ति अल्लाह के आदेश पर चलता है, महान व सर्वोच्च अल्लाह उसके मामलों को सुचारू रूप से चलाता है, जो अपनी समस्त (नियामतों) को अल्लाह के लिये प्रयोग करता है महान व सर्वोच्च अल्लाह उसके लिये अपनी समस्त (मख़लूक़ात, प्राणियों) को वशीभूत कर देता है, यह समस्त ब्रह्माण्ड अल्लाह के हाथ में है, वह महान व सर्वशक्तिशाली हर प्रकार की क़ुदरत व सामर्थ्य का स्वामी है।

मुस्लिम ने अपनी स़ह़ीह़ में रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "एक व्यक्ति मरुस्थल में था कि उसने बादल में एक आवाज़ सुनीः अमूक के बागीचा को सींच दो, (इस आवाज़ के पश्चात) बादल एक ओर चल पड़ा और एक पथरीली धरती पर बरस गया, वह व्यक्ति उस स्थान की ओर भागा-भागा आया, क्या देखता है कि (बारिश का) पानी विभिन्न नालियों में बह रहा है, उन में से एक नाली ऐसी है जो पूरे पानी को अपने अंदर समेट रही है, वह व्यक्ति पानी के पीछे-पीछे गया, (वहाँ पहुँच कर) क्या देखता है कि एक व्यक्ति अपने बाग में खड़ा उस पानी को अपने फावड़े से इधर-उधर कर रहा है, उस ने बाग वाले से कहाः हे अल्लाह के बंदे! तेरा नाम क्या है? उसने कहाः मेरा नाम अमूक है, यह वही नाम था जो उसने बादल में सुना था, फिर बाग बाले ने उस व्यक्ति से प्रश्न कियाः ऐ अल्लाह के बंदे! तू ने मेरा नाम क्यों पूछा? उसने उत्तर दियाः मैंने बादल में एक आवाज़ सुनी (जो कि उसी बाग वाले का नाम था) जिसका यह पानी है, कोई तेरा नाम ले कर कहता है किः अमूक के बाग को सींच दे, तू इस बाग में अल्लाह के इस एह़सान व अनुग्रह का क्या शुक्र अदा करेगा? बाग वाले ने कहाः जब तू ने यह बात पूछ ही ली है तो (बता देता हूं कि) मैं इस बाग से पैदा होने वाली फ़सल की प्रतीक्षा करूँगा, (जब फ़सल निकल आयेगी तो) उसका एक तिहाई भाग ख़ैरात व दान कर दूँगा, एक तिहाई मैं एवं मेरे बच्चे खायेंगे एवं एक तिहाई मैं इस बाग की मरम्मत पर ख़र्च करूँगा"।

﴿وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُعْجِزَهُۥ مِن شَىْءٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾﴾

अनुवादः (अल्लाह ऐसा नहीं कि कोई चीज़ उसको विवश कर दे न आसमानों में और न ज़मीन में, वास्तव में वह सर्वज्ञ अति सामर्थ्यवान है)। सूरह फ़ातिरः 44।

﴿أَلَمۡ تَعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ لَهُۥ مُلۡكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ وَيَغۡفِرُ لِمَن يَشَآءُۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ ٤٠﴾

अनुवादः (क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिये हैं आकाशों तथा धरती का साम्राज्य, वह जिसे चाहे क्षमा कर दे, और जिसे चाहे दण्ड दे, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है)। सूरह माइदाः 40।

हमारा महान व सर्वोच्च पालनहार हरेक चीज़ करने में सक्षम व समर्थ है, उसे कोई भी वस्तु विवश नहीं कर सकती, और न कोई उद्देश्य उससे छूटता है, जब्कि मख़लूक़ (प्राणी) की स्थिति इसके उलट है, वह महान व सर्वोच्च (अल्लाह) विवशता से पाक तथा सुस्ती व थकान से पवित्र है।

हमारा महान व सर्वशक्तिशाली रब वह है जो हर चीज़ पर प्रभुत्व व सामर्थ्य रखता है, वह महान अपनी शक्ति व सामर्थ्य में पूर्ण व मुकम्मल है, वह अपने सामर्थ्य से अपनी सभी मख़लूक़ों (प्राणियों, रचनाओं) को अस्तित्व में लाने वाला है, उसने अपनी क्षमता से उसका प्रबंध किया, अपनी क़ुदरत व सामर्थ्य से उन्हें ठीक किया, और ठोस व दोषरहित अंदाज़ में उनकी रचना की, वह अपनी क़ुदरत से जीवन व मृत्यु देता है, बंदों को पुण्य व दंड देने के लिये पुनः जीवित करेगा, नेक एवं सदाचार को उसकी नेकी व सदाचारिता का बदला तथा बद एवं दुराचारी को उसकी बदी व दुराचारिता का बदला देगा।

हमारा महान व सर्वशक्तिशाली परवरदिगार वह है किः

﴿إِذَآ أَرَادَ شَيۡـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ﴾

अनुवादः (जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उसे इतना फ़रमा देना (काफी है) कि हो जा, वह उसी समय अस्तित्व में आ जाती है)। सूरह यासीनः 82।

وَهُوَ القَدِيرُ لَيسَ يُعجِزُهُ إِذَا   مَا رَامَ شَيْئًا قَطُّ ذُو سُلطانِ

अनुवादः वह क़ुदरत (सामर्थ्य) वाला (परवरदिगार) है, जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो कोई बादशाह कभी भी उसे (अपने इरादे में) विवश व असफल नहीं कर सकता।

❒ उसका सम्पूर्ण सामर्थ्यवान होना!

हमारे महान व सर्वोच्च रब की यह क़ुदरत व क्षमता है कि, वहः

﴿يُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ وَيَغۡفِرُ لِمَن يَشَآءُۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ﴾

अनुवादः (जिसे चाहे दण्ड दे और जिसे चाहे क्षमा कर दे, अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर व सक्षम है)। सूरह अल-माइदाः 40।

वह महान व सर्वशक्तिशालीः

﴿ٱلۡقَادِرُ عَلَىٰٓ أَن يَبۡعَثَ عَلَيۡكُمۡ عَذَابٗا مِّن فَوۡقِكُمۡ أَوۡ مِن تَحۡتِ أَرۡجُلِكُمۡ أَوۡ يَلۡبِسَكُمۡ شِيَعٗا وَيُذِيقَ بَعۡضَكُم بَأۡسَ بَعۡضٍۗ ٱنظُرۡ كَيۡفَ نُصَرِّفُ ٱلۡأٓيَٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَفۡقَهُونَ﴾

अनुवादः (वह इस का सामर्थ्य रखता है कि वह कोई यातना तुम्हारे ऊपर (आकाश) से भेज दे, अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे (धरती) से, या तुम्हें सम्प्रदायों में कर के एक को दूसरे के आक्रमण का स्वाद चखा दे, देखिये कि हम किस प्रकार आयतों का वर्णन कर रहे हैं कि संभवतः वह समझ जायें)। सूरह अनआमः 65।

अल्लाह तआला के क़ुदरत व क्षमता की एक निशानी यह भी है किः हम चाहे जहाँ कहीं भी हों, अल्लाह इस बात में समर्थ है कि हमें एक साथ इकठ्ठा कर देः

﴿أَيۡنَ مَا تَكُونُواْ يَأۡتِ بِكُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًاۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ﴾

अनुवादः (तुम जहाँ कहीं भी रहोगे, अल्लाह तुम्हें ले आयेगा, अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर व सक्षम है)। सूरह बक़रहः 148।

हमारे महान व सर्वोच्च परवरदिगार ने हमें जिन चीज़ों के द्वारा अपनी महान क़ुदरत व सामर्थ्य से परिचित करवाया है, उन में यह भी है किः वह महान व सर्वोच्च रब क़यामत के दिन पूरी धरती को अपने हाथ में उठा रखेगा और समस्त आकाश को अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा, महान व सर्वोच्च (अल्लाह) का फ़रमान हैः

﴿وَمَا قَدَرُواْ ٱللَّهَ حَقَّ قَدۡرِهِۦ وَٱلۡأَرۡضُ جَمِيعٗا قَبۡضَتُهُۥ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطۡوِيَّٰتُۢ بِيَمِينِهِۦۚ سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ٦٧﴾

अनुवादः (उन्होंने अल्लाह का वैसा सम्मान नहीं किया जैसा उसका सम्मान करना चाहिए था, और धरती पूरी उसकी एक मुठ्ठी में होगी प्रलय के दिन, तथा आकाश लिपटे हुए होंगे उसके हाथ में, वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं)। सूरह ज़ुमरः 67।

❒ भाग्य लिखे जा चुके हैं ...

हमारा सर्वशक्तिशाली व महाबली पालनहार भाग्य लिखने वाला एवं उसे बाँटने वाला है, अस्तित्व में लाने के पूर्व ही वह हर चीज़ के भाग्य व उसके (घटित होने वाले) समय से परिचित था, फिर वह अपने क़दीम व प्राचीन इल्म व ज्ञान के आधार पर इसे अस्तित्व में लायाः

﴿ذَٰلِكَ تَقۡدِيرُ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡعَلِيمِ﴾

अनुवादः (यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ का निर्धारित किया हुआ है)। सूरह यासीनः 38।

अल्लाह तआला ने मख़लूक़ (प्राणियों) के तक़दीर अर्थात भाग्य को उन की उत्पत्ति से हज़ारों वर्ष पूर्व ही लिख दिया था, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला ने मख़लूक़ों के भाग्य को आकाश व धरा की उत्पत्ति से पचास हज़ार वर्ष पूर्व ही लिख दिया था, उस समय अल्लाह तआला का अर्श (सिंहासन) पानी पर था"। (मुस्लिम)।

यही कारण है कि तक़दीर (हमारे) ईमान का अभिन्न अंग है, जब जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ईमान के विषय में पूछा, तो आप ने फ़रमायाः "(ईमान यह है कि) तुम अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर एवं अच्छी व बुरी तक़दीर (भाग्य) पर ईमान लाओ"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है, और उपरोक्त शब्द मुस्लिम ने रिवायत किये हैं)।

❒ आप आश्चर्य न करें!

हमारे सर्वशक्तिशाली व महान पालनहार ने अपनी किताब (क़ुरआन) में (अपनी क़ुदरत, सामर्थ्य एवं क्षमता पर) विस्तार के साथ बयान किया है, ताकि हमें अपनी क़ुदरत (सामर्थ्य एवं क्षमता) से परिचित करा सकेः

﴿وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُعۡجِزَهُۥ مِن شَيۡءٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَلِيمٗا قَدِيرٗا ٤٤﴾

अनुवादः (अल्लाह ऐसा नहीं कि कोई चीज़ उसको विवश कर दे न आसमानों में और न ज़मीन में, वास्तव में वह सर्वज्ञ अति सामर्थ्यवान है)। सूरह फ़ातिरः 44।

जब महान व सर्वशक्तिमान अल्लाह आप की सहायता करना चाहता है तो ऐसी चीज़ को (आपकी सहायता के लिये) काबू कर देता है जो सामान्यतः (सहायता के) माध्यमों में नहीं गिनी जाती, (परंतु अल्लाह के आदेश के कारण) वह सबसे उत्तम माध्यम बन जाती है।

जब क़ुदरत व सामार्थ्य रखने वाला महान व सर्वोच्च रब आपको यश, कीर्ती एवं सम्मान प्रदान करना चाहता है तो उस व्यक्ति को आपकी सबसे बड़ी नवाज़िश व अनुकंपा का माध्यम बना देता है जिस से आप को ख़ैर व भलाई की कोई आशा नहीं होती।

जब क़ुदरत व सामार्थ्य रखने वाला महान व सर्वोच्च रब आप से बुराई व दुष्टता को दूर करना चाहता है, तो आपको बुराई के निकट नहीं जाने देता, अथवा बुराई को आपके निकट नहीं आने देता।

जब क़ुदरत व सामार्थ्य रखने वाला महान व सर्वोच्च रब आप को गुनाह व पाप से सुरक्षित रखना चाहता है तो आपके हृदय में उसके प्रति अरुचि व घिन्न उत्पन्न कर देता है, अथवा उसे आप के लिये दुष्कर व कठिन बना देता है, अथवा आप के लिये उसे घृणित कर देता है, या ऐसा करता है कि जब आप उसकी ओर बढ़ते हैं तो कोई रुकावट आप को उससे फेर देती है।

हमारे लिये कितना आवशयक है कि हम क़ुदरत व सामर्थ्य वाले महान व सर्वोच्च (परवरदिगार) के द्वार पर दस्तक दें (एवं उससे दुआ करें)।

इब्राहीम ख़लील अलैहिस्सलाम अपने परिवार वालों को अपने महान व सर्वोच्च पालनहार को समर्पित करने के पश्चात यह दुआ करते हैं किः

﴿وَٱرۡزُقۡهُم مِّنَ ٱلثَّمَرَٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَشۡكُرُونَ﴾

अनुवादः (उन्हें फलों की जीविका प्रदान कर, ताकि वह कृतज्ञ हों)। सूरह इब्राहीमः 37।

इसी दुआ का परिणाम है कि मक्का शताब्दियों से दिलों की मोहब्बत का केंद्र बिंदु रहा है।

सुलैमान अलैहिस्सलाम दुआ करते हैं किः

﴿رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾﴾

अनुवादः (हे मेरे रब! प्रदान कर दे मुझे तत्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर सदाचारियों में)। सूरह शुअराः 83।

इसी का परिणाम था कि अल्लाह तआला ने जिन्नातों (दानवों) को उनके मातहत व अधीन कर दिया था।

यूनुस अलैहिस्सलाम रात के अंधेरे, समुद्र (की गहराई) और मछली के पेट में यह दुआ करते हैं किः

﴿لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ الظَّالِمِينَ﴾

अनुवादः (नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी हूँ)। सूरह अम्बियाः 87।

अंततः मछली का पेट उन के लिये शांतिपूर्ण ठिकाना बन जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ العَظِيمِ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلاَ أَقْدِرُ

(अर्थातः हे अल्लाह! मैं तेरे इल्म व ज्ञान के वास्ते से इस कार्य में ख़ैरियत, कुशल व मंगल माँगता हूँ, और तेरी क़ुदरत व सामर्थ्य के वास्ते से शक्ति माँगता हूँ एवं तेरे फ़ज़्ल व अनुग्रह का प्रार्थी हूँ, क्योंकि तू क़ुदरत व सामर्थ्य रखता है, जब्कि मैं क़ुदरत व सामर्थ्य नही रखता)। (इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है)।

हरेक प्रकार की बुराई, दुष्टता एवं पीड़ी से महान व सर्वोच्च अल्लाह की शरण माँगी जाती हैः नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोगी को जो दुआ सिखाई है, उस में यह (अल्लाह तआला के इस महान नाम का वर्णन) भी है कि, वह रोगी व्यक्ति सात बार इस दुआ को पढ़ेः أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ (अर्थातः मैं अल्लाह

तआला की इज़्ज़त (शक्ति, बल व ताकत) और उसकी क़ुदरत (सामर्थ्य) की शरण चाहता हूँ उस दुःख व तक्लीफ से जो मैं अनुभव करता हूँ और जिस से डरता हूँ)। (मुस्लिम)।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान हैः ﴿وَٱللَّهُ قَدِيرٌۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ अनुवादः (अल्लाह बड़ा सामर्थ्यवान है एवं अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है)। सूरह मुम्तहिनाः 7।

इस आयत में इस बात को दर्शाया गया है कि अल्लाह तआला सम्पूर्ण क़ुदरत व सामर्थ्य रखने के बावजूद अपने बंदों को माफ करता और उन पर दया करता है, कोई भी पाप उसके निकट इतना बड़ा नहीं जिसे वह क्षमा नहीं कर सके, न कोई ऐब उसके लिये इतना बड़ा है कि जिस पर वह पर्दा न डाल सके, और न कोई रहमत, दया व कृपा ऐसी है जिसे वह (अपने बंदों तक) न पहुँचा सके।

हरेक वह व्यक्ति जो किसी पर क़दुरत व प्रभुत्व रखता है, उसके पास इतनी क़ुदरत, सामर्थ्य व शक्ति नहीं होती कि उसे क्षमा कर दे और उस पर तरस खाये।

और न ही हर वह व्यक्ति जो माफ करता एवं तरस खाता है, उसके पास क़ुदरत, सामर्थ्य व शक्ति होती है, महान व सर्वोच्च अल्लाह सम्पूर्ण क़ुदरत, सामर्थ्य व महा शक्ति रखने के बावजूद अत्यधिक क्षमा करने वाला एवं अति कृपालु है।

❒ प्रत्येक चीज़ का एक अंदाजा व अनुमान निर्धारित हैः

महान व सर्वोच्च परवरदिगार का फ़रमान हैः

﴿وَمَن يَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسۡبُهُۥٓۚ إِنَّ ٱللَّهَ بَٰلِغُ أَمۡرِهِۦۚ قَدۡ جَعَلَ ٱللَّهُ لِكُلِّ شَيۡءٖ قَدۡرٗا﴾

अनुवादः (जो अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करेगा तो वही उसे पर्याप्त है, निश्चय ही अल्लाह अपना कार्य पूरा कर के रहेगा, अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है)। सूरह तलाक़ः 3।

जो अपने परवरदिगार से डरता एवं उस पर निर्भर रहता है, अल्लाह की मदद उससे दूर नहीं रहती और न वह अल्लाह की रहमत, कृपा व दया से निराश होता है, समृद्धि व

खुशहाली उसे अनिवार्य रूप से मिल कर रहती है, क्योंकि महान व सर्वोच्च अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर क़ादिर, सक्षम व सामर्थ्यवान है।

किंतु सर्वशक्तिशाली व महा बलि अल्लाह ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा व अनुमान तय कर रखा है, उसका एक नियत समय है जिससे वह आगे नहीं बढ़ सकता, जब उस चीज़ का निश्चित समय आता है तो उसके घटित होने में न तो एक क्षण का विलम्ब होता है एवं न ही एक पल की जल्दी।

बंदा किसी समस्या से निराश हो कर सोता है और जब जागता है तो समस्या का निदान हो चुका होता है, एवं समृद्धि, कुशादगी तथा खुशहाली का द्वार खुल चुका होता हैः

﴿وَكَانَ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ مُّقۡتَدِرًا﴾

अनुवादः (अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य व क़ुदरत रखने वाला है)। सूरह कह्फ़ः 45।

संकट व दुःख का एक निश्चित समय है, जिसके पश्चात वह समाप्त हो जाता है, उसकी एक तय समय सीमा है जिसके पूरा होने के पश्चात वह (कुशादगी व समृद्धि में) परिवर्तित हो जाता है। क्योंकि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हरेक चीज़ का एक अनुमान व अंदाज़ा निर्धारित कर रखा है।

वृक्ष उस समय तक फल नहीं देता जब तक उस का समय न आये, सूर्योदय उस समय तक नहीं होता जब तक भोर न हो जाये, गर्भवती महिला उस समय तक बच्चा नहीं पैदा करती जब तक उसकी निर्धारित समय सीमा पूर्ण न हो जायेः

﴿قَدۡ جَعَلَ ٱللَّهُ لِكُلِّ شَيۡءٖ قَدۡرٗا﴾

अनुवादः (अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है)। सूरह त़लाक़ः 3।

हे अल्लाह! हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, निस्संदेह तू हर चीज़ पर क़ादिर, समर्थ व सक्षम है।

(47)

(अल-ह़फ़ीज़ जल्ल जलालुहु)

स़ह़ीह़ैन में आया है किः आमिर बिन तुफ़ैल एवं अरबद बिन क़ैस ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरुद्ध षड्यंत्र रचा और आपका वध करने की चेष्ठा की, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन दोनों पर बद्दुआ फ़रमा दी। आमिर बिन तुफ़ैल की ऐसी दुर्दशा हुई कि उसके गर्दन में एक गिल्टी (ग्रंथि) निकल आई, वह बनू सलूल के क़बीला की एक महिला के घर में था कि सहसा छलांग मार कर अपने घोड़े पर सवार हो गया, अपनी नेज़ा (बरछी) उठा लिया और अपने घोड़े को यह कह कर हाँकने लगाः ऊँट के समान गिल्टी तथा बनू सलूल की महिला के घर में मृत्यु? वह यही बोलता रहा यहाँ तक कि मृत्यु को प्राप्त हो कर घोड़े से गिर गया। रही बात अरबद बिन क़ैस की तो वह अपनी ऊँटनी को बेचने के लिये निकला, (रास्ते में) अल्लाह ने उस पर और उस की ऊँटनी पर एक बिजली गिरा दिया जिससे वो दोनों ही जल कर भस्म हो गये। (ध्यान देने योग्य बात यह है कि) इन दोनों के षड्यंत्र से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसने सुरक्षि रखा? निस्संदेह वह सुरक्षा करने वाला अल्लाह है जो अपनी किताब में इर्शाद फ़रमाता हैः

﴿فَٱللَّهُ خَيۡرٌ حَٰفِظٗاۖ وَهُوَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

अनुवादः (अल्लाह ही उत्तम रक्षक है और वही सर्वाधिक दयावान है)। सूरह यूसुफ़ः 64।

हमारा महान व सर्वोच्च रब आसमान व ज़मीन एवं इन दोनों के मध्य बसने वाले सभी प्राणियों की रक्षा करता है, उसकी क़ुदरत व सामर्थ्य से ही आकाश व धरा स्थिर हैं, अपने स्थान से नहीं टलते, आकाश व धरती का बोझ अल्लाह को विवश व व्याकुल नहीं करता, क्योंकि वह अपनी क़ुदरत, सामर्थ्य एवं शक्ति में कमाल व पूर्णता के उच्च स्थान पर विराजमान है, क्या आपने अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का यह फ़रमान नहीं सुनाः

﴿۞ إِنَّ ٱللَّهَ يُمۡسِكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ أَن تَزُولَاۚ وَلَئِن زَالَتَآ إِنۡ أَمۡسَكَهُمَا مِنۡ أَحَدٖ مِّنۢ بَعۡدِهِۦٓۚ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورٗا ﴿٤١﴾﴾

अनुवादः (अल्लाह ही रोकता है आकाशों तथा धरती को खिसक जाने से, और यदि खिसक जायें वो दोनों तो नहीं रोक सकेगा उन को कोई उस (अल्लाह) के पश्चात, वास्तव में वह अत्यंत सहनशील क्षमाशील है)। सूरह फ़ातिरः 41।

हमारा महान व सर्वोच्च रब मख़लूक़ (सृष्टि) के समस्त कर्मों को महफ़ूज़ व सुरक्षित करता है, चाहे वो सदकर्म हों अथवा कुकर्म, प्रकट हों अथवा छिप्त, छोटे हों अथवा बड़े, अल्लाह तआला उनके समस्त कथनों को गिनता है, उनकी नीयतों से भलि-भाँति परिचित है, उससे कोई भी चीज़ छिप्त नहीं:

﴿ وَعِندَنَا كِتَٰبٌ حَفِيظٌ ﴾

अनुवादः (हमारे पास सब महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखने वाली किताब है)। सूरह क़ाफ़ः 4।

वही महानतम व सर्वोच्च अल्लाह है जो अपने बंदे को विनाश व तबाही एवं बुरी मौत से सुरक्षित रखता है, अल्लाह तआला ने बंदों के लिये निगराँ व संरक्षक फ़रिश्ते निर्धारित कर रखे हैं जो उसके आदेश से (बंदों की) पहरेदारी व रक्षा करते हैं, बुज़ुर्ग व बरतर (रब) का फ़रमान हैः

﴿لَهُۥ مُعَقِّبَٰتٌ مِّنۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهِۦ يَحۡفَظُونَهُۥ مِنۡ أَمۡرِ ٱللَّهِۗ﴾

अनुवादः (उस (अल्ला) के रखवाले (फ़रिश्ते) हैं, उस के आगे तथा पीछे, जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा कर रहे हैं)। सूरह रअदः 11।

- ❐ अल्लाह का अपनी मख़लूक़ (रचना, प्राणी) की सुरक्षा करना दो प्रकार से होता हैः

आम व सामान्य सुरक्षाः इससे अभिप्राय यह है कि वह समस्त प्राणियों की सुरक्षा करता है, वह इस प्रकार से कि उनके जीवन-यापन के लिये आवश्यक वस्तुओं को सरल व सहज बना देता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٍ حَفِيظٌ﴾

अनुवादः (वास्तव में मेरा रब प्रत्येक चीज़ का रक्षक है)। सूरह हूदः 57।

विशेष व विशिष्ट सुरक्षाः -यह सर्वोत्तम प्रकार है- इससे तात्पर्य यह है किः अल्लाह तआला अपने औलिया व मित्रों की सांसारिक आवश्यकताओं की सुरक्षा करता, उन्हें

शारीरिक रूप से सुरक्षित रखता, उनके घर परिवार वालों एवं धन-सम्पदा की हिफ़ाज़त करता है, उनके लिये फ़रिश्ते तैनात कर रखे हैं जो उनकी रक्षा करते हैं, अल्लाह ने उनके लिये दीन (धर्म) को शुबुहात व शहवात (भ्रम व भ्रांति एवं अपनी इंद्रीय इच्छाओं की पूर्ति में लीन रहने) से महफ़ूज़ व सुरक्षित रखा, इंसान एवं जिन्नात (मानव एवं दानव) में से जो शैतान उनके शत्रु हैं, उनसे उन्हें सुरक्षित रखता है, फिर उन्हें ईमान की स्थिति में मृत्यु देता है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿لَهُۥ مُعَقِّبَٰتٌ مِّنۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهِۦ يَحۡفَظُونَهُۥ مِنۡ أَمۡرِ ٱللَّهِۗ﴾

अनुवादः (उस (अल्लाह) के रखवाले (फ़रिश्ते) हैं, उस के आगे तथा पीछे, जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा कर रहे हैं)। सूरह रअदः 11।

हमारा परवरदिगार वह है जिसने यह ज़िम्मा लिया है कि (क़्यामत तक) प्रत्येक युग में वह अपनी महान किताब (क़ुरआन) को सभी प्रकार के हेर-फेर एवं परिवर्तन से महफ़ूज़ व सुरक्षित रखेगाः

﴿إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا ٱلذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ٩﴾

अनुवादः (वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (क़ुरआन) उतारी है, और हम ही इस के रक्षक हैं)। सूरह हिज्रः 9।

अल्लाह तआला ने काबा को पतन से महफ़ूज़ व सुरक्षित रखा, हालांकि वह मरुस्थल में पत्थरों से बनाया हुआ एक घर है, (फिर भी अल्लाह ने उसकी सुरक्षा की) ताकि वह उसकी सर्वोत्तम सुरक्षा एवं महान क़ुदरत व सामर्थ्य की गवाही देता रहे।

❒ अल्लाह तआला आपको आपके शत्रुओं से सुरक्षित रखता है ...

क़ुरैश के कुफ़्फ़ार उस ग़ार, खोह व गुफा के आस पास संग्रहित हो जाते हैं जिसमें दो व्यक्तिः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु छिपे होते हैं, कुफ़्फ़ार आप दोनों को जान से मार देना चाहते हैं, अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हृदय में भय व्याप्त हो जाता है, उनके महान मित्र उनकी ओर देखते हैं एवं इर्शाद फ़रमाते हैं किः "उन दो के विषय में तुम्हारा क्या गुमान है जिनका तीसरा अल्लाह है?!"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

وَإِذَا العِنايَةُ لَاحَظَتكَ عُيونُهَا   نَم فَالحَوادِثُ كُلُّهُنَّ أَمانُ

अनुवादः जब आप को (अल्लाह की) निगहबानी व संरक्षण प्राप्त हो जाये तो आप (शांतिपूर्वक) सो जायें, क्योंकि उसके बाद सभी दुर्घटनायें (स्वयं) सुरक्षा (का रूप) होंगे।

❒ निस्संदेह वह मुहाफ़िज, संरक्षक एवं निगहबान है ! ...

उसके वलियों व मित्रों के विरुद्ध अत्याचारी एवं उद्दंड शासक षड्यंत्र रचते रहते हैं, परंतु अल्लाह अपने वलियों की सुरक्षा व हिफ़ाज़त फ़रमाता है, मूसा अलैहिस्सलाम का उदाहरण ले लीजिये, वह कहते हैं:

﴿قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفۡرُطَ عَلَيۡنَآ أَوۡ أَن يَطۡغَىٰ ۝٤٥ قَالَ لَا تَخَافَآۖ إِنَّنِي مَعَكُمَآ أَسۡمَعُ وَأَرَىٰ ۝٤٦﴾

अनुवादः (दोनों ने कहाः हे हमारे रब! हमें भय है कि वह हम पर अत्याचार अथवा अतिक्रमण कर दे। उस (अल्लाह) ने कहाः तुम भय न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता तथा देखता हूँ)। सूरह ताहाः 45-46।

इस प्रकार से अल्लाह ने उन्हें शुभ सूचना सुनाई, उनकी हिफ़ाज़त व सुरक्षा की एवं उन्हें शत्रुओं एवं विरोधियों के विरुद्ध प्रभुत्व व विजय प्रदान किया।

कौन है जो विरोधियों पर विजय देता है? निस्संदेह वह अल्लाह ही है जो अपने वलियों एवं मित्रों का मुहाफ़िज़ व संरक्षक है, यद्यपि उनके वलियों की संख्या (उनके शत्रुओं की तुलना में) अल्प ही क्यों न होः

﴿وَإِن يَكُن مِّنكُمۡ أَلۡفٞ يَغۡلِبُوٓاْ أَلۡفَيۡنِ بِإِذۡنِ ٱللَّهِۗ﴾

अनुवादः (यदि तुम में से एक हज़ार होंगे तो वह अल्लाह के आदेश से दो हज़ार पर विजयी होंगे)। सूरह अनफ़ालः 66।

﴿وَلَا تَهِنُواْ وَلَا تَحۡزَنُواْ وَأَنتُمُ ٱلۡأَعۡلَوۡنَ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ ۝١٣٩﴾

अनुवादः (-इस पराजय से- तुम निर्बल तथा उदासीन न बनो, और तुम ही सर्वोच्च रहोगे, यदि तुम ईमान वाले हो)। सूरह आले इमरानः 139।

❒ रब सुब्हानहु व तआला का इनाम व पुरस्कारः

सबसे महान व सबसे उच्च मुहाफ़िज़ व संरक्षक (अल्लाह) अपने वलियों एवं मित्रों के वंश को जीवित रहते हुये भी महफूज़ व सुरक्षित रखता है एवं मृत्यु पश्चात भी, याक़ूब अलैहिस्सलाम को देख लीजिये कि उनके सुपुत्र यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कई वर्षों के पश्चात भी उन तक (सही सलामत) वापस पहुँचा देता है, याक़ूब अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैः

﴿فَٱللَّهُ خَيۡرٌ حَٰفِظٗاۖ وَهُوَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

अनुवादः (अल्लाह ही उत्तम रक्षक है और वही सर्वाधिक दयावान है)। सूरह यूसुफ़ः 64।

मूसा एवं ख़िज़्र अलैहिमस्सलाम के वृत्तांत में आया है कि जब दोनों एक गाँव वाले के पास आ कर उन से खाना माँगते हैं, और वो मेहमानदारी व अतिथि सत्कार से मना कर देते हैं, और उन्हें वहाँ एक दीवार दिखाई देती है जो गिरने वाली होती है, और ख़िज़्र अलैहिस्सलाम उसे ठीक कर देते हैं:

﴿وَأَمَّا ٱلۡجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَٰمَيۡنِ يَتِيمَيۡنِ فِي ٱلۡمَدِينَةِ وَكَانَ تَحۡتَهُۥ كَنزٞ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَٰلِحٗا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَن يَبۡلُغَآ أَشُدَّهُمَا وَيَسۡتَخۡرِجَا كَنزَهُمَا رَحۡمَةٗ مِّن رَّبِّكَۚ وَمَا فَعَلۡتُهُۥ عَنۡ أَمۡرِيۚ ذَٰلِكَ تَأۡوِيلُ مَا لَمۡ تَسۡطِع عَّلَيۡهِ صَبۡرٗا ﴿٨٢﴾﴾

अनुवादः (और रही बात दीवार की, तो वह दो अनाथ बालकों की थी, और उस के भीतर उन का कोष था, और उन के माता-पिता पुनीत व नेक थे, तो तेरे पालनहार ने चाहा कि वो दोनों अपनी युवा अवस्था को पहुँचे और अपने कोष निकालें, तेरे पालनहार की दया से, और मैं ने यह अपने विचार तथा अधिकार से नहीं किया, यह उस की वास्तविकता है जिस पर तुम धैर्य नहीं रख सके)। सूरह कह्फ़ः 82।

(एक) न्यायप्रिय ख़लीफ़ा (शासक) सात पुत्रों एवं सात पुत्रियों को छोड़ कर मृत्यु को प्राप्त हुये, उन सभी के लिये (विरासत) में अल्लाह सुब्हानहु व तआला के सिवा कुछ भी नहीं छोड़ते, अल्लाह उन सभी संतानों की सुरक्षा व हिफ़ाज़त फ़रमाता है, उलेमा कहते हैं किः अल्लाह तआला ने उनके बच्चे (को इतना समृद्ध व धनवान बनाया कि वो अपने समय के) सब से धनाढ्य लोगों में गिने जाते थे।

❑ बहुमूल्य नसीहत व सदुपदेशः

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यह नसीहत करते हैं: "हे बालक! मैं तुम्हें कुछ महत्वपूर्ण बातें बता रहा हूँ: तुम अल्लाह के अहकाम व निर्देशों की सुरक्षा व हिफ़ाज़त (अनुपालन) करो, वह तुम्हारी सुरक्षा व हिफ़ाज़त करेगा, तुम अल्लाह के अधिकारों का ध्यान रखो, तुम उसे अपने समक्ष पाओगे"। (यह हदीस सहीह है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

मुहिब्बुद्दीन तबरी -शाफ़ई पंथ के बड़े इमामनों में गिने जाते हैं- से कहा गयाः "आप इतने व्योवृद्ध हैं, आपने कैसे कश्ती से छलाँग लगा दी? इस पर उन्होंने -एक ऐसी बात कही जो इतिहास के सुनहरे पन्नों में सुरक्षित हो गयी!- उत्तर दिया किः हमने युवावस्था में अपने शारीरिक अंगों की सुरक्षा की तो अल्लाह ने वृद्धावस्था में हमारे लिये उन्हें सुरक्षित रखा",

﴿فَٱللَّهُ خَيۡرٌ حَٰفِظٗاۖ وَهُوَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

अनुवादः (अल्लाह ही उत्तम रक्षक है और वही सर्वाधिक दयावान है)। सूरह यूसुफ़ः 64।

उलेमा कहते हैं किः अल्लाह के आदेशों का अनुपालन कर के उन (आदेशों) की सुरक्षा करो, उस के द्वारा निषिद्ध एवं वर्जित किये हुये कार्यों से बच कर उन (वर्जनाओं) की सुरक्षा करो, उसके हद व तय सीमा की पासदारी कर के उन (हदों) की सुरक्षा करो, अल्लाह तआला तुम्हारे प्राण, तुम्हारे धर्म, तुम्हारे धन-सम्पदा व संतान तथा अल्लाह ने संसार में तुम्हें जिस फ़ज़्ल व इनाम से अनुग्रहित किया है, उन सब की सुरक्षा करेगा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस हैः "तुम अल्लाह के अहकाम व निर्देशों की सुरक्षा व हिफ़ाज़त (अनुपालन) करो, वह तुम्हारी सुरक्षा व हिफ़ाज़त करेगा, तुम अल्लाह के अधिकारों का ध्यान रखो, तुम उसे अपने समक्ष पाओगे"। (यह हदीस सहीह है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

रही बात आख़िरत व परलोक की, तो अल्लाह ने ऐसे लोगों को बड़ी कामयाबी व सफलता की बशारत व शुभ सूचना सुनाई है, सबसे महान व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَٱلۡحَٰفِظُونَ لِحُدُودِ ٱللَّهِۗ وَبَشِّرِ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ﴾

अनुवादः (तथा अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं, और (हे नबी!) आप ऐसे ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दें)। सूरह तौबाः 112।

आप जितना अल्लाह की सीमाओं का ध्यान रखेंगे, उतना ही (आप को अल्लाह की) निगहबानी, सुरक्षा व ह़िफ़ाज़त प्राप्त होगी, अल्लाह के तय हुदूद (सीमा) की सुरक्षा में निम्नांकित चीज़ों की सुरक्षा व ह़िफ़ाज़त करना शामिल हैः

तौह़ीद, धार्मिक प्रतीकों एवं विशेष रूप से नमाज़ की सुरक्षा व ह़िफ़ाज़तः

﴿حَٰفِظُواْ عَلَى ٱلصَّلَوَٰتِ وَٱلصَّلَوٰةِ ٱلۡوُسۡطَىٰ وَقُومُواْ لِلَّهِ قَٰنِتِينَ ﴿٢٣٨﴾﴾

अनुवादः (नमाज़ों का, विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ (अस्र) का ध्यान रखो, तथा अल्लाह के लिये विनय पूर्वक खड़े रहो)। सूरह बक़रहः 238।

कान, आँख एवं दिल की ह़राम व वर्जित चीज़ों से सुरक्षा व ह़िफ़ाज़तः

﴿إِنَّ ٱلسَّمۡعَ وَٱلۡبَصَرَ وَٱلۡفُؤَادَ كُلُّ أُوْلَٰٓئِكَ كَانَ عَنۡهُ مَسۡـُٔولٗا﴾

अनुवादः (कान, आँख एवं दिल उन में से हरेक से पुछताछ की जाने वाली है)। सूरह बनी इस्राईलः 36।

﴿فَٱلصَّٰلِحَٰتُ قَٰنِتَٰتٌ حَٰفِظَٰتٌ لِّلۡغَيۡبِ بِمَا حَفِظَ ٱللَّهُۚ﴾

अनुवादः (अतः सदाचारी स्त्रियाँ वो हैं जो आज्ञाकारी तथा उनकी अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा में उन के अधिकारियों की रक्षा करती हों)। सूरह निसाः 34।

गुप्तांगों की सुरक्षा व ह़िफ़ाज़त करनाः

﴿وَٱلَّذِينَ هُمۡ لِفُرُوجِهِمۡ حَٰفِظُونَ ﴿٥﴾﴾

अनुवादः (और जो अपने गुप्तांगो की रक्षा करने वाले हैं)। सूरह मोमिनूनः 4।

क़समों की सुरक्षा व ह़िफ़ाज़त करनाः

﴿وَٱحۡفَظُوٓاْ أَيۡمَٰنَكُمۡۚ﴾

अनुवादः (अपनी क़समों व शपथों का ध्यान रखो)। सूरह माइदाः 89।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप यह दुआ किया करते थेः

اللهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي، وَعَنْ شِمَالِي، وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي

(अर्थातः हे अल्लाह! तू मेरी सुरक्षा कर आगे से और पीछे से, दाएं से और बाएं से, और ऊपर से, मैं तेरी अज़मत व महानता की शरण चाहता हूँ इस बात से कि मैं अचानक अपने नीचे से पकड़ लिया जाऊँ)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोने का इरादा करते तो अल्लाह की सुरक्षा व ह़िफ़ाज़त माँगा करते थे।

❒ बशारत, शुभ सूचना व खुशखबरी ...

नेक व सदाचारी बंदा जो कोई चीज़ अल्लाह के सुपुर्द करता है तो अल्लाह उसकी सुरक्षा व ह़िफ़ाज़त करता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदरणीय अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु को (विदा करते हुए) यह फ़रमायाः أَسْتَوْدِعُكَ اللهَ الَّذِي لاَ تَضِيعُ وَدَائِعُهُ (अर्थातः मैं तुम्हें अल्लाह को सौंपता हूँ जिसकी अमानतें बरबाद व नष्ट नहीं होतीं)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने माजह ने रिवायत किया है)।

दूसरी ह़दीस़ में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “जब कोई चीज़ अल्लाह के सुपुर्द की जाती है तो वह उसकी सुरक्षा व ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे बैहिक़ी ने “अल-सुनन अल-कुब्रा” में रिवायत किया है)।

कितना बेहतर होगा कि आप अपने बच्चों के लिये उसी प्रकार से (अल्लाह की) शरण माँगे जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ह़सन एवं हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिये (अल्लाह की) शरण माँगा करते थे, यदि आप उन्हें अल्लाह के सुपुर्द कर दें (तो निश्चित रूप से आप यह जान लें कि) आपने उन्हें महानतम व सर्वोच्च संरक्षक व मुहाफ़िज़ के हवाले कर दिया हैः ﴿فَٱللَّهُ خَيۡرٌ حَٰفِظٗاۖ وَهُوَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾ अनुवादः (अल्लाह ही उत्तम रक्षक है और वही सर्वाधिक दयावान है)। सूरह यूसुफ़ः 64।

हे अल्लाह! हम अपने प्राण, अपने माता-पिता, अपने घर परिवार वाले एवं हर वह नियामत व अनुग्रह तेरे सुपुर्द करते हैं जिन से तू ने हमें नवाज़ा व अनुग्रहित किया है।

(48)

(अल-ग़नी जल्ल जलालुहु)

इमाम बुख़ारी रह़िमहुल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह ह़दीस़ रिवायत की है कि आप ने फ़रमायाः "(एक बार) अय्यूब अलैहिस्सलाम नग्न हो कर स्नान कर रहे थे कि सोने की टिड्डियां आप पर ऊपर से गिरने लगीं, अय्यूब अलैहिस्सलाम उन्हें अपने वस्त्र में समेटने लगे, इतने में उनके रब ने उन्हें पुकारा किः हे अय्यूब! क्या मैंने तुम्हें उस चीज़ से बेनियाज़ व बेपरवाह नहीं कर दिया, जिसे तुम देख रहे हो? अय्यूब अलैहिस्सलाम ने उत्तर दियाः हाँ, तेरी महानता की क़सम! परंतु तेरी बरकत से मेरे लिये बेनियाज़ी कैसे संभव है?!"।

कभी-कभी इंसान को धन-सम्पदा, ज़मीन-जायदाद, घर-परिवार, प्रताप व वैभव तथा उच्च पद मिलता है, वह सम्मानित स्थान, अथवा बड़ी सरदारी या प्रभुत्वशाली शासन व साम्राज्य से लाभांवित होता है ... उसके आस-पास सेवकों एवं दासों का समूह होता है, सेना उसे अपने घेरा में लिये रहती है, फौज उसकी सुरक्षा में तैनात रहती है, लोग उससे विनम्रता के साथ मिलते हैं, एवं समुदाय उसके समक्ष झुकी रहती है ...

इन सब के बावजूद महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के मोहताज सभी रहते हैं:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ أَنتُمُ ٱلۡفُقَرَآءُ إِلَى ٱللَّهِۖ وَٱللَّهُ هُوَ ٱلۡغَنِيُّ ٱلۡحَمِيدُ ۝١٥﴾

अनुवादः (हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह के, तथा अल्लाह ही निःस्वार्थ प्रशंसित है)। सूरह फ़ात़िरः 15।

हमारा महान व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो ग़नी व बेनियाज़ है, जिससे बढ़ कर किसी भी रूप में कोई भी बेनियाज़ व निस्पृह नहीं, बल्कि सभी उसके मोहताज हैं।

हमारा पालनहार अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) एवं सि़फ़ात (विशेषताओं) तथा अपनी बादशाहत के द्वारा बेनियाज़ है, वह अपनी बेनियाज़ी में उच्चता के सभी मापदंडों से परे है, वह किसी का भी मोहताज नहीं।

हमारे परवरदिगार की बेनियाज़ी की पराकाष्ठा है किः न तो आज्ञाकारियों की आज्ञाकारिता उसे कोई लाभ पहुँचाती है और न पापियों की अवज्ञा उसे कोई हानि पहुँचाती

है, चाहे समस्त लोक वासी हो क्यों न कुफ़्र करने लगें! महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾

अनुवादः (जो कुफ़्र करेगा तो अल्लाह संसार वासियों से निस्पृह है)। सूरह आले इमरानः 97।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की बेनियाज़ी की पराकाष्ठा है किः वह बंदों के साथ एहसान करता है, उनके साथ भलाई करता है, उनके दुःखों को दूर करता है, उन पर दया करते हुए एवं उनके संग अच्छाई करते हुयेः

﴿وَرَبُّكَ ٱلۡغَنِيُّ ذُو ٱلرَّحۡمَةِۚ﴾

अनुवादः (तथा आपका रब निस्पृह दयाशील है)। सूरह अनआमः 133।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की बेनियाज़ी की पराकाष्ठा है किः वह हर प्रकार के दोष, ऐब व त्रुटि से पाक है एवं हर उस चीज़ से बरी व उच्च है जो उसकी बेनियाज़ी व निस्पृहता के विरुद्ध है, चुनाँचे वह न पत्नी रखता है न संतान, न राज पाट में उसका कोई साझी है और न ही वह निर्बल है कि उसे किसी सहायक की आवश्यकता हो, और न कोई उसका समकक्ष है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला फ़रमाता हैः

﴿وَقُلِ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي لَمۡ يَتَّخِذۡ وَلَدٗا وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ شَرِيكٞ فِي ٱلۡمُلۡكِ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ وَلِيّٞ مِّنَ ٱلذُّلِّۖ وَكَبِّرۡهُ تَكۡبِيرَۢا ١١١﴾

अनुवादः (तथा कहो कि सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस के कोई संतान नहीं, और न राज्य में उस का कोई साझी है, और न अपमान से बचाने के लिये उसका कोई समर्थक है, और आप उसकी महिमा का गुणगान करें)। सूरह बनी इस्राईलः 111।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की बेनियाज़ी की पराकाष्ठा है किः वह अपने भक्तों को दुआ करने का आदेश देता एवं उनकी दुआओं को स्वीकार करने का वादा करता हैः

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ﴾

अनुवादः (तुम्हारे रब का आदेश पारित हो चुका कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा)। सूरह ग़ाफ़िरः 60।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के निकट दुआ से बढ़ कर सम्मानित वस्तु कोई और नहीं"। (यह हदीस हसन है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

❒ समस्त ब्रह्माण्ड अल्लाह तआला की मोहताज है ...

समस्त ब्रह्माणड, सभी मानव एवं दानव, निर्धन एवं धनवान, बड़े एवं छोटे, शासक व प्रजा तथा शक्तिशाली एवं दुर्बलः सभी अल्लाह तआला के मोहताज हैं, वह हर पल, हर क्षण और हर घड़ी अल्लाह तआला के हाजतमंद हैं।

यह अल्लाह तआला की उदारता व सख़ावत है किः उसने अपने महान नाम (अल-ग़नी, अर्थातः बेनियाज़, निस्पृह) को अपनी सिफ़त -ए- रहमत (दया के विशेषण) के साथ उल्लेखित किया है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला का इर्शाद हैः

﴿وَرَبُّكَ ٱلۡغَنِيُّ ذُو ٱلرَّحۡمَةِۚ﴾

अनुवादः (तथा आपका रब निस्पृह दयाशील है)। सूरह अनआमः 133।

ताकि बंदों को यह बता सके किः वह उनकी इबादत व पूजा से बेनियाज़ है, इसके बावजूद हर मामले में उन पर दया करता है, यहाँ तक कि इबादतों व उपासनाओं एवं वाजिबात व अनिवार्यों में भी, बल्कि यह उसकी कृपा व दया ही है किः वह थोड़े से कर्म को स्वीकार करे उसमें वृद्धि कर देता है।

उसकी सख़ावत व उदारता का एक रूप यह भी है कि उसने अपने महान नाम (अल-ग़नी, अर्थातः बेनियाज़, निस्पृह) को अपने महान नाम (अल-हमीद, अर्थातः हर प्रकार की प्रशंसा का अधिकारी) के साथ संयुक्त रूप से उल्लेख किया है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَقَالَ مُوسَىٰٓ إِن تَكۡفُرُوٓاْ أَنتُمۡ وَمَن فِي ٱلۡأَرۡضِ جَمِيعٗا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ٨﴾

अनुवादः (और मूसा ने कहाः यदि तुम और सभी लोग जो धरती में हैं कुफ्र करें, तो भी अल्लाह निरीह एवं सराहा हुआ है)। सूरह इब्राहीमः 8।

अर्थातः वह अपनी महान व बहुमूल्य नियामतों के कारण हर प्रकार की प्रशंसा का असीमित अधिकार रखता है।

सभी अपने अपने हर छोट-बड़े कार्य में, हर पल व हर क्षण उसके मोहताज हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समस्त मख़लूक़ात (प्राणियों) में उबूदियत, बंदगी व भक्ति के सर्वोच्च स्थान पर विराजमान थे, इसके बावजूद अपने रब से दुआ करते हुये कहते हैं कि वह अल्लाह के मोहताज व ज़रूरतमंद हैं और एक क्षण के लिये भी उस से बेनियाज़ नहीं हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

أَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ، ولاَ تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ

(अर्थातः तू मेरे समस्त मामलों को संवार दे और मुझे क्षण भर के लिये भी मेरे सुपुर्द न कर)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे नसई ने रिवायत किया है)।

आप हर क्षण बेनियाज़ व ग़नी (अल्लाह) के मोहताज हैं, जितना आप उसके समक्ष अपनी मोहताजी व दरिद्रता प्रकट करेंगे उतना ही (नियामतों व इनाम से) अनुग्रहित किये जायेंगे।

याद रखें किः अल्लाह ही बेनियाज़ है, उसकी बेनियाज़ी ज़ाती व व्यक्तिगत बेनियाज़ी व निस्पृहता है, बल्कि आसमानों एवं ज़मीन के सभी वासी भी यदि उससे माँगे, और वह हरेक की माँग को पूरी कर दे, तब भी उसकी बादशाहत एवं कोष में तनिक भी कमी नहीं आयेगी, स़ह़ीह़ मुस्लिम में आया है किः "यदि तुम्हारे अग्रज व पूर्वज, इंसान व जिन्नात (मानव तथा दानव) एक मैदान में खड़े हों, फिर मुझ से माँगना आरंभ करें और मैं प्रत्येक की माँग पूरी कर दूँ, फिर भी मेरे पास जो कुछ है वह कम न होगा, मगर उतना ही जितना समुद्र में सूई डुबा कर निकाल लो (तो जितना समुद्र का जल कम होगा उतना भी मेरा ख़ज़ाना कम न होगा)"।

❒ बेनियाज़ी व निस्पृहता की कुंजीः

मैं बेनियाज़ी व मालदारी कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

इसका जवाब वही जो ह़दीस़ -ए- क़ुदसी में आया हैः "हे आदम के संतान! (हर कार्य से फ़ुर्सत पा कर) मेरी इबादत व उपासना में व्यस्त हो जा, मैं तेरे दिल को बेनियाज़ कर दूँगा और

तुझे रिज़्क़ व आजीविका से मालामाल कर दूँगा। हे आदम के संतान! मुझसे दूर मत भाग अन्यथा मैं तेरे हृदय को दरिद्रता से भर दूँगा और तुझे सांसारिक मामलों में व्यस्त कर दूँगा"। (यह हदीस़ स़हीह़ है, इसे ह़ाकिम ने "अल-मुसतदरक" में रिवायत किया है)।

जब दिल अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला के द्वारा बेनियाज़ होता है, (उसकी दी हुई आजीविका पर) संतोष करता है, अल्लाह तआला के द्वारा प्रदत्त आजीविका पर प्रसन्न रहता है, तो वह अपने ख़ालिक़ व रचयिता के कारण सभी मख़लूक़ व प्राणियों से बेनियाज़ होता है, अपने राज़िक़ (की आजीविका) के कारण सभी प्राणियों से बढ़ कर सम्माननीय व आदरणीय होता है, अपने स्वामी के कारण सबसे शक्तिशाली कमज़ोर होता है, यह बिना धन-सम्पदा के बेनियाज़ी है, बिना साम्राज्य के शासन व बादशाही है तथा बिना क़बीला व रिश्तेदारों के सम्मान व वैभव है, कितना महान दर्जा है इस बेनियाज़ी का!

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़हीह़ हदीस़ है कि आपने फ़रमायाः "सफलता व कामयाबी उस व्यक्ति के लिये है जो इस्लाम लाया, उसे आवश्यकतानुसार आजीविका दी गई, और अल्लाह ने उसको अपनी रोज़ी पर क़नाअत व संतोष प्रदान किया"। (मुस्लिम)।

जब तक इंसान को दिल की बेनियाज़ी प्राप्त न हो तब तक समस्त संसार भी उसका पेट भरने के लिये अपर्याप्त है, जैसाकि स़हीह़ इब्ने ह़िब्बान में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमायाः "हे अबू ज़र्र! क्या तुम्हें लगता है कि धन-दौलत की बाहुल्यता ही बेनियाज़ी है? बल्कि (असल) बेनियाज़ी तो दिल की बेनियाज़ी है और फ़क़ीरी तो असल में दिल की फ़क़ीरी है"। (हदीस़ स़हीह़ है)।

जिस के दिल में बेनियाज़ी हो, उसे सांसारिक तंगी कुछ हानि नहीं पहुँचा सकती, और जिसके दिल में फ़क़ीरी हो उसे संसार की बहुतेरी (नियामतें) भी बेनियाज़ नहीं कर सकतीं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला द्वारा बाँटी गई आजीविका पर संतोष करो, तमाम लोगों से अधिक बेनियाज़ हो जाओगे"। (यह हदीस़ हसन है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

एक हदीस़ में आया है कि "जो व्यक्ति सवाल करने से बचता है तो अल्लाह तआला उसे सवाल करने से सुरक्षित ही रखता है, और जो व्यक्ति बेनियाज़ी प्रकट करता है तो अल्लाह उसे बेनियाज़ बना देता है"।

النَّفسُ تَجزَعُ أَن تَكونَ فَقِيرة   والفَقرُ خيرٌ مِن غِنًى يُطغِيهَا

وَغِنَى النَّفسِ هُو الكَافِي فَإن   أَبَت فَجَمِيعُ مَا فِي الأَرضِ لَا يَكفِيهَا

अनुवादः मानव को फ़क़ीरी व दरिद्रता से डर लगता है, जब्कि फ़क़ीरी ऐसी मालदारी से बेहतर है जो उस को उद्दंड बना दे। दिल की मालदारी (मानव के लिये) काफ़ी है, यदि दिल की मालदारी न हो तो इस धरती की समस्त धन-दौलत भी उसके लिये अपर्याप्त है।

इस्लाम की दृष्टि में बेनियाज़ वह है जिसका दिल लोगों से बेनियाज़ एवं महान व सर्वोच्च अल्लाह का मोहताज हो, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: "मोमिन का सम्मान रात की नमाज़ (तहज्जुद) में है, और उसका आदर-सत्कार एवं मान-मर्यादा उस चीज़ से बेनियाज़ व बेपरवाह हो जाने में है जो (सांसारिक मोह माया के रूप में) लोगों के हाथों में है"। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे ह़ाकिम ने रिवायत किया है)।

जब एक देहाती से कहा गया किः "रोटी का मूल्य एक दीनार हो गया है! तो उसने उत्तर देते हुये कहाः अल्लाह की क़सम! मुझे इसकी तनिक भी चिंता नहीं, यदि गेहूँ के एक दाने का मूल्य भी एक दीनार हो जाये (तो भी मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा), मैं अल्लाह की इबादत व उपासना करता हूँ जैसाकि उसने आदेश दिया है, और वह मुझे रोज़ी देता है जैसाकि उसने वादा किया है!"

अल्लामा नसफ़ी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "वास्ती ने कहाः जो अल्लाह के द्वारा बेनियाज़ी व बेपरवाही हासिल करे, वह कभी दरिद्र व फ़क़ीर नहीं होता, जो अल्लाह के द्वारा सम्मान हासिल करे वह कभी अपमानित नहीं होता। ह़ुसैन कहते हैं: बंदा जितना अल्लाह (के समक्ष अपनी) ज़रूरत व मोहताजी प्रकट करता है, उसी के समान अल्लाह उसे बेनियाज़ी प्रदान करता है"।

ह़कीम का कथन हैः "जब कोई मुझ पर अत्याचार करता है तो मैं यह स्मरण कर लेता हूँ कि अल्लाह के द्वारा मैं इससे बेनियाज़ व बेपरवाह हूँ, (तत्पश्चात मुझे) अपने दिल में ठंडक का अनुभव होने लगता है"।

इब्ने सअदी रह़िमहुल्लाह का कहना हैः "वास्तविक बेनियाज़ी व बेपरवाही तो दिल की बेनियाज़ी व बेपरवाही है, कितने ही धनाढ्य व धनवान ऐसे हैं जिन के दिल दरिद्रता एवं क्षोभ स भरे हुये हैं"।

تبرأتُ مِن حوِلي وطوِلي وَقُوَّتِي　　　وَإِنِي إِلى مولاَيَ فِي غَايَةِ الفَقرِ
غِنَى الْمَرءِ بِالرَّحمنِ أَغنَى مِنَ الغِنَى　　　بِهِ يُكتَسَى ثَوبُ الَمهابَةِ وَالقَدرِ

अनुवादः मैं अपनी शक्ति व सामर्थ्य तथा मालदारी व उदारता से बरी हूँ, मैं अपने आक़ा व स्वामी का बेहद मोहताज हूँ। इंसान को रह़मान के द्वारा मिलने वाली बेनायाज़ी व

बेपरवाही सर्वोत्तम बेनायाज़ी व बेपरवाही है, इसी के द्वारा वैभव, प्रताप एवं आदर सम्मान का वस्त्र प्राप्त होता है।

हे अल्लाह! तू ने हमें माँगने के पहले ही (सब कुछ) दे रखा है, तो भला जब हम तुझ से माँगेंगे तो तू कितना (अधिक) अनुग्रहित करेगा?!

हे अल्लाह! हमें अपना मोहताज बना कर अन्य (प्राणियों) से बेनियाज़ व बेपरवाह कर दे, स्वयं से बेनियाज़ कर के हमें दरिद्र व फ़क़ीर मत बना, क्योंकि तू ही वास्तविक अर्थों में बेनियाज़ है, तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं।

हे अल्लाह! हमें अपनी ह़लाल (रोज़ी) के द्वारा ह़राम (रोज़ी) से बेनियाज़ व बेपरवाह कर दे, अपने फ़ज़्ल व इनाम से अनुग्रहित कर के हरेक से बेनियाज़ व बेपरवाह कर दे।

(49, 50)

(अल-ह़कम, अल-ह़कीम जल्ल जलालुहु)

सुनन नसई में हानी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है किः जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुये और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को सुना कि वो हानी को अबुल ह़कम के उपनाम व उपाधि (कुनियत) से पुकारते थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें बुलाया और उन से फ़रमायाः "ह़कम (शासक) तो केवल अल्लाह तआला है तथा हुक्म (शासन) भी केवल उसी का चलता है, उन्होंने कहाः मेरी जाति के लोगों के बीच जब किसी बात पर मतभेद हो जाता है तो वे मेरे पास आते हैं और मैं उनके मध्य निर्ण्य कर देता हूँ जिस पर दोनों पक्ष प्रसन्न हो जाते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः यह तो बड़ी अच्छी बात है, फिर पूछाः तुम्हारा कोई पुत्र है ? मैंने कहाः (हाँ हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं) शुरैह़, मुस्लिम तथा अब्दुल्लाह, आपने पूछाः इसमें सबसे बड़ा कौन है ? मैनें कहाः शुरैह़, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः (फिर तो आज से) तुम अबू शुरैह़ हो"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

हमारे महान व सर्वोच्च परवरदिगार के नामों में से दो महान नामः (अल-ह़कम एवं अल-ह़कीम भी) हैं, सर्वशक्तिशाली व महानतम अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

अनुवादः (कोई पूज्य नहीं परंतु वही, वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है)। सूरह आले इमरानः 6।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का इर्शाद हैः

﴿أَلَا لَهُ ٱلۡحُكۡمُ وَهُوَ أَسۡرَعُ ٱلۡحَٰسِبِينَ﴾

अनुवादः (उसी को निर्णय करने का अधिकार है, और वह अतिशीघ्र हिसाब लेने वाला है)। सूरह अनआमः 62।

ह़कीम के दो अर्थ हैं:

प्रथम अर्थः वह जिसने हरेक चीज़ को ठोस, सबल, पक्का एवं मज़बूत बनाया, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ह़कीम है, क्योंकि उसने अपने अक़वाल व अफ़आल (कथन

एवं कर्म) को ठोस, सबल, पक्का एवं मज़बूत बनाया, उसके सभी अक़वाल व अफ़आल दुरुस्त, संतुलित एवं सबल हैं।

अफ़आल (कर्म) में सबलता जो कि हिकमत व तत्वदर्शिता का मूल उद्देश्य है, उसका एक रूप यह है कि: उसने प्रत्येक वस्तु को उसके उचित स्थान पर रखा है, उसका सर्वोत्तम प्रबंध किया है, अपनी रचना को सुंदरतम रूप में ढ़ाला, उसकी तदबीर व प्रबंध, तक़दीर व भाग्य में, कमी, विकार एवं ख़लल की कोई संभावना नहीं है, न ही उसकी कारीगरी, शिल्पकारी व दक्षता में किसी प्रकार का कोई दोष व त्रुटि पाई जाती है, और न ही उसके अफ़आल (कर्मों व आदेशों) में किसी प्रकार की कोई गलती व भूल-चूक होती है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿صُنْعَ ٱللَّهِ ٱلَّذِىٓ أَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ﴾

अनुवाद: (यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुढ़ृढ़ किया है प्रत्येक चीज़ को)। सूरह नम्ल: 88।

जिस प्रकार से महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ को सुढ़ृढ़, सबल एवं मज़बूत बनाया है, उसी प्रकार से अपनी किताब क़ुरआन -ए- करीम की आयतों व श्लोकों को भी सुढ़ृढ़, सबल एवं मज़बूत बनाया है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान है:

﴿فَيَنسَخُ ٱللَّهُ مَا يُلْقِى ٱلشَّيْطَٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ ٱللَّهُ ءَايَٰتِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ﴾

अनुवाद: (निरस्त कर देता है अल्लाह शैतान के संशय को, फिर सुढ़ृढ़ कर देता है अल्लाह अपनी आयतों को और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है)। सूरह हज: 52।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन को हिकमत वाली किताब की संज्ञा दी है:

﴿تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱلْكِتَٰبِ ٱلْحَكِيمِ ۝٢﴾

अनुवाद: (यह आयतें हैं ह़कीम (ज्ञानपूर्ण) पुस्तक की)। सूरह लुक़मान: 2।

ह़कीम का द्वितीय अर्थ है: वह महानतम व सर्वोच्च (अल्लाह) अपने बंदों के मध्य न्यायकर्ता एवं उन पर ह़ाकिम व शासक है, चुनाँचे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने भक्तों के बीच न्याय करता है तथा उन पर अपना शासन चलाता है, अर्थात: उनके मध्य अपनी शरीअत (धार्मिक प्रावधान) के द्वारा निर्णय करता है।

अल्लाह तआला ने हुक्म एवं निर्णय को अपने लिये आरक्षित कर रखा है, अतः किसी के लिये यह जायज़ व उचित नहीं कि उस चीज़ का दुस्साहस करे जो अल्लाह के लिये आरक्षित है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنِ ٱلۡحُكۡمُ إِلَّا لِلَّهِۖ يَقُصُّ ٱلۡحَقَّۖ وَهُوَ خَيۡرُ ٱلۡفَٰصِلِينَ﴾

अनुवादः (निर्णय तो केवल अल्लाह के अधिकार में है, वह सत्य को वर्णित कर रहा है, और वह सर्वोत्तम अधिकारी है)। सूरह अनआमः 57।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿أَلَا لَهُ ٱلۡحُكۡمُ وَهُوَ أَسۡرَعُ ٱلۡحَٰسِبِينَ﴾

अनुवादः (उसी को निर्णय करने का अधिकार है, और वह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है)। सूरह अनआमः 62।

अल्लाह तआला को हाकिम व निर्णायक मानने का तरीका यह है कि मतभेद के समय उसकी किताब (क़ुरआन) एवं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को हाकिम व निर्णायक माना जाये, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمَا ٱخۡتَلَفۡتُمۡ فِيهِ مِن شَيۡءٖ فَحُكۡمُهُۥٓ إِلَى ٱللَّهِ﴾

अनुवादः (और जिस बात में भी तुम ने विभेद किया है उसका निर्णय अल्लाह ही को करना है)। सूरह शूराः 10।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ही इस बात का अधिकारी व योग्य है कि अपने बंदों के मध्य निर्णायक भूमिका निभाये, क्योंकि वही उन का रब, पालनहार, ख़ालिक़, रचयिता, माबूद व उपास्य है।

﴿أَفَغَيۡرَ ٱللَّهِ أَبۡتَغِي حَكَمٗا وَهُوَ ٱلَّذِيٓ أَنزَلَ إِلَيۡكُمُ ٱلۡكِتَٰبَ مُفَصَّلٗاۚ﴾

अनुवादः (-हे नबी!- उन से कहो क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूँ, जब्कि उसी ने तुम्हारी ओर यह खुली पुस्तक (क़ुरआन) उतारी है)। सूरह अनआमः 114।

हमारा परवरदिगार सभी निर्णायकों से बढ़ कर सर्वोत्तम निर्णायक है, वह महानतम व सर्वोच्च (रब) हरेक चीज से भलि भाँति परिचित है, वह हर मसला में अति संतुलित एवं सबसे उचित निर्णय करता है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَٱتَّبِعۡ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيۡكَ وَٱصۡبِرۡ حَتَّىٰ يَحۡكُمَ ٱللَّهُۚ وَهُوَ خَيۡرُ ٱلۡحَٰكِمِينَ ١٠٩﴾

अनुवादः (आप उसका अनुसरण करते रहिये जो कुछ आपके पास वह्य (प्रकाशना) की जाती है, और धैर्य रखिये यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे, और वह सभी निर्णायकों से बढ़ कर (सर्वोत्तम निर्णायक) है)। सूरह यूनुसः 109।

मोमिन उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अल्लाह की उतारी हुई शरीअतों (धार्मिक प्रावधानों) का अनुकरण न करे, उसको अपना न्यायकर्ता न माने, उसकी शिक्षाओं के समक्ष आत्मसर्पण न कर दे, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيۡنَهُمۡ ثُمَّ لَا يَجِدُواْ فِيٓ أَنفُسِهِمۡ حَرَجٗا مِّمَّا قَضَيۡتَ وَيُسَلِّمُواْ تَسۡلِيمٗا ٦٥﴾

अनुवादः (आप के पालनहार की शपथ! वो कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बना लें, फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें, और पूर्णतः स्वीकार कर लें)। सूरह निसाः 65।

वह क़ौम और समुदाय जो मुसलमान होने का दावा करे, उसकी सफलता व कामयाबी इसके सिवा संभव ही नहीं कि वह अल्लाह की शरीअत को अपना निर्णायक बनाये एवं उसका अनुसरण करे।

❑ हिकमत वाले (तत्वज्ञ) अल्लाह का इनाम व पुरस्कारः

जिसको हिकमत मिल जाये उसे बहुतेरी प्रकार की भलाई प्राप्त हो जाती है, अल्लाह तआला अपने जिस भक्त को चाहता है हिकमत से नवाज़ता हैः

﴿وَلَقَدۡ ءَاتَيۡنَا لُقۡمَٰنَ ٱلۡحِكۡمَةَ﴾

अनुवादः (निस्संदेह हमने लुक़मान को हिकमत दी थी)। सूरह लुक़मानः 12।

सभी अम्बिया -ए- किराम अलैहिमुस्सलाम को ह़िकतम (तत्वदर्शिता) प्रदान की गई थी, वह ह़िकमत के मामले में एक दूसरे से बढ़े हुये थे।

स़ह़ीह़ैन में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "दो महिलायें थीं और उनके साथ दो बच्चे भी थे, फिर भेड़िया आया और एक बच्चे को उठा ले गया, उसने अपनी संगिनी महिला से कहा किः भेड़िया तेरे बच्चे को उठा ले गया है, दूसरी महिला ने कहा किः (नहीं) वह तेरा बच्चा ले गया है, वो दोनों महिलायें अपना मुकदमा व अभियोग ले कर दाऊद अलैहिस्सलाम के पास आईं, तो बड़ी महिला के पक्ष में निर्णय सुना दिया गया, वो दोनों वहाँ से निकल कर सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आईं और उन्हें इस घटना से अवगत कराया, सुलैमान अलैहिस्सलाम ने कहा कि छुड़ी लाओ में लड़के के दो टुकड़े कर के दोनों को एक-एक टुकड़ा दे दूँगा, इस पर छोटी महिला बोल उठी किः ऐसा न कीजिये, आप पर अल्लाह रह़म करे! यह बड़ी महिला का ही लड़का है, यह सुन कर आपने छोटी महिला के पक्ष में निर्णय किया"।

❑ आप निश्चिंत रहें!

याद रखें कि अल्लाह तआला बड़ा ह़कीम, बुद्धिमान व तत्वज्ञ है, वह ह़िकमत व तत्वदर्शिता के आधार पर ही अनुग्रहित करता है और ह़िकमत के आधार पर ही (किसी वस्तु से) वंचित रखता है, अल्लाह तआला आपके लिये किसी चीज़ का चयन करे, यह इससे उत्तम है कि आप स्वयं अपने किसी चीज़ का चुनें:

﴿وَكَانَ بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ رَحِيمٗا﴾

अनुवादः (अल्लाह तआला मोमिनों के लिए अत्यंत दयावान है)। सूरह अह़ज़ाबः 43।

सुफ़ियान स़ौरी रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "अल्लाह का (अपने बंदे को किसी चीज़ से) वंचित रखना भी एक प्रकार की नवाज़िश व अनुग्रह है, क्योंकि वह कंजूसी अथवा (उस चीज़ की) कमी व अनुपलब्धता के कारण वंचित नहीं करता, अपितु वह बंदे के हित व मसलहत को देखता है तथा अपने अधिकार एवं स्वविवेक के अनुसार उसे वंचित रखता है"। कभी-कभी आप ऐसी वस्तु माँगते हैं जिसका परिणाम अच्छा नहीं होता है, बल्कि यदा-कदा वह वस्तु आपकी मृत्यु का कारण होती है!

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं किः “बंदे को व्यवसाय, अर्थव्यवस्था, साम्राज्य एवं सरदारी की चिंता रहती है यहाँ तक कि वो उसके लिये सरल हो जाती है, फिर अल्लाह अपने बंदे को देखता है और फ़रिश्तों को आदेश देता है किः इस मामला को इससे फेर दो, क्योंकि यदि तुमने इसे उसके लिये सरल बना दिया तो तुम उसे जहन्नम (नरक) में पहुँचा दोगे, चुनाँचे अल्लाह तआला उसके मामला को उससे फेर देता है, (और होता यह है कि) वह बंदा उसे अपशकुन व बुरा समझते हुये कहता फिरता है किः अमूक व्यक्ति मुझ पर बाज़ी ले गया, अमूक ने मुझ पर अत्याचार किया, हालांकि वह उस पर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व एहसान होता है”।

किसी सलफ़ (पुनीत पूर्वज) का कथन है कि एक व्यक्ति अल्लाह तआला से युद्ध (में शामिल होने) का सवाल करता था, उसने निद्रा की स्थिति में किसी को यह पुकार लगाते हुये सुना किः “यदि तुम युद्ध में शामिल होगे तो बंदी बना लिये जाओगे, और यदि बंदी बना लिये गये तो नस़रानी (ईसाई) बन जाओगे”,

﴿وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ وَأَنتُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ﴾

अनुवादः (वास्तविक ज्ञान अल्लाह ही को है, तमु अनभिज्ञ हो)। सूरह बक़रहः 216।

تَبَارَكَ فَهُوَ اللهُ جَلَّ جَلالُه   جَوادٌ كَرِيمٌ كَامِلٌ لا يُمَثَّلُ
حَكِيمٌ فَيَقضِي مَا يَشاءُ بِحُكْمِهِ   حَلِيمٌ فَلا يَخْشَى فَواتًا فَيعجلُ

अनुवादः (अल्लाह) बरकत वाला है, वह अल्लाह सर्वोच्च व बुलंद शान वाला है, सख़ी व दाता है, (अपनी विशेषताओं में) कामिल व पूर्ण है, उसका काई समतुल्य नहीं। वह ह़कीम (तत्वज्ञ) व बुद्धि रखने वाला है, अपनी मशीअत व इरादा से जो चाहता है फैसला करता है, ह़लीम व सहनशील है, उसे किसी वस्तु के छूट जाने का कोई भय नहीं कि जल्दबाज़ी व उतावलापन से काम ले।

❒ सावधान रहें!

इस बात से सावधान रहें कि जब (किसी चीज़ की) ह़िकमत व तत्वदर्शिता आप से छिप्त हो तो आप अल्लाह से बदगुमानी करने लगें, बल्कि (ऐसी स्थिति में) अज्ञानता को इसका कारण समझें, क्योंकि हमारी बुद्धि अल्लाह तआला की ह़िकमतों को पूर्णतः समझने में अक्षम है, फ़रिश्ते -जो अल्लाह के सबसे निकट हैं और वह अल्लाह की महानता व क्षमता से

परिचित भी हैं, वो- भी उस ह़िकमत व दूरदर्शिता को नहीं समझ सके जो आदम अलैहिस्सलाम को धरती पर उतारने में निहित था, अतः कहने लगेः

﴿وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّى جَاعِلٌ فِى ٱلْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوٓا۟ أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ ٱلدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّىٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾﴾

अनुवादः (और (हे नबी! याद करो) जब आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाने जा रहा हूँ, वो बोलेः क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा? जब्कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण एवं पवित्रता का गान करते हैं! (अल्लाह ने) कहाः जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते)। सूरह बक़रहः 30।

जब अल्लाह की तक़दीर, भाग्य एवं उसका आदेश पारित हो जाये तो अल्लाह के साथ (शिष्टाचार निभाते हुये) शांत रहें, ताकि अल्लाह तआला आपको अपने असीमित अनुग्रह व मेहरबानियों से लाभांवित कर सके।

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का कथन हैः "यदि अल्लाह तआला हमारे सामने से ग़ैब (छिप्त, परोक्ष, भविष्य) का पर्दा उठा दे, तो हम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने लिये वही चुनेगा जो अल्लाह उसके लिये चयन करता है"।

हुदैबिया संधि के समय उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होते हैं और अर्ज़ करते हैं किः "हे अल्लाह के रसूल! क्या हम ह़क़ व सत्य पर तथा कुफ़्फ़ार बात़िल व असत्य पर नहीं हैं?! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: हाँ, ऐसा ही है, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः क्या हमारे शहीद एवं बलिदानी जन्नत व स्वर्ग में तथा उनके वधित व मक़तूल जहन्नम व नरक में नहीं जायेंगे?! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः हाँ, क्यों नहीं, (तब) उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः फिर हम अपने धर्म के विषय में अपमान का घोंट क्यों पीयें (अर्थात दब कर संधि क्यों करें?) और क्यों वापस चले जायें जब्कि अल्लाह तआला ने अभी हमारा एवं उनका फैसला नहीं किया है?! नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः हे इब्ने ख़त्ताब! मैं अल्लाह का रसूल हूँ और अल्लाह तआला मुझे कभी नष्ट व नाश नहीं करेगा। इसके पश्चात

अल्लाह तआला ने सूरह फ़त्ह अवतरित की, जिससे लोगों को विश्वास हो गया कि यह सुलह व संधि वास्तव में विजय व मदद है"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

कलम उठा लिया गया, सहीफ़े व पत्रिकायें सूख गईं, फैसला हो चुका एवं भाग्य लिखे जा चुकेः

﴿قُل لَّن يُصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ ٱللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَىٰنَاۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ۝٥١﴾

अनुवादः (आप कह दें किः हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचे गी परंतु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है, वही हमारा सहायक है, और अल्लाह ही पर ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये)। सूरह तौबाः 51।

अल्लाह तआला सभी कृपालुओं से बढ़ कर कृपालु व दयावान है, वह सब निर्णय करने वालों से उत्तम निर्णय करने वाला है, इसलिये आप प्रसन्न हो जायें कि शीघ्र ही कुशादगी व समृद्धि मिलने वाली है, क्योंकि आँसू के पश्चात मुस्कान, भय के पश्चात अभय एवं आतंक के पश्चात शांति का मिलना नैसर्गिक बात है, किंतु आवश्यक यह है कि आप अल्लाह से भय खाते रहें।

अल्लामा आलूसी रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "जो महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का तक़वा व भय अपनाता है, उसके हृदय से हिकमत व दूरदर्शिता के स्रोत निकलते हैं, और तक़वा के हिसाब से उसके ऊपर संसार के भेद प्रकट होने लगते हैं",

﴿وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾

अनुवादः (अल्लाह से डरो ताकि तुम्हें मुक्ति मिले)। सूरह आले इमरानः 130।

हे अल्लाह! हे सभी निर्णायकों से बढ़ कर निर्णय करने वाले! हमारे लिये अपनी हिकमत व दूरदर्शिता के द्वार खोल दे, और हमें अपनती तक़दीर से प्रसन्न कर दे, निस्संदेह तू सर्व ज्ञानी व तत्वज्ञ है।

(51)

(अल-लतीफ़ जल्ल जलालुहु)

आइये हम अल्लाह के महान नाम (अल-लतीफ़, अर्थातः अति स्नेही व मेहरबान, जल्ल जलालुहु) के नूर से प्रकाश पाते एवं उसकी शीतल छाया में ठंडक पाते हैं, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ إِنَّ رَبِّى لَطِيفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ ﴾

अनुवादः (वास्तव में मेरा रब जिसके लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है, निश्चय ही वही अति ज्ञानी तत्वज्ञ है)। सूरह यूसुफ़ः 100।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का यह फ़रमान हैः

﴿لَّا تُدْرِكُهُ ٱلْأَبْصَٰرُ وَهُوَ يُدْرِكُ ٱلْأَبْصَٰرَ ۖ وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلْخَبِيرُ ﴿١٠٣﴾﴾

अनुवादः (उस का आँख इदराक नहीं कर सकती, जब्कि वह सब कुछ देख रहा है, वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है)। सूरह अनआमः 103।

अरबी भाषा के शब्द ‘‘लुत़्फ़’’ का अर्थ हैः नेकी, सदाचारिता, खुशी व प्रसन्नता, आदर व सम्मान, नम्रता, दयालुता, स्नेह व मेहरबानी एवं सूक्ष्म वस्तुओं का ज्ञान।

जब किसी कर्म में दयालुता, स्नेह, विनम्रता व मेहरबानी एवं ज्ञान व सूचना में सूक्ष्मता व सटीकता पाई जाये तब ‘‘लत़ीफ़’’ अर्थ पूर्ण होता है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह इतना लत़ीफ़ (मेहरबान एवं सूक्ष्म दर्शी) है कि उससे बढ़ कर कोई लत़ीफ़ (मेहरबान एवं सूक्ष्म दर्शी) नहीं है, वह अपने बंदों के प्रति दयालु व कृपालु है, गुनाव व पाप पर उन्हें शीघ्र ही दण्ड नहीं देता, इसके अतिरिक्त उससे कोई भी वस्तु छिप्त नहीं है, चाहे वह अति सुक्ष्म, बारीक एवं (हमारी निगाहों से) ओझल ही क्यों न हो।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जो अपने बंदों के साथ भलाई व एह़सान करता है और उन पर इस प्रकार से मेहरबानी करता है कि उन्हें पता भी नहीं चलताः

﴿ٱللَّهُ لَطِيفٌۢ بِعِبَادِهِۦ يَرْزُقُ مَن يَشَآءُ ۖ﴾

अनुवादः (अल्लाह बड़ा दयालु है अपने भक्तों पर, वह जीविका प्रदान करता है जिसे चाहे)। सूरह शूराः 19।

वही है जो उन्हें ऐसे स्थानों से रोज़ी देता है जिनका उन्हें गुमान भी नहीं होता।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जिसका इदराक न तो इंद्रीय कर सकती हैं और न नयन उसे देख सकते हैं:

﴿لَّا تُدْرِكُهُ ٱلْأَبْصَٰرُ وَهُوَ يُدْرِكُ ٱلْأَبْصَٰرَ ۖ وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلْخَبِيرُ ١٠٣﴾

अनुवादः (उस का आँख इदराक नहीं कर सकती, जब्कि वह सब कुछ देख रहा है, वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है)। सूरह अनआमः 103।

अल्लाह तआला ने बंदों को आवश्यकता से अधिक नियामतें प्रदान कीं, क्षमता से कम उन के ऊपर जिम्मेवारियाँ डालीं, अल्प समय में सौभाग्य, सआदत व कल्याण से लाभांवित होने का मार्ग प्रशस्त कर दियाः

﴿ إِنَّ رَبِّى لَطِيفٌ لِّمَا يَشَآءُ ﴾

अनुवादः (वास्तव में मेरा रब जिसके लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है)। सूरह यूसुफ़ः 100।

وَهُوَ اللَّطِيفُ بِعَبدِهِ وَلِعَبدِهِ ‏ ‏ ‏ ‏ وَاللُّطفُ فِي أَوصافِهِ نَوعانِ
إِدراكُ أَسرارِ الأُمورِ بِخِبرَةٍ ‏ ‏ ‏ ‏ وَاللُّطفُ عندَ مَوَاقِعِ الإِحسَانِ
فَيُرِيكَ عِزَّتَهُ وَيُبدِي لُطفَه ‏ ‏ ‏ ‏ وَالعبدُ فِي الغَفلاتِ عَن ذَا الشأنِ

अनुवादः वह भक्तों के लिये दयालु तथा उनके मामलों का प्रबंध कर्ता है, उसकी सिफ़त -ए- लुत्फ़ के दो अर्थ हैं। महारत, निपुणता व दक्षता के साथ मामलों की सूक्ष्मता का इदराक व बोध करना तथा एहसान व भलाई के समय मेहरबानी व दया करना। अतः अल्लाह तआला आप को अपनी शक्ति व उच्चता के दर्शन भी कराता है और दया, कृपा व मेहरबानी भी आप पर प्रकट करता है, जब्कि बंदा (अल्लाह की) इस निराली शान से ग़ाफ़िल एवं असावधान होता है।

❑ निस्संदेह वह लतीफ़ (सूक्ष्मदर्शी, दयालु एवं मेहरबान) है!

आपका करीम व लतीफ़ (दानवीर एवं दयालु) परवरदिगारः लुत्फ़, मेहरबानी व दयालुता के साथ आपको अपने फ़ज़्ल व एहसान से अनुग्रहित करता है, वह आप से अधिक आपकी स्थिति से परिचित एवं आप से बढ़ कर आप पर मेहरबान है।

जब महानतम व सर्वोच्च लतीफ़, उदार व मेहरबान (अल्लाह) ने आप पर दया करना चाहा तो आप के दिल में ईमान का नूर (प्रकाश) डाल दिया, जिस नूर की बदौलत आपका हृदय रौशन व प्रकाशमान रहता है, कुकर्मों एवं फ़ित्नों को अप्रिय रखता एवं पापों से बचता हैः

﴿وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلۡخَبِيرُ﴾

अनुवादः (वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है)। सूरह अनआमः 103।

जब महानतम व सर्वोच्च, लतीफ़, उदार व मेहरबान अल्लाह आप की सहायता करना चाहे तो ऐसी चीज़ों को भी आपके वशीभूत कर देता है जो सामान्यतः (सहायता व मदद) का कारण नहीं होती हैं, और वह अल्लाह की आज्ञा से आपकी सहायता का बड़ा माध्यम बन जाती हैं:

﴿وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلۡخَبِيرُ﴾

अनुवादः (वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है)। सूरह अनआमः 103।

जब महानतम व सर्वोच्च, लतीफ़, उदार व मेहरबान (अल्लाह) आपको निरोग करना चाहे तो आश्चर्यजनक माध्यम बल्कि यदा-कदा अति दुर्बल माध्यम को भी आप के (आरोग्य के) लिये काबू में कर देता है, निःसंदेहः

﴿وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلۡخَبِيرُ﴾

अनुवादः (वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है)। सूरह अनआमः 103।

जब महानतम व सर्वोच्च, उदार व मेहरबान (अल्लाह) आप को रोज़ी देना चाहे तो आपके लिये ऐसे मामलों को आसान व सरल कर देता है जो यदा-कदा आप से छिप्त होते हैं, लेकिन अल्लाह उन से सूचित होता है, कभी आपके पास दरिद्र व निर्धन को भेजता है जिसे आप कुछ नवाज़ देते हैं, फिर वह आपके लिये दुआ करता है, उसकी दुआ के लिये आसमान

के द्वार खोल दिये जाते हैं, फिर आप के पास रोज़ी भेजी जाती है, इस तरह अल्लाह की मशीअत व इरादा पूर्ण होता है, और आप इससे पूर्णतः अनभिज्ञ होते हैं किः

﴿وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلۡخَبِيرُ﴾

अनुवादः (वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है)। सूरह अनआमः 103।

❒ क्या आपको (उससे भेंट करने का) शौक़ नहीं होता?!

यदि बंदा यह जान ले कि लतीफ़, उदार व मेहरबान (अल्लाह) उसके लिये क्या-क्या तदबीर करता है, तो उसका दिल उससे भेंट करने की ललक में पिघल जायेगा।

कितने रोग हैं जो आपको लगीं और उसने उन्हें दूर कर दिया ... !

कितनी आपदायें आप पर उतरीं और उसने उन्हें टाल दिया ... !

कितने ऐसे ऋण हैं जिन्हें रब ने चुका दिया ... !

कितनी ऐसी चिंताएं हैं जिनसे उसने मुक्ति दिलाई ... !

ये सब आपकी शक्ति व क्षमता से नहीं अपितु केवल उसके लुत्फ़, करम, उदारता, स्नेह व मेहरबानी से संभव हुआ!

यदि लोग सांसारिक शासकों के द्वार पर दस्तक देते हैं, तो आप सबसे बड़े, महान व शासकों के शासक के द्वार पर दस्तक दें।

यदि लोग सांसारिक हाकिम व सरदार के दरबार में जा कर घुटने टेकते हैं तो आप सबसे सम्मानित, आदरणीय व मर्यादा वाले माबूद व पूज्य के दरबार में अपने घुटने टेकें।

जब आप रोग से जूझ रहे हों, क़र्ज़ आप को बोझल कर दे, किसी गुम अथवा आँखों से दूर (सगे-संबंधी) की याद में आप दुःखी हो जायें, संतान के विषय में कोई अंजाना भय आप को सताने लगे, निर्धनता व दरिद्रता से आप त्रस्त हो जायें, तो याद करें कि, अल्लाहः

﴿وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلۡخَبِيرُ﴾

अनुवादः (वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है)। सूरह अनआमः 103।

वही है जिसके हाथ में कुशादगी व समृद्धि की कुंजियां हैं, उसके कोष भरे हुये हैं, और अल्लाह का हाथ दिन-रात सख़ावत, उदारता व दानवीरता का दरिया बहाता रहता हैः

﴿وَإِن مِّن شَيۡءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَآئِنُهُۥ﴾

अनुवादः (और कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके कोष हमारे पास न हों)। सूरह हिज्रः 21।

सौभाग्य, सआदत व कल्याण उसी के पास है, अमन सुकून का मालिक वही है, राहत व शांति वही प्रदान करता है, रज़ा व प्रसन्नता उसी से प्राप्त होती है, आरोग्य व स्वास्थ उसी के हाथ में है, उसी के हाथ में प्रत्येक चीज़ का स्वामित्व है और हर चीज़ करने में सक्षम व समर्थ है।

चूँकि आप महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की मईअत (साथ), निगरानी व दृष्टि में हैं, अतः बिल्कुल भी चिंता न करें, यदि आप पर सांसारिक दुःखों, पीड़ाओं एवं आपदाओं के पहाड़ भी टूट पड़ें तब भी बिल्कुल न घबराएं, बल्कि विश्वास रखें यह संकट आप को विशिष्ट लोगों की पंक्ति में ला खड़ा कर देंगे जिस प्रकार से यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ हुआ।

यदि वो चीज़ें आपके जीवन से पूर्णतः छिन जायें जिन्हें आप सौभाग्य व सआदत का माध्यम समझते हैं तो विश्वास करें कि अल्लाह ने उन्हें आप से इसलिये दूर कर दिया है ताकि वो आप के दुर्भाग्य व बदनसीबी का कारण न बन सकें।

❒ सआदत, सौभाग्य व खुशनसीबी की कुंजीः

यदि आप चाहते हैं कि अल्लाह लतीफ़, उदार, दयालु एवं मेहरबान के साथ से लाभांवित हों, तो उसकी शरीअत (धार्मिक प्रावधानों) का अनुसरण करें, उसकी नियामतों पर उसको धन्यवाद दें, उसके शासन व बादशाहत में सोच-विचार करें, उसकी स्तुति व स्मरण में लीन रहें, अल्लाह तआला के कलाम का श्रवण करें (अर्थात उसे मन लगा कर सुनें), अल्लाह तआला को अपना रब व पालनरहार मानें, उसकी किताब को जीवन सूत्र के लिये सबसे उप्युक्त किताब समझें एवं उसके नबी को अपना नबी व रसूल मानें।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की मईयत (साथ) बिना किसी कारण एवं बिना परिश्रम व तपस्या के प्राप्त नहीं होती, और जब प्राप्त होती है तो प्रेम व मोहब्बत से दिल परिपूर्ण हो जाता है, चिंता व दुःख का बादल छँट जाता है, जीवन के कष्ट दूर एवं संसार की सारी थकान काफ़ूर हो जाती हैं।

❒ लतीफ़, उदार, दयालु व मेहरबान (अल्लाह के समक्ष) विनम्रता अपनायें!

हमारा लतीफ़, उदार, दयालु एवं मेहरबान परवरदिगारः लुत्फ़, दयालुता व मेहरबानी को पसंद करता है और यह प्रिय रखता है कि आप भी मख़लूक़ (सृष्टि) के प्रति दयालुता व मेहरबानी अपनायें। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों की सूचना न दे दूँ जो जहन्नम की आग पर अथवा जहन्नम की आग जिन पर ह़राम व वर्जित हैः (वो हैं:) लोगों के निकट रहने वाले, आसानी करने वाले, तथा विनम्र अख़लाक़ व शिष्टाचार वाले सभी लोग (पर जहन्नम की आग ह़राम है)"। यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

जब आपको अल्लाह तआला के लुत्फ़ व दया की आवश्यकता हो ताकि आपको पेश आने वाले दुःख व विपत्ति से छुटकारा मिल जाये, तो अल्लाह के समक्ष अपनी दुर्बलता, कमज़ोरी एवं विवशता प्रकट करें, मुसलमानों के संग विनम्रता एवं शालीनता के साथ पेश आयें एवं विशेष रूप से दुर्बल एवं कमज़ोरों पर तरस खायें।

إِلَهِي أَنتَ لِلإحسانِ أَهلٌ   وَمِنكَ الجُودُ وَالفَضلُ الجَزِيلُ
إِلَهِي بَاتَ قَلبِي فِي هُمُومٍ   وَحَالِي لَا يُسَرُّ بِهِ خَلِيلُ
إِلَهِي جُد بِعَفوِكَ لِي فَإِنِّي   عَلَى الأَبوابِ مُنكَسِرٌ ذَلِيلُ

अनुवादः हे अल्लाह! तू ही सभी फ़ज़्ल, एहसान व परोपकार को अंजाम देने वाला है, और तुझ से ही सख़ावत, उदारता एवं महान व बड़ा फ़ज़्ल प्राप्त होता है। हे मेरे पालनहार! मेरा हृदय रात भर दुःख व क्षोभ से बेकरार व अशांत रहा, और मेरी दशा इतनी बुरी हो गई कि निकटतम मित्र को भी इसकी सूचना नहीं दे सकता। हे अल्लाह! मेरे ऊपर अपनी क्षमा व माफी की उदारता कर, इसी के लिये मैं तेरे द्वार पर विनम्रता, श्रद्धा एवं विवशता के साथ खड़ा हूँ।

हे अल्लाह! मेरे ऊपर दया कर, हमें अपने सामीप्य के द्वारा प्रेम व मोहब्बत से अनुग्रहित कर, अपने अनुसरण व आज्ञापालन पर हमारी सहायता कर, और हमें (जब मौत आये तो) अच्छी मौत दे।

(52)

(अल-ख़बीर जल्ल जलालुहु)

नसई ने स़ह़ीह़ सनद के साथ रिवायत किया है किः “एक ग्रामीण व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और आप पर ईमान ले आया एवं आप के साथ हो गया, फिर उन्होंने अर्ज़ कियाः मैं आपके साथ हिजरत (पलायन) करूँगा, नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने कुछ स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को उनका ध्यान रखने के लिये कहा, जब ख़ैबर युद्ध हुआ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को माल -ए- ग़नीमत में कुछ बंदी मिले, आपने उन्हें बाँटा और उनका भी हिस्सा लगाया, चुनाँचे उनका हिस्सा अपने उन सहाबा को दे दिया जिनके हवाले उन्हें किया था, वह उनकी सवारियाँ चराते थे, जब वह आये तो उन्होंने (उनका हिस्सा) उनके हवाले किया, उन्होंने पूछाः यह क्या है? तो उन्होंने कहाः यह हिस्सा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपके लिये लगाया था, तो उन्होंने उसे लिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास उसे ले कर आये और कहाः हे अल्लाह के रसूल! यह क्या है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मैंने तुम्हारा हिस्सा दिया है, तो उन्होंने कहाः मैंने इस (तुच्छ बदले) के लिये आपका अनुसरण नहीं किया है, बल्कि मैंने इस बात के लिये आपका अनुसरण किया है कि मैं बाण से यहाँ मारा जाऊँ (उन्होंने अपने गर्दन की ओर इशारा किया), फिर मैं मृत्यु लोक पहुँचूँ और जन्नत में प्रवेश पा जाऊँ, कुछ समय पश्चात स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम शत्रुओं से युद्ध के लिये उठ खड़े हुये, फिर उन्हें उठा कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास लाया गया, उन्हें बाण ऐसे स्थान पर ही लगा था जहाँ उन्होंने (कुछ समय पूर्व) इशारा किया था, नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछाः क्या यह वही व्यक्ति है? लोगों ने उत्तर दियाः हाँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः इसने अल्लाह तआला से किया गया अपना वादा सच कर दिखाया तो अल्लाह तआला ने भी अपना वादा सच कर दिखाया, फिर नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने कुर्ता में उसे कफ़न दिया, तत्पश्चात उसे अपने सामने रखा और उसकी जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी, आपकी नमाज़ में से जो चीज़ (लोगों को) सुनाई पड़ी, वह यह दुआ थीः हे अल्लाह! यह तेरा भक्त है, यह तेरे मार्ग में हिजरत कर के निकला और शहीद हो गया, मैं इस बात का गवाह हूँ”।

शारीरिक अंगों के कर्म हार्दिक कर्मों के अंतर्गत व अधीन होते हैं, क़्यामत के दिन मोक्ष व मुक्ति का आधार दिल की सलामती पर होगाः

﴿يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۝٨٨ إِلَّا مَنْ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝٨٩﴾

अनुवादः (जिस दिन लाभ नहीं देगा कोई धन और न संतान। परंतु जो अल्लाह के पास स्वच्छ (निर्दोष) दिल ले कर आयेगा)। सूरह शुअराः 88-89।

दिलों के भेद को केवल अल्लाह ही जानता है जो हर चीज़ की सूचना रखने वाला है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बारे में इर्शाद फ़रमाता हैः

﴿وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ﴾

अनुवादः (अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है)। सूरह बक़रहः 234।

हमारा पालनहार अपने बंदों के भेद एवं उनके दिलों के राज़ से भी परिचित है, उससे आंतरिक व अति गोपनीय सूचनायें भी छिप्त नहीं, उसकी बादशाहत एवं ग़ैब (परोक्ष, छिप्त, भविष्य) में जो कुछ भी हो रहा है वह उसे भी जानता है, समस्त प्रकार की हलचल उसके ज्ञान में है, हर दिल के करार व बेकरारी, शांति व अशांति से वह भलि भाँति परिचित है।

उसका इल्म व ज्ञान सभी आतंरिक व बाह्य, प्रकट व छिप्त, निवार्य व अनिवार्य, संभव एवं असंभव, लोक व परलोक, भूत, वर्तमान एवं भविष्य सभी को अपने घेरा में लिये हुये है, उससे सूक्ष्म से सूक्ष्म कण भी छिप्त नहीं।

अल्लाह तआला इन सभी मामलों के आरंभ एवं उनके अंतिम परिणाम की सूचना देता हैः

﴿ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۚ ٱلرَّحْمَٰنُ فَسْـَٔلْ بِهِۦ خَبِيرًا ۝٥٩﴾

अनुवादः (जिसने उत्पन्न कर दिया आकाशों एवं धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में, फिर अर्श (सिंहासन) पर मुस्तवी (विराजमान, स्थिर) हो गया अति दयावान, उसकी महिमा किसी ज्ञानी से पूछो)। सूरह फ़ुर्क़ानः 59।

अल्लाह तआला दृश्य एवं अदृश्य सभी मामलों से भलि भाँति परिचित हैः

خَبِيرٌ بِالحَقائِقِ وَالَمعانِي   عَلِيمٌ لَا يُمَارَى أَو يُجَارَى
مُحِيطٌ لاَ يَفُوتُ عَلَيهِ شيءٌ   وَلَا يَخفَى عَلَيهِ مَا تَوَارَى

अनुवादः वह हर प्रकार की वास्तविकता एवं गूढ़ अर्थों से सूचित है, वह प्रत्येक चीज़ का ज्ञान रखने वाला (सर्वज्ञ) है, उससे न तो वाद-विवाद किया जा सकता है न उससे आगे बढ़ा जा सकता है। उसका ज्ञान हर चीज़ को अपने घेरा में लिये हुए है, कोई भी चीज़ उसके इदराक व ज्ञान-बोध से बाहर नहीं, गुप्त चीज़ें भी उस के लिये प्रकट हैं।

❒ एहसान का दर्जा व श्रेणीः

जो व्यक्ति यह विश्वास कर ले कि अल्लाह तआला आंतरिक चीज़ों व अंतर्मन की स्थिति से भी भलि-भाँति परिचित है, तो उसे इस बात से लज्जा आयेगी कि अल्लाह तआला उसे ऐसा कर्म करते हुये देखे जो उसे अप्रिय है, फिर वह नेक अमल (सदकर्म) करने को प्रेरित होगा और इबादत व पूजा को अल्लाह के लिये ख़ालिस़ व निश्छल रखेगा, यहाँ तक कि एह़सान के दर्जा तक पहुँचने में सफल हो जायेगा, जिसका उल्लेख स़ह़ीह़ ह़दीस़ में आया हैः "अल्लाह की इबादत ऐसे करो मानो तुम उसे देख रहे हो, यदि तुम उसे नहीं देख रहे हो तो (निश्चित रूप से) वह तुम्हें देख रहा है"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

अबू ह़ातिम रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "संसार में मानव की सभी इबादत, उपासना व आज्ञापालन का केंद्र बिंदु हैः अतंर्मन की सुधार करना एवं दिल में बिगाड़ पैदा करने वाले (कुकर्मों) से बचना"।

❒ भेद दिल में है!

आप देखते हैं कि एक ही नेकी व सदाचार को दो व्यक्ति अंजाम देते हैं, एक का कर्म स्वीकार किया जाता है और दूसरे का रद्द कर दिया जाता है! एक व्यक्ति नमाज़ अदा करता है और उसकी नमाज़ स्वीकार की जाती है उसी के बगल में एक दूसरा व्यक्ति भी नमाज़ अदा करता है परंतु उसकी नमाज़ का वही भाग स्वीकार किया जाता है जिसे वह दिल व दिमाग़ के साथ (समझ कर) अदा करता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ हैः "इंसान नमाज़ तो अदा करता है, किंतु कभी-कभी उसकी नमाज़ का दसवाँ भाग, अथवा नौवाँ भाग, अथवा आठवाँ भाग, अथवा सातवाँ भाग, अथवा छठा भाग ही स्वीकार्य होता है, यहाँ तक कि आपने पूरी संख्या (दस से एक तक) गिना दी"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने ह़िब्बान ने रिवायत किया है)।

एक व्यक्ति स़दक़ा व दान-पुण्य करता है, अल्लाह उसे स्वीकार करता और (पालन-पोषण कर के) उस को बड़ा बना देता है -ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार से हम में से कोई घोड़े के बच्चे को पाल-पोस कर बड़ा करता है- जब्कि दूसरा व्यक्ति स़दक़ा व दान-पुण्य करता है तो अल्लाह उसे नकार व रद्द कर देता है और उस पर उसे दण्ड देता हैः

﴿إِن تُبۡدُواْ ٱلصَّدَقَٰتِ فَنِعِمَّا هِيَۖ وَإِن تُخۡفُوهَا وَتُؤۡتُوهَا ٱلۡفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّـَٔاتِكُمۡۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ خَبِيرٞ ٢٧١﴾

अनुवादः (यदि तुम खुले दान करो, तो वह भी अच्छा है, तथा यदि छुपा कर करो और कंगालों को दो तो वह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है, यह तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा तथा तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उससे सूचित है)। सूरह बक़रहः 271।

वह व्यक्ति जो लोगों के सामने तकल्लुफ़ व बनावट करते हुये अपनी निगाह नीची रखता है, परंतु जब एकांत में होता है तो ह़राम चीज़ों की ओर निगाह करता एवं ह़राम व वर्जित कार्यों को अंजाम देता है, क्या हर चीज़ की सूचना रखने वाले एवं ख़ूब देखने वाले (अल्लाह) के सिवा कोई और उसके दिल की बातों से अवगत हो सकता है?!

﴿يَعۡلَمُ خَآئِنَةَ ٱلۡأَعۡيُنِ وَمَا تُخۡفِي ٱلصُّدُورُ ١٩﴾

अनुवादः (वह जानता है आँखों की चोरी तथा जो (भेद) सीने में छुपाते हैं)। सूरह मोमिनः 19।

आज्ञापालन एवं अवज्ञा के मध्य जीवन यापन का सबसे संगीन पहलू यह है कि आप नहीं जानते किस क्षण आपकी मृत्यु हो जाये।

तंहाई व एकांतावास इंसान को या तो सर्वोच्चता प्रदान करती है अथवा उसे पाताल में झोंक देती है, जो व्यक्ति तंहाई में अल्लाह तआला का सम्मान करता है, लोग सभा में उसका सम्मान करते हैं।

इमाम मालिक रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः “जिस व्यक्ति को यह प्रिय हो कि उसे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त हो, मौत की कठिनाई एवं क़्यामत की दहशत से मुक्ति मिले तो उसे

चाहिये कि जलवत (सभा, प्रकट) से अधिक ख़लवत (एकांतावास, तंहाई) में (अच्छा) कर्म करे”।

इब्ने रजब रहिमहुल्लाह का कथन है किः ““हुस्न -ए- ख़ात्मा, अर्थातः अच्छी मृत्यु” उसी व्यक्ति को प्राप्त होती है जिसका एकांतावास अच्छा रहा हो, क्योंकि मृत्यु के समय तकल्लुफ व बनावट संभव नहीं, इसलिये उस समय वही बात (ज़ुबान से) निकलती है जो दिल के सबसे अंदर वाले भाग में बैठी हुई हो”।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपने विषय में हमें बताया है कि वह प्रत्येक चीज़ से सूचित है, बल्कि अल्लाह तआला ने अपने महान नाम (अल-ख़बीर, सूचित, सर्वज्ञ) को बीस से अधिक स्थानों पर इंसान के कर्मों एवं आमाल के साथ जोड़ा है, ताकि उसे तक़वा व अल्लाह का भय अपनाने के लिये प्रेरित करेः

﴿ٱعۡدِلُواْ هُوَ أَقۡرَبُ لِلتَّقۡوَىٰۖ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ إِنَّ ٱللَّهَ خَبِيرُۢ بِمَا تَعۡمَلُونَ﴾

अनुवादः (न्याय करो, वह (अर्थात सब के साथ न्याय) अल्लाह से डरने के अधिक समीप है, निःसंदेह तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उससे भलि भाँति सूचित है)। सूरह माइदाः 8।

अल्लाह तआला ने इंसान को इस बात के लिये प्रेरित किया है कि वह आंतरिक व बाह्य सभी कर्मों पर निगाह रखे, अल्लाह तआला के महान नाम (अल-ख़बीर, सर्व सूचित) से जिसके ईमान में वृद्धि हो, वह उन समस्त चीज़ों से अवगत हो जायेगा जो उसके संसार में चल रही होती हैं, उसके संसार से अभिप्रायः उसका हृदय एवं उसका शरीर, और वह गुप्त इरादे हैं जो दिल में छिप्त होते हैं, जैसे धोखा व फरेब, ख़्यानत व विश्वासघात, बेईमानी, भ्रष्टाचार एवं बुराई का इरादा।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह रूप रंग को नहीं देखता, अपितु वह दिलों एवं कर्मों को देखता हैः

﴿أَفَلَا يَعۡلَمُ إِذَا بُعۡثِرَ مَا فِي ٱلۡقُبُورِ ۝٩ وَحُصِّلَ مَا فِي ٱلصُّدُورِ ۝١٠ إِنَّ رَبَّهُم بِهِمۡ يَوۡمَئِذٖ لَّخَبِيرُۢ ۝١١﴾

अनुवादः (क्या वह उस समय को नहीं जानता जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल लिया जायेगा?। और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे? निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप से सूचित होगा) सूरह आदियातः 9-11।

❑ अल्लाह की मईयत व उस का साथः

मोमिन बंदा जब अल्लाह तआला के महान नाम (अल-ख़बीर, सर्व सूचित) से पूर्णतः अवगत हो जाता है, तो वह अल्लाह की विशेष मईयत (साथ) में आ जाता है, जब वह अल्लाह की (विशेष) मईयत में आ जाता है तो अल्लाह उसे उच्चता व पवित्रता प्रदान करता है, और इस मईयत (की फिक्र) में इतना व्यस्त कर देता है कि उसे किसी और मईयत (साथ) की चिंता ही नहीं रहती, चुनाँचे वह हर समय (अल्लाह की मईयत के कारण) सावधान एवं उसकी ख़शीयत व भय से प्रफुल्लित रहता है, फिर अल्लाह उसके सांसारिक (मामलों को अंजाम देने के लिये) काफी होता है, संसार उसके चरणों में आ जाता है, अल्लाह तआला उसकी चिंता दूर कर देता है, उसकी रोज़ी में बरकत देता है, तंगी व परेशानी, दुःख व क्षोभ एवं शैतान को उस तक फटकने भी नहीं देता, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः ﴿وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجْعَل لَّهُۥ مَخْرَجًا﴾ अनुवादः (जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय)। सूरह तलाक़ः 2-3।

يا مَن يَرَى مَا فِي الضَّمِيرِ وَيَسمَعُ   أَنتَ الُمعِدُّ لِكُل مَا يُتَوَقَّعُ
يَا مَن يُرجَى للشَّدائِدِ كُلِّهَا   يَا مَن إِلَيهِ الُمشتَكَى وَالَمفزَعُ
مَالِي سِوَى فَقرِي إِلَيكَ وَسِيلَةً   فَبِالافتِقارِ إِلَيكَ فَقرِي أَدفَعُ
مَا لِي سِوى قَرعِي لِبَابِكَ حِيلةٌ   فَلَئِن رَدَدتَ فَأَيُّ بَابٍ أَقرَعُ
حَاشَا لِمَجدِكَ أَن تُقنِطَ عَاصِبًا   فَالفَضلُ أَجزَلُ وَالَمواهِبُ أَوسَعُ

अनुवादः हे अल्लाह! जो दिल के भेद को भी देखता और सुनता है, तू ही उम्मीदों को पूरा करने वाला है। हे (अल्लाह)! जिस से हर प्रकार की विपदा व संकट (को दूर करने) की आशा व उम्मीद रखी जाती है, हे (अल्लाह)! जिस से (कठिनाई व आवश्यकतापूर्ति) की शिकायत की जाती एवं (भय के समय जिस की) शरण ली जाती है। मेरा वसीला व तदबीर इसके सिवा और कुछ नहीं कि मैं तेरे द्वार पर दस्तक दूँ, यदि (तेरे दरबार से भी) दुत्कार दिया गया तो किस के द्वार पर दस्तक दूँगा। तेरी शराफ़त, सर्वोच्चता व स्वाभिमान के लिये यह असंभव है कि तू किसी पापी को (अपनी दया व कृपा से) निराश कर दे, क्योंकि तेरा फ़ज़्ल, दया व एहसान बेपनाह एवं तेरे अनुग्रह व नवाज़िशें अति व्यापक व कुशादा हैं।

हे अल्लाह! हे ख़बीर (सर्व सूचित)! ... हे गुप्त सूचनाओं एवं दिलों के भेदों को जानने वाले! हम पर दया कर।

(53)

(अल-ह़लीम जल्ल जलालुहु)

इज़्ज़ बिन अब्दुस्सलाम फ़रमाते हैं कि: “महानतम व सर्वोच्च अल्लाह एवं उसके सुंदर नामों एवं बुलंद व उच्च विशेषताओं का ज्ञान अर्जित करना: स्थान व मर्तबा, परिणाम व प्रभाव के आधार पर सर्वोत्तम व सर्वश्रेष्ठ कर्म है”।

आइये हम अल्लाह तआला के एक महान नाम (अल-ह़लीम, अर्थात: सहनशील) में चिंतन मनन करते हैं:

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान है:

﴿وَٱللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ﴾

अनुवाद: (अल्लाह निस्पृह सहनशील है)। सूरह बक़रह: 263।

﴿إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا﴾

अनुवाद: (वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है)। सूरह बनी इस्राईल: 44।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह क्षमाशील, माफ करने वाला एवं सहनशील है, जिसे न तो क्रोध बेकाबू करता है, न किसी नादान व अज्ञान की नादानी व अज्ञानता एवं पापियों का पाप उसे कुमार्ग करता है, वह अपने बंदों को शिर्क व कुफ्र में लिप्त होने एवं ढ़ेर सारे पापों का अपराधी होने के बावजूद शीघ्र ही दण्ड नहीं देता।

उससे बड़ा ह़लीम व सहनशील कौन हो सकता है?! मख़लूक़ व सृष्टि उसकी अवज्ञा करती है, वह उन्हें देख रहा होता है, फिर भी वह उन के घरों में उनकी ऐसी निगरानी करता है मानों उन्होंने उस की कोई अवज्ञा न की हो, इस प्रकार से उन की सुरक्षा करता है मानो उन्होंने उसके आदेशों की कभी कोई अवहेलना न की हो, वह गुनहगार एवं पापियों को भी अपने फ़ज़्ल, एह़सान व अनुग्रह से नवाज़ता है।

❒ निस्संदेह वह ह़लीम व सहनशील है!

पीड़ित व दुःखी इंसान उसके समक्ष विनती करता एवं रोता है और वह उसकी सुन लेता है, वह उससे माँगता है और वह उसे नवाज़ देता है, जब्कि वह अवज्ञाकारी व नाफ़रमान होता हैः

﴿فَإِذَا رَكِبُوا۟ فِى ٱلْفُلْكِ دَعَوُا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ فَلَمَّا نَجَّىٰهُمْ إِلَى ٱلْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾﴾

अनुवादः (और जब वो नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिए धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं, फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल की ओर तो वो पुनः शिर्क करने लगते हैं)। सूरह अन्कबूतः 65।

ला इलाहा इल्लल्लाह, (अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं) वह कितना ह़लीम व सहनशील है! वही फ़ज़्ल, दया व एहसान का मालिक है, और उसी से सभी फ़ज़्ल, दया व एहसान प्राप्त होते हैं, वह सख़ी व दाता है, उसी से उदारता प्राप्त होती है, वह ह़लीम व सहनशील है एवं उसी से सभी प्रकार की सहनशीलता प्राप्त होती है।

وَهُوَ الحَلِيمُ فلا يُعاجِلُ عَبدَه　　　بِعُقُوبَةٍ لِيَتُوبَ مِن عِصيانِ

अनुवादः वह ह़लीम व सहनशील है, इसलिये बंदों को जल्दी दण्ड नहीं देता ताकि वो गुनाहों से तौबा व प्रायश्चित्त कर सकें।

स़ह़ीह़ैन में आया हैः अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “अल्लाह तआला से बढ़ कर तक्लीफदह व पीड़ादायक बातों को सुन कर उन पर सब्र व धैर्य रखने वाला कोई नहीं, काफिर अल्लाह तआला के लिये समतुल्य व समकक्ष बनाते एवं उसके लिये संतान मानते हैं, फिर भी वह उन्हें आजीविका, सुरक्षा व कल्याण इत्यादि प्रदान करता है”।

❒ अल्लाह तआला कितना ह़लीम व सहनशील है!

हमारी कितनी गलतियाँ हैं जिन पर अल्लाह ने पर्दा डाल दिया? कितने ऐसे पाप हैं जिन पर अल्लाह तआला ने हमारी पकड़ नहीं की? हमने कितने गुनाह किये हैं फिर भी वह हमें यह निदा देता है -जब्कि वह हमसे बेनियाज़ व निस्पृह है-:

﴿نَبِّئْ عِبَادِىٓ أَنِّىٓ أَنَا ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾﴾

अनुवादः (-हे नबी!- आप मेरे भक्तों को सूचति कर दें कि वास्तव में, मैं बड़ा क्षमाशील दयावान हूँ)। सूरह हिज्रः 49।

अल्लाह ह़लीम, शालीन, सहनशील, पाक व पवित्र है! वह बंदे को पैदा करता है और बंदा उसको छोड़ कर किसी और की इबादत व पूजा करता है, वह उसे आजीविका देता है और वह (बंदा) किसी और का शुक्र व धन्यवाद अदा करता है, वह अपने बंदों के लिये ख़ैरात, भलाई व बरकतें नाज़िल फ़रमाता है और बंदे की स्थिति यह है कि उन का व्यवहार अल्लाह के साथ सही नहीं होता है, अल्लाह अपनी नियामतों के द्वारा बंदों से लुत्फ़, प्रेम व दया प्रकट करता है जब्कि वह उनसे बेनियाज़ है, और बंदे हैं कि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना व अवज्ञा के द्वारा नफरत व घृणा प्रकट करते हैं जब्कि वो अल्लाह के निकट सबसे फ़क़ीर व दरिद्र हैं:

﴿وَلَوْ يُؤَاخِذُ ٱللَّهُ ٱلنَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِن دَآبَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَـْٔخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾﴾

अनुवादः (और यदि अल्लाह, लोगों को उन के अत्याचार पर (तत्क्षण) धरने लगे, तो धरती में किसी जीव को न छोड़े, परंतु वह एक निर्धारित अवधि तक निलम्बित करता है, और जब उन की अवधि आ जायेगी, तो एक क्षण न पीछे होंगे न पहले)। सूरह नह़्लः 61।

❐ दिल की आवाज़!

हमें महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के क्रोध व ग़ज़ब से डरना चाहिये, क्योंकि सहनशील जब क्रोधित होता है तो उसके क्रोध व ग़ज़ब के समक्ष कोई चीज़ नहीं ठहर सकती, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की सहनशीलता महा शक्ति, सामर्थ्य व क्षमता रखने के बावजूद प्रकट होती है, ह़लीम व सहनशील अल्लाह केवल उसी पर क्रोधित होता है जो दया का पात्र न हो, और जिसके साथ सहनशीलता प्रभावी व कारगर न हो, इसके अतिरिक्त क्रोधित होने के पूर्व उसे (अपने अंदर सुधार करने की) मोहलत भी देता है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿فَلَمَّآ ءَاسَفُونَا ٱنتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾﴾

अनुवादः (फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित कर दिया तो हम ने उनसे बदला ले लिया और सब को डुबो दिया)। सूरह ज़ुख़्रुफ़ः 55।

कभी-कभी अल्लाह तआला काफ़िरों के साथ भी ह़िल्म व सहनशीलता प्रकट करता है, उन्हें जीविका प्रदान करता है, संसार में उन्हें दण्ड नहीं देता, किंतु क़यामत के दिन उन के साथ विनम्रता नहीं दिखायेगा एवं न ही उन्हें क्षमा करेगा, बल्कि फ़रिश्ते उन्हें हांक कर जहन्नम की ओर ले जायेंगे, न तो उनकी विनती स्वीकार की जायेगी और न ही उनकी यातना में कमी की जायेगीः

﴿فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَٱلشَّيَـٰطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝٦٨ ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى ٱلرَّحْمَـٰنِ عِتِيًّا ۝٦٩﴾

अनुवादः (आप के पालनहार की शपथ! हम उन्हें अवश्य एकत्र कर देंगे और शैतानों को, फिर उन्हें अवश्य उपस्थित कर देंगे, नरक के किनारे मुँह के बल गिरे हुये। फिर हम अलग कर लेंगे प्रत्येक समुदाय से उन में से जो अत्यंत कृपाशील का अधिक अवज्ञाकारी था)। सूरह मर्यमः 68-69।

﴿يَسْتَعْجِلُونَكَ بِٱلْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌۢ بِٱلْكَـٰفِرِينَ ۝٥٤﴾

अनुवादः (वे शीघ्र माँग कर रहे हैं आप से यातना की, और निश्चय ही नरक घेरने वाली है काफिरों को)। सूरह अन्कबूतः 54।

❒ अनुपालन की मिठास!

बंदा को चाहिये कि उस करीम (ह़िल्म, बुर्दबारी व सहनशीलता की) विशेषता से विशेषित होने लिये अपने नफ़्स अर्थात अपने आप के साथ कठिन तपस्या करे (एवं उसे प्रेरित करे), क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह (ह़लीम, अति सहनशील) है एवं ह़लीम व सहनशील बंदों को पसंद फ़रमाता है, वह करीम (सख़ी, अति दाता एवं दानी) है तथा अपने करीम (सख़ी, दाता एवं दानी) बंदों को प्रिय रखता है।

أَلَا إِنَّ حِلْمَ الَمرءِ أَكبَرُ نِسبَةٍ　　يُسَامِي بِهَا عِندَ الفِخَارِ كَرِيمُ
فَيَا رَبِّ هَب لِي مِنكَ حِلْمًا فَإِنَّنِي　　أَرَى الْحِلْمَ لَمْ يَندَم عَلَيهِ حَلِيمُ

अनुवादः इंसान की सहनशीलता उस की सबसे बड़ी निस्बत (एवं सदगुण) है जिस पर एक करीम (व दानी) व्यक्ति गर्व के समय अपनी सर्वोच्चता प्रकट करता है। हे रब! मुझे अपनी ओर से ह़िल्म व सहनशीलता प्रदान कर, क्योंकि मैं देखता हूँ कि सहनशीलता पर किसी सहनशील को लज्जित नहीं होना पड़ता।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपने ख़लील (परम मित्र) इब्राहीम अलैहिस्सलाम की प्रशंसा करते हुये फ़रमायाः

﴿إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّٰهٌ مُّنِيبٌ ۝٧٥﴾

अनुवादः (वास्तव में इब्राहीम बड़ा सहनशील, कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर ध्यानमग्न रहने वाले थे)। सूरह हूदः 75।

ह़िल्म व सहनशीलता इस्माईल अलैहिस्सलाम का भी सदगुण थाः

﴿فَبَشَّرْنَٰهُ بِغُلَٰمٍ حَلِيمٍ ۝١٠١﴾

अनुवादः (हमने शुभ सूचना दी उसे एक सहनशील पुत्र की)। सूरह स़ाफ़्फ़ातः 101।

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस गुण (ह़िल्म व सहनशीलता) का एक बड़ा अंश मिला था।

स़ह़ीह़ैन में अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः "मैं नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नजरान की बनी हुई चौड़े ह़ाशिया की एक चादर ओढ़े हुये थे, इतने में एक देहाती ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घेर लिया और ज़ोर से आप को खींचा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कंधे को देखा, उस पर चादर के कोने का निशान पड़ गया था, उसने ऐसा खींचा था, फिर कहने लगाः अल्लाह का माल व धन जो आप के पास है उस में से कुछ मुझ को दिलाईये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी ओर देखा और आप हंस दिये, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे (धन) देने का आदेश दिया"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अशज्ज बिन अब्दुल क़ैस की प्रशंसा करते हुये कहा थाः "निस्संदेह तुम्हारे अंदर दो विशेषतायें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह प्रिय रखता हैः ह़िल्म (सहनशीलता) और सोच-विचार करने की आदत"। (मुस्लिम)।

मैमून बिन मेहरान रह़िमहुल्लाह से वर्णित हैः "एक दिन उनके पास कुछ अतिथि आये हुये थे कि इसी बीच उनकी दासी शोरबा से भरा हुआ प्याला ले कर आई, आते ही उसे ठेस लग गई और पूरा शोरबा मैमून बिन मेहरान रह़िमहुल्लाह के शरीर पर गिर गया, मैमून ने उसे मारना चाहा तो दासी ने कहाः हे मेरे स्वामी! महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस कथन का पालन कीजियेः

﴿وَٱلۡكَٰظِمِينَ ٱلۡغَيۡظَ﴾

अनुवादः (क्रोध को पी जाने वाले हैं)।

मैमून रहि़महुल्लाह ने कहाः मैंने (इसका अनुपालन) कर लिया, दासी बोली, इसके बाद वाले पर भी अमल कर लीजियेः

﴿وَٱلۡعَافِينَ عَنِ ٱلنَّاسِۗ﴾

अनुवादः (और लोगों के दोष को क्षमा कर दिया करते हैं)।

मैमून रहि़महुल्लाह ने कहाः मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया, दासी बोल पड़ीः

﴿وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾

अनुवादः (और अल्लाह सदाचारियों (एह़सान करने वालों) से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरानः 134।

मैमून बिन मेहरान रहि़महुल्लाह ने कहाः मैंने तुम्हारे साथ एह़सान व उपकार किया, जाओ तुम महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की ख़ातिर स्वतंत्र हो"।

अबू ह़ातिम रहि़महुल्लाह कहते हैं किः "जब बुद्धिमान व्यक्ति को क्रोध आये तो उसे यह याद करना चाहिये कि अल्लाह तआला उसके साथ कितनी सहनशीलता वाला व्यवहार अपनाता है, हालांकि वह अल्लाह की वर्जनाओं एवं उसकी निषेध की हुई चीज़ों को बहुधा अंजाम दे कर उसकी अवहेलना करता है, (यदि वह ऐसा सोच ले तो) वह सहनशीलता अपनाने (को बाध्य हो जायेगा) तथा उसका क्रोध उसे गुनाहों के माध्यमों को अपनाने पर विवश नहीं कर पायेग"।

❒ अंतिम बात!

जब आप किसी आपदा या संकट में घिरे हुये हों तो अल्लाह तआला से प्रार्थना करें एवं अपनी प्रार्थना में अल्लाह तआला के महान नाम (अल-ह़लीम, अर्थातः सहनशील) को अवश्य सम्मिलित करें, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम संकट व आपदा के समय अल्लाह तआला से यह दुआ किया करते थेः

لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ وَالْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

अनुवादः अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं जो महान एवं ह़लीम (सहनशील) है, अल्लाह के अलावा कोई सत्य उपास्य नहीं जो महान सिंहासन का स्वामी है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा आराध्य नहीं जो आसमानों का रब एवं ज़मीन का रब तथा महान व उदार सिंहासन का रब है। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)।

हे अल्लाह! जिस प्रकार से तू ने अपने बंदों के साथ ह़िल्म व सहनशीलता अपनाया है, उसी प्रकार से अपने ह़िल्म व सहनशीलता को हमारे लिये लोक परलोक की सआदत, सफलता व सौभाग्य का माध्यम बना दे।

(54)

(अल-रऊफ़ जल्ल जलालुहु)

स़ह़ीह़ैन में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “एक व्यक्ति अत्यधिक पाप किया करता था, जब उसकी मृत्यु का समय निकट हुआ तो अपने बेटों से उसने कहा किः जब मैं परलोक सिधार जाऊँ तो मुझे जला देना तत्पश्चात मेरी हड्डियों को पीस कर वायु में उड़ा देना, अल्लाह की क़सम! यदि मेरे रब ने मुझे पकड़ लिया तो मुझे इतना कठोर दण्ड देगा जो इसके पूर्व उसने किसी को भी नहीं दिया होगा, जब वह मृत्यु को प्राप्त हो गया तो उसके साथ ऐसा ही व्यवहार किया गया। अल्लाह तआला ने धरती को आदेश दिया कि यदि उसका एक कण भी कहीं तेरे पास है तो उसे संग्रहित कर के मेरे समक्ष ला, धरती ने (अल्लाह के) आदेश का पालन किया एवं वह बंदा अब (अपने रब के समक्ष) खड़ा था, अल्लाह तआला ने उससे पूछाः तू ने ऐसा क्यों किया? उसने कहाः हे मेरे रब! तेरे भय के कारण, अंततः अल्लाह तआला ने उसे क्षमा कर दिया”।

हमारे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने इस फ़रमान के द्वारा अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) की प्रशंसा की है तथा अपने भक्तों को शुभ सूचना दी हैः

﴿إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾

अनुवादः (वास्तव में तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान है)। सूरह नह़्लः 7।

अरबी भाषा के शब्द “رأفة, राअफ़त” (जिस के यौगिक से अल्लाह तआला का एक महान नाम “रऊफ़” बना है) अति करुणा, स्नेह व दया भाव एवं प्रेम करने की प्राकाष्ठा को कहते हैं।

जो कि चहुँ ओर से ख़ैर, भलाई एवं कुशल-मंगल से परिपूर्ण है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾

अनुवादः (वास्तव में अल्लाह लोगों के लिए अति करुणामय दयावान है)। सूरह बक़राः 143।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जिसने मानव जाति की उत्पत्ति की, उसकी सुरक्षा की, उस पर दया की, उस पर इनाम, एहसान व अनुग्रह किया, उसके लिये समस्त संसार को वशीभूत व अधीन कर दिया, उससे बुराई व दुष्टता को दूर रखा, उसे भलाई व कल्याण से अनुग्रहित किया, यह सब उसके फ़ज़्ल, एहसान, उदारता एवं दयालुता के ही रूप हैं।

बल्कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की दयालुता ही है किः वह इबादत व आज्ञापालन करने वालों की छोटी-छोटी इबादतों को स्वीकार करता है, अपने मोमिन बंदों के ईमान (एवं उनके कर्मों) की सुरक्षा करता तथा उन्हें व्यर्थ हो जाने से बचाता है, यह अपने वलियों एवं मित्रों के प्रति महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की दयालुता व कृपा भाव ही तो हैः

﴿وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَٰنَكُمْۚ إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ﴾

अनुवादः (और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान (अर्थातः बैतुल मक़्दिस की दिशा में नमाज़ पढ़ने) को व्यर्थ कर दे, वास्तव में अल्लाह लोगों के लिए अति करुणामय दयावान है)। सूरह बक़राः 143।

❒ सबसे सम्पूर्ण दलालत व सबूतः

उस (अल्लाह) की अति दया व कृपा ही है किः उस ने अपने भक्तों को (कुकर्मों से) सावधान किया, (सदकर्म करने को) प्रेरित किया, (बुराई से) डराया, (उन से सवाब व पुण्य का) वादा किया, एवं (अपने अज़ाब व यातना की) धमकी दी, और यह सब केवल उन पर दया व कृपा करते हुये, उनकी भलाई एवं हित का ध्यान रखते हुये कियाः

﴿وَيُحَذِّرُكُمُ ٱللَّهُ نَفْسَهُۥۗ وَٱللَّهُ رَءُوفُۢ بِٱلْعِبَادِ﴾

अनुवादः (अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता है, और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है)। सूरह आले इमरानः 30।

उसकी अति दयालुता व कृपा भाव का एक प्रमाण यह भी है किः उसने अपने रसूल पर किताब अवतरित की ताकि वह अल्लाह के आदेश से लोगों को अंधकार से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿هُوَ ٱلَّذِى يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبۡدِهِۦٓ ءَايَٰتٍۭ بَيِّنَٰتٍ لِّيُخۡرِجَكُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ بِكُمۡ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ ٩﴾

अनुवादः (वही है जो उतार रहा है अपने भक्त पर खुली आयतें ताकि वह तुम्हें निकाले अंधेरों से प्रकाश की ओर, तथा वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अवश्य करुणामय दयावान है)। सूरह ह़दीदः 9।

उसकी दयालुता की पराकाष्ठा है किः उसने हमारी यात्रा के साधन को सुगम बना दिया, जैसे प्राचीन युग में घोड़ा, खच्चर एवं गधा तथा वर्तमान में नवीन प्रकार की यात्रा के साधन उदाहरणस्वरूपः गाड़ियाँ, वायुयान एवं रेल इत्यादि, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَتَحۡمِلُ أَثۡقَالَكُمۡ إِلَىٰ بَلَدٖ لَّمۡ تَكُونُواْ بَٰلِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ ٱلۡأَنفُسِۚ إِنَّ رَبَّكُمۡ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ ٧﴾

अनुवादः (और वह तुम्हारे बोझों को उन नगरों तक लाद कर ले जाते हैं, जिन तक तुम बिना कड़े परिश्रम के नहीं पहुँच सकते, वास्तव में तुम्हारा रब अति करुणामय दयावान है)। सूरह नह़्लः 7।

यह उसकी अति कृपा व दया ही है किः जिन बंदों की जान व माल (प्राण व धन) को वह (जन्नत के बदले) खरीदता है वह उसी (अल्लाह) की विशिष्ट मिल्कियत होती है, फिर भी वह अपनी विशिष्ट मिल्कियत व स्वामित्व को अपने बंदों से बेशुमार व असीमित बदला दे कर खरीदता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَشۡرِى نَفۡسَهُ ٱبۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ رَءُوفُۢ بِٱلۡعِبَادِ ٢٠٧﴾

अनुवादः (लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच देता है और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है)। सूरह बक़रहः 207।

उसके महान स्नेह का एक रूप यह भी है किः वह अपने वलियों व मित्रों की प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَٱلَّذِينَ جَآءُو مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰنِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَٰنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِي قُلُوبِنَا غِلّٗا لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٞ رَّحِيمٌ ١٠﴾

अनुवादः (और जो आये उन के पश्चात वे कहते हैं: हे हमारे रब! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को जो हम से पूर्व ईमान लाये, और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उन के लिये जो ईमान लाये, हे हमारे पारलनहार! तू अति करूणामय दयावान है)। सूरह ह़श्रः 10।

यह भी महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के स्नेह का सर्वोच्च शिखर ही है किः उसने ऐसे हुदूद व ताजीरात (दंडविधि, अपराध और दंड संबंधी इस्लामी व्यवस्थाओं या कानूनों का संग्रह) का गठन किया, जो इंसान को (कुकर्मों को अंजाम देने से) रोकते एवं तक़्वा अर्थात अल्लाह का भय अपनाने को प्रेरित करते हैं, क्योंकि स्नेह व करुणा वह है जो मानव (के जीवन) को दुरुस्त व ठीक रखे, क्योंकि यह दया व कृपा की पराकाष्ठा है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَلَوۡلَا فَضۡلُ ٱللَّهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهُۥ وَأَنَّ ٱللَّهَ رَءُوفٞ رَّحِيمٞ ٢٠﴾

अनुवादः (यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह तथा उस की दया न होती (तो तुम पर यातना आ जाती) और वास्तव में अल्लाह अति करुणामय दयावान है)। सूरह नूरः 20।

उसके स्नेही होने की पराकाष्ठा है किः वह गुनाहगारों व पापियों को मोहलत व छूट देता है, अंजाने में अचानक उसे अज़ाब व यातना नहीं देता, बल्कि उन्हें मोहलत देता, शांति प्रदान करता एवं आजीविका देता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿أَوۡ يَأۡخُذَهُمۡ عَلَىٰ تَخَوُّفٖ فَإِنَّ رَبَّكُمۡ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٌ ٤٧﴾

अनुवादः (या उन्हें डरा धमका कर पकड़ ले, निस्संदेह तुम्हारा परवरदिगार अति करुणामय दयावान है)। सूरह नह़्लः 47।

यह भी उसकी हद दर्जा करुणा व स्नेह है कि वहः

﴿وَيُمۡسِكُ ٱلسَّمَآءَ أَن تَقَعَ عَلَى ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦٓۗ إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٞ رَّحِيمٞ﴾

अनुवादः (आसमान को थामे हुये है कि कहीं धरती पर उसकी आज्ञा के बिना गिर न जाये, निःसंदेह अल्लाह लोगों पर करुणामय दयावान है)।

❒ संदेश ...

प्रत्येक उस व्यक्ति के नाम जो निर्धनता व दरिद्रता से जूझ रहा हो, दुःख, संकट एवं पीड़ा ने उसे चहुँ ओर से घेर लिया हो, उसके रूप-रंग बदल गये हों और दिल टूट चुका हो।

प्रत्येक उस व्यक्ति के नाम जो ऋण से त्रस्त है, जिसका मन-मस्तिष्क अस्त-व्यस्त एवं चिंता उसे खाये जा रही हो, और वह यह सोचने को विवश हो गया हो कि संसार उसके लिये तंग हो चुका है।

प्रत्येक उस व्यक्ति के नाम जिसे भूख ने निढ़ाल कर दिया हो, विभिन्न प्रकार की विपदाओं में घिरा हुआ हो, डॉक्टर उस (के उपचार) से विवश हो चुके हों एवं उसके समक्ष (सारे) द्वार बंद प्रतीत होते हों।

प्रत्येक उस व्यक्ति के नाम जो दुःख व पीड़ा में डूबा हुआ हो, जिससे यह दुनियाँ ऐसे रूठ चुकी हो कि अपनी व्यापकता व विशालता के बावजूद उसके लिये तंग हो चुकी हो।

प्रत्येक उस व्यक्ति के नाम जिसका पुत्र गुम हो गया हो, जिसका प्रिय यात्रा पर निकला हो, जिसका मित्र उससे बिछड़ गया हो, जिसका दम घुटने लगा हो, हृदय अशांत हो, फूल जिसके लिये काँटे एवं अति सुंदर संसार उसकी दृष्टि में कुरूप हो चुका हो ...

आइये तथा अल्लाह तआला के इन फ़रमानों को याद कीजियेः

﴿إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾

अनुवादः (वास्तव में तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान है)। सूरह नह़्लः 7।

﴿وَٱللَّهُ رَءُوفٌۢ بِٱلْعِبَادِ﴾

अनुवादः (और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है)। सूरह बक़रहः 207।

आप यह निदा व पुकार लगायें किः हे स्नेही, करुणामयी व मेहरबान! मेरी दशा पर दया कर, मेरी दुर्बलता पर रह़म कर, मेरे दुःख व पीड़ा को दूर कर दे एवं मेरे संकट को टाल दे।

इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह कहते हैं कि: "अल्लाह तआला अपने भक्तों को कष्ट व आज़माइश में इसलिये मुब्तला करता है ताकि वह उसकी शिकायत, विनती एवं प्रार्थना को सुन सके:

﴿قَالَ إِنَّمَآ أَشۡكُواْ بَثِّي وَحُزۡنِيٓ إِلَى ٱللَّهِ﴾

अनुवाद: (उस (याक़ूब अलैहिस्सलाम) ने कहा: मैं अपनी आपदा तथा पीड़ा की शिकायत अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता)। सूरह यूसुफ़: 86"।

दुआ करने के पश्चात कुशादगी, फ़राख़ी व समृद्धि की प्रतीक्षा करें, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान है:

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلۡمُضۡطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكۡشِفُ ٱلسُّوٓءَ وَيَجۡعَلُكُمۡ خُلَفَآءَ ٱلۡأَرۡضِۗ أَءِلَٰهٞ مَّعَ ٱللَّهِۚ قَلِيلٗا مَّا تَذَكَّرُونَ ٦٢﴾

अनुवाद: (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना को सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दु:ख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो)। सूरह नम्ल: 62।

नि:संदेह वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अति स्नेही एवं दयावान है, उसकी शान बड़ी निराली है! उसका स्थान बड़ा उच्च है! वह अपनी मख़लूक़ व रचना के अति निकट है! वह अपने भक्तों के लिये अति कृपालु है।

जब आप को रस्सी सख्त व कठोर लगने लगे तो समझ लें कि वह टूटने वाली है, जब अंधकार पूर्णत: छा जाये तो उजियारे कि शुभ सूचना स्वीकार करें।

अपने अति स्नेही व करुणामयी पालनहार से बदगुमान न हों, क्योंकि यह असंभव है कि सदा एक ही स्थिति बरकरार रहे। याद रखें कि सर्वश्रेष्ठ इबादत व पूजा: संकट के दूर होने, तथा अनुकूल एवं आदर्श स्थिति आने की, प्रतीक्षा करना है, एक ही स्थिति का सदा बने रहना असंभव है, युग नाम ही है उलट-फेर का, रात्रि की कोख में दिन का उजाला पल रहा होता है, ग़ैब एवं भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है हम इससे अंजान हैं और फ़त्ताह़ (कुशादगी पैदा करने वाले, अल्लाह की विशेषता यह है कि:

﴿كُلَّ يَوۡمٍ هُوَ فِي شَأۡنٖ﴾

अनुवादः (प्रत्येक दिन वह एक नये शान (कार्य) में है)। सूरह रहमानः 29।

﴿لَعَلَّ ٱللَّهَ يُحۡدِثُ بَعۡدَ ذَٰلِكَ أَمۡرٗا﴾

अनुवादः (संभवतः अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात)। सूरह तलाक़ः 1।

﴿فَإِنَّ مَعَ ٱلۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۝٥ إِنَّ مَعَ ٱلۡعُسۡرِ يُسۡرٗا ۝٦﴾

अनुवादः (निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी भी है। निस्संदेह कठिनाई के साथ आसानी भी है)। सूरह शर्हः 5-6।

❒ हृदय झुक गयेः

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़क़त, रहमत, स्नेह व करुणा के विशेषण से विशेषित किया हैः

﴿لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولٞ مِّنۡ أَنفُسِكُمۡ عَزِيزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيصٌ عَلَيۡكُم بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ رَءُوفٞ رَّحِيمٞ ۝١٢٨﴾

अनुवादः ((हे ईमान वालों!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है, उसको वह बात बहुत भारी लगती है जिस से तुम्हें दुःख हो, वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखते हैं, और ईमान वालों के लिए करुणामय दयावान हैं)। सूरह तौबाः 128।

अर्थात, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मोमिनों के संग स्नेह व करुणा से ओत प्रोत व्यवहार करते हैं, बल्कि उनके माता-पिता से भी अधिक उनके लिये करुणामयी हैं।

इसी कारणवश आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अधिकार सभी प्राणियों के अधिकार से बढ़ कर है, एवं उम्मत के लिये अनिवार्य है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाये तथा आप का आदर सम्मान करे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरी रात (तहज्जुद की) नमाज़ में यह आयत पढ़ते रहेः

﴿إِن تُعَذِّبۡهُمۡ فَإِنَّهُمۡ عِبَادُكَۖ وَإِن تَغۡفِرۡ لَهُمۡ فَإِنَّكَ أَنتَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ۝١١٨﴾

अनुवादः (यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वो तेरे दास (बंदे) हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभावशाली गुणी है)। सूरह माइदाः 118।

इसके पश्चात आपका अति स्नेही व करूणामय पालनहार आपको सूचित करता है कि हम आप को अपनी उम्मत के संबंध में अवश्य प्रसन्न करेंगे।

मोमिन अपने ऊपर दया करते हुये मोक्ष व मुक्ति के मार्ग पर चलता है तथा विनाश के मार्गों से दूर रहता है, दूसरों के संग भी उसका यही व्यवहार होता है।

इब्ने रजब रहिमहुल्लाह लिखते हैं किः "जो व्यक्ति अल्लाह के बंदों के संग सख़ावत व उदारता का रवैया अपनाता है, अल्लाह तआला भी उस पर अपनी सख़ावत व उदारता के द्वार खोल देता है, जैसा काम होता है बदला भी उसी के समान मिलता है"।

إلَهِي! تَرَى حَالِي وَفَقرِي وَفَاقَتِي   وَأَنتَ مُنَاجَاتِي الخَفِيَّةَ تَسمَعُ

إلهِي! أَذِقنِي طُعمَ عَققفوِكَ يَومَ لَا   بَنونَ وَلَا مَالٌ هُنالِكَ يَنفَعُ

अनुवादः हे मेरे उपास्य! तू मेरी स्थिति तथा निर्धनता व दरिद्रता को देख रहा है एवं तू मेरी खुफ़िया व छिप्त सरगोशियों को भी सुनता है। हे मेरे आराध्य! मुझे उस दिन अपनी क्षमा व माफी का स्वाद चखाना जिस दिन न तो संतान काम आयेंगे न धन-सम्पदा।

हे अल्लाह! हे स्नेही व करुणामय! हम तुझ से सवाल करते हैं कि हमें जन्नत में प्रवेश दिला तथा जहन्नम से मुक्ति प्रदान कर।

(55)

(अल-वदूद जल्ल जलालुहु)

وَلَمَّا جَلَسنَا مَجْلِسًا طَلَّهُ النَّدَى   جَمِيلًا وَبُستَانًا مِن الرَّوضِ نَادِيَا
أَثَارَ لَنا طِيبُ المَكانِ وَحُسنُه   مُنًى فَتَمَنَّينَا فَكُنتَ الأَمانِيَا

अनुवादः जब हम किसी सभा में सम्मिलित हुये तो ओस ने उसे सुंदर एवं हरा-भरा उपवन बना दिया। उस के स्थान की अच्छाई एवं मनमोहकता, हमारी आशाओं का कारण बनी, तत्पश्चात हमने कामनायें कीं एवं इन कामनाओं के केंद्रबिंदु तुम रहे।

हमारा महानतम व सर्वोच्च तथा अति प्रेम करने वाला रब, आज्ञापालन करने वालों का प्रियतम, भागने वालों का ठिकाना, शरण चाहने वालों की शरणस्थली तथा भयभीत लोगों के लिये शांति पाने का स्थान है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह समस्त दानवीरों से बढ़ कर महा दानवीर, सभी कृपालुओं से बढ़ कर अति कृपालु, समस्त अनुग्रह करने वालों से बड़ा अनुग्रह करने वाला, कठोर समय में सहारा, एकांतावास में मित्र तथा भूखमरी के समय में सहायता प्रदान करने वाला है।

हम बात करने वाले हैं अल्लाह तआला के महान नामः ''वदूद (अर्थातः अति प्रेम करने वाला'' के विषय में। महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ﴾

अनुवादः (वास्तव में मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा प्रेम करने वाला है)। सूरह हूदः 90।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَهُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلْوَدُودُ ۝١٤ ذُو ٱلْعَرْشِ ٱلْمَجِيدُ ۝١٥﴾

अनुवादः (वह अति क्षमा तथा प्रेम करने वाला है। वह अर्श (सिंहासन) का महान स्वामी है)। सूरह बुरूजः 14-15।

अरबी भाषा के शब्द “वुद्द” (जिसके यौगिक से अल्लाह तआला का महान नामः अल-वदूद, निकला है) का अर्थ हैः मोहब्बत व प्रेम, चुनाँचे हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने ज्ञान एवं उत्तम विशेषताओं के द्वारा अपने औलिया (मित्रों) से प्रेम करता है, यह प्रेम वलियों एवं मुत्तक़ी (अल्लाह से डरने वाले) लोगों के लिये आरक्षित है। वह उनके लिये प्रेम के माध्यम उत्पन्न करता है, उनके दिलों में अपना प्रेम डाल देता है तथा उन्हें अपने अच्छे व सुंदर नाम, एवं सर्वोत्तम, महान तथा विशाल व व्यापक अर्थों को समोये हुये अपनी विशेषतायें बताता है, जो साफ सुथरे एवं संतुलित हृदयों को उसकी ओर फेर देते हैं।

وَكَانَ فُؤَادِي خالِيًا قَبلَ حُبِّكُم　　وَكَانَ بِذِكرِ الخَلقِ يَلهُو وَيَمْرَحُ

فَلَمَّا دَعَا قَلبِي هَواكَ أَجابَه　　فَلستُ أَراهُ عَن فَنائِكَ يَبرَحُ

अनुवादः मेरा हृदय तेरी मोहब्बत से पहले वीरान था, मख़लूक़ (सृष्टि) की याद में मस्त मगन था। जब मेरे दिल ने तेरी मोहब्बत को आवाज़ दी तो उसने जवाब दिया, अब वह सदा तेरे ही प्रांगन में पड़ा रहता है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अत्यधिक प्रेम करने वाला है, उसे अपने गुनाहगार बंदों से (भी) प्रेम है, उनमें से तौबा करने वालों को अत्यधिक पसंद करता है, अतः उन के लिये ऐसे माध्यम उत्पन्न करता है जिन से वो उसकी क्षमा प्राप्त कर सकें, वह अपनी माफी के मार्ग प्रशस्त करता है तथा अपनी विशाल दया व कृपा के चिह्नों को चिह्नित करता है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿قُلْ يَٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾﴾

अनुवादः (आप कह दें मेरे उन भक्तों से जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश न हो अल्लाह की दया से, वास्तव में अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को, निश्चय ही वह अति क्षमी दयावान है)। सूरह ज़ुमरः 53।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का इर्शाद हैः

﴿وَرَحْمَتِى وَسِعَتْ كُلَّ شَىْءٍ ۚ﴾

अनुवादः (मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये है)। सूरह आराफ़ः 156।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी कृपा, एहसान, उपकार एवं प्रकट व छिप्त महान नियामतों के द्वारा अपने प्रेम का इज़्हार करता है, अल्लाह ही है जो उन्हें अस्तित्व में लाया, उन्हें बाकी रखा, उन्हें जीवित किया, उनको ठीक-ठाक किया, उनके मामलों को पूर्णता के दर्जा तक पहुँचाया तथा उन्हें ईमान व इस्लाम की तौफ़ीक़ दी जो कि सबसे बड़ी नियामत व अनुकंपा है।

وَهُوَ الودُودُ يُحِبُّهُم وَيُحِبهُ   أَحبَابُهُ وَالفَضلُ لِلمَنَّانِ

وَهُو الَّذِي جَعلَ الَمحَبَّةَ فِي قُلو   بِهِم وَجَازاهُم بِحُبٍّ ثَانِ

وهذَا هُو الإِحسانُ حَقًّا لا مُعا   وَضَة وَلا لِتَوقُّعِ الشُّكرَانِ

अनुवादः अल्लाह तआला बड़ा प्रेम करने वाला है, वह भक्तों से प्रेम करता है तथा उसके चाहने वाले उससे प्रेम करते हैं, हालांकि समस्त फ़ज़्ल, एहसान व उपकार उसी मुहसिन व उपकारी के लिये हैं। वही है जिसने बंदों के दिलों में प्रेम उत्पन्न किया, तत्पश्चात उन्हें एक दूसरे के द्वारा बदला दिया। यही वास्तविक एहसान व उपकार है जिसमें न तो बदला (की चाहत) है न धन्यवाद की आशा।

❒ ख़ालिस़ एहसान व निश्छल उपकार!

जब बंदा के समक्ष (अल्लाह तआला के महान नाम) वदूद (अर्थातः अति प्रेम करने वाला) का अर्थ स्पष्ट हो जाये तो उसका दिल अपने रब से जुड़ जायेगा, फिर वह उसकी मोहब्बत, प्रेम, शौक़, अभिरुचि तथा ऐसे स्वाद में डूब जायेगा जिससे मीठा व पाकीज़ा स्वाद कोई और है ही नहीं।

यही वह सबसे महान चीज़ है जिसके द्वारा भक्त अपने स्वामी की भक्ति करते हैं तथा उसका सामीप्य प्राप्त करने का प्रयास करने वाले उसका सामीप्य प्राप्त करते हैं:

﴿يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ﴾

अनुवादः (वह -अल्लाह- उनसे प्रेम करेगा और वो उससे प्रेम करेंगे)। सूरह माइदाः 54।

अल्लाह तआला के महान नाम व विशेषता का ज्ञान जितना पाक व पवित्र होगा उसी के समान बंदे की स्थिति पाक व पवित्र होगी। मोमिन बंदा जानता है कि यह स्थिति बंदे की शक्ति व सामर्थ्य के कारण नहीं होती, अपितु यह तो अत्यधिक प्रेम करने वाला महानतम व सर्वोच्च अल्लाह है जो अपने बंदे से प्रेम करता है, उसके दिल में प्रेम जाग्रत करता है, फिर बंदा जब उसकी तौफ़ीक़ से प्रेम करता है तो अल्लाह तआला उसे एक दूसरे प्रेम से अनुग्रहित

करता है, यही ख़ालिस़ व निश्छल एहसान है, क्योंकि सबब एवं मुसब्बब (कारण व कारण बनने वाली वस्तु) उसी (अल्लाह तआला) की ओर से ही मिलते हैं।

बंदा जब अपने पालनहार से वास्तविक प्रेम करता है तो उसी के परिणामस्वरूप वह समस्त उपासनाओं को केवल अल्लाह के लिये ही ख़ालिस़ व निश्छल रखता है, इसके अतिरिक्त उन सभी लोगों एवं वस्तुओं से प्रेम करने लगता है जिनसे अल्लाह तआला प्रेम करता है तथा उन समस्त लोगों एवं वस्तुओं से घृणा करने लगता है जिनसे अल्लाह तआला घृणा करता है, तथा वला व बरा (वफादारी व मित्रता एवं अलगाव व शत्रुता) की वास्तविकता भी यही हैः

﴿لَّا تَجِدُ قَوۡمٗا يُؤۡمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ يُوَآدُّونَ مَنۡ حَآدَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَوۡ كَانُوٓاْ ءَابَآءَهُمۡ أَوۡ أَبۡنَآءَهُمۡ أَوۡ إِخۡوَٰنَهُمۡ أَوۡ عَشِيرَتَهُمۡۚ أُوْلَٰٓئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ ٱلۡإِيمَٰنَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٖ مِّنۡهُۖ وَيُدۡخِلُهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَاۚ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُواْ عَنۡهُۚ أُوْلَٰٓئِكَ حِزۡبُ ٱللَّهِۚ أَلَآ إِنَّ حِزۡبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلۡمُفۡلِحُونَ ٢٢﴾

अनुवादः (आप नहीं पायेंगे उन को जो ईमान रखते हों अल्लाह तथा अन्त-दिवस (प्रलय) पर कि वह मैत्री करते हों उन से जिन्होंने विरोध किया अल्लाह और उस के रसूल का, चाहे वो उनके पिता हों अथवा उन के पुत्र अथवा उनके भाई अथवा उनके परिजन हों, वही हैं लिख दिया है (अल्लाह ने) जिन के दिलों में ईमान और समर्थन दिया जिनको अपनी ओर से रूह़ (आत्मा, जिब्रील) द्वारा, तथा प्रवेश देगा उन को ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें, वो सदावासी होंगे जिन में, प्रसन्न हो गया अल्लाह उन से तथा वो प्रसन्न हो गये उस से, वह अल्लाह का समूह है, सुन लो अल्लाह का समूह ही सफल होने वाला है)। सूरह मुजादलाः 22।

❒ केवल प्रेम करने वालों के लिये!

सच्चा मोमिन अल्लाह तआला से अपना प्रेम, कथन व कर्म आधारित अपने उन कृत्यों के द्वारा प्रकट करता है जो महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के प्रेम का तकाजा व माँग हैं, तथा इनमें सबसे महान व बड़ी चीज़ हैः महानतम व सर्वोच्च अल्लाह एवं उसके रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों का अनुपालन, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ﴾

अनुवादः (हे नबी! कह दीजिये किः यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम करने लगेगा)। सूरह आले इमरानः 31।

बंदा बराबर उस मार्ग पर चलता रहता है जिसे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह पसंद फ़रमाता है तथा उन मामलों में आगे बढ़ जाने का प्रयास करता है जिन्हें उनका रब चाहता है, यहाँ तक कि वह (अल्लाह तआला) की मोहब्बत को पा लेता है तथा उसे अल्लाह तआला का समीप्य प्राप्त हो जाता हैः “जब अल्लाह तआला किसी बंदे से प्रेम करता है तो जिब्रील अलैहिस्सलाम से फ़रमाता है कि अल्लाह तआला अमूक व्यक्ति से प्रेम करता है, तुम भी उससे प्रेम करो, चुनाँचे जिब्रील अलैहिस्सलाम भी उससे प्रेम करने लगते हैं, फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम आसमान में यह पुकार लगाते हैं किः अल्लाह तआला अमूक व्यक्ति से प्रेम करता है इसलिये तुम सब उससे प्रेम रखो, चुनाँचे सभी आसमान वाले उससे प्रेम करने लगते हैं, इसके पश्चात इस धरती में उसे लोगों के निकट प्रिय बना दिया जाता है”। (बुख़ारी)।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ سَيَجۡعَلُ لَهُمُ ٱلرَّحۡمَٰنُ وُدّٗا ٩٦﴾

अनुवादः (जो ईमान लाये हैं तथा सदाचार किये हैं, शीघ्र बना देगा उन के लिये अत्यंत कृपाशील (दिलों में) प्रेम)। सूरह मर्यमः 96।

जब महानतम व सर्वोच्च अल्लाह किसी से प्रेम करता है तो वह “उसका कान बन जाता है जिसके द्वारा वह सुनता है, उसकी आँख बन जाता है जिसके द्वारा वह देखता है, उसका हाथ बन जाता है जिसके द्वारा वह पकड़ता है, उसका पाँव बन जाता है जिससे वह चलता है”। (बुख़ारी)।

इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह लिखते हैं किः “वो माध्यम व कारण जिनके द्वारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का प्रेम प्राप्त किया जा सकता है, दस हैं:

1- क़ुरआन -ए- करीम को ध्यान लगा कर तथा उसके अर्थों को समझ कर पढ़ना।

2- फ़र्ज़ नमाज़ों के पश्चात नफ़्ल नमाज़ों के द्वारा अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करना।

3- हर समय ज़ुबान, दिल, कर्म एवं हर परिस्थिति में उसके स्मरण व ज़िक्र में लीन रहना।

4- इच्छाओं की प्रबलता के समय अपनी पसंदीदा चीज़ों को अल्लाह की पसंद के लिये तज देना।

5- दिल का उसके अस्मा व सिफ़ात (नाम व विशेषताओं) का अध्यन करना तथा उसका ज्ञान अर्जित करना।

6- उसके इनाम, पुरस्कार, नवाज़िशों एवं उसकी छिप्त व प्रकट नियामतों का अवलोकन व मुशाहदा करना।

7- (यह बिंदु सबसे प्रिय है) दिल का पूर्णरूपेण महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के समक्ष विनम्रता व शालीनता अपनाना तथा नतमस्तक हो जाना।

8- अल्लाह तआला के नुज़ूल (सांसारिक आकाश पर उतरने) के समय उससे सरगोशी व काना फूसी करने के लिये एकांतावास व तंहाई अपनाना।

9- (अल्लाह तआला से) प्रेम करने वाले सच्चे लोगों के संग उठना बैठना एवं उनके वार्तालाप व बात-चीत से लाभप्रद चीज़ें सीखना।

10- हर उस कारण व माध्यम से दूरी अपनाना जो दिल एवं महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के बीच रुकावट बने"।

❒ प्रेम का स्पष्ट प्रमाणः

فَمَا كُلُّ عَينٍ بِالحَبِيبِ قَرِيرَةٌ وَلا كُلُّ مَن نُودِي يُجِيبُ المُنادِيَا

अनुवादः हर निगाह प्रेमी को करार नहीं देती, न ही प्रत्येक पुकारा जाने वाला अपने पुकारने वाले को उत्तर देता है।

प्रेम करने वाले जब अपने प्रेमी की पुकार "ह़य्या अललफ़लाह़ (आओ सफलता की ओर)" सुनते हैं तो सुनते ही बिस्तरों को छोड़ देते हैं, निद्रा को विदा कर देते हैं तथा धूप की तेजी एवं ठंड की प्रचंडता में पैदल ही ऐसे चल पड़ते हैं मानो वो रेशम पर चल रहे हों एवं उनके कानों से यह ध्वनि टकरा रही हो किः "आओ जद्दो जहद (प्रयास) की ओर" अतः वो अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं, अपनी आत्माओं को न्योछावर कर देते हैं, अपना जीवन कुर्बान कर देते हैं एवं अपना रक्त (अल्लाह के मार्ग में) बहा डालते हैं।

जब उन पर (यह आयत) तिलावत की जाती हैः

﴿وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلۡبَيۡتِ مَنِ ٱسۡتَطَاعَ إِلَيۡهِ سَبِيلٗاۚ﴾

अनुवादः (तथा अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो उस तक राह पा सकते हों)। सूरह आले इमरानः 97।

तो वह हर दूरस्थ वादियों एवं मार्गों से धूल-धूसरित, थके हुये, भूखे-प्यासे हो कर (यह दुआ पढ़ते हुये) निकल पड़ते हैं: "लब्बैक, अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक (अर्थातः उपस्थित हूँ, हे अल्लाह! मैं उपस्थित हूँ, मैं उपस्थित हूँ, तेरा कोई शरीक व साझी नहीं, मैं उपस्थित हूँ)", इन लोगों की तथा इनके अलावा अन्य लोगों की वही दशा होती है जिसे किसी कवि ने बयान हैः

مَن لَم يَبِت وَالحُبُّ حَشوَ فُؤادِه   لَم يَدرِ كَيفَ تَفتُّتِ الأَكبادُ

अनुवादः जिसने (प्रियतम की याद में) इस प्रकार से रात नहीं बिताई कि उसका हृदय (किसी के) प्रेम से लबालब भरा हुआ हो, तो उसे क्या मालूम कि जिगर के टुकड़े-टुकड़े कैसे होते हैं।

जलालुद्दीन रूमी रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "निःसंदेह प्रेम कड़वे को मीठा, मिट्टी को सोना, अस्वच्छ को स्वच्छ, रोग को निरोग, कारावास को उपवन, रोग को नियामत एवं पीड़ा को रहमत व दया बना देता है, यह प्रेम ही है जो लोहे को मोम बना देता है, पत्थर को पिघला देता है, तथा मृतप्राय को पुनर्जीवित करके उसे स्वतःस्फूर्त कर देता है"।

فَليتَكَ تَحْلُو وَالحياةُ مَريرَةٌ   وَليتَكَ تَرضَى وَالأَنامُ غِضابُ
وَليتَ الَّذِي بَيني وَبينَكَ عَامِرٌ   وَبَيني وَبينَ العالَمِينَ خَرابُ
إِذا نِلتُ مِنكَ الوُدَّ فَالكُلُّ هَيِّنٌ   وَكُلُّ الَّذِي فَوقَ التُّرابِ تُرابُ

अनुवादः काश तुम मधुर होते एवं जीवन कटु, काश तुम प्रसन्न होते एवं लोग अप्रसन्न। काश मेरे एवं तुम्हारे बीच का संबंध बेजोड़ होता एवं मेरे व समस्त संसार वासियों से मेरी ठनी होती। मुझे तेरा प्रेम मिल जाये तो फिर प्रत्येक वस्तु तुच्छ एवं इस धरती की सभी चीज़ें मेरे लिये मिट्टी के समान हो जायेंगी।

इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह मोहब्बत व प्रेम के संबंध में लिखते हैं किः "प्रेम अल्लाह तआला को माबूद व उपास्य मानने का राज़ है, और तौहीद यह गवाही देने का नाम है किः तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से बात कर रहे थे कि एक देहाती खड़ा हुआ एवं पूछने लगाः "हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! क़यामत (महा प्रलय) कब आयेगी? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रश्न कियाः तुमने उसके लिये क्या तैयारी की है? उन्होंने उत्तर दियाः मैंने इसके लिये बहुतेरी नमाज़ें, रोज़े एवं स़दक़ा (दान-पुण्य) तो तैयार नहीं किये हैं, परंतु मैं अल्लाह एवं उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम करता हूँ, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः तुम उसके संग रहोगे जिससे तुम प्रेम करते हो"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

أُحِبُّ الصَّالِحِينَ وَلَستُ مِنهُم　　　لَعَلِّي أَن أَنالَ بِهِم شَفَاعَة

وَأَكرَهُ مَنْ تِجَارَتُهُ المَعاصِي　　　وَلو كُنا سَواء فِي البِضاعَة

अनुवादः मुझे नेक व सदाचारी लोग पसंद हैं, हालांकि मैं (उतना) नेक व सदाचारी नहीं हूँ, संभवतः मुझे उनके माध्यम से कोई सिफ़ारिश प्राप्त हो जाये। मुझे ऐसे लोग अप्रिय हैं जो पापों का व्यवसाय करते हैं, यह अलग बात है कि हमारे बिक्री का माल एक ही जैसा है।

❒ एक निशानी ...

हरम बिन ह़िब्बान फ़रमाते हैं किः "जो बंदा भी महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की ओर ख़ालिस़ व निश्छल हृदय के साथ आगे बढ़ता है, अल्लाह तआला उसकी ओर मोमिनों के दिलों को फेर देता है, यहाँ तक कि उसे उन की मोहब्बत से नवाज़ देता है"।

गोया मोमिन बंदा प्रेम करने वाला होता है, वह स्वयं प्रेम करता है तथा उससे भी प्रेम किया जाता है, वह दूसरों को प्रिय रखता है एवं दूसरे लोग भी उसे प्रिय रखते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आप ने फ़रमायाः "मोमिन प्रेम करता है तथा उससे प्रेम किया जाता है"। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे इमाम त़बरानी ने "अल-मोअजम अल-औसत़" में रिवायत किया है)।

अर्थ यह है कि मोमिन बंदा अपने मुसलमान मित्रों के लिये ख़ैर, भलाई व अच्छाई को पसंद करता है एवं उसे अपनी बुराई व दुष्टता से सुरक्षित रखता है, स़ह़ीह़ ह़दीस़ में वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حُبَّكَ، وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ، وَحُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُ إِلَى حُبِّكَ

(अर्थातः हे अल्लाह! मैं तुझ से एवं उससे जो तुझ से प्रेम करता हो, प्रेम करने की तौफ़ीक़ व अनुग्रह माँगता हूँ, और तुझ से ऐसे कार्य करने की तौफ़ीक़ माँगता हूँ, जो तेरी मोहब्बत से करीब कर दे)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

हे अल्लाह! हे मोहब्बत करने वाले (परवरदिगार)! हम तुझ से एवं उस व्यक्ति से जो तुझ से मोहब्बत करता हो, मोहब्बत करने की तौफ़ीक़ माँगते हैं एवं तुझ से ऐसे काम करने की तौफ़ीक़ व अनुग्रह चाहते हैं जो तेरी मोहब्बत से करीब कर दे।

(56)

(अल-बर्र जल्ल जलालुहु)

हे कंगाल बंदे! अपने दयालु व मेहरबान प्रबंधक (पालनहार) के द्वार को लाज़िम पकड़, वृहद व व्यापक ज्ञान वाले, महा प्रभुत्वशाली एवं कारसाज़ से सहायता माँग, अपने नेक व अच्छे कर्मों के द्वारा उसका सामीप्य प्राप्त कर, क्योंकि वह बड़ा दयालु एवं परोपकारी है।

यहाँ वह अपनी नियामतों व अनुग्रहों के द्वारा कृपा करता है, यदि तुम उसके आदेशों का अनुपालन करोगे तो वह तुम्हें नवाज़ेगा और तुम पर इनाम करेगा, परंतु यदि तुम गुज़रते क्षणों को यों ही बर्बाद कर दोगे तो वह तुम्हें महरूम व वंचित कर देगा और तुम्हें मोहलत देगा, फिर यदि तुम ने तौबा किया, उसकी ओर पलट आये तो वह तेरी तौबा को स्वीकार कर लेगा, एवं यदि तुमने अवज्ञा की तथा कुकर्म किये तो वह उसे गुप्त रखे गा। जो व्यक्ति अल्लाह तआला की उबूदियत व बंदगीतथा मोहब्बत का स्वाद चख ले, वह उसका मामीप्य प्राप्त किये बिना कैसे करार पा सकता है? अथवा यह कि जो व्यक्ति रब के समक्ष विनम्रता व शालीनता की मिठास पा ले वह उसकी ओर पूर्णतः आकर्षित हुये बिना कैसे रह सकता है?

إذا كَانَ حُبُّ الهَائِمِينَ مِنَ الوَرَى   بِلَيلَى وَسَلمَى يَسلِبُ اللُّبَّ وَالعَقلَا

فَماذَا عَسى أَن يَصنَعَ الهَائِمَ الَّذِي   سَرَى قَلبُهُ شَوْقًا إلى المَلإِ الأَعلَى

अनुवादः जब लैला एवं सलमा के प्रेम में मुग्ध लोगों के प्रेम की यह स्थिति है कि वह मन-मस्तिष्क व बुद्धि को हर लेता है। तो क्या आशा रखी जा सकती है ऐसे प्रेम करने वालों के बारे में जिसका हृदय मला -ए- आला के प्रेम में पड़ जाये।

किसी कहने वाले ने सच कहा है किः "अल्लाह की क़सम! वह मार्ग कितना भयानक होगा जिस पर अल्लाह का पहरा न हो, और वह रास्ता कितना गुमराह करने वाला भ्रमिक होगा जिसका पथ प्रदर्शित करने वाला अल्लाह न हो"।

पाक व पवित्र है वह ज़ात जो बड़ा मेहरबान व उपकारी है! जिसके बाह्य व आंतरिक, प्रकट व गुप्त हर प्रकार के एहसान व उपकार, ख़ैर, बरकत व भलाई हर पल, हर क्षण धरती व आकाश वासियों के लिये आम हैं।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَأَسۡبَغَ عَلَيۡكُمۡ نِعَمَهُۥ ظَٰهِرَةً وَبَاطِنَةً﴾ अनुवादः (पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा)। सूरह लुक़्मानः 20।

अल्लाह ने अपनी बुलंद व सर्वोच्च ज़ात (व्यक्तित्व) की प्रशंसा इन शब्दों में की हैः

﴿إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْبَرُّ ٱلرَّحِيمُ﴾

अनुवादः (निश्चय ही वह अति परोपकारी दयावान है)। सूरह तूरः 28।

चुनाँचे हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बंदे पर दयालु है, उनके साथ नम्रता एवं कृपा भाव रखने वाला है, तथा उनकी परिस्थिति एवं सांसारिक मामलों को दुरुस्त बनाने वाला है।

अल्लाह तबारक व तआला के एह़सान व परोपकार की पराकाष्ठा है कि वह नेकी व सदाचार करने वालों के सवाब व पुण्य को कई गुणा बढ़ा देता है, जब्कि कुकर्मियों के संग दरगुजर व अनदेखी का व्यवहार करता है। हमारा रब अपने बंदे के लिये मोह़सिन, परोपकारी एवं उन पर दयालु है, वह उनके साथ आसानी व सरलता चाहता है तंगी नहीं, अल्लाह तआला अपने औलिया का मोह़सिन है, वह उन्हें अपना वली (मित्र) बनाता है, उन्हें अपनी उपासना व इबादत के लिये चुनता है तथा हरेक प्रकार की बुराई, फसाद, पीड़ा व विपदा को उनके ऊपर से टाल देता है, जो कुछ उसने स्वर्ग के अंदर अपने वलियों व मित्रों के लिये तैयार कर रखा है, उससे उसके एह़सान व उपकार का व्यापक एवं वृहद होना बिल्कुल स्पष्ट हैः

﴿إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْبَرُّ ٱلرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾﴾

अनुवादः (इससे पूर्व हम वंदना किया करते थे उस की, निश्चय ही वह अति परोपकारी दयावान है)। सूरह तूरः 28।

وَالبِرُّ فِي أَوصافِهِ سُبحانَه   هُوَ كَثرةُ الخَيراتِ وَالإِحسانِ
صَدرَت عَن البِرِ الذي هُو وَصفُه   فَالبِرُّ حِينَئِذٍ لَه نَوعانِ

अनुवादः एह़सान (परोपकार) अल्लाह तआला की विशेषताओं में से है, इसका अर्थ (भक्तों को) अधिकाधिक भलाई, ख़ैर व बरकत एवं इनाम व एह़सान से अनुग्रहित करना है। वो बरकतें एवं अनुग्रह उस एह़सान के अंतर्गत होते हैं जो अल्लाह की स़िफ़त व विशेषता है, मानो एह़सान (जो कि अल्लाह की विशेषता है, के) दो भेद हैं।

चुनाँचे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बंदे पर एह़सान करने वाला है, उन पर कृपालु है, उन के संग भलाई करता है, वह उन्हें भरपूर भलाई व बरकत, फज़्ल व अनुग्रहों से

नवाज़ता हैः ﴿وَأَسۡبَغَ عَلَيۡكُمۡ نِعَمَهُۥ ظَٰهِرَةٗ وَبَاطِنَةٗۗ﴾ अनुवादः (पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा)। सूरह लुक़मानः 20।

❒ समस्त चीज़ें तुम्हारी सेवा में उपस्थित हैं ...

वो फ़रिश्ते जो रह़मान का अर्श (सिंहासन) उठाये हुये हैं एवं जो उसके आस पास हैं, वो तुम्हारी मग़फ़िरत व क्षमा की प्रार्थनायें कर रहे हैं, तुम्हारे ऊपर नियुक्त किये गये फ़रिश्ते तुम्हारी निगरानी व सुरक्षा कर रहे हैं, वो फ़रिश्ते जिन्हें वर्षा एवं वनस्पति की जिम्मेवारी सौंपी गई है वो तुम्हारी आजीविका के सिलसिले में प्रयासरत हैं तथा काम में लगे हुये हैं, ब्रह्माण्ड तुम्हारे वश में कर दिया गया, चंद्रमा, सूर्य एवं तारे तुम्हारे समय एवं आजीविका प्राप्त करने के अनुसार वशीभूत कर दिये गये हैं।

यह ब्रह्माण्ड तुम्हारे काबू में है, धरती, पहाड़, वृक्ष, वनस्पति एवं पशु यहाँ का सभी कुछ तुम्हारे लिये हैः

﴿وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ جَمِيعٗا مِّنۡهُۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَٰتٖ لِّقَوۡمٖ يَتَفَكَّرُونَ ١٣﴾

अनुवादः (तथा उस ने तुम्हारी सेवा मे लगा रखा है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है सब को अपनी ओर से, वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ है उन के लिये जो सोच-विचार करें)। सूरह जास़ियहः 13।

❒ एह़सान व भलाई से ओत-प्रोत मृदुल मंद समीर ...

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का यह एह़सान ही है कि उसने हमारे लिये अपनी पहचान का मार्ग प्रशस्त किया, हमारे ऊपर अपनी शरीअत को आसान व सरल बना कर अवतरित किया, उसमें सरलता व आसानियाँ कूट-कूट कर भर दीं, उसे जटिलता व कठिनाई से कोसों दूर रखा तथा हमें क्षमता से अधिक दायित्व का भार नहीं दियाः

﴿وَمَا جَعَلَ عَلَيۡكُمۡ فِي ٱلدِّينِ مِنۡ حَرَجٖۚ﴾

अनुवादः (नहीं बनाई तुम पर धर्म में कोई संकीर्णता (तंगी))। सूरह हजः 78।

﴿لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفۡسًا إِلَّا وُسۡعَهَاۚ﴾

अनुवादः (अल्लाह किसी प्राणी पर उसकी क्षमता से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता)। सूरह ब़करहः 286।

﴿وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾﴾

अनुवादः (और हमने सरल कर दिया है क़ुरआन को शिक्षा के लिये, तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?)। सूरह क़मरः 17।

अल्लाह तआला का हम पर एक एहसान व उपकार यह भी है कि वह हमारी तुच्छ (नेकी व सदाचारिता) को स्वीकार करता है, तथा उस पर अत्यधिक सवाब व पुण्य प्रदान करता है, और ढ़ेर सारे पापों को क्षमा कर देता है।

(इस बात को अच्छे ढ़ंग से समझने के लिये) वह महान ह़दीस़ पर्याप्त है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हैः

"अल्लाह तआला ने नेकियां व भलाईयां भाग्य में लिख दी हैं और फिर उन्हें स्पष्ट रूप से बयान कर दिया है, जिसने किसी नेकी का इरादा किया परंतु उस पर अमल न कर सका तो अल्लाह तआला उसके लिये एक पूर्ण नेकी का बदला लिख देता है, और यदि किसी ने इरादा के बाद उस पर अमल भी कर लिया तो अल्लाह तआला उसके लिये अपने यहाँ दस गुणा से सात सौ गुणा तक तथा (कभी-कभी) उससे भी बढ़ कर नेकियां लिख देता है, जिसने किसी बुराई का इरादा किया किंतु उस पर अमल नहीं किया तो अल्लाह तआला उसके लिये अपने यहाँ नेकी लिख देता है, और यदि इरादा करने के पश्चात उसने उसका कार्यानव्यन भी कर दिया तो अपने यहाँ एक बुराई लिखता है"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

हमारे ऊपर उसका एक एहसान व उपकार यह भी है कि वह बंदे की तौबा व प्रायश्चित्त से प्रसन्न होता है, और यह कि जब बंदा से कोई गुनाह अंजाम पा जाये तो वह (उसे लोगों के समक्ष प्रकट कर के) हमें अपमानित नहीं करता, अपितु हमारे लिये तौबा के द्वार खोल देता हैः

﴿قُلْ يَٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾﴾

अनुवादः (आप कह दें मेरे उन भक्तों से जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश न हो अल्लाह की दया से, वास्तव में अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को, निश्चय ही वह अति क्षमी दयावान है)। सूरह ज़ुमरः 53।

स़ह़ीह़ सनद के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आप ने फ़रमायाः "हे आदम के संतान! जब तक तू मुझसे दुआएं करता रहेगा और मुझ से अपनी आशाएं एवं आस रखेगा मैं तुझे क्षमा करता रहूँगा, चाहे तेरे पाप किसी भी दर्जा को पहुँचे हुए हों, मुझे किसी बात की परवाह नहीं, हे आदम के संतान! यदि तेरे पाप आकाश छूने लगें फिर तू मुझ से माफी माँगे तो मैं तुझे माफ कर दूँगा और मुझे किसी बात की परवाह नहीं होगी, हे आदम के संतान! यदि तू धरती समान भी पाप कर बैठे तत्पश्चात मुझ से (क्षमा याचना करते हुए) मिले, और मेरे संग किसी प्रकार का शिर्क न किया हो तो मैं तेरे पास उसके समान क्षमा ले कर आउँगा (और तुझे माफ कर दूँगा)"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

لَكَ الحَمدُ حَمدًا نَستَلِذُّ بِهِ ذِكرًا وَإِن كُنتُ لَا أُحصِي ثَناءً وَلا شُكْرًا
لَكَ الحَمدُ حَمْدًا طَيِّبًا يَمْلَأُ السَّمَا وَأقطارَها والأرضَ وَالبَرَّ وَالبَحرَا
إلهي تَغَمَّدنِي بِرَحمَتِكَ الَّتِي وَسِعت وَأوسَعتَ البَرَايَا بِها بِرًّا

अनुवादः तेरे ही लिये हर प्रकार की प्रशंसा व स्तुति गान है, जिसके ज़िक्र व जाप से हम आनंदित होते हैं, यह और बात है कि मैं प्रशंसा एवं शुक्र को गिन नहीं सकता, तेरे ही लिये हर पाक व पवित्र स्तुति गान व प्रशंसा है, जो आसमान, उसके किनारे, धरती एवं आर्द्र व शुष्क (सूखा व भीगा) को भर देगा। मेरे मौला! मुझे अपनी उस रह़मत व दया से ढ़ाँप ले जिसके द्वारा तू सभी मख़लूक़ व प्राणी पर एह़सान व उपकार की बरखा बरसाता है।

❒ (अल्लाह तआला के) एह़सान व उपकार की विशेषता में तुम्हारा भाग ...

हमारा पालनहार मोह़सिन व उपकारी है, उसे उपकार करना पसंद है, वह इसका आदेश भी देता है, और यह चाहता है कि उसके बंदे इस शिष्टाचार के अलंकार से अलंकृत हों, (इस के विषय में) बड़ी वृहद व व्यापक आयत निम्न हैः

﴿ لَّيْسَ ٱلْبِرَّ أَن تُوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ قِبَلَ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلْكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّۦنَ وَءَاتَى ٱلْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ ذَوِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينَ وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ وَٱلسَّآئِلِينَ وَفِى ٱلرِّقَابِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَى

ٱلزَّكَوٰةَ وَٱلْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَٰهَدُوا۟ۖ وَٱلصَّٰبِرِينَ فِى ٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ وَحِينَ ٱلْبَأْسِۗ أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ صَدَقُوا۟ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

अनुवादः (भलाई यह नहीं है कि तुम अपने मुख को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो, भला कर्म तो उस का है जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया, तथा फ़रिश्तों और सब पुस्तकों तथा नबियों पर, तथा धन का मोह रखते हुये, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (फ़क़ीरों) को और दास मुक्ति के लिये दिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा ज़कात (दान) दी, और अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहे, और निर्धनता एवं रोग तथा युद्ध की स्थिति में धैर्यवान रहे, यही लोग सच्चे हैं, तथा यही (अल्लाह से) डरते हैं)। सूरह बक़रहः 177।

बंदा आख़िरत व परलोक में महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के एहसान व उपकार का पात्र उसी स्थिति में हो सकेगा जब्कि वह उसके एहसान व रज़ामंदी तक ले जाने वाले कार्यों पर अमल करता रहा हो। महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿لَن تَنَالُوا۟ ٱلْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا۟ مِمَّا تُحِبُّونَۚ وَمَا تُنفِقُوا۟ مِن شَىْءٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ بِهِۦ عَلِيمٌ ﴿٩٢﴾﴾

अनुवादः (तुम पुण्य नहीं पा सकोगे, जब तक उस में से दान न करो जिस से मोह रखते हो, तथा तुम जो भी दान करोगे, वास्तव में अल्लाह उसे भलि भाँति जानता है)। सूरह आले इमरानः 92।

अल्लामा राज़ी रहिमहुल्लाह लिखते हैं किः “प्रत्येक वह व्यक्ति जो अल्लाह के बंदों पर भलाई व शांति के द्वार खोलता है, अल्लाह तआला उस पर इस लोक एवं परलोक दोनों में संसार की भलाइयों में वृद्धि कर देता है”।

हे अल्लाह! हम पर एहसान व उपकार कर, हमें (जहन्नम की) लू वाली यातना से बचा, निःसंदेह तू मोहसिन, उपकारी, दयालु व मेहरबान है।

(57)

(अल-क़रीब जल्ल जलालुहु)

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾﴾

अनुवादः (-हे नबी!- जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय ही मैं समीप हूँ, मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ, अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वह सीधी राह पायें)। सूरह बक़राः 186।

एक प्रश्न जिसका उत्तर देने की बात महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने स्वयं एक आयत (श्लोक) में कही है, जो प्रत्येक मोमिन के दिल के अंदर मधुर उदारता, चिर परिचित प्रेम, शांतिदायक प्रसन्नता, अखिल विश्वास तथा सम्पूर्ण भरोसा उत्पन्न कर रही है। इसी स्नेही एवं प्रेमपूर्ण सामीप्य की शीतल छाया में हमें अल्लाह तआला के महान नाम "अल-क़रीब, अर्थातः अति निकट" का ज्ञान मिल रहा है। महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ﴾

अनुवादः (वह सब कुछ सुनने वाला, अति निकट है)। सूरह सबाः 50।

यह महान नाम दिलों को भला लगने वाला, अनुपम अर्थों से लैस एवं बहुमूल्य सबूतों से परिपूर्ण है।

इसके शब्द एवं अर्थ में उसी प्रकार की एकाकी पाई जाती है जिस प्रकार से साफ व पारदर्शी ग्लास के बाहर से उसके अंदर का शुद्ध जल दिखाई देता है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बंदों के अति निकट है, अपने अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर विराजमान) है, जो कि उसकी मख़लूक़ात (रचनाओं) के ऊपर है, वह भेदों एवं छुपे राज़ों को ख़ूब जानता है तथा उसकी मईयत व साथ हरेक के लिये है।

मख़लूक़ (प्राणी) से उसका सामीप्य दो प्रकार का हैः

प्रथमः आम, सामान्य व व्यापक सामीप्यः इससे अभिप्राय यह है कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह हरेक से अपने इल्म व ज्ञान, निगहबानी, निगरानी व सुरक्षा के आधार पर निकट है तथा (उसका इल्म) सभी चीज़ों को अपने घेरा में लिये हुये है, हालांकि वह समस्त प्राणियों व मख़्लूक़ के ऊपर है, फिर भी वह शह -ए- रग (प्राणनाड़ी) से भी ज़्यादा मानव के निकट है, इस व्यापक व आम मईयत व साथ का उल्लेख अल्लाह तआला के इस फ़रमान में आया हैः

﴿وَنَحۡنُ أَقۡرَبُ إِلَيۡهِ مِنۡ حَبۡلِ ٱلۡوَرِيدِ﴾

अनुवादः (तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस की) प्राणनाड़ी से)। सूरह क़ाफ़ः 16।

द्वितीयः विशिष्ट सामीप्यः इससे अभिप्राय यह है कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बंदों, माँगने वालों एवं पसंद करने वालों के अति निकट है, यह निकटता व सामीप्यः प्रेम व सहायता, भाव-भंगिमा में समर्थन, प्रार्थना करने वालों की प्रार्थनाओं की स्वीकार्यता एवं इबादत व उपासना करने वालों की इबादतों पर सवाब व पुण्य प्रदान करने एवं नेक अमल व सदकर्म को स्वीकार करने की माँग करता है।

यह वह क़ुर्बत व सामीप्य है जिसकी वास्तविकता का पता नहीं लगाया जा सकता, परंतु हाँ उसके प्रभाव को देखा जा सकता है, जैसे भक्तों पर उसका लुत्फ़ व उदारता, उस पर (रब का) स्नेह व दया एवं करम व मेहरबानीः

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌۖ أُجِيبُ دَعۡوَةَ ٱلدَّاعِ إِذَا دَعَانِۖ﴾

अनुवादः (-हे नबी!- जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय ही मैं समीप हूँ, मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ)। सूरह बक़राः 186।

وَهُوَ القَرِيبُ وَقُرْبُهُ الْمُخْتَصُّ بِـ   الدَّاعِي وَعِبَادِهِ عَلى الإِيمَانِ

अनुवादः वह अति निकट है, और उस की (विशिष्ट) निकटता दुआ व प्रार्थना करने वाले एवं ईमान पर अडिग रहने वाले भक्तों के लिये आरक्षित है।

स़ह़ीह़ सनद के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आप ने फ़रमायाः "जिस को तुम पुकारते हो वह तुम्हारे ऊँट की गर्दन से भी अधिक निकट है तुम्हारे"। (इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

वह अति काली रात में ठोस चट्टान पर रेंगने वाली स्याह चींटी की रेंगने की ध्वनी को भी सुनता है।

❒ अल्लाह तआला की सुरक्षा में ...

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने औलिया व मित्रों के बेहद निकट है, अपने बंदों का संरक्षक है, वह उन्हें अपनी सुरक्षा व निगरानी में रखता है, उन पर अपने अनुग्रहों व पुरस्कारों की वर्षा करता है, उन पर दया व कृपा की बरखा बरसाता है, क्षण भर के लिये भी उन्हें अकेला नहीं छोड़ता, उन्हें स्वयं उनके सुपुर्द नहीं करता, उन पर शत्रुओं को हावी नहीं होने देता और न ही उन तक पहुँचने के लिये शैतान को कोई मार्ग देता है। उन्होंने विशेष मईयत व साथ की कीमत चुकाई, अतः उन्हें यह निकटता, सामीप्य, सुरक्षा व हिफ़ाज़त प्राप्त हुई :

﴿وَقَالَ ٱللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْۖ لَئِنْ أَقَمْتُمُ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَيْتُمُ ٱلزَّكَوٰةَ وَءَامَنتُم بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا﴾

अनुवादः (तथा अल्लाह ने कहा था किः मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ की स्थापना करते एवं ज़कात देते रहे, तथा मेरे रसूलों पर ईमान (विश्वास) रखते, और उन को समर्थन देते रहे, तथा अल्लाह को उत्तम ऋण देते रहे)। सूरह माइदाः 12।

उन्होंने अपने परवरदिगार के पास शांति का अनुभव किया एवं महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के प्रति अच्छा गुमान रखा तो हर क्षण के लिये अल्लाह उन का (रक्षक व मददगार) हो गया।

नूह अलैहिस्सलाम ने साढ़े नौ सौ वर्ष की दावत (प्रचार), संकट एवं परीक्षा के पश्चात अपने रब से दुआ माँगी तो उसने दुआ को स्वीकार कर लिया, आपको मुक्ति व निजात दिया एवं शत्रुओं का सर्वनाश कर दिया।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने रब व पालनहार की शरण माँगी तो उसने आप को आग से छुटकारा दिला दिया।

यूनुस बिन मत्ता अलैहिस्सलाम को घोर विपदा से निकाला एवं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को याक़ूब अलैहिस्सलाम के पास भेजा, उनको एकत्रित किया, यूसुफ अलैहिस्सलाम एवं उनके भाइयों के मध्य प्रेम उत्पन्न किया तथा याक़ूब अलैहिस्सलाम को पुनः नयन प्रदान

किया एवं हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ ऐसी संगीन परिस्थितियों से गुजरे कि जिनके कारण सिरों के केश पकने लगे, दिल उछल कर हलक में आ गया एवं आप के कुछ स़ह़ाबा अल्लाह तआला के संग बदगुमानी पालने लगे, परंतु (उन विषम परिस्थितियों में) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने आका व स्वामी के समक्ष गिड़गिड़ा कर विनम्रता के साथ दुआएं माँगते, फिर महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने वादे को पूरा करता, वांछित मामले को अंजाम तक पहुँचाता एवं कलेमा -ए- ह़क़ (सच्चे वाक्य) को बुलंद व उच्चता प्रदान फ़रमाता।

तात्पर्य यह है कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने सभी मोमिन मख़लूक़ व प्राणी के निकट है, वह उन्हें देख रहा है एवं उनकी सुरक्षा कर रहा है।

एक महिला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में अपने पति की शिकायत ले कर उपस्थित हुईं, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा (उसी) घर के एक कोने में मौजूद होती हैं किंतु उनके कहे अनुसार वह कुछ बात सुन पाती हैं और कुछ नहीं सुन पाती हैं, इस तकरार के पश्चात जिब्रील अलैहिस्सलाम मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अल्लाह तआला का यह फ़रमान ले कर अवतरित होते हैं:

﴿قَدۡ سَمِعَ ٱللَّهُ قَوۡلَ ٱلَّتِي تُجَٰدِلُكَ فِي زَوۡجِهَا وَتَشۡتَكِيٓ إِلَى ٱللَّهِ وَٱللَّهُ يَسۡمَعُ تَحَاوُرَكُمَآۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعُۢ بَصِيرٌ ١﴾

अनुवादः (हे नबी!) अल्लाह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने पति के विषय में, तथा गुहार लगा रही थी अल्लाह से, और अल्लाह सुन रहा था तुम दोनों के वार्तालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने-देखने वाला है)। सूरह मुजादलाः 1।

पाक व पवित्र है वह ज़ात जिसकी समाअत (कान, सुनने की क्षमता) की वृहदता व व्यापकता ने समस्त ध्वनियों को अपने घेरे में ले रखा है!

❒ निःसंदेह वह अति निकट हैः

तुम दुआ में अपनी ध्वनी ऊँची मत करो, क्योंकि वह अति निकट है, (तुम्हारी प्रार्थनायें) सुन रहा है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को बुलंद व ऊँची आवाज़ों में रब से दुआयें करते हुये सुना तो फ़रमायाः

“लोगों! अपने ऊपर दया करो, तुम किसी बहरे अथवा गायब रब को नहीं पुकार रहे हो, बल्कि तुम तो उस ज़ात को पुकारते हो जो अत्यधिक सुनने वाला, और अत्यधिक देखने वाला है”। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

अल्लाह तआला तुम्हारे दिल की बातों एवं तुम्हारे एहसासों व भावनाओं से भलि भाँति परिचित है, तुम उसे अपने दिल में पुकारो वह तुम्हारी पुकार सुनेगा ... वह अति निकट हैः

﴿إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥ نِدَآءً خَفِيًّا ۝٣﴾

अनुवादः (जब उसने अपने रब से चुपके-चुपके दुआ की थी)। सूरह मर्यमः 3।

तुम उसे अपने दिल में याद करो, वह तुम्हारी बातें सुनेगा एवं तुम्हें याद रखेगा, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अति समीप है।

मुत्तफ़क़ अलैह (बुख़ारी व मुस्लिम की) ह़दीस़ क़ुदसी में आया है किः “यदि वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ और जब वह मुझे सभा में याद करता है तो मैं उसे उससे उत्तम फ़रिश्तों की सभा में याद करता हूँ”।

प्रत्येक व्यक्ति पर महानतम व सर्वोच्च अल्लाह जो (भक्तों के) अति निकट है, का कोई न कोई उपहार व नवाज़िश अवश्य है, यद्यपि उसका संबंध किसी रंज व क्षोभ से मुक्ति दिलाने से हो अथवा किसी संकट को दूर करने से हो, या फिर वह किसी हानि को टालने, कोई खतरा रोकने अथवा किसी प्रिय वस्तु को पाने या किसी और वांछित वस्तु को प्राप्त करने से संबंधित हो।

तात्पर्य यह है कि निकट रहने वालों के लिये अल्लाह तआला का द्वार खुला हुआ है, उसका उपहार वितरण हो रहा है, उसकी सख़ावत अद्वितीय व उदारता अनुपम है, कितनी आवश्यकतायें ऐसी हैं जो पूर्ण हो चुकीं, कितनी प्रार्थनायें स्वीकार की जा चुकीं, कितनी बरकतें व भलाइयां नाज़िल हुईं तथा कितनी रह़मतों व दयालुताओं ने अपने दामन में कितनों को समेट लिया!

❒ अभाव दर्शाता वस्त्र ...

जब आपको यह ज्ञात है कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह आप के अति निकट है, वह आपके दिल की बातों को जानता है, आपकी दुआयें सुनता है, आपके ठिकाने से परिचित है तथा आपके दिल के भेद से अवगत है, तो फिर नेकी व सदकर्म करने वाले बन जायें:

﴿إِنَّ رَحْمَتَ ٱللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ ٱلْمُحْسِنِينَ﴾

अनुवादः (वास्तव में अल्लाह की दया सदाचारियों के निकट है)। सूरह आराफ़ः 56।

(अल्लाह तआला का) सामीप्य अपनाने का प्रयास करो, यदि तुम उससे एक बालिश्त समीप होगे तो वह तुम्हारे एक हाथ समीप होगा, हदीस़ -ए- क़ुदसी में आया है किः "यदि कोई मुझ से करीब होने के लिये एक बालिश्त आगे बढ़ता है तो उस से करीब होने क लिये मैं एक हाथ आगे बढ़ता हूँ, यदि कोई मेरी ओर एक हाथ आगे बढ़ता है तो मैं उस की ओर दो हाथ बढ़ता हूँ, यदि कोई मेरी ओर चल कर आता है तो मैं उसकी ओर दौड़ कर आता हूँ"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है, उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं)।

अल्लाह तआला का सामीप्य नफ़्ल से पूर्व फ़र्ज़ (अदा करने) से प्राप्त होता हैः (हदीस --ए- क़ुदसी है किः) "मेरा बंदा जिन-जिन इबादतों व उपासनाओं के द्वारा मेरा सामीप्य प्राप्त करता है, उन में कोई इबादत व उपासना मुझ को उससे अधिक प्रिय नहीं जो मैंने उस पर फ़र्ज़ किया है, तथा मेरा भक्त फ़र्ज़ अदा करने के पश्चात नफ़्ल इबादतें अंजाम दे कर मेरे इतना निकट हो जाता है कि मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूँ"। (बुख़ारी)।

बंदा उबूदियत व बंदगी के दर्जा में जैसे-जैसे पूर्ण व कामिल होता जायेगा, उसी के समान वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के निकट आता जायेगा, वह अल्लाह के लिये जितना अधिक विनम्रता व आजिज़ी अपनायेगा, उसके आगे गिड़गिड़ायेगा एवं अपने रब व प्रिय के समक्ष अपनी नाक व मुख को धूल-धूसरति करेगा, अपने रब से उसका सामीप्य उतना अधिक बढ़ेगा, तथा उसका स्थान और अधिक उच्च होगा, एक स़हीह़ ह़दीस़ में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "बंदा अपने रब के सबसे निकट सज्दा की स्थिति में होता है, अतः (सज्दा में) तुम लोग अधिकाधिक दुआ किया करो"। (मुस्लिम)।

प्रमाणित हुआ कि सज्दा के अंदर (अल्लाह के) आदर का सबसे बड़ा प्रमाण, उबूदियत व बंदगी की सर्वोच्च श्रेणी, विनम्रता व आजिज़ी का सबसे महान रूप, प्रेम का सबसे सुंदर संदेश, ख़ुशूअ, ख़ुज़ूअ व विनम्रता एवं शालीनता का सबसे सुंदर दृश्य तथा अपनी मोहताजी व दरिद्रता प्रकट करने की सबसे उत्तम अदा मौजूद है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के समक्ष तुम्हारे सज्दे जितने (अधिक) होंगे, उसके निकट तुम्हारा दर्जा उसी के समान उच्च होगा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आप ने फ़रमायाः "तुम अधिकाधिक सज्दा किया करो, क्योंकि अल्लाह तआला हरेक सज्दे से तेरा एक दर्जा बुलंद करता एवं एक पाप क्षमा करता है"। (मुस्लिम)।

(दुआ करने से) तुम्हें सदैव रहने वाली नियामत प्राप्त होगीः

﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلۡمُقَرَّبُونَ ١١﴾

अनुवादः (वही समीप किये हुये हैं)। सूरह वाक़िआः 11।

﴿عَيۡنٗا يَشۡرَبُ بِهَا ٱلۡمُقَرَّبُونَ ٢٨﴾

अनुवादः (वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीपवर्ती पीयेंगे)। सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीनः 28।

तुम्हें तुम्हारा रब एवं उसकी ओर तुम्हारी तवज्जो व आकर्षण मुबारक हो!

حَتَّى وَإِن بَدَت السَّماءُ بَعِيدَةً   إِنَّ الَّذِي فَوقَ السَّماءِ قَرِيبُ
فَارفَع يَدَيكَ إِلى الإِلَهِ مُنَاجِيًا   إِنَّ الجُرُوحَ مَعَ الدُّعاءِ تَطِيبُ
مَا ضرَّنا بُعدُ السَّماءِ وَإِن عَلَت   مَا دُمتَ يَا رَبَّ السَّماءِ قَرِيبُ

अनुवादः यद्यपि आकाश दूर प्रतीत हो रहा है, तथापि वह ज़ात जो आकाश के ऊपर है, वह अति निकट है। अतः अपने उपास्य की ओर सरगोशी करते हुये अपने हाथ उठाओ, क्योंकि दुआ से पीड़ा भी ठीक हो जाती है। आसामान की दूरी चाहे आसमान जितना भी बुलंद हो, हमें हानि नहीं पहुँचा सकती, जब तक हे आसमान के रब! तू हमारे निकट है।

ऐ अल्लाह! तू ने फ़रमाया है एवं तेरा फ़रमान सत्य व सच्चा हैः

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌۖ أُجِيبُ دَعۡوَةَ ٱلدَّاعِ إِذَا دَعَانِۖ فَلۡيَسۡتَجِيبُواْ لِي وَلۡيُؤۡمِنُواْ بِي لَعَلَّهُمۡ يَرۡشُدُونَ ١٨٦﴾

अनुवादः (-हे नबी!- जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय ही मैं समीप हूँ, मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ, अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे

आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वो सीधी राह पायें)। सूरह बक़राः 186।

हे अल्लाह! हे निकटवर्ती व प्रार्थनाओं को स्वीकार करने वाले! हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर ले, हमारी दुर्बलता पर दया कर, हमारी चिंता दूर कर दे, सभी प्रकार के मामलों में हमें सर्वोत्तम ख़ात्मा व अंत नसीब फ़रमा, सांसारिक अपमान एवं आख़िरत के अज़ाब व यातना से हमें मुक्ति दे, तथा हमें, हमारे माता-पिता एवं सभी मुसलमानों को क्षमा कर दे, हे प्रार्थनाओं को स्वीकार करने वाले (पालनहार!)।

(58)

(**अल-मुजीब** जल्ल जलालुहु)

سَمِعْنا حَديثًا كَقَطرِ النَّدَى فَجَدَّدَ فِي النَّفسِ مَا جَدَّدَا

فَأَضحَى لِآمالِنَا مُنعِشًا وَأَمسى لِآلامِنَا مُرْقِدَا

अनुवादः हमने बारिश की बूँदों के समान (भली लगने वाली) बात सुनी जिससे हमारे दिलों में तरंग बज उठा, इससे हमारी आशायें पुनर्जीवित एवं दुःख व पीड़ा दूर हो गये।

अता रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "मेरे पास ताVूस रहिमहुल्लाह पधारे और कहने लगेः हे अता! अपनी आवश्यकतायें उस व्यक्ति के पास ले जाने से बचो जो तुम्हें देख कर अपना द्वार बंद कर ले, बल्कि अपनी आवश्यकताओं को ले कर उस ज़ात (अल्लाह) की ओर जाओ जिसका द्वार तुम्हारे लिये क़्यामत तक खुला हुआ है, वह (अल्लाह) चाहता है कि तुम उससे माँगो, और उसने तुम्हारी दुआयें स्वीकार करने का वादा किया है"।

﴿فَٱسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّى قَرِيبٌ مُّجِيبٌ﴾

अनुवादः (अतः उससे क्षमा माँगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ, वास्तव में मेरा पालनहार समीप है, (और दुआयें) स्वीकार करने वाला है)। सूरह हूदः 61।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह प्रार्थनाओं को स्वीकार करने वाला वह रब है जो उससे माँगने वाले को वह चीज़ प्रदान करता है जो वह चाहता है, माँगने वाले की प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है, पीड़ितों की सहायता करता है तथा भयभीतों की अशांति को शांति में परिवर्तित कर देता है, यहाँ तक कि वह ऐसे लोगों की भी सुनता है जो उसका इंकार करते हैं और दिन के एक पहर के लिये (भी) उस पर यक़ीन व विश्वास नहीं रखते, परंतु वह उनकी दुआयें सुनता है एवं उनकी परेशानियों को दूर करता है, यह उस (पवित्र ज़ात) की नवाज़िश व अनुग्रह है, और संभवतः वो लोग (इसके परिणामस्वरूप) ईमान ले आयें। परंतु अधिकतर लोग उस नवाज़िश व अनुग्रह को भुला देते हैं, उस एहसान को भुला देते हैं और उस उपकार का इंकार कर जाते हैं। महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿فَإِذَا رَكِبُوا۟ فِى ٱلْفُلْكِ دَعَوُا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ فَلَمَّا نَجَّىٰهُمْ إِلَى ٱلْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾﴾

अनुवादः (और जब वह नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिए धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं, फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल की ओर तो वो पुनः शिर्क करने लगते हैं)। सूरह अन्कबूतः 65।

❒ दरवाज़े की चौखट पर ...

जब लोगों के समक्ष सारे द्वार बंद होने लगते हैं, धरती अपनी विशालता के बावजूद उसके लिये तंग होने लगती है, उनके दुःख दर्द हद से गुज़रने लगते हैं, स्थितियाँ उनके काबू से बाहर जाने लगती हैं, उन्हें मख़लूक़ों (रचनाओं) के बीच कोई सहारा व आश्रय नहीं मिलता तो वह नैसर्गिक रूप से अल्लाह की शरण खोजने लगते हैं, उसके दरबार का सहारा ढूँढ़ने लगते हैं तथा उसकी चौखट पर आ कर गिर जाते हैं:

﴿ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْـَٔرُونَ﴾

अनुवादः (फिर जब तुम्हें दुःख पहुँचता है तो उसी को पुकारते हो)। सूरह नह़्लः 53।

अल्लाह तआला अपनी सख़ावत, उदारता एवं फ़ज़्ल, एह़सान व उपकार के कारण यह प्रिय रखता है कि बंदा खुशहाली व तंगहाली, समृद्धि व दरिद्रता हरेक परिस्थिति में उसी के समक्ष माँगने के लिये अपने हाथ को उठाये, जो बंदा समृद्धि व खुशहाली के समय अल्लाह तआला को याद रखता है, तो तंगी एवं दरिद्रता के समय अल्लाह तआला भी उसे याद रखता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से स़ह़ीह़ सनद के साथ वर्णित है कि आप ने फ़रमायाः “जिसे यह बात प्रसन्न करे कि आपदा एवं पीड़ा के समय अल्लाह तआला उसकी दुआयें सुने तो उसे चाहिये कि वह खुशहाली व समृद्धि के समय अधिकाधिक दुआ करे”। (इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है, और यह ह़दीस़ ह़सन है)।

इमाम अह़मद बिन ह़ंबल रह़िमहुल्लाह से प्रश्न किया गया किः “हमारे एवं रह़मान के अर्श के मध्य कितनी (दूरी) है? तो उन्होंने उत्तर देते हुये फ़रमायाः सच्चे दिल से निकलने वाली एक सच्ची दुआ (की दूरी मात्र है)”।

❒ एक नस़ीह़त व सदुपदेश ...

मोमिन बंदा दुआ करते समय उसे स्वीकार्य बनाने से रोकने वाली बाधाओं से बचता है, कुछ बाधायें निम्न हैं:

1- सच्चे दिल से अल्लाह की ओर आकर्षित न होना।

2- दुआ में यक़ीन, विश्वास, विनम्रता व रोने गिड़गिड़ाने का न होना।

3- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद न पढ़ना।

4- (दुआ के) जल्दी स्वीकार्य होने के लिये व्याकुलता दिखाना।

5- ह़राम खाना, ह़राम पीना अथवा ह़राम पहनना।

6- अम्र बिल मअरूफ़ एवं नह्य अनिल मुंकर (अर्थातः भलाई व सदकर्म का आदेश देना तथा बुराई व कुकर्म करने से सामर्थ्य भर रोकने) का कार्य अंजाम न देना।

ह़दीस़ में कुछ ऐसे निश्चित समय का उल्लेख हुआ है जिन में दुआ के स्वीकार्य होने की (और समय की तुलना में) अधिक आशा रखी जा सकती है, उनमें से कुछ निम्न हैं:

1- अज़ान एवं एक़ामत के मध्य दुआ करना।

2- रात्रि के तीसरे (अंतिम) पहर में दुआ करना।

3- सज्दा की स्थिति में दुआ करना।

4- जुमा के दिन, क़बूलियत व स्वीकार्य होने वाली घड़ी में।

5- यात्रा की स्थिति में।

6- पीड़ित व अत्याचारित की दुआ।

7- पिता का अपने पुत्र को बद्दुआ देना।

इस प्रकार की और भी स्थितियां एवं दशाएं हैं जिन में की गई दुआ के स्वीकार्य होने की प्रबल संभवान रहती है, परंतु जब भी आप दुआ के लिये हाथ उठायें तो याद रखें कि यह आप पर रब का फ़ज़्ल, करम व दया है कि वह आपको प्रदान करना चाहता है, इस लिये आप अच्छा गुमान रखें, विश्वास के साथ माँगे, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ﴾

अनुवादः (मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा)। सूरह ग़ाफ़िरः 60।

अली बिन अबू त़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं किः “दुःखों व संकटों के अंबार को दुआ के द्वारा टालो”।

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं किः “तुम लोग दुआ करने से अधीर व ऊब नहीं जाना, क्योंकि दुआ करने वाला नाश नहीं हो सकता”।

इब्ने ह़जर रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः “प्रत्येक दुआ करने वाले की दुआ स्वीकार की जाती है, परंतु स्वीकार होने की परिस्थिति भिन्न होती है, चुनाँचे कभी ठीक वैसा ही घटित होता है जैसा उसने दुआ किया था, तो कभी उसके बदले में (कुछ अन्य वस्तु से अनुग्रहित किया जाता है)”।

بِكَ أَستَجِيرُ وَمَن يُجِيرُ سِواكَا   فَأَجِر ضَعِيفًا يَحْتَمِي بِحِمَاكَا

إِنِّي ضَعيفٌ أَستَعِينُ عَلى قُوى   ذَنبِي وَمَعصِيَتِي بِبَعضِ قُوَاكَا

أَذنَبتُ يا رَب وَآذَتنِي ذُنُوبٌ   مَا لهَا مِن غَافِرٍ إلَّاكَا

أَدعُوكَ يا رَبِّي لِتَغفِرَ حَوبَتِي   وَتُعِينُنِي وَتُمِدُّنِي بِهُدَاكَا

فَاقبَل دُعائِي وَاستَجِب لِرَجاوَتِي   مَا خَابَ يَوما مَن دَعا وَرجَاكَا

अनुवादः मैं तेरी ही शरण चाहता हूँ, तेरे सिवा कौन है जो शरण दे सके, तो एक कमज़ोर व दुर्बल (बंदे) को शरण प्रदान जो तेरी शरण चाह रहा है। मैं एक दुर्बल (बंदा) हूँ, अपने पाप व अवज्ञाकारिता की संगीनियों पर तेरी कुछ शक्तियों एवं अनुग्रह का प्रार्थी हूँ। हे मेरे पालनहार! मैंने पाप किया है एवं कुछ ऐसे पापों ने मुझे तक्लीफ पहुँचाई है जिन्हें तेरे सिवा कोई क्षमा करने वाला नहीं है। मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ, हे मेरे पालनहार! कि तू मेरे पापों को क्षमा कर दे एवं अपने मार्गदर्शन के द्वारा मेरी सहायता व मदद फ़रमा। तू मेरी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर ले, एवं मेरी आशाओं को पूर्ण कर, तुझे पुकारने वाला एवं तुझ से आशा रखने वाला कभी असफल व नामुराद नहीं होता।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः “यह बंदा के लिये अनुचित है कि वह (किसी अन्य) बंदे के समक्ष अपने हाथ फैलाये, जब्कि वह अपने रब के पास हर वह चीज़ पा सकता है जिसकी उसे चाहत हो”।

हे अल्लाह! हे दुआओं को स्वीकार करने वाले! तू हमारी दुआयें स्वीकार कर ले, हमारी बेबसी व विवशता पर दया कर तथा हमें एवं हमारे मातृ-पितृ को जहन्नम की आग से मुक्ति प्रदान कर।

(59)

(अल-मजीद जल्ला जलालुहु)

❒ तेरा रब प्रशंसा को प्रिय रखता है ...

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "अल्लाह से बढ़ कर कोई प्रशंसा को प्रिय रखने वाला नहीं है, इसी कारणवश उसने जन्नत का वादा फ़रमाया है"। (मुस्लिम)।

एक दूसरी रिवायत में इस प्रकार वर्णित है किः "अल्लाह तआला से बढ़ कर कोई अपनी प्रशंसा को प्रिय नहीं रखता है, इसीलिये उसने स्वयं अपनी प्रशंसा की है"। (बुख़ारी)।

इमाम बुख़ारी ने अपनी पुस्तक "अल-अदब अल-मुफ़रद" में उल्लेख किया है किः "असवद बिन सरीअ ने फ़रमायाः मैं एक कवि था, मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहाः क्या मैं ऐसी प्रशंसा (से ओत प्रोत पंक्तियां) न सुनाऊँ जिनके द्वारा मैंने अपने रब का स्तुति गान किया है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः निःसंदेह तेरा पालनहार प्रशंसा को प्रिय रखता है, आप ने इस से अधिक कुछ नहीं फ़रमाया"। (यह ह़दीस़ ह़सन है)।

وَمَا بَلَغَ الْمُهدُونَ نَحْوَكَ مِدحَةً وَإِن أَطنَبُوا إِنَّ الَّذِي فِيكَ أَعظَمُ

अनुवादः स्तुति गान करने वाले तेरा (जैसा होना चाहिये वैसा) स्तुति गान नहीं कर सकेंगे, यद्यपि वो अतिश्योक्ति ही से क्यों न काम लें, क्योंकि तेरी शान सभी प्रकार की स्तुति व प्रशंसा से उच्च व बुलंद है।

हमारे द्वारा अल्लाह तआला की महानता का बखान करने से अल्लाह तआला को कोई लाभ नहीं पहुँचता, एवं न (अल्लाह तआला की महानता के बखान में) हमारी कमी व कोताही से अल्लाह तआला पर कोई प्रभाव पड़ता है, अल्लाह तआला अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) के साथ बेनियाज़ है, वह अपनी स़िफ़ात एवं विशेषताओं के आधार पर प्रशंसनीय व स्तुति योग्य है। इस कारण नहीं कि लोग उसकी प्रशंसा एवं उसकी महानता का बखान करते एवं उसकी नावज़िशों एवं अनुग्रहों पर उसका धन्यवाद व शुक्रिया अदा करते हैं।

बल्कि हमारे ऊपर अल्लाह का फ़ज़्ल व करम ही है कि उसने हमारे जीवन के सुधार का आधार उसका शुक्र अदा करने एवं उसकी स्तुति गान करने पर रखा है, ताकि नफ़्स

(आत्मा) को शुद्ध व पवित्र किया जाये, उसे सीधे मार्ग की तौफ़ीक़ व अनुग्रह हासिल हो एवं अपने रब से शांति, अमन व सुकून प्राप्त हो।

निःसंदेह ये शब्द जो मैं आपके लिये लिख रहा हूँ, तथा यह पुस्तक (जिसे आप पढ़ रहे हैं) यह सभीः महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की महानता का बखान व उसकी स्तुति गान ही तो है, जिसकी अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ दी है, दुआ है कि वह इसे हम सभी की ओर से स्वीकार कर ले, और जिस दिन हम उससे मिलने वाले हैं, (उस दिन के लिये वह) इसे संग्रहित कर ले।

لَكَ الحَمدُ وَالنَّعماءُ وَالُملكُ رَبَّنا فلَا شَيْءَ أَعلى مِنكَ مَجدًا وَأَمْجَدُ

अनुवादः हे हमारे पालनहार! सभी प्रकार की प्रशंसायें एवं स्तुति गान तेरे ही लिये हैं, इनाम, उपकार व पुरस्कार तेरी ही ओर से हैं, बादशाहत भी तेरी ही है, ऐसी कोई चीज़ नहीं जो महानता, सम्मान तथा शराफ़त, भद्रता एवं कुलीनता में तुझ से बढ़ कर हो।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّهُۥ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ﴾

अनुवादः (निःसंदेह वह अति प्रशंसित सर्वश्रेष्ठ है)। सूरह हूदः 73।

अरबी भाषा का शब्द मजीद (जो कि अल्लाह तआला का एक महान नाम है), की व्युतपत्ति ‘‘मज्द’’ के यौगिक से हुई है, जिस का अर्थः कामिल व सम्पूर्ण सर्वोच्चता, बुलंदी, तथा व्यापकता एवं वृहद के हैं। चुनाँचे हमारा महानतम व सर्वोच्च रब अति उदार व दानवीर है, अज़मत वाला व महान है, अल्लाह तआला की महानता एवं उसकी शान -ए- किब्रियाई (अभिमान, अहंकार एवं निस्पृहता) से बढ़ कर और किसकी शान हो सकती है?!

अल्लाह तआला की ज़ात बुज़ुर्गी, सर्वोच्चता, किब्रियाई, महिमा, प्रताप एवं वैभव की विशेषताओं से विशेषित है।

हमारे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की हरेक सि़फ़त व विशेषता महान व वैभवशाली है, चुनाँचे वह अलीम (सर्वज्ञ) है अर्थात अपनी सि़फ़त -ए- इल्म (ज्ञान वाली विशेषता) में सम्पूर्ण व मुकम्मल है, रही़म (अति दयालु) है अर्थात उसकी दयालुता सभी वस्तुओं को अपनी छत्र-छाया में लिये हुई है, क़दीर (समर्थ, सक्षम) है अर्थात उसे कोई भी वस्तु बाध्य एवं विवश नहीं कर सकती, ह़लीम (सहनशील) है अर्थात ह़िल्म व सहनशीलता में वह

सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान है, ह़कीम (तत्वज्ञ) है अर्थात वह ह़िकमत एवं तत्वदर्शिता की पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ है, उसकी सभी स़िफ़ात (विशेषतायें) सर्वोच्च श्रेणी की हैं, हम उस की उस जैसी प्रशंसा नहीं कर सकते, जिस प्रकार से उसने स्वयं अपनी प्रशंसा की है।

❒ हर प्रकार की प्रशंसा व स्तुति गान तेरे ही लिये है ...

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपने कमाल, पूर्णता, जलाल एवं प्रताप व सर्वोच्चता के कारण अपनी प्रशंसा की है। ह़दीस़ -ए- क़ुदसी में स़ह़ीह़ सनद के साथ वर्णित है किः "मैं हरेक मामले में महान व ज़बरदस्त हूँ, बड़ा वैभवशाली एवं सामर्थ्य वाला हूँ, बादशाह हूँ, (सबसे) उच्च हूँ, वह अपनी प्रशंसा स्वयं कर रहा है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इमाम अह़मद ने अपनी "मुसनद" में रिवायत किया है)।

हमारे रब की, उसकी अज़मत, महानता, सर्वोच्चता एवं वैभवशालिता पर प्रशंसा की गई हैः

﴿إِنَّهُۥ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ﴾

अनुवादः (निःसंदेह वह अति प्रशंसित सर्वश्रेष्ठ है)। सूरह हूदः 73।

अल्लाह तबारक व तआला अपने भक्तों पर अति उपकारी व एह़सान करने वाला है, वह उन्हें भलाइयों एवं अच्छाइयों से नवाज़ता है, अपने वलियों को यह तौफ़ीक़ देता है कि वह तम्जीद व तक़दीस (प्रशंसा व स्तुति गान) के साथ केवल एक महान व सर्वोच्च अल्लाह की ही इबादत व पूजा करें। ह़दीस़ -ए- क़ुदसी में आया है किः "जब बंदा कहता हैः

﴿مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ۝٤﴾

अनुवादः (बदले के दिन का स्वामी है)। सूरह फ़ातिह़ाः 4, तो अल्लाह तआला फ़रमाता हैः मेरे बंदे ने मेरी बड़ाई व प्रशंसा की"। (मुस्लिम)।

स़ह़ीह़ सनद के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ से सिर उठाते तो यह दुआ पढ़तेः

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ، وَالْأَرْضِ، وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ، أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ

(अर्थातः हे हमारे परवरदिगार! तेरे लिये स्तुति गान व प्रशंसा है, आकाश व धरा के समान एवं इसके पश्चात जो तू चाहे उसके समान, हे प्रशंसा योग्य व स्तुति गान के सर्वाधिक अधिकारी)। (मुस्लिम)।

अम्बिया एवं रुसुल (अलैहिमुस्सलाम) उसी (अल्लाह) की अज़मत, महानता एवं महिमा के भक्त थे, यही कारण है कि स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया किः हमें यह तो ज्ञात है कि हम आप पर सलाम कैसे भेजें, किंतु आप पर दरूद भेजने का क्या ढ़ंग है? (अर्था हम इसके तरीका से अनभिज्ञ हैं) तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें यह दरूद शरीफ़ सिखायाः

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

(अर्थातः हे अल्लाह! मुहम्मद एवं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घर परिवार वालों पर अपनी रहमत व दया अवतरित कर, जैसाकि तू ने इब्राहीम एवं इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के घर परिवार वालों पर अपनी रहमत व दया अवतरित की थी, निःसंदेह तू बड़ा प्रशंसनीय एवं बुज़ुर्गी व सम्मान वाला है)। (इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है, एवं इसी अर्थ की हदीस़ में मुस्लिम में भी मौजूद है)।

❐ सफलता की वादीः

क़ुरआन अल्लाह तआला का कलाम (वाणी) है, तथा यहः

﴿بَلْ هُوَ قُرْءَانٌ مَّجِيدٌ ۝٢١﴾

अनुवादः (बल्कि वह गौरव वाला क़ुरआन है)। सूरह बुरूजः 21।

उच्चता वाला, अज़मत व महानता वाला है, बेहद ख़ैर, बरकत व कल्याण वाला, फ़ज़्ल, करम एवं इनायत वाला तथा सख़ावत एवं उदारता वाला है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने क़ुरआन -ए- मजीद के अंदर अपनी महानता का बखान किया है, इस (क़ुरआन) की सबसे महान आयतें वो हैं जो अल्लाह तआला की स्तुति गान व प्रशंसा से ओत प्रोत एवं उसकी स़िफ़तो व विशेषताओं पर आधारित हैं, उदाहरणस्वरूप सूरह बक़रह में मौजूद आयतुल कुर्सी, यह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की किताब (क़ुरआन) में मौजूद सबसे अज़ीम व महानतम आयत है, इसी प्रकार से सूरह इख़्लास़, जोकि सर्वोत्तम सूरह है, यहाँ तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से स़हीह

सनद से वर्णित है कि आप ने फ़रमायाः "यह सूरह क़ुरआन के एक तिहाई भाग के समान है"। (मुस्लिम)।

एक उत्तम चीज़ जिसके द्वारा बंदा अपने रब की महानता का बखान कर सकता है, वह रात के विभिन्न समय में एवं दिन के अलग-अलग भागों में इसकी तिलवात व पाठ करना, इसे दृढ़ता के साथ थाम लेना, इसमें सोच-विचार करना, इसका ज्ञान अर्जित करना, इसे समझते हुये इस पर ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ, विनम्रता व श्रद्धा के साथ अमल करना। जो लोग अहले क़ुरआन (क़ुरआन को पढ़ने एवं उसके अनुसार कर्म करने वाले होंगे) वह अल्लाह के विशेष लोगों में गिने जायेंगे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला इस किताब के द्वारा कुछ लोगों को उन्नती प्रदान करता है तो कुछ लोगों को अवनति व पस्ती में ढ़केल देता है"। (मुस्लिम)।

नाफेअ बिन ह़ारिस़ ने उमर बिन ख़त़्ताब रज़ियल्लाहु से उस्फ़ान (नामक स्थान) में भेंट किया, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें मक्का का गर्वनर बना रखा था, आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन से प्रश्न कियाः तुम ने घाटी वाले पर किसे अधिकारी बनाया है? उन्होंने कहाः इब्ने अब्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछाः यह इब्ने अब्ज़ा कौन हैं? तो उन्होंने उत्तर दिया किः वह हमारे स्वतंत्र किये हुये दास हैं, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछाः तुमने एक दास को उनका वाली व अधिकारी बना दिया है?! उन्होंने उत्तर दिया किः वह क़ुरआन -ए- करीम के (ह़ाफ़िज़ व) क़ारी हैं तथा उन्हें फ़रायज़ का (विरासत बाँटने संबंधित) ज्ञान भी है, यह सुन कर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः "सुनो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान हैः "अल्लाह तआला इस किताब के द्वारा कुछ लोगों को उन्नती प्रदान करता है तो कुछ लोगों को अवनति व पस्ती में ढ़केल देता है"। (मुस्लिम)।

स्पष्ट रहे कि महानता व बुलंदी उसे ही प्राप्त होगी जो अल्लाह की किताब को थामे रहे एवं उसके आदेशों के अनुसार जीवन यापन करे, जब्कि अपमान व रुस्वाई उसका मुकद्दर होगी जो इससे मुँह मोड़ ले।

एक और चीज़ जिसके द्वारा महान व सर्वोच्च रब की महानता का बखान किया जा सकता है, वह यह है किः अल-ह़म्दुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर, सुब्ह़ानल्लाह एवं ला इलाहा इल्लल्लाह के विर्द व जाप के द्वारा उसकी उत्तम ढ़ंग से प्रशंसा की जाये, जो बंदा इस अमल को लाज़िम पकड़ेगा वह लोक परलोक दोनों स्थान में सफल होगा।

इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने अपनी "स़ह़ीह़" में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुये सुनाः "अल्लाह तआला के कुछ ऐसे फ़रिश्ते हैं जो मार्गों में फिरते रहते हैं एवं अल्लाह का ज़िक्र व जाप करने वालों को ढूँढ़ते रहते हैं, फिर जहाँ वो कुछ ऐसे लोगों को पा लेते हैं जो अल्लाह का ज़िक्र व जाप कर रहे होते हैं तो एक दूसरे को आवाज़ देते हैं कि आओ, हमारा उद्देश्य पूर्ण हो गया, फिर वो प्रथम आसमान तक अपने परों से उनके ऊपर उमड़ते रहते हैं, और समाप्त होने पर अपने रब के पास चले जाते हैं, फिर उनका रब उन से पूछता हैः हालांकि वह अपने बंदों के विषय में ख़ूब जानता है ... कि मेरे बंदे क्या कहते थे? वो कहते हैं किः वो तेरी स्बीह़ पढ़ते थे, तेरी किब्रियाई व बड़ाई का बखान करते थे, तेरी प्रशंसा व स्तुति गान तथा तेरी सर्वोच्चता को बयान कर रहे थे, तत्पश्चात अल्लाह तआला पूछता हैः क्या उन्होंने मुझे देखा है? कहा किः वो उत्तर देते हैं किः नहीं, तेरी क़सम! उन्होंने तुझे नहीं देखा है, इस पर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः उनका उस समय क्या ह़ाल होता जब वो मुझे देखे होते? वो उत्तर देते हैं किः यदि वो तेरा दीदार कर लेते तो और अधिक तेरी इबादत व उपासना करते, सर्वाधिक तेरी बड़ाई बयान करते, सबसे ज़्यादा तेरी तस्बीह़ बयान करते, फिर अल्लाह तआला पूछता हैः वो मुझ से क्या माँगते हैं? फ़रिश्ते कहते हैं किः वो जन्नत माँगते हैं, बयान किया किः अल्लाह तआला पूछता है किः क्या उन्होंने जन्नत देखी है? फ़रिश्ते जवाब देते हैं किः नहीं, वल्लाह ऐ रब! उन्होंने तेरी जन्नत नहीं देखी, कहा किः अल्लाह तआला प्रश्न करता हैः उनकी स्थिति उस समय क्या होती, यदि उन्होंने जन्नत देखी होती? फ़रिश्ते उत्तर देते हैं किः तब तो वो उसके और अधिक अभिलाषी होते एवं सबसे बढ़ कर उसके चाहने वाले होते, फिर अल्लाह तआला पूछता हैः वो लोग किस चीज़ से पनाह माँग रहे थे? फ़रिश्ते उत्तर देते हुये कहते हैं किः जहन्नम से, अल्लाह तआला प्रश्न करता हैः क्या उन्होंने जहन्नम को देखा है? फ़िरश्ते कहते हैं किः नहीं, तेरी क़सम! उन्होंने जहन्नम को नहीं देखा है, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः यदि उन्होंने जहन्नम देखा होता तो उनकी क्या दशा होती? वो कहते हैं किः यदि उन्होंने जहन्नम को देखा होता तो वह उससे बचने (के लिये ऊपाय करने) में सबसे आगे होते, तथा उससे अत्यधिक भय खाते, यह सुन कर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उन की मग़फिरत कर दी एवं उसे क्षमा कर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं किः इस पर उन में से एक फ़रिश्ता कहता हैः उन में अमूक व्यक्ति भी था जो उन ज़िक्र व जाप करने वालों में से नहीं था, बल्कि वह किसी आवश्यकता के तहत उन के बीच आ कर बैठ गया था, (यह सुन कर) अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता हैः ये (ज़िक्र, जाप

व स्मरण करने वाले) वो लोग हैं जिनकी सभा में बैठने वाला कभी निराश व नामुराद नहीं होता"। जब उनकी सभा में बैठने वाला नामुराद व निराश नहीं होता तो उन (ज़िक्र करने वालों) के सौभाग्य एवं सफलता का क्या कहना!

❒ अर्श (सिंहासन):

हमारे रब ने अपने उस अर्श को जिस पर वह मुस्तवी (विराजमान) है, मजीद (अर्थातः महान व सम्माननीय) करार दिया है, चूँकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने लिये केवल सबसे उत्तम, सबसे मज़बूत एवं सबसे पूर्ण वस्तु का ही चयन करता है, अतः यह निश्चित था कि अर्श भी महान व सम्माननीय करार दिया जाये।

لَكَ الحَمدُ وَالنَّعماءُ وَالُملكُ رَبَّنا   لَا شَيْءِ أَعلى مِنك مَجْدًا وَأَمْجَدُ
مَلِيكٌ عَلى عَرشِ السَّماءِ مُهَيمِنٌ   لِعِزَّتِهِ تَعنُو الوُجوهُ وَتَسجُدُ
فَسُبحانَ مَن لَا يَعرِفُ الخَلقُ قَدرَه   وَمَن هُوَ فَوقَ العَرشِ فَردٌ مُوحَّدُ

अनुवादः हे हमारे पालनहार! सभी प्रकार की प्रशंसायें तेरी ही लिये शोभनीय हैं, इनाम, एहसान एवं पुरस्कार तेरी ही ओर से हैं, एवं बादशाहत भी तेरी ही है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो अज़मत, महानता व वैभव एवं प्रताप में तुझ से बढ़ कर व उच्च हो। तू स्वामी व बादशाह है एवं सांसारिक आकाश का निगहबान है, जिसकी शक्ति, बल एवं महानता के समक्ष बड़े बड़े सिर झुके हुये एवं नतमस्तक हैं। पाक व पवित्र है वह ज़ात (व्यक्तित्व) जिसकी क़द्र, स्थान व महानता से मख़लूक़ (रचना) अनभिज्ञ है, जो अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर विराजमान) है, वह (अल्लाह) अकेला व तंहा है।

हे अल्लाह! हम तेरे महान नाम "मजीद (अर्थातः अनुपम शान व वैभव वाले, सम्माननीय)" के वसीला व माध्यम से दुआ करते हैं कि तू हमारी, हमारे माता-पिता एवं सभी मुसलमानों के पापों को माफ़ व क्षमा कर दे।

(60)

(अल-ह़मीद जल्ल जलालुहु)

स़ह़ीह़ बुख़ारी में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार अपने स़हाब्रा रज़ियल्लाहु अन्हुम को नमाज़ पढ़ाई, आपने रुकूअ से सिर उठाया और फ़रमायाः "“समिअल्लाहु लिमन ह़मिदहु (अर्थातः अल्लाह ने प्रशंसा करने वाले की सुन ली)” तो आपके पीछे खड़े एक स़ह़ाबी ने कहाः “रब्बना व लकलह़म्द ह़म्दन कस़ीरन त़ैयिबन मुबारकन फ़ीह (अर्थातः हे हमारे पालनहार! तेरे ही लिये अत्यधिक प्रशंसायें हैं जो पाकीज़ा, पवित्र व बरकत वाली हैं)”, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सलाम फ़ेरा तो पूछा किः अभी-अभी (नमाज़ में) कौन बोल रहा था? उस व्यक्ति ने कहा किः मैं था, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मैंने तीस से अधिक फ़रिश्तों को देखा कि उन में से प्रत्येक उस (वाक्य) को लिखने में प्रतिस्पर्धा कर रहा था कि उसे सर्वप्रथम कौन लिखे गा?”। कैसे वह सर्वप्रथम लिखने के लिये प्रतिस्पर्धा नहीं करते जब्कि अल्लाह तआला को प्रशंसा व स्तुति गान अति प्रिय है?!

لَكَ الحَمدُ حَمدًا نَستَلِذُّ بِهِ ذِكرًا　　وَإِن كُنتُ لَا أُحصِي ثَناءً وَلا شُكْرًا

अनुवादः तेरे ही लिये हर प्रकार की प्रशंसा व स्तुति गान है, जिसके ज़िक्र व जाप से हम आनंदित होते हैं, यह और बात है कि मैं प्रशंसा एवं शुक्र को गिन नहीं सकता।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपने सर्वोच्च ज़ात (व्यक्तित्व) की प्रशंसा इन शब्दों में की हैः ﴿وَهُوَ ٱلْوَلِيُّ ٱلْحَمِيدُ﴾ अनुवादः (और वही संरक्षक सराहनीय है)। सूरह शूराः 28।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी ज़ात (व्यक्तित्व), अस्मा व स़िफ़ात (नाम व विशेषताओं) तथा अपने अफ़आल (कर्मों) में अति प्रशंसनीय है। अल्लाह तआला के समस्त महान नाम सुंदर, सभी विशेषताएं कामिल व पूर्ण तथा सारे अफ़आल (कर्म) ठोस, सुदृढ़ एवं मज़बूत हैं।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी शरीअत बनाने में महा प्रशंसनीय है कि यह शरीअत सबसे पूर्ण एवं समस्त मख़लूक़ों (रचनाओं, सृष्टियों) के लिये सबसे अधिक लाभप्रद है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी वह्दानियत (एकेश्वरवादिता), शरीक व साझी से बेनियाज़ व निस्पृह होने तथा इस मामले में अति प्रशंसा योग्य है कि वह कमज़ोर व दुर्बल नहीं कि उसे किसी हिमायती एवं सहायक की आवश्यकता हो। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿وَقُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ شَرِيكٌ فِى ٱلْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ وَلِىٌّ مِّنَ ٱلذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًۢا ﴿١١١﴾﴾

अनुवादः (तथा कहो कि सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस के कोई संतान नहीं, और न राज्य में उस का कोई साझी है, और न अपमान से बचाने के लिये उसका कोई समर्थक है, और आप उसकी महिमा का गुणगान करें)। सूरह बनी इस्राईलः 111।

हमारे महानतम व सर्वोच्च रब की प्रशंसा प्रत्येक भाषा एवं एवं हर परिस्थिति में की जाती है, सभी लोक वासी उसके स्तुतिगान में लीन हैं, चाहे उसका संबंध निर्जीव से हो अर्थात सजीव से, प्रशंसा व स्तुतिगान का यह सिलसिला उसके कमाल व जलाल (सम्पूर्णता व प्रताप) एवं इनाम, एहसान तथा पुरस्कार पर अनवरत जारी रहता है। महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान है:

﴿تُسَبِّحُ لَهُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ ٱلسَّبْعُ وَٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ۚ وَإِن مِّن شَىْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِۦ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾﴾

अनुवादः (उसकी पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है, और नहीं है कोई चीज़ परंतु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किंतु तुम उनके पवित्रता गान को समझते नहीं हो, वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है)। सूरह बनी इस्राईलः 44।

मानो समस्त वचनों (सैग़ों) एवं रूपों के साथ हर प्रकार की प्रशंसा व स्तुतिगान का अधिकारी केवल हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ही है। यदि मख़लूक़ (रचना) उसकी प्रशंसा न करे तब भी वह अपने फ़ज़्ल, सख़ावत व उदारता एवं नवाज़िश, अनुग्रह व कृपा के कारण हर प्रकार की प्रशंसा के एकमात्र योग्य है। सभी परिस्थितियों में उसके सिवा किसी और की प्रशंसा नहीं की जा सकती।

❑ अपने परवरदिगार के लिये आजिज़ी व विनम्रता अपनायें!

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने हर प्रकार की प्रशंसा का हकदार अपनी ज़ात को करार दिया है, किसी अन्य को नहीं, तथा मानव को स्वयं अपनी प्रशंसा करने से रोका है, अल्लाह तआला का इर्शाद हैः ﴿فَلَا تُزَكُّوٓاْ أَنفُسَكُمۡۖ﴾ अनुवादः (अतः अपने आप में पवित्र न बनो)। सूरह नज्मः 32।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी प्रशंसा स्वयं कर रहा है ताकि वह हमें अपनी मअरिफत एवं पहचान करवाये, हम प्रशंसा एवं स्तुतिगान के द्वारा उस तक पहुँचें, उसकी ओर आकर्षित हों, उसकी माफ़ी व क्षमा के अभिलाषी रहें, उसकी नवाज़िश व अनुग्रह के लिये लालायित रहें, तथा जन्नत में प्रवेश की प्रबल चाहत रखें। यह कैसा (अनोखा व अनुपम) फ़ज़्ल, करम एवं उदारता है कि वह (अल्लाह तआला) तुम्हें नेक कार्यों की तौफ़ीक़ प्रदान करता है तथा फिर उन कार्यों को अंजाम देने पर वह स्वयं तुम्हारी प्रशंसा करता है?!

﴿وَنُودُوٓاْ أَن تِلۡكُمُ ٱلۡجَنَّةُ أُورِثۡتُمُوهَا بِمَا كُنتُمۡ تَعۡمَلُونَ﴾

अनुवादः (उन्हें पुकारा जायेगा कि इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने सत्कर्मों के कारण हुये हो)। सूरह आराफ़ः 43।

तुम्हारा रब जब तुम पर अपना फ़ज़्ल, करम व उदारता प्रकट करना चाहता है तो उस फ़ज़्ल, करम व उदारता को उत्पन्न करता है तत्पश्चात उसे तुम्हारी ओर मंसूब व संबद्ध कर देता है, वह तुम्हें धन-सम्पदा प्रदान करता है, फिर तुम उस धन में से (अल्लाह के मार्ग में) खर्च करते हो, और फिर उसके पश्चात ... महानतम व सर्वोच्च अल्लाह तुम्हारे इस (अल्लाह के मार्ग में) खर्च करने को सराहता है, हालांकि धन तो उसी का दिया हुआ है।

हमारे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की हम पर दया व मेहरबानी ही है कि उसने अपनी प्रशंसा के प्रकार को भी स्पष्ट कर दिया है ताकि बंदा को पता चल सके कि अल्लाह तआला की प्रशंसा व स्तुति गान कैसे किया जाये, चुनाँचे महानतम व सर्वोच्च रब ने फ़रमायाः

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٢﴾

अनुवादः (सभी प्रकार की प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए हैं जो सारे संसार का रब (पालनहार) है)। सूरह फ़ातिहाः 2।

इसके अतिरिक्त फ़रमायाः

﴿ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ ٱلظُّلُمَٰتِ وَٱلنُّورَ﴾

अनुवादः (सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने आकाशों तथा धरती को बनाया तथा अंधेरे एवं उजाला को बनाया)। सूरह अनआमः 1।

❒ सभी प्रकार की प्रशंसायें तेरे ही लिये हैं ...

मोमिनों की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वह खुशहाली व तंगहाली, समृद्धि व दरिद्रता, हरेक परिस्थिति में महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की प्रशंसा व स्तुति गान करते हैं, क्योंकि उन्हें मालूम है कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का हर कार्य उन के लिये ह़िकमत, तत्वदर्शिता एवं भलाई पर आधारित होता है। स़ह़ीह़ सनद के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आपने फ़रमायाः "जब (किसी) बंदे का शिशु मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो अल्लाह तआला अपने फ़रिश्तों से पूछता हैः तुमने मेरे बंदे के पुत्र की रूह़ (आत्मा) क़ब्ज़ कर ली? तो वो कहते हैं किः हाँ, फिर फ़रमाता हैः तुमने उसके जिगर का टुकड़ा ले लिया? वो कहते हैं किः हाँ, तो अल्लाह तआला पूछता हैः मेरे बंदे ने क्या कहा? वो कहते हैं किः उसने तेरी प्रशंसा की एवं "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (अर्थातः हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी के पास पुनः वापस जाना है)" कहा, तो अल्लाह तआला फ़रमाता हैः मेरे बंदे के लिये जन्नत में एक घर बना दो तथा उसका नाम "बैतुल ह़म्द (प्रशंसा घर)" रख दो"। (इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)। यही कारण है कि बंदे का "अल-ह़म्दुलिल्लाह" कहना सबसे उत्तम ज़िक्र व जाप में गिना जाता है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ ٱلشَّمْسِ وَقَبْلَ ٱلْغُرُوبِ﴾

अनुवादः (पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने के पूर्व तथा डूबने के पूर्व)। सूरह क़ाफ़ः 39।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से स़ह़ीह़ सनद के साथ वर्णित है कि आप ने फ़रमायाः "जो व्यक्ति दिन भर में सौ बार "सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिहि (अर्थातः अल्लाह की

पवित्रता का गुणगान करता हूँ एवं उसकी प्रशंसा करता हूँ)'' कहे तो उसके पाप क्षमा कर दिये जाते हैं, यद्यपि वह समुद्र के झाग के समान ही क्यों न हो''। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया गया कि कौन सा कलाम (जाप, वाक्य) सर्वोत्तम है? तो आप ने फ़रमायाः ''जिसे अल्लाह तआला ने अपने फ़रिश्ते एवं बंदे के लिये चुना है, अर्थातः ''सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि''(कहना)। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)। (अल्लाह तआला की) प्रशंसा व स्तुतिगान ज़ुबान, दिल, एवं शारीरिक अंगों द्वारा तीनों प्रकार से हो सकती है।

لَكَ الحَمدُ حَمْدًا طَيِّبًا يَمْلأُ السَّمَا وَأقطارَها والأرضَ وَالبَرَّ وَالبَحرَا

لَكَ الحَمدُ حَمدًا سَرمَدِيًّا مُباركا يَقِلُّ مِدادُ البَحرِ عَن كُنهِهِ حَصرًا

لَكَ الحَمدُ يَا ذَا الكِبرِياءِ وَمَن يَكُن بِحَمدِكَ ذَا شُكْرٍ فَقد أَحرَزَ الشُّكرَا

अनुवादः तेरे ही लिये प्रत्येक पाक व पवित्र स्तुति गान व प्रशंसा है, जो आसमान, उसके किनारे, धरती एवं आर्द्र व शुष्क (सूखा व भीगा) को भर देगा। तेरे ही लिये बरकत (कल्याण) एवं सदा रहने वाली प्रशंसा व स्तुति गान है, जिसकी वास्तविकता बयान करने के लिये समुद्र की रौशनाई भी अपर्याप्त है। हे किब्रियाई व बड़ाई वाले! तेरे ही लिये हर प्रकार की प्रशंसा व स्तुति गान है, जो व्यक्ति तेरी प्रशंसा करने के साथ-साथ तेरा शुक्रिया अदा करने वाला भी बन जाये तो निश्चित उसने शुक्रिया का हक़ अदा कर दिया।

हे अल्लाह! तेरे ही लिये हर प्रकार की प्रशंसा है, (उस प्रकार से) जो तेरे मुख के जलाल (प्रताप, तेज) एवं अज़ीम व महान साम्राज्य की शान के लिये उपयुक्त है।

(61, 62)

(अल-शाकिर, अल-शकूर जल्ल जलालुहु)

इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने अपनी सहीह में रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "एक व्यक्ति ने कुत्ते को देखा जो प्यास के कारण गीली मिट्टी खा रहा था (ताकि प्यास मिट जाये), तो उसने अपना मोज़ा लिया एवं उसमें पानी भर कर कुत्ते को पानी पिलाने लगा, यहाँ तक कि उसने उसे पेट भर कर पानी पिलाया, अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति के उस कार्य की कद्र की तथा उसे जन्नत में प्रवेश दिला दिया"।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) की प्रशंसा करते हुये फ़रमायाः

﴿وَكَانَ ٱللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا﴾

अनुवादः (अल्लाह बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है)। सूरह निसाः 147।

﴿وَٱللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ﴾

अनुवादः (अल्लाह बड़ा गुणग्राही सहनशील है)। सूरह तग़ाबुनः 17।

तात्पर्य यह है कि हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार थोड़ी नेकी व अल्प सदकर्म की भी कद्र करता है, तथा उस पर अत्यधिक बदला से नवाज़ता है, बल्कि बिना हिसाब किताब के उसे कई गुणा सवाब व पुण्य प्रदान करता हैः

﴿مَن جَآءَ بِٱلْحَسَنَةِ فَلَهُۥ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَآءَ بِٱلسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰٓ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ١٦٠﴾

अनुवादः (जो (प्रलय क दिन) एक सत्कर्म ले कर (अल्लाह से) मिलेगा, उसे उस के दस गुणा प्रतिफल मिलेगा, और जो कुकर्म लायेगा तो उस को उसी के बराबर कुफल दिया जायेगा, तथा उस पर अत्याचार नहीं किया जायेगा)। सूरह अनफ़ालः 160।

हमारा महानतम व सर्वोच्च पालनहार बंदे की शुक्र गुज़ारी व धन्यवाद देने का भी आदर करता है तथा उन्हें और अधिक भलाई, इनाम व पुरस्कार से अनुग्रहित करता है,

हालांकि उन्हें धन्यवाद अदा करने योग्य बनाने वाला भी वही (अल्लाह तआला ही) है, तथा वही उन्हें उसका बदला प्रदान करने वाला भी हैः

﴿وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ ٱللَّهِ﴾

अनुवादः (तुम्हें जो भी सुख-सुविधा प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है)। सूरह नह्लः 53।

हमारा महानतम व सर्वोच्च रब अपने बंदे की ऐसे भी कद्र करता है कि वह अपने आम फ़रिश्तों एवं विशिष्ट फ़रिश्तों के मध्य उसका अच्छे अंदाज़ में उल्लेख करता है, वह अपने बंदों के दरम्यान उसके स्थान को उच्च करता है और वह अपने कर्म के आधार पर लोगों के धन्यवाद व शुक्र के योग्य बनता हैः

﴿ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ۝٣﴾

अनुवादः (हे उन की संतति जिन को हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया, वास्तव में वह अति कृतज्ञ भक्त था)। सूरह बनी इस्राईलः 3।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह बहुतेरे छोटे-मोटे पापों को नजरअंदाज व अनदेखा कर देता है, अल्प व मामूली नेक अमल (सदकर्म) को भी स्वीकार करता है तथा उस पर पुण्य प्रदान करता हैः

﴿إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ﴾

अनुवादः (वास्तव में हमारा पालनहार अति क्षमी गुणग्राही है)। सूरह फ़ातिरः 34।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार ढ़ेर सारी नियामतों से नवाज़ता है, परंतु थोड़े से धन्यवाद व शुक्र अदा करने पर ही प्रसन्न हो जाता है, स़ह़ीह़ मुस्लिम में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “निःसंदेह अल्लाह तआला बंदा के इस कर्म से प्रसन्न होता है कि वह खाये तो उसका शुक्र अदा करे अथवा पानी पीये तो उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे”, एवं सुनन अबू दाऊद में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “जिसने प्रातःकाल यह दुआ पढ़ीः

اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنْكَ وَحْدَكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ، وَلَكَ الشُّكْرُ

(अर्थातः हे अल्लाह! सुबह को जो नियामतों भी मेरे पास हैं वो तेरी ही दी हुई हैं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक व साझी नहीं है, तू ही हर प्रकार से प्रशंसा व स्तुतिगान के योग्य है एवं मैं तेरा धन्यवाद एवं शुक्र अदा करने वाला हूँ)" तो उसने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिसने शाम के समय ऐसा कहा तो उसने रात्रि का शुक्र अदा कर दिया"। (यह ह़दीस़ ह़सन है)।

❒ वही नवाज़ता व अनुग्रह करता है एवं वही प्रशंसा भी करता है!

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का (अपने बंदों की) कद्र करने का ढ़ंग बड़ा अनुपम है कि वह बंदे को नवाज़ता है एवं उसे प्रशंसा योग्य कर्म करने की तौफ़ीक़ भी देता है, मानो वही नवाज़िश व अनुग्रह करता है, फिर वही उसका अच्छे ढ़ंग से उल्लेख भी करता है, कहने का तात्पर्य यह है कि सबब एवं मुसब्बब (कारण एवं कारण बनाने वाली परिस्थिति) दोनों उस अल्लाह की ओर से ही मिलते हैं। महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ﴾

अनुवादः (-तथा कहा जायेगाः- यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया)। सूरह दह्र (इंसान): 22।

पाक है वह (अल्लाह) जो हम पर यह उपकार करता है कि हम प्रयास करें, फिर हमें उसकी तौफ़ीक़ व अनुग्रह प्रदान करता है तत्पश्चात वह हमारे प्रयासों की कद्र व आदर भी करता है।

क्या यह फ़ज़्ल, एह़सान व उपकार की प्राकाष्ठा नहीं है?! हर प्रकार की प्रशंसा व स्तुतिगान उसी के लिये हैं।

अनुवादः वह बड़ा कद्रदान है, उनके प्रयासों को कदापि व्यर्थ नहीं जाने देगा, अपितु उसे बिना हिसाब किताब के कई गुणा बढ़ा कर देगा।

❒ उसने अज़ीम व महान बदले से नवाज़ा ...

जब अल्लाह के नबी सुलैमान अलैहिस्सलाम ने इस बात पर क्रोधित हो कर घोड़े के हाथ-पाँव काट डाले कि उसने आप को अल्लाह के ज़िक्र, स्मरण व जाप से ग़ाफ़िल व अचेत कर दिया, अल्लाह की मशीअत व इरादा यह हुआ कि घोड़ा पुनः आप को अल्लाह

के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे, इसलिये बदला में अल्लाह तआला ने तेज़ व तीव्र वायु को आपके अधीन कर दिया।

जब सदाचारी व सदकर्मी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कारावास की कठोरता को बर्दाश्त किया तो उसकी कद्र करते हुये अल्लाह तआला ने आप को बादशाह बना दियाः

﴿وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي ٱلۡأَرۡضِ يَتَبَوَّأُ مِنۡهَا حَيۡثُ يَشَآءُۚ نُصِيبُ بِرَحۡمَتِنَا مَن نَّشَآءُۖ وَلَا نُضِيعُ أَجۡرَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ ٥٦﴾

अनुवादः (और इस प्रकार हम ने यूसुफ़ को उस धरती (देश) में अधिकार दिया, वह उस में जहाँ चाहे रहे, हम अपनी दया जिसे चाहें प्रदान करते हैं, और सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करते)। सूरह यूसुफ़ः 56।

जब (अल्लाह तआला के) रसूलों ने उसके मार्ग में अपने शत्रुओं के मुकाबले में सर्वत्र लुटा दिया और फिर विरोधियों ने उन्हें बदनाम किया, उन्हें गालियां दीं तो अल्लाह तआला ने उन्हें यह प्रतिफल दिया कि स्वयं उसने एवं उसके फ़रिश्तों ने उन पर रह़मत व दया भेजा तथा अपने आसमानों में एवं अपनी मख़लूक़ (रचना) के मध्य उनका उल्लेख अच्छे ढ़ंग से किया, इसके अतिरिक्त उन्हें: ﴿بِخَالِصَةٖ ذِكۡرَى ٱلدَّارِ﴾ अनुवादः ((हमने उन्हें विशेष कर लिया) बड़ी विशेषता परलोक (आख़िरत) की याद क साथ)। सूरह स़ादः 46।

जब स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपने घर बार छोड़े एवं रब की प्रसन्नता की खातिर वहाँ से निकल गये तो बदले में अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी रज़ामंदी प्रदान की एवं उन्हें इस लोक में बादशाहत, विजय एवं प्रभुत्व प्रदान किया।

निःसंदेह अल्लाह तआला बड़ा कद्रदान व आदर करने वाला है, वह कण भर नेकी के कारण बंदे को जहन्नम से निकाल देता है एवं उसकी उस मामूली व तुच्छ नेकी व सदकर्म को भी व्यर्थ नहीं जाने देता। स़ह़ीह़ैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की ह़दीस़ है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "एक व्यक्ति रास्ते में चल रहा था कि उसने वहाँ काँटेदार डाली देखी, उसने उसे उठा लिया तो अल्लाह तआला ने उसका यह कर्म स्वीकार कर लिया एवं उसकी मग़फ़िरत कर दी (उसे क्षमा कर दिया)"। भला उसक व्यक्ति का क्या कहना जो मार्ग से अदृश्य रुकावटों को दूर करे, जो लोगों के मामला को सरल सहज बनाये, उनकी तक्लीफ़ दूर करे, उनके रंज को दूर करे, उनकी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायता करे एवं उन्हें

प्रसन्नता प्रदान करे? यह सब कुछ महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की ओर से है कि उसने आपको लोक परलोक में सफलता प्रदान की।

चूँकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वास्तविक क़द्रदान व आदर करने वाला है, अतः उसके निकट मख़्लूक़ (सृष्टि) में सबसे प्रिय व्यक्ति वह है जो शुक्र व धन्यवाद अदा करने की सिफ़त (विशेषता) से विशेषित हो, इसी प्रकार से सबसे अप्रिय वह व्यक्ति है जो शुक्र व धन्यवाद अदा करने की सिफ़त (विशेषता) से रहित हो एवं उसमें नाशुक्री तथा कृतघ्नता का अवगुण पाया जाये।

इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने फ़रमायाः "नियामतें व अनुग्रह अल्लाह तआला की ओर से आज़माइश व परीक्षा हैं, इनके द्वारा धन्यवाद देने वालों की धन्यवादिता (आभार प्रकट करना) एवं कृघ्न की कृतघ्नता का पता चलता है"।

❒ शुक्र (धन्यवाद देने, आभार प्रकट करने) के दो भेद हैं:

प्रथमः ज़ुबान के द्वारा शुक्र अदा किया जाये, और यह मोहसिन व उपकारी की प्रशंसा करना है।

द्वितीयः शारीरिक अंगों द्वारा शुक्र अदा किया जाये, एवं अल्लाह तआला के आदेशों के अनुपालन में उनका प्रयोग किया जाये, यह अम्बिया अलैहिमुस्सलाम एवं सभी नेक बंदों (सदाचारियों) की आदत रही है।

इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात्री की नमाज़ में इतना लम्बा क़्याम करते कि आपके मुबारक पाँव सूज जाते, तो आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहतीं किः आप खुद को इतना कष्ट क्यों दे रहे हैं, जब्कि अल्लाह तआला ने आपके अगले व पिछले सभी पाप क्षमा कर दिये हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उत्तर देते किः क्या मैं शुक्रगुज़ार (आभार प्रकट करने वाला) बंदा न बनूँ?!

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने दाऊद अलैहिस्सलाम की संतति के शुक्र व आभार प्रकट करने के कारण उनकी प्रशंसा की हैः

﴿ٱعۡمَلُوٓاْ ءَالَ دَاوُۥدَ شُكۡرٗاۚ﴾

अनुवादः (हे दाऊद के परिजनों! कर्म करो कृतज्ञ हो कर)। सूरह सबाः 13।

चूँकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के ही भक्त ऐसे होते हैं जो शुक्र वाली इबादत व उपासना को सही ढ़ंग से अदा कर पाते हैं, इसीलिये उसने भक्तों के लिये अनिवार्य करार दिया है कि वह शुक्र एवं क़बूलियत (स्वीकार्यता) पर उसकी सहायता माँगे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को वसीयत व सदुपदेश दे रहे हैं कि वह हर नमाज़ के पश्चात यह दुआ पढ़ें:

اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

(अर्थातः हे अल्लाह! तू तेरे ज़िक्र (जाप), शुक्र (धन्यवाद) एवं अच्छी इबादत (उपासना) के मामले में मेरी सहायता कर)। (यह हदीस़ स़हीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

एक दूसरी ह़दीस़ में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "हे मेरे रब! तू मुझे अपना अत्यधिक शुक्रगुज़ार (धन्यवाद देने वाला, आभार प्रकट करने वाला) बंदा बना, एवं अच्छे ढ़ंग से (तेरी) इबादत व पूजा करने के मामले में मेरी सहायता कर"। (इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है और ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

आप अल्लाह रब्बुल आलमीन की ओर से आप को दी गई इस ज़मानत पर विचार करें -बशर्ते कि आप आभार प्रकट करने वाले बंदे हों- किः

﴿مَّا يَفۡعَلُ ٱللَّهُ بِعَذَابِكُمۡ إِن شَكَرۡتُمۡ وَءَامَنتُمۡۚ وَكَانَ ٱللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ١٤٧﴾

अनुवादः (अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो, तथा ईमान रखो, और अल्लाह बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है)। सूरह निसाः 147।

शुक्र अदा करने का लाभ आप को ही मिलने वाला है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَمَن يَشۡكُرۡ فَإِنَّمَا يَشۡكُرُ لِنَفۡسِهِۦۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٞ ١٢﴾

अनुवादः (तथा जो (अल्लाह का) आभारी हो वह आभारी है अपने ही (लाभ) के लिये, और जो आभारी न हो तो अल्लाह निःस्वार्थ सराहनीय है)। सूरह लुक़्मानः 12।

जो व्यक्ति और अधिक नियामत व इनाम की चाहत रखता है तो उसे (अपनी उपलब्ध नियामतों पर, अल्लाह का) शुक्र अदा करना चाहियेः

﴿وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ﴾

अनुवादः (तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोषणा कर दी कि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूँगा)। सूरह इब्राहीमः 7।

अल्लाह तआला कितना दयालु व कृपालु है!

अनुग्रह एवं नियामतों के मामले में दूसरों से अपनी तुलना करने से बचो, क्योंकि यह कृत्य तुम्हें रंज एवं क्षोभ से भर देगा, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस कथन का अनुपालन करोः

﴿فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ﴾

अनुवादः (जो कुछ हमने तुमको प्रदान किया है उसे लो, एवं आभार प्रकट करो)। सूरह लुक़मानः 14।

❒ दिलों की कुंजीः

जो व्यक्ति महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का आभार प्रकट करता है, वह उनको भी धन्यवाद देता है जिनके हाथों पर अल्लाह तआला नियामतों को प्रकट करता एवं उन्हें उन नियामतों का माध्यम बनाता है, एवं उन में सबसे शीर्ष पर मातृ-पितृ हैं:

﴿أَنِ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَيَّ الْمَصِيرُ﴾

अनुवादः (कि तू मुझे एवं अपने माता-पिता को धन्यवाद दे, (तुम सभी को) मेरी ही ओर लौट कर आना है)। सूरह लुक़मानः 14।

“मुसनद अह़मद” में वर्णित है किः “जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वह अल्लाह तआला का भी शुक्र अदा नहीं करता”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

تبَارَكَ مَن شكرَ الوَرَى عَنهُ يَقصُرُ   لِكَونِ أَيادِي جُودِهِ لَيس تُحْصَرُ

وَ شَاكِرُهَا يَحْتاجُ شُكْرًا لِشُكرِهَا   كَذلِكَ شُكْرُ الشُّكرِ يَحْتَاجُ يُشكَرُ

فَفِي كُلِّ شُكْرٍ نِعمةٌ بَعدَ نِعمةٍ   بِغَيرِ ثَناءٍ دُونَهَا الشُّكرُ يَصغُرُ

فَمَن رامَ يَقضِي حَقَّ وَاجبِ شُكْرِهَا   تَحَمَّلَ ضِمنَ الشُّكرِ مَا هُوَ أَكبَرُ

अनुवादः बरकत वाली व कल्याणकारी है वह ज़ात जिसके लिये मख़लूक़ (सृष्टि) का शुक्रिया व धन्यवाद अल्प व तुच्छ है, क्योंकि उसकी सख़ावत व उदारता के असंख्य उदाहरण बिखरे पड़े हैं, उनका शुक्र अदा करने वाला उनके शुक्र के लिये शुक्र का मोहताज है, इसी प्रकार से शुक्रिया अदा करने वाले का शुक्र भी उसके शुक्र का मोहताज है। मानो हरेक शुक्र के अंदर नियामतों व अनुग्रहों का असीमित सिलसिला है जिनके समक्ष शुक्र छोटी चीज़ है। चुनाँचे जो व्यक्ति उन नियामतों के शुक्र का अनिवार्य ह़क़ अदा करना चाहता हो, उसे शुक्र अदा करने के लिये शुक्र से भी बड़ी जिम्मावारी का बोझ उठाना पड़ेगा।

हे पालनहार! तू हमें (तेरा) शुक्र, धन्यवाद एवं आभार प्रकट करने वालों में शामिल फ़रमा।

(63, 64)

(अल-अकरम, अल-करीम जल्ल जलालुहु)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "मैं अहले जन्नत (स्वर्ग वासियों) में से सबसे अंत में जाने वाले एवं अहले जहन्नम (नरक वासियों) में से सबसे अंत में निकलने वाले को जानता हूँ, वह एक व्यक्ति है जिसे क़यामत के दिन लाया जायेगा तथा कहा जायेगाः इसके समक्ष इसके छोटे पाप पेश करो तथा इसके महा पाप को अभी उठा रखो, तो उसके छोटे पाप उसके सामने लाये जायेंगे और कहा जायेगाः अमूक अमूक दिन तू ने अमूक अमूक कृत्य किया था तथा अमूक अमूक दिन तू ने अमूक अमूक कृत्य किया था? वह (अपने पापों को स्वीकारते हुये) कहेगा किः हाँ, वह इंकार नहीं कर सकेगा, तथा उसे भय होगा कि कहीं उसके महा पाप न उसके समक्ष पेश किये जायें। आदेश होगा किः हमने तेरे हर पाप के बदले तुझे एक नेकी दी, वह कहेगाः हे मेरे रब! मैंने और भी (पाप वाले) कर्म किये हैं, जिन्हें यहाँ नहीं देख रहा हूँ"।

ह़दीस़ के रावी (वाचक) कहते हैं किः मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हंसते हुये देखा यहाँ तक कि आप की दाढ़ें खिल गईं। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

अल्लाह तआला कितना करीम, सख़ी व दाता है! अल्लाह कितना ह़लीम व सहनशील है! अल्लाह तआला कितना अज़ीम, महान, बरतर व उच्च है!

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلۡإِنسَٰنُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ ٱلۡكَرِيمِ ٦﴾

अनुवादः (हे मानव! तुझे अपने रब्ब -ए- करीम (दानी) से किस चीज़ ने बहकाया?) सूरह इनफ़ित़ारः 6।

﴿وَمَن شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشۡكُرُ لِنَفۡسِهِۦۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيّٞ كَرِيمٞ﴾

अनुवादः (और जो कृतज्ञ होता है वह अपने लाभ के लिये होता है, तथा जो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा रब निस्पृह महान है)। सूरह नम्लः 40।

अरबी भाषा का शब्द "करम": ऐसा समग्र व व्यापक शब्द है जो सभी प्रकार की प्रशंसा एवं भलाईयों व ख़ूबियों को शामिल है, इससे अभिप्रायः केवल नवाज़िश व अनुग्रह

नहीं है, अपितु इसके अंदर नवाज़ने व प्रदान करने के सभी अर्थ निहित हैं, इसी लिये इस महान नाम के अर्थ में ज्ञानियों के अनेक कथन हैं, तथा वो सभी अर्थ दुरुस्त, सच एवं सही हैं।

हमारा करीम, दाता व सख़ी परवरदिगार अत्यधिक ख़ैर व भलाई तथा नवाज़िश एवं अनुग्रह प्रदान करने वाला है, वह सदा ख़ैर, भलाई व कल्याण से अनुग्रहित करता है, उसकी कद्र व प्रतिष्ठा बड़ी महान एवं शान निराली है, वह सभी प्रकार के त्रुटि, दोष एवं कमियों से पाक व पवित्र है, वह इनाम, उपकार व पुरस्कार से नवाज़ने वाला है, जो बिना किसी बदला एवं बिना किसी कारण के अनुग्रह करता रहता है, ज़रूरतमंदों को भी नवाज़ता है तथा जिसे ज़रूरत नहीं उसे भी देता है, जब वादा करता है तो उसे पूरा करता है, हर छोटी-बड़ी आवश्यकतायें उसी से माँगी जाती हैं, जो उसकी शरण लेता है वह नष्ट नहीं होता, वह पापों की अनदेखी तथा गुनाहों को क्षमा करता है, बल्कि (कभी-कभी) गुनाहों को नेकियों में बदल देता है, हमारे माँगने के पूर्व ही हमें अनुग्रहित कर देता है।

उसने हमें कान, आँख, दिल, अंग-प्रत्यंग, शक्ति व बल, तथा आंतरिक व बाह्य (अनेक प्रकार की) योग्यताओं से नवाज़ा, जिन्हें हम गिन भी नहीं सकतेः

﴿وَإِن تَعُدُّواْ نِعۡمَتَ ٱللَّهِ لَا تُحۡصُوهَآۗ إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لَظَلُومٞ كَفَّارٞ﴾

अनुवादः (और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते, वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है)। सूरह इब्राहीमः 34।

अल्लाह तआला ने हमें बिना माँगे एवं माँगने के पूर्व ही उन नियामतों से अनुग्रहित किया, और यह केवल उसकी सख़ावत, उदारता, एह़सान एवं उपकार के आधार पर है, चुनाँचे वह नवाज़ता भी है तथा सराहता भी है।

हमारा करीम, सख़ी, उदार व दाता परवरदिगारः वह है जिसने हर चीज़ का अनुमान लगाया एवं क्षमा किया, वह ऐसा है जो अपने वादा को पूरा करता है, उसने मोमिनों से यह वादा किया है कि उन्हें लोक परलोक में विभिन्न प्रकार के फ़ज़्ल, एह़सान, अनुकंपा एवं उपकार, भलाई व कल्याण, इनाम व पुरस्कार तथा उपहार व नवाज़िश से अनुग्रहित करेगा।

बल्कि अल्लाह तआला की सख़ावत व उदारता (इतनी) है किः उसने अपने गुनाहगार बंदों के अज़ाब को अपनी मशीअत पर रोक रखा है, यदि चाहे तो उन्हें दण्ड दे और चाहे तो उन्हें क्षमा कर दे।

हमारा परवरदिगार वह है जो किसी माँगने वाले को (ख़ाली हाथ) नहीं लौटाता ... “वह लज्जावान एवं उदार है”।

अल्लाह तआला नवाज़ता भी है तथा सराहता भी हैः

चुनाँचे वह ईमान से नवाज़ता है, तत्पश्चात उसको सराहता एवं उसकी प्रशंसा करता हैः

﴿وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَهْدِى مَن يَشَآءُ ۗ وَمَا تُنفِقُوا۟ مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ٱبْتِغَآءَ وَجْهِ ٱللَّهِ ۚ وَمَا تُنفِقُوا۟ مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ﴾

अनुवादः (परंतु अल्लाह जिसे चाहे सीधी डगर पर लगा देता है, तथा तुम जो भी दान करते हो तो अपने लाभ के लिये करते हो एवं तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही देते हो, और तुम जो भी दान दोगे, तुम्हें उसका भरपूर प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा, एवं तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा)। सूरह बक़रहः 272।

जुनैद रह़िमहुल्लाह ने एक व्यक्ति को इस आयत (श्लोक) का पाठ करते हुये सुनाः

﴿إِنَّا وَجَدْنَٰهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ﴾

अनुवादः (निःसंदेह हमने उन को धैर्य रखने वाला पाया था, वह मेरे अच्छे भक्त थे, निश्चय ही वह अपने रब की ओर पलटने वाले थे)। सूरह स़ादः 44।

तो कहाः “सुब्ह़ानल्लाह! अल्लाह ही ने अनुग्रहित किया तथा उसी ने प्रशंसा भी की”, अर्थातः अल्लाह तआला ने उन्हें स़ब्र व धैर्य से नवाज़ा, फिर उस पर उनकी प्रशंसा कर रहा है।

إلى الله أُهدِي الحمدَ والشكرَ   لَهُ الحَمْدُ مولانا عليه المعوَّلُ
وأَشْهَدُ أن اللهَ لا ربَ غيرَه   كريمٌ رحيمٌ يُرْتَجى وَيُؤَمَّل

अनुवादः अल्लाह ही की सेवा में हर प्रकार की प्रशंसा व स्तुतिगान, शुक्र व आभार एवं कृतज्ञता व धन्यवाद का उपहार भेंट करता हूँ, उसी के लिये सभी प्रकार की प्रशंसायें हैं, वही हमारा स्वामी है तथा उसी पर हमारा एतमाद व भरोसा है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह

के सिवा कोई पालनहार नहीं, वह सख़ी व दाता, एवं दयालु व कृपालु है, उसी से (हर चीज़ की) आशा व अभिलाषा रखी जाती है।

सख़ावत व दानवीरता उसकी विशेषताओं में से है, उदारता व दयालुता उसकी विशिष्ट पहचान है, प्रदान करना एवं अनुग्रहित करना उसके महान उपहारों में से है, तो भला उससे बढ़ कर सख़ी और दाता कौन हो सकता है?!

❒ निःसंदेह वह दानवीर, दयालु व उदार हैः

मख़लूक़ात (मानव) उसकी अवज्ञा करती हैं, और वह (अल्लाह) उनकी निगरानी करता है, उनके बिस्तरों पर (और उन के घरों में) उनकी ऐसी सुरक्षा करता है कि मानो उन्होंने उसकी अवज्ञा की ही न हो, वह उनकी ऐसी देख-भाल करता है कि मानो उन्होंने कोई पाप किया ही नहीं है, वह पापी एवं कुकर्मी को भी अपनी कृपा व अनुग्रह से नवाज़ता है।

कौन है जिसने उससे दुआ की हो और उसने स्वीकार न किया हो? कौन है जिसने उससे माँगा हो और उसने दिया न हो? कौन है जिसने उसके द्वार को खटखटाया हो और उसने दुत्कार दिया हो?

वही फ़ज़्ल व एहसान तथा उपकार का स्वामी है एवं उसी से हर प्रकार का फ़ज़्ल व एहसान तथा उपकार प्राप्त होता है, वह दानवीर व दयालु है एवं उसी से हर प्रकार की दानवीरता व दयालुता प्राप्त होती है, वह करीम, अनुग्रही व दाता है तथा उसी से हर प्रकार का करम, अनुग्रह एवं सख़ावत प्राप्त होती है।

❒ वह शुक्र व धन्यवाद अदा किये जाने से बेनियाज़ व निस्पृह हैः

हमारा महानतम व सर्वोच्च पालनहार हमारे धन्यवाद व शुक्र अदा करने से बेनियाज़ है, उसे शुक्र का कोई लाभ नहीं मिलता, और न ही नाशुक्री व कृतघ्नता करने वालों की नाशुक्री व कृतघ्नता उसे हानि पहुँचाती है, इसके बावजूद वह करीम, दाता व दयालु है कि (नाशुक्री व कृतघ्नता) पर शीघ्र ही दण्ड नहीं देता।

अनुवादः (तथा जो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा रब निस्पृह महान है)। सूरह नम्लः 40।

उस महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की निस्पृहता, बेनियाज़ी व उदारता की पराकाष्ठा है किः उसने बंदों को अपनी इबादत व पूजा के लिये उत्पन्न किया एवं उन सभों की आजीविका की जिम्मेवारी ली, चाहे वो मोमिन हों अथवा काफिर, मानव हों या दानवः

﴿وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝٥٦ مَآ أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَآ أُرِيدُ أَن يُطْعِمُونِ ۝٥٧ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلرَّزَّاقُ ذُو ٱلْقُوَّةِ ٱلْمَتِينُ ۝٥٨﴾

अनुवादः (मैंने जिन्नातों एवं इंसानों को केवल इसी लिए पैदा किया है कि वह सिर्फ मेरी ही पूजा करें। मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वो मुझे खिलायें। अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता, शक्तिशाली बलवान है)। सूरह ज़ारियातः 56-58।

❒ वह आशाओं व तमन्नाओं से बढ़ कर नवाज़ता हैः

उसकी शान की महानता देखिये किः हमारी माँगें एवं दुआएं उसके लिये बड़ी व बोझल नहीं होतीं, चाहे जितना भी ज़्यादा एवं अधिक क्यों न हों, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ही़ह़ ह़दीस़ है कि आपने फ़रमायाः

“तुम में से जब कोई दुआ करे तो इस प्रकार से न कहे कि, हे अल्लाह! यदि तू चाहे तो मुझे क्षमा कर दे, बल्कि यक़ीन व विश्वास के साथ दुआ करे और अपनी प्रबल इच्छा प्रकट करे, क्योंकि अल्लाह तआला जो कुछ भी प्रदान करता है, वह उस के लिये बड़ी बात नहीं”। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

बल्कि यह उस महानतम व सर्वोच्च रब की सख़ावत व उदारता ही है किः उस महानतम व सर्वोच्च (अल्लाह) ने दुआ को अपने निकट सबसे सम्माननीय इबादत व उपासना करार दिया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आपने फ़रमायाः “अल्लाह तआला के निकट दुआ से सम्माननीय कोई चीज़ नहीं”। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है)।

बल्कि आप विचार करें कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की उदारता व नवाज़िश कितनी महान है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं किः “निःसंदेह अल्लाह तआला उदार एवं लज्जावान है, उसे इस बात से लज्जा आती है कि जब कोई आदमी उसके समक्ष हाथ फैलाये तो वह उसके दोनों हाथों को ख़ाली व नामुराद लौटा दे”। (यह ह़दीस़ स़ही़ह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

उसकी सख़ावत व उदारता सदैव रहने वाली है, यह उस समय तक अनवरत जारी रहेगी जब आप उससे भेंट करेंगे, आप उस महान एवं उच्च कोटी के उपहार व भेंट के विषय में सोचें जो आप को क़्यामत के दिन पेश की जायेगी, यदि आप मोमिन होंगे तोः

﴿أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ حَقّٗاۚ لَّهُمۡ دَرَجَٰتٌ عِندَ رَبِّهِمۡ وَمَغۡفِرَةٞ وَرِزۡقٞ كَرِيمٞ ٤﴾

अनुवादः (वही सच्चे ईमान वाले हैं, उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास (उच्च) श्रेणियाँ तथा क्षमा एवं उत्तम जीविका है)। सूरह अनफ़ालः 4।

बल्कि अल्लाह तआला इच्छा व आशा से बढ़ कर अनुग्रहित करेगा, मुत्तफ़क़ अलैह (बुख़ारी व मुस्लिम की) ह़दीस़ में आया है किः "मैंने अपने नेक व सदाचारी भक्तों के लिये वो चीज़ें तैयार कर रखी हैं, जिन्हें न किसी आँख ने देखा, न कान ने सुना एवं न कभी किसी मानव मस्तिष्क ने उसकी कल्पना की होगी", इन सबसे बढ़ कर यह किः अल्लाह तआला के महा सम्माननीय व आदरणीय मुख देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

﴿وُجُوهٞ يَوۡمَئِذٖ نَّاضِرَةٌ ٢٢ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٞ ٢٣﴾

अनुवादः (बहुतेरे मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे। अपने रब की ओर देख रहे होंगे)। सूरह क़ियामहः 22-23।

हे अल्लाह! सभी दानवीरों से बढ़ कर दानवीर! हमें उन सौभाग्यशाली लोगें में शामिल कर दे।

❒ मीज़ान (मापदंड, तुला, तराज़ू):

इनाम, पुरस्कार व आदर तथा अपमान व तिरस्कार का मापदंड क़्यामत के दिन तक़्वा (अल्लाह का भय) होगाः

﴿إِنَّ أَكۡرَمَكُمۡ عِندَ ٱللَّهِ أَتۡقَىٰكُمۡۚ﴾

अनुवादः (वास्तव में तुम में से अल्लाह के समीप सबसे अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सबसे अधिक डरता हो)। सूरह हुजुरातः 13।

उस दिन काफ़िरों का कोई सम्मान नहीं होगा, बल्कि उन्हें अपमान व तिरस्कार का सामना होगाः

﴿وَمَن يُهِنِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِن مُّكۡرِمٍۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَفۡعَلُ مَا يَشَآءُ ۩﴾

अनुवादः (और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे, उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं है, निस्संदेह अल्लाह वही करता है जो वह चाहता है)। सूरह हजः 18।

संसार के अंदर लोगों के जो मापदंड व मानक हैं, उनका कोई महत्व नहीं होगा, जिनका उल्लेख अल्लाह तआला ने अपने इस फ़रमान में किया हैः

﴿فَأَمَّا ٱلۡإِنسَٰنُ إِذَا مَا ٱبۡتَلَىٰهُ رَبُّهُۥ فَأَكۡرَمَهُۥ وَنَعَّمَهُۥ فَيَقُولُ رَبِّيٓ أَكۡرَمَنِ ۝١٥ وَأَمَّآ إِذَا مَا ٱبۡتَلَىٰهُ فَقَدَرَ عَلَيۡهِ رِزۡقَهُۥ فَيَقُولُ رَبِّيٓ أَهَٰنَنِ ۝١٦﴾

अनुवादः (परंतु जब इंसान की उसका पालनहार परीक्षा लेता है और उसे सम्मान और धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया। परंतु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया)। सूरह फ़ज्रः 15-16।

अल्लामा इब्नुल जौज़ी रहिमहुल्लाह कहते हैं किः “समान्य लोगों पर इब्लीस का एक फरेब व अस्त्र यह भी है किः जब पापों पर उन्हें टोका जाता है तो वो कहते हैं किः हमारा पालनहार, करीम, उदार व दाता है एवं (उस की) मग़फ़िरत व क्षमा बड़ी विशाल है!”।

❒ नसीहत व सदुपदेश ...

जिस का दिल क़ुरआन से जुड़ा हुआ हो, उसके लिये लोक परलोक की शुभ सूचना है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّهُۥ لَقُرۡءَانٞ كَرِيمٞ ۝٧٧﴾

अनुवादः (वास्तव में यह आदरणीय क़ुरआन है)। सूरह वाक़िआः 77।

अर्थातः अत्यधिक ख़ैर, भलाई व अच्छाई वाला, बहुमूल्य ज्ञान व सूचनाओं का भंडार, अपने ह़ाफ़िज़ (कंठस्थ करने वाले) को सम्मान एवं क़ारी (पाठ करने वाले) को अज़मत व महान बनाने वाला है।

(अल्लाह) पाक महानतम व सर्वोच्च व दाता, डूबने वाले को मुक्ति देता, गुमशुदा को वापस लौटाता, पीड़ितों की पीड़ा को हरता, अत्याचारित को विजय व प्रभुत्व प्रदान करता, कुमार्ग को मार्गदर्शन देता, निर्धन को धनवान बनाता, रोगी को निरोग करता, व्याकुलों की व्याकुलता को दूर करता और यह पसंद करता है कि आप उसे उसके महान व प्यारे नाम से पुकारें व प्रार्थना करें, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम संकट के समय यह दुआ पढ़ा करते थेः

لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلا اللَّهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ وَالْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

अनुवादः अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं जो महान एवं ह़लीम (सहनशील) है, अल्लाह के अलावा कोई सत्य उपास्य नहीं जो महान सिंहासन का स्वामी है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा आराध्य नहीं जो आसमानों का रब एवं ज़मीन का रब तथा महान व उदार सिंहासन का रब है। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)।

इब्ने रजब रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "जो व्यक्ति अल्लाह के बंदों के संग सख़ावत एवं उदारता का रवैया अपनाता है, तो अल्लाह तआला भी उस पर अपनी सख़ावत व उदारता के द्वार खोल देता है, जैसा काम होता है बदला भी उसी के समान मिलता है"।

أَغيبُ وذُو اللَّطائِفِ لا يَغِيْبُ ... وأرجُوهُ رجاءً لَا يَخِيْبُ
وأسألُه السَّلامةَ مِن زَمانٍ فانقلبوا ... بُلِيْتُ بِه نَوائِبُه تُشِيْبُ
وأُنزِلُ حَاجَتِي فِي كُلِّ حَالٍ ... إلى مَنْ تَطْمَئِنُّ بِه الْقُلُوْبُ
ومَن لِي غيرُ بابِ اللهِ بابٌ ... ولا مَولى سِواهُ ولا حَبِيْبُ
كريمٌ مُنعِمٌ بَرٌّ لَطِيْفٌ ... جَمِيْلُ السِترِ للدَّاعِي مُجِيْبُ
فَيَا مَلِكَ الْمُلوكِ أَقِل عِثَارِي ... فَإِنِّي عَنك أَنأَتْنِي الذُّنُوبُ
وأَمْرَضَنِي الهَوَى لِهَوانِ حَظِّي ... ولكِن لَيْسَ غَيرُك لِي طَبِيْبُ

अनुवादः मैं ग़ायब व अनुपस्थित हो जाता हूँ, परंतु लुत्फ़, दया व एह़सान वाला (अल्लाह) कभी ग़ायब व अनुपस्थित नहीं होता, मैं उससे ऐसी आशा रखता हूँ जो कभी नामुराद नहीं होती। मैं इस युग (की दुष्टता) से उस का कुशल-क्षेम व सलामती चाहता हूँ जिसका मैं भुक्तभोगी हूँ, उसके दुःख व पीड़ा (मानव को) बूढ़ा कर देते हैं। मैं प्रत्येक परिस्थिति में अपनी आवश्यकतायें उसी की सेवा में पेश करता हूँ जिससे हृदयों को शांति प्राप्त होती है। अल्लाह के दरबार के सिवा मेरे पास कोई अन्य दरबार नहीं, और न ही उसके

सिवा मेरा कोई स्वामी व प्रेमी है। वह करीम, उदार व दाता, अनुग्रह व इनाम करने वाला, नवाज़ने वाला एवं दयालु है, सुंदर ढ़ंग से (गुनाहों एवं पापों पर पर्दा) डालने वाला है, याचकों की याचना को स्वीकार करता है। तो हे बादशाहों के (महा) बादशाह! मेरे पापों को क्षमा व अनदेखा कर दे, क्योंकि पापों ने मुझे तुम से दूर कर दिया है। मेरा दुर्भाग्य व अभागापन है कि मानवी इच्छाओं ने मुझे रोगी बना दिया है, किंतु तेरे सिवा मेरा कोई चिकित्सक भी नहीं है।

हे अल्लाह! हे करीम, उदार व दाता! हम पर अपनी जन्नत, मग़फ़िरत (क्षमा) एवं रज़ा व प्रसन्नता की बरखा बरसा।

(65)

(अल-मुक़ीत जल्ल जलालुहु)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आपने फ़रमायाः “हे आदम के संतान! (हर कार्य से फुर्सत पा कर) मेरी इबादत व उपासना में व्यस्त हो जा, मैं तेरे दिल को बेनियाज़ कर दूँगा और तुझे रिज़्क़ व आजीविका से मालामाल कर दूँगा। हे आदम के संतान! मुझसे दूर मत भाग अन्यथा मैं तेरे हृदय को दरिद्रता से भर दूँगा और तुझे सांसारिक मामलों में व्यस्त कर दूँगा”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

स़ह़ीह़ ह़दीस़ है किः “अल्लाह तआला का हाथ भरा हुआ है उसे दिन-रात की बख़शिश व दान भी कम नहीं करती, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः क्या तुम्हें पता है कि जब उसने आसमान व ज़मीन उत्पन्न किये हैं उसने कितना ख़र्च (व्यय) किया है? उस ने भी उस में कोई कमी नहीं पैदा की जो उसके हाथ में है”। (इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है, तथा उपरोक्त शब्द उसी के हैं, तथा मुस्लिम ने भी इसे रिवायत किया है)।

आकाश व धरा उसी पाक, पवित्र महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के कारण स्थिर हैं, लोक परलोक के सभी मामले उसी से दुरुस्त व ठीक होते हैं, समस्त आर्द्र व शुष्क (सूखा व भीगा) उसके समक्ष नतमस्तक हैं।

बादशाहत की कुंजियाँ उसी के हाथ में हैं, सभी वस्तुओं का अनुमान उसी के पास है, समस्त मामलों (कोष) की कुंजियाँ उसी के स्वामित्व में हैं, तमाम बंदों को उसी की ओर लौट कर जाना है, उसी के लिये हर प्रकार की इज़्ज़त, बादशाहत व सम्मान है, वह जिसे नवाज़ दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और वह जिस चीज़ से वंचित कर दे, उससे कोई नवाज़ने वाला नहीं।

तो क्या सख़ी व दाता, महा शक्तिशाली व बलशाली, रह़ीम, अति दयालु व कृपालु एवं हर चीज़ में समर्थ व सक्षम (पालनहार) इस बात से विवश है कि आप के लिये रोटी, या खाद्यान्न, अथवा पीने की वस्तुएं न उपलब्ध करा सके, ताकि आप जीवित रहें?!

हमारे लिये कितनी प्रसन्नता व सौभाग्य की बात है कि हम अल्लाह के सुंदर नामों में से एक महान नाम (अल-मुक़ीत, अर्थातः सक्षम, समर्थ एवं संरक्षक) की शीतल छाया में (सोच-विचार करते हुये) कुछ पल बितायें।

﴿مَّن يَشۡفَعۡ شَفَٰعَةً حَسَنَةٗ يَكُن لَّهُۥ نَصِيبٞ مِّنۡهَاۖ وَمَن يَشۡفَعۡ شَفَٰعَةٗ سَيِّئَةٗ يَكُن لَّهُۥ كِفۡلٞ مِّنۡهَاۗ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ مُّقِيتٗا ٨٥﴾

अनुवादः (जो अच्छी अनुशंसा (सिफ़ारिश) करेगा उसे उस का अंश (प्रतिफल) मिलेगा, तथा जो बुरी अनुशंसा (सिफ़ारिश) करेगा तो उसे भी उसका अंश (कुफल) मिलेगा, और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है)। सूरह निसाः 85।

अल-मुक़ीतः का अर्थ हैः क़ुदरत रखने वाला, सक्षम व समर्थ, जिसने समस्त खाद्य पदार्थों को उत्पन्न किया।

अल-मुक़ीतः का अर्थ हैः संरक्षक, जो प्रत्येक वस्तु को उसकी आवश्यकतानुसार सुरक्षा प्रदान करता है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो हर मख़लूक़ (प्राणी) को उसकी आजीविका पहुँचाता है, उसकी आजीविका उन तक भिजवाता है, अपनी हिकमत, तत्वदर्शिता एवं तारीफ़ व प्रशंसा के आधार पर जैसे चाहता है उसे विभाजित करता है।

चुनाँचे हर मख़लूक़ (प्राणी) का एक (भिन्न) भोजन है, शरीर का भोजनः खाने एवं पीने की वस्तुएं हैं, रूहों (आत्माओं) का भोजनः ज्ञान व विद्या है, फ़रिश्तों का भोजनः तस्बीह़ (अल्लाह की पाकी व पवित्रता का बखान करना) है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बंदों का रक्षक है, जो उनकी रक्षा करता, उनकी परिस्थितियों पर दृष्टि रखता एवं उन (के सभी मामलों) से सूचित रहता है।

पाक, पवित्र व सर्वोच्च पालनहार बंदों की भलाई, हित व मसलहत को बहाल रखता है, उन्हें खाद्यान्न एवं आजीविका से नवाज़ता है।

सर्वोत्तम रिज़्क़ व आजीविकाः बुद्धि है, जिसको बुद्धि प्राप्त हो गई उसे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने आदर सत्कार से समृद्ध कर दिया।

إلهي لكَ الفَضلُ الذي عَمَّمَ الوَرَى — وجُودًا على كلِ الخليقةِ مُسبَلُ

وغيرُك لو يَمْلِكُ الخزائنَ التِي — تَزيدُ مع الإنفاقِ لا بدَّ يَبْخَلُ

أعوذُ بكَ اللهم من سوءِ صُنعِنا — ومِن أن تكُن نُعماكَ عنا تُحَوَّلُ

अनुवादः हे मेरे उपास्य! तेरा ही फ़ज़्ल व दया है जो सभी प्राणियों में सामान्य रूप से फैली हुई है, (तेरी ही) सख़ावत व उदारता है जो समस्त सृष्टि में आम है। तेरे सिवा यदि किसी अन्य को तेरे इन कोषों पर अधिकार होता जिन में ख़र्च (व्यय) करने से वृद्धि ही होती है फिर भी वह कंजूसी व बख़ीली अवश्य करता। हे अल्लाह! मैं अपने कुकृत्य व कुकर्म से तेरी शरण चाहता हूँ, एवं इस बात से भी कि तेरी रहमत, दया व कृपा हम से छिन जाये।

❒ निश्चिंत रहें!

उस चीज़ में कदापि व्यस्त न रहें जिसकी जिम्मेवारी स्वयं अल्लाह ने ली है, अल्लाह तआला ने अपने विषय में फ़रमाया है कि वह (अल-मुक़ीत, अर्थातः भोजन प्रदान करने वाला तथा सुरक्षा करने वाला) है, एवं फ़रमाया कि वह (अल-राज़िक़, अर्थातः आजीविका पहुँचाने वाला है)।

अल-मुक़ीतः रज़्ज़ाक़ (आजीविका प्रदान करने वाला) से अधिक विशेष व व्यापक अर्थों को अपने अंदर समाहित किये हुआ है। अरबी भाषा के शब्द "क़ूत" से अभिप्राय वह खाद्य पदार्थ व भोजन है जिससे शारीरिक ढ़ांचा स्थिर रहता है, जब्कि अरबी भाषा के शब्द "रिज़्क़" प्रत्येक उस चीज़ को कहा जाता है जो बंदा के स्वामित्व में हो, चाहे वह खाने वाली वस्तु हो या न हो।

जब तक जीवन है तब तक "क़ूत (ग़िज़ा)" एवं "रिज़्क़ (आजीविका)" दोनों मिलते रहेंगे, यदि अल्लाह अपनी हिकमत व तत्वदर्शिता से कोई मार्ग आपके समक्ष अवरुद्ध कर देता है तो अपनी रहमत व दया से कोई दूसरा मार्ग खोल भी देता है।

गर्भ में पल रहे शिशु की स्थिति में ही विचार कर लीजियेः उसका भोजन रक्त है, जो उसे केवल एक मार्ग से प्राप्त होता है और वह है नाभि, किंतु जब वह गर्भाशय से बाहर आता है तो यह मार्ग बंद हो जाता है, और उसके लिये दो मार्ग खुलते हैं, जिनके द्वारा उसे पहले की तुलना में अधिक उत्तम व पौष्टिक आहार मिलता है, और वह है शुद्ध दुग्ध जो (पीने में) स्वादिष्ट व सुखद होता है, फिर जब दुग्धपान की सीमा समाप्त हो जाती है तो उसके लिये चार मार्ग खुल जाते हैं जिनके द्वारा उसे दो प्रकार का भोजन तथा दो प्रकार का पेय प्राप्त होता है, भोजन से अभिप्रायः पशु (का मांस) एवं वनस्पति (की सब्ज़ियाँ) हैं, जब्कि पेय से आशयः जल एवं दुग्ध हैं।

एवं जब उसकी मृत्यु हो जाता है तो ये चारों द्वार बंद हो जाते हैं, तथा मोमिनों के लिये आठ द्वार खोल दिये जाते हैं, जिस द्वार से वो (प्रवेश करना) चाहते हैं वे उस में प्रवेश कर जाते हैं!

❒ आप अल्लाह का शुक्र, धन्यवाद व आभार प्रकट करने वाले बन जायें!

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की नियामतें व अनुग्रह असंख्य हैं, उनको गिनना एवं उनका हिसाब लगाना असंभव हैः

﴿وَإِن تَعُدُّواْ نِعۡمَتَ ٱللَّهِ لَا تُحۡصُوهَآۗ إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لَظَلُومٞ كَفَّارٞ﴾

अनुवादः (और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते, वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है)। सूरह इब्राहीमः 34।

वह वैभवशाली व प्रतापी उपकारी व मोह़सिन बिना किसी आवश्यकता, भय व आशा के प्राणियों को उन नियामतों से अनुग्रहित करता है, बल्कि केवल अपने फ़ज़्ल, करम व दया, एह़सान, इनाम व पुरस्कार तथा सख़ावत, उदारता व दानवीरता के आधार पर उन से नवाज़ता है।

﴿وَمَا خَلَقۡتُ ٱلۡجِنَّ وَٱلۡإِنسَ إِلَّا لِيَعۡبُدُونِ ٥٦ مَآ أُرِيدُ مِنۡهُم مِّن رِّزۡقٖ وَمَآ أُرِيدُ أَن يُطۡعِمُونِ ٥٧ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلرَّزَّاقُ ذُو ٱلۡقُوَّةِ ٱلۡمَتِينُ ٥٨﴾

अनुवादः (मैंने जिन्नातों एवं इंसानों को केवल इसी लिए पैदा किया है कि वह सिर्फ मेरी ही पूजा करें। मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वो मुझे खिलायें। अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता, शक्तिशाली बलवान है)। सूरह ज़ारियातः 56-58।

परंतु बहुतेरे लोग शुक्र, धन्यवाद एवं आभार प्रकट नहीं करतेः

﴿يَعۡرِفُونَ نِعۡمَتَ ٱللَّهِ ثُمَّ يُنكِرُونَهَا وَأَكۡثَرُهُمُ ٱلۡكَٰفِرُونَ ٨٣﴾

अनुवादः (वे अल्लाह के उपकारों को पहचानते हैं फिर उसका इंकार करते हैं, और उन में अधिकतर कृतघ्न हैं)। सूरह नह़्लः 83।

उसने आपको (नियामत) प्रदान किया जब्कि उसके ऊपर आपका कोई अधिकार नहीं था, फिर भी आप उसके अधिकारों को नकारते रहे! उसने आप को अनुग्रहित किया जब्कि

उसके पास आप का कोई एह़सान व उपकार नहीं था, फिर भी आपने उसके एह़सान व उपकार का इंकार किया:

﴿قُتِلَ ٱلۡإِنسَٰنُ مَآ أَكۡفَرَهُۥ ١٧﴾

अनुवादः (इंसान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है)। सूरह अबसः 17।

आप पर महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की नियामतें बारंबार बरसें तथा अनवरत जारी रहें, जब आप उससे माँगते हैं तो वह अनुग्रहित करता है, जब आप उससे दुआ करते हैं तो वह स्वीकार करता है, जब आप उससे सहायता माँगते हैं तो वह सहायता प्रदान करता है, उसके बिना आप का काम नहीं चल सकता, इसीलिये यदि आप उसका शुक्र, धन्यवाद व आभार भी प्रकट करें तो एक और नियामत का शुक्र अदा करें कि उसने आप को इसकी तौफ़ीक़ दी:

﴿وَإِذۡ تَأَذَّنَ رَبُّكُمۡ لَئِن شَكَرۡتُمۡ لَأَزِيدَنَّكُمۡۖ﴾

अनुवादः (तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोषणा कर दी कि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूँगा)। सूरह इब्राहीमः 7।

❒ बेनियाज़ी व निस्पृहता के स्तंभः

मानव समुदाय के पास यदि सोने की एक भरी हुई वादी हो तो भी उसकी इच्छा यही होगी के उनके पास सोने से भरी हुई दो वादियां हो जायें।

सौभाग्य यह नहीं कि आप संसार जीत लें, बल्कि मानव का सौभाग्य इसमें है किः उसके पास दिन भर का भोजन उपलब्ध हो, वह शारीरिक रूप से स्वस्थ हो तथा उसे अमन-शांति प्राप्त हो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ है कि आपने फ़रमायाः "तुम में से जिस ने भी इस दशा में भोर किया कि वह अपने घर में अथवा समुदाय में अमन-चैन से हो, तथा शारीरिक रूप से बिल्कुल स्वस्थ हो एवं दिन भर का भोजन उसके पास उपलब्ध हो तो मानो उसके लिये पूरा संसार इकट्ठा कर दिया गया"। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

❒ नेक लोगों व सदाचारियों के ढ़ंगः

मोमिन का हृदय शांति से भरा होता है, क्योंकि वह भलि भाँति जानता है कि अल्लाह ही रक्षक व निगहबान तथा आजीविका पहुँचाने वाला है, उसकी रोज़ी व आजीविका लिख

दी गई है, वह उस समय तक नहीं मर सकता जब तक कि वह अपनी रोज़ी न हासिल कर ले, अतः वह प्रयास तो करता है परंतु भरोसा केवल अल्लाह पर रखता है एवं अपनी शक्ति व सामर्थ्य को तुच्छ व क्षीण समझता है, उसका दिल उस महानतम व सर्वोच्च अल्लाह से जुड़ा रहता है जो संरक्षक, निगहबान व आजीविका पहुँचाने वाला है, उस पाक व सर्वोच्च (अल्लाह) के बिना न तो उसकी अपनी कोई बिसात है, न शक्ति एवं न किसी प्रकार का कोई सामर्थ्य।

जैसाकि स़ह़ीह़ मुस्लिम में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने महा शक्तिशाली व बलशाली पालनहार से रिवायत करते हैं किः अल्लाह तआला फ़रमाता हैः "हे मेरे दासों! तुम सभी भूखे हो सिवाय उसके जिसे मैं खिलाऊँ, अतः मुझ से भोजन माँगो मैं तुम को खिलाऊँगा"।

इब्ने रजब रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "चंद सलफ़ (पुनीत पूर्वज) अपनी नमाज़ में हरेक आवश्यकता केवल अल्लाह से माँगा करते थे, यहाँ तक कि आटे के लिये नमक एवं बकरी के लिये चारा भी"।

जो व्यक्ति अल्लाह तआला के महान नाम (अल-मुक़ीत, अर्थातः संरक्षक व आजीविका पहुँचाने वाला) को सदा अपने मन-मस्तिष्क में बैठाये रखे, अल्लाह तआला जो निगहबान एवं आजीविका प्रदान करने वाला है, उसकी मईयत (साथ) को प्रत्येक परिस्थिति में अनुभव करे, अल्लाह तआला के कोष व ख़ज़ाना पर भरोसा व विश्वास रखे ... तो उसे सदैव का सौभाग्य व सआदत प्राप्त होगी, और वह हैः लोक परलोक में (अल्लाह तआला की) प्रसन्नता।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे व्यक्ति को सावधान किया है जो सवाब व पुण्य की नीयत से अपने घर परिवार वालों की आजीविका भी सदका व दान कर देता है, जिसके कारण यह नेकी गुनाह में परिवर्तित हो जाती है, क्योंकि वह (इस कृत्य के द्वारा) अपने घर परिवार वालों एवं दासों को व्यर्थ व वंचित कर देता है, जिनके ऊपर ख़र्च करना उस के ऊपर वाजिब व अनिवार्य है एवं जो उसके मातहत हैं, इसलिये कि ख़र्च एवं व्यय का संबंध मानव अधिकारों से है, और उन्हें (उसके धन की) अधिक आवश्यकता है, एवं उनका अधिकार ज़्यादा ज़रूरी है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फ़रमायाः "आदमी के गुनाहगार व पापी होने के लिये यह पर्याप्त है कि वह उन लोगों को जिन के ख़र्च एवं व्यय की जिम्मेवारी उसके ऊपर है व्यर्थ एवं नष्ट कर दे"। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर परिवार वालों के प्रति इतना चिंतित रहते कि उनके लिये पूरे वर्ष की आजीविका का प्रबंध कर लेते, स़ह़ीह़ बुख़ारी में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम "बनू नज़ीर के बाग (उपवन) की खजूरें बेच कर अपने घर वालों के लिये साल भर का राशन संग्रहित कर दिया करते थे"।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

اللهُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ آلِ مُحَمَّدٍ قُوتًا

(अर्थातः हे अल्लाह! मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घर परिवार वालों को आवश्यकतानुसार आजीविका प्रदान कर)। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

अर्थात जो उनके भोजन के लिये (एवं जीवित रहने के लिये) पर्याप्त हो, ताकि दरिद्रता एवं भूख से वह निढ़ाल न हों और न ही दूसरों के समक्ष हाथ फैला कर अपमानित व लज्जित हों, इसी प्रकार से उनके लिये संसार (की नियामतों के द्वार) न खोल दिये जायें कि वो उन पर भरोसा कर के बैठ जायें, क्योंकि संसार समाप्त होने वाला जब्कि आख़िरत सदा बाकी रहने वाली है, इसलिये बाकी रहने वाली को समाप्त हो जाने वाले पर वरीयता दो, मेरे परवरदिगार उन पर, उनके परिवार वालों पर तथा क़यामत तक उनका अनुसरण करने वालों पर अपनी रह़मत व दया अवतरित करे।

हे अल्लाह! हम तुझ से तेरे महान नाम (अल-मुक़ीत, अर्थातः संरक्षक व आजीविका पहुँचाने वाला) के वसीला व माध्यम से यह प्रार्थना करते हैं कि तू हमें अपने विशाल व महान फ़ज़्ल, एह़सान व दया से पर्याप्त आजीविका एवं रिज़्क़ प्रदान कर, एवं अपने आज्ञापालन, ज़िक्र व जाप तथा शुक्र व आभार प्रकट करने पर हमारी सहायता कर।

(66)

(अल-वासिअ जल्ल जलालुहु)

जब मोमिनों ने अल्लाह तआला के महान नाम (अल-वासिअ) के विषय में सुना तो उन के हृदय उसके ज़िक्र व जाप में लीन हो गये, उनकी आत्मायें उनसे भेंट करने के लिये व्याकुल हो गईं, उनके दिलों को केवल उसके समक्ष नतमस्तक होने, उसके घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करने, उसके सामने खड़े होने, उसके लिये निद्रा छोड़ कर उठ जाने एवं उसके मार्ग में अपने प्राणों की आहुति देने के पश्चात ही उन्हें शांति मिलती है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ﴾

अनुवादः (मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये है)। सूरह आराफ़ः 156।

इसके अतिरिक्त एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ﴾

अनुवादः (अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी है)। सूरह बक़राः 247।

हमारा रब वह महा बलशाली व सर्वोच्च है जो कुशादगी वाला एवं बेनियाज़ है, जिसकी बेनियाज़ी सभी बंदों को सम्मिलित है, उसकी किफ़ायत (पर्याप्त होना), फ़ज़्ल व एहसान, सख़ावत व उदारता एवं तदबीर व प्रबंधन सभी प्राणियों को अपने घेरा में लिये हुये है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह व्यापक रूप से कुशादगी व समृद्धि वाला है, वह अपनी ज़ात (व्यक्तित्व), अस्मा व सिफ़ात (नाम व गुण), आमाल व अफ़आल (कर्म व कृत्य) एवं बादशाहत व साम्राज्य में कमाल व पूर्णता के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान है, कोई भी उसकी वैसी प्रशंसा नहीं कर सकता जैसी होनी चाहिये, वह वैसा ही है जैसा उसने स्वयं अपनी प्रशंसा की है। उसकी प्रशंसा करने वाले चाहे जितनी भी उसकी प्रशंसा व स्तुतिगान कर लें, उसकी वास्तविकता तक नहीं पहुँच सकते, और न अपने ज्ञान से उसका इदराक (वास्तविकता का भान) कर सकते हैं।

हमारे पालनहार का ज्ञान हरेक चीज़ को शामिल है।

﴿وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا﴾

अनुवादः (हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है)। सूरह आराफ़ः 89।

उससे कोई भी वस्तु छिप्त नहीं, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अति अंधेरी रात्रि में ठोस काली चट्टान पर (रेंगने वाली) काली चींटी की रेंग को भी सुनता है, आकाश व धरा में कोई भी चीज़ उससे छिप्त व गुप्त नहीं।

उसका ज्ञान दिलों के भेद एवं सीनों में छिपे हुये हर प्रकार की भलाई व बुराई को अपने घेरा में लिये हुये हैः

﴿يَعۡلَمُ خَآئِنَةَ ٱلۡأَعۡيُنِ وَمَا تُخۡفِي ٱلصُّدُورُ ١٩﴾

अनुवादः (वह जानता है आँखों की चोरी तथा जो (भेद) सीने में छुपाते हैं)। सूरह मोमिनः 19।

﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعۡلَمُ مَا فِيٓ أَنفُسِكُمۡ فَٱحۡذَرُوهُۚ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ٢٣٥﴾

अनुवादः (जान लो कि जो कुछ तुम्हारे मन में है उसे अल्लाह जानता है, अतः उससे डरते रहो और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है)। सूरह बक़रहः 235।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अति क्षमाशील है, जो हर क्षमा याचना करने वालों को क्षमा कर देता है, चाहे उसके पाप एवं गुनाह कितने ही अधिक क्यों न हों:

﴿إِنَّ رَبَّكَ وَٰسِعُ ٱلۡمَغۡفِرَةِۚ﴾

अनुवादः (वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है)। सूरह नज्मः 32।

हमारा कुशादगी वाला महानतम व सर्वोच्च रब वह है जो अपने बंदों पर दीन (धर्म) के मामले में कुशादगी करता है, जो उनकी क्षमता से बाहर हो उसका भार वह उन पर नहीं डालताः

﴿وَلِلَّهِ ٱلۡمَشۡرِقُ وَٱلۡمَغۡرِبُۚ فَأَيۡنَمَا تُوَلُّواْ فَثَمَّ وَجۡهُ ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ١١٥﴾

अनुवादः (पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, तुम जिधर भी मुख करो उधर ही अल्लाह का मुख है, और अल्लाह विशाल अति ज्ञानी है)। सूरह बक़रहः 115।

وَأَشْهَدُ أَنَّ اللهَ لَا ربَ غيرَه　　　كريمٌ رحيمٌ يُرتَجى ويُؤَمَّلُ
إذا سئِلَ الخيراتِ أَعطى جزيلَها　　　ويَرفعُ مكروهَ البَلا وَيُزَوِّلُ
يَسِحُّ من الخيراتِ سحًّا على الوَرى　　　فيُغنِي ويُقنِي دائِمًا ويُحَوِّلُ
إذا أَكثرَ الْمُثْنِي عليه من الثَنا　　　فَذُو العرشِ أعلى فِي الْجَلالِ وأجْمَلُ

अनुवादः मैं यह गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पालनहार नहीं, वह सख़ी व दाता एवं दयालु व कृपालु है, उसी से हर प्रकार की आशायें एवं आकांक्षायें रखी जाती हैं। जब उससे भलाई व कल्याण माँगा जाता है तो वह बहुमूल्य व असीमित भलाई व कल्याण से अनुग्रहित करता एवं अप्रिय आपदा व विपत्ति को टाल देता है। मख़लूक़ (सृष्टि) पर अपनी नवाज़िश व कल्याण की बरखा बरसाता है, सदा (अपने फ़ज़्ल से) उन्हें बेनियाज़ी (निस्पृहता), धन-सम्पदा एवं प्रसन्नता व समृद्धि प्रदान करता है तथा उसकी स्थिति में परिवर्तन कर के उसे उत्तम बना देता है। यदि प्रशंसा व स्तुतिगान करने वाले उसकी अधिकाधिक प्रशंसा व स्तुति गान करें तो वह उससे भी बढ़ कर है, (वास्तविकता तो यह है कि) अर्श वाला (सिंहासन का स्वामी) जलाल व जमाल (प्रताप व सुंदरता) में सर्वोत्तम व सर्वोच्च है।

❒ कुशादगी व उदारता वाला (पालनहार) आप की चिंता व फिक्र करने के लिये पर्याप्त है!

जो व्यक्ति अल्लाह के महान नाम (अल-वासिअ, कुशादगी व उदारता वाला) से परिचित हो जाये, उसका (मानव से) भय समाप्त हो जाता है, उसके हृदय में शांति अपना स्थान बना लेती है तथा उसके लिये आशओं के द्वार खोल दिये जाते हैं।

चुनाँचे यह किसान जिसके फसल की कटाई में विलंब हो रहा है, सुखाड़ एवं भूखमरी का शिकार है, फल (एवं फसल) की आवश्यकता बढ़ती जा रही है, जब उसे यह ज्ञात हो जाये कि अल्लाह तआला कुशादगी, उदारता, समृद्धि वाला एवं महा ज्ञानी है, तो वह आसमान की ओर मुख करेगा, उसका हृदय अपने रब से जुड़ेगा, और यह पुकार लगायेगाः हे कुशादा व उदार अनुग्रही! हे अल्लाह! हे अति कृपालु! हे सख़ी व दयालु! मुझ पर अपनी बरकत, ख़ैर व भलाई की बरखा बरसा दे।

वह बाँझ जिसे ज़माना ने चूर कर दिया है, दुःख ने उसे निढ़ाल कर दिया है, संतान की चाहत प्रबल हो गई है कि उसे अपनी गोद में खिलाये तथा सूखे जीवन में रंग भरे, परंतु गर्भ न ठहर रहा हो बल्कि वह लोगों के इस ताना को सुन-सुन कर पीड़ित हो चुका हो किः "अमूक

बाँझ है!" इस अवसाद व निराशा वाली परिस्थिति जिसमें गम व रंज का बसेरा होता है, उसके अंदर से एक दूसरा जीवन जन्म लेता है जब वह यह याद करता है कि अल्लाह तआला कुशादगी, उदारता व दया वाला, करीम, सख़ी व दाता है, वह किसी भी ऐसे याचक को खाली हाथ नहीं लौटाता जो पूर्ण विश्वास के साथ उससे माँगे, चुनाँचे वह यह पुकार लगाता है:

﴿رَبِّ هَبْ لِى مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً﴾

अनुवादः (मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान कर)। सूरह आले इमरानः 38।

﴿إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥ رَبِّ لَا تَذَرْنِى فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْوَٰرِثِينَ ﴿٨٩﴾ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ وَوَهَبْنَا لَهُۥ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَا لَهُۥ زَوْجَهُۥٓ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ يُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا۟ لَنَا خَٰشِعِينَ ﴿٩٠﴾﴾

अनुवादः (जब उस (ज़करीय्या अलैहिस्सलाम) ने पुकारा अपने रब को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला, और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है। तो हमने सुन ली उसकी पुकार तथा प्रदान कर दिया उसे यह्या, और सुधार दिया उस के लिये उस की पत्नी को, वास्तव में वो सभी जल्दबाज़ी करते थे सत्कर्मों में और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ, और हमारे आगे झुके हुये थे)। सूरह अम्बियाः 89-90।

इसी प्रकार से वह रोगी जिसकी चीत्कार को अल्लाह तआला तआला सुनता है, जिसके दुःख दर्द से अल्लाह परिचित होता है, जब वह कुशादा व उदार अनुग्रह करने वाले (पालनहार) को याद करता है, और यह स्मरण करता है कि वही निरोग करने वाला तथा अपने बंदों के लिये पर्याप्त है तो वह यह निदा लगाता है:

﴿أَنِّى مَسَّنِىَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

अनुवादः (मुझे रोग ने आ घेरा है, एवं तू सभी दयालुओं से बढ़ कर (अति) दयालु है)। सूरह अम्बियाः 83।

चुनाँचे अल्लाह तआला उसके दुःख दूर एवं पीड़ा हर लेता है तथा उसे निरोग कर देता है ... निःसंदेह वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह कुशादगी व उदारता वाला है।

क़र्ज़दार व ऋणी के दिल में चिंता अपना डेरा जमाये रहती है, यहाँ तक कि वह यह समझ लेता है कि उन से कोई छुटकारा एवं मुक्ति का मार्ग नहीं, फिर देखते ही देखते महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उसके दिल के द्वार खोल देता है, उसे अपनी शरण में ले लेता है, चुनाँचे वह कुशादा व उदार अनुग्रही, सख़ी व दाता (पालनहार) की शरण में आ कर पनाह लेता है और यह पुकार लगाता है किः हे आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले ... हे उदार अनुग्रह वाले!

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ ٱلْأَرْضِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾﴾

अनुवादः (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना को सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुःख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो)। सूरह नम्लः 62।

देखते ही देखते अल्लाह तआला क़र्ज़ को अदा कर देता एवं ऐसे स्थान से उसके लिये आजिविका का प्रबंध करता है जहाँ के बारे में वह कल्पना भी नहीं कर सकता, उसके होंटों पर मुस्कान लहराने लगती है, दिल को सुकून मिलता एवं आत्मा को शांति मिलती हैः

﴿قُلِ ٱللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا وَمِن كُلِّ كَرْبٍ﴾

अनुवादः (आप कह दें कि अल्लाह ही उस से तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाता है)। सूरह अनआमः 64।

आलिम -ए- दीन (धर्मशास्त्री) के समक्ष कोई मसला आता है, उसका सही व ठोस उत्तर उस (की पहुँच) से दूर प्रतीत होता है, उसके लिये उत्तर देना कठिन हो जाता है, वह ज़मीन पर अपनी नाक रगड़ते हुये अल्लाह तआला को पुकारता एवं मदद की गुहार लगाता हैः हे वसीअ, कुशादा व उदार अनुग्रही ... हे सर्व ज्ञानी ... हे इब्राहीम को ज्ञान देने वाले! मुझे भी ज्ञान व विद्या दे ... हे सुलैमान को बुद्धि-विवेक देने वाले मुझे भी बुद्धि-विवेक से अनुग्रहित कर!

देखते ही देखते उसके द्वार पर दस्तक होने लगती है, और कुशादगी वाले पाक व उच्च (पालनहार के करम व दया) के द्वारा सभी गिरहें खुलने लगती हैं।

पति पत्नी में मतभेद हो जाता है, रिश्ते की डोर टूट जाती है, प्रेम की लड़ियाँ टूट कर बिखर जाती हैं, तलाक़ (अलगाव) के पश्चात उनकी स्थिति और दयनीय हो जाती है, वो दोनों ही कुशादगी व उदारता वाले अल्लाह की शरण लेते हैं।

देखते ही देखते अल्लाह तआला दोनों को एक क्षति के बदले अनेक भलाई, अच्छाई व नियामत से अनुग्रहित कर देता हैः

﴿وَإِن يَتَفَرَّقَا يُغْنِ ٱللَّهُ كُلًّا مِّن سَعَتِهِۦۚ وَكَانَ ٱللَّهُ وَٰسِعًا حَكِيمًا ١٣٠﴾

अनुवादः (और यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह प्रत्येक को अपनी दया से (दूसरे से) निश्चिंत कर देगा, और अल्लाह बड़ा उदार तत्वज्ञ है)। सूरह निसाः 130।

❒ तिजारत एवं व्यवसाय का लाभ ...

मानव स्वभाव है कि वह ख़र्च (व्यय) करने से कतराता है क्योंकि वह निर्धनता व फ़क़ीरी से डरता है, और उसका कारण केवल यह है कि शैतान उसके मन-मस्तिष्क में बुराई एवं निर्धनता व दरिद्रता का वसवसा पैदा करता तथा उसे कंजूसी करने को प्रेरित करता है।

﴿ٱلشَّيْطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِٱلْفَحْشَآءِۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًاۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ٢٦٨﴾

अनुवादः (शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, तथा निर्लज्जता के लिये उकसाता है, और अल्लाह तुम को अपनी क्षमा तथा (अपनी ओर से) और अधिक देने का वचन देता है, एवं अल्लाह विशाल ज्ञानी है)। सूरह बक़रहः 268।

मोमिन को याद रखना चाहिये कि अल्लाह तआला कुशादगी वाला, सख़ी व दाता है, उस पाक व उच्च ने यह वादा किया हैः

﴿مَّن ذَا ٱلَّذِى يُقْرِضُ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَٰعِفَهُۥ لَهُۥٓ أَضْعَافًا كَثِيرَةًۚ وَٱللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٢٤٥﴾

अनुवादः (कौन है जो अल्लाह को अच्छा उधार (ऋण) देता है, ताकि अल्लाह उसे उस के लिये कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है, और उसी की ओर तुम समस्त लौटाये जाओगे)। सूरह बक़रहः 245।

तथा मोमिन को चाहिये कि वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस फ़रमान को भी याद रखेः

﴿قُلۡ إِنَّ ٱلۡفَضۡلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤۡتِيهِ مَن يَشَآءُۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ﴾

अनुवादः (आप कह दें किः प्रदान करना अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहे देता है, और अल्लाह विशाल ज्ञानी है)। सूरह आले इमरानः 73।

चुनाँचे वह अपने रब को क़र्ज़ देते हुये अपने धन को ख़र्च करे और यह विश्वास रखे कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उसे लोक परलोक में इसका उत्तम प्रतिफल देगा, (यदि ऐसा किया गया) तो देखते ही देखते (उस पर) अल्लाह तआला के फ़ज़्ल, एहसान व उपकार की घटायें बरसने लगेंगी, तथा (उस पर) अल्लाह के फ़ज़्ल, एहसान व उपकार और अधिक बढ़ जायेंगे जो कुशादगी वाला, सख़ी व दाता है।

❒ भय खाने वाले (बंदों) के आँसू ...

मोमिन बंदा अपने पाप की संगीनी एवं सही ढ़ंग से उपासना न कर पाने को बराबर याद रखता है, जिस से उसके (अंदर) रंज व क्षोभ (की चिंगारी) भड़क उठती है तथा उसका हृदय उद्विग्न हो जाता है, परिणामस्वरूप, महाशक्तिशाली व ज़ोरावर (अल्लाह) के भय से उसकी चक्षु से अश्रुधारा बहने लगती है, फिर वह अल्लाह तआला के इस फ़रमान को याद करता हैः

﴿وَرَحۡمَتِي وَسِعَتۡ كُلَّ شَيۡءٖۚ﴾

अनुवादः (मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये है)। सूरह आराफ़ः 156।

तथा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस कथन को बारंबार दोहराता हैः

﴿إِنَّ رَبَّكَ وَٰسِعُ ٱلۡمَغۡفِرَةِۚ﴾

अनुवादः (वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है)। सूरह नज्मः 32।

अंततः महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के दरबार में तौबा एवं प्रायश्चित्त का एलान करता है, और यह आशा रखता है कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस फ़रमान में उसको भी सम्मिलित कर लिया जायेगाः

﴿إِلَّا مَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَٰلِحًا فَأُوْلَٰٓئِكَ يُبَدِّلُ ٱللَّهُ سَيِّـَٔاتِهِمْ حَسَنَٰتٍۗ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ٧٠﴾

अनुवादः (उसके सिवा जिस ने क्षमा याचना कर ली, और ईमान लाया तथा कर्म किया अच्छा (सद) कर्म, तो वही है बदल देगा अल्लाह जिनके पापों को पुण्य से, तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान है)। सूरह फ़ुर्क़ानः 70।

(वह व्यक्ति) फ़रिश्तों की इस दुआ को भी महसूस कर रहा होता हैः

﴿رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَٱغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُواْ وَٱتَّبَعُواْ سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ ٱلْجَحِيمِ﴾

अनुवादः (हे हमारे रब! तू ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को (अपनी) दया तथा ज्ञान से, अतः क्षमा कर दे उन को जो क्षमा माँगे, तथा चलें तेरे मार्ग पर और बचा ले उन्हें नरक की यातना से)। सूरह मोमिनः 7।

तौबा व प्रायश्चित्त उसके दिल की जलन एवं आत्मा के प्रदाह को धो देती है, एवं महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उसे तौबा करने वालों एवं पवित्रता अपनाने वालों में सम्मिलित कर देता है, इसके अतिरिक्त उस पर यह एह़सान भी करता है कि आजीवन उसे स़िरात़ -ए-मुस्तक़ीम (सुपथ) पर चलाता है, फलस्वरूप वह जन्नतों की नियामतों एवं आनंदों से लाभांवित होता है, जहाँ वह यह शुभ सूचना सुन रहा होता हैः

﴿إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُۥ مِن نَّفَادٍ ٥٤﴾

अनुवादः (यह है हमारी जीविका जिस का कोई अन्त नहीं है)। सूरह स़ादः 54।

❒ संदेश ...

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जिसकी रह़मत व दया सभी मख़लूक़ (प्राणियों) को अपने घेरा में लिये हुये हैः

﴿ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ﴾

अनुवादः (तुम्हारा पालनहार विशाल दयालु है)। सूरह अनआमः 147।

अल्लाह तआला ने दीन के मामले में अपने बंदों पर कुशादगी व सरलता को अपनाया है, उन से तंगी को दूर कर दिया है, रोगी, यात्री एवं व्योवृद्ध जैसे लाचार लोगों के साथ आसानी रखी है, चुनाँचे उन्हें पाक, पवित्र एवं सर्वोच्च रब ने ऐसी चीज़ें करने को बाध्य नहीं किया है जो उनकी क्षमता से बाहर हों:

﴿لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا﴾

अनुवादः (प्रत्येक व्यक्ति को उतना ही भार दिया जाता है जितनी उसकी क्षमता हो)। सूरह बक़रहः 233।

जिसके लिये यह धरती तंग पड़ जाये तो अल्लाह तआला ने ऐसे बंदों के लिये धरती को विशाल व विस्तारित कर दिया हैः

अनुवादः (अल्लाह की धरती बड़ी विशाल है)। सूरह ज़ुमरः 10।

सबसे कुशादा व विशाल नवाज़िश जिसके द्वारा अल्लाह तआला अपनी किसी मख़लूक़ (रचना) को अनुग्रहित करता है, वह स़ब्र एवं धैर्य है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः “किसी को भी स़ब्र से बढ़ कर कुशादा एवं उत्तम नवाज़िश नहीं दी गई”। (इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है, एवं उपरोक्त शब्द बुख़ारी के ही हैं, तथा मुस्लिम ने भी इसे रिवायत किया है)।

स़ब्र (धैर्य) सभी इबादतों व उपासनाओं में दाख़िल व वांछित है, चुनाँचे आज्ञापालन के लिये स़ब्र आवश्यक है, गुनाह व पाप से दूर रहने के लिये स़ब्र अनिवार्य है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की तक़दीर (भाग्य) पर स़ब्र ज़रूरी है, समस्त जीवन ही स़ब्र का दूसरा नाम है, यहाँ तक कि हम महानतम व सर्वोच्च अल्लाह से जा मिलें।

ह़सन बस़री रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः “स़ब्र (धैर्य) भलाई व अच्छाई के कोषों में से एक कोष है, जिस से अल्लाह तआला अपने उसी बंदा को अनुग्रहित करता है जो उसके निकट सम्माननीय हो”।

يا من يُغيثُ الوَرى مِن بعدِ ما قَنَطُوا　　　ارحَم عبادًا أَكُفَ الفقرِ قد بَسَطُوا

عَوَّدتَهُم بسطَ أرزاقٍ بِلا سببٍ　　　سِوى جَمِيلِ رجاءٍ نَحْوَه انبَسطُوا

अनुवादः हे वह पालनहार! जो निराशा के पश्चात भी मख़लूक़ (रचना) की सहायता करता है, अपने उन बंदों पर दया कर जिन्होंने दरिद्रता की ओर कदम बढ़ा दिये हैं। तू ने उन्हें बिना किसी कारण के भी रिज़्क़ (आजीविका) की बाहुल्यता का अभ्यस्त कर दिया है, सिवाय इसके कि उन्होंने तुझ से ही बेहतर व अच्छी उम्मीदें लगा रखी हैं।

हे अल्लाह! हे कुशादा नवाज़िश व अनुग्रह वाले (पालनहार!) हम में से हरेक को उसकी माँग से बढ़ कर अनुग्रहित कर, क्योंकि तू हरेक चीज़ में समर्थ व सक्षम है।

(67)

(अल-रक़ीब जल्ल जलालुहु)

इब्नुल जौज़ी रहि़महुल्लाह फ़रमाते हैं किः “जो अपनी तंहाई व एकांतावास को सुधार लेता है, उसकी उच्चता व सदगुण की सुगंध फैलने लगती है, एवं दिल उसकी महक व ख़ुशबू के मोहपाश में बंध जाते हैं, इसलिये एकांतावास में अल्लाह के भय को अनिवार्य रूप से अपनायें, क्योंकि यदि तंहाई व एकांतावास बिगड़ा तो छद्म व बाह्य सदाचारिता कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती”।

अबू ह़फ़्स़ नीशापूरी रहि़महुल्लाह कहते हैं किः “जब लोगों के पास बैठो तो अपने दिल एवं नफ्स (आत्मा) को प्रवचन व नसीहत करते रहो, इस बात से धोखा न खाओ कि वो तुम्हारे पास सभा लगाये बैठे हैं, क्योंकि वो तो केवल तुम्हारे प्रकट व बाह्य रूप को देखते हैं जब्कि अल्लाह तआला तुम्हारे गुप्त एवं आंतरिक रूप को भी देखता है”।

अल्लाह तआला के निकट एक उच्च स्थान यह भी है किः मोमिन अपने महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की निगरानी व निगहबानी को अनुभव करता रहे, और सदा यह याद रखे कि अल्लाह उसे देख रहा है, अल्लाह तआला अपनी महानतम व सर्वोच्च ज़ात (व्यक्तित्व) की प्रशंसा करते हुये फ़रमाता हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيۡكُمۡ رَقِيبٗا﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह तुम पर निगहबान (संरक्षक) है)। सूरह निसाः 1।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार निगहबान है, वह दिलों के भेद से अवगत है, वह ऐसा संरक्षक है कि कोई भी चीज़ उसके ज्ञान की परिधि से बाहर नहीं।

हमारा महानतम व सर्वोच्च पालनहार दिल की बातों को भी जानता है, भेदों एवं पलक झपकने को भी देखता है, वह प्रत्येक व्यक्ति की हरेक हरकत व गतिविधि से भलि भांति परिचित है।

हमारा पालनहार बंदों के आमाल एवं अफ़आल (कर्मों एवं कृत्यों) की निगरानी कर रहा है।

वह निगराँ भी है एवं संरक्षक भी, जिसका वह संरक्षक है उसका निगराँ भी है, उसने समस्त सृष्टि की सुरक्षा की, उन्हें सर्वोत्तम व्यवस्था का पैरोकार बनाया एवं उनकी सम्पूर्ण तदबीर व प्रबंध किया।

وهو الرقيبُ على الخواطرِ واللَّوا　　　　حظِ كيف بالأفعالِ والأركانِ

अनुवादः (वह मन-मस्तिष्क में आने वाली कल्पनाओं एवं पलक झपकने की भी निगरानी कर रहा है, तो (हमारे) कर्म व किरदार का क्या पूछना।

﴿وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي ٱلْأَرْضِ وَلَا فِي ٱلسَّمَآءِ وَلَآ أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مُّبِينٍ﴾

अनुवादः (आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी हुई नहीं रहती और न आकाश में न इससे कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है)। सूरह यूनुसः 61।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह बंदे की स्थिति, उसकी दिवा-रात्रि की गतिविधि, उसकी बाह्य व आंतरिक दशा तथा यात्रा व विश्राम दोनों परिस्थितियों से भलि भांति परिचित है।

महानतम व सर्वोच्च निगहबान सुनता और देखता है, बल्कि होंठ के हरकत करने एवं कलम के लिखने से पहले ही वह दिलों के भेद को जानता है।

उसका वृहद, समग्र व व्यापक ज्ञान हरेक चीज़ को अपने घेरा में लिये हुये है, उसकी सम्पूर्ण सूचना व परिचित होना प्रत्येक मख़लूक़ (सृष्टि) को सम्मिलित है, उसके ज्ञान, सूचना एवं आगाही की परिधि से कोई भी वस्तु बाहर नहीं, न तो ग़ायब व गुम व्यक्ति महानतम व सर्वोच्च निगहबान व संरक्षक की दृष्टि से ओझल हो सकता है और न गुप्त अवस्था में रहने वाले मानव की अवस्था महानतम व सर्वोच्च (पालनहार की दृष्टि) से उसे दूर कर सकती है, सरगोशी व कानाफूसी उसके निकट पूर्णतः स्पष्ट है, राज़ उसके लिये राज़ नहीं एवं गुप्त उसके निकट प्रकट है।

❒ सफल हो गया ...

मुस्तदरक में आया है कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा कहने लगा किः हे अल्लाह क रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मुझे कोई जामेअ व वृहद सूरह पढ़ा दीजिये, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे सूरह ज़लज़ला ﴿إِذَا زُلْزِلَتِ ٱلْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١﴾ का पाठ कराने लगे यहाँ तक

कि पूरा का पाठ करा दिया, उस व्यक्ति ने कहाः क़सम है उस ज़ात की जिसने आप को ह़क़ व सच्चाई के साथ अवतरित किया! मैं इससे ज़्यादा कभी नहीं पढ़ूँगा, फिर वह व्यक्ति चला गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ''वह व्यक्ति सफल हो गया''। (इसे ह़ाकिम ने रिवायत किया है एवं ज़हबी ने स़ह़ीह़ कहा है)।

मुसनद अह़मद में स़अस़ा बिन मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुये तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उन्हें यह आयतें पढ़ कर सुनाईं :

﴿فَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرٗا يَرَهُۥ ۝٧ وَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ شَرّٗا يَرَهُۥ ۝٨﴾

अनुवादः (जिसने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा। और जिसने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा)। सूरह ज़िलज़ालः 7-8।

तो उन्होंने कहा किः ''बस, पर्याप्त है! यदि मैं इन (दो आयतों) के सिवा अन्य आयतें न भी सुनूँ तो भी मुझे कोई परवाह नहीं''। (इस ह़दीस़ को अरनऊत़ ने ह़सन करार दिया है)।

मात्र एक आयत (श्लोक) भी मानव को समझ-बूझ (फ़िक़्ह व बस़ीरत) से मालामाल कर के उसे अपने पालनहार के निकट कर सकती है, (शर्त यह है कि) वह जब-जब उस आयत को पढ़े तो उस के अनुसार कर्म भी करेः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيۡكُمۡ رَقِيبٗا﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह तुम पर निगहबान (संरक्षक) है)। सूरह निसाः 1।

एक मोमिन इस बात को भलि भांति जानता है कि महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार उसका निगहबान है, हर स्थिति में उसे देख रहा है, इसलिये वह अपनी सांसों पर भी निगाह रखता है तथा अपने अमल व कर्म को भी अपने पालनहार के लिये निश्छल व ख़ालिस़ करता है, वह प्रत्येक काम करते समय अल्लाह को अपना निगराँ समझता है ... अपने रब की निगरानी को महसूस करता है तथा सदैव इसे याद रखता है, जिसके कारण वह एह़सान के स्थान पर विराजमान होता हैः

﴿قُلۡ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحۡيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ۝١٦٢﴾

अनुवादः (आप कह दें कि निश्चय ही मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिए है)। सूरह अनआमः 162-163।

उलेमा कहते हैं किः “यह एक उत्तम उपासना है किः सदा अल्लाह तआला को अपना निगराँ व निगहबान माना जाये”।

❒ अल्लाह तआला की मईयत व साथः

आप अपने जीवन में जितना महानतम व सर्वोच्च अल्लाह को अपना निगराँ व निगहबान मानेंगे, उतना ही आप को अल्लाह तआला की मईयत व साथ प्राप्त होगा।

इसलिये आज्ञापालन के पूर्व, आज्ञापालन के दौरान, जायज़ व उचित कर्म करते समय तथा पाप करते समय भी अपने स्वामी (अल्लाह) की निगहबानी व संरक्षण को याद रखें, आज्ञापालन के पूर्व (इसका तरीका यह है कि) अपनी नीयत की जाँच-पड़ताल करें तथा उसे ठीक करें, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ हैः “हरेक इंसान के लिये वही होता है जिसकी वह नीयत करता है”। (बुख़ारी)।

आज्ञापालन के दौरानः (इसका तरीका यह है कि) अल्लाह की निगरानी (इबादत व पूजा के दौरान भी) बाकी रहे, और ख़ालिस व निःकपट रूप से केवल उस की प्रसन्नता के लिये ही इबादत को अंजाम दिया जाये।

जायज़ व उचित कर्म करते समयः (इसका तरीका यह है कि) उसको अंजाम देते समय अदब व शिष्टाचार का ध्यान रखा जाये तथा नियामतों पर उसका शुक्र, धन्यवाद व आभार प्रकट किया जाये।

पाप करते समयः (इसका तरीका यह है कि) आप अल्लाह तआला के विरुद्ध दुस्साहस न करें तथा उसकी सीमाओं का उल्लंघन न करें, क्योंकि मोमिन (का गुण यह है कि वह) शीघ्र ही तौबा व प्रायश्चित्त के द्वारा एवं पापों से रुक कर अपने स्वामी व आका के समक्ष पलट आता हैः

﴿وَسَارِعُوٓاْ إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ﴾

अनुवादः (अपने पालनहार की क्षमा की ओर अग्रसर हो जाओ)। सूरह आले इमरानः 133।

आप यदि इन सभी परिस्थितियों में महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की निगहबानी व संरक्षण को याद रखते हैं, तो इसका परिणाम यह होता है कि आपके दिलों को करार व आँखों को ठंडक मिलती है।

❒ सरगोशी (काना फूसी) ...

जब महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने यह फ़रमायाः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيۡكُمۡ رَقِيبٗا﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह तुम पर निगहबान (संरक्षक) है)। सूरह निसाः 1।

और यह किः

﴿وَكَانَ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ رَّقِيبٗا﴾

अनुवादः (अल्लाह प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है)। सूरह अह़ज़ाबः 52।

तो इसके द्वारा हमें विशेष रूप से संबोधित करते हुये कह रहा हैः

हे मेरे भक्तों! क्या तुम यह समझते हो कि यदि तुम अपने गुनाहों को लोगों की दृष्टि से छिपाने में सफल हो गये तो तुम मुझ से भी मुक्ति पाने में सफल हो जाओगे?!

इस संबोधन की महानता व महत्ता इस युग में और बढ़ जाती है जब्कि (चहुँ ओर) फ़ित्ना, फ़साद व उपद्रव अपने पंजे फैलाये हुये है तथा इस (फ़ित्ना) में पड़ जाना अति सरल हो गया है।

किसी ने कहा है किः व्यक्तित्व निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण अंश यह है कि "अल्लाह तआला की निगहबानी को याद रखा जाये", और व्यक्तित्व विध्वंस का सबसे बुरा अंश यह है कि "लोगों की निगरानी को याद रखा जाये"।

إِذَا مَا خلَوتَ الدَّهرَ يَومًا فَلا تَقُل خَلَوتُ وَلَكِن قُل عَلَيَّ رَقِيبُ
وَلَا تَحْسَبَنَّ اللهَ يَغفَلُ سَاعَة وَلا أَنَّ مَا يَخفَى عَلَيهِ يَغِيبُ

अनुवादः संसार के अंदर जब कभी तन्हाई व एकांत में रहो तो यह मत कहो कि मैं एकांतावास में हूँ, अपितु यह कहो कि मेरे ऊपर एक निगहबान है (जो मुझे देख रहा है)। यह कदापि मत समझो कि वह (अल्लाह) एक क्षण के लिये भी ग़ाफ़िल व असावधान होता है और न ही उस (के इल्म व ज्ञान) से कोई चीज़ छिप्त व गुप्त है।

हे अल्लाह! हम तुझ से तेरे महान नाम (अल-रक़ीब, अर्थातः निगहबान, संरक्षक) के हवाले से यह दुआ करते हैं कि हमें अपने औलिया (मित्रों) में शामिल फ़रमा, हम तुझ से सभा एवं एकांतावास हर स्थान में तेरी ख़शीअत (भय) का, समृद्धि व दरिद्रता में संतुलन का एवं प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता की स्थिति में इंसाफ व अद्ल का सवाल करते हैं।

(68)

(अल-ह़सीब जल्ल जलालुहु)

जाफ़र स़ादिक़ रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "मुझे उस व्यक्ति पर बड़ा आश्चर्य होता है जो भयभीत तो हो परंतु इस आयत का सहारा न लेः

﴿حَسۡبُنَا ٱللَّهُ وَنِعۡمَ ٱلۡوَكِيلُ﴾ अनुवादः (हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है)। सूरह आले इमरानः 173। क्योंकि अल्लाह तआला इसके पश्चात फ़रमाता हैः

﴿فَٱنقَلَبُواْ بِنِعۡمَةٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَفَضۡلٖ لَّمۡ يَمۡسَسۡهُمۡ سُوٓءٞ﴾ अनुवादः (अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ वापिस हुये, उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा)"। सूरह आले इमरानः 174।

मुझे आश्चर्य होता है उस व्यक्ति पर जो दुःखी तो हो परंतु महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस कथन का सहारा न लेः

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

अनुवादः (नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी हूँ)। सूरह अम्बियाः 87।

क्योंकि इसके तुरंत बाद अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ وَنَجَّيۡنَٰهُ مِنَ ٱلۡغَمِّۚ وَكَذَٰلِكَ نُـۨجِي ٱلۡمُؤۡمِنِينَ ٨٨﴾

अनुवादः (हमने उसकी पुकार सुन ली तथा, उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं ईमान वालों को)। सूरह अम्बियाः 88।

मुझे आश्चर्य होता है उस व्यक्ति पर जिसके विरुद्ध षड्यंत्र व छल किया जाता है और इसके बावजूद वह अल्लाह तआला के इस फ़रमान का सहारा नहीं लेताः

﴿وَأُفَوِّضُ أَمۡرِيٓ إِلَى ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ بَصِيرُۢ بِٱلۡعِبَادِ﴾

अनुवादः (मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ, निस्संदेह अल्लाह बंदों को देख रहा है)। सूरह ग़ाफ़िरः 44।

क्योंकि इसके तत्क्षण ही अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला फ़रमाता हैः

﴿فَوَقَىٰهُ ٱللَّهُ سَيِّـَٔاتِ مَا مَكَرُواْۖ﴾

अनुवादः (तो अल्लाह ने उसे सुरक्षित कर दिया उन के षड्यंत्र की बुराईयों से)। सूरह ग़ाफ़िरः 45।

जब सभी युक्तियां असफल हो जायें, समस्त मार्ग अवरुद्ध हो जाये, आशायें टूट जायें, असबाब व माध्यम नाकाम साबित हों, तो आप यह निदा लगायें किः मेरे लिये अल्लाह तआला पर्याप्त है और वह बहुत अच्छा प्रबंधक व उपाय करने वाला है।

जब यह विशाल धरती आप के लिये संकीर्ण हो जाये और आप का दम घुटने लगे, तो यह पुकार लगायें किः मेरे लिये अल्लाह काफ़ी है तथा वह अति उत्तम प्रबंधक व उपाय कर्ता है। (फिर देखते ही देखते) उसी समय आप को अल्लाह तआला की सहायता व मदद प्राप्त होगी एवं उसकी कुशादगी व उदारता आपके द्वार पर दस्तक देने लगेगीः

﴿فَٱنقَلَبُواْ بِنِعۡمَةٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَفَضۡلٖ لَّمۡ يَمۡسَسۡهُمۡ سُوٓءٞ﴾

अनुवादः (अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ वापिस हुये, उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा)"। सूरह आले इमरानः 174।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने भक्तों के सामने अपना यह परिचय प्रकट किया है किः वह उनका संरक्षक, मुहासिब व पड़ताल करने वाला हैः

﴿وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ حَسِيبٗا﴾

अनुवादः (अल्लाह हिसाब लेने के लिये काफ़ी है)। सूरह निसाः 6।

इसके अतिरिक्त एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٍ حَسِيبًا﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का हिसाब लेने वाला है)। सूरह निसाः 6।

ज्ञात हुआ कि अल्लाह ही मुहासिब व पड़ताल करने वाला है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार अपनी मख़लूक़ (रचना) की हर प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त है, चाहे उसका संबंध लाभ प्राप्ति से हो अथवा हानि के बचाव से।

अल्लाह की किफ़ायत (पर्याप्त होना):

1- आम, सामान्य एवं व्यापक किफ़ायत, जो समस्त सृष्टि के लिये आम हैः जैसे, उनको उत्पन्न करना, उन्हें आजीविका प्रदान करना, तथा उन्हें हर वह चीज़ उपल्बध कराना जिसके लिये उनकी उत्पत्ति हुई हैः

﴿ٱلَّذِيٓ أَعۡطَىٰ كُلَّ شَيۡءٍ خَلۡقَهُۥ ثُمَّ هَدَىٰ﴾ अनुवादः (जिसने प्रत्येक वस्तु को उस का विशेष रूप प्रदान किया है, फिर मार्गदर्शन दिया)। सूरह ताहाः 50।

2- विशेष किफ़ायत जो मुवह्हिदों (एकेश्वरवादियों) के लिये हैः उन की सहायता व मदद करने के द्वार तथा हर अप्रिय चीज़ से उनका बचाव करने के द्वाराः

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ حَسۡبُكَ ٱللَّهُ وَمَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ ٦٤﴾

अनुवादः (हे नबी! आप के लिये तथा आप के ईमान वाले साथियों के लिये अल्लाह काफ़ी है)। सूरह अनफ़ालः 64।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह सभी प्राणियों से उनके कर्मों का हिसाब लेगा, उस दिन जब वो उसके पास लौटाये जायेंगे, फिर उन्हें उनके कर्मों का प्रतिफल देगा, उससे कोई भी चीज़ छिप्त नहीं, और न ही आकाश व धरा में राई के दाने के समान कोई चीज़ उससे अदृश्य हैः

﴿وَإِن كَانَ مِثۡقَالَ حَبَّةٖ مِّنۡ خَرۡدَلٍ أَتَيۡنَا بِهَاۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ﴾

अनुवादः (यदि होगा राई के दाने के बराबर (किसी का कर्म) तो हम उसे सामने ला देंगे, और हम बस (काफ़ी) हैं हिसाब लेने के लिये)। सूरह अम्बियाः 47।

❐ संकट व आपदा की घड़ी में वही आपकी सुरक्षा करता है ...

जिसे ग़ैरुल्लाह का भय दिखाया जाये परंतु वह कहे किः मेरे लिये मेरा अल्लाह काफ़ी है! तो अल्लाह तआला उसे मुक्ति दिलाता एवं उसे अपनी मदद व सहायता से नवाज़ता है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाला गया, तो उन्होंने कहाः अल्लाह हमारे लिये पर्याप्त है, और वह अति उत्तम कारसाज़, प्रबंधक व उपाय कर्ता है! तो अल्लाह तआला ने अग्नि को उनके लिये ठंडा व शांति, कुशल व सलामती वाला बना दिया।

हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं आप के स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को जब काफ़िरों की सेना एवं मूर्तिपूजकों के फौजों की धमकी दी गई तो उन्होंने कहाः

﴿حَسْبُنَا ٱللَّهُ وَنِعْمَ ٱلْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾ فَٱنقَلَبُوا۟ بِنِعْمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوٓءٌ وَٱتَّبَعُوا۟ رِضْوَٰنَ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ﴿١٧٤﴾﴾

अनुवादः (हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है। तथा अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ वापिस हुये, उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा, एवं अल्लाह की प्रसन्नता (के मार्ग) पर चले, और अल्लाह बड़ा दयाशील है)"। सूरह आले इमरानः 173-174।

हिसाब लेने वाला अल्लाह वह हैः जिसकी ओर भोर के समय (दुआ के साथ) हाथ उठते हैं, उसी से आवश्यकतायें माँगी जाती हैं, आपदा के समय उसी की ओर निगाहें बुलंद होती हैं, और घटनाओं एवं दुर्घटनाओं के समय उसी से माँगा जाता है।

सभी बलशाली व शक्तिशाली तथा निर्धन व दरिद्र लोग उसकी के मातहत व अधीन हैं, आपका स्वास्थ, आपकी पत्नी, आपके मातहत लोग एवं आपकी आजीविका सब उसी के हाथ में है, उसी के अंतर्गत सभी बादशाह, अत्याचारी एवं आपके शत्रु, सभी हैं।

आपकी ज़िम्मेवारी केवल यह है कि उसकी शरण लें एवं उसे पुकारें: हमें अल्लाह काफ़ी है, और वह अति उत्तम प्रबंध कर्ता है!

❒ आपका छिप्त व प्रकट, बाह्य व अंदर (एवं ओढ़ना बिछौना) ...

(यही कलेमा व जाप होना चाहिये किः) "हमारे लिये अल्लाह काफ़ी व पर्याप्त है!", यह कलेमा (जाप) कुशादगी, उदारता व समृद्धि की कुंजी तथा सौभाग्यशालिता का द्वार हैः

﴿فَٱنقَلَبُواْ بِنِعۡمَةٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَفَضۡلٖ لَّمۡ يَمۡسَسۡهُمۡ سُوٓءٞ وَٱتَّبَعُواْ رِضۡوَٰنَ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ ذُو فَضۡلٍ عَظِيمٍ ١٧٤﴾

अनुवादः (तथा अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ वापिस हुये, उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा, एवं अल्लाह की प्रसन्नता (के मार्ग) पर चले, और अल्लाह बड़ा दयाशील है)"। सूरह आले इमरानः 174।

जब आप को रोग का अथवा व्यवसाय में क्षति का, अथवा निर्धनत व दरिद्रता का, अथवा संतान के प्रति (किसी अहित) का, या किसी अत्याचारी अथवा शत्रु (के ज़ुल्म व अत्याचार) का भय खाये जा रहा हो, तो आप यह कलेमा व जाप दोहरायें किः "अल्लाह मेरे लिये पर्याप्त है, और वह अति उत्तम कारसाज़, प्रबंधक व उपाय कर्ता है!"।

जब महिला को प्रसूति के समय पीड़ा व कठिनाई हो, अथवा अपने शिशु की जान या अपनी जान जाने का भय हो, तो वह इस कलेमा व जाप का उच्चारण बारंबार करे किः "अल्लाह मेरे लिये पर्याप्त है, और वह अति उत्तम कारसाज़, प्रबंधक व उपाय कर्ता है!"।

इब्नुसुन्नी के निकट मरफ़ूअ जब्कि अबू दाऊद के निकट मौक़ूफ़ रिवायत आई है तथा शुऐब अरनऊत ने इसकी सनद को स़ह़ीह़ कहा है किः "जो व्यक्ति भोर-सांझ सात बार यह दुआ पढ़ेः حَسْبِيَ اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ العَرْشِ العَظِيمِ (अर्थातः अल्लाह तआला मेरे लिये काफ़ी व पर्याप्त है, उसी पर मैंने भरोसा किया है, और वही अर्श - ए- अज़ीम (महान सिंहासन) का रब है), तो अल्लाह तआला उसकी सांसारिक व पारलौकिक संकटों के लिये काफ़ी होगा"।

❒ आपके प्रतीक चिह्न का अर्थः

हे मेरे पालनहार! मैंने तेरी शरण ली, मैं तेरी सुरक्षा में आया, जिस चीज़ से भयभीत हूँ उस पर तुझ से सहायता माँगी, केवल तुझ पर ही भरोसा किया, तू ही मेरे लिये काफ़ी है, तू ही मेरी आशा, मेरा भंडार एवं मेरा आश्रय है!

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلۡمُضۡطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكۡشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾

अनुवादः (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब वह उसे पुकारे?!, और दूर करता है दुःख को)। सूरह नम्लः 62।

जब आप को यह विश्वास हो जाये कि अल्लाह तआला ही काफ़ी एवं वही ह़सीब अर्थातः हिसाब करने वाला है, तो आप उसके सिवा किसी और के समक्ष अपनी आवश्यकतायें नहीं रखेंगे।

وهو الحسيبُ كفايةً وحمايةً   والْحَسْبُ كافِي العبدَ كلَّ أوانِ

अनुवादः वही (अल्लाह) काफ़ी व पर्याप्त है किफ़ायत के लिये भी एवं सुरक्षा के लिये भी, किफ़ायत का अर्थ यह है कि बंदा को उसकी (सुरक्षा एवं) किफ़ायत सदा प्राप्त रहे।

❒ ताकि मार्ग सलामत व सुरक्षित रहेः

जब मोमिन यह जान लेता है कि अल्लाह कल (क़्यामत के दिन) हर छोटे-बड़े कर्म पर उसका मुह़ासबा (जाँच-पड़ताल) करेगा, अल्प एवं तुच्छ चीज़ों का भी उससे ह़िसाब लेगा, उससे कोई भी वस्तु छिप्त नहीं, मख़लूक़ (रचना) का मुह़ासबा करना, उत्पत्ति कर्ता एवं मुह़ासबा करने वाले (अल्लाह) के लिये कदापि कठिन नहीं, (जब उसे इन बातों का पूर्ण विश्वास हो जाता है) तो वह सदा तैयारी में रहता है, प्रत्येक स्थिति में महानतम व सर्वोच्च अल्लाह को निगराँ व निगहबान मानता हैः

﴿ثُمَّ رُدُّوٓاْ إِلَى ٱللَّهِ مَوۡلَىٰهُمُ ٱلۡحَقِّۚ أَلَا لَهُ ٱلۡحُكۡمُ وَهُوَ أَسۡرَعُ ٱلۡحَٰسِبِينَ ۝٦٢﴾

अनुवादः (फिर उन्हें अल्लाह के पास भेजा जाता है जो उनका वास्तविक स्वामी है, निश्चय ही उसी को निर्णय करने का अधिकार है, और वह अतिशीघ्र हिसाब लेने वाला है)। सूरह अनआमः 62।

मुसनद अह़मद में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है, वह कहती हैं किः मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी नमाज़ में यह दुआ पढ़ते हुये सुनाः اللَّهُمَّ حَاسِبْنِي حِسَابًا يَسِيرًا (अर्थातः हे अल्लाह मेरा हिसाब किताब आसान करना), तो मैंने पूछाः हे अल्लाह के नबी! आसान हिसाब किताब से क्या तात्पर्य है? आपने फ़रमायाः “(इससे अभिप्राय यह है कि) अल्लाह तआला उसके नामा -ए- आमाल (कर्मपत्र) को देखे तथा उसे दरगुज़र व अनदेखा कर दे, क्योंकि उस दिन -हे आइशा!- जिसका मुह़ासबा (जाँच पड़ताल) किया जायेगा वह अवश्य नाश हो कर रहेगा”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

उमर बिन ख़त़्त़ाब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह फ़रमाते हैं किः “इस से पहले कि तुम्हारा हिसाब लिया जाये, तुम अपना मुह़ासबा स्वयं कर लो, इससे पहले कि तुम्हारे

आमाल (कर्म) तौले जायें तुम स्वयं उन्हें तौल लो, बड़े हिसाब किताब के लिये उत्तम तैयारी करो, उस दिन तुम पेश किये जाओगे और तुम से कोई भी चीज़ पोशीदा व छुपा कर नहीं रखी जायेगा"।

अल्लामा क़ुर्तुबी लिखते हैं किः "किसी नेक व संत व्यक्ति का कथन है किः यह एक ऐसी पुस्तक है तुम्हारी जिह्वा जिसका कलम है, तुम्हारा लुआब (थूक) उसकी रौशनाई है, तुम्हारे अंग-प्रत्यंग उसके काग़ज़ हैं, तथा अपने लेखनाधिकारियों एवं संरक्षकों को तुम ने ही लिखवाया है, इसमें किसी प्रकार की कोई कमी बेशी नहीं की गई, यदि तुम इस में से किसी चीज़ का इंकार करोगे तो स्वयं तुम्हारा शरीर तुम्हारे विरुद्ध गवाही देगाः

﴿ٱقْرَأْ كِتَٰبَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ١٤﴾

अनुवादः (अपना कर्मलेख पढ़ लो, आज तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिये पर्याप्त है)। सूरह बनी इस्राईलः 14"।

❒ नसीहत व सदुपदेश ...

आख़िरत (परलोक) में एक ऐसी अदालत कायम होगी जहाँ समस्त अधिकार लौटाये जायेंगे, वहाँ रूपया पैसा तो नहीं होगा, किंतु नेकियों एवं सदकर्मों के द्वारा उसका बदला चुकाया जायेगा, उस समय आप को जिस चीज़ की सर्वाधिक आवश्यकता होगी वह नेकी है।

सौदा का जो मूल्य होता है उसी हिसाब से उसको तौला जाता है, अतः लोहे का वज़न... टन के हिसाब से होता है... फल का वज़न... कीलो के हिसाब से... सोना का वज़न ग्राम के हिसाब से ... हीरा का वज़न ... कैरेट के हिसाब से होता है, परंतु आख़िरत में कर्मों को कण के हिसाब से तौला जायेगाः

﴿فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُۥ ٧ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ ٨﴾

अनुवादः (जिसने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा। और जिसने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा)। सूरह ज़िलज़ालः 7-8।

दूसरों के अधिकार को गबन करने से बचो! क्योंकि वह तुम्हारे लिये ह़लाल नहीं है, यद्यपि उस व्यक्ति के हक में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही क्यों न निर्णय सुना दें जो वाकपटु, चतुर एवं बातें बनाने में माहिर हो, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप फ़रमाते हैं किः "मैं मानव ही हूँ, तुम अपने मामलों को मेरे पास लाते

हो, संभव है कि तुम में से कुछ लोग अन्य की तुलना में अपनी दलील अधिक बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता रखते हों, तो मैं उनके हक में निर्णय कर दूँ जैसाकि मैंने उन से सुना हो, तो जिस व्यक्ति के लिये मैं उसके भाई के किसी हक का निर्णय कर दूँ तो वह उस में से कदापि कुछ भी न ले, क्योंकि मैं उसके लिये आग का एक टुकड़ा काट रहा हूँ"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

हे अल्लाह! तू ही हमारा मुहासिब है, और इतना काफ़ी है ... तू हमारे हक में फैसला कर दे, हमारे विरुद्ध नहीं, हमारे, हमारे माता-पिता एवं समस्त मुसलमानों के पापों को क्षमा कर दे।

(69)

(अल-शहीद जल्ल जलालुहु)

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपनी महान ज़ात की प्रशंसा अपने महान नाम "अल-शहीद" के द्वारा की है, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ﴾

अनुवादः (निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है)। सूरह हजः 17।

अल्लाह तआला का महान नाम (अल-शहीद, अर्थातः गवाह) अल्लाह तआला की महान किताब क़ुरआन में अट्ठारह स्थान पर प्रयुक्त हुआ है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जिस से कोई भी चीज़ ग़ायब नहीं, वह हर चीज़ का संरक्षक व निगराँ है, उसका ज्ञान सभी चीज़ों को अपने घेरा में लिये हुये है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह हक़ व सत्य की गवाही देता है, पीड़ितों के संग न्याय करता है, अत्याचारियों से प्रतिशोध लेता है, वह छिप्त व प्रकट सभी प्रकार की ध्वनियों को सुनता एवं हर छोटी बड़ी मख़लूक़ (प्राणी) को देखता है, उसका इल्म एवं ज्ञान प्रत्येक वस्तु को अपने घेरा में लिये हुये है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो अपने बंदों के समस्त अच्छे व बुरे कर्मों का गवाह है, उसकी गवाही सभी गवाहियों का आधार, स्रोत एवं मूल तथा उन सब से बढ़ कर है, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह से कोई भी वस्तु छिप्त नहीं, इसलिये वह उन सभी चीज़ों पर गवाह है, अर्थातः उन वास्तविकताओं से अवगत एवं उन पर निगराँ है, इसलिये कि कोई भी वस्तु उस महानतम व सर्वोच्च ज़ात (अल्लाह) से छिप्त नहीं।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की शान की महानता है किः उसने अपनी ज़ात की वहदानियत (एकेश्वरवादिता) की गवाही दी और यह गवाही दी कि वह इंसाफ व न्याय को कायम रखताहैः

﴿شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَأُو۟لُوا۟ ٱلْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِٱلْقِسْطِ﴾

अनुवादः (अल्लाह साक्षी है जो न्याय के साथ कायम है, कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है, इसी प्रकार से फ़रिश्ते और ज्ञानी लोग भी साक्षी हैं (कि उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं))। सूरह आले इमरानः 18।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की गवाही मोमिन बंदों को सच्चा प्रमाणित करने के लिये होती है जब वह तौह़ीद पर कायम व स्थिर रहते हैं, इसी प्रकार से उसके रसूलों एवं फ़रिश्तों के लिये होती हैः

﴿وَأَرۡسَلۡنَٰكَ لِلنَّاسِ رَسُولٗاۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ شَهِيدٗا﴾

अनुवादः (हम ने आप को सभी मानव का रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा है, और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य पर्याप्त है)। सूरह निसाः 79।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की गवाही अत्याचारी, ज़ालिम एवं सितम ढ़ाने वालों के विरुद्ध उस अत्याचारित व पीड़ित के हक में होती है, जिसका न कोई गवाह होता है एवं न सहायक, इस गवाही में सहायता व मदद शामिल होती है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ شَهِيدٌ﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है)। सूरह हजः 17।

बंदे उसकी वह़दानियत (एकेश्वरवाद) की गवाही देते हैं तथा उसके लिये बंदगी, भक्ति एवं दासिता का इकरार करते हैं:

﴿وَإِذۡ أَخَذَ رَبُّكَ مِنۢ بَنِيٓ ءَادَمَ مِن ظُهُورِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ وَأَشۡهَدَهُمۡ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمۡ أَلَسۡتُ بِرَبِّكُمۡۖ قَالُواْ بَلَىٰ شَهِدۡنَآۚ﴾

अनुवादः (तथा (वह समय याद करो) जब आप के पालनहार ने आदम के पुत्रों की पीठों से उन की संतति को निकाला, एव उन को स्वयं उन पर साक्षी (गवाह) बनायाः क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सब ने कहाः क्यों नहीं? हम (इस के) साक्षी हैं)। सूरह आराफ़ः 172।

❒ वास्तविकताः

बंदों की गवाही एवं उनकी निगरानी सीमित समय के लिये होती हैं, जिनमें ठहराव आना निश्चित होता है, क्योंकि बंदा सोता है, उसे असावधानी, दुर्बलता एवं मृत्यु लगती हैं, परंतु महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की निगरानी सम्पूर्ण तथा सदा के लिये है, वह अमर व चिरजीवी है, उसे मृत्यु नहीं आतीः

﴿وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾

अनुवादः (मैं उन की दशा जानता था जब तक उन में था और जब तू ने मेरा समय पूरा कर दिया तो तू ही उन को जानता था, और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है)। सूरह माइदाः 117।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की गवाही सबसे बड़ी गवाही है, उसकी गवाही का अर्थ यह है कि वह (हर चीज़ की) निगरानी करता एवं उसे देखता है, उससे (वस्तुओं की) वास्तविकता का कोई कोण छिप्त नहीं रहता, जैसाकि मानव के साथ होता है, चुनाँचे अल्लाह तआला जिसके बारे में गवाही दे दे तो वह उसके लिये काफी है, फिर उसे किसी और स्थान से गवाही लेने की कदापि आवश्यकता नहीं रहतीः

﴿قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُم بِهِ وَمَن بَلَغَ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ قُل لَّا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ١٩﴾

अनुवादः (हे नबी! इन (मुश्रिकों) से पूछें कि किस की गवाही सब से बढ़ कर है? आप कह दें कि अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच गवाह है, तथा मेरी ओर यह क़ुरआन वह़्य (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हें सावधान करूँ, तथा उसे जिस तक यह पहुँचे, क्या वास्तव में तुम यह साक्ष्य (गवाही) दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं? आप कह दें कि मैं तो इस की गवाही नहीं दे सकता, आप कह दें कि वह तो एक ही पूज्य है, तथा वास्तव में मैं तुम्हारे शिर्क से विरक्त हूँ)। सूरह अनआमः 19।

यह गवाही वह मारक हथियार है जिस के द्वारा हम विरोधियों का मुकाबला कर सकते हैं:

﴿وَيَقُولُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ لَسۡتَ مُرۡسَلٗاۚ قُلۡ كَفَىٰ بِٱللَّهِ شَهِيدَۢا بَيۡنِي وَبَيۡنَكُمۡ وَمَنۡ عِندَهُۥ عِلۡمُ ٱلۡكِتَٰبِ ٤٣﴾

अनुवादः ((हे नबी!) जो काफिर हो गये, वे कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुये (रसूल) नहीं हैं, आप कह दें किः मेरे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही तथा उनकी गवाही जिन्हें किताब का ज्ञान दिया गया काफी है)। सूरह रअदः 43।

❒ जिस दिन (आमाल, कर्म) पेश किये जायेंगे ...

जब बंदे अल्लाह पाक व पवित्र के समक्ष क़्यामत के दिन उपस्थित होंगे, तो अल्लाह तआला उन का इस प्रकार से मुहासबा (जाँच-पड़ताल) करेगा जिस प्रकार से उनकी परिस्थितियों से परिचित, उनके भेदों से अवगत तथा उनके कथनों एवं कर्मों का हिसाब रखने वाला (अल्लाह) उन का हिसाब कर सकता हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ شَهِيدٌ﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है)। सूरह हजः 17।

﴿وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ شَهِيدٗا﴾

अनुवादः (और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य पर्याप्त है)। सूरह निसाः 79।

मोमिन को यह विश्वास होता है तथा वह भलि भांति जानता है कि उसका अमल (कर्म) अल्लाह के निकट व्यर्थ व बेकार नहीं होगाः

﴿قُلۡ مَا سَأَلۡتُكُم مِّنۡ أَجۡرٖ فَهُوَ لَكُمۡۖ إِنۡ أَجۡرِيَ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ شَهِيدٞ ٤٧﴾

अनुवादः (आप कह दें किः मैंने तुम से कोई बदला नहीं माँगा है तो वह तुम्हारे ही लिये है, मेरा बदला तो बस अल्लाह पर है, और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है)। सूरह सबाः 47।

रही बात काफ़िर की, तो उसका भी कोई अमल (कर्म) व्यर्थ नहीं होगा, यदि वह भूल भी गया होगा तो अल्लाह ने उसे गिन रखा हैः

﴿أَحْصَاهُ ٱللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾

अनुवादः (गिन रखा है उसे अल्लाह ने और वह भूल गये हैं उसे, एवं अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है)। सूरह मुजादलाः 6।

❒ आपकी शान ...

जो व्यक्ति यह जान ले कि उसका पाक व पवित्र पालनहार उसके अंदर व बाहर, छिप्त व प्रकट पर गवाह है, उसे इस बात से लज्जा आयेगी कि अल्लाह तआला उसे कुकर्म करते हुये देखे, अथवा ऐसा कृत्य करते हुये देखे जो उसे पसंद नहीं, जो व्यक्ति यह जान ले कि अल्लाह तआला उसे देख रहा है, वह अपने कर्मों एवं इबादतों को उत्तम ढ़ंग से इख़्लास व निष्ठा के साथ अदा करेगा, ताकि एह्सान के स्थान को पा सके, जो कि अनुपालन व भक्ति का उच्चतम स्थान है, जिसके विषय में हमारे प्रिय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तुम अल्लाह की इबादत व उपासना इस प्रकार से करो कि मानो तुम उसे देख रहे हो और यदि यह भावना नहीं उत्पन्न हो सके तो (यह ध्यान रखो) कि वह तुम्हें अवश्य देख रहा है"। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

إِذَا مَا خلَوتَ الدَّهرَ يَومًا فَلا تَقُل   خَلَوتُ وَلَكِن قُل عَلَيَّ رَقِيبُ
وَلَا تَحْسَبَنَّ اللهَ يَغفَلُ سَاعَة   وَلا أَنَّ مَا يَخفَى عَلَيهِ يَغِيبُ

अनुवादः संसार के अंदर जब कभी तन्हाई व एकांत में रहो तो यह मत कहो कि मैं एकांतावास में हूँ, अपितु यह कहो कि मेरे ऊपर एक निगहबान है (जो मुझे देख रहा है)। यह कदापि मत समझो कि वह (अल्लाह) एक क्षण के लिये भी ग़ाफ़िल व असावधान होता है और न ही उस (के इल्म व ज्ञान) से कोई चीज़ छिप्त व गुप्त है।

मोमिनों की शान व पहचान यह है किः वह हर समय यह याद रखते हैं कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उनके हर छोटे बड़े कर्म को देख रहा है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فِى ٱلسَّمَآءِ وَلَآ أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ﴾

अनुवादः (आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी हुई नहीं रहती और न आकाश में न इससे कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है)। सूरह यूनुसः 61।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन की ओर भेजना चाहा, तो उन्होंने कहाः "हे अल्लाह के रसूल! मुझे कुछ नसीहत व उपदेश दीजिये, आप ने फ़रमायाः जब तक सामर्थ्य हो अल्लाह के तक़्वा (भय) को दृढ़ता व अडिगता के साथ पकड़े रहना तथा समस्त पेड़ पत्थर के पास अल्लाह सुब्हानहु व तआला का ही नाम लेना"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इमाम अह़मद ने रिवायत किया है)।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "राह चलते हुये, घर के अंदर, यात्रा व विश्राम में तथा सभी स्थानों में सदा अल्लाह के ज़िक्र व मंत्र का बारंबार जाप करने से क़्यामत के दिन बंदे के हक में गवाही देने वालों की संख्या में वृद्धि होती है"।

﴿يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝٤﴾

अनुवादः (उस दिन वह (धरती) अपनी सभी सूचनाओं का वर्णन कर देगी)। सूरह ज़िलज़ालः 4।

﴿وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ شَهِيدًا﴾

अनुवादः (और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य पर्याप्त है)। सूरह निसाः 79।

किसी ने कहा है किः जो व्यक्ति अपनी कल्पनाओं में अल्लाह तआला को निगराँ व निगहबान समझता है, अल्लाह तआला शारीरिक अंगों से संबंधित (सभी) गतिविधियों में उसकी ह़िफ़ाज़त व सुरक्षा करता है।

यदि आप उन सात प्रकार के लोगों (की स्थिति) में विचार करेंगे जिन्हें अल्लाह उस दिन अपनी छाया में जगह देगा जिस दिन उस की छाया के सिवा कोई छाया न होगी, तो आपको दृष्टिगोचर होगा कि जो चीज़ उन सबमें एक समान है वह यह किः उन्होंने इस बात पर पूर्ण ईमान रखा कि अल्लाह तआला उन्हें देख रहा है, चुनाँचे उन्होंने अल्लाह की ऐसी ही इबादत व पूजा की कि मानो वह अल्लाह को देख रहे हों, (जिसके फलस्वरूप) वह इस उच्च स्थान के भागी बने।

हे अल्लाह! हे शहीद (गवाह)! हम तुझ से यह दुआ करते हैं कि हमें क्षमा कर दे, हम पर दया कर, तथा हे सभी दयालुओं से बढ़ कर (अति) दयालु! हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे।

(70)

(अल-हक़ जल्ल जलालुहु)

अल्लाह ने सोच-विचार करने वालों के लिए अपना मार्दर्शन बिल्कुल स्पष्ट कर दिया, बसारत (आँख) रखने वालों के लिए अपने लक्षण एवं चिह्न जाहिर कर दिए, समस्त संसार वासियों के लिए अपनी निशानियां खोल-खोल कर बयान कर दीं, अत्याचारियों के लिए माज़रत एवं क्षमा याचना के सभी दरवाज़े बंद कर दिए, इंकार करने वालों की सभी दलीलों को बातिल एवं प्रभावहीन कर दिया, चुनाँचे रुबूबियत की निशानियां स्पष्ट हो गईं एवं उलूहियत के प्रमाण खुल कर सामने आ गए, संदेह के बादल छँट गये एवं उसका अंधकार दूर हो गयाः

﴿فَذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمُ ٱلْحَقُّ﴾

अनुवादः (तो वही अल्लाह तुम्हारा सत्य पालनहार है)। सूरह यूनुसः 32।

﴿فَتَعَٰلَى ٱللَّهُ ٱلْمَلِكُ ٱلْحَقُّ﴾

अनुवादः (अतः उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी)। सूरह ताहाः 114।

﴿ثُمَّ رُدُّوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ مَوْلَىٰهُمُ ٱلْحَقِّ﴾

अनुवादः (फिर उन्हें अल्लाह के पास भेजा जाता है जो उनका वास्तविक स्वामी है)। सूरह अनआमः 62।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो अपनी ज़ात में, अपने अस्मा व सिफ़ात (नाम व गुण) में तथा अपने अफ़आल (कर्मों) में सत्य, सच्चा व बरहक़ है, उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं।

वही महा शक्तिशाली व सर्वोच्च हक व सत्य है, तथा हक व सत्य के सिवा जो कुछ है वह असत्य, बातिल व व्यर्थ है, जिसने महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के सिवा किसी और माबूद, पूज्य व उपास्य का दावा किया तो उसने बातिल, झूठ, बोहतान एवं मिथ्या का दावा कियाः

﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ هُوَ ٱلْبَٰطِلُ وَأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْعَلِيُّ ٱلْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾﴾

अनुवादः (यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है, और जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वही असत्य हैं, और अल्लाह ही सर्वोच्च महान है)। सूरह हजः 62।

हमारा महानतम व सर्वोच्च पालनहार ह़क़ व सत्य है, उसका कथन ह़क़ व सत्य है, उसका फेअल (कर्म) ह़क़ व सत्य है, उससे भेंट करना ह़क़ व सत्य है, उसके समस्त रसूल व पुस्तकें ह़क़ व सत्य हैं, उसका (उतारा हुआ) धर्म ह़क़ व सत्य है, केवल उसी एकमात्र की इबादत व पूजा करना जिसका कोई शरीक व साझी नहीं ह़क़ व सत्य है, तथा प्रत्येक वह वस्तु जो ह़क़ व सत्य के साथ उससे संबद्ध की जाती है ह़क़ व सत्य हैः

﴿فَتَعَٰلَى ٱللَّهُ ٱلْمَلِكُ ٱلْحَقُّ﴾

अनुवादः (अतः उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी)। सूरह त़ाहाः 114।

اللهُمَّ أَنْتَ الْحَقُّ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ، وَقَوْلُكَ حَقٌّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ

(अर्थातः तू सच व सत्य है, और तेरा वादा सच्चा व सत्य है, तुझसे भेंट करना सच व सत्य है, तेरा कथन सच्चा व सत्य है, जन्नत सत्य व सच है, जहन्नम सत्य व सच है, सारे अम्बिया सत्य व सच्चे हैं तथा क़्यामत सत्य व सच है)।

❒ द्वंद व ऊहापोह ...

सत्य व असत्य के मध्य द्वंद व कशमकश सदा से है, जो अल्लाह के साथ होता है वह बिल्कुल स्पष्ट ह़क़ व सत्य पर होता है, तथा उसी के लिये लोक परलोक में विजय व प्रभुत्व हैः

﴿هُوَ ٱلَّذِىٓ أَرْسَلَ رَسُولَهُۥ بِٱلْهُدَىٰ وَدِينِ ٱلْحَقِّ لِيُظْهِرَهُۥ عَلَى ٱلدِّينِ كُلِّهِۦ وَلَوْ كَرِهَ ٱلْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾﴾

अनुवादः (उसी ने अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सत्यधर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है ताकि उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, यद्यपि मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) को बुरा लगे)। सूरह तौबाः 33।

ईमान वाले ह़क़, सत्य व सच्चाई का अनुसरण करते हैं:

﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ ٱتَّبَعُواْ ٱلۡبَٰطِلَ وَأَنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّبَعُواْ ٱلۡحَقَّ مِن رَّبِّهِمۡۚ كَذَٰلِكَ يَضۡرِبُ ٱللَّهُ لِلنَّاسِ أَمۡثَٰلَهُمۡ ٣﴾

अनुवादः (यह इस कारण कि जिन्होंने कुफ्र किया और चले असत्य पर तथा जो ईमान लाये वह चले सत्य पर अपने पालनहार की ओर से (आये हुये) इसी प्रकार बता देता है अल्लाह लोगों को उन की सही दशायों)। सूरह मुह़म्मदः 3।

ईमान वाले परस्पर (एक दूसरे को) हक, सत्य व सच्चाई के मार्ग पर चलने की वसीयत करते हैं:

﴿وَٱلۡعَصۡرِ ١ إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لَفِي خُسۡرٍ ٢ إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلۡحَقِّ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلصَّبۡرِ ٣﴾

अनुवादः (निचड़ते दिन की शपथ। निःसंदेह इंसान क्षति मे है। सिवाय उन के जो ईमान लाये तथा सदाचार किये एवं एक दूसरे को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का उपदेश देते रहे)। सूरह अस्रः 1-3।

जो व्यक्ति ह़क़ व सत्य स्पष्ट हो जाने के पश्चात भी उसका इंकार करे, तो वहः मुतकब्बिर, अहंकारी, घमण्डी एवं अपने ऊपर अत्याचार करने वाला है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "तकब्बुर व अहंकारः ह़क़ व सत्य को स्वीकार न करना तथा लोगों को तुच्छ, हेय व हीन समझना है"।

❒ मार्ग किधर है?

कुछ लोग अपने दिलों के अंदर से निकलने वाली नैसर्गिक व प्राकृतिक आवाज़ पर भरोसा करते हैं:

﴿فِطۡرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِي فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيۡهَاۚ﴾

अनुवादः (अल्लाह की फ़ित़रत व प्रकृति वह फ़ित़रत व प्रकृति है जिस पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को)। सूरह रूमः 30।

जब कुछ लोग “करणीय संबंध, कार्य-कारण” नामक फ़लसफ़ा व विचार को दलील बनाते हैं जो यह प्रमाणित करता है कि हर प्रभाव का हमेशा एक कारण होता है, हर शिल्प का एक शिल्पकार होना आवश्यक है, हर घटना का कोई न कोई अविष्कारक होता है, तथा प्रत्येक व्यवस्था के पीछे कोई न कोई व्यवस्थापक का होना अपरिहार्य है।

कुछ लोग इसे हिसाब किताब का मसला समझते हैं, ये संदेह करने वाले लोग हैं, वो इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उनके सांसारिक जीवन एवं पारलौकिक जीवन की (सफलता की) सबसे अधिक ज़मानत जो चीज़ देती है, वह हैः अल्लाह तआला पर, आख़िरत पर, पुनः उठाये जाने पर तथा दण्ड व बदला पर ईमान लाना, जैसाकि उन का कवि कहता हैः

قالَ الْمُنَجِّمُ والطبيبُ كلاهُما　　لا تُبعثُ الأمواتُ قلتُ: إليكما

إن جاءَ قولُكما فلستُ بِخَاسرٍ　　أو جاءَ قَولِي فالخَسَارُ عليكما

अनुवादः भविष्यवक्ता एवं डॉक्टर का कहना है कि मृतक पुनर्जीवित नहीं किये जायेंगे, मैं उन से कहता हूँ किः सुन लो, यदि तुम्हारी बात सच साबित हुई तो मुझे कोई क्षति नहीं होगी परंतु यदि मेरी बात सत्य प्रमाणित हुई तो तुम दोनों को भारी क्षति का सामना करना पड़ेगा।

संदेह के साथ ईमान लाने से मोक्ष व मुक्ति नहीं मिल सकती, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿أَفِي ٱللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ﴾

अनुवादः (क्या अल्लाह के बारे में तुम्हें संदेह है जो आसमान व ज़मीन का बनाने वाला है)। सूरह इब्राहीमः 10।

कुछ लोग ऐसे हैं जो अब भी अचंभित व हैरान हैं तथा शिर्क (बहुदेववादिता) अंजाम दिये जा रहे हैं -हम अल्लाह की शरण चाहते हैं लाभ के पश्चात हानि से एवं मार्गदर्शन के पश्चात कुमार्ग हो जाने से-:

﴿أَفَمَن يَعۡلَمُ أَنَّمَآ أُنزِلَ إِلَيۡكَ مِن رَّبِّكَ ٱلۡحَقُّ كَمَنۡ هُوَ أَعۡمَىٰٓۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُوْلُواْ ٱلۡأَلۡبَٰبِ ١٩﴾

अनुवादः (तो क्या जो जानता है कि आप के पालनहार की ओर से जो (क़ुरआन) आप पर उतारा गया है सत्य है, उस के समान है, जो अंधा है? वास्तव में बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं)। सूरह रअदः 19।

वास्तविकता यह है किः प्रत्येक वह चीज़ जिसके विषय में दलील से प्रमाणित हो कि वह आप को महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के निकट कर देगा तो वहः ह़क़ व सत्य है, तथा प्रत्येक वह चीज़ जो उससे दूर कर दे, वहः बात़िल व असत्य हैः

﴿قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ﴾

अनुवादः (हे नबी! कह दीजिये किः यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम करने लगेगा)। सूरह आले इमरानः 31।

इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः ‘‘इंसान का सौभाग्य व सदाचारिता मात्र यह नहीं है कि वह केवल ह़क़ व सत्य की पहचान रखता हो, परंतु न तो उसे प्रिय रखता हो, न उसकी चाहत रखता हो और न उसका अनुसरण करता हो’’।

हानि केवल यह नहीं किः मानव को जान माल एवं संतान की हानि हो, अपितु घोर विपदा एवं सबसे बड़ी क्षति यह है कि मानव को धर्म के संबंध में हानि पहुँचे! चुनाँचे विश्वास के स्थान पर संदेह व भ्रम आ जाये, जिसके परिणामस्वरूप वह ह़क़ को बात़िल, अर्थातः सत्य को असत्य तथा बात़िल को ह़क़ अर्थातः असत्य को सत्य मानने लगे, सदकर्म को कुकर्म तथा कुकर्म को सदकर्म समझने लगे।

❒ मोक्ष की वादी में उतर जाओ!

वह कौनसा बड़ा मामला, घोर संकट एवं बड़ी विपदा है जिसे दूर करना महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के लिये कठिन है? अल्लाह ही सत्य है, उसका कलाम (वाणी) सच्चा एवं उसका वादा सच्चा है।

इसलिये बंदा पर भी यह हक बनता है कि वह अपने पालनहार के प्रति अच्छा गुमान रखे, उसी पर भरोसा करे, उसके फ़ज़्ल, एह़सान व उपकार की प्रतीक्षा करे, अपने अति दयालु स्वामी से लुत़्फ़, मेहरबानी व कृपा की आशा रखे, तथा उसके वादों पर भरोसा रखे, क्योंकि वही है जो ख़ैर व भलाई से अनुग्रहित करता तथा हानि व बुराई को दूर करता है, प्रत्येक सांस में उसकी दया शामिल है, प्रत्येक गतिविधि में कोई न कोई ह़िकमत व तत्वदर्शिता छिप्त है, हर

क्षण वह कोई न कोई कुशादगी व उदारता से नवाज़ता है, वही है जो रात के बाद सुबह तथा सुखाड़ के पश्चात वर्षा लाता है।

अल्लाह तआला सच्चे मोमिन की दुआ को रद्द नहीं करता, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ह़क़ व सत्य है, उसका वादा सच्चा है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह फ़रमाता हैः

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡۚ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَسۡتَكۡبِرُونَ عَنۡ عِبَادَتِي سَيَدۡخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ٦٠﴾

अनुवादः (कहा है तुम्हारे पालनहार ने कि मुझी से प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा, वास्तव में जो अभिमान (अहंकार) करेंगे मेरी इबादत (बंदना-प्रार्थना) से तो वह प्रवेश करेंगे नरक में अपमानित हो कर)। सूरह मोमिनः 60।

ज्ञात हुआ कि आप की सभी परेशानियां व संकट दूर होने वाले हैं, आप के समस्त दुःख दर्द सुख व राहत में परिवर्तित होने वाली हैं, आप के सभी स्वप्न सच्चे होने वाले हैं, और आप के आँसू मुस्कान में बदलने वाले हैं ... आप निश्चिंत रहें!

क्योंकि निर्धनता के पश्चात समृद्धि, प्यास के पश्चात तृप्ति, जुदाई के पश्चात भेंट, अलगाव के पश्चात जुड़ाव एवं संबंद्ध विच्छेद होने के पश्चात संबंध में सुधार होना निश्चित है, अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला फ़रमाता हैः

﴿فَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِۖ إِنَّكَ عَلَى ٱلۡحَقِّ ٱلۡمُبِينِ ٧٩﴾

अनुवादः (अतः आप भरोसा करें अल्लाह पर, वस्तुतः आप खुले सत्य पर हैं)। सूरह नम्लः 79।

हे अल्लाह! ह़क़ व सत्य को हमारी दृष्टि में ह़क़ व सत्य बना कर दिखा तथा हमें उसका अनुसरण करने की तौफ़ीक़ व अनुकंपा प्रदान कर, बात़िल व मिथ्या को हमारी दृष्टि में बात़िल व मिथ्या बना कर दिखा तथा हमें उससे बचने की तौफ़ीक़ व अनुकंपा प्रदान कर।

(71)

(अल-मुबीन जल्ल जलालुहु)

अपने मुबीन (प्रकट व स्पष्ट करने वाले, स्वामी) के द्वार को अडिग हो कर पकड़ लो, क़ादिर, समर्थ व महा ज्ञानी आका से सम्मान व आदर प्राप्त करो, अनुसरण व आज्ञापालन के द्वारा उसका सामीप्य प्राप्त करो, वह तुम्हें अपनी नियामतों व अनुग्रहों से नवाज़ेगा।

यदि तुम उसका आज्ञापालन करोगे तो वह आदर सत्कार से अनुग्रहित करेगा तथा तुम्हें प्रभुत्व व श्रेष्ठा प्रदान करेगा, यदि तुम उसके आज्ञापालन से विमुखता प्रकट करोगे तो तुम पर दया करते हुये मोहलत देगा, फिर यदि तुम तौबा व पश्चाताप करोगे तो तुम्हारी तौबा व पश्चाताप को स्वीकार करेगा, और यदि अवज्ञा एवं कुकर्म करोगे तो तुम्हारे गुनाहों पर पर्दा डाल देगा।

उसकी ओर आकर्षित होने से ही दिलों को जीवन प्राप्त होता है, उसकी जुदाई के भय अथवा उससे मिलने की ख़ुशी में ही आँसू छलकते हैं।

कहने वाले ने सच कहा है किः "अल्लाह की क़सम! जिसे अल्लाह अमन व शांति न दे उसके लिये मार्ग बड़ा भयानक एवं जोखिम भरा होता है, एवं जिसे अल्लाह का मार्गदर्शन प्राप्त न हो तो उसके लिये मार्ग बड़ा भ्रमिक एवं संदाहस्पद हो जाता है"।

हमें उस मार्ग की बड़ी आवश्यकता है जो प्रकट करने वाले अल्लाह तआला के मार्ग तक पहुँचा दे, ताकि उस तक पहुँचने का मार्ग स्पष्ट हो सके।

आइये हम महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के एक महान नाम (अल-मुबीन, अर्थातः स्पष्ट करने वाले, प्रकट करने वाले, अल्लाह) के अनवार (प्रकाश) से समीप होते (एवं उससे अपने दिलों को प्रकाशमान करते) हैं।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपनी प्रशंसा करते हुये फ़रमाया हैः

﴿يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ ٱللَّهُ دِينَهُمُ ٱلْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ ٱلْمُبِينُ ﴿٢٥﴾﴾

अनुवादः (उस दिन अल्लाह उन को उन का पूरा न्यायपूर्वक बदला देगा, तथा वो जान लेंगे कि अल्लाह ही सत्य है, (सच्चाई को) उजागर करने वाला)। सूरह नूरः 25।

(किसी) चीज़ को “बयान” (जिसके यौगिक से अल्लाह का महान नाम “मुबीन” बना है) का अर्थ होता हैः उसे स्पष्ट एवं प्रकट करना।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह समस्त संसार वासियों के लिये (सत्य को) स्पष्ट करने वाला, उसके अस्तित्व एवं वह़दानियत (एकेश्वरवाद) की बात (एवं प्रमाण) स्पष्ट है, तथा यह भी स्पष्ट है कि रुबूबियत, उलूहियत एवं अस्मा व सिफ़ात में उसका कोई शरीक व साझी नहीं।

हमारा महानतम व सर्वोच्च रब वह है जिसने अपने भक्तों के लिये हिदायत व मार्गदर्शन वाले रास्ते को स्पष्ट कर दिया, उनके समक्ष वो समस्त कर्म व कृत्य स्पष्ट कर दिये जिनके करने पर वो स़वाब व पुण्य के भागी होंगे, एवं उन कर्मों एवं कृत्यों को भी स्पष्ट कर दिया जिन को करने पर वो यातना व दण्ड के भागी होंगे, अल्लाह तआला के वादों के संबंध में मुनाफ़िक़ों व पाखण्डियों को संसार के अंदर जो संशय है वह क़्यामत के दिन दूर हो जायेगा।

स्पष्ट करने की विशेषताः अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला की महान विशेषताओं में से है।

अल्लाह तआला ने दो प्रकार से स्पष्ट किया हैः

प्रथम प्रकारः उन पुस्तकों के द्वारा जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर अवतरित किया एवं उस वह़्य व प्रकाशना के द्वारा जो उसने अम्बिया व रसूलों की ओर कीः

﴿قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ وَكِتَٰبٞ مُّبِينٞ﴾

अनुवादः (तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से नूर एवं स्पष्ट पुस्तक आ चुकी है)। सूरह माइदाः 15।

द्वितीय प्रकारः उन प्रतीक चिह्नों के द्वारा जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात (अस्तित्व) को प्रमाणित करने के लिये उत्पन्न किया हैः

﴿إِنَّ فِي خَلۡقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَٱخۡتِلَٰفِ ٱلَّيۡلِ وَٱلنَّهَارِ لَأٓيَٰتٖ لِّأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِ ١٩٠﴾

अनुवादः (वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना, एवं रात और दिन के एक के पश्चात एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुतेरी निशानियाँ (प्रतीक चिह्न) हैं)। सूरह आले इमरानः 190।

وفي كل شيءٍ له آيةٌ   تدلُ على أنه واحدٌ

अनुवादः प्रत्येक चीज़ के अंदर उसकी निशानी एवं प्रतीक चिह्न मौजूद है, जो इस बात को प्रमाणित करती है कि वह अकेला, तंहा एवं अद्वैत है।

जिस प्रकार से क़ुरआन स्पष्ट करने वाली पुस्तक है, उसी प्रकार से अल्लाह तआला के सभी रसूल भी स्पष्ट करने वाले (पैग़म्बर) थे, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने आदरणीय नूह अलैहिस्सलाम की ज़ुबानी फ़रमायाः

﴿إِنۡ أَنَا۠ إِلَّا نَذِيرٞ مُّبِينٞ ١١٥﴾

अनुवादः (मैं तो बस खुला सावधान करने वाला हूँ)। सूरह शुअराः 115।

तथा अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया था कि आप कहें:

﴿إِن يُوحَىٰٓ إِلَيَّ إِلَّآ أَنَّمَآ أَنَا۠ نَذِيرٞ مُّبِينٌ ٧٠﴾

अनुवादः (मेरी ओर तो मात्र इस लिये वह्य (प्रकाशना) की जा रही है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ)। सूरह स़ादः 70।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अपनी पुस्तकों के अंदर एवं अपने रसूलों की ज़ुबानी संसार में भक्तों को यह बता दिया कि जिस के विषय में वह संसार के अंदर मतभेद करते हैं, क़्यामत के दिन उसे अल्लाह तआला खोल कर स्पष्ट कर देगा, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمۡ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ مَا كُنتُمۡ فِيهِ تَخۡتَلِفُونَ﴾

अनुवादः (और तुम्हारे लिये प्रलय के दिन अवश्य उसे उजागर व स्पष्ट कर देगा जिस में तुम विभेद कर रहे थे)। सूरह नह़्लः 92।

जिसके समक्ष ह़क़ व सत्य स्पष्ट हो जाये, फिर भी वह उस से (लोगों को) रोके, तो उस के लिये दुखदायी यातना है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿فَإِن زَلَلۡتُم مِّنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡكُمُ ٱلۡبَيِّنَٰتُ فَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٢٠٩﴾

अनुवादः (फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलों) के आने के पश्चात विचलित हो गये, तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्वज्ञ है)। सूरह बक़रहः 209।

इसी प्रकार से वह व्यक्ति जो ह़क़ व सत्य को छुपाता है, वह भी स्वयं को लानत व धिक्कार का अपराधी बनाता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلۡنَا مِنَ ٱلۡبَيِّنَٰتِ وَٱلۡهُدَىٰ مِنۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنَّٰهُ لِلنَّاسِ فِي ٱلۡكِتَٰبِ أُوْلَٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ ٱللَّهُ وَيَلۡعَنُهُمُ ٱللَّٰعِنُونَ ١٥٩﴾

अनुवादः (तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अंतिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को इस के पश्चात किः हमने पुस्तक में उसे लोगों के लिये उजागर व स्पष्ट कर दिया है छुपाते हैं उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है, तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं)। सूरह बक़रहः 159।

❒ बुद्धिमान लोगः

स्पष्ट करने वाले अल्लाह तआला ने सोच-विचार करने वालों[1] के लिये अपनी दलीलों को स्पष्ट एवं दूरदृष्टि रखने वालों के समक्ष अपने गवाहों को प्रकट व उजागर कर

---

[1] "अल्लाहु अहलुस़्सना व अल-मज्द, अर्थातः अल्लाह प्रशंसा व स्तुति योग्य है" नामक पुस्तक के लेखक कहते हैं किः "यद्यपि मोमिन को इस बात की आवश्यकता नहीं होती कि कोई उसके समक्ष अल्लाह तआला के वजूद एवं अस्तित्व का प्रमाण पेश करे, अथवा उसे ईमान की ज़रूरत की तफ्सील बताये, तथापि मैं यहाँ कुछ वैज्ञानिकों, विचारकों एवं फलसफियों के कुछ उवाच, वाक्य, गवाहियाँ एवं इकरार का उल्लेख कर रहा हूः
अमेरीका का प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक चिकित्सक डॉक्टर(हेनरी लिंक), जो नास्तिक, धर्म का शत्रु, ईमान का एवं अल्लाह तआला के वजूद एवं अस्तित्व का इंकारी था, किंतु काफी लम्बे समय तक एवं अलग सोच का पक्षधर होने के पश्चात उसने अपनी राय वापस ली और कहाः "धर्म यह है किः एक ऐसी शक्ति के अस्तित्व पर ईमान लाया जाये जो जीवन का स्रोत है, यह शक्तिः अल्लाह की शक्ति है, जो ब्रह्माण्ड का प्रबंध करने वाला एवं आसमानों का उत्पत्ति कर्ता है"।
शिक्षक (होश) का कहना है किः "ज्ञान-विज्ञान का जितना विस्तार होता जायेगा उसी के समान असीमित शक्ति वाले ख़ालिक़ व उत्पत्ति कर्ता के अस्तित्व की ठोस व बेजोड़ दलीलें भी बढ़ती जायेंगी, भूविज्ञानियों, गणितज्ञों, खगोलविदों, प्रकृतिवादियों एवं भौतिक विज्ञानियों ने विज्ञान के निर्माण में परस्पर सहयोग से काम लिया, जो कि वास्तव में: एक अल्लाह की महानता का बयान है"।
हरबर्ट स्पेंसर अपनी पुस्तक "नैतिकता (Education; Intellectual, Moral and Physical)" में इसको विस्तार से बताते हुये कहता हैः "विज्ञान, निराधार आस्थाओं का धुर विरोधी है, परंतु धर्म मात्र

दिया, समस्त संसार वासियों के सामने उसकी जो निशानियाँ मौजूद हैं, एवं उद्दंडियों व उपद्रवियों की आपत्ति को (जिन प्रतीक चिह्नों के द्वारा उस ने) समाप्त कर दिया है, (उन में) महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का यह फ़रमान भी हैः

﴿ أَمَّن جَعَلَ ٱلْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَٰلَهَآ أَنْهَٰرًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَٰسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ ٱلْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾ أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ ٱلْأَرْضِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾ أَمَّن يَهْدِيكُمْ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ وَمَن يُرْسِلُ ٱلرِّيَٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهِۦٓ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ تَعَٰلَى ٱللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾ أَمَّن يَبْدَؤُا۟ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ وَمَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا۟ بُرْهَٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٦٤﴾ ﴾

अनुवादः (या वह है जिस ने धरती को रहने योग्य बनाया तथा उस के बीच नहरें बनायीं, एवं उस के लिये पर्वत बनाये, और बना दी दो सागरों के बीच एक रोक, तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते। या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुःख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो। यह

से उसका कोई विरोध नहीं" इसके पश्चात वह इसको सउदाहरण विस्तार से समझाता है किः "वह वैज्ञानिक जो जल की बूँद देखता है तथा जानता है कि वह आक्सीजन एवं हाइड्रोजन की एक विशेष व सीमित मात्रा के मिलने से अस्तित्व में आता है, वह इस प्रकार से कि यदि उस मात्रा का आधा भाग यदि निकाल दिया जाये तो वह जल के सिवा कुछ और बन जायेगा, तो यह वैज्ञानिक, ख़ालिक़ (रचनाकार, अल्लाह) की महानता व क्षमता एवं हिकमत व तत्वदर्शिता की आस्था उस व्यक्ति से अधिक रखता है जो भौतिक विज्ञान का माहिर न हो तथा (जल के) इस व्यवस्था में केवल यह देखता है किः वह मात्र जल की एक बूँद है"।

प्रसिद्ध प्रकृतिवादी (सर जॉन आर्थर थॉमसन) जो स्कॉटलैंड के प्रसिद्ध लेखक हैं, अपने पुस्तक संग्रह "शिक्षा एवं धर्म" में लिखते हैं किः "हम गहन सोच-विचार के पश्चात इस नतीजा पर पहुँचे हैं किः विज्ञान ने जो सबसे बड़ी सेवा अंजाम दी है वह यह है किः उस ने मानव को अल्लाह कि विषय में सोच-विचार करने को आमंत्रित किया है, जो कि अति उत्तम व सर्वश्रेष्ठ चीज़ है"।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक (विलियम जेम्स) का कहना हैः "हमारे एवं अल्लाह के बीच एक ऐसा बंधन है जो अटूट है, यदि हम अपने आप को उसकी निगरानी व संरक्षण के अंतर्गत कर लें, तो हमारी सारी आशायें एवं इच्छायें पूर्ण हो जायेंगी"।

वह है जो तुम्हें राह दिखाता है सूखे तथा सागर के अंधेरों में, तथा भेजता है वायुओं को शुभ सूचना देने के लिये अपनी दया (वर्षा) के लिये, क्या कोई और पूज्य है अल्लाह के साथ? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं। यह वह है जो आरंभ करता है उत्पत्ति को, फिर उसे दोहरायेगा तथा जो तुम्हें जीविका देता है आकाश तथा धरती से, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? आप कह दें कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे हो)। सूरह नम्लः 61-64।

पाक व पवित्र है वह ज़ात (व्यक्तित्व) जिसकी महानता ने ज्ञानियों एवं चिंतकों की बुद्धियों को अचंभित कर दिया, पाक व पवित्र है वह ज़ात जिसके अनवार एवं तजल्लियात (प्रकाश व तेज) ने (सत्यमार्ग के) राही की आँखों को चका चकौंध दिया है!

تَأَمَّل فِي نبَاتِ الأَرضِ وانظُر　　إلى آثارِ ما صَنَعَ الَمليكُ
عُيونٌ مِن لُجَينٍ شَاخصَاتٌ　　بِأَحدَاقٍ هِي الذَهَبُ السَبِيكُ
على كَثبِ الزَّبرجَدِ شَاهِدَاتٌ　　بِأَنَّ اللهَ لَيسَ لهُ شَرِيكُ

अनुवादः धरती में उगने वाले पौधों में चिंतन-मनन करो तथा बादशाह द्वारा बनाई हुई वस्तुओं में सोच-विचार करो। चाँदी के (जैसे सफेद) चक्षु अपनी काली पुतलियों के साथ ऐसे देखते हैं जैसे वह बहुमुल्य पत्थर के तराशे व ढ़ेर पर सोने की डली हों, ये सब इस बात पर गवाह हैं कि अल्लाह का कोई शरीक व साझी नहीं।

सूरह आले इमरान के अंत में महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने बुद्धिमानों की प्रशंसा की है कि उन्होंने ब्रह्माण्ड में बिखरी हुई अल्लाह की निशानियों एवं प्रतीक चिह्नों में सोच-विचार करने के लिये अपने दृष्टि खोले तो अपने दिलों के साथ अल्लाह की ओर आकर्षित हो गये, उठते बैठते और लेटते हुये भी, उन के दिल ईमान से भर गये, उन्होंने सच्चे दिल से दुआ करते हुये एवं हिदायत व मार्गदर्शन माँगते हुये अल्लाह की ओर अपने हाथ उठा लिये, जिसका जबाल अल्लाह तआला ने यों दिया हैः

﴿أَنِّي لَآ أُضِيعُ عَمَلَ عَـٰمِلٍ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ ۖ بَعْضُكُم مِّنۢ بَعْضٍ ۖ فَٱلَّذِينَ هَاجَرُوا۟ وَأُخْرِجُوا۟ مِن دِيَـٰرِهِمْ وَأُوذُوا۟ فِى سَبِيلِى وَقَـٰتَلُوا۟ وَقُتِلُوا۟ لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّـَٔاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّـٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ عِندَهُۥ حُسْنُ ٱلثَّوَابِ﴾

अनुवादः (निस्संदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य को व्यर्थ नहीं करता, नर हो अथवा नारी, तो जिन्होंने हिजरत (पलायन) की, तथा अपने घरों से निकाले गये, और मेरी राह में सताये गये और युद्ध किया, और मारे गये, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देंगे, तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें बह रही हैं, यह अल्लाह के पास से उन का प्रतिफल होगा, और अल्लाह ही के पास अच्छा प्रतिफल है)। सूरह आले इमरानः 195।

हे अल्लाह! हम तेरे महान नाम (अल-मुबीन, अर्थातः स्पष्ट करने वाले व उजागर करने वाले) के वसीला से यह दुआ करते हैं कि हमें अपनी नियामतों वाली जन्नत में प्रवेश दिला तथा हे लोक परलोक के पालनहार! हमें जहन्नम से मुक्ति दे।

(72)

(अल-मुहीत़ जल्ल जलालुहु)

इब्न ह़जर रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "जो व्यक्ति अल्लाह, उसके अस्मा व स़िफ़ात (सुंदर नाम व गुण) एवं अफ़आल व अह़काम (कर्म व कृत्य) से अधिक सूचित होगा, उसके अंदर ख़शीअत एवं तक़्वा (भय) भी अधिक होगा, जितना अल्लाह की मअरफ़त व पहचान में कमी आयेगी उसी के समान ख़शीअत एवं तक़्वा (भय) में भी कमी आयेगी।

बंदा को जब यह यक़ीन व विश्वास हो जाये कि अल्लाह ही (हर चीज़ को) "मुहीत़" (घेरा में लिये हुये) है, तो उसका हृदय शांत हो जायेगा, उसका दुःख दूर हो जायेगा, एवं उसका दिल अपने "मुहीत़" (घेरा में लिये हुये) रब से जुड़ जायेगा"।

अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला ने अपने भक्तों को यह सूचना दी है कि वह (हर चीज़ को) "मुहीत़" (घेरा में लिये हुये) है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَلِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلْأَرْضِۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٖ مُّحِيطٗا ١٢٦﴾

अनुवादः (तथा अल्लाह का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह प्रत्येक चीज़ को अपने घेरा (नियंत्रण) में लिये हुये है)। सूरह निसाः 126।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जिसके इल्म व ज्ञान से न कोई छोटी चीज़ ग़ायब है और न कोई बड़ी चीज़, न कोई प्रकट वस्तु पोशीदा व छिप्त है एवं न कोई गुप्त वस्तु, उसकी शान व वैभव बिल्कुल वैसी ही है जैसी उसने बयान की हैः

﴿أَلَآ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَيْءٖ مُّحِيطُۢ﴾

अनुवादः (याद रखो, वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है)। सूरह फ़ुस्सिलतः 54।

उसके इह़ात़ा व घेरे में: सभी परिस्थितियों से अवगत होना एवं उसका भलि भांति ज्ञान रखना, इसी प्रकार से क़ुदरत व सामर्थ्य, वृहद व व्यापक होना, इसके अतिरिक्त बादशाहत एवं शासन सभी सम्मिलित हैं।

"शर्ह़ अल-त़ह़ाविया" में आया है किः "रही बात अल्लाह तआला के हर चीज़ को "मुहीत़" (घेरा में लिये हुये) होने की तो इस बारे में महानतम व सर्वोच्च अल्लाह फ़रमाता हैः

﴿وَٱللَّهُ مِن وَرَآئِهِم مُّحِيطُۢ ﴾

अनुवादः (अल्लाह उन्हें चहुँ ओर से घेरे हुआ है)। सूरह बुरूजः 20।

﴿أَلَآ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَيۡءٖ مُّحِيطُۢ﴾

अनुवादः (याद रखो, वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है)। सूरह फ़ुस्सिलतः 54।

उसका अपनी मख़लूक़ (रचना) को इह़ात़ा व घेरा में लेने का कदापि यह अर्थ नहीं है कि वह आकाश के समान है तथा समस्त मख़लूक़ व सृष्टि उसकी ज़ात व व्यक्तित्व के अंदर समाये हुये हैं -अल्लाह तआला इस प्रकार की बातों से अति उच्च व बुलंद है-।

बल्कि इसका अर्थ यह है किः वह अपनी अज़मत व महानता, इल्म व ज्ञान की व्यापकता व गहराई एवं क़ुदरत व सामर्थ्य के द्वारा उन्हें अपने इह़ात़ा व घेरा में लिये हुआ है, और वो सभी (मख़लूक़ व सृष्टि) उसकी अज़मत व महानता की तुलना में राई के दाने के समान हैं, जैसाकि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं किः "सातों आकाश एवं सातों ज़मीन एवं उनके अंदर तथा उनके मध्य में जो कुछ भी है, वो सभी रह़मान के हाथ में वैसे ही हैं जैसे तुम में से किसी के हाथ में राई का दाना"।

❒ निःसंदेह वह "मुह़ीत़" (घेरा एवं नियंत्रण में लिये हुये) हैः

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी मख़लूक़ व सृष्टि को "मुह़ीत़" (घेरा एवं नियंत्रण में लिये हुये) हैः अर्थात पूर्णरूपेण उन्हें अपने इह़ात़ा व घेरा में लिये हुआ है, उससे कोई भी व्यक्ति भाग नहीं सकता, एवं न कोई उससे दूर जा सकता है, उसकी क़ुदरत व सामर्थ्य तथा उसका इल्म व ज्ञान उन्हें अपने घेरा में लिये हुये है, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَأَنَّ ٱللَّهَ قَدۡ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عِلۡمَۢا﴾

अनुवादः (और यह कि अल्लाह ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की परिधि में)। सूरह त़लाक़ः 12।

यह सामान्य व व्यापक इह़ात़ा (घेरा में लेने का कार्य) आकाश एवं धरा वालों के लिये है, जो रह़मत व दया के साथ उन्हें इह़ात़ा व परिधि में लेने के अर्थ में है।

रही बात विशिष्ट इहाता व परिधि में लेने की, तो उससे अभिप्राय क़ह्र व जब्र (शक्ति, बल प्रयोग एवं भीषणता व मज़बूती) के साथ उन्हें अपने इहाता व परिधि में लेना है, इसमें अवज्ञाकारियों एवं उपद्रवियों तथा उद्दंडों को धमकी देना भी शामिल है।

अधिकांशतः यह महान नाम उन स्थानों पर प्रयोग हुआ है जहाँ काफ़िरों एवं मुनाफ़िक़ों को धमकी दी गई है, वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उन के षड्यंत्र, कुटिलता, धूर्तता एवं झूठ बोलने से भलि भांति परिचित है, वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह चहुँ ओर से उन्हें अपने घेरा में लिये हुआ है, वह उन की घात में है, उन्हीं उसी की ओर पुनः लौटना है, उन का रास्ता उसी की तरफ जाता है, वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की पहुँच से दूर नहीं जा सकते, अंततः वह भाग कर तथा लौट कर जायेंगे कहाँ?!

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَٱللَّهُ مُحِيطُۢ بِٱلۡكَٰفِرِينَ﴾

अनुवादः (अल्लाह काफ़िरों को घेरने वाला है)। सूरह बक़रहः 19।

इसी प्रकार से अहंकारियों एवं घमण्डियों के विषय में अल्लाह सुब्हानहु व तआला फ़रमाता हैः

﴿وَلَا تَكُونُواْ كَٱلَّذِينَ خَرَجُواْ مِن دِيَٰرِهِم بَطَرٗا وَرِئَآءَ ٱلنَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِۚ وَٱللَّهُ بِمَا يَعۡمَلُونَ مُحِيطٞ ٤٧﴾

अनुवादः (उन के समान न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुये तथा लोगों को दिखाते हुये निकले, और वह अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं, और अल्लाह उन के कर्मों को (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है)। सूरह अनफ़ालः 47।

अल्लाह तआला ने (मुसलमानों के दुःखों पर) प्रसन्न होने वाले एवं (उनके विरुद्ध) षड्यंत्र रचने वाले काफ़िरों, मुनाफ़िक़ों एवं पाखण्डियों के विषय में इर्शाद फ़रमायाः

﴿إِن تَمۡسَسۡكُمۡ حَسَنَةٞ تَسُؤۡهُمۡ وَإِن تُصِبۡكُمۡ سَيِّئَةٞ يَفۡرَحُواْ بِهَاۖ وَإِن تَصۡبِرُواْ وَتَتَّقُواْ لَا يَضُرُّكُمۡ كَيۡدُهُمۡ شَيۡـًٔاۗ إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا يَعۡمَلُونَ مُحِيطٞ ١٢٠﴾

अनुवादः (यदि तुम्हारा कुछ भला हो तो उन्हें बुरा लगता है, और यदि तुम्हारा कुछ बुरा हो जाये तो उस से प्रसन्न हो जाते हैं, तथा यदि तुम सहन करते रहे, और आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा, उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं)। सूरह आले इमरानः 120।

अल्लाह तआला का अज़ाब व यातना जब किसी समुदाय पर उतरता है तो (चहुँ ओर से) उसे अपने घेरे में ले लेता हैः

﴿وَإِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٖ مُّحِيطٖ﴾

अनुवादः (मुझ पर घेरने वाले दिन के अज़ाब (यातना) का भय (भी) है)। सूरह हूदः 84।

क़्यामत के दिन जहन्नम की आग उन्हें अपनी परिधि व घेरा में ले लेगीः

﴿إِنَّآ أَعۡتَدۡنَا لِلظَّٰلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمۡ سُرَادِقُهَاۚ﴾

अनुवादः (निश्चय हमने अत्याचारियों के लिये ऐसी अग्नि तय्यार कर रखी है जिस की प्राचीर ने उन को घेर लिया है)। सूरह कह्फ़ः 29।

❒ आप निश्चिंत रहें!

मोमिन को जब यह विश्वास हो जाता है कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह हैः (जो प्रत्येक वस्तु को) अपने घेरा में लिये हुआ है, तो उसका हृदय शांति अनुभव करता है, वह अपने रब पर ही भरोसा करता एवं उसी से डरता है, वह अल्लाह की मदद को दूर नहीं समझता, न उसकी रहमत व दया से निराश होता है, न ही कुशादगी, उदारता व समृद्धि की आशा समाप्त करता है, क्योंकि उदारता व समृद्धि तो अनिवार्य रूप से आनी ही है।

वह जानता है कि (सूरह कह्फ़ में वर्णित मूसा अलैहिस्सलाम के वृत्तांत में) नाव में छेद करनाः एहसान, भलाई व उपकार की पराकाष्ठा थी, बच्चे का वध करनाः स्नेह व कृपा का सर्वोच्च शिखर था, अनाथों के कोषों को बचा कर रखना सर्वोत्तम वफ़ादारी थीः

﴿وَكَيۡفَ تَصۡبِرُ عَلَىٰ مَا لَمۡ تُحِطۡ بِهِۦ خُبۡرٗا ٦٨﴾

अनुवादः (और कैसे धैर्य रखेंगे उस बात पर जिसका आप को पूरा ज्ञान नहीं?)। सूरह कह्फ़ः 68।

सभी मामलों की समय सीमा निर्धारित है एवं प्रत्येक निर्धारित वस्तु की एक निश्चित आयु है, गंतव्य तक पहुँचने के लिये उस समय एवं आयु को बिताना आवश्यक है, अल्लाह तआला के निकट प्रत्येक चीज़ की एक समय सीमा निर्धारित हैः

﴿وَإِن تَصۡبِرُواْ وَتَتَّقُواْ لَا يَضُرُّكُمۡ كَيۡدُهُمۡ شَيۡـًٔاۗ إِنَّ ٱللَّهَ بِمَا يَعۡمَلُونَ مُحِيطٌ ١٢٠﴾

अनुवादः (यदि तुम सब्र (धैर्य) करते रहे, और आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा, उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं)। सूरह आले इमरानः 120।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने हरेक वस्तु की एक निश्चित मात्रा निर्धारित कर रखी है, उसका एक निश्चित समय एवं मुद्दत है जिससे वह आगे नहीं बढ़ सकती, जब वह निश्चित समय आ जाता है तो वह उससे एक क्षण के लिये भी आगे पीछे नहीं हो सकती।

विपदा एक निश्चित समय के लिये आती है तत्पश्चात वह दूर हो जाती है, उसकी एक तय सीमा होती है जिसके पश्चात वह समाप्त हो जाती है, इसलिये वांछित व पसंदीदा वस्तु को पाने एवं अवांछित व नापसंदीदा वस्तु को दूर करने के लिये जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिये, क्योंकि मामला इंसान के हाथ में नहीं होता, बल्कि बंदा का काम केवल यह है कि वह (उसके लिये उपयुक्त) माध्यमों को अपनाये एवं धैर्य रखे, इसलिये कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की सहायता व मदद एवं उसकी कुशादगी, उदारता व समृद्धि चाहने वाले को निराश नहीं होना पड़ता, चाहे वह जिस स्थान पर भी हो।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम को घेर लिया जाता है, उन्हें आग में डाल दिया जाता है, फिर वह आग उन के लिये ठंडी, शांत व कल्याणपूर्ण एवं मंगलमय बन जाती है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने भाइयों के घेरा में होते हैं, वो आप को अंधकारमय कुवाँ में डाल देते हैं, (वहाँ से निकलते हैं तो) दोबारा अज़ीज़ (-ए- मिस्र) की पत्नी एवं उसकी चेलियों के हिसार व घेरा में फंस जाते हैं, तत्पश्चात जेल में डाल दिये जाते हैं, किंतु महानतम व सर्वोच्च अल्लाह जो (प्रत्येक वस्तु को) “मुहीत़” (घेरा में लिये हुये है), विरोधियों के षड्यंत्र एवं चालबाज़ियों को असफल कर देता है, अतः उनका हिसार व घेरा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के विजय व प्रभुत्व का कारण बनता है, और आप अलैहिस्सलाम धरती के कोषों के मंत्री बनाये जाते हैं।

मूसा अलैहिस्सलाम की माता का घर घेरे में ले लिया जाता है, तत्पश्चात मूसा अलैहिस्सलाम को समुद्र में डाल दिया जाता है, उनका यह घेरा मूसा अलैहिस्सलाम एवं उनकी माता के लिये उदारता व कुशादगी का कारण बनता है, अतः वह अपनी माता के पास लौट आते हैं तथा उनकी माता निश्चिंत रहती हैं।

फ़िरऔन मूसा अलैहिस्सलाम एवं उनके अनुयायियों को घेर लेता है, इस घेराव का परिणाम यह होता है कि फ़िरऔन का नाश होता है तथा मूसा अलैहिस्सलाम को प्रभुत्व एवं विजय प्राप्त होती है।

काफ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर का घेराव कर लेते हैं, लोगों की निगाह से छिप कर रंजीदा व दुखी हो कर आप मक्का से निकलते हैं, फिर अल्लाह तआला विरोधियों को अपने घेरे में लेता है, चुनाँचे आप विजय एवं प्रभुत्व के साथ मक्का वापिस लौटते हैं।

मोमिन जब भी महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के हिसार व घेरे का अनुभव करता है तो उसके ईमान में वृद्धि होती है, वह अपने रब से प्रसन्न होता है, वह अपने पालनहार की महानता के समक्ष नतमस्तक होते हुये, उसके आदेशों के सामने आत्मसमर्पण करते हुये एवं अल्लाह तआला के इस फ़रमान का अनुपालन करते हुये उसकी ओर पलटता एवं दौड़ कर आता है:

﴿فَفِرُّوٓاْ إِلَى ٱللَّهِۖ إِنِّي لَكُم مِّنۡهُ نَذِيرٞ مُّبِينٞ ٥٠﴾

अनुवादः (तो तुम दौड़ो अल्लाह की ओर, वास्तव में मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ)। सूरह ज़ारियातः 50।

بِكَ أَستَجِيرُ وَمَن يُجِيرُ سِواكَا   فَأَجِر ضَعِيفًا يَحْتَمِي بِحِمَاكَا
إِنِّي أَويتُ لِكُل مَأوى فِي الحَيَاةِ   فما رأيتُ أعزَّ مِن مَأواكَا
فَاقبَل دُعائِي وَاستَجِب لِرَجاوَتِي   مَا خَابَ يوما مَن دَعا وَرجَاكَا

अनुवादः मैं तेरी ही शरण चाहता हूँ, तेरे सिवा कौन है जो शरण दे सके, तो एक कमज़ोर व दुर्बल (बंदे) को शरण प्रदान जो तेरी शरण चाह रहा है। मैंने जीवन में हर आश्रय की ओर जा कर देखा, मुझे तेरे आश्रय से अधिक सम्मानित स्थान कोई नहीं दिखाई पड़ा। तू मेरी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर ले, एवं मेरी आशाओं को पूर्ण कर, तुझे पुकारने वाला एवं तुझ से आशा रखने वाला कभी असफल व नामुराद नहीं होता।

हे अल्लाह! हम तुझ से तेरे महान नाम (अल-मुहीत़, अर्थातः घेरा व नियंत्रण में लिये हुये) के हवाले से यह प्रार्थना करते हैं किः हमारे शत्रुओं को अपने अज़ाब व यातना से घेर ले, हमारे लिये हर ग़म, दुःख एवं तंगी से निकलने का मार्ग प्रशस्त कर दे।

(73, 74, 75, 76)

(अल-अव्वल, अल-आख़िर, अल-ज़ाहिर, अल-बातिन जल्ल जलालुहु)

अल्लाह तआला ने अपनी महानतम व सर्वोच्च ज़ात की प्रशंसा करते हुये फ़रमाया हैः

﴿هُوَ ٱلۡأَوَّلُ وَٱلۡأٓخِرُ وَٱلظَّٰهِرُ وَٱلۡبَاطِنُۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٌ ٣﴾

अनुवादः (वही सर्वप्रथम तथा वही अंतिम और प्रत्यक्ष एवं गुप्त है, और वह प्रत्येक वस्तु को जानने वाला है)। सूरह हदीदः 3।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप फ़रमाया करते थेः

اللهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ وَرَبَّ الْأَرْضِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى، وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْفُرْقَانِ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ، اللهُمَّ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ، اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ، وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ

(अर्थातः हे अल्लाह! हे आसमानों के रब एवं ज़मीन के रब तथा अर्श -ए- अज़ीम (महान सिंहासन) के रब, हे हमारे रब एवं प्रत्येक वस्तु के रब, दाने एवं गुठलियों को चीर (कर पौधा एवं वृक्ष उगा) देने वाले! तौरात, इंजील एवं फ़ुर्क़ान (क़ुरआन) को अवतरित करने वाले! मैं हर उस चीज़ की बुराई व दुष्टता से तेरी शरण में आता हूँ जिसकी पेशानी व ललाट तेरे कब्ज़ा एवं वश में है, हे अल्लाह! तू ही सर्वप्रथम है, तुझ से पूर्व कोई चीज़ नहीं (थी), हे अल्लाह! तू ही अंतिम है, तेरे पश्चात कोई चीज़ नहीं (होगी), तू ही ज़ाहिर व प्रकट है, तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं है, तू ही बातिन (आंतरिक, अंदरूनी, गुप्त) है, तुझ से पीछे कोई चीज़ नहीं है, हमारी ओर से (हमारा) क़र्ज़ (ऋण) अदा कर दे एवं हमें फ़क़ीरी, निर्धनता व दरिद्रता से बेनियाज़ी व निस्पृहता प्रदान कर)। (मुस्लिम)।

ज्ञात हुआ कि वह सर्वप्रथम है जिसके पहले कोई वस्तु नहीं।

वह अंतिम है जिसके बाद कोई वस्तु नहीं।

वह ज़ाहिर व प्रकट है जिसके ऊपर कोई वस्तु नहीं।

वह बातिन (आंतरिक, अंदरूनी, गुप्त) है जिसके पीछे कोई वस्तु नहीं।

इन समस्त महान नामों का आधार बिंदु महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का अपनी मख़लूक़ (सृष्टि) का इह़ात़ा व घेराव करने पर है, समय के आधार पर भी एवं स्थान के आधार पर भी।

समय के आधार पर अल्लाह का इह़ात़ा व घेरा में लिये हुये होना उसके इस महान नाम (अल-अव्वल एवं अल-आख़िर) में शामिल हैः (कोई भी पहली चीज़ ऐसी नहीं जिस से पहले अल्लाह तआला न रहा हो), समस्त चीज़ें उसके पश्चात ही अस्तित्व में आईं, तथा वह अल्लाह सभी चीज़ों से पहले है।

(कोई भी अंतिम चीज़ ऐसी नहीं जिसके बाद अल्लाह न हो), वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह सृष्टि नष्ट हो जाने के बाद भी बाकी रहने वाला है, यद्यपि वह बेज़ुबान प्राणी हो अथवा ज़ुबान रखने वाला।

स्थान के आधार पर अल्लाह का इह़ात़ा व घेरा में लिये हुये होना उसके इस महान नाम (अल-ज़ाहिर एवं अल-बात़िन) में शामिल हैः अतः वह हर चीज़ के ऊपर है, कोई भी चीज़ उससे बुलंद नहीं, (कोई भी दृश्य अथवा अदृश्य वस्तु नहीं है परंतु अल्लाह तआला उसके ऊपर है), वह अर्श पर बुलंद, अर्श सभी सृष्टि से उच्च व बुलंद है, वह ज़ात तथा स़िफ़ात (व्यक्तित्व एवं गुण) तथा क़ह्र व जब्र (शक्ति, बल प्रयोग एवं भीषणता व मज़बूती) के आधार पर बुलंद व उच्च है।

(कोई भी बात़िन (आंतरिक, अंदरूनी, गुप्त) वस्तु नहीं है मगर अल्लाह तआला उसके पीछे है), महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के बात़िन होने का अर्थ यह है कि वह प्रत्येक वस्तु को अपनी परिधि व घेरा में लिये हुये है, वह इस प्रकार से कि स्वयं उसकी अपनी ज़ात से भी अधिक वह उसके समीप है, उसके अत्यंत गुप्त भेदों एवं मन की बातों से भी भलि भांति परिचित है।

﴿وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِۦ نَفْسُهُۥ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ ٱلْوَرِيدِ ١٦﴾

अनुवादः (जब्कि हम ने ही पैदा किया है मनुष्य को और हम जानते हैं जो विचार आते हैं उस के मन में, तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस की) प्राणनाड़ी से)। सूरह क़ाफ़ः 16।

﴿قُلْ إِن تُخْفُوا۟ مَا فِى صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ ٱللَّهُ ۗ﴾

अनुवादः (हे नबी! आप कह दीजिये कि जो तुम्हारे मन में है उसे मन ही में रखो अथवा उसे व्यक्त करो, अल्लाह उसे जानता है)। सूरह आले इमरानः 29।

❐ वह आप के अति निकट है ..

वह आप की बातों को सुनता है, आप के कामों को देखता है, उससे कोई भी वस्तु छिप्त व अदृश्य नहीं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को बुलंद व ऊँची आवाज़ों में रब से दुआयें करते हुये सुना तो फ़रमायाः

“लोगों! अपने ऊपर दया करो, तुम किसी बहरे अथवा गायब रब को नहीं पुकार रहे हो, बल्कि तुम तो उस ज़ात को पुकारते हो जो अत्यधिक सुनने वाला, और अत्यधिक देखने वाला है”। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

अपने सज्दों में यह सरगोशी किया करें: (سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى, सुब्ह़ान रब्बियल आला, अर्थातः मेरा पालनहार पाक व पवित्र तथा उच्च व बुलंद है), फिर आसमान के सारे द्वार आप के लिये खोल दिये जायेंगे एवं करीम व दयालु अल्लाह आपकी दुआ को सुनेगा, आप कदापि यह न सोचें कि वह आप से दूर है, अथवा आप की कोई छिप्त व गुप्त वस्तु भी उससे छिप्त व अदृश्य है।

वह अत्यंत काली रात में अति स्याह ठोस चट्टान पर रेंगने वाली काली चीटीं की रेंग को भी सुनता हैः

﴿وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا﴾

अनुवादः (और कोई पत्ता नहीं गिरता परंतु उसे वह जानता है)। सूरह अनआमः 59।

उसकी ह़िकमत (तत्वदर्शिता) एवं नियामत (अनुग्रह) है किः वह आप को यह याद दिलाता है कि उसी ने समस्त मख़लूक़ व सृष्टि को उत्पन्न किया, उसी पर उन के मख़लूक़ व सृष्टि की बंदगी समाप्त होती है, चुनाँचे जिस प्रकार से वह आप को उत्पन्न करने में तंहा, अकेला व अद्वैत है, उसी प्रकार से आप भी अपनी इबादत व उपासना में उसे तंहा, अकेला व अद्वैत ठहरायें, जिस प्रकार से आप के अस्तित्व एवं उत्पत्ति का आरंभ उस ज़ात ने किया, उसी प्रकार से आप भी उसे अपनी मोहब्बत व प्रेम, इरादत एवं इबादत की समाप्ति मानें।

❐ उसके समक्ष खड़े होने से न उकतायें!

जब सारी युक्तियां असफल हो जायें, विभिन्न प्रकार की चिंता व भय आप को अपने घेरे में ले ले, तो आप याद करें कि अल्लाह ही अव्वल एवं आख़िर (सर्वप्रथम एवं अंतिम) है, वह आप के अति निकट है, वह हर चीज़ पर क़ादिर व सक्षम है, वह अपने बंदों पर प्रभुत्व रखने वाला है, वह आसमान से ले कर ज़मीन तक हर काम की दतबीर व प्रबंध करता है, तत्पश्चात वह काम उस की ओर ऊपर चढ़ जाता है, वह आपके अति गोपनीय भेदों एवं मन की कल्पनाओं से भी अवगत है।

यदि आप यह याद करेंगे तो आप को अपने दिल का एक पानहार दिखाई देगा जिसका वह इरादा करे, उसका एक माबूद व पूज्य होगा जिसकी वह इबादत व पूजा करे, एक बेनियाज़ (पालनहार) होगा जिस की ओर वह अपनी समस्त आवश्यकताओं (की पूर्ति) के लिये आकर्षित हो, वह शरण स्थली एवं आश्रय होगा, आप का दिल जिस का आश्रय व शरण ले, जब यह एहसास आप के अंदर जाग्रत हो जाये तो आप के दिल को सआदत, सौभाग्यशालिता एवं प्रसन्नता तथा आपकी आत्मा को शांति मिलेगी, आपका अंतर्मन प्रसन्न होगा, उदारता व कुशादगी आपके अति निकट दिखाई देगी, तथा आप को विश्वास हो जायेगा कि वह (अल्लाह) अव्वल (प्रथम), आख़िर (अंतिम), ज़ाहिर (प्रकट) एवं बातिन (परोक्ष, छिप्त) है और वह हर चीज़ पर क़ादिर व सक्षम है।

आग इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जला नहीं सकी, क्योंकि अल्लाह की दया व निगरानी ने एक ऐसी खिड़की खोल दी (जिसने आग को ठंडी कर दिया):

﴿قُلْنَا يَٰنَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَٰمًا عَلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ ۝٦٩﴾

अनुवादः (हम ने कहाः हे अग्नि! तू शीतल तथा सालमती वाली बन जा)। सूरह अम्बियाः 69।

समुद्र कलीमुल्लाह (मूसा अलैहिस्सलाम) को डुबा न सका, क्योंकि अल्लाह तआला के सामर्थ्य एवं शक्ति पर ईमान रखने वाली एक मज़बूत आवाज़ ने यह पुकार लगाईः

﴿قَالَ كَلَّآ ۖ إِنَّ مَعِىَ رَبِّى سَيَهْدِينِ ۝٦٢﴾

अनुवादः (-मूसा अलैहिस्सलाम ने- कहाः कदापि नहीं, निश्चय ही मेरे साथ मेरा पालनहार है)। सूरह शुअराः 62।

यूनुस अलैहिस्सलाम समुद्र के अंदर मछली के पेट से यह निदा लगाते हैं:

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

अनुवादः (नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी हूँ)। सूरह अम्बियाः 87।

यह दुर्बल सी ध्वनी तीन अंधकार से उठती हैः रात का अंधकार, समुद्र का अंधकार तथा मछली के पेट का अंधकार, इन तीनों अँधियारों को चीरती हुई आसमान की बुलंदी तक पहुँच जाती है, तथा देखते ही देखते कुशादगी व उदारता अपने पाँव पसार देती है।

وفِي الغيبِ للعبدِ الضعيفِ لطائفٌ   بِها جفَّتِ الأقلامُ وانطوتِ الصُحُفُ

अनुवादः ग़ैब (छिप्त, अदृश्य) के पर्दा से दुर्बल एवं निर्बल बंदों के लिये दया के ऐसे-ऐसे रूप प्रकट होते हैं जिन (को लिखने) के बाद कलम सूख चुके एवं स़ह़ीफ़े (पुस्तिका) लपेट दिये गये।

❑ क्रांति का केंद्र बिंदु ...

मानव अकेले न तो ज़माना की घटनाओं का मुकाबला कर सकता है न आफतों एवं विपत्तियों का सामना कर सकता है और न संकटों की प्रतिद्वंद्विता कर सकता है, क्योंकि वह दुर्बल एवं विवश बना कर उत्पन्न किया गया है, परंतु हाँ यदि वह अपने रब पर भरोसा करे (तो यह समस्त कार्य अंजाम दे सकता है), क्योंकि उसे विश्वास होगा कि अल्लाह तआला के प्रथम होने को सभी वस्तुओं पर प्राथमिकता प्राप्त है, वह अपने अंतिम होने वाले गुण के साथ प्रत्येक वस्तु के (नष्ट हो जाने के) पश्चात भी बाकी रहने वाला है, अपनी रिफ़अत व बुलंदी के साथ हर चीज़ पर प्रभुत्वशाली व बुलंद है और अपने इह़ात़ा, हिसार व घेरा के द्वारा प्रत्येक वस्तु के अति निकट है।

कोई आसमान किसी दूसरे आसमान को उससे गुप्त नहीं रखता न ही ज़मीन की कोई परत दूसरे परत को उससे अदृश्य करती है, और न कोई प्रकट वस्तु उससे किसी बात़िन व छिप्त वस्तु को पर्दा करती है, गैब व अदृश्य उसके निकट प्रकट व दृश्य है, दूर उसके लिये निकट है एवं राज़ व भेद उसके लिये प्रकट व ज़ाहिर है।

कितना सौभाग्यशाली है वह जो अल्लाह से जुड़ गया, उसके महान नामों से परिचित हुआ, अपने बात़िन व अंदर को सुधारा, अपने कर्म में इख़लास़ व निःकपटता पैदा किया, अपनी नीयत व अंतर्मन को दुरुस्त किया, स़ब्र व धैर्य का ढ़ाल अपनाया, अपने स्वामी व

आक़ा पर भरोसा कायम रखा! यही है ख़ालिस़ व निश्छल प्रेम के साथ अल्लाह की इबादत व पूजा करना।

ونازَعَنِي شَوقٌ إليكَ وهزَّنِي مِن الغيبِ ما يهفُو إليه رجائيَا

अनुवादः तेरे (दीदार की) तड़प ने मुझे व्याकुल कर दिया, ग़ैब से किसी ने मुझे ऐसे झिंझोड़ा कि मेरे अंदर उसकी उम्मीद व आशा और तीव्र हो गई।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "इन चारों महान नामः अल-अव्वल, अल-आख़िर, अल-ज़ाहिर एवं अल-बात़िन, की मारफत व पहचान रखना ज्ञान-विज्ञान का आधार स्तंभ है, इसलिये बंदे को चाहिये कि उनकी पहचान व उनके विषय में ज्ञान अर्जित करने में अपनी पूरी शक्ति एवं समझ लगा दे"।

هو أولٌ هو آخِرٌ هو ظَاهرٌ هو باطنٌ هي أربعٌ بِوَزَانِ
ما قبلَه شيءٌ كذا ما بعدَه شيءٌ تعالى اللهُ ذو السلطانِ

अनुवादः वही प्रथम है, वही अंतिम है, वही ज़ाहिर है, वही बात़िन है, एक ही छंद में ये चार नाम हैं, न उससे पहले कोई चीज़ थी और न उसके पश्चात कोई वस्तु होगी, अल्लाह तआला सलतनत व बादशाहत का स्वामी बुलंद व उच्च है।

वसवसों एवं भ्रमों को दूर करने में इन चारों महान नामों एवं उनके अर्थों की पहचान का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

एक व्यक्ति -जिस का नाम अबू ज़ुमैल बताया जाता है- इस उम्मत के प्रकांड विद्वान अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास आया तथा कहाः हे इब्ने अब्बास! मैं अपने दिल में कुछ अनुभव कर रहा हूँ।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः कौन सी चीज़?

उसने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं नहीं बोल सकता।

उसका बयान है किः इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने मुझ से कहाः क्या किसी चीज़ का संदेह है?

इस पर वह व्यक्ति हंसने लगा, आप ने फ़रमायाः इस से कोई व्यक्ति सुरक्षित नहीं, फ़रमायाः यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने (अपने नबी की शान में) यह आयत नाज़िल फ़रमाईः

﴿فَإِن كُنتَ فِي شَكٍّ مِّمَّآ أَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ فَسۡـَٔلِ ٱلَّذِينَ يَقۡرَءُونَ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكَۚ لَقَدۡ جَآءَكَ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡمُمۡتَرِينَ ٩٤﴾

अनुवादः (फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह हो, जो हम ने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं, आप के पास आप के पालनहार की ओर से ह़क़ (सत्य) आ गया है, अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों)। सूरह यूनुसः 94।

फिर आप ने मुझ (उस पूछने वाले व्यक्ति) से फ़रमायाः यदि तुम्हारे दिल में कोई संदेह उत्पन्न हो तो यह आयत पढ़ लिया करोः

﴿هُوَ ٱلۡأَوَّلُ وَٱلۡأٓخِرُ وَٱلظَّٰهِرُ وَٱلۡبَاطِنُۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٌ ٣﴾

अनुवादः (वही सर्वप्रथम तथा वही अंतिम और प्रत्यक्ष एवं गुप्त है, और वह प्रत्येक वस्तु को जानने वाला है)। सूरह ह़दीदः 3।

ऐ अल्लाह! ऐ वह जो प्रथम भी है अंतिम भी, ज़ाहिर (प्रकट) भी है एवं बात़िन (गुप्त) भी! हमारे बात़िन व अंतर्मन को सुधार दे, सभी मामलों में हमें अच्छी समाप्ती एवं अंत प्रदान कर, तथा हमें लोक परलोक के अपमान से मुक्ति दिला।

(77)

(अल-वकील जल्ल जलालुहु)

हमने महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस फ़रमान पर गौर किया और सोच विचार किया:

﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْحَىِّ ٱلَّذِى لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِۦ ۚ وَكَفَىٰ بِهِۦ بِذُنُوبِ عِبَادِهِۦ خَبِيرًا ۝٥٨﴾

अनुवाद: (आप भरोसा कीजिये उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को)। सूरह फ़ुर्क़ान: 58।

सर्व शक्तिशाली व प्रभुत्वशाली अल्लाह की ओर से यह सामान्य ऐलान है ... प्रत्येक मोमिन पुरुष एवं महिला के लिये ... प्रत्येक बीमार, दुःखी एवं क़र्ज़दार के लिये ... हर उस व्यक्ति के लिये जो भय, अशांति एवं भ्रम का शिकार हो ...

अल्लाह तआला हमें यह सूचना दे रहा है कि वह महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार (अल-वकील, अर्थातः हर चीज़ का प्रबंधक एवं निगराँ) है, वह हर चीज़ पर क़ुदरत व सामर्थ्य रखता है, वही तुम्हारी सभी समस्याओं का समाधान करता है, तुम्हारे दुःख दर्द को राहत व शांति में परिवर्तित कर देता है, तुम्हारी तमन्नाओं को वास्तविकता में, तुम्हारे भय को अमन में एवं तुम्हारे आँसुओं को मुस्कुराहट में बदल देता है।

تَبرأتُ مِن حَولِي وطَولِي وَقُوَّتِي   وَإنِي إلى مَولَايَ فِي غَايَةِ الفَقرِ

अनुवाद: मैं अपनी शक्ति व सामर्थ्य तथा मालदारी व उदारता से बरी हूँ, मैं अपने आक़ा व स्वामी का बेहद मोहताज हूँ।

अपने नफ़्स (आत्मा) को उसकी कमज़ोरी, बेचैनी एवं व्याकुलता से (निकाल कर) राहत, आराम व सुख पहुँचाइये! उसे इन शब्दों के द्वारा वकील (कारसाज़, प्रबंध कर्ता) की शीतल छाया में विश्राम करने दीजिये, आइये हमारे संग अल्लाह तआला के एक महान नाम (अल-वकील, अर्थात, कारसाज़, प्रबंधक एवं निगराँ) के प्रकाश व तेज से (दिल की दुनियाँ) प्रकाशमान कीजिये।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ﴾

अनुवादः (वह प्रत्येक वस्तु का अभिरक्षक (निगराँ) है)। सूरह अनआमः 102।

उलेमा कहते हैं किः वकील (अल्लाह तआला का एक नाम) वह हैः जो अपने ज्ञान, सूचना, सम्पूर्ण सामर्थ्य एवं आम व व्यापक हिकमत व दूरदर्शिता के द्वारा अपनी मख़लूक़ (सृष्टि) की तदबीर व प्रबंध करता है।

जिसने बंदों की आजीविका, उनकी भलाई एवं मसलहत, उनके मामलों के प्रबंध तथा लोक परलोक में लाभ-हानि की ओर मार्गदर्शन की जिम्मेवारी ले रखी है।

यही वह सुरक्षा एवं निगरानी है जो समस्त सृष्टि को शामिल हैः

﴿ٱللَّهُ خَٰلِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٦٢﴾﴾

अनुवादः (अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला तथा वही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है)। सूरह ज़ुमरः 62।

परंतु विशिष्ट सुरक्षा एवं निगरानी वह है जिस से अल्लाह पाक व पवित्र विशेष रूप से अपने वलियों (मित्रों), आज्ञाकारियों एवं उससे प्रेम करने वालों को अनुग्रहित करता है, चुनाँचे उन के लिये आसानी व सहजता का मार्ग प्रशस्त कर देता है, तंगी व कठोरता से उन्हें सुरक्षित रखता है एवं उनके समस्त मामलों की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले लेता है ...

इसी लिये अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एवं समस्त उम्मत को यह आदेश दिया कि वो उस (अल्लाह) पर ही भरोसा करें, अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْحَيِّ ٱلَّذِى لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِۦ ۚ وَكَفَىٰ بِهِۦ بِذُنُوبِ عِبَادِهِۦ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾﴾

अनुवादः (आप भरोसा कीजिये उस चिरजीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को)। सूरह फ़ुर्क़ानः 58।

उन्हें विशेष रूप से अपनी मोहब्बत व प्रेम से अनुग्रहित करता है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُتَوَكِّلِينَ﴾

अनुवादः (अल्लाह तआला तवक्कुल (भरोसा) करने वालों से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरानः 159।

तवक्कुल (भरोसा): मोमिन की निशानी, मोवह्हिद (एकेश्वरवादी) की पहचान एवं तक़वा (भय) का प्रतीक है, अल्लाह तआला के सुंदर व प्यारे नामों के साथ जुड़े रहने का यह एक महान रूप है।

❐ सच्चे व सत्यवादी मोमिनों के लिये ...

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "तवक्कुल आधा दीन है, और आधा दीनः इनाबत, (अर्थातः अल्लाह की ओर झुकने तथा अपने पापों से प्रायश्चित्त करते हुये अल्लाह तआला एवं ह़क़ की ओर लौटने) का नाम है"।

चुनाँचे तवक्कुलः सहायता माँगने का नाम है, एवं इनाबतः इबादत व उपासना का नाम है।

जब ईमान में कमी बेशी होती है तो तवक्कुल भी घटता बढ़ता रहता है, जिसके अंदर तवक्कुल न हो उसके अंदर ईमान भी नहीं हो सकताः

﴿وَعَلَى ٱللَّهِ فَتَوَكَّلُوٓاْ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ﴾

अनुवादः (अल्लाह पर ही तवक्कुल (भरोसा) करो यदि तुम ईमान वाले हो)। सूरह माइदाः 23।

आप को महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की सुरक्षा व निगरानी उसी समय मिलेगी जब आप उस पर तवक्कुल व भरोसा करेंगेः

﴿وَمَن يَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسۡبُهُۥٓۚ﴾

अनुवादः (जो अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करेगा तो वही उसे पर्याप्त है)। सूरह त़लाक़ः 3।

आप अपने तवक्कुल में सच्चे रहें, आप की (समस्त) इच्छायें पूर्ण होंगी, चाहे वह अति विशाल ही क्यों न हो, सुनन तिर्मिज़ी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह ह़दीस़ वर्णित है कि आप ने फ़रमायाः "यदि तुम अल्लाह तआला पर वैसा ही तवक्कुल (भरोसा) करो जैसाकि उस पर तवक्कुल होना चाहिये तो तुम्हें उसी प्रकार से आजीविका मिलेगी जिस प्रकार से पक्षियों को मिलती है कि प्रातःकाल भूखे पेट (अपने घोंसलों से) निकलते हैं एवं सांयकाल जब वो वापिस लौटते हैं तो उन का पेट भरा होता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

हर व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि लोक परलोक में महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के निकट उसे उच्च स्थान प्राप्त हो, और यह चीज़ उन को ही प्राप्त हो सकती है जो अपने तवक्कुल में सच्चे हों, उन सच्चे व सत्यवादी लोगों के दिल महानतम व सर्वोच्च अल्लाह पर ही तवक्कुल व भरोसा करते हैं तथा संकट एवं आपदा के समय उनकी ज़ुबानों से केवल यही कलेमा, वाक्य एवं जाप निकलता हैः

﴿حَسۡبُنَا ٱللَّهُ وَنِعۡمَ ٱلۡوَكِيلُ﴾

अनुवादः (हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है)। सूरह आले इमरानः 173।

चुनाँचे अल्लाह तआला की महानता व दयालुता प्रकट होती है, मोअजज़ा व चमत्कार उत्पन्न होता है, एवं महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के वलियों (मित्रों) के लिये उसकी सुरक्षा के स्रोत फूट पड़ते हैं।

﴿حَسۡبُنَا ٱللَّهُ وَنِعۡمَ ٱلۡوَكِيلُ﴾

अनुवादः (हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है)। सूरह आले इमरानः 173।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस कलेमा व जाप को उस समय पढ़ा जब उन को आग में डाला गया, इसका परिणाम क्या हुआ?

﴿قُلۡنَا يَٰنَارُ كُونِي بَرۡدٗا وَسَلَٰمًا عَلَىٰٓ إِبۡرَٰهِيمَ ٦٩﴾

अनुवादः (हम ने कहाः हे अग्नि! तू शीतल तथा सालमती वाली बन जा)। सूरह अम्बियाः 69।

इसे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं आप के स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उस समय दोहराया जब उन से कहा गयाः

﴿إِنَّ ٱلنَّاسَ قَدۡ جَمَعُواْ لَكُمۡ فَٱخۡشَوۡهُمۡ فَزَادَهُمۡ إِيمَٰنٗا وَقَالُواْ حَسۡبُنَا ٱللَّهُ وَنِعۡمَ ٱلۡوَكِيلُ﴾

अनुवादः (ये लोग आपके विरुद्ध इकत्र हो गये हैं अतः इनसे डरें, तो उनका ईमान और बढ़ गया और इन लोगों ने कहाः अल्लाह हमारे लिये बस है और अति उत्तम कारसाज़ (युक्तिपूर्वक काम करने वाला) है)"।

इसका परिणाम क्या हुआ?

﴿فَٱنقَلَبُواْ بِنِعۡمَةٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَفَضۡلٖ لَّمۡ يَمۡسَسۡهُمۡ سُوٓءٞ﴾

अनुवादः (अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ वापिस हुये, उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा)"। सूरह आले इमरानः 174।

यदि आप उस स्थान तक पहुँच जायेंगे तो महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की मोहब्बत व प्रेम पान में सफल हो जायेंगेः

﴿فَإِذَا عَزَمۡتَ فَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُتَوَكِّلِينَ﴾

अनुवादः (फिर जब कोई दृढ़ संकल्प कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, निस्संदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरानः 159।

अल्लाह तआला अपनी मोहब्बत व प्रेम के अलावा महा पुण्य से भी अनुग्रहित करेगाः

﴿فَمَآ أُوتِيتُم مِّن شَيۡءٖ فَمَتَٰعُ ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَاۖ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ خَيۡرٞ وَأَبۡقَىٰ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَلَىٰ رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُونَ ٣٦﴾

अनुवादः (तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह सांसारिक जीवन का संसाधन है तथा जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम एवं स्थायी है उन के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये तथा अपने पालनहार पर ही भरोसा रखते हैं)। सूरह शूराः 36।

❒ तवक्कुल एवं भरोसा करने वालों के लिये ...

आप अपने तवक्कुल व भरोसा में सच्चे रहें, अल्लाह आप को शैतान से सुरक्षित रखेगाः

﴿إِنَّهُۥ لَيۡسَ لَهُۥ سُلۡطَٰنٌ عَلَى ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَلَىٰ رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُونَ ٩٩﴾

अनुवादः (वस्तुतः उस का वश उन पर नहीं है जो ईमान लाये हैं, और आपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं)। सूरह नह्लः 99।

यदि शत्रु षड्यंत्र एवं धूर्तता के फंदे डालें, तो आप उन के (मुकाबला के) लिये तवक्कुल व भरोसा की दीवार उठायें:

﴿۞ وَٱتۡلُ عَلَيۡهِمۡ نَبَأَ نُوحٍ إِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهِۦ يَٰقَوۡمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكُم مَّقَامِي وَتَذۡكِيرِي بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ فَعَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلۡتُ فَأَجۡمِعُوٓاْ أَمۡرَكُمۡ وَشُرَكَآءَكُمۡ ثُمَّ لَا يَكُنۡ أَمۡرُكُمۡ عَلَيۡكُمۡ غُمَّةٗ ثُمَّ ٱقۡضُوٓاْ إِلَيَّ وَلَا تُنظِرُونِ ٧١﴾

अनुवादः (आप उन्हें नूह (अलैहिस्सलाम) की कथा सुनायें, जब उस ने अपनी जाति से कहाः हे मेरी जाति (के लोगों)! यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैंने भरोसा किया है, तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने साझियों (देवी-देवताओं) को भी बुला लो, फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाये, फिर जो करना चाहो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो)। सूरह यूनुसः 71।

जो व्यक्ति अपने शत्रुओं एवं विरोधियों से छुटकारा पाना चाहता हो, तो उसे चाहिये कि अल्लाह पर भरोसा करेः

﴿إِن يَنصُرۡكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمۡۖ وَإِن يَخۡذُلۡكُمۡ فَمَن ذَا ٱلَّذِي يَنصُرُكُم مِّنۢ بَعۡدِهِۦۗ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ١٦٠﴾

अनुवादः (यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे तो कौन है जो उस के पश्चात तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये)। सूरह आले इमरानः 160।

यदि मख़लूक़ व संसार वासी आप से मुँह फेर लें तो आप अल्लाह पर अपना तवक्कुल व भरोसा कायम रखें:

﴿فَإِن تَوَلَّوْاْ فَقُلْ حَسْبِيَ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُۖ وَهُوَ رَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ١٢٩﴾

अनुवादः (-हे नबी!- फिर भी यदि वह आप से मुँह फेरते हों तो उन से कह दो कि मेरे लिये अल्लाह (का सहारा) बस है, उस के अतिरिक्त कोई वास्तविक पूज्य नहीं, और वही अर्श -ए- अज़ीम (महान सिंहासन) का रब (स्वामी) है।

यदि आप को सुलह व मेलमिलाप की इच्छा हो तो उस (को प्राप्त करने) के लिये भी तवक्कुल व भरोसा के द्वार से ही प्रवेश करें:

﴿وَإِن جَنَحُواْ لِلسَّلْمِ فَٱجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ٦١﴾

अनुवादः (और यदि वह (शत्रु) संधि की ओर झुकें तो आप भी उस के लिये झुक जायें, और अल्लाह पर भरोसा करें, निश्चय वह सब कुछ सुनने जानने वाला है)। सूरह अनफ़ालः 61।

यदि आप के हृदय में ईमान पैठ बना ले एवं आप को विश्वास हो जाये कि आप का सारा मामला उसी पाक, पवित्र व उच्च (अल्लाह) के सुपुर्द है, तो आप उस के सिवा किसी और पर भरोसा नहीं करेंगेः

﴿قُلْ هُوَ رَبِّي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ﴾

अनुवादः (आप कह दें: वही मेरा पालनहार है, कोई पूज्य नहीं परंतु वही, मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर मुझे जाना है)। सूरह रअदः 30।

जो किसी भी परिस्थिति में अल्लाह पर तवक्कुल व भरोसा करने में अडिग रहे, तो महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उसके लिये काफी व पर्याप्त होता हैः

﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ وَكِيلًا ۝٣﴾

अनुवादः (आप भरोसा करें अल्लाह पर तथा अल्लाह पर्याप्त है रक्षा करने वालों को)। सूरह अह़ज़ाबः 3।

❒ निकलने के पूर्वः

जो व्यक्ति अपने घर से अल्लाह पर तवक्कुल व भरोसा करते हुये निकलता है तो महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उसका संरक्षक व निगहबान होता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप फ़रमाते हैं किः "जो आदमी अपने घर से निकलते समय यह दुआ पढ़ेः بِسْمِ اللهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إلا بِاللهِ (अर्थातः अल्लाह के नाम से (निकल रहा हूँ), मेरा सम्पूर्ण तवक्कुल व भरोसा अल्लाह ही पर है, समस्त शक्ति, बल व सामर्थ्य अल्लाह ही की ओर से है), तो आप ने फ़रमायाः उस समय कहा जाता है (अर्थातः यह बात फ़रिश्ते कहते हैं): तुझे हिदायत व मार्गदर्शन दिया गया, तेरी ओर से किफ़ायत कर दी गई, और तू बचा लिया गया, (यह सुन कर) शैतान उससे अलग हो जाता है, तो दूसरा शैतान उससे कहता हैः तेरे हाथ से आदमी कैसे निकल गया कि उसे हिदायत दे दी गई, उसकी ओर से किफ़ायत कर दी गई और वह (तेरी गिरफ्त व चंगुल) से बचा लिया गया"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम दुःखी हो गये और यह बात उन के लिये कष्टदायक साबित हुई जब उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुये सुनाः "मैं कैसे विश्राम करूँ जब्कि स़ूर वाले इसराफ़ील अलैहिस्सलाम स़ूर को मुँह में लिये हुये उस आदेश पर कान लगाये हुये हैं कि कब फूँकने का आदेश हो और इस (स़ूर) में फूँक मार दी जाये", जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि यह बात स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिये कष्टदायक है तो आप ने फ़रमायाः "कहोः

حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ، عَلَى اللهِ تَوَكَّلْنَا (अर्थातः अल्लाह हमारे लिये काफ़ी है, क्या ही अच्छा कारसाज़ व प्रबंधक है वह! अल्लाह ही पर हम ने तवक्कुल किया)"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

❒ नस़ीह़त व सदुपदेश!

बहुतेरे लोगों के अंदर से तवक्कुल का अर्थ बिल्कुल समाप्त हो चुका है! उन्होंने अल्लाह तआला को भुला दिया तो अल्लाह तआला ने भी उन्हें बिसरा दिया, उन्होंने अल्लाह तआला पर तवक्कुल व भरोसा करना छोड़ दिया तो अल्लाह तआला ने भी उन्हें उन्हीं के हवाले कर दिया ...

रोगी जब बीमार पड़ता है तो अपने दिल को डॉक्टर से जोड़ लेता है, वह दवा एवं डॉक्टर से अपना दिल लगा लेता है, जो कि केवल साधन मात्र है, ज़मीन व आसमान के पालनहार एवं रब को पूर्णतः भूल बैठता है जिस के हाथ में निरोग व स्वास्थ है!!

कुछ लोगों को आज़माइशों एवं परीक्षा में डाला जाता है, उन्हें भीषण फित्नों का सामना करना पड़ता है, समस्या विकट हो जाती है, वह दुःख व पीड़ा का बोझ ढ़ोते फिरते हैं, तथा मित्रों एवं संगियों के पास एवं नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे भटकने लगते हैं, और उस महानतम व सर्वोच्च (अल्लाह) को भूल जाते हैं जो बड़ा ज़बरदस्त नवाज़ने वाला है।

विरोधी उस पर निगाह जमाये, उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचते एवं उसका घेराव किये रहते हैं, जिसके कारण वह बड़े रंज, क्षोभ एवं दुःख तथा पीड़ा में पर जाता है, किंतु उस महानतम व सर्वोच्च (अल्लाह) से ग़ाफ़िल व अचेत रहता है जो उसकी शह -ए- रग (प्राणनाड़ी) से भी अधिक निकट है।

इब्नुल जौज़ी रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि: "मुत्तक़ी, परहेज़गार एवं अल्लाह का भय रखने वाले लोगों को यह विश्वस रखना चाहिये कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उसके लिये पर्याप्त एवं काफी है, इस लिये उसे अपने दिल को असबाब व माध्यम से लटका कर नहीं रखना चाहिय, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान है:

अनुवादः (जो व्यक्ति अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करेगा वह उसे काफ़ी होगा)। सूरह त़लाक़ः 3"।

कुछ लोग तवक्कुल का अर्थ यह समझते हैं कि असबाब एवं कारण को न अपनाया जाये, जैसाकि यमन के एक समूह के बारे में उल्लेख किया जाता है कि) वह ह़ज्ज करने के लिये निकले, किंतु अपने साथ कुछ भी पाथेय नहीं लिया, और कहने लगे किः "हम (अल्लाह पर) तवक्कुल (भरोसा) करने वाले लोग हैं", (इसका परिणाम यह निकला कि) रास्ते में लोगों के सामने हाथ फैलाने लगे, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारीः

﴿وَتَزَوَّدُواْ فَإِنَّ خَيۡرَ ٱلزَّادِ ٱلتَّقۡوَىٰۖ﴾

अनुवादः (अपने लिये पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता है)। सूरह बक़रहः 197।

अर्थात अपने साथ इतनी मात्रा में पाथेय ले लिया करो ताकि तुम्हें लोगों के सामने हाथ न फैलाना पड़े, और तुम हाथ फैलाने के अपमान से बच सको।

कुछ लोग कहते हैं किः "चूँकि मेरी रोज़ी व आजीविका लिख दी गई है तो फिर मैं उसके लिये कठिन परिश्रम क्यों करूँ?!"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि एक व्यक्ति ने आप से पूछाः हे अल्लाह के रसूल! क्या मैं अपने ऊँट को पहले बाँध दूँ तत्पश्चात अल्लाह पर तवक्कुल व भरोसा करूँ अथवा उसे ऐसे ही (खुला) छोड़ दूँ फिर तवक्कुल व भरोसा करूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "पहले बाँध दो, तत्पश्चात तवक्कुल व भरोसा करो"। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿فَٱمۡشُواْ فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُواْ مِن رِّزۡقِهِۦۖ وَإِلَيۡهِ ٱلنُّشُورُ﴾

अनुवादः (चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका, और उसी की ओर तुम्हें जीवित हो कर जाना है)। सूरह मुल्कः 15।

ज्ञात हुआ कि असबाब व माध्यम अपनाना तवक्कुल के विरुद्ध नहीं है, इसलिये तवक्कुल व भरोसा का सही ढ़ंग यह है कि उस के साथ असबाब व माध्यम को भी अपनाया जाये, अन्यथा यह आलस्य, कामचोरी एवं व्यर्थ तवक्कुल व भरोसा माना जायेगा।

﴿رَّبَّنَا عَلَيۡكَ تَوَكَّلۡنَا وَإِلَيۡكَ أَنَبۡنَا وَإِلَيۡكَ ٱلۡمَصِيرُ﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! हम ने तेरे ही ऊपर तवक्कुल व भरोसा किया, और तेरी ही ओर ध्यान किया है एवं तेरी ही ओर पुनः लौट कर आना है)। सूरह मुम्तह़िनाः 4।

❒ मार्ग यहाँ से आरंभ होता है ...

मैं अपने जीवन में अल्लाह पर कैसे तवक्कुल व भरोसा करूँ?

पहली बातः अल्लाह तआला के अस्मा व स़िफ़ात (नाम एवं गुण) को जानें, आप के दिल में जितना अल्लाह तआला की महानता का भाव उत्पन्न होगा उतना ही आप को उस पाक व पवित्र का सामीप्य प्राप्त होगा।

दूसरी बातः महानतम व सर्वोच्च अल्लाह से अच्छा गुमान रखें, "मैं अपने बंदे के गुमान के पास हूँ ..." (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है)। खर्च करने वाला जब खर्च करता है तो केवल इसलिये कि वह अल्लाह से अच्छा गुमान रखता है, और यह (विश्वास रखता है) कि वह इसका उत्तम बदला देगा, वह व्यक्ति जो अपने बिस्तर से उठ कर अपने रब के समक्ष खड़ा होता है, तो वह केवल इसलिये खड़ा होता है कि उसे अपने रब से अच्छा गुमान होता है, इसी प्रकार से ह़ज्ज, उमरा एवं नमाज़ जैसी (अन्य) इबादतों को अंजाम देने वाला (अच्छे गुमान के साथ ही उन इबादतों को अंजाम देता है) ...

तीसरी बातः महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के समक्ष अपनी शक्ति, बल एवं सामर्थ्य से दस्तबरदारी का एलान करें एवं अपनी दुर्बलता व निर्बलता तथा दरिद्रता व मोहताजगी प्रकट करें, उससे बारंबार यह दुआ करें किः आप को अपनी ज़ात अथवा किसी और प्राणी के हवाले न करे, स़ह़ीह़ ह़दीस़ में आया है किः

اللهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو، فَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ (अर्थातः हे अल्लाह! मैं केवल तेरी ही कृपा व दया की आशा रखता हूँ, एक क्षण के लिए भी तू मेरी उपेक्षा व अनदेखी न कर)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अह़मद ने अपनी मुसनद में रिवायत किया है)।

चौथी बातः सबब व माध्यमों को अपनायें, उदाहरणस्वरूप दुआ करना, जिसे अल्लाह तआला ने उद्देश्यों की प्राप्ती का माध्यम बनाया है।

पाँचवीं बातः यह याद रखें कि परिस्थितियों को बदलने की शक्ति व क्षमता केवल अल्लाह ही के पास है एवं उसी के हाथ में आसमान व ज़मीन की कुंजियां हैं, और वह हर चीज़ में सक्षम व समर्थ है, सदा याद रखें किः उस के हाथ में हर चीज़ के कोष हैं, आप का काम केवल यह है कि एक बाध्य व विविश संतान जिस प्रकार से अपने पिता के समक्ष हथियार डाल देता है, उसी प्रकार से आप भी अपने रब के समक्ष नतमस्तक हो जायें, अल्लाह तआला के लिये सर्वोच्च उदाहरण हैः

﴿وَأُفَوِّضُ أَمْرِيٓ إِلَى ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ بَصِيرُۢ بِٱلۡعِبَادِ﴾

अनुवादः (मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ, निस्संदेह अल्लाह बंदों को देख रहा है)। सूरह ग़ाफ़िरः 44।

छठी बातः अल्लाह तआला ने आप के भाग्य में जो लिख दिया है, उस पर राज़ी व प्रसन्न रहें, और यह जान रखें कि अल्लाह तआला ने आप को जो नवाज़ा है उसी में आप के लिये भलाई व अच्छाई है, यदि आप उस से सहमत नहीं होते हैं तो आप की स्थिति उसी के समान होगी जिस के बारे में बिश्र अल-हाफ़ी ने बयान किया हैः "किसी ने कहा किः (मैं अल्लाह पर तवक्कुल व भरोसा करता हूँ, वास्तव में) वह अल्लाह पर झूठ बाँधता है, यदि वह अल्लाह पर तवक्कुल व भरोसा करता तो उस कर्म (भाग्य) से सहमत होता जो अल्लाह उस के साथ कर रहा है"।

इब्ने ह़मदून ने उल्लेख किया हैः "एक देहाती व्योवृद्ध महिला के खेत पर बिजली आ गिरी, उसने शिविर (ख़ेमा) से सिर निकाल कर देखा तो उसका खेत जल कर भस्म हो चुका था, उसने अपना सिर आसमान की ओर उठाया एवं बोलीः तू चाहे जो कर ले, मेरी आजीविका की जिम्मेवारी तो तुझ पर ही है!"।

यदि बंदा (अल्लाह पर) जो सदा जीवित रहने वाला और अमर है और जिसे मृत्यु नहीं आती, पर सही अर्थों में तवक्कुल व भरोसा करने लगे, तो अल्लाह उसके सभी मामलों को पुनर्जीवित कर देता एवं उन्हें पूर्णता की चोटी तक पहुँचाता हैः

﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْحَىِّ ٱلَّذِى لَا يَمُوتُ﴾

अनुवादः (आप भरोसा कीजिये उस चिरजीवी पर जो मरेगा नहीं)। सूरह फ़ुर्क़ानः 58।

हे मुह़ाफ़िज़ व वकील, संरक्षक व प्रबंधक! हमें एक क्षण के लिये भी नज़रअंदाज़ न कर, हमारी दुर्बलता एवं अशक्तता पर दया कर, हमारी कमी को दूर कर दे, निस्संदेह तू हर चीज़ में सक्षम है।

(78)

(अल-नूर जल्ल जलालुहु)

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी प्रशंसा करते हुये फ़रमाता हैः

﴿ ٱللَّهُ نُورُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِۦ كَمِشْكَوٰةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ ٱلْمِصْبَاحُ فِى زُجَاجَةٍ ۖ ٱلزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِىٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِى ٱللَّهُ لِنُورِهِۦ مَن يَشَآءُ ۚ وَيَضْرِبُ ٱللَّهُ ٱلْأَمْثَٰلَ لِلنَّاسِ ۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾ ﴾

अनुवादः (अल्लाह आकाशों तथा धरती का प्रकाश है, उस के प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताखा हो जिस में दीप हो, दीप काँच के झाड़ में हो, झाड़ मोती जैसे चमकते तारे के समान हो, वह ऐसे शुभ ज़ैतून के वृक्ष के तेल से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी, उस का तेल समीप (संभव) है कि स्वयं प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसे आग न लगे, प्रकाश पर प्रकाश है, अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे, और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भलि-भाँति अवगत है)। सूरह नूरः 35।

स़ह़ीह़ैन में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ يَسَارِي نُورًا، وَفَوْقِي نُورًا، وَتَحْتِي نُورًا، وَأَمَامِي نُورًا، وَخَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا

(अर्थातः हे अल्लाह! मेरे दिल में नूर पैदा कर, मेरे नयन में नूर पैदा कर, मेरे कान में नूर पैदा कर, मेरी दाईं ओर नूर पैदा कर, मेरी बाईं ओर नूर पैदा कर, मेरे ऊपर नूर पैदा कर, मेरे नीचे नूर पैदा कर, मेरे आगे नूर पैदा कर, मेरे पीछे नूर पैदा कर एवं मुझे नूर प्रदान कर)। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

अल्लाह की क़सम! यह बंदे पर अल्लाह तआला की एक बहुमूल्य नियामत है कि उसे अपने नूर एवं मार्गदर्शन से अनुग्रहित करे।

हमारी चर्चा का विषय दिलों की आत्मा, आत्माओं की नियामत एवं प्राणों की प्रसन्नता है, और यह सबसे बड़ी, सबसे लाभदायक एवं सबसे उत्तम भोजन है, जैसाकि कवि कहता है:

لها أحاديثُ من ذكراك تُشغلُها　　عن الشراب وتُلهيها عن الزادِ

لها بوجهك نورٌ تستضيء به　　ومن حديثك في أعقابها حادي

إذا اشْتَكَت من كِلالِ السيرِ أوعَدَها　　رَوح اللقاءِ فتقوى عند مِيعادِ

अनुवादः उसके पास तुम्हारी याद की कुछ ऐसी बातें हैं जो उसे मदिरा एवं पाथेय से अचेत रखती हैं, उसके पास तेरे आभापूर्ण मुख का वह नूर व प्रकाश है जिससे रौशनी प्राप्त की जाती है, एवं तेरी (मीठी) बातें जीवन के सफर में उसका मन बहलाती हैं, जब उसे यात्रा की थकान का अनुभव होता है तो वह स्वयं से (तेरे) मिलन की सुख व राहत का वादा करती है, जिसके कारण उसे गंतव्य तक पहुँचने की शक्ति मिल जाती है।

❒ अल्लाह तआला के नूर व आभा की छाया में:

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ٱللَّهُ نُورُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِۚ﴾

अनुवादः (अल्लाह नूर है आसमान एवं ज़मीन का)। सूरह नूरः 35।

इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह ने उल्लेख किया है कि क़ुरआन व ह़दीस़ के वह नुसूस़ (श्लोक) जिन में अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात (व्यक्तित्व) को "नूर" से विशेषित किया है, उनके तीन प्रकार हैं:

पहला प्रकारः अल्लाह तआला नूर की विशेषता से विशेषित है, जैसाकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَأَشْرَقَتِ ٱلْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا﴾

अनुवादः (तथा जगमगाने लगी धरती अपने पालनहार की ज्योति से)। सूरह ज़ुमरः 69।

ह़दीस़ में आया है किः "अल्लाह तआला ने उन -मख़लूक़- पर अपना नूर डाला"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने ह़िब्बान ने रिवायत किया है)।

दूसरा प्रकारः अल्लाह तबारक व तआला नूर हैः

﴿ٱللَّهُ نُورُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ﴾

अनुवादः (अल्लाह नूर है आसमान एवं ज़मीन का)। सूरह नूरः 35।

ह़दीस़ में आया है किः "(हे अल्लाह!) तू आसमानों एवं ज़मीन का नूर है"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

तीसरा प्रकारः अल्लाह का पर्दा नूर है, जैसाकि स़ह़ीह़ ह़दीस़ में वर्णति हैः

حِجَابُهُ النُّورُ لَوْ كَشَفَهُ لَأَحْرَقَ سُبُحَاتُ وَجْهِهِ مَا انْتَهَى إِلَيْهِ بَصَرُهُ مِنْ خَلْقِهِ
"उसका पर्दा नूर है, यदि वह उस (पर्दा, ह़िजाब) को हटा दे, तो उसके मुख के नूर एवं आभा की किरणें जहाँ तक उसकी दृष्टि देखती है वहाँ तक सभी कुछ को जला कर भस्म कर दे"। (मुस्लिम)।

ह़दीस़ मे वर्णति शब्दः "سُبُحَاتُ وَجْهِهِ" से अभिप्रायः अल्लाह तआला के नूरमय मुख की आभा व तजल्लियात हैं।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह जिस "नूर" से विशेषित है वह नूर अल्लाह तआला द्वारा उत्पन्न की गई अन्य नूर से भिन्न हैः

﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ﴾

अनुवादः (उस के समान कोई चीज़ नहीं, और वह सुनने वाला देखने वाला है) सूरह शूराः 11।

والنورُ من أسمائِهِ أيضا ومِن　　　أوصافِه سبحانَ ذي البُرهَانِ

अनुवादः अल्लाह तआला के महान नामों एवं सुंदर विशेषताओं में से एक "नूर" भी है, पाक व पवित्र है वह (अल्लाह) जो दलील व बुरहान (प्रमाण) वाला है।

❒ मैं कुछ बातें उपहार स्वरूप आपके समक्ष रखता हूँ ...

अल्लामा अब्दुर्रह़मान सअदी रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "अल्लाह जल्ल जलालुहु के अस्मा व स़िफ़ात (नाम व विशेषता) में से नूर भी है, यह उसकी महान विशेषता है, वह वैभवशाली व महिमावान, सम्मान व आदर तथा नूर, तजल्लियात, प्रताप एवं तेज वाला है, यदि वह अपने आभाशाली व नूरमय मुख से हिजाब व पर्दा उठा ले तो उसके मुख का नूर एवं

आभा की किरणें जहाँ तक उसकी दृष्टि देखती है वहाँ तक सभी कुछ को जला कर भस्म कर दे।

उसी के नूर व प्रताप से समस्त संसार प्रकाशमान व ज्योतिर्मय है, उसके मुख के नूर व तेज से अंधकार दूर हो गया, उसी से अर्श, कुर्सी, सात त़बक (आकाश व धरा के सात तह) एवं समस्त संसार ज्योतिष्मान हैं, यह हिस्सी अर्थात अनुभव करने योग्य नूर (प्रकाश) है।

जहाँ तक बात है अर्थगत नूर (प्रकाश) की तो उससे अभिप्रायः वह नूर है जिसने उसके नबियों एवं वलियों तथा फ़रिश्तों के दिलों को प्रकाशमान किया, उसकी पहचान, ज्ञान एवं मोहब्बत की तजल्लियात अर्थात महिमा से उनके दिल ज्योतिमान हो गये, क्योंकि अल्लाह के वलियों के अंदर जितना उसकी महान विशेषताओं एवं सुंदर नामों का ज्ञान व आस्था होगी उतना ही उनके दिलों में अल्लाह का नूर भी होगा।

❒ उसकी हिदायत व मार्गदर्शन की मिठास!

यदि आप को महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की पहचान व मारफत, अर्थातः ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो गया तो आपको वास्तव में महा ज्ञान प्राप्त हो गया, क्योंकि अल्लाह तआला की मारफत, पहचान एवं ब्रह्मज्ञान ही सर्वोत्तम व सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है, हरेक प्रकार के लाभदायक विद्या व ज्ञान से दिलों में नूर उत्पन्न होता है, तो भला उस विद्या व ज्ञान का क्या कहना जो समस्त ज्ञान व विद्या से उत्तम, सबसे उच्च एवं सभी का मूल आधार है?!

(यदि आप ने यह ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया तो) आप के दिल पर अल्लाह तआला का यह फ़रमान बिल्कुल सटीक आयेगाः

﴿مَثَلُ نُورِهِۦ كَمِشۡكَوٰةٖ فِيهَا مِصۡبَاحٌۖ ٱلۡمِصۡبَاحُ فِي زُجَاجَةٍۖ ٱلزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوۡكَبٞ دُرِّيّٞ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٖ مُّبَٰرَكَةٖ زَيۡتُونَةٖ لَّا شَرۡقِيَّةٖ وَلَا غَرۡبِيَّةٖ يَكَادُ زَيۡتُهَا يُضِيٓءُ وَلَوۡ لَمۡ تَمۡسَسۡهُ نَارٞۚ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٖۚ يَهۡدِي ٱللَّهُ لِنُورِهِۦ مَن يَشَآءُۚ وَيَضۡرِبُ ٱللَّهُ ٱلۡأَمۡثَٰلَ لِلنَّاسِۗ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٞ﴾

अनुवादः (उस के प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताखा हो जिस में दीप हो, दीप काँच के झाड़ में हो, झाड़ मोती जैसे चमकते तारे के समान हो, वह ऐसे शुभ ज़ैतून के वृक्ष के तेल से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी, उस का तेल समीप (संभव) है कि स्वयं प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसे आग न लगे, प्रकाश पर प्रकाश है, अल्लाह अपने प्रकाश

का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे, और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भलि-भाँति अवगत है)। सूरह नूरः 35।

यह नूर जिसका उदाहरण पेश किया गया है, वहः अल्लाह तआला, उसकी स़िफ़ात एवं आयतों पर ईमान लाने का नूर है, मोमिनों के दिलों में उस (नूर) की मिसालः उसी नूर के समान है जो सम्पूर्ण विशेषताओं से विशेषित हो।

यही कारण है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः

اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ يَسَارِي نُورًا، وَفَوْقِي نُورًا، وَتَحْتِي نُورًا، وَأَمَامِي نُورًا، وَخَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا

(अर्थातः हे अल्लाह! मेरे दिल में नूर पैदा कर, मेरे नयन में नूर पैदा कर, मेरे कान में नूर पैदा कर, मेरी दाईं ओर नूर पैदा कर, मेरी बाईं ओर नूर पैदा कर, मेरे ऊपर नूर पैदा कर, मेरे नीचे नूर पैदा कर, मेरे आगे नूर पैदा कर, मेरे पीछे नूर पैदा कर एवं मुझे नूर प्रदान कर)। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

जब दिल इस नूर से भर जाता है तो उसका प्रभाव मुख पर भी प्रकट होता है, चुनाँचे मुख भी उस नूर से मुनव्वर व आभावान हो जाता है, शारीरिक अंग-प्रत्यंग, विनम्रता, शालीनता एवं श्रद्धा, तथा अनुपालन एवं फ़रमाँबरदारी के साथ इबादत व पूजा में लग जाते हैं, जैसाकि क़ुरआन व ह़दीस़ में आया है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿يَهْدِي ٱللَّهُ لِنُورِهِۦ مَن يَشَآءُ﴾

अनुवादः (अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे)। सूरह नूरः 35।

इब्ने सअदी रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "जब नमाज़ के नूर से उनके बात़िन व अंतर्मन मुनव्वर एवं प्रकाशमान हो जाते हैं, तो उसकी अज़मत व महानता से उनका बाहरी रूप भी दमकने लगता हैः

﴿سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ ٱلسُّجُودِ﴾

अनुवादः (उनके प्रतीक उनके मुखों पर सज्दों के चिह्न होंगे)। सूरह फ़त्ह़ः 29।

यह वह नूर है जो बंदे को बुरे कामों से बचाता है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ हैः "जब कोई व्यक्ति व्यभिचार करता है तो व्यभिचार करते समय वह मोमिन नहीं होता, इसी प्रकार से जब वह मदिरापान करता है तो मदिरापान करते समय वह मोमिन नहीं होता तथा इसी के समान जब वह चोरी करता है तो चोरी करते समय वह मोमिन नहीं होता"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

❒ उसकी किताब भी नूर हैः

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने हमें यह सूचना दी है कि उसकी ओर से अवतरित की गई किताबें, वह नूर (प्रकाशपुंज) हैं जिन से अल्लाह तआला भक्तों के दिलों को मुनव्वर व प्रकाशमान करता है, अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَا ٱلتَّوۡرَىٰةَ فِيهَا هُدٗى وَنُورٞۚ﴾

अनुवादः (हमने तौरात नाज़िल फ़रमाई जिसमें हिदायत व नूर है)। सूरह माइदाः 44।

इसके अतिरिक्त एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿وَءَاتَيۡنَٰهُ ٱلۡإِنجِيلَ فِيهِ هُدٗى وَنُورٞ﴾

अनुवादः (हम ने उन्हें इंजील प्रदान की जिस में हिदायत (मार्गदर्शन) एवं नूर (प्रकाश) थी)। सूरह माइदाः 46।

सबसे महान व सर्वश्रेष्ठ नूर जो अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया वह मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित की गई किताब (क़ुरआन) है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ وَكِتَٰبٞ مُّبِينٞ﴾

अनुवादः (तुम्हार पास अल्लाह की ओर से नूर एवं स्पष्ट पुस्तक आ चुकी है)।

इसके द्वारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने मोमिनों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश के पथ चलायाः

﴿الٓرۚ كِتَٰبٌ أَنزَلۡنَٰهُ إِلَيۡكَ لِتُخۡرِجَ ٱلنَّاسَ مِنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ بِإِذۡنِ رَبِّهِمۡ إِلَىٰ صِرَٰطِ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡحَمِيدِ ١﴾

अनुवादः (अलिफ़, लाम, रा, यह (क़ुरआन) एक पुस्तक है, जिसे हम ने आप की ओर अवतरित किया है, ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें, उन के पालनहार की अनुमति से, उस की राह की ओर जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है)। सूरह इब्राहीमः 1।

यही कारण है कि जब काफ़िरों को यह बात पता चली कि उम्मत पर इस नूर का कितना गहरा प्रभाव है, तो वो इसको बुझाने का प्रयास करने लगे, किंतु महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपनी पुस्तक को सुरक्षित रखाः

﴿يُرِيدُونَ لِيُطۡفِـُٔواْ نُورَ ٱللَّهِ بِأَفۡوَٰهِهِمۡ وَٱللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِۦ وَلَوۡ كَرِهَ ٱلۡكَٰفِرُونَ ٨﴾

अनुवादः (वो चाहते हैं कि बुझा दें अल्लाह के प्रकाश को अपने मुखों से, तथा अल्लाह पूरा करने वाला है अपने प्रकाश को, यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को)। सूरह स़फ़्फ़ः 8।

जब तक यह उम्मत उस महानतम व सर्वोच्च (पालनहार) की किताब (क़ुरआन) को दृढ़ता व अडिगता के साथ पकड़े रहेगी, तब तक अल्लाह भी उन की सुरक्षा करता रहेगा।

❒ निष्कर्ष एवं सार ...

चूँकि नूर उसका नाम एवं उसकी स़िफ़त (विशेषता) है, अतः उस का दीन (धर्म), उस के रसूल तथा उस का कलाम (वाणी) भी नूर हैं, वह सम्मानित घर भी नूर से जगमगायेगा जिसे उसने अपने बंदों के लिये तैयार कर रखा है, उस के मोमिन बंदों के दिलों में नूर (प्रकाश) रौशन रहता है, उनकी ज़ुबानों एवं शारीरिक अंगों पर उस नूर के प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह क़यामत के दिन उन्हें सम्पूर्ण नूर प्रदान करेगा, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿نُورُهُمۡ يَسۡعَىٰ بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَبِأَيۡمَٰنِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَآ أَتۡمِمۡ لَنَا نُورَنَا وَٱغۡفِرۡ لَنَآۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ﴾

अनुवादः (उन का प्रकाश दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगे: हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को, वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है)। सूरह तह़रीमः 8।

हे अल्लाह! आसमानों एवं ज़मीनों के नूर! हमें सम्पूर्ण नूर प्रदान कर, हमें क्षमा कर दे, निस्संदेह तू हर चीज़ में सक्षम व समर्थ है।

(79)

(अल-काफ़ी जल्ल जलालुहु)

सहीहैन में जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह फ़रमाते हैं किः "हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ग़ज़्वा -ए- नज्द में शामिल हुये, जब आप को दोपहर की गर्मी ने पा लिया उस समय आप अत्यधिक काँटेदार वृक्षों वाली वादियों में थे, चुनाँचे आप ने एक घने छायादार वृक्ष के नीचे उसकी छाया में विश्राम किया तथा अपनी तलवार वृक्ष से लटका दी, सहाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम भी वृक्षों के नीचे छाया प्राप्त करने के लिये फैल गये, अभी हम इसी स्थिति में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें पुकारा, हम उपस्थित हुये तो क्या देखते हैं कि एक देहाती आप के पास बैठा हुआ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः यह जब मेरे पास आया तो मैं सो रहा था, इस बीच इस ने मेरी तलवार (मुझ पर) सौंत (उठा) ली, जब मेरी निद्रा भंग हुई तो यह मेरी नंगी तलवार मुझ पर उठाये हुये मेरे सिर पर खड़ा था, कहने लगाः आप को मुझ से कौन बचायेगा? मैंने कहाः अल्लाह! फिर इसने तलवार मियान में कर ली तथा बैठ गया, और देख लो यह (अब तक) बैठा हुआ है"। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे कोई दण्ड नहीं दिया।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُۥ﴾

अनुवादः (क्या अल्लाह अपने बंदों के लिये काफ़ी (पर्याप्त) नहीं है?)। सूरह ज़ुमरः 36।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला अपने बंदों के लिये काफ़ी है, क्योंकि वही उनका राज़िक़ (आजीविका प्रदान कर्ता), सुधारक एवं प्रबंधक है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उन के लिये काफ़ी व पर्याप्त है, यह किफ़ायत एवं पर्याप्त होना समस्त सृष्टि के लिये आम एवं व्यापक है।

जहाँ तक विशेष किफ़ायत एवं पर्याप्त होने की बात है तो वह उन भक्तों को प्राप्त होती है जो उस पर तवक्कुल व भरोसा करते हैं तथा उनकी ओर पलटते हैं।

अल्लाह तआला के काफ़ी व पर्याप्त होने की परिधि विशाल एवं असीमित है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُۥ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِٱلَّذِينَ مِن دُونِهِۦ ۚ وَمَن يُضْلِلِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾﴾

अनुवादः (क्या अल्लाह पर्याप्त नहीं है अपने भक्त के लिये? तथा वह डराते हैं आप को उन से जो उस के सिवा हैं, तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो नहीं है उसे कोई सुपथ दिखाने वाला)। सूरह ज़ुमरः 36।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ ۚ﴾

अनुवादः (जो अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करेगा तो वही उसे पर्याप्त है)। सूरह त़लाक़ः 3।

अर्थातः उसके समस्त धार्मिक एव सांसारिक मामलों के लिये काफ़ी होगा।

रसूल एवं मोमिन बंदों के लिये अल्लाह तआला का काफ़ी व पर्याप्त होना यह है किः वह उन पर अपनी मदद नाज़िल फ़रमता एवं फ़रिश्तों के द्वारा उन की सहायता करता हैः

﴿وَلِلَّهِ جُنُودُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ﴾

अनुवादः (तथा अल्लाह ही की हैं आकाशों एवं धरती की सेनायें)। सूरह फ़त्ह़ः 4।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿بَلَىٰٓ ۚ إِن تَصْبِرُوا۟ وَتَتَّقُوا۟ وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم بِخَمْسَةِ ءَالَٰفٍ مِّنَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾﴾

अनुवादः (क्यों नहीं? यदि तुम सब्र (सहन) करोगे तथा आज्ञाकारी रहोगे, और वह (शत्रु) तुम्हारे पास अपनी इसी उत्तेजना के साथ आ गये, तो तुम्हारा पालनहार तुम्हें (तीन नहीं) पाँच हज़ार चिह्न लगे फ़रिश्तों द्वारा समर्थन देगा)। सूरह आले इमरानः 125।

❒ निःसंदेह वह काफ़ी एवं पर्याप्त हैः

बंदा अपने रब से जीवन के किसी भी मामला में क्षण भर क लिये भी अपने रब से बेनियाज़ व बेपरवाह नहीं हो सकता, अपितु वह (सदा) अल्लाह की सुरक्षा, उसकी किफ़ायत तथा उसकी तौफ़ीक़, अनुकंपा एवं मार्गदर्शन का मोहताज रहता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें एक ऐसी बात की शिक्षा दे रहे हैं जो बंदे के प्रति अल्लाह तआला के काफ़ी व पर्याप्त होने को बयान करने वाली एक महान शिक्षा है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़हीह़ ह़दीस़ है, आप फ़रमाते हैं किः "जो आदमी अपने घर से निकलते समय यह दुआ पढ़ेः بِسْمِ اللهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إلا بِاللهِ (अर्थातः अल्लाह के नाम से (निकल रहा हूँ), मेरा सम्पूर्ण तवक्कुल व भरोसा अल्लाह ही पर है, समस्त शक्ति, बल व सामर्थ्य अल्लाह ही की ओर से है), तो आप ने फ़रमायाः उस समय कहा जाता है (अर्थातः यह बात फ़रिश्ते कहते हैं): तुझे हिदायत व मार्गदर्शन दिया गया, तेरी ओर से किफ़ायत कर दी गई, और तू बचा लिया गया, (यह सुन कर) शैतान उससे अलग हो जाता है, तो दूसरा शैतान उससे कहता हैः तेरे हाथ से आदमी कैसे निकल गया कि उसे हिदायत दे दी गई, उसकी ओर से किफ़ायत कर दी गई और वह (तेरी गिरफ्त व चंगुल) से बचा लिया गया"। (यह ह़दीस़ स़हीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

मोमिन बंदा (अल्लाह की) सुरक्षा एवं धर्म पर अडिग व सुदृढ़ रहने के लिये अधिकाधिक अस्मा -ए- हुस्ना (अच्छे व प्यारे नाम) का वसीला व माध्यम अपनाता है तथा विनम्रता एवं रोने गिड़गिड़ाने से काम लेता है, क्योंकि उसके सिवा कोई अन्य उसके लिये काफ़ी एवं रक्षक नहीं है, स़हीह़ मुस्लिम में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बिस्तर पर जाते तो फ़रमातेः

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا، وَكَفَانَا وَآوَانَا، فَكَمْ مِمَّنْ لاَ كَافِيَ لَهُ وَلاَ مُؤْوِيَ
(अर्थातः अल्लाह ही के लिये समस्त प्रकार की प्रशंसा है जिसने हमें खिलाया, पिलाया (हर प्रकार से) काफ़ी व पर्याप्त हुआ, तथा हमें ठिकाना दिया, कितने ऐसे लोग हैं जिन का न तो कोई किफ़ायत करने वाला है और न ठिकाना देने वाला)।

❒ उसके भय से चिमटे रहिये!

मोमिन बंदा जब महानतम व सर्वोच्च अल्लाह से अच्छा गुमान रखता है, अपने तवक्कुल व भरोसा में सच्चा होता है, (अल्लाह से) उसकी बड़ी उम्मीदें लगी रहती हैं, तो अल्लाह उसकी आशा व गुमान को व्यर्थ नहीं जाने देता, क्योंकि अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ﴾

अनुवादः (जो अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करेगा तो वही उसे पर्याप्त है)। सूरह त़लाक़ः 3।

यह असबाब को मुसब्बब (कारण को उस बनने वाले कारण से) जोड़ने का नाम है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फ़रमायाः "निःसंदेह अल्लाह तआला फ़रमाता हैः मैं अपने बंदे के साथ (कोई मामला करने में) उसके गुमान के अनुसार होता हूँ, अच्छा गुमान होने पर मामला भी अच्छा होगा एवं बुरा गुमान होने पर मामला भी बुरा होगा"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अह़मद ने मुसनद में रिवायत किया है)।

अल्लाह तआला ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का मामला अपने हाथ में लिया (तथा उनकी सुरक्षा का प्रबंध किया), अतः मरुस्थल में काफ़िला (यात्रीदल) को पानी का मोहताज बना दिया ताकि वह पानी की खोज में कुँवें तक पहुँचे, फिर मिस्र के अज़ीज़ को संतान का मोहताज बना दिया ताकि वह आप को अपना दत्तक पुत्र बना लें, तत्पश्चात बादशाह को सपना की ताबीर (वर्णन) का मोहताज कर दिया ताकि वह आप को कारावास से निकालने पर विवश हो, इसके बाद पूरे मिस्र को खाद्यान्न का मोहताज कर दिया ताकि आप मिस्र (के कोष मंत्रालय) के मंत्री नामित किये जायें ...

यदि अल्लाह तआला आपकी सुरक्षा का जिम्मे अपने हाथ में ले ले तो आप के लिये सौभाग्यशालिता और सआदत के सारे माध्यम उपलब्ध कर देता है और आप को आभास भी नहीं होता, आप केवल अल्लाह तआला पर तवक्कुल व भरोसा कीजिये, वह आप के लिये काफ़ी होगा, आप सच्चे दिल से कहिये किः

अनुवादः (मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ)। सूरह ग़ाफ़िरः 44।

❒ आज़माइश व परीक्षा ...

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "जब अल्लाह तआला ने तवक्कुल व भरोसा करने वालों के लिये अपने काफ़ी व पर्याप्त होने का उल्लेख किया तो इस से यह भ्रम उत्पन्न हो सकता था कि तवक्कुल व भरोसा करते ही अति शीघ्र वह किफ़ायत प्राप्त हो जायेगी, अतः इस भ्रम को दूर करने के लिये, उसके तुरंत बाद यह फ़रमायाः

﴿قَدۡ جَعَلَ ٱللَّهُ لِكُلِّ شَيۡءٖ قَدۡرٗا﴾

अनुवादः (अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है)। सूरह त़लाक़ः 3।

अर्थातः एक निश्चित समय तय कर रखा है जिस से वह आगे नहीं बढ़ सकता, वह उस (किफ़ायत को) उस समय तक के लिये टाल देता है जो उसके लिये निश्चित किया गया है।

इसलिये तवक्कुल व भरोसा करने वालों को जल्दी मचाते हुये यह नहीं कहना चाहिये किः मैंने तवक्कुल किया और दुआ भी की, परंतु इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, एवं मुझे किफ़ाय नहीं हासिल हुई? जब्कि अल्लाह तआला अपने वादा को उसके निश्चित समय पर ही पूरा करने वाला है।

इसी प्रकार से महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बंदों को आज़माता है कि वो अपने तवक्कुल व भरोसा में सच्चे हैं या नहीं, इसलिये (कभी-कभी) दुआ को स्वीकार करने में विलंब कर देता है, इसी कारणवश कुछ लोगों को अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती है तो वो अल्लाह पर तवक्कुल व भरोसा करना छोड़ देते हैं, और लोगों के पास जा कर अपमान व तिरस्कार झेलते हैं, चाहे इस के लिये उन्हें अपने धर्म एवं अल्लाह तआला की प्रसन्नता का सौदा ही क्यों न करना पड़े।

स़ह़ीह़ ह़दीस़ में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जो लोगों की अप्रसन्नता झेल कर अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहता हो तो लोगों से पहुँचने वाली पीड़ा के सिलसिले में अल्लाह तआला उसके लिये काफ़ी व पर्याप्त होगा तथा जो अल्लाह को अप्रसन्न कर के लोगों की प्रसन्नता चाहता हो तो अल्लाह तआला उन्हीं लोगों को उसे पीड़ा पहुँचाने के लिये निर्धारित कर देगा"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

❒ अति उत्तम उत्तर ...

बंदे का उद्देश्य उसी समय पूरा हो सकता है जब वह आख़िरत (परलोक) की चिंता को अपनी सोच का केंद्र बिंदु बना ले, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फ़रमायाः "जिसने अपनी समस्त सोच-विचार को एक सोच अर्थात आख़िरत की सोच बना लिया, तो अल्लाह तआला उस के सांसारिक दुःखों के लिये काफ़ी व पर्याप्त होगा, एवं जिसने अपनी सभी सोच-विचार का केंद्र बिंदु केवल सांसारिक वस्तुओं को बना लिया

हो तो अल्लाह तआला को कोई परवाह नहीं कि वह किस वादी में तबाह हो जाये"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने माजह ने रिवायत किया है)।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "जो व्यक्ति अपने नफ़्स (आप) से बेपरवाह हो कर अल्लाह (की प्रसन्नता पाने) में व्यस्त रहता है, अल्लाह तआला उसकी नफ़्स की आवश्यकताओं के लिये काफ़ी हो जाता है, जो व्यक्ति लोगों से लापरवाह हो कर अल्लाह (को प्रसन्न करने) में व्यस्त रहता है, अल्लाह तआला लोगों की ज़रूरत (व आवश्यकता) से उस के लिये काफी हो जाता है, किंतु जो अल्लाह तआला से बेपरवाह हो कर अपने आप में व्यस्त रहता है, अल्लाह तआला उसे स्वयं उसी के हवाले कर देता है, और जो अल्लाह तआला से बेपरवाह हो कर लोगों (को प्रसन्न करने) में व्यस्त रहता है तो अल्लाह तआला उसे लोगों के सुपुर्द कर देता है"।

يكفيكَ من وسَعَ الخلائقَ رحمةً　　وكفايةً ذو الفضلِ والإحسانِ

يكفيكَ ربٌ لم تزَل ألطافُه　　تأتِي إليك برحمةٍ و حنانِ

يكفيك ربٌ لم تزل فِي سِترِه　　ويَراكَ حين تَجِيءُ بالعصيانِ

يكفيكَ ربٌ لم تزل فِي حفظِه　　ووقايةً منه مدى الأزمانِ

يكفيك ربٌ لم تزل فِي فضلِه　　متقلبا فِي السِر و الإعلانِ

अनुवादः आप के लिये वह फ़ज़्ल, एह़सान एवं उपकार वाला (पालनहार) काफी है जिसकी रह़मत, दया एवं किफायत समस्त सृष्टि को अपने घेरा में लिये हुये है। तुम्हारे लिये वह परवरदिगार काफी है जिसकी मेहरबानियाँ, दयालुता एवं स्नेह बारंबार तुम पर बरस रही हैं। तुम्हारे लिये वह रब काफी है जिसने अब तक (तुम्हारे गुनाहों पर) पर्दा डाल रखा है, और जब तुम उसकी नाफ़रमानी व अवज्ञा करते हो तो वह तुम्हें देख रहा होता है। वह पालनहार तुम्हारे लिये पर्याप्त है जिसकी सुरक्षा व निगरानी सदा तुझे प्राप्त रही है। तुम्हारे लिये वह रब काफी है जिस के फ़ज़्ल, एह़सान एवं उपकार से तुम एकांतावास में भी तथा सभा में भी लाभांवित होते रहते हो।

हे अल्लाह! हे काफ़ी, पर्याप्त, मुह़ाफ़िज़ व संरक्षक! तू हमें ह़लाल (रिज़्क़) दे कर ह़राम से किफ़ायत कर (बचा) दे एवं अपने फ़ज़्ल, एह़सान तथा उपकार से अनुग्रहित कर अपने सिवा हर किसी से बेनियाज़ व निस्पृह कर दे।

(80, 81)

(अल-मौला, अल-वली जल्ल जलालुहु)

आप को एक सहायक, अभिभावक तथा शरण स्थली व आश्रय की आवश्यकता है जिस पर आप तवक्कुल व भरोसा करें, आप को एक स्वामी की आवश्यकता है, उस ज़ात व व्यक्तित्व की आवश्यकता है जो आप को यह संतुष्टि दिला सके कि यह जीवन रंज, क्षोभ एवं पीड़ा का नाम है, आप को एक मज़बूत, महाशक्तिशाली व महा बली (परवरदिगार) की ज़रूरत है जो आप को शत्रुओं से सुरक्षित रख सके, आप अपने स्वामी के मोहताज हैं।

أَتيتُك راجيًا يا ذا الجَلالِ ففرّج ما تَرى من سوءِ حَالِي

إلى مَن يَشتَكِي المملوكُ إلا إلى مولاهُ يا مَولى الموالِي

अनुवादः हे महानता व प्रताप वाले पालनहार मैं तेरे द्वारा पर बड़ी आशा ले कर आया हूँ, तू मेरे दुर्दिन दूर कर दे, हे सभी स्वामियों के (सब से बड़े) स्वामी! दास अपने स्वामी के सिवा किस से शिकायत करे।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी किताब में इर्शाद फ़रमाता हैः

﴿وَهُوَ ٱلْوَلِيُّ ٱلْحَمِيدُ﴾

अनुवादः (और वही संरक्षक सराहनीय है)। सूरह शूराः 28।

एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿ٱللَّهُ وَلِيُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يُخْرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ﴾

अनुवादः (अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये, वह उन को अंधेरों से निकालता है और प्रकाश में लाता है)। सूरह बक़रहः 257।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह समस्त प्राणियों का प्रबंध कर्ता एवं स्वामी है, उसी ने (उन को) उत्पन्न किया एवं वही उन की तदबीर व प्रबंध करता है, एवं हर समय आसमानों एवं ज़मीनों के सभी मामलों में हेर-फेर करता है, उसके सिवा हमारा कोई कारसाज़ व प्रबंध कर्ता नहीं जो हमें लाभ पहुँचाये तथा हम से हानि, क्षति एवं बुराई को दूर कर दे, हमारी पेशानियाँ व ललाट उसी महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के हाथ में हैं।

यह आम, सामान्य एवं व्यापक विलायत, कारसाज़ी व प्रबंधन है, जोः समस्त सृष्टि की उत्पत्ति एवं तदबीर व प्रबंधन को सम्मिलित है, चाहे वो सदाचारी हों अथवा दुराचारी, मोमिन हों या काफ़िर।

जहाँ तक बात है विशिष्ट व ख़ास विलायत, कारसाज़ी व प्रबंधन कीः तो यह अल्लाह तआला के मुत्तक़ी, परहेज़गार एवं सदकर्मी बंदों के लिये है, वह इस प्रकार से कि अल्लाह तआला उन्हें अज्ञानता, कुफ्र एवं पाप के अंधकार से निकाल कर ज्ञान, ईमान एवं सदकर्म व आज्ञापालन की रौशनी प्रदान करता है, विरोधियों पर उसे विजय व प्रभुत्व देता है तथा उनके समस्त सांसारिक व पारलौकिक मामलों को सुधार देता है।

यह ऐसी विलायत, कारसाज़ी व प्रबंधन है जो रह़मत, दया व मेहरबानी, सुधार, सुरक्षा एवं मोहब्बत व प्रेम को चाहती है, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ٱللَّهُ وَلِيُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ يُخۡرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِۖ﴾

अनुवादः (अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये, वह उन को अंधेरों से निकालता है और प्रकाश में लाता है)। सूरह बक़रहः 257।

❒ अनुसरण व आज्ञापालन के अनुसार ही विलायत, कारसाज़ी व प्रबंधन प्राप्त होता हैः

मोमिन बंदा जितना अपने परवरदिगार से प्रेम करता है उसी के समान उसे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की विलायत, कारसाज़ी व प्रबंधन प्राप्त होता है।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः “विलायत का मूलः प्रेम है, प्रेम के बिना विलायत (मित्रता) की कल्पना नहीं की जा सकती, जैसाकि शत्रुता व द्वेष का मूलः घृणा एवं वैर है।

अल्लाह तआला अपने मोमिन बंदों का मित्र है, तथा वो अपने पालनहार के मित्र हैं, वो अपने प्रेम के द्वारा अल्लाह तआला की विलायत (मित्रता) का तकाजा पूरा करते हैं, और अल्लाह तआला भी उन से प्रेम कर के उन्हें अपना वली (मित्र) बना कर रखता है, चुनाँचे अल्लाह तआला अपने मोमिन बंदे के प्रेम के समान ही उससे प्रेम रखता है”।

अल्लाह की विलायत के समान किसी और की विलायत नहीं हैः

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ﴾

अनुवादः (उस के समान कोई चीज़ नहीं, वह बहुत सुनने एवं देखने वाला है)। सूरह शूराः 11)।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बंदे को अपना वली बना कर रखता है, वह इस प्रकार से कि उस पर फ़ज़्ल, एहसान व उपकार करता है, उस के दुःख व क्षोभ को दूर कर देता है तथा उस पर दया व कृपा करता हैः

﴿ٱللَّهُ وَلِىُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟﴾

अनुवादः (अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये)। सूरह बक़रहः 257।

मानव के विपरीत, क्योंकि एक मानव दूसरे मानव से इसलिये मित्रता रखता है कि मित्रता के द्वारा उसे बल एवं (धन दौलत में) बाहुल्यता प्राप्त हो, क्योंकि बंदा मूल रूप से विवश एवं ज़रूरतमंद होता है।

किंतु महानतम व सर्वोच्च अल्लाह महा बलशाली व बेनियाज़ है, वह विवशता, बाध्यता एवं आवश्यकता के अनुसार किसी को अपना मित्र नहीं बनाता, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَقُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ شَرِيكٌ فِى ٱلْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ وَلِىٌّ مِّنَ ٱلذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًۢا ﴿١١١﴾﴾

अनुवादः (तथा कहें कि सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस के कोई संतान नहीं, और न राज्य में उस का कोई साझी है, और न अपमान से बचाने के लिये उस का कोई समर्थक है, और आप उस की महिमा का वर्णन करें)। सूरह बनी इस्राईलः 111।

❒ क़ौम व समुदाय की चिंता ...

अल्लाह तआला के बंदों में जो अल्लाह के वली होते हैं उन की विशेषता यह है किः वह अल्लाह तआला व उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम करते हैं, जो अल्लाह तआला व उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम रखते हैं, वो उन से भी प्रेम करते हैं, जो अल्लाह तआला व उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से घृणा

करते हैं वो उन से घृणा करते हैं, और जो अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मित्रता करते हैं वो उन से मित्रता रखते हैं, तथा जो अल्लाह तआला व उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना शत्रु मानते हैं वो उन्हें अपना शत्रु समझते हैं, अल्लाह तआला के आदेशों का अनुपालन करते हैं तथा उसकी अवज्ञा से बचते हैं:

﴿وَمَن يَتَوَلَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ فَإِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْغَٰلِبُونَ ۝٥٦﴾

अनुवादः (जो अल्लाह और उस के रसूल तथा ईमान वालों को सहायक बनायेगा, तो निश्चय अल्लाह का दल ही प्रभुत्व पा कर रहेगा)। सूरह माइदाः 56।

﴿لَّا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ يُوَآدُّونَ مَنْ حَآدَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ﴾

अनुवादः (आप नहीं पायेंगे उन को जो ईमान रखते हों अल्लाह तथा अन्त-दिवस (प्रलय) पर कि वह मैत्री करते हों उन से जिन्होंने विरोध किया अल्लाह और उस के रसूल का)। सूरह मुजादलाः 22।

❒ मार्गः

विलायत (मित्रता) दो ही मार्गों से प्राप्त की जा सकती हैः तक़्वा (अल्लाह का भय) एवं ईमान के द्वारा, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ ٱللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝٦٢ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَكَانُواْ يَتَّقُونَ ۝٦٣ لَهُمُ ٱلْبُشْرَىٰ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَٰتِ ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ ۝٦٤﴾

अनुवादः (सुनो! जो अल्लाह के मित्र हैं, न उन्हें कोई भय होगा, और न वह उदासीन होंगे। जो ईमान लाये, तथा अल्लाह से डरते रहे। उन्हीं के लिये सांसारिक जीवन में शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी, अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है)। सूरह यूनुसः 62-64।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की विलायत (मित्रता) कसबी है (अर्थात जिसे कमाना पड़ता है, तथा जिसे प्राप्त करने के लिये) उसके असबाब व माध्यमों तथा हार्दिक एवं

शारीरिक कर्मों को अंजाम देना अति आवश्यक है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फ़रमान है:

﴿وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُواْ فِينَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَاۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَمَعَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ ٦٩﴾

अनुवादः (जिन्होंने हमारी राह में प्रयास किया तो हम अवश्य दिखा देंगे उन को अपनी राह, और निश्चय अल्लाह सदाचारियों के साथ है)। सूरह अन्कबूतः 69।

﴿وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ﴾

अनुवादः (और वही उन के सुकर्मों के कारण उन का सहायक होगा)। सूरह अनआमः 127।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की विलायत व दोस्ती में लोगों की श्रेणियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार से ईमान एवं तक़्वा में उनकी विभिन्न श्रेणियाँ हैं।

❒ स्वीकार्यता की कुंजियाँ ...

बंदा जितना महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के निकट होता जाता है, फ़रायज़ (अनिवार्य कार्य) एवं दीन के फ़ज़ायल (जिससे प्रधानता प्रमाणित होती है) पर अमल करने के द्वारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह से उसका प्रेम एवं सामीप्य भी उसी के समान बढ़ता चला जाता है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप फ़रमाते हैं किः “अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता हैः जिसने मेरे किसी वली (मित्र) से शत्रुता की तो उसके विरुद्ध मेरी ओर से एलान -ए- जंग है, तथा बंदा जिन-जिन इबादतों व उपासनाओं के द्वारा मेरा सामीप्य प्राप्त करता है उन में से कोई भी इबादत व उपासना मुझे उतनी प्रिय नहीं जितनी प्रिय वह इबादत व उपासना है जो मैंने उस पर फ़र्ज़ व अनिवार्य किये हैं, मेरा बंदा नफ़्ल (इबादतों) के द्वारा मेरे इतना निकट हो जाता है कि मैं उस से प्रेम करने लगता हूँ, और जब मैं उस से प्रेम करने लगता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है, उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है, उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है, और उसका पाँव बन जाता हूँ जिससे वह चलता है, यदि वह मुझ से माँगे तो मैं उसे देता हूँ, मुझे किसी कार्य में कोई संकोच व हिचकिचाहट नहीं होती जिसे मैं करने वाला होता हूँ, जो मुझे मोमिन की आत्मा

निकालते समय होती है, वह पीड़ा के कारण मृत्यु को अप्रिय रखता है और मुझे उसे पीड़ा देना अच्छा नहीं लगता"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि: "वली उसी समय वली बनता है, जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाँबरदार व आज्ञापालन करने वाला हो, आंतरिक रूप से भी तथा बाह्य रूप से भी, जितना वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाँबरदार होगा उतना ही उस को अल्लाह तआला की विलायत (मित्रता) प्राप्त होगी"।

❑ जब अल्लाह आप को अपना वली (मित्र) बना लेता है तो (अपने इनाम, पुरस्कार व अनुग्रह से) आप को आश्चर्य में डाल देता है!

इस विशिष्ट विलायत एवं मित्रता की माँग है कि वह अपने बंदों पर दया व मेहरबानी करता तथा उन्हें (सदकर्म की) तौफ़ीक़ व अनुग्रह से नवाज़ता है:

﴿ٱللَّهُ وَلِيُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ يُخۡرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِۖ﴾

अनुवाद: (अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये, वह उन को अंधेरों से निकालता है और प्रकाश में लाता है)। सूरह बक़रह: 257।

इस विलायत का तकाजा यह भी है कि (अल्लाह अपने वली के) पापों को क्षमा कर देता है तथा उन पर अपनी रहमत व दया अवतरित करता है:

﴿أَنتَ وَلِيُّنَا فَٱغۡفِرۡ لَنَا وَٱرۡحَمۡنَاۖ وَأَنتَ خَيۡرُ ٱلۡغَٰفِرِينَ﴾

अनुवाद: (तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे, और हम पर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान है)। सूरह आराफ़: 155।

इसके अतिरिक्त इस विलायत का तकाजा यह भी है कि शत्रुओं के विरुद्ध मदद, प्रभुत्व एवं सहायता प्रदान करता है:

﴿أَنتَ مَوۡلَىٰنَا فَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ﴾

अनुवाद: (तू ही हमारा स्वामी है, हमें काफिरों के समुदाय पर प्रभुत्व दे)। सूरह बक़रह: 286।

एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿بَلِ ٱللَّهُ مَوۡلَىٰكُمۡۖ وَهُوَ خَيۡرُ ٱلنَّٰصِرِينَ ١٥٠﴾

अनुवादः (बल्कि अल्लाह ही तुम्हारा मौला (स्वामी) है, एवं वही सर्वोत्तम सहायक व मददगार है)। सूरह आले इमरानः 150।

इस विलायत (मित्रता) का तकाजा है (कि अल्लाह अपने वलियों को) जन्नत में प्रवेश दिला कर जहन्नम से मुक्ति प्रदान करे, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿۞ لَهُمۡ دَارُ ٱلسَّلَٰمِ عِندَ رَبِّهِمۡۖ وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ١٢٧﴾

अनुवादः (उन्हीं के लिये आप के पालनहार के पास शान्ति का घर (स्वर्ग) है, और वही उन के सुकर्मों के कारण उन का सहायक होगा)। सूरह अनआमः 127।

यह अल्लाह तआला की बड़ी नियामत व महा अनुग्रह है कि आप को अल्लाह तआला की विलायत व मित्रता प्राप्त हो जाये, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿نِعۡمَ ٱلۡمَوۡلَىٰ وَنِعۡمَ ٱلنَّصِيرُ﴾

अनुवादः (वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है)। सूरह अनफ़ालः 40।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह यदि आप का वली होगा तो आप को लोक परलोक में अमन व शांति मिलेगीः

﴿أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلۡأَمۡنُ وَهُم مُّهۡتَدُونَ﴾

अनुवादः (उन्हीं के लिये शांति है, तथा वही मार्ग दर्शन पर हैं)। सूरह अनआमः 82।

फिर आप निश्चिंत रहेंगे, क्योंकि आप को महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की मईयत व साथ मिल जायेगा, आप की ज़ुबान पर सदा यह विर्द व जाप होगाः

﴿قُل لَّن يُصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ ٱللَّهُ لَنَا هُوَ مَوۡلَىٰنَاۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ٥١﴾

अनुवादः (आप कह दें: हमें कदापि कोई विपत्ति नहीं पहुँचेगी परंतु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दिया है, वही हमारा सहायक है, और अल्लाह ही पर ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये)। सूरह तौबाः 51।

वह आप को तंगी व कष्ट में इस लिये डालता है ताकि आप को अपना निकटवर्ती (बंदा) बना लेः

﴿وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى ٱلَّذِينَ ٱسۡتُضۡعِفُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَنَجۡعَلَهُمۡ أَئِمَّةٗ وَنَجۡعَلَهُمُ ٱلۡوَٰرِثِينَ ٥﴾

अनुवादः (हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दें उन्हीं को प्रमुख एवं बना दें उन्हीं को उत्तराधिकारी)। सूरह क़सस़ः 5।

जब आप का मौला, आक़ा व स्वामी आप को अपनी विलायत (मित्रता) में ले लेता है तो आप गहन निगरानी, सुरक्ष एवं नियामत में होते हैं, आप गलती करते हैं तो वह आप को दण्ड देता है, आप फ़ुज़ूलख़र्ची (अपव्यय) करते हैं तो वह आप को तंगदस्त (दरिद्र) कर देता है, आप अहंकार व अभिमान करते हैं तो वह आप को डाँटता एवं सावधान करता है, ऐसा केवल इसलिये कि अल्लाह तआला आप का आक़ा, मौला व स्वामी है, और वह अति उत्तम कारसाज़, प्रबंध कर्ता एवं सर्वश्रेष्ठ सहायक व मददगार है।

आप निश्चित रूप से यह जानते हैं कि यह प्रेम करने वाले (पालनाहार) की डाँट व सावधान करना है, अज़ाब व यातना नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला अपने प्रिय बंदों को यातना व अज़ाब नहीं देताः

﴿وَقَالَتِ ٱلۡيَهُودُ وَٱلنَّصَٰرَىٰ نَحۡنُ أَبۡنَٰٓؤُاْ ٱللَّهِ وَأَحِبَّٰٓؤُهُۥۚ قُلۡ فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُمۖ بَلۡ أَنتُم بَشَرٞ مِّمَّنۡ خَلَقَۚ﴾

अनुवादः (तथा यहूदी एवं ईसाइयों (नसारा) ने कहा कि हम अल्लाह के पुत्र हैं, आप पूछें कि फिर वह तुम्हें तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुम भी वैसे ही मानव पुरुष हो जैसे दूसरे हैं, जिन की उत्पत्ति उस ने की है)। सूरह माइदाः 18।

إِلهي أَنتَ لِلإِحسانِ أَهلٌ ... وَمنكَ الجُودُ وَالفَضلُ الجَزِيلُ
إِلهي جُد بِعَفوِكَ لِي فَإِنِّي ... عَلَى الأَبوابِ مُنكَسِرٌ ذَلِيلُ

अनुवादः हे अल्लाह! तू ही सभी फ़ज़्ल, एहसान व परोपकार को अंजाम देने वाला है, और तुझ से ही सख़ावत, उदारता एवं महान व बड़ा फ़ज़्ल प्राप्त होता है। हे अल्लाह! मेरे ऊपर अपने क्षमा व माफी की उदारता कर, इसी के लिये मैं तेरे द्वार पर विनम्रता, श्रद्धा एवं विवशता के साथ खड़ा हूँ।

हे अल्लाह! हम तेरे महान नाम (अल-मौला, अर्थातः वली, मित्र, कारसाज़ व प्रबंधन करने वाला) के वसीला व माध्यम से दुआ करते हैं कि तू हमें जन्नत में प्रवेश दिला कर हम पर एहसान व उपकार कर तथा हमें बाह्य व आंतरिक रूप से भी अपने वलियों व मित्रों में शामिल कर ले।

(82)

(अल-हादी जल्ल जलालुहु)

ضللتُ زَمانا لستُ أعرفُ الْهُدَى وقد كان ذاكم ظلمة فِي فُؤاديا

فلما أراد اللهُ دَفعي للهُدى أبانَ سبيلَ الحقِ لِي و هَدانيا

فألقيتُ عنِي ظُلمةَ الغَيِّ والرَدَى ويَمَّمتُ نورا للهدايةِ بَاديا

و صِرتُ إلى دينِ النبِي مُحمدٍ رَشِيدًا و من الضلالةِ داعيا

अनुवादः मैं एक युग तक गुमराह एवं सत्यमार्ग से अनभिज्ञ रहा, उस समय मेरे दिल की दुनियाँ अंधकारमय थी। परंतु जब अल्लाह ने मुझे हिदायत व मार्गदर्शन देना चाहा तो मेरे लिये ह़क़ व सत्य को स्पष्ट कर दिया एवं मुझे मार्गदर्शित कर दिया। फिर मैं विनाश एवं गुमराही के मार्ग को पीछे छोड़ कर नूर (प्रकाश) एवं स्पष्ट मार्गदर्श के पथ पर लग गया। मैं (प्यारे) नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म का पथिक बन गया एवं गुमराही (से मुक्ति मिलने) के पश्चात (हिदात की ओर) दावत देने लगा।

बंदों पर महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की रह़मत व दया ही है किः उसने हिदायत व मार्गदर्शन को अपने हाथ में रखा है, तथा अपनी ज़ात को अल्लाह तआला ने ''अल-हादी'' (अर्थातः हिदायत व मार्गदर्शन देने वाला) से विशेषित किया है।

हम इस महान नाम में सोच-विचार करते हैं, एवं अल्लाह तआला से दुआ व प्रार्थना करते हैं किः हमें अपनी आज्ञा से ह़क़ व सत्य एवं सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन प्रदान करे।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَإِنَّ ٱللَّهَ لَهَادِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٖ﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह ही पथ प्रदर्शक है उन का जो ईमान लाये सुपथ की ओर)। सूरह हजः 54।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيٗا وَنَصِيرٗا﴾

अनुवादः (आप का पालनहार मार्गदर्शन देने तथा सहायता करने को बहुत है)। सूरह फ़ुर्क़ानः 31।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जो बंदों को लाभ कमाने एवं हानि से बचने की ओर मार्गदर्शन करता है, उन्हें जिस चीज़ का ज्ञान नहीं है उन्हें उस का ज्ञान प्रदान करता है, उन्हें तौफ़ीक़ व सत्य की ओर मार्गदर्शित करता है, उन्हें तक़वा, भय एवं ख़शीअत से अनुग्रहित करता है, उन के दिल को अपनी ओर आकर्षित तथा अपने आदेश के अधीन कर देता है।

❒ इंसान के लिये अल्लाह तआला की हिदायत, मार्गदर्शन व रहनुमाई ...

इसके चार प्रकार हैं:

पहला प्रकारः आम, सामान्य व व्यापक हिदायतः अर्थात, हरेक प्राणी को उनके जीवन के अनुसार उत्तम युक्तियों एवं आवश्यकताओं की ओर मार्गदर्शन करना, यह हिदायत सभी प्रकार के प्राणी को शामिल है, चाहे वह प्राणी ज़ुबान वाला हो अथवा बेज़ुबान, पशु हो अथवा पक्षी, वाकपटु व भाषा का ज्ञाता हो अथवा इसके विपरीत।

दूसरा प्रकारः मुकल्लफ़ (बाध्य, किसी कार्य को करने के लिये विवश) बंदों को ह़क़ व सत्य की ओर मार्गदर्शन, जोकि वास्तव में: महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का अपनी मख़लूक़ पर हुज्जत व दलील कायम करना है, जो (अल्लाह) किसी बंदे को उस समय तक अज़ाब व यातना नहीं देता जब तक उस पर हुज्जत व दलील न कायम कर ले।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَٰهُمْ فَٱسْتَحَبُّوا۟ ٱلْعَمَىٰ عَلَى ٱلْهُدَىٰ﴾

अनुवादः (और रही बात स़मूद की, तो हम ने उन्हें मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्गदर्शन से प्रिय समझा)। सूरह ह़ा मीम सज्दाः 17।

तीसरा प्रकारः तौफ़ीक़ व सत्य की ओर हिदायत देना तथा ह़क़ व सत्य को स्वीकार करने एवं उस से प्रसन्न रहने के लिये दिल को खोल देना, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَمَن يَهْدِ ٱللَّهُ فَهُوَ ٱلْمُهْتَدِ﴾

अनुवादः (जिस को अल्लाह हिदायत दे दे, सो वही हिदायत पाने वाला है)। सूरह बनी इस्राईलः 97।

इसके अतिरिक्त एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿وَمَن يُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ يَهۡدِ قَلۡبَهُۥۚ﴾

अनुवादः (जो अल्लाह पर ईमान लाये, अल्लाह उसके हृदय को मार्गदर्शन देता है)। सूरह तग़ाबुनः 11।

इसीलिये अल्लाह तआला ने अपने बंदों को यह आदेश दिया है कि वह उस से हिदायत व मार्गदर्शन माँगें, बल्कि यह बतलाया है कि वह प्रत्येक रकअत में अल्लाह तआला से हिदायत व मार्गदर्शन की दुआ करें:

﴿ٱهۡدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلۡمُسۡتَقِيمَ ٦﴾

अनुवादः (हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा)। सूरह फ़ातिहाः 6।

चौथा प्रकारः क़्यामत के दिन जन्नत एवं जहन्नम की रहनुमाई करना, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿سَيَهۡدِيهِمۡ وَيُصۡلِحُ بَالَهُمۡ ٥﴾

अनुवादः (उन्हें मार्ग दिखायेगा तथा उनकी स्थिति सुधार देगा)। सूरह मुहम्मदः 5।

एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿وَقَالُواْ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي هَدَىٰنَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهۡتَدِيَ لَوۡلَآ أَنۡ هَدَىٰنَا ٱللَّهُۖ﴾

अनुवादः (वो कहेंगे किः अल्लाह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस का मार्ग दिखाया और यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता)। सूरह आराफ़ः 43।

रही बात जहन्नम (से बचने) की रहनुमाई की तो महानतम व सर्वोच्च अल्लाह इसके विषय में फ़रमाता हैः

﴿۞ ٱحۡشُرُواْ ٱلَّذِينَ ظَلَمُواْ وَأَزۡوَٰجَهُمۡ وَمَا كَانُواْ يَعۡبُدُونَ ٢٢ مِن دُونِ ٱللَّهِ فَٱهۡدُوهُمۡ إِلَىٰ صِرَٰطِ ٱلۡجَحِيمِ ٢٣﴾

अनुवादः (आदेश होगा कि) घेर लाओ सब अत्याचारियों को तथा उन के साथियों को और जिस की वे इबादत कर रहे थे। अल्लाह के सिवा, फिर दिखा दो उन को नरक की राह)। सूरह स़ाफ़्फ़ातः 22-23।

❒ जितना आप की हिदायत में वृद्धि होगी उतना ही आपकी पदोन्नती भी होगी ...

हिदायत एवं मार्गदर्शन वह सब से बड़ी नेअमत व अनुग्रह है जिस से (अल-हादी, अर्थातः हिदायत व मार्गदर्शन देने वाला) अपने बंदे को अनुग्रहित करता है, इसके सिवा हरेक नियामत नष्ट हो जाने वाली है।

प्रकांड विद्वान व धर्मशास्त्री सबसे अधिक इसी नियामत के इच्छुक होते हैं, और वो अल्लाह तआला से यह दुआ करते रहते हैं कि यह नियामत उन से छिन न जायेः

﴿رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا﴾

अनुवादः (हे हमारे पालनहार! हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात कुटिल न कर)। सूरह आले इमरानः 8।

हिदायत व मार्गदर्शन की कोई सीमा नहीं है, चाहे बंदा उस के जिस पद पर आसीन हो जाये! उसकी हिदायत के ऊपर भी कोई हिदायत है, हर हिदायत के ऊपर दूसरी हिदायत होती है, जिसकी कोई सीमा नहीं है, जब-जब बंदा अपने पालनहार का तक़्वा व भय अपनाता है तब-तब उसे दूसरी हिदायत की ओर पदोन्नती मिलती है, चुनाँचे जब तक उस के अंदर तक़्वा बढ़ता रहता है तब तक उसकी हिदायत में भी वृद्धि होती रहती है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَيَزِيدُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ٱهْتَدَوْا۟ هُدًى﴾

अनुवादः (और अल्लाह उन्हें जो सुपथ हों मार्गदर्शन में अधिक कर देता है)। सूरह मर्यमः 76।

जैसे-जैसे उस के तक़्वा का कोई भाग उससे कम होता हे वैसे-वैसे उसी के समान हिदायत का अंश भी उससे कम होता है, और जिसे हिदायत मिल जाती है उसे वास्तव में सदा की नियामत प्राप्त हो जाती है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ٱهْدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ۞ صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ﴾

अनुवादः (हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा। उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया)। सूरह फ़ातिहाः 6-7।

हिदायत व मार्गदर्शन का प्रतीकः सीने का खुल जाना एवं उदार हृदय हो जाना है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهۡدِيَهُۥ يَشۡرَحۡ صَدۡرَهُۥ لِلۡإِسۡلَٰمِۖ﴾

अनुवादः (जिस व्यक्ति को अल्लाह (सीधे) मार्ग पर डालना चाहता है उसके सीना को इस्लाम के लिये खोल देता है)। सूरह अनआमः 125।

जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता है, इसी प्रकार से जिस को अल्लाह कुपथ कर दे उसे कोई सुपथ नहीं कर सकता, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمَن يُضۡلِلِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِنۡ هَادٖ ۝٣٦ وَمَن يَهۡدِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِن مُّضِلٍّۗ﴾

अनुवादः (जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो नहीं है उसे कोई सुपथ दर्शाने वाला। और जिसे अल्लाह सुपथ दर्शा दे तो नहीं है उसे कोई कुपथ करने वाला)। सूरह ज़ुमरः 36-37।

इसीलिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अधिकतर यह दुआ पढ़ा करते थेः

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْهُدَى وَالتُّقَى وَالْعَفَافَ وَالْغِنَى (अर्थातः हे अल्लाह! मैं तुझ से हिदायत, तक़्वा, पवित्रता एवं (दिल की) बेनियाज़ी माँगता हूँ)। (मुस्लिम)।

इसके अतिरिक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु को शिक्षा देते हुये फ़रमायाः اللهُمَّ اهْدِنِي وَسَدِّدْنِي (अर्थातः -दुआ करते हुये कहिये- हे अल्लाह! मुझे हिदायत दे और मुझे सीधे मार्ग पर चला)। (मुस्लिम)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ह़सन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यह शिक्षा दी कि वित्र में यह दुआ किया करें: اللهم اهْدِنِي فيمَنْ هَدَيتَ (अर्थातः हे अल्लाह! जिन लोगों को तू ने हिदायत दी है, मुझे भी उन लोगों के साथ हिदायत दे)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

आज्ञापालन एवं अवज्ञा के मध्य जीवन बिताने की एक संगीनी यह भी है कि आप यह नहीं जानते कि किस समय आप का अंत हो जाये और आप मृत्यु को प्राप्त हो जायें।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "गुनाह व पाप मानव स्वभाव में से है, इसलिये इंसान हर क्षण हिदायत व मार्गदर्शन का मोहताज होता है, बल्कि वो खाने पीने से भी अधिक हिदायत का मोहताज होता है"।

❒ आकाश के द्वार पर दस्तक दीजिये!

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़ुबानी इर्शाद फ़रमाता हैः

﴿وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝٩٩﴾

अनुवादः (तथा उस (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) ने कहाः मैं जाने वाला हूँ अपने पालनहार की ओर, वह मुझे सुपथ दर्शायेगा)। सूरह स़ाफ़्फ़ातः 99।

आप अपनी कमज़ोरी व दुर्बलता के साथ अल्लाह की ओर जायें वह आप के पास अपनी शक्ति व बल के साथ आयेगा ... आप अपनी विवशता व अपमान के साथ अल्लाह तआला की ओर जायें वह अपने सम्मान एवं सामर्थ्य के साथ आप की ओर आयेगा ... आप अपनी वहशत व भय के साथ अल्लाह की ओर जायें वह अपने स्नेह एवं प्रेम के साथ आप की ओर आयेगा ... आप अपनी निर्धनता व दरिद्रता के साथ उसकी ओर बढ़ें वह अपने धन एवं बेनियाज़ी के साथ आप की ओर बढ़ेगा ... आप अपने कष्ट व रंज के साथ अल्लाह की ओर जायें वह अपनी कुशादगी व उदारता के साथ आप की ओर बढ़ेगा ... आप अपने दुःख व पीड़ा के साथ अल्लाह की ओर जायें वह अपनी समृद्धि एवं सुख के साथ आप का स्वागत करेगा।

إلهي أجِرني من عذابِك إنني — أسيرٌ ذليلٌ خائفٌ لك أخْضَع
إلهي أذِقني طُعمَ عَفوِك يومَ لا — بنونٌ ولا مالٌ هنالك ينفعُ

अनुवादः मेरे पूज्य! मुझे अपनी यातना से मुक्ति दे, मैं तेरा दास, अपमानित व तिरस्कृत, डरा हुआ एवं भयभीत हूँ तथा तेरे समक्ष नतमस्तक हूँ। मेरे उपास्य! मुझे उस दिन अपनी क्षमा व माफ़ी की मिठास से अनुग्रहित करना जिस दिन न संतान काम आयेंगे और न धन-सम्पदा।

❒ अंतिम बात ...

शीराज़ी रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "एक रात मैंने अपने पिता के साथ जाग कर (इबादत की), जब्कि हमारे आस-पास के सारे लोग सो रहे थे, मैंने कहाः इन में से कोई नहीं उठा कि

दो रकअत नमाज़ भी पढ़ ले, उन्होंने उत्तर देते हुये फ़रमायाः हे मेरे पुत्र! यदि तुम सोये रहते तो यह बेहतर था इस बात से कि तुम मख़लूक़ (दूसरे लोगों) की बुराई करो"।

आप का सत्य मार्ग पर डटे रहना आप को कदापि यह अधिकार नहीं देता की आप दूसरों की गुमराही का उपहास करें, याद रखें कि लोगों के दिल रहमान (अल्लाह) की दो उँगलियों के बीच में हैं, वह उन्हें जैसे चाहता है फेरता रहता है, इसलिये न अपने सदकर्म पर अहंकार करें और न अपनी इबादत पर, क्योंकि यह तो केवल आप पर अल्लाह का एहसान व उपकार है, अतः अल्लाह तआला से अपने लिये (सत्य मार्ग पर) अडिग रहने की तथा दूसरों के सत्य मार्ग पर आने की दुआ करते रहें, अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से फ़रमाया जो समस्त लोक वासी से बेहतर थेः

﴿وَلَوْلَآ أَن ثَبَّتْنَٰكَ لَقَدْ كِدتَّ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيلًا ﴿٧٤﴾﴾

अनुवादः (यदि हम आप को सुदृढ़ (अडिग) न रखते तो आप उन की ओर कुछ न कुछ झुक जाते)। सूरह बनी इस्राईलः 74।

हे अल्लाह! हे मार्गदर्शन करने वाले (पालनहार)! हमें अपनी मशीअत से (लोगों के) मतभेद में हक़ व सत्य की ओर मार्गदर्शित कर, निःसंदेह तू जिस को चाहे सीधी राह की ओर रहनुमाई करता है।

(अल-नसीर जल्ल जलालुहु)

सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में आया है कि हुदैबिया संधि की शर्तें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा -ए- किराम को बहुत बुरी लगीं ...

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहाः "क्या आप अल्लाह के सच्च नबी नहीं हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः निश्चय ऐसा ही है, मैंने कहाः क्या हम हक़ व सत्य पर तथा कुफ़्फ़ार बातिल व असत्य पर नहीं हैं?! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: हाँ, ऐसा ही है, मैंने कहाः फिर हम अपने धर्म के विषय में अपमान का घोंट क्यों पीयें (अर्थात दब कर संधि क्यों करें?) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः निःसंदेह मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ, और मैं उसकी अवज्ञा नहीं करता, वह मेरा मददगार व सहायक है"। (इन शब्दों को बुख़ारी ने रिवायत किया है)।

تعاليتَ يا من تَجْعلُ الحقَ يَغلبُ ويَهزِمُ شَرًّا قد تَمادى يخَرِّبُ

فأنت الذي تُعطي الحقوقَ لأهلها فنَصرُك أقوى ما يكون وأقربُ

अनुवादः हे वह (पालनहार)! जो हक़ व सत्य को प्रभुत्व देता तथा उपद्रवियों एवं उद्दंडों को परास्त करता है। तू ही हकदारों को उसका हक पहुँचाता है, तेरी मदद व सहायता सबसे शक्तिशाली एवं निकट है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बारे में इर्शाद फ़रमाता हैः

﴿فَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ مَوۡلَىٰكُمۡۚ نِعۡمَ ٱلۡمَوۡلَىٰ وَنِعۡمَ ٱلنَّصِيرُ﴾

अनुवादः (जान लो कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है, और वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है?)। सूरह अनफ़ालः 40।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है (जिसका वादा है) कि अपने रसूलों, नबियों एवं वलियों को संसार में एवं उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे, उन के शत्रुओं पर विजय व प्रभुत्व प्रदान करेगा, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَيَوۡمَ يَقُومُ ٱلۡأَشۡهَٰدُ ٥١﴾

अनुवादः (निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लाये, सांसारिक जीवन में, तथा जिस दिन साक्षी खड़े होंगे)। सूरह मोमिनः 51।

हमारा पालनहार कमज़ोरों की मदद करता एवं अत्याचारियों के अत्याचार को दूर करता है, यद्यपि वह काफ़िर ही क्यों न हों, इसलिये कि अल्लाह तआला के सिवा उनका कोई सहायक व मददगार नहीं होता।

हमारा परवरदिगार मोमिनों को उनके शत्रुओं के विरुद्ध विजय एवं प्रभुत्व प्रदान करता है, चाहे वह शत्रु बाहरी हो जैसे काफ़िर एवं अत्याचारी लोग, अथवा वह शत्रु अंदरूनी हो जैसे नफ़्स एवं शैतान, ये दोनों शत्रु मोमिन के लिये उसके बाहरी शत्रु से भी अधिक हानिकारक हैं:

﴿وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُواْ فِينَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَاۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَمَعَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ ٦٩﴾

अनुवादः (जिन्होंने हमारी राह में प्रयास किया तो हम अवश्य दिखा देंगे उन को अपनी राह, और निश्चय अल्लाह सदाचारियों के साथ है)। सूरह अन्कबूतः 69।

जब अल्लाह तआला की नुसरत, मदद एवं सहायता उतरती है तो जिसे उस की सहायता मिलती है उसे न कोई हरा सकता है न कोई अपमानित कर सकता हैः

﴿إِن يَنصُرۡكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمۡۖ﴾

अनुवादः (यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता)। सूरह आले इमरानः 160।

❒ नुसरत, सहायता व मदद के प्रकारः

मोमिन बंदों को महानतम व सर्वोच्च अल्लाह विभिन्न प्रकार की सहायता से नवाज़ता है, जहाँ से बंदे को गुमान भी नहीं रहता, अल्लाह तआला की मदद व नुसरत एवं सहायता के असंख्य प्रकार हैं:

कभी फ़रिश्तों के द्वारा उन की सहायता व मदद करता है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं सह़ाबा के साथ बद्र युद्ध में हुआ, कभी हवा के द्वारा उनकी सहायता करता है, जैसाकि "आद" व "स़मूद" समुदाय के साथ तथा अह़ज़ाब युद्ध में हुआ, अथवा अबाबील नामक पक्षियों को भेज कर उन की सहायता करता है, जैसाकि "फ़ील (हाथी)" वालों के वृत्तांत में है, या कर्कश ध्वनी के द्वारा उनका सर्वनाश कर देता है जैसाकि (स़मूद) समुदाय के साथ हुआ, अथवा धरती को धँसा कर के (विरोधियों का नामो निशान मिटा देता है) जैसे क़ारून के साथ किया, अथवा उन (की बस्ती) ऊपर उठा कर ओंधे मुँह नीचे गिरा देता है, जैसाकि "लूत़" समुदाय के साथ हुआ, अथवा तूफान को (शत्रुओं पर) थोप देता है, जैसाकि नूह (अलैहिस्सलाम के) समुदाय के साथ हुआ।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की असंख्य सेनायें हैं, अल्लाह अपने इरादे पर प्रभुत्व रखने वाला है तथा वह हर चीज़ में सक्षम है।

सहायता व मदद का रूप कभी यह होता है कि शत्रुओं पर विजय एवं प्रभुत्व प्राप्त होता है, जैसे दाऊद, सुलैमान अलैहिमस्सलाम एवं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हुआ।

कभी उसका रूप यह होता है कि रसूलों के जीवन ही में उन्हें झुठलाने वालों से इंतेकाम लिया जाता है, जैसाकि नूह, लूत़ अलैहिमस्सलाम के समुदाय एवं फ़िरऔन आदि के नाश का मामला है। या रसूलों की मृत्यु पश्चात (उन से इंतेकाम लिया जाता है) जैसाकि यह़या अलैहिस्सलाम के प्राण पखेरू उड़ने के पश्चात उन के कातिलों पर बुख़्तनस़र को थोप दिया एवं ईसा अलैहिस्सलाम के कत्ल का षड्यंत्र रचने वालों पर रोम को थोप दिया।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ فِي ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ ٱلْأَشْهَٰدُ ۝٥١﴾

अनुवादः (निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लाये, सांसारिक जीवन में, तथा जिस दिन साक्षी खड़े होंगे)। सूरह मोमिनः 51।

❒ काफी व पर्याप्त उत्तर ...

सुद्दी रहि़महुल्लाह कहते हैं किः “अम्बिया -ए- किराम एवं मोमिनों को संसार में (उनके शत्रुओं के हाथों) कत्ल कर दिया जाता था, जब्कि वो अल्लाह तआला के द्वारा प्रभुत्व प्राप्त एवं विजय प्रदत्त हुआ करते थे, वह इस प्रकार से कि वह कौम व समुदाय जो उन नबियों एवं रसूलों के साथ ऐसा करती थी, वह उस समय तक फ़ना नहीं होती थी जब तक कि अल्लाह तआला ऐसी क़ौम न भेज देता जो उन से उन मक़तूलों एवं वधितों का बदला लेती, इस प्रकार से इस आयत से जो भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है वह दूर हो जाती है”।

दूसरा भ्रम जो कुछ लोग अल्लाह तआला के इस फ़रमान के विषय में उत्पन्न करते हैं:

﴿وَلَن يَجۡعَلَ ٱللَّهُ لِلۡكَٰفِرِينَ عَلَى ٱلۡمُؤۡمِنِينَ سَبِيلًا﴾

अनुवादः (अल्लाह काफ़िरों के लिये ईमान वालों पर कदापि कोई राह नहीं बनायेगा)। सूरह निसाः 141।

आख़िरत व परलोक से संबंधित तो इसमें कोई भ्रम नहीं है।

रही बात इस लोक व संसार की तो उसका उत्तर वह है जैसाकि इब्नुल क़ैयिम रहि़महुल्लाह ने लिखा हैः “यदि ईमान में कमी आ जाये तो ईमान में कमी के समान उन के विरोधियों को उन पर राह मिल जायेगी, क्योंकि मोमिन शक्तिशाली व बलशाली, प्रभुत्वशाली व ज़ोरावर, तथा सफल व विजयी होता हैः

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَيَوۡمَ يَقُومُ ٱلۡأَشۡهَٰدُ ٥١﴾

अनुवादः (निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लाये, सांसारिक जीवन में, तथा जिस दिन साक्षी खड़े होंगे)। सूरह मोमिनः 51”।

काफ़िरों के जिस प्रभुत्व एवं वर्चस्व का हम सामना कर रहे हैं, उसका कारण वह कमी एवं बेशी है जो हम मुसलमानों ने स्वयं अपने धर्म में अविष्कार कर ली है, यदि हम इससे तौबा व प्रायश्चित्त कर लें एवं हमारा ईमान सम्पूर्ण हो जाये तो महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की ओर से मदद, नुस़रत व सहायता आ कर रहेगीः

﴿وَعۡدَ ٱللَّهِۖ لَا يُخۡلِفُ ٱللَّهُ وَعۡدَهُۥ﴾

अनुवादः (यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन के)। सूरह रूमः 6।

नुसरत व सहायता का मूल्यः ईमान, (शत्रुओं से मुकाबला की) तैयारी एवं सब्र तथा धैर्य रखना है, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿وَكَانَ حَقًّا عَلَيۡنَا نَصۡرُ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ﴾

अनुवादः (और अनिवार्य था हम पर ईमान वालों की सहायता करना)। सूरह रूमः 47।

इसके अतिरिक्त फ़रमायाः

﴿وَأَعِدُّواْ لَهُم مَّا ٱسۡتَطَعۡتُم مِّن قُوَّةٖ﴾

अनुवादः (तथा तुम से जितना हो सके उन के लिये शक्ति तैयार रखो)। सूरह अनफ़ालः 60।

एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿وَإِن تَصۡبِرُواْ وَتَتَّقُواْ لَا يَضُرُّكُمۡ كَيۡدُهُمۡ شَيۡـًٔاۗ﴾

अनुवादः (यदि तुम सब्र (धैर्य) करते रहे, और आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा)। सूरह आले इमरानः 120।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि, आप ने फ़रमायाः "... नुस़रत, मदद व सहायता स़ब्र व धैर्य के साथ आती है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अह़मद ने मुसनद में रिवायत किया है)।

(जब ये विशेषतायें किसी मोमिन के अंदर पैदा हो जायें) तब जा कर नास़िर, मददगार व सहायक एवं कारसाज़ व प्रबंध करने वाले परवरदिगार की सहायत व मदद अवतरित होती है, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَمَا ٱلنَّصۡرُ إِلَّا مِنۡ عِندِ ٱللَّهِ﴾

अनुवादः (सहायता तो अल्लाह ही की ओर से है)। सूरह आले इमरानः 126।

इसके अतिरिक्त फ़रमायाः

﴿إِن يَنصُرۡكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمۡۖ﴾

अनुवादः (यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता)। सूरह आले इमरानः 160।

जब महानतम व सर्वोच्च अल्लाह आप के साथ होगा तो आप को कौन पराजित कर सकता है?

और यदि अल्लाह तआला आप से अपनी दया दृष्टि हटा ले तो कौन आप का नासिर व सहायक होगा?

जिसने अल्लाह की शरण ली, अल्लाह तआला उसके लिये काफ़ी व पर्याप्त हो गया तथा उसको उच्च पद मिल गयाः

﴿وَٱعۡتَصِمُواْ بِٱللَّهِ هُوَ مَوۡلَىٰكُمۡۖ فَنِعۡمَ ٱلۡمَوۡلَىٰ وَنِعۡمَ ٱلنَّصِيرُ﴾

अनुवादः (अल्लाह को सुदृढ़ पकड़ लो, वही तुम्हारा संरक्षक है, तो वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है)। सूरह हजः 78।

मोमिन दूसरे मोमिन को प्रिय रखता है, परोक्ष में भी उसके लिये प्रार्थना करता है, यद्यपि उनके मध्य देश एवं समय की दूरी ही क्यों नहो।

हे अल्लाह! हे सहायक व मददगार! काफ़िरों के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

(84)

(अल-वारिस़ जल्ल जलालुहु)

एक हकीम व ज्ञानी से कहा गयाः क्या बात है कि आप सदा लाठी पकड़े रहते हैं जब्कि आप न तो व्योवृद्ध हैं और न ही रोगी? तो उन्होंने उत्तर दियाः ताकि मैं यह याद रखूँ कि मैं मुसाफिर व यात्री हूँ।

حمَلتُ العصا لا الضَعفُ أوجبَ حمَلَها علىَّ ولا أني تَحَنيتُ من كِبرِ

و لكنني أَلزَمتُ نفسي حملَها لأُعلِمَها أن المقيمَ على سفرِ

अनुवादः मैंने लाठी पकड़ ली इसलिये नहीं कि कमज़ोरी ने मुझे इसका मोहताज कर दिया, और न ही इसलिये कि बुढ़ापा के कारण मेरी कमर झुक गई, बल्कि मैंने लाठी पकड़ने को अपने लिये अनिवार्य कर लिया है ताकि अपने आप को बता सकूँ कि (मेरा जीवन) एक यात्रा है।

यात्रियों के लिये यह एलान कर दीजिये कि तुम्हारे लिये इस संसार में (सदा का) ठहराव व शरण नहीं है, अतः इस संसार में अधिक मग्न न हो जाओ, यह ऐलान महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस फ़रमान भी आया हैः

﴿إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ ٱلْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾﴾

अनुवादः (निश्चय हम ही उत्तराधिकारी होंगे धरती के तथा जो उस के ऊपर है और हमारी ही ओर सब प्रत्यागत किये जायेंगे)। सूरह मर्यमः 40।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है, जोः वारिस़ (उत्तराधिकारी) है।

आइये हम अल्लाह सुब्हानहु व तआला के एक महान नाम (अल-वारिस़, अर्थातः उत्तराधिकारी) में चिंतन-मनन करते एवं स्वयं को उसकी याद दिलाते हैं, ताकि अल्लाह तआला हम पर रह़म व दया करे, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِۦ وَنُمِيتُ وَنَحْنُ ٱلْوَٰرِثُونَ ﴿٢٣﴾﴾

अनुवादः (हम ही जीवन देते एवं हम ही मृत्यु देते हैं और हम ही (अंततः) वारिस़ (उत्तराधिकारी) हैं)। सूरह ह़िज्रः 23।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह समस्त सृष्टि के नष्ट हो जाने के पश्चात भी बाकी रहने वाला है, आसमानों एवं ज़मीनों में रहने वाली हरेक चीज़ के फ़ना हो जाने के बाद तमाम चीज़ों का वारिस़ व उत्तराधिकारी बनने वाला है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह किसी के वारिस़ बनाये बिना ही (स्वयं से) वारिस़ है, वह सदा बाकी रहने वाला अमर है, उसकी बादशाहत को पतन नहीं, अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ ٱلْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝٤٠﴾

अनुवादः (निश्चय हम ही उत्तराधिकारी होंगे धरती के तथा जो उस के ऊपर है और हमारी ही ओर सब प्रत्यागत किये जायेंगे)। सूरह मर्यमः 40।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह सदा से समस्त वस्तुओं का मालिक व स्वामी रहा है, जिसे चाहता है उन वस्तुओं का वारिस़ एवं उत्तराधिकारी बना देता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ ٱلْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۖ وَٱلْعَـٰقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ﴾

अनुवादः (वास्तव में धरती अल्लाह की है, वह अपने भक्तों में से जिसे चाहे उस का वारिस़ (उत्तराधिकारी) बना देता है, और (सुखद) अंत उन्हीं के लिये है जो आज्ञाकारी हों)। सूरह आराफ़ः 128।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जो संसार में मोमिनों को काफ़िरों के घरों का वारिस़ बनाता है तथा आख़िरत में भी उन्हें (जन्नत की) मंज़िलों का वारिस़ बनायेगा।

जहाँ तक इस संसार लोक की बात है तो इस के संबंध में अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَـٰرَهُمْ وَأَمْوَٰلَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوهَا ۚ﴾

अनुवादः (और तुम्हारे अधिकार में दे दी उन की भूमी, तथा उन के घरों और धनों को तथा ऐसी धरती को जिस पर तुमने पग भी नहीं धरा था)। सूरह अह़ज़ाबः 27।

जहाँ तक आख़िरत व परलोक की बात है तो महानतम व सर्वोच्च अल्लाह बयान फ़रमाता हैः

﴿تِلْكَ ٱلْجَنَّةُ ٱلَّتِى نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَن كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾﴾

अनुवादः (यही वह स्वर्ग है, जिस का हम उत्तराधिकारी बना देंगे, अपने भक्तों में से उसे जो आज्ञाकारी हों)। सूरह मर्यमः 63।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَنَزَعْنَا مَا فِى صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِى مِن تَحْتِهِمُ ٱلْأَنْهَـٰرُ ۖ وَقَالُوا۟ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى هَدَىٰنَا لِهَـٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَآ أَنْ هَدَىٰنَا ٱللَّهُ ۖ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِٱلْحَقِّ ۖ وَنُودُوٓا۟ أَن تِلْكُمُ ٱلْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾﴾

अनुवादः (तथा उन के दिलों में जो द्वेष होगा उसे हम निकाल देंगे उन (स्वर्गों) में नहरें बहती होंगी तथा वो कहेंगे कि उस अल्लाह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस की राह दिखाई और यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता, हमारे पालनहार के रसूल सत्य ले कर आये, तथा उन्हें पुकारा जायेगा कि इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने सत्कर्मों के कारण हुये हो)। सूरह आराफ़ः 43।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की किताब (क़ुरआन) हिदाय, मार्गदर्शन एवं सम्मान व उच्चता की किताब है जिसका वारिस़ अल्लाह तआला अपने चयनित सम्मानित बंदों को बनाता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ثُمَّ أَوْرَثْنَا ٱلْكِتَـٰبَ ٱلَّذِينَ ٱصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِۦ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِٱلْخَيْرَٰتِ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ ٱلْفَضْلُ ٱلْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾﴾

अनुवादः (हम ने उन लोगों को उस किताब का वारिस़ बनाया जिन को हमने अपने बंदों में पसंद फ़रमाया, फिर उनमें से कुछ तो अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं तथा कुछ उनमें माध्यम श्रेणी के हैं तथा उन में से कुछ अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकियों में उन्नति किये जाते हैं, यह बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है)। सूरह फ़ातिरः 32।

❒ वास्तविक स्वामित्व ...

मोमिन का उत्तराधिकारी होना तथा उस का अपने रब के पास पुनः लौट कर जाना (इसका विवरण इस प्रकार है कि): मोमिन पर अल्लाह तआला की विशेष कृपा है किः उसने

मोमिनों को अपनी प्रदान की हुई नियामतों में से ख़र्च (व्यय) करने का आदेश दिया, जब्कि ये समस्त नियामतें उसी महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की शुद्ध मिल्कीयत हैं, इसके अतिरिक्त उस पर बड़े स़वाब व पुण्य का वादा भी किया है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ءَامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَأَنفِقُواْ مِمَّا جَعَلَكُم مُّسۡتَخۡلَفِينَ فِيهِۖ فَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مِنكُمۡ وَأَنفَقُواْ لَهُمۡ أَجۡرٞ كَبِيرٞ ٧﴾

अनुवादः (तुम सभी ईमान लाओ अल्लाह तथा उसके रसूल पर, और व्यय करो उस में से जिस में उस ने अधिकार दिया है तुम को, तो जो लोग ईमान लायेंगे तुम में से तथा दान करेंगे तो उन्हीं के लिये बड़ा प्रतिफ़ल है)। सूरह ह़दीदः 7।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَمَا لَكُمۡ أَلَّا تُنفِقُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَٰثُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ﴾

अनुवादः (और क्या कारण है कि तुम व्यय नहीं करते अल्लाह की राह में, जब्कि अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का उत्तराधिकार)। सूरह ह़दीदः 10।

ज्ञात हुआ कि वास्तविक स्वामित्व वही है जो बंदा आख़िरत व परलोक के लिये संग्रहित करता है।

स़ह़ीह़ मुस्लिम में मुतर्रिफ़ अपने पिता अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, वह फ़रमाते हैं किः मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ, उस समय आप सूरह "अल्हाकुमुत्तकास़ुर" की तिलावत फ़रमा रहे थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "आदम की संतति कहती हैः मेरा धन, मेरा धन, (सुन, हे) आदम के संतान! तेरे धन में से तेरे लिये केवल वही है जो तुम ने खा कर समाप्त कर दिया, अथवा धारण कर के पुराना कर दिया, अथवा दान-पुण्य कर के आगे (परलोक में) भेज दिया"।

मोमिन यह जानता है कि उस का हाथ अमानतदार का हाथ है, जो कुछ उसके हाथ में है वह अल्लाह की अमानत है और अल्लाह तआला यह देख रहा है कि वह (उस अमानत के साथ) क्या करता है!

وما المالُ والأهلونَ إلا وَدَائِعُ ولا بُدَّ يومًا أن تُرَدَّ وَدَائِعُ

अनुवादः धन-सम्पदा तथा घर-परिवार सभी अमानत (उपनिधि) हैं, जो एक दिन निश्चय ही लौटा दी जायेंगी।

❒ दुआ व प्रार्थना की वह्य व प्रकाशना ...

आप को ज्ञात होना चाहिये कि इस महान नाम के द्वारा अल्लाह तआला का सामीप्य प्राप्त करने का प्रयास करना महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के इस फ़रमान के व्यापक अर्थ में दाख़िल हैः

﴿وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا﴾

अनुवादः (अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं नामों के द्वारा पुकारो)। सूरह आराफ़ः 180।

जिस चीज़ के लिये दुआ व प्रार्थना विशेष रूप से की जाये, उसके बीच तथा उससे संबंधित महान नाम के बीच जो समानता हो उसका ध्यान रखा जाये, जिसका अवलोकन आप अल्लाह के नबी ज़करीय्या अलैहिस्सलाम की इस दुआ में कर सकते हैं:

﴿وَزَكَرِيَّآ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥ رَبِّ لَا تَذَرْنِى فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْوَٰرِثِينَ ﴿٨٩﴾﴾

अनुवादः (और ज़करीय्या (अलैहिस्सलाम) को याद करो, जब उन्होंने पुकारा अपने रब को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला, और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है)। सूरह अम्बियाः 89।

और इस प्रकार से भी दुआ कियाः

﴿فَهَبْ لِى مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾ يَرِثُنِى وَيَرِثُ مِنْ ءَالِ يَعْقُوبَ ۖ وَٱجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾﴾

अनुवादः (अतः मुझे अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर दे। ताकि वह मेरा उत्तराधिकारी हो, तथा याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के वंश का उत्तराधिकारी हो, और हे पालनहार! उसे प्रिय बना ले)। सूरह मर्यमः 5-6।

उपरोक्त विरासत (उत्तराधिकार) से अभिप्रायः इल्म (ज्ञान), नुबूव्वत (दूतत्व) तथा अल्लाह तआला की ओर दावत देने का कार्य करने की विरासत है, न कि धन-सम्पदा की

विरासत, ऐसी ही मुबारक व शुभ विरासत का उल्लेख अल्लाह तआला के इस फ़रमान में भी हुआ हैः

﴿وَوَرِثَ سُلَيْمَٰنُ دَاوُۥدَ﴾

अनुवादः (सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दाऊद (अलैहिस्सलाम) के वारिस़ (उत्तराधिकारी) हुये)। सूरह नम्लः 16।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप यह दुआ किया करते थेः اللَّهُمَّ أَمْتِعْنِي بِسَمْعِي وَبَصَرِي، وَاجْعَلْهُمَا الْوَارِثَ مِنِّي (अर्थातः हे अल्लाह! मेरे कान एवं आँख से मुझे लाभांवित कर तथा उन दोनों को मेरा वारिस़ (उत्तराधिकारी) बना दे)। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे ह़ाकिम ने मुसतदरक में रिवायत किया है)।

उलेमा ने इस महान नाम के विषय में यह भी कहा है किः बंदों को चाहिये कि मीरास़ (अर्थातः उत्तराधिकार) के अधिकारों की अदायगी व निर्वहन में डरे, तथा किसी भी वारिस़ पर अत्याचार न करे।

हे अल्लाह! हम तुझ से तेरे महान नाम (अल-वारिस़, अर्थात उत्तराधिकारी) के वसीला से यह दुआ करते हैं किः हमें समाअत व बस़ारत (सुनने व देखने की शक्ति) से मालामाल कर दे, तथा हमारे कान एवं आँख को आजीवन सुरक्षित रख।

(85)

(अल-शाफ़ी जल्ल जलालुहु)

सह़ीहै़न में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक देहाती के पास उसकी अयादत (हाल चाल पूछने) के लिये तशरीफ़ ले गये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी तसल्ली के लिये फ़रमायाः "चिंता की कोई बात नहीं, यह बीमारी पापों से पवित्र करने वाली है, यह सुन कर देहाती ने कहाः आप कहते हैं किः यह पवित्र करने वाली है? कदापि नहीं, बल्कि यह तो बुख़ार (ज्वर) है जो एक व्योवृद्ध पर प्रभुत्व पा गया है तथा उसे क़ब्र में पहुँचा कर ही रहेगा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ठीक है फिर ऐसा ही होगा!"।

सामान्यतः मानव के रोग एवं स्वास्थ का लम्बे समय तक टिकना उसकी अपनी मनोदशा के आधार पर होता है, जब हमारे मन-मस्तिष्क में अच्छे विचार आते हैं तो चित्त प्रसन्न रहता है, तथा जब निरोग, मंगल कामना, शुभ शगुन एवं अल्लाह तआला से अच्छे गुमान वाले विचार हमारे मन में छाये रहते हैं तो हम अल्लाह तआला के आदेश व अनुमति से निरोग हो जाते हैं, परंतु जब रोग से संबंधित विचार एवं भयभीत करने वाली चिंता हमारे ऊपर छाई रहती है तो हम सामान्यतः रोग की ही स्थिति में पड़े रहते हैं।

हमारे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने हर रोगी के लिये उम्मीद व आशा का द्वार खोल रखा है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿ٱدْعُونِىٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾

अनुवादः (मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा)। सूरह ग़ाफ़िरः 60।

इसके अतिरिक्त अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला फ़रमाता हैः

﴿وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا﴾

अनुवादः (अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं नामों के द्वारा पुकारो)। सूरह आराफ़ः 180।

अल्लाह तआला के शुभ, अच्छे व प्यारे नामों में से एक महान नाम (अल-शाफ़ी, अर्थात शिफ़ा देने वाला, निरोग करने वाला) भी है, आप इस नाम के माध्यम से अल्लाह

तआला का सामीप्य प्राप्त करने की चेष्ठा करें ताकि आप अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकें एवं आप की आवश्यकतायें पूर्ण हों।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी रोगी की अयादत (हाल-चाल पूछने) के लिये तशरीफ़ ले जाते अथवा किसी रोगी को आप के पास लाया जाता तो आप यह दुआ पढ़तेः

أَذْهِبِ البَاسَ رَبَّ النَّاسِ، اشْفِ وَأَنْتَ الشَّافِي، لاَ شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ، شِفَاءً لاَ يُغَادِرُ سَقَمًا

(अर्थातः हे लोगों के रब! रोग व पीड़ा को दूर कर दे, निरोग प्रदान कर, तू ही निरोग करने वाला है, तेरे निरोग के सिवा कोई निरोग नहीं, ऐसे निरोग कर दे कि जिसके बाद कोई रोग शेष न रहे)। (इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

शब्दकोष के अनुसार अरबी भाषा के शब्द "शिफ़ा" का अर्थ होता हैः बीमारी व रोग से मुक्ति पाना।

हमारा महानतम व सर्वोच्च पालनहार वह है जो बीमारियों को दूर करता है, असबाब, माध्यम एवं उम्मीद के द्वारा निरोग करता है, कभी-कभी औषधि का प्रयोग किये बिना भी रोगी निरोग हो जाता है, जब्कि कभी-कभी पाबंदी से औषधि प्रयोग करने के बाद बीमारी दूर होती है, तथा उस पर निरोग का प्रभाव प्रकट होने लगता है, और (निरोग के) ये दोनों ही ढ़ंग समान रूप से महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की क़ुदरत व सामर्थ्य से ही घटित होते हैं।

जिस प्रकार से हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार शरीर से रोगों को दूर करता है, उसी प्रकार से हमारे दिलों एवं आत्माओं को भी रोग एवं तंगी से निरोग प्रदान करता है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدۡ جَآءَتۡكُم مَّوۡعِظَةٞ مِّن رَّبِّكُمۡ وَشِفَآءٞ لِّمَا فِي ٱلصُّدُورِ وَهُدٗى وَرَحۡمَةٞ لِّلۡمُؤۡمِنِينَ ٥٧﴾

अनुवादः (हे लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से शिक्षा (क़ुरआन) आ गई है, जो अंतरात्मा के सब रोगों का उपचार (स्वास्थय कर) तथा मार्गदर्शन और दया है, उनके लिये जो विश्वास रखते हैं)। सूरह यूनुसः 57।

वह महानतम व सर्वोच्च (परवरदिगार) जिसे चाहता है निरोग कर देता है, तथा जिस के भाग्य में निरोग होना नहीं लिखता उसके उपचार व औषधि का ज्ञान डॉक्टरों से छिप्त रखता है।

वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह हर प्रकार के निरोग एवं शिफ़ा का अकेला मालिक है, उसका कोई शरीक व साझी नहीं, उसके निरोग व शिफ़ा के अलावा कोई निरोग व शिफ़ा नहीं, जैसाकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा थाः

﴿وَإِذَا مَرِضۡتُ فَهُوَ يَشۡفِينِ ۝٨٠﴾

अनुवादः (जब मैं बीमार पड़ जाऊँ तो मुझे शिफ़ा (निरोग) प्रदान करता है)। सूरह शुअराः 80।

और जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "... तेरे सिवा कोई निरोग प्रदान करने वाला नहीं"। (बुख़ारी)।

निरोग प्रदान करने वाले अल्लाह तआला की दयालुता व उदारता है किः उसने ऐसा कोई रोग नहीं पैदा किया जिसकी दवा व औषधी न पैदा की हो, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है कि आप ने फ़रमायाः "उपचार किया करो, निःसंदेह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने कोई बीमारी उत्पन्न नहीं की परंतु उसकी दवा व औषधि भी उत्पन्न की है, सिवाय एक बीमारी के, अर्थातः बुढ़ापा (इसका कोई उपचार नहीं)"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

❒ तेरा आश्रय ...

रोगी को रोग लगता है, उसके सामने निरोग होने के सारे द्वार बंद प्रतीत होते हैं, धरती अपनी विशालता के बावजूद उस पर तंग हो जाती है, विपदा विकट हो जाती है, वह मख़लूक़ (प्राणियों) के बीच अपना कोई आश्रय व शरण स्थली नहीं पाता, उस समय (अपने मन में) वह यह कह रहा होता हैः

لقد ضَعضَعتنِي، وهِيَ سِرٌّ، ولم يَكُن   يُضَعضِعُنِي صَرفُ الزَمانِ إذا عدَا
إذا ما أَسنَدت رأسِي إلى يَدِي   رَمَتنِي منها بالَّذِي يُوهِن اليَدَا
إذا اللَّيلُ أَعيَاهُ مُسَاجلةُ الضُحى   تَمَنَى لو أن الصُبحَ أصبح أسوَدَا

अनुवादः उसने मुझे दुर्बल, निःशक्त व अपमानित कर दिया, जब्कि वह राज़ व भेद है, मुझे तो ज़माने की गर्दिश एवं कालचक्र भी झुका न सकती थी। यदि मैं अपने हाथ पर सिर रखता हूँ तो वह मुझ पर ऐसा वार करती है जो मेरे हाथ को भी कमज़ोर कर देता है। जब रात के अंधकार को भोर की किरणें पछाड़ देती हैं तो वह यह कामना करती है काश यह आलोक (प्रकाश) अंधकार में परिवर्तित हो जाता।

ऐसी परिस्थिति में, मानव स्वभाव में मौजूद फ़ितरत व प्रकृति की पुकार के आधार पर रोगी व्यक्ति अल्लाह तआला की शरण लेता है, और उस महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के समक्ष आत्मसमर्पण कर देता हैः

﴿ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْـَٔرُونَ﴾

अनुवादः (फिर जब तुम्हें दुःख पहुँचता है तो उसी को पुकारते हो)। सूरह नह्लः 53।

मोमिन बंदा अल्लाह तआला के महान नाम "अल-शाफ़ी" (निरोग एवं शिफ़ा प्रदान करने वाला) की निदा लगाता हैः हे निरोग करने वाले! मुझे निरोग कर दे ... हे अल्लाह मुझे स्वास्थ प्रदान कर!

जो मोमिन नहीं है वह भी उसी के दरबार में उपस्थित होता है तथा उसी से निरोग व स्वास्थ की आशा रखता हैः

﴿فَإِذَا مَسَّ ٱلْإِنسَٰنَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ إِنَّمَآ أُوتِيتُهُۥ عَلَىٰ عِلْمٍۭ ۚ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾﴾

अनुवादः (और जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो हमें पुकारता है, फिर जब हम प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से, तो कहता हैः यह तो मुझे प्रदान किया गया है ज्ञान के कारण, बल्कि यह एक परीक्षा है, किंतु लोगों में से अधिकतर (इसे) नहीं जानते)। सूरह ज़ुमरः 49।

रोने गिड़गिड़ाने तथा स़ब्र व धैर्य के पश्चात ... कुशादगी व उदारता आती है, और "शाफ़ी" (शिफ़ा व निरोग प्रदान करने वाला) अल्लाह अपने आदेश एवं अनुमति से शिफ़ा व निरोग प्रदान करता हैः

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾

अनुवादः (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब वह उसे पुकारे?!, और दूर करता है दुःख को)। सूरह नम्लः 62।

उसकी नवाज़िश व अनुग्रह मिल कर रहता है, उसकी सख़ावत बड़ी विशाल है, उसकी उदारता बड़ी महान है, इसीलिये तो (समस्त) आवश्यकतायें पूर्ण हो जातीं, प्रार्थना स्वीकार कर ली जाती, रह़मत व दया नाज़िल होती, आज़माइश व परीक्षा दूर हो जाती तथा निरोग प्राप्त हो जाता है।

وكَم مِن مَريضٍ نَعَاهُ الطَبيبُ   إلى نَفسِهِ و تَولَّى كَئِيبًا

فَمَاتَ الطبيبُ وعاشَ المريضُ   فأَضحَى إلى الناسِ يَنعى الطَبيبَا

अनुवादः कितने रोगी ऐसे हैं कि जिनको डॉक्टर मृत समझ कर दुःखी व रंजीदा हो कर लौट जाता है, जब्कि डॉक्टर स्वयं मर जाता है और वह रोगी निरोग हो जाता है, फिर वही बीमार, लोगों के पास आ कर उस डॉक्टर के मृत्यु की सूचना देता है।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने बंदे को इसलिये आज़माइश व परीक्षा में नहीं डालता कि वह उसे नाश व हलाक कर दे, बल्कि इसलिये आज़माइश व परीक्षा में डालता है ताकि उसके स़ब्र व धैर्य की परीक्षा ले, क्योंकि बंदे पर अल्लाह तआला का यह अधिकार है कि वह (बंदा) तंगी, कष्ट एवं आपदा के समय (भी) उसकी बंदगी व भक्ति पर कायम व स्थिर रहे"।

❐ नेक व सदाचारी लोगों का ढ़ंग ...

मोमिन एवं ग़ैर मोमिन में अंतर यह है किः मोमिन को यह विश्वास रहता है कि समस्त ब्रह्माण्ड की बागडोर महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के हाथ में है, वही निरोग करने वाला है, वह सभी दयालुओं से बढ़ कर दयालु है, और उसने रोग को केवल ख़ैर व भलाई के लिये अवतरित किया है, जिसका वास्तविक ज्ञान उसी रह़ीम, अति कृपालु व मेहरबान अल्लाह को हैः

﴿وَعَسَىٰٓ أَن تَكۡرَهُواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ﴾

अनुवादः (हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो)। सूरह बक़रहः 216।

घटनायें चाहे जितनी विचलित करने वाली एवं परिस्थितियां चाहे जैसी विकट व जटिल हों, होता वही है जो (अल्लाह) महानतम व सर्वोच्च की मशीअत व इच्छा होती हैः

﴿وَٱللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰٓ أَمۡرِهِۦ وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعۡلَمُونَ﴾

अनुवादः (अल्लाह अपना आदेश पूरा कर के रहता है, परंतु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं)। सूरह यूसुफ़ः 21।

यही कारण है कि आप मोमिन बंदा को देखेंगे कि उसे जो रोग लगता है वह उस पर राज़ी व सहमत होता है तथा अल्लाह तआला से स़वाब व पुण्य की आशा रखता है।

मोमिन यह जानता है किः "जो कुछ उसे (दुःख इत्यादि) पहुँचा है, वह किसी भी तरह से टल नहीं सकता था, तथा जो प्राप्त नहीं हुआ वह किसी भी रूप में प्राप्त नहीं हो सकता था", क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿قُل لَّن يُصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ ٱللَّهُ لَنَا﴾

अनुवादः (आप कह दें: हमें कदापि कोई विपत्ति नहीं पहुँचेगी परंतु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दिया है)। सूरह तौबाः 51।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ है किः "यदि तुम उहुद पहाड़ के समान सोना भी ख़र्च (व्यय) कर दो तो भी जब तक तक़दीर (भाग्य) पर ईमान नहीं लाओगे तब तक अल्लाह तआला उसे तुम से स्वीकार नहीं करेगा, और (जब तक) यह न जान लो कि जो कुछ तुम्हें पहुँचा है, वह किसी भी रूप में तुम से टल नहीं सकता था, तथा जो ह़ासिल नहीं हुआ वह किसी भी रूप में हासिल नहीं हो सकता था, और यदि तुम इस अक़ीदा (आस्था) के सिवा किसी और पर मर गये तो जहन्नम में जाओगे"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

अली बिन अबू त़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हु अदी बिन ह़ातिम के पास से गुज़रे तो देखा कि वह दुःखी एवं व्याकुल हैं, तो उन्होंने पूछाः हे अदी! क्या बात है कि तुम दुःखी एवं व्याकुल प्रतीत होते हो? फ़रमायाः मुझे इस बात से कौन सी चीज़ रोक सकती है जब्कि मेरे बच्चे क़त्ल कर दिये गये तथा मेरी आँख फ़ूट गई? अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः "हे अदी (रज़ियल्लाहु अन्हु)! जो व्यक्ति अल्लाह तआला के निर्णय एवं भाग्य पर राज़ी व सहमत होता है, उस पर वह निर्णय एवं फैसला तो जारी होता ही है, किंतु उसे स़वाब व पुण्य

भी मिलता है, और जो व्यक्ति अल्लाह के फैसले एवं तक़दीर पर राज़ी नहीं रहता, उस पर भी वह फैसला जारी होता है, किंतु उसके आमाल (कर्म) बर्बाद हो जाते हैं"।

उलेमा कहते हैं किः इंसान जितना अल्लाह तआला के समक्ष मोहताजगी व दरिद्रता प्रकट करता है, उसके दरबार में हाज़री देता है, उससे लौ व ध्यान लगाता है, उसी के समान उसकी दुआ स्वीकार की जाती है, उसे कुशादगी व उदारता मिलती है तथा उसकी पुकार सुनी जाती है।

हम में से प्रत्येक व्यक्ति को रोग का अनुभव है, और इस बात का ज्ञान कि किस प्रकार से रोग, हमारी दुर्बलता से पर्दा उठा देती है, और हमें यह भान करा देती है कि अल्लाह तआला की शक्ति व बल के बिना हमारी कोई शक्ति व बल नहीं, जब वह परवरदिगार हमारे रोग को दूर कर देता है और हम निरोग हो जाते हैं तो हमारी स्थिति वैसी ही हो जाती है जैसाकि कवि ने कहा हैः

نَحنُ نَدعُو الإلهَ فِي كُلِ كَربٍ ثم نَنساهُ عِندَ كَشفِ الكُرُوبِ
كيفَ نَرجُو إجابةً لِدُعاءِ قَد سَدَدنا طَرِيقَها بالذُّنُوبِ

अनुवादः हम हर दुःख एवं संकट के समय अल्लाह तआला को पुकारते हैं, और फिर जब वह संकट दूर हो जाता है तो हम उसे भुला देते हैं, हम क्यों और कैसे प्रार्थना के स्वीकार्य होने की आशा रख सकते हैं जब्कि हम अपने गुनाहों से उसका दरवाज़ा बंद कर देते हैं।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के साथ हमारा व्यवहार बड़ा आश्चर्यजनक है!

❒ व्याकुल न हों!

जब आप किसी रोग से जूझ रहे हों तो याद रखें किः अल्लाह तआला ही निरोग प्रदान करने वाला है, उसे कोई चीज़ विवश नहीं कर सकती, यदि आप को ऐसा लगता है कि आप के रोग का कोई उपचार नहीं है तो आप अल्लाह तआला के साथ बदगुमानी करते हैं, आप अच्छा गुमान रखते हुये तथा सच्चे दिल से दुआ करते हुये उसे पुकारें, स़वाब व पुण्य की आशा रखते हुये स़ब्र व धैर्य से काम लें तथा दान-पुण्य करते रहें, और रो कर गिड़गिड़ा कर दुआ करें किः हे निरोग प्रदान करने वाले (परवरदिगार) मुझे निरोग कर दे! क्योंकि वह ह़क़ व सत्य है, उसका फ़रमान ह़क़ व सत्य है, तथा वह हरेक चीज़ में सक्षम हैः

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ﴾

अनुवादः (तुम्हारे रब का आदेश पारित हो चुका कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा)। सूरह ग़ाफ़िरः 60।

स़ह़ीह़ ह़दीस़ में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला जीवित (अमर) व मौजूद तथा शरीफ़ (सम्माननीय, लज्जावान) है, उसे इस बात से लज्जा आती है कि जब कोई आदमी उसके सामने हाथ फैला दे तो वह उसके दोनों हाथों को खाली व निराश लौट दे"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾

अनुवादः (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब वह उसे पुकारे?!, और दूर करता है दुःख को)। सूरह नम्लः 62।

जब आप इस स्थिति पर स्थिर रहेंगे तो अल्लाह तआला आप को महा पुण्य व बड़े स़वाब से अनुग्रहित करेगा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ हैः "जो भी दुःख व पीड़ा किसी मुसलमान को पहुँचती है तो अल्लाह तआला उसके कारण उसके पापों को मिटा देता है, यहाँ तक कि उसे यदि काँटा भी चुभ जाये तो वह उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित्त) हो जाता है"।

इब्ने तैमीय्य रह़िमहुल्लाह कहते हैं: "अल्लाह की जन्नत में ऐसे (बहुतेरे) बुलंद व उच्च मन्ज़िलें हैं जिन्हें केवल वही बंदे पा सकते हैं जो आज़माइश व परीक्षा से गुज़रते हैं"।

आप उन लोगों को देख कर दुःख का अनुभव करते होंगे जो आज़माइश व परीक्षा से गुज़रते हैं, हर घर में कोई न कोई शोकाकुल है तथा मातम मना रहा है, हर गाल पर अश्रु की धारा बह रही है, हर वादी में बनू सअद हैं।

दुःख व पीड़ा तो बहुत हैं किंतु कितने ऐसे लोग हैं जो उन पर स़ब्र व धैर्य रखते हैं?

केवल आप अकेले संकट से नहीं जूझ रहे हैं, अपितु अन्य की तुलना में आप का दुःख व संकट बहुत कम है।

कितने ऐसे रोगी हैं जो वर्षों से मृत्यु शय्या पर पड़े हैं! दायें बायें करवट ले रहे हैं, दर्द से कराह रहे हैं, तथा बीमारी (की पीड़ा) से चीत्कार कर रहे हैं।

याद रखें कि यह लौकिक संसार मोमिन के लिये कारावास (के समान) है, यह उन के लिये दुःख, पीड़ा एवं संकट का स्थान है, यह ऐसा स्थान है जहाँ सुबह के समय महल अपने वासियों से भरे होते हैं किंतु शाम के समय यही महल (वीरान हो कर) ओंधे पड़े होते हैं:

﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي كَبَدٍ ﴿٤﴾﴾

अनुवादः (हम ने इंसान को कष्ट में घिरा हुआ पैदा किया है)। सूरह बलदः 4।

आप की दुनियाँ जैसी है वैसी ही उसे स्वीकार कीजिये, अपने आप को उसी के साथ जीने का अभ्यस्त कीजिये, क्योंकि आप को कठिनाई में घिरा हुआ पैदा किया गया है, कमाल व पूर्णता उसकी शान नहीं।

यदि बीमारी की कड़वाहट न होती तो आप स्वास्थ व निरोग की मिठास से भी अनभिज्ञ रहते।

अय्यूब अलैहिस्सलाम का जीवन आप के लिये उत्तम उदाहरण है।

मोमिन सदा अल्लाह तआला से आफ़ियत व कुशल-क्षेम की प्रार्थना करता है, अब्दुल्लाह अल-तैमी रहिमहुल्लाह कहा करते थेः "अल्लाह तआला से अधिकाधिक आफ़ियत व कुशल-क्षेम तथा कल्याण की प्रार्थना किया करो, क्योंकि आज़माइश व परीक्षा से गुज़र रहा मानव, यद्यपि उसकी आज़माइश कठोर ही क्यों न हो, वह उस स्वस्थ मानव से अधिक प्रार्थना व दुआ के योग्य नहीं जो आज़माइश व परीक्षा से सुरक्षित नहीं होता।

आज जो लोग आज़माइश व परीक्षा से गुज़र रहे हैं, कल वो भी आफ़ियत व कुशल-क्षेम तथा कल्याण में थे, आज के बाद जिन को आज़माइश व परीक्षा से गुज़रना है, वो भी आज आफ़ियत व कुशल-क्षेम तथा कल्याण में हैं"।

इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "रोग का एक उपचार यह है किः ख़ैर व भलाई का कार्य किया जाये, एहसान व उपकार किया जाये, अल्लाह के ज़िक्र, स्मरण व जाप, उस से दुआ एवं प्रार्थना तथा तौबा, इस्तिग़फ़ार व प्रायश्चित्त किया जाये"।

قُل للطَّبيبِ تَخَطَّفَتهُ يدُ الرَّدَى   مَن يا طبيبُ بِطِبِه أَردَاكَا

قُل للمريضِ شُفِيَ وعُوفِيَ بعدَ ما   عَجَزَت فُنونُ الطِبِ مَن عَافَاكَا

अनुवादः उस डॉक्टर से कहिये जिसे मृत्यु व काल ने अपने चंगुल में ले लिया है, हे डॉक्टर तुम्हारे पास उपचार (के साधन तो) थे, फिर भी तुझे किस चीज़ ने काल-कवलित कर

दिया। उस रोगी से कहिये जो निरोग एवं स्वास्थ से लाभांवित हुआ कि तुझे किस चीज़ ने आफ़ियत व कल्याण से अनुग्रहित किया, जब्कि उपचार की समस्त विधियाँ तेरा उपचार करने से लाचार व असहाय हो चुके थे।

निःसंदेह वही (अल्लाह) निरोग तथा स्वास्थय प्रदान करने वाला हैः

﴿وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾﴾

अनुवादः (जब मैं बीमार पड़ जाऊँ तो मुझे शिफ़ा (निरोग) प्रदान करता है)। सूरह शुअराः 80।

हे अल्लाह! हे निरोग करने वाले पालनाहार! हमें तथा समस्त बीमार मुसलमानों को निरोग व स्वास्थय प्रदान कर।

(86)

(अल-जमील जल्ल जलालुहु)

स़ही़ह़ मुस्लिम में आया है कि स़ुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जब स्वर्गवासी स्वर्ग में परवेश कर जायेंगे, (उस समय) अल्लाह तआला फ़रमायेगाः तुम्हें कोई चीज़ चाहिये जो तुम्हें और दूँ? वो उत्तर देंगे किः क्या तू ने हमारे चेहरे रौशन नहीं किये! क्या तू ने हमें स्वर्ग में प्रवेश नहीं दिलाया तथा नरक से मुक्ति नहीं दी? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः चुनाँचे इस पर अल्लाह तआला (अपने मुख से) पर्दा उठा देगा, तो उन्हें कोई चीज़ ऐसी नहीं दी गई होगी जो उन्हें अपने रब अज़्ज़ व जल्ल के दीदार से अधिक प्रिय हो"।

पाक व पवित्र है वह ज़ात कि जिसके जमाल व सुंदरता के सामने समस्त कल्पनायें अचंभित हैं ...

पाक व पवित्र है वह ज़ात जिसकी महानता व अज़मत के सामने समस्त बुद्धि-विवेक आश्चर्यचकित हैं ...

पाक व पवित्र है वह ज़ात जिसकी तजल्लियात व आभा के समक्ष हमारे मन-मस्तिष्क विस्मित हैं ...

अल्लाह तआला सुंदर है तथा सुंदरता से प्रेम करता है, बल्कि वह सरापा एवं पुर्णतः सुंदर व सुरूप है, तथा समस्त सुंदरतायें व सुरूपता उसी से हैं, वह सभी अच्छे एवं सुंदर कर्म करता है तथा नेक अमल पर उत्तम प्रतिकार भी देता है।

وهُو الجَميلُ على الحقيقةِ كَيفَ لا؟! و جَمَالُ سائِرِ هذهِ الأَكوانِ
مِن بَعضِ آثارِ الجَمِيلِ، فَرَبُّهَا أَولَى وأَجدَرُ عِندَ ذِي العِرفَانِ

अनुवादः वास्तव में वही सुंदर व शोभन है, और क्यों न हो?! जब्कि समस्त ब्रह्माण्ड की सुंदरता उसी की सुरूपता के प्रभाव का एक रूप है, ब्रह्माण्ड का पालनहार बुद्धिमानों एवं ब्रह्मज्ञानियों की दृष्टि में (इबादत व पूजा) का सर्वाधिक अधिकारी व योग्य है।

❒ ज़ुबान, बयान करने में अक्षम है!!

स़ह़ीह़ मुस्लिम में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “निःसंदेह अल्लाह तआला का सुंदर है तथा सुंदरता को पसंद फ़रमाता है”।

शैख़ सअदी रह़िमहुल्लाह, इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह के क़स़ीदा (काव्य) “नूनीय्यह” की पंक्तियों की व्याख्या करते हुये लिखते हैं किः “जमील (सुंदर) वह (अल्लाह) हैः जिसके अंदर सुंदरता व सुरूपता तथा एह़सान, उपकार व भलाई की सभी विशेषतायें एकत्रित हैं, क्योंकि वह अपनी ज़ात, महान नामों, स़िफ़ात (विशेषताओं) एवं अफ़आल (कर्म व कृत्य) सभी में सुंदर, शोभन व सुरूप है, सृष्टि उसकी ज़ात की सुदंरता के एक अंश मात्र को भी सही ढ़ंग से नहीं बयान कर सकती, स्वर्गवासी सदा रहने वाली नियामत, ऐसी प्रसन्नता, सुख, मनोविनोद तथा आनंदमय जीवन जी रहे होंगे जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, फिर भी जब वह अपने परवरदिगार को देखेंगे तथा उन्हें अपने रब की सुंदरता व जमाल का दीदार हो गा तो वो समस्त नियामतों को भूल जायेंगे एवं उस दीदार की तुलना में समस्त नियामतें व सुख-सुविधायें तुच्छ हो जायेंगी, और वो इच्छा करेंगे कि काश सदा यही स्थिति बरकरार रहती, ताकि वो रब सुब्ह़ानहु व तआला की सुंदरता व सुरूपता से अपनी सुंदरता में वृद्धि कर सकें, इसलिये कि उनके दिल में सदा अपने रब के दीदार की उमंग मचल रही होगी, तथा (जिस दिन रब का दीदार नसीब होगा) उस दिन वो इतना हर्षित होंगे कि उन का दिल बल्लियों उछल रहा होगा”।

इसी प्रकार से अल्लाह तआलाः अपने महान नामों में भी सुंदर व सुरूप है, चुनाँचे उसके समस्त नाम सुंदर हैं, बल्कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के सारे नाम समग्र एवं व्यापक रूप से सबसे सुंदर एवं सबसे शोभन हैं:

﴿وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ﴾

अनुवादः (और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो)। सूरह आराफ़ः 180।

अल्लाह तआला के सभी नाम, अति प्रशंसा, शराफ़त, सम्मान व सत्कार तथा कमाल व पूर्णता पर दलालत करते हैं, अल्लाह तआला किसी ऐसे नाम से नामित नहीं है जिसके अंदर कमाल व पूर्णता के सिवा कोई और अर्थ भी पाया जाता हो।

अल्लाह तआला अपनी सिफ़ात (विशेषताओं) में भी प्रिय, सुंदर, मनोहर एवं मोहक है, उसकी सभी विशेषतायें कामिल व पूर्ण हैं, तथा उसकी समस्त विशेषताएं प्रशंसा व तारीफ पर आधारित हैं।

अल्लाह तआला के सभी अफ़आल (कर्म) सुंदर व मनमोहक हैं, जो या तो नेकी के काम हैं अथवा एहसान, भलाई व उपकार के, जिन पर अल्लाह तआला की प्रशंसा की जाती है तथा उसका शुक्र अदा किया जाता है।

यदि सभी वृक्ष कलम होते, सारे समुद्र रोशनाई होते, सातों आसमान तख़्ती बन जाते, समस्त सृष्टि मिल को उसकी प्रशंसा व स्तुति गान लिखते, तथा अल्लाह तआला की सुंदरता, सुरूपता व मनमोहकता की प्रशंसा करते हुये गद्य-पद्य लिखते तो भी वो ऐसा कार्य करते जिसका हमारा परवरदिगार अधिकारी है, किंतु इसके बाद भी वह (उस हक को अदा करने में) कोताह ही रहते और अल्लाह तआला के लिये (जितनी प्रशंसा व स्तुति गान होना चाहिये उस सीमा तक नहीं पहुँच सकते एवं उसका शुक्र अदा करने से अपनी विवशता का इकरार करते।

उसकी सुंदरता व मनमोहकता का इदराक, इहा़ता व घेराव हमारी बुद्धि एवं दृष्टि नहीं कर सकतीं, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान हैः “सही ढ़ंग से मैं तेरी प्रशंसा व स्तुतिगान नहीं कर सकता, तू वैसा ही है जैसा तू ने स्वयं अपनी प्रशंसा की है”।

❒ ब्रह्माण्ड की सुंदरता व मनोहरता ...

ब्रह्माण्ड में जो भी, सूखी (शुष्क), समुद्र, हरियाली, सूर्य चंद्रमा, तारे एवं पशु पक्षी हैं वो सभी महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की सुंदरता व मनमोहकता के प्रमाण हैं, क्योंकि अल्लाह तआला ही सुंदरता व सुरूपता प्रदान करने वाला है, और सुंदरता प्रदान करने वाला स्वयं उस सुंदरता से विशेषित व शोभित होने के अधिक योग्य हैः

﴿فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحۡسَنُ ٱلۡخَٰلِقِينَ﴾

अनुवादः (शुभ है अल्लाह जो सबसे अच्छी उत्पत्ति करने वाला है)। सूरह मोमिनूनः 14।

इस सुंदरता को वही देख सकता है जिसके दिल को अल्लाह तआला ने ईमान के प्रकाश से प्रकाशमान कर दिया है, ऐसा व्यक्ति उस सुंदरता के पीछे अल्लाह तआला की सुंदरता, प्रताप व वैभव का अनुभव करने के साथ-साथ उसका कमाल भी देखता है।

जो अल्लाह तआला के ज़िक्र, स्मरण व जाप से विमुखता प्रकट करता, उसके नूर (प्रकाश) को नकारता, उसके मार्गदर्शन पर चलने से इंकार करता है तो उसे अल्लाह तआला के अनुपम सौंदर्य व मनमोहकता के दीदार से वंचित कर दिया जाता है, क्योंकि उस व्यक्ति की बस़ारत (दृष्टि) बाधित हो जाती एवं बस़ीरत (दूरदृष्टि) माँद पड़ जाती है!

أيُّها الشَّاكِي وما بِكَ داءٌ　　كَيفَ تَغدُو إذا غَدَوتَ عَلِيلًا

أَتَرى الشَّوكَ فِي الوُرُودِ وتَعمَى　　أَن تَرَى فَوقَه النَّدَى إكلِيلا

والذي نفسُهُ بغيرِ جَمالٍ　　لا يَرَى فِي الوُجودِ شيئًا جَمِيلا

अनुवादः हे शिकवा करने वाले मानव! तुम्हें जो रोग लगा है इस रोग के साथ तुम कैसे भोर करते हो, क्या तुम फूलों में केवल काँटे ही देखते हो, और फूलों के ऊपर जो ओस का ताज सजा होता है, उससे आँख बंद कर लेते हो। जो मानव स्वयं अपने व्यक्तित्व में सुंदरता देखने से वंचित हो उसे ब्रह्माण्ड में कोई भी वस्तु सुंदर नहीं नज़र आ सकती।

❒ शौक़, अभिलाषा व कामना ...

अल्लाह तआला के महान नाम (अल-जमील, अर्थातः सुंदर, मनमोहक, सौंदर्य से परिपूर्ण) पर ईमान लाने से मोमिन का ईमान तथा जमील (सुंदर) अल्लाह के दीदार का शौक़ और अधिक हो जाता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः “तुझ से तेरे मुबारक व मुक़द्दस मुख के दीदार के आनंद एवं तुझ से भेंट करने का इच्छुक व अभिलाषी हूँ ...”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

इस ईमान का परिणाम यह होता है कि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उसके भाग्य में जो लिख देता है वह उस पर सहमत व राज़ी रहता है, क्योंकि अल्लाह तआला भाग्य में वही लिखता है जिसमें ह़िकमत (तत्वदर्शिता) तथा बंदे के लिये ख़ैर, भलाई व अच्छाई निहित हो, इसलिये कि अल्लाह तआला के समस्त कर्म सुंदर हैं, और सुंदर कर्म (वाले) से जो घटना भी घटेगी वह सुंदर ही होगी, यही अल्लाह तआला के साथ अच्छा गुमान रखने की माँग भी है, जिसके बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ह़दीस़ -ए- क़ुदसी में बयान फ़रमाया है, जैसाकि मुसनद अह़मद में वर्णित है, कि रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाता हैः “मैं अपने बंदे के गुमान के पास होता हूँ, यदि वह मुझ से अच्छा गुमान रखता है तो मैं उसे वही देता हूँ, और यदि वह मुझ से बुरा गुमान रखता है तो उसे वही देता हूँ”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

وإنِي لأَدعو اللهَ حتىَ كأَنَّنِي　　أرَى بِجَميلِ الظَّن ما الله صَانِعُ

अनुवादः मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ, यहाँ तक कि मैं (अल्लाह तआला के संबंध में) अपने अच्छे गुमान के आधार पर (पहले ही) मानो वह देख लेता हूँ जो अल्लाह तआला करने वाला होता है।

❒ सुंदर, शोभित व मनमोहक को न नकारें!

मोमिन बंदे को आप बाह्य व आंतरिक हरेक रूप से सुंदर व शोभित पायेंगे, क्योंकि वह उस सुंदरता के द्वारा अल्लाह तआला का सामीप्य प्राप्त करता है, और इसलिये भी कि अल्लाह तआला ने सुंदर कर्म व शोभित कथन एवं नेक अमल व सदाचार के लिये प्रेरित किया है, चुनाँचे अल्लाह को यह प्रिय है कि उस का बंदा अपनी ज़ुबान को सत्य व सच्चाई से, अपने हृदय को इख़लास़, निश्छलता, इनाबत (अर्थात उसकी ओर झुकने एवं आकर्षित होने) एवं तवक्कुल व भरोसा से, शारीरिक अंग-प्रत्यंग को आज्ञापालन व अनुपालन से एवं अपने शरीर को अल्लाह तआला की नियामत व अनुग्रह को दर्शाने वाले वस्त्र व पोशाक से एवं पाकीज़गी व पवित्रता की सुंदरता व मनमोहकता से सुसज्जित करे।

मोमिन अपने रब की उस सुंदरता व जमाल को जानता है जो उसकी विशेषता है, और उस अज़मत व महानता, जलाल व प्रताप के द्वारा उसकी इबादत व पूजा करता है जो उसकी शरीअत व विधान तथा दीन व धर्म है।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से कहा किः "जिसके हृदय में कण भर भी तकब्बुर व अहंकार होगा वह जन्नत में प्रवेश नहीं पायेगा, तो एक व्यक्ति ने कहाः इंसान चाहता है कि उसके वस्त्र अच्छे हों तथा उसके जूते अच्छें हों, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला स्वयं सुंदर है तथा सुंदरता को प्रिय रखता है, तकब्बुर व अहंकारः ह़क़ व सत्य को स्वीकार न करना तथा लोगों को तुच्छ व हेय दृष्टि से देखना है"। (मुस्लिम)।

हे अल्लाह! हमें लोक परलोक में जमाल व सुंदरता से नवाज़ दे, हमें बाह्य व आंतरिक दोनों रूप से जमाल व सुंदरता प्रदान कर, हे समस्त संसार के पालनहार! हमारे कथन एवं कर्म में जमाल, सुंदरता व मनमोहकता उत्परन्न कर दे।

(87, 88)

(अल-क़ाबिज़, अल-बासित़ जल्ल जलालुहु)

❒ आरंभ के पूर्व एक संदेश ...

उस व्यक्ति के नाम जिसने प्रत्येक पथ पर चल कर देख लिया, किंतु समस्त मार्ग को बंद पाया, हर द्वार पर दस्तक दी परंतु सभी को अवरुद्ध पाया ...

उस व्यक्ति के नाम जिसने अपने सीने के भेदों को एवं दिल के अति गुप्त राज़ों को टटोला (तो उन से अवगत होने के लिये) धरती अपनी विशलता के बावजूद उसके लिये तंग प्रतीत होने लगी ...

उस व्यक्ति के नाम जिसने अपमान का घूँट पिया, विवशता की बेड़ियों ने उसे रौंद दिया तथा उसके अस्तित्व को चकनाचूर कर दिया ...

उस व्यक्ति के नाम जिसके संग उसके भाइयों ने बेवफ़ाई की, जिसे संकटों ने अपने घेरे में ले लिया, नापसंदीदा व अप्रिय चीज़ों ने चहुँ ओर से उसे अपने घेरे में ले लिया तथा कुशादगी व उदारता उससे दूर हो गई ...

उस व्यक्ति के नाम जिस का हृदय कठोर हो गया, जिसकी आत्मा निराश हो गई तथा वह अपने जीवन से उकताहट अनुभव करने लगा है ...

उस व्यक्ति के नाम जिसे बीमारी ने दबोच लिया, ऋण व क़र्ज़ ने उस की कमर तोड़ दी, दरिद्रता एवं निर्धनता ने उसके घर में अपना डेरा डाल दिया है ...

मैं ऐसे व्यक्ति से कहता हूँ किः दुःखी न हो! महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ही तंगी व कुशादगी पैदा करने वाला है, वह अकेले आप के हर दुःख के लिये काफ़ी व पर्याप्त है, हर प्रकार के संकट एवं प्रत्येक विपदा में वही आप की सुरक्षा व निगरानी करता है, वह बिना परिवार के भी आप को आदर सम्मान तथा बिना धन-सम्पदा के भी आप को बेनियाज़ी, निस्पृहता व बेपरवाही प्रदान करता है, जब आप उस का शुक्र व धन्यवाद अदा करते हैं तो वह आप को और अधिक से नवाज़ता है, जब आप उस को याद करते हैं तो वह भी आप को याद करता है, और जब आप उस से माँगते हैं तो वह आप को प्रदान करता है।

इसलिये उसी से लौ एवं ध्यान लगायें, तथा उसके महान नाम "अल-क़ाबिज़, अल-बासित़" (अर्थातः तंगी करने वाला तथा कुशादगी व उदारता प्रदान करने वाला) की पहचान

व ज्ञान अर्जित करने के द्वारा उसका सामीप्य प्राप्त करें, ये दोनों नाम परस्पर एक-दूजे से जुड़े हुये हैं, क्योंकि ये उन पर्याय नामों में से हैं जिन में से एक को छोड़ कर दूसरे के द्वारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की प्रशंसा व स्तुतिगान नहीं की जा सकती।

अपने दिल के सुकून एवं मन की शांति के लिये वही कहिये जो आप के प्रियतम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहा करते थेः

اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهُ، اللَّهُمَّ لَا قَابِضَ لِمَا بَسَطْتَ، وَلَا مُقَرِّبَ لِمَا بَاعَدْتَ، وَلَا مُبَاعِدَ لِمَا قَرَّبْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ. اللَّهُمَّ ابْسُطْ عَلَيْنَا مِنْ بَرَكَاتِكَ وَرَحْمَتِكَ وَفَضْلِكَ وَرِزْقِكَ

(अर्थातः "हे अल्लाह! समस्त प्रकार की प्रशंसा व स्तुति गान तेरे ही लिये हैं, हे अल्लाह! जिसे तू तंग कर दे उसे कोई कुशादा नहीं कर सकता, तथा जिसे तू कुशादा कर दे उसे कोई तंग नहीं कर सकता, जिस से तू वंचित कर दे उस से कोई नवाज़ नहीं सकता, और जिस से तू नवाज़ दे उस से कोई वंचित नहीं कर सकता, हे अल्लाह! तू हम पर अपनी बरकत व कल्याण, रहमत व दया, फ़ज़्ल व उपकार तथा रिज़्क एवं आजीविका के द्वार खोल दे।")। (यह हदीस़ स़हीह है, इसे बुख़ारी ने "अल-अदब अल-मुफ़रद" में रिवायत किया है)।

❑ अल्लाह तआला के महान नामः अल-क़ाबिज़ अल-बासित़, की शीतल छाया में:

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जो अपनी मशीअत से जिस बंदे के रिज़्क़ व आजीविका में चाहता है वृद्धि करता है, ताकि वह फ़क़ीर, दरिद्र व मोहताज न रहे, तथा जिस बंदे के रिज़्क़ में चाहता है कमी कर देता है, ताकि उसकी शक्ति कम हो जाये, यह सब वह अपने पूर्ण सामर्थ्य एवं अति न्यायी होने के आधार पर, अपनी हिकमत व तत्वदर्शिता के तकाजा एवं बंदों की परिस्थितियों का ध्यान रखते हुये करता है, जब महानतम व सर्वोच्च अल्लाह उस (बंदे) के रिज़्क़ व आजीविका में वृद्धि करता है तो उसके अपव्यय एवं ख़र्च में वृद्धि नहीं होती, और जब उस (बंदे) के रिज़्क़ में कमी करता है तो उस के रिज़्क़ में कमी तथा उस के अंदर कंजूसी नहीं आती, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿ وَلَوْ بَسَطَ ٱللَّهُ ٱلرِّزْقَ لِعِبَادِهِۦ لَبَغَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَٰكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ۚ إِنَّهُۥ بِعِبَادِهِۦ خَبِيرٌۢ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾ ﴾

अनुवादः (और यदि फैला देता अल्लाह जीविका अपने भक्तों के लिये तो वह विद्रोह कर देते धरती में, परंतु वह उतारता है एक अनुमान से जैसे वह चाहता है, वास्तव में वह अपने भक्तों से भलि-भाँति सूचित है (तथा) उन्हें देख रहा है)। सूरह शूराः 27।

हदीस़ में वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में वस्तुओं के मूल्य बढ़ गये तो स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मूल्य की सीमा निर्धारित करने की माँग की, अतः उन लोगों ने कहाः "हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हमारे लिये एक भाव व मूल्य निर्धारित कर दीजिये! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ही मूल्य व भाव निर्धारित करने वाला है, कभी कम कर देता है और कभी बढ़ा देता है, वही रोज़ी देने वाला है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है)।

हमारा महानतम व सर्वोच्च पालनहार वह है जो धनवानों से स़दक़ा (दान) लेता है तथा निर्धनों की आजीविका में वृद्धि कर देता है, वह स़दक़ा को स्वीकार करता तथा उसे परवान चढ़ाता है, नियामतों (के द्वार) खोल देता है, एवं (उसका मार्ग) प्रशस्त कर देता है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जो मृत्यु के समय शरीर से आत्मा को खींच लेता है तथा जीवन देते समय आत्मा को शरीर में फैला देता है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो दिलों को इतना तंग कर देता है कि मानो वह आकाश में चढ़ रहे हों, जब्कि इसकी तुलना में कुछ दिलों पर अपने आज्ञापालन, दया व मेहरबानी तथा सौंदर्य का उपकार कर के उन्हें कुशादा व उदार कर देता है, अतः वो कुशादा व उदार रहते हैं, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهۡدِيَهُۥ يَشۡرَحۡ صَدۡرَهُۥ لِلۡإِسۡلَٰمِۖ وَمَن يُرِدۡ أَن يُضِلَّهُۥ يَجۡعَلۡ صَدۡرَهُۥ ضَيِّقًا حَرَجٗا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي ٱلسَّمَآءِۚ كَذَٰلِكَ يَجۡعَلُ ٱللَّهُ ٱلرِّجۡسَ عَلَى ٱلَّذِينَ لَا يُؤۡمِنُونَ ١٢٥﴾

अनुवादः (जिसे अल्लाह मार्ग दिखाना चाहता है, उसका सीना (छाती) इस्लाम के लिये खोल देता है तथा जिसे कुपथ करना चाहता है उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर देता है, जैसे वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा हो, इसी प्रकार अल्लाह उन पर यातना भेज देता है जो ईमान नहीं लाते)। सूरह अनआमः 125।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो सम्मानित, दानी व उदार हाथों -जो वास्तव में (हाथ) हैं और उन की कैफियत व विवरण वैसी ही है जैसी अल्लाह तआला के वैभव, प्रताप एवं सम्पूर्ण व कामिल ज़ात व सिफ़ात के लिये उचित है- से अपनी जिस मख़लूक़ (रचना) के लिये चाहता है तंगी एवं उदारता उत्पन्न करता है। उन मख़लूक़ों (रचनाओं) में ज़मीन एवं बुलंद आसमान भी सम्मिलित है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान है:

﴿وَٱلۡأَرۡضُ جَمِيعٗا قَبۡضَتُهُۥ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطۡوِيَّٰتُۢ﴾

अनुवाद: (और धरती पूरी उसकी एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन, तथा आकाश लिपटे हुए होंगे उसके हाथ में)। सूरह ज़ुमर: 67।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि: "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अपने आकाशों एवं अपनी धरती को अपने दोनों हाथों से पकड़ लेगा तत्पश्चात फ़रमायेगा: "मैं अल्लाह हूँ, मैं बादशाह हूँ""। (स़ह़ीह़ मुस्लिम)।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह हमारा रब है जो पापियों के लिये तौबा स्वीकार करने वाला हाथ फैलाता देता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है, आप ने फ़रमाया: "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल रात को अपना (बंदों की ओर दया से परिपूर्ण) हाथ फैला देता है ताकि दिन को पाप करने वाला तौबा व पश्चाताप करे, तथा दिन को अपना (बंदों की ओर दया से परिपूर्ण) हाथ फैला देता है ताकि रात को पाप करने वाला तौबा व पश्चाताप करे, (और वह सदा ऐसा ही करता रहेगा) यहाँ तक कि सूर्य पश्चिम से उदय हो जाये"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम)।

वही पाक पवित्र एवं सर्वोच्च परवरदिगार है जो पापियों को छूट व मोहलत देता है, चुनाँचे वह भय एवं आशा के बीच रहते हैं।

हमारा परवरदिगार दुआ करने वालों के लिये प्रत्येक रात्रि अपनी नवाज़िश एवं अनुग्रह से पुर्ण मुक्तहस्त फैला देता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है, आप ने फ़रमाया: "... फिर अल्लाह तआला अपने दोनों हाथ फैलाता है और फ़रमाता है: कौन उस को क़र्ज़ देगा जो न मोहताज है और न ज़ालिम"। (मुस्लिम)।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो अपनी मशीअत से जिस के लिये चाहता है उसके ज्ञान एवं उत्पत्ति में कुशादगी व उदारता उत्पन्न कर देता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَزَادَهُۥ بَسۡطَةٗ فِي ٱلۡعِلۡمِ وَٱلۡجِسۡمِۖ﴾

अनुवादः (और उसे अधिक ज्ञान तथा शारीरिक बल प्रदान किया है)। सूरह बक़रहः 247।

हमारा पालनहार वह है जो अपने सम्मानित हाथ से मुठ्ठी भरेगा, एवं जहन्नम से ऐसे कुछ लोगों को निकालेगा जिन्होंने कभी नेकी नहीं की होगी, एक लम्बी ह़दीस़ में आया हैः "फिर अल्लाह तआला जहन्नम से एक मुठ्ठी भरेगा और उस से एक ऐसे समुदाय को निकालेगा जिन्होंने कभी नेकी नहीं की होगी"। (मुस्लिम)।

हमारा परवरदिगार वह है जो अंधेरे एवं उजियारे को समेटता तथा फैलाता है, और उस से प्रभावित होने वाले दिन रात की गर्दिश पर अधिकार रखता है।

वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह किसी चीज़ को ह़राम व वर्जित कर के उस (की परिधि) को तंग कर देता है, तथा किसी चीज़ को ह़लाल व जायज़ कर के उस (की परिधि) को विस्तृत कर देता है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जो बंदों के दिलों को तंग और कुशादा करता है, अतः मोमिन बंदा भय एवं आशा के बीच जीवन यापन करता है।

هُوَ قابِضٌ هُوَ باسطٌ هو خافِضٌ　　هُوَ رافِعٌ بالعَدلِ والمِيزانِ

अनुवादः वही तंगी एवं कुशादगी उत्पन्न करता है, वही उतार एवं चढ़ाव प्रदान करने वाला है, यह सब वह अपने न्याय एवं मीज़ान (इंसाफ़, निष्पक्षता) के आधार पर करता है।

❒ मीज़ान (तुला, तराज़ू):

जब बंदा अपने रब की ओर बढ़ता है, आज्ञापालन के द्वारा उसका सामीप्य प्राप्त करने का प्रयास करता है, तथा सदा अपने फ़र्ज़ (अनिवार्य) व नफ़्ल (निवार्य) को अदा करने में व्यस्त रहता है तथा अधिकाधिक इबादत व पूजा करने के लिये प्रयासरत रहता है, तो उसका दिल अपने परवरदिगार से जुड़ा रहता है, इसी लिये आप देखेंगे कि उस का दिल कुशादा व

उदार तथा हर्षित एवं प्रसन्न रहता है, अल्लाह तआला ही उसकी यह स्थिति उत्पन्न करता है, किंतु जब मोमिन बंदा गुनाह करता है तो वह व्याकुल एवं तंगी की परिस्थिति में होता है।

यह तंगी वास्तव में अल्लाह तआला की पकड़ होती है जो दरअसल शीघ्र आज़माइश एवं परीक्षा के रूप में होती है और बंदे को अल्लाह की सख़ावत, उदारता एवं समृद्धि की ओर ले जाती हैः

﴿وَعَلَى ٱلثَّلَٰثَةِ ٱلَّذِينَ خُلِّفُواْ حَتَّىٰٓ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ ٱلْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوٓاْ أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ ٱللَّهِ إِلَّآ إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوٓاْ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ١١٨﴾

अनुवादः (तथा उन तीनों पर जिन का मामला विलंबित कर दिया गया था, जब उन पर धरती अपनी विशालता के होते सिकुड़ गई, और उन पर उन के प्राण संकीर्ण हो गये, तथा उन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सिवा उन के लिये कोई शरणागार नहीं परंतु उसी की ओर, फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें, वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है)। सूरह तौबाः 118।

उदार हृदय व शांत चित्त तथा अल्लाह की ओर आकर्षित होना, यहः कुशादगी व उदारता है, जो कि कुशादगी व उत्पन्न करने वाले पाक व उच्च (अल-बासित़) अल्लाह की ओर से प्राप्त होती है।

तंगी, आज्ञापालन से विमुखता, तथा उपासना करते समय आनंद की अनुभूति न करनाः तंगी है, जो कि तंगी उत्पन्न करने वाले पाक व उच्च (अल-क़ाबिज़) अल्लाह की ओर से होती है, कभी-कभी गुनाहों से उसके अंदर आंतरिक व बाह्य दोनों रूप से तंगी पैदा हो जाती है, जैसे दिल के रोग।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान हैः “जब बंदा कोई गुनाह करता है तो उस के दिल में एक स्याह बिंदु लग जाता है, यदि वह तौबा कर ले तो उसका दिल साफ कर दिया जाता है, और यदि वह दोबारा गुनाह करता है तो वह काला बिंदु फिर लग जाता है, यहाँ तक कि दिल में वह स्याही बढ़ती जाती है, यही वह ज़ंग है जिसके विषय में अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ﴿كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُواْ يَكْسِبُونَ ١٤﴾ अनुवादः (सुनो! उन के दिलों

पर कुकर्मों के कारण ज़ंग (लोहमल) लग गया है)। सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीनः 14। (इसे इब्ने हिब्बान ने रिवायत किया है तथा शुऐब अरनऊत ने इसे सहीह कहा है)।

ज्ञात हुआ कि मोमिन की स्थिति तंगी एवं उदारता के बीच होती है, इसीलिये वह अल्लाह तआला से सदा सत्य मार्ग पर अडिग रहने तथा अच्छे अंत की दुआ करता रहता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ किया करते थेः "हे दिलों को फेरने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर सुदृढ़ व अडिग रख"। (यह हदीस़ सहीह है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)। जब मोमिन की अपने रब के साथ ऐसी स्थिति होती है, तो आप सहज अंदाजा लगा सकते हैं कि जो व्यक्ति गुनाहों पर गुनाह किये जा रहा हो उसकी क्या स्थिति होगी?!

❒ सबसे बड़ी कुशादगी व उदारताः

यही कारण है कि उलेमा कहते हैं किः सबसे बड़ी कुशादगी व उदारता यह है कि दिलों पर रहमत व दया की कुशादगी व उदारता कर दी जाये, ताकि वो प्रकाशमान हो जायें तथा गुनाहों के ज़ंग से बाहर निकल जायें:

﴿أَفَمَن شَرَحَ ٱللَّهُ صَدۡرَهُۥ لِلۡإِسۡلَٰمِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٖ مِّن رَّبِّهِۦۚ﴾

अनुवादः (तो क्या खोल दिया हो अल्लाह ने जिस का सीना इस्लाम के लिये तो वह एक प्रकाश पर हो अपने पालनहार की ओर से)। सूरह ज़ुमरः 22।

इसके अतिरिक्त एक स्थान पर फ़रमायाः

﴿فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهۡدِيَهُۥ يَشۡرَحۡ صَدۡرَهُۥ لِلۡإِسۡلَٰمِۖ﴾

अनुवादः (जिसे अल्लाह मार्ग दिखाना चाहता है, उसका सीना (छाती) इस्लाम के लिये खोल देता है)। सूरह अनआमः 125।

कुशादगी व उदारता का विलोम वह है जिसका उल्लेख अल्लाह तआला के इस फ़रमान में आया हैः

﴿وَمَن يُرِدۡ أَن يُضِلَّهُۥ يَجۡعَلۡ صَدۡرَهُۥ ضَيِّقًا حَرَجٗا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي ٱلسَّمَآءِۚ﴾

अनुवादः (तथा जिसे कुपथ करना चाहता है उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर देता है, जैसे वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा हो)। सूरह अनआमः 125।

एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ٣٦﴾

अनुवादः (आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, और नाप कर देता है, किंतु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते)। सूरह सबाः 36।

इसके अतिरिक्त अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ بِعِبَادِهِۦ خَبِيرًۢا بَصِيرًا ٣٠﴾

अनुवादः (वास्तव में आप का पालनहार ही विस्तृत कर देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, तथा संकीर्ण कर देता है, वास्तव में वही अपने दासों (बंदों) से अति सूचित देखने वाला है)। सूरह बनी इस्राईलः 30।

अल्लाह तआला ने यह सूचना दी है किः तंगी एवं कुशादगी सब उसी के हाथ में है, वही (कुशादगी व तंगी) को उलट-फेर करता है, जिसको चाहता है धन-सम्पदा, निरोग व स्वास्थय, आयु अथवा ज्ञान में वृद्धि प्रदान करता है, और जिसको चाहता है उस के लिये उन चीज़ों को तंग कर देता है, वह ह़िकमत वाला (तत्वदर्शी) सूचित है। अल्लाह तआला के शत्रुओं के पास आप जो कुशादगी व समृद्धि देख रहे हैं वह (वास्तव में) कुशादगी व समृद्धि नहीं है, बल्कि वहः उन के साथ (अल्लाह की तदबीर एवं) उस की मोहलत व ढ़ील है।

कभी-कभी मोमिन को किसी चीज़ से वंचित कर दिया जाता है और यह वंचित होना वास्तव में उसके लिये नवाज़िश व अनुग्रह होता है, और कभी-कभार उसे कोई चीज़ प्राप्त होती है तथा यह नवाज़िश उसके लिये आज़माइश व परीक्षा बन जाती हैः

﴿وَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا۟ شَيْـًٔا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰٓ أَن تُحِبُّوا۟ شَيْـًٔا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ﴾

अनुवादः (संभव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार से सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बुरी हो)। सूरह बक़रहः 216।

❒ नसीहत, सदुपदेश व स्मरणः

यदि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह तंगी व उदारता पैदा करने वाला, बुलंदी व पस्ती तक पहुँचाने वाला है -तक़दीर (भाग्य) एवं क़ज़ा (निर्णय) के आधार पर- तो यह इसका खण्डन नहीं करता है कि ये सभी मामले (तंगी व कुशादगी) बंदों के अपनाये हुये असबाब व माध्यम के आधार पर घटित हों, जब वो असबाब व माध्यम अपनायें तो उन का परिणाम निकले, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दोनों चीज़ों (भाग्य एवं मानव प्रयास) को इस ह़दीस़ में इकठ्ठा कर दिया हैः “जिस व्यक्ति को यह प्रिय हो कि उसकी आजीविका में कुशादगी व वृद्धि तथा आयु में वृद्धि हो तो उसे चाहिये कि वह अपने सगे-संबंधियों के संग अच्छा व्यवहार करे”। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

❒ सरगोशी ...

जिस पर अल्लाह तआला का यह एह़सान व उपकार हो कि उसे धन-सम्पदा, ज्ञान-विज्ञान, शरीर एवं अंग-प्रत्यंग तथा प्रताप व वैभव की कुशादगी एवं वृद्धि प्राप्त हो, वह अल्लाह के बंदों के साथ एह़सान, उपकार व भलाई करे, जिस प्रकार से अल्लाह तआला ने उस पर अपना फ़ज़्ल व एह़सान किया है, यह एह़सान व अनुग्रह करने वाले के शुक्र व धन्यवाद अदा करने का एक रूप है, इसके द्वारा नियामतें सदा बरसती रहती हैं, जिसके पास इतनी क्षमता व गुंजायश न हो वह कम से कम लोगों के साथ अच्छा व्यवहार व शिष्टाचार करेः

﴿وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾

अनुवादः (और अल्लाह तआला सदाचारियों (उपकार करने वालों) से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरानः 134।

हे अल्लाह! हे तंगी व कुशादगी उत्पन्न करने वाले पालनहार! हमारे लिये अपनी रह़मत व दया कुशादा कर दे, और हम से अपनी मख़लूक़ (सृष्टि) की बुराई व दुष्टता को दूर फ़रमा दे।

हे अल्लाह! हमारे ऊपर अपनी बरकत, कल्याण, दया व रह़मत, फ़ज़्ल, एह़सान व उपकार, तथा रिज़्क़, रोज़ी एवं आजीविका में कुशादगी व उदारता पैदा कर दे।

(89-90)

(अल-मुक़द्दिम, अल-मुअख़्ख़िर जल्ल जलालुहु)

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "बंदा अनवरत चलता ही रहता है, वह ठहरता नहीं है, या तो ऊपर की ओर चढ़ता है अथवा नीचे की ओर उतरता है, या आगे की ओर बढ़ता है अथवा पीछे की ओर लौटता है"।

न तो प्रकृति में ठहराव है और न शरीअत में, बल्कि (प्रकृति एवं शरीअत दोनों ही) विभिन्न चरणों से गुज़रने का नाम है, जो (चरण) बड़ी तेज़ी के साथ स्वर्ग अथवा नरक की ओर बढ़े जा रहे हैं, कोई (चरण) तीव्र है तो कोई मंद, कोई (चरण) आगे बढ़ रहा है तो कोई पीछे छूट रहा है।

मार्ग में रुका हुआ कोई नहीं है, बल्कि उन चलने वालों की दिशा अलग-अलग है, और गति किसी की तीव्र है तो किसी की मंदः

﴿إِنَّهَا لَإِحْدَى ٱلْكُبَرِ ۝٣٥ نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ۝٣٦ لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝٣٧﴾

अनुवादः (वास्तव में (नरक) एक बहुत बड़ी चीज़ है। डराने के लिये लोगों को। उस के लिये तुम में से जो चाहे आगे होना अथवा पीछे रहना)। सूरह मुद्दस़्स़िरः 35-37।

अल्लाह तआला ने ठहरे हुये का उल्लेख नहीं किया है, क्योंकि स्वर्ग एवं नरक के मध्य कोई स्थान नहीं, और न ही किसी यात्री के लिये लोक परलोक के सिवा किसी (तीसरे गंतव्य स्थान का) मार्ग है।

जो व्यक्ति नेक अमल व सदकर्म करने के द्वारा जन्नत की ओर नहीं बढ़ेगा वह बुरे अमल कुकर्म के कारण जहन्नम के पास ही छूट जायेगा।

(किसी व्यक्ति का) आगे बढ़ना अथवा पीछे छूट जाना महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के हाथ में है, इसीलिये अल्लाह तआला के अस्मा -ए- हुस्ना (अच्छे प्यारे व सुंदर नामों) में से से ये दो महान नाम भी हैं: (अल-मुक़द्दिम अल-मुअख़्ख़िर जल्ल जलालुहु)।

स़ह़ीह़ैन में आया है, इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह कहते हैं किः "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात्रि के समय जब तहज्जुद के लिये खड़े होते तो यह दुआ पढ़तेः

فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَوْ: لَا إِلَهَ غَيْرُكَ

(अर्थातः तू मेरे अगले एवं पिछले, प्रकट एवं गुप्त पापों को क्षमा कर दे, तू ही सर्वप्रथम था तथा तू ही सर्वअंतिम होगा, तेरे सिवा कोई भी सत्य पूज्य नहीं है)"।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जोः पहले भी था और अंत में भी होगा, वह प्रत्येक वस्तु को उसके उचित स्थान पर उतारता है, जिसको चाहता है आगे बढ़ाता है और जिसे चाहता है पीछे कर देता है।

उसने सृष्टि रचने के पूर्व ही प्राणियों के भाग्य लिख दिये।

अपने प्रिय वलियों (मित्रों) को अन्य बंदों से आगे रखा, कुछ प्राणियों को कुछ अन्य प्राणियों पर विभिन्न श्रेणियों की उच्चता व बुलंदी प्रदान की।

अपनी तौफ़ीक़ व अनुग्रह से जिसे चाहा प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ जाने वाले बंदों के स्थान तक पहुँचा दिया तथा जिसे चाहा उन के स्थान से पीछे रखा तथा उसके स्थान को नीचा कर दिया, जब जिस की आशा थी उसे उस समय पीछे कर दिया क्योंकि उस के इल्म (संज्ञान) में था कि उसके परिणाम में क्या ह़िकमत व तत्वदर्शिता छिप्त है, वह जिसे पीछे कर दे उसे कोई आगे नहीं बढ़ा सकता तथा जिसे आगे बढ़ा दे उसे कोई पीछे नहीं कर सकता।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी जिस मख़लूक़ (रचना) को चाहता है अपनी तौफ़ीक़ व अनुग्रह से अपनी रह़मत व दया की ओर बढ़ा देता है और जिसे चाहता है उसकी रुस्वाई व दुर्भाग्य के कारण अपनी रह़मत व दया से दूर कर देता है।

इन दोनों महान नाम (अल-मुक़द्दिम अल-मुअख़्ख़िर जल्ल जलालुहु) को संयुक्त रूप से प्रयोग किया गया है, जो किः अदब व शिष्टता तथा सुंदरता में वृद्धि का तक़ाज़ा है, क्योंकि कमाल व पूर्णता इन दोनों महान नामों के संयुक्त प्रयोग ही में हैः

وهو المقدمُ والمؤَخِرُ ذانِكَ　　　الصِّفتانِ للأفعالِ تابعتانِ

وهُمَا صِفاتُ الذاتِ أيضا هُما　　　بالذَّاتِ لا بالغيرِ قائِمتانِ

अनुवादः अल्लाह सर्वप्रथम था एवं वही सर्वअंतिम होगा, यो दोनों स़िफ़तें (विशेषताएं) उसके अफ़आल (कर्म) के अधीन हैं। ये दोनों अल्लाह तआला की ज़ात (व्यक्तित्व) की स़िफ़ात (विशेषतायें) हैं, ये दोनों स़िफ़ात अल्लाह तआला की ज़ात से कायम व स्थिर हैं न कि किसी और से।

❒ तक़दीम व ताख़ीर (आगे बढ़ाना तथा पीछे करना) ...

इसके दो प्रकार हैं: कौनी (ब्रह्माण्डीय) तथा शरई (धार्मिक)।

कौनी (ब्रह्माण्डीय) का उदाहरणः महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का अपनी कुछ मख़लूक़ (प्राणियों) को कुछ अन्य पर, पैदा करने तथा अस्तित्व में लाने में पहले रखना, जैसाकि ह़दीस़ में आया है किः "अल्लाह तआला ने सबसे पहले कलम को पैदा किया"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

अल्लाह तआला ने आसमानों एवं ज़मीन को छः दिनों में उत्पन्न किया, फ़रिश्तों को जिन्नात (दानव) एवं मानव से पहले उत्पन्न किया, तथा जिन्नातों (दानवों) को मानवों से पहले उत्पन्न कियाः

﴿وَٱلۡجَآنَّ خَلَقۡنَٰهُ مِن قَبۡلُ مِن نَّارِ ٱلسَّمُومِ ٢٧﴾

अनुवादः (और इस से पहले जिन्नों को हम ने अग्नि की ज्वाला से पैदा किया)। सूरह ह़िज्रः 27।

मानवों में सर्वप्रथम आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति हुई, तत्पश्चात उनकी संतति एक के बाद एक की उत्पत्ति हुई, उन में से कुछ पहले अस्तित्व में आये तो कुछ की उत्पत्ति बाद में हुई।

इससे यह कदापि प्रमाणित नहीं होता है कि जिसकी उत्पत्ति पहले हुई वह बाद वाले से अफ़ज़ल व उत्तम हैं, क्योंकि आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश छठे दिन हुई, लेकिन उन को तथा उनकी संतति को बहुतेरी अन्य प्राणियों पर प्रधानता व उच्चता प्राप्त हैः

﴿۞ وَلَقَدۡ كَرَّمۡنَا بَنِيٓ ءَادَمَ وَحَمَلۡنَٰهُمۡ فِي ٱلۡبَرِّ وَٱلۡبَحۡرِ وَرَزَقۡنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَفَضَّلۡنَٰهُمۡ عَلَىٰ كَثِيرٖ مِّمَّنۡ خَلَقۡنَا تَفۡضِيلٗا ٧٠﴾

अनुवादः (और हम ने बनी आदम (मानव) को प्रधानता दी, तथा उन्हें थल एवं जल में सवार किया, और उन्हें स्वच्छ चीज़ों से जीविका प्रदान की, और हम ने उन्हें बहुत सी उन चीज़ों पर प्रधानता दी जिन की हम ने उत्पत्ति की है)। सूरह बनी इस्राईलः 70।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे अंतिम रसूल हैं, किंतु वह सबसे अफ़ज़ल व उत्तम हैं, आप की उम्मत सबसे अंतिम उम्मत है परंतु वह सबसे उत्तम उम्मत है।

ऐसा भी हो सकता है कि पहले अस्तित्व में आने वाला बाद में आने वाले से अफ़ज़ल व उत्तम हो, जैसे अबुल अम्बिया (नबियों के पिता) इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बाद के सभी नबियों से अफ़ज़ल व उत्तम हैं, सिवाय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के।

रही बात शरई व धार्मिक तक़दीम व ताख़ीर (आगे पीछे होने की) तो (इसका उदाहरण यह है कि): अज़ान को नमाज़ से पहले रखा गया है, जुमा का ख़ुतबा (भाषण) को जुमा से पहले रखा गया है, इबादतों (उपासनाओं) में शर्तों एवं वाजिबात (अनिवार्यता) का एक विशिष्ट क्रम है जिसके बिना इबादत दुरुस्त नहीं होती।

शरई व धार्मिक रूप से आगे होने का एक उदाहरण यह भी है कि: कुछ इबादतों व उपासनाओं को कुछ अन्य पर फ़ज़ीलत व प्रधानता दी गई है, इसी प्रकार से कुछ बंदों को कुछ अन्य बंदों पर फ़ज़ीलत व प्रधानता दी गई है, चुनाँचे फ़रायज़ (अनिवार्य उपासनायें) अल्लाह तआला के निकट नवाफ़िल (निवार्य उपासनाओं) से अधिक प्रिय हैं, और मानवों में सर्वोत्तम मानव व अफ़ज़ल इंसान अम्बिया व रसूल हैं, उनके दरमियान भी एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत व प्रधानता प्राप्त है, उन के सिवा जो सामान्य मानव समूह है उन में भी यह चरणबद्धता पाई जाती है, कि कोई आगे है तो कोई पीछे।

मोमिन बंदा जब यह जान लेता है कि अल्लाह ही पहले था और अल्लाह ही बाद में भी रहेगा तो उसका दिल केवल एक अल्लाह से जुड़ा रहता है, उसी से वह ईमान एवं सुदृढ़ता व अडिगता की प्रार्थना करता है, उसी पर भरोसा करता है, क्योंकि वह पाक व उच्च जिस को आगे बढ़ा दे उसे कोई पीछे नहीं कर सकता, और वह जिसे पीछे कर दे उसे कोई आगे नहीं बढ़ा सकता।

❒ वास्तविक पहल:

यह बात याद रखने की है कि वास्तविक एवं लाभप्रद पहल यह है कि: महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का आज्ञापालन व वंदना, उसकी जन्नत एवं रज़ा व प्रसन्नता पाने के लिये पहल की जाये, उससे पीछे हटना ही वास्तव में घोर निंदनीय है, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान है:

﴿ وَسَارِعُوٓاْ إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا ٱلسَّمَٰوَٰتُ وَٱلۡأَرۡضُ أُعِدَّتۡ لِلۡمُتَّقِينَ ١٣٣ ﴾

अनुवादः (और अपने पालनहार की क्षमा एवं उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिस की चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिये तैयार की गई है)। सूरह आले इमरानः 133।

एक स्थान पर अल्लाह तआला ने यों बयान फ़रमाया हैः

﴿سَابِقُوٓاْ إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا كَعَرۡضِ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ﴾

अनुवादः (एक-दूसरे से आगे बढ़ो अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर जिसकी विशालता आकाश तथा धरती की विशालता के समान है)। सूरह ह़दीदः 21।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप ने फ़रमायाः "आगे बढ़ो तथा (प्रत्यक्ष रूप से) मेरा अनुसरण करो और जो लोग तुम्हारे बाद हों वो तुम्हारा अनुसरण करें, कुछ लोग लगातार पीछे हटते जायेंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआला उन को पीछे कर देगा"। (मुस्लिम)।

सांसारिक आधार पर आगे बढ़ने अथवा पीछे रहने की बात करें तो यह अल्लाह तआला के निकट कोई मापदंड नहीं है और न ही इससे बंदा को कोई लाभ मिलने वाला है।

इसके अतिरिक्त ईमान की निशानी यह भी है कि जिसे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने आगे रखा है उसे आगे रखा जाये और जिसे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने पीछे रखा है उसे पीछे रखा जाये, यही आगे तथा पीछे करने का मानक, प्रेम व घृणा का पैमाना तथा मित्रता व शत्रुता का मापक होना चाहिये, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿أَمۡ حَسِبَ ٱلَّذِينَ ٱجۡتَرَحُواْ ٱلسَّيِّـَٔاتِ أَن نَّجۡعَلَهُمۡ كَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ سَوَآءٗ مَّحۡيَاهُمۡ وَمَمَاتُهُمۡۚ سَآءَ مَا يَحۡكُمُونَ ٢١﴾

अनुवादः (क्या समझ रखा है जिन्होंने कुकर्म किया है कि हम कर देंगे उन को उन के समान जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हैं कि उन का जीवन तथा मरण समान हो जाये? वह बुरा निर्णय कर रहे हैं)। सूरह जास़ियहः 21।

हे अल्लाह! हे मुक़द्दिम व मुअख़्ख़िर (आगे बढ़ाने वाले तथा पीछे करने वाले)! हम तुझ से यह भीख माँगते हैं कि तू हमें अपनी क्षमा से नवाज़ दे, हमें अपनी जन्नत में प्रवेश दिला तथा जहन्नम से मुक्ति प्रदान कर।

(91)

(अल-ह़यीय्य जल्ल जलालुहु)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक व्यक्ति को देखा कि वह खुले मैदान में बिना किसी वस्त्र के स्नान कर रहा है, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात बुरी लगी, चुनाँचे आप मिंबर (मंच) पर चढ़े तथा अल्लाह तआला की प्रशंसा व स्तुतिगान किया, फिर फ़रमायाः "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल बड़ा ह़लीम (सहनशील), ह़यीय्य (लज्जावान) तथा पर्दे वाला है, लज्जा व पर्दा को प्रिय रखता है, अतः जब तुम में से कोई स्नान करे तो पर्दा में करे"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह है जो बड़ा लज्जावान है, वह लज्जाशीलता के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान है, वह सम्पूर्ण लज्जाशीलता (कमाल -ए-ह़या) की विशेषता से विशेषित है, उसी प्रकार से जो उसके कमाल व जमाल (पूर्णता व सुंदरता) एवं सर्वोच्चता व प्रताप तथा वैभव के लिये उचित है, मानवों की लज्जा के समान नहीं जो परिवर्तन एवं विवशता तथा विनम्रता का परिणाम होता है।

अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआला की लज्जा एक अलग प्रकार की लज्जा है, जिसकी तह तक न तो हमारी बुद्धि पहुँच सकती है और न हमारा विवेक उसकी कैफ़ियत व विवरण का सही अनुमान लगा सकता है, क्योंकि वह सख़ावत व दानवीरता, एह़सान, उपकार व भलाई तथा अज़मत व महानता एवं जलाल व प्रताप से परिपूर्ण लज्जा है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की महानता है कि उसकी लज्जा उन चीज़ों के छोड़ देने का नाम है जो उसकी दयालुता की विशालता, सख़ावत व दानवीरता की पराकाष्ठा तथा ह़िल्म व सहनशीलता एवं उदारता के लिये अनुपयुक्त है, इसका एक उदाहरण यह है किः अल्लाह तआला को इस बात से लज्जा आती है कि उस का बंदा जब दुआ के लिये हाथ उठाये तो वह उसे ख़ाली हाथ लौटा दे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है किः "निःसंदेह अल्लाह तआला उदार एवं लज्जावान है, उसे इस बात से लज्जा आती है कि जब कोई आदमी उसके समक्ष हाथ फैलाये तो वह उसके दोनों हाथों को खाली व नामुराद लौटा दे"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

यह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की महिमा व शान है किः उसे -सम्पूर्ण रूप से बेनियाज़ होने तथा पूर्णतः समर्थ व सक्षम होने के बावजूद- अपने बंदे के तिरस्कार, अपमान एवं फ़ज़ीह़त से लज्जा आती है।

وهُو الحَيِيُّ فليسَ يَفضَحُ عبدَه   عِندَ التَّجاهُرِ مِنهُ بالعِصيانِ
لكنَّه يُلقِي عليه سِترَه فهو   السِتِّيرُ وصاحِبُ الغُفرَانِ

अनुवादः वह लज्जाशील है, इसी कारणवश जब बंदा खुले आम उसकी अवज्ञा करता है, तब भी वह उसकी फ़ज़ीह़त नहीं करता, बल्कि वह उस पर पर्दा डाल देता है, क्योंकि वह लज्जाशील एवं क्षमी है।

अल्लाह तआला का यह न्याय व इंसाफ़ है किः वह सच बोलने से नहीं शर्माता, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَٱللَّهُ لَا يَسۡتَحۡيِۦ مِنَ ٱلۡحَقِّۚ﴾

अनुवादः (अल्लाह नहीं लजाता है सत्य से)। सूरह अह़ज़ाबः 53।

मोमिन बंदा जितना अपने मन में यह ध्यान रखता है कि वह अल्लाह तआला की निगरानी में है, उतना ही उस के दिल में अल्लाह तआला से लज्जा का भाव उत्पन्न होता है।

❒ वास्तविकताः

जिसके अंदर जितना अधिक ईमान होगा उस के अंदर लज्जा भी उतनी ही अधिक होगी, इसीलिये अम्बिया -ए- किराम अलैहिमुस्सलाम लोगों में सर्वाधिक लज्जाशील थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह गुण बयान किया गया है किः "आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर्दे की ओट में रहने वाली युवती (असूर्यपश्या) से भी अधिक लज्जावान थे"।

ह़या व लज्जा ईमान का एक अभिन्न अंग है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है, आप ने फ़रमायाः "ईमान की सत्तर से कुछ अधिक शाखाएं हैं, तथा ह़या (लज्जा) भी ईमान की एक अभिन्न शाखा है"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

सर्वोत्तम व प्रियतम ह़या एवं लज्जा यह है किः महानतम व सर्वोच्च अल्लाह से ह़या व लज्जा की जाये।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को संबोधित करते हुये फ़रमायाः "अल्लाह तआला से वैसी ही ह़या व लज्जा करो जैसा कि उससे लज्जा करनी चाहिये, स़ह़ाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछाः हे अल्लाह के रसूल! हम अल्लाह तआला से ह़या व लज्जा करते हैं तथा उस पर अल्लाह तआला का शुक्र व धन्यवाद अदा करते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ह़या व लज्जा का यह ह़क़ नहीं जो तुम ने समझा है, अल्लाह तआला से ह़या व लज्जा करने का जो ह़क़ व सही ढ़ंग है वह यह है किः तुम अपने सिर तथा उसके साथ जितनी चीज़ें हैं उन सब की सुरक्षा करो, और अपने पेट तथा उस के अंदर जितनी चीज़ें हैं उन सब की ह़िफ़ाज़त करो, एवं मृत्यु तथा (उसके पश्चात) हड्डियों के सड़ गल जाने को याद किया करो, और जिसे आख़िरत (परलोक) की चाहत हो वह सांसारिक साज-सज्जा का परित्याग करे, जिसने ये सब पूरा किया तो वास्तव में उसी ने अल्लाह तआला से वैसी ह़या व लज्जा की जैसी उस से ह़या व लज्जा करने का सही ढ़ंग है"। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

इब्नुल क़ैयिम रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं किः "जो व्यक्ति गुनाह करते समय अल्लाह तआला से ह़या व लज्जा करे, अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उसे दण्ड देने से ह़या व लज्जा करेगा, किंतु जो व्यक्ति अल्लाह तआला की अवज्ञा करने से नहीं लजाये तो अल्लाह तआला भी उसको यातना देने में नहीं लजाये गा"।

❒ लज्जा कितना सुंदर गुण है!

ह़या व लज्जा सदा ख़ैर व भलाई ले कर ही आती है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र एक ऐसे व्यक्ति के पास से हुआ जो दूसरे व्यक्ति को ह़या व लज्जा पर झिड़क रहा था किः वास्तव में तुम बहुत लज्जा करने वाले हो! मानो वह यह कह रहा हो किः मैं तुझे (इसके कारण) मार भी सकता हूँ! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "इसे इसकी अपनी यथास्थिति पर छोड़ दो, क्योंकि ह़या व लज्जा तो ईमान का एक अभिन्न अंग है"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

ह़या व लज्जा स्वाभिमान व शील का प्रतीक, आत्माभिमान की निशानी तथा शिष्टाचार की पहचान है।

ह़या व लज्जाः अल्लाह तआला की महानता का एह़सास, उसके वैभव का अनुभव एवं उसके महा प्रतापी होने को याद रखना है।

किसी सलफ़ (पुनीत पूर्वज) ने कहा किः मुझे यह पता है कि अल्लाह तआला मुझ से अवगत व सूचित है, इसलिये मुझे लज्जा आती है कि वह मुझे पाप व कुकर्म करते हुये देखे।

وإذا خَلوتَ بريبَة فِي ظُلْمَةٍ　　　والنفسُ داعيةٌ إلى العِصيانِ

فاستَحيِي من نَظرِ الإلَهِ وقُل لها　　　إنَّ الَّذِي خَلَقَ الظَّلامَ يَرانِي

अनुवादः जब कभी तुम अंधेरे में अकेले रहो तथा नफ़्स व इंद्रीय तुम्हें कुकर्म करने को कहे, तो अल्लाह तआला की दृष्टि व नज़र से लज्जा अनुभव करो तथा अपने नफ़्स व इंद्रीय से कहो कि जिसने इस अंधकार को उत्पन्न किया है वह मुझे देख रहा है।

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः "जिस के अंदर जितनी कम लज्जा होगी उस के अंदर अल्लाह तआला का भय भी उतना ही कम होगा, तथा जिसके अंदर अल्लाह तआला का भय नहीं होगा उस का दिल मुर्दा हो जायेगा"।

❒ अंतिम बात ...

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने जन्नत की ह़ूरों (स्वर्ग की अप्सराओं) के गुणों का बखान करते हुये फ़रमायाः

﴿فِيهِنَّ قَٰصِرَٰتُ ٱلطَّرۡفِ﴾

अनुवादः (उन में लजीली आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी)। सूरह रह़मानः 56।

अर्थातः वो अपने पतियों के सिवा किसी अन्य को निगाह उठा कर नहीं देखतीं, फिर अल्लाह तआला ने उनके सौंदर्य व सुरूपता का वर्णन करते हुये फ़रमायाः

﴿كَأَنَّهُنَّ ٱلۡيَاقُوتُ وَٱلۡمَرۡجَانُ ۝٥٨﴾

अनुवादः (मानो जैसे वो हीरे एवं मूँगे हों)। सूरह रह़मानः 58।

अल्लाह तआला ने पवित्रता, सतीत्व एवं चरित्रवान होने तथा ह़या व लज्जा के गुण को पहले बयान किया, तत्पश्चात सुंदरता व सुरूपता का उल्लेख किया, इसलिये कि जब एक महिला के अंदर पवित्रता व लज्जा न हो तो उसकी सुंदरता व सुरूपता का कोई मोल नहीं।

किसी ने कहा है किः गुनाहों की सज़ा यह भी है किः इंसान के अंदर से ह़या व लज्जा तथा मुख की आभा समाप्त हो जाती है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद हैः "(पूर्व के) अम्बिया -ए- किराम अलैहिमुस्सलाम की बातों में से (बाद के) लोगों ने जो

पाया उस में यह भी है कि: यदि तुम्हारे अंदर ह़या व लज्जा न हो तो फिर जो मन में आये करो''। (बुख़ारी)।

إذا لم تَخْشَ عاقِبةَ اللَّيَالِي ولم تَستَحيِ فاصنَع ما تَشاءُ
يَعِيشُ المرءُ ما استَحيَا بِخَيرٍ ويَبقَى العُودُ ما بَقِيَ اللِّحاءُ

अनुवाद: यदि तुम को रातों (के कुकर्मों) के दुष्परिणाम का अंदेशा न हो तथा तुम्हें ह़या व लज्जा न आती हो तो जो मन में आये करो। मानव जब तक ह़या व लज्जा के साथ जीवन यापन करता है तब तक उसके जीवन में कल्याण ही कल्याण रहता है, (इसको ऐसे समझें कि) जब तक (लकड़ी पर) छाल रहता है तब तक लकड़ी भी सुरक्षित रहती है।

याद रखें कि अल्लाह तआला के निकट सबसे घृणित व्यक्ति वह है जो रात भर कुकर्म करे, और (इसके बावजूद) अल्लाह तआला उसके कुकर्मों पर पर्दा डाल दे, किंतु जब वह सुबह करे तो स्वयं ही अल्लाह तआला का डाला हुआ पर्दा फाड़ डाले।

हे अल्लाह! हमें अपनी ह़या व लज्जा से अनुग्रहित कर, तथा हमें तौफ़ीक़ दे कि हम प्रकट व गुप्त एवं सभा तथा एकांतावास हर रूप में तेरा भय अपने अंदर पैदा करें।

(92)

(अल-दय्यान जल्ल जलालुहु)

एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने आ कर बैठा, उस ने कहाः हे अल्लाह के रसूल! मेरे दो दास हैं जो मुझ से झूठ बोलते हैं, मेरे धन में ख़्यानत (धोखाधड़ी) करते हैं तथा मेरी अवज्ञा करते हैं, मैं उन्हें गालियाँ देता हूँ तथा मारता-पीटता हूँ, मेरा एवं उनका निपटारा कैसे होगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "उन्होंने तुम्हारे साथ ख़्यानत की है, तुम्हारी अवज्ञा की है और तुम से जो झूठ बोले हैं उन सब का हिसाब किताब होगा, तुम ने उन्हें जो दण्ड दिया है उन का भी हिसाब किताब होगा, अब यदि तुम्हारा दण्ड उनके पापों के समान हुई तो तुम तथा वो बराबरी पर छूट जाओगे, न तुम्हारा उन पर कोई अधिकार शेष रहेगा तथा न उनका तुम्हारे ऊपर, और यदि तुम्हारा दण्ड उनके कुकृत्य से कम हुआ तो तुम्हार फ़ज़्ल व एहसान होगा, और यदि तुम्हारा दण्ड उन के पापों की तुलना में अधिक हुआ तो तुझ से उन के साथ ज़्यादती व अतिरेक का बदला लिया जायेगा, (यह सुन कर) वह व्यक्ति रोता पीटता हुआ वापिस हुआ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः क्या तुम अल्लाह तआला की किताब (क़ुरआन) नहीं पढ़ते (कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः)

﴿وَنَضَعُ ٱلْمَوَٰزِينَ ٱلْقِسْطَ لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۖ وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ ﴿٤٧﴾﴾

अनुवादः (और हम रख देंगे न्याय का तराज़ू प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी और पर कुछ भी, तथा यदि होगा राई के दाने के बराबर (किसी का कर्म) तो हम उसे सामने ला देंगे, और हम बस (काफ़ी) हैं हिसाब लेने के लिये)। सूरह अम्बियाः 47।

उस व्यक्ति ने कहाः अल्लाह की क़सम! मैं अपने लिये तथा उनके लिये इससे बेहतर उपाय और कुछ नहीं पाता कि हम एक-दूजे से जुदा हो जायें, मैं आप को गवाह बना कर कहता हूँ किः वो सब आज़ाद हैं"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

أَمَا واللهِ لو عَرَفَ الأَنامُ   لِما خُلِقُوا لَمَا غَفَلُوا وناموا

لقد خُلِقُوا لِمَا لو أَبصَرَتهُ   عُيونُ قلوبِهِم ساحُوا وهامُوا

अनुवादः अल्लाह की क़सम! यदि लोग अपनी उत्पत्ति का उद्देश्य जान लें तो न वो असावधानी करेंगे और न उन्हें नींद आयेगी। जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये वो उत्पन्न किये गये हैं यदि वो अपने दिल की आँखों से उसे देख लें तो (इबादत व उपासना में) अधिकाधिक प्रयास करेंगे तथा धरती में फिरते रहेंगे।

मुसनद अह़मद में आया है कि, जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “अल्लाह तआला अपने बंदों को एकत्रित करेगा तथा ऐसी ध्वनी के द्वारा उन को पुकारेगा जिसे दूर वाले तथा निकटवर्ती सभी समान रूप से सुनेंगेः मैं बादशाह हूँ, हरेक के कर्मों का प्रतिफल देने वाला हूँ, कोई भी जहन्नमी, जिसका अधिकार किसी जन्नती के पास होगा, उस समय तक जहन्नम में नहीं जायेगा जब तक कि मैं जन्नती से उस जहन्नमी का बदला न ले लूँ, और कोई भी जन्नती, जिस का कोई अधिकार किसी जहन्नमी के ऊपर होगा, उस समय तक जहन्नम में नहीं जायेगा जब तक कि मैं जहन्नमी से उस जन्नती का बदला न ले लूँ, चाहे एक थप्पड़ मारने का ही ह़क़ क्यों न हो”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह -जो अपनी बादशाहत के साथ ऊपर अपने अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर विराजमान) है, समस्त सृष्टि उसके समक्ष नतमस्तक तथा सभी मुख उसके सामने झुके हुये हैं, उसकी अज़मत व महानता के सामने सभी उद्दंडी व उप्रद्रवी (शासक आदि) एवं समस्त प्राणी विवश व आजिज़ हैं, अल्लाह महानतम व सर्वोच्च वह है जो हरेक मख़लूक़ (रचना) पर प्रभुत्व रखने वाला है, महानतम व सर्वोच्च के सामने समस्त ब्रह्माण्ड परास्त है, तमाम बंदों की पेशानियाँ व ललाट उसके ही हाथ में हैं, उसी के हाथ में राज-पाट का समस्त प्रबंधन एवं अधिकार है, प्रत्येक प्रकार की बादशाहत का स्वामी वही है, उसके सिवा कोई स्वामी नहीं, न उसके सिवा कोई रब व पालनहार है और न ही सत्य पूज्य।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार जो (सभी कर्मों का) प्रतिफल देने वाला है, वह बंदों को क़यामत के दिन (उनके कर्मों पर) दण्ड व फल देगा, तथा उनके मध्य निर्णय करेगाः

﴿مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ۝٤﴾

अनुवादः (जो प्रतिकार (बदले) के दिन का मालिक है)। सूरह फ़ातिह़ाः 4।

﴿وَنَضَعُ ٱلۡمَوَٰزِينَ ٱلۡقِسۡطَ لِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ فَلَا تُظۡلَمُ نَفۡسٞ شَيۡـٔٗاۖ وَإِن كَانَ مِثۡقَالَ حَبَّةٖ مِّنۡ خَرۡدَلٍ أَتَيۡنَا بِهَاۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ ۝٤٧﴾

अनुवादः (और हम रख देंगे न्याय का तराज़ू प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी और पर कुछ भी, तथा यदि होगा राई के दाने के बराबर (किसी का कर्म) तो हम उसे सामने ला देंगे, और हम बस (काफ़ी) हैं हिसाब लेने के लिये)। सूरह अम्बियाः 47।

जिस व्यक्ति को ख़ैर, भलाई व कल्याण प्राप्त हो उसे चाहिये कि वह अल्लाह तआला की प्रशंसा प स्तुतिगान करे, और जिसे इसके सिवा कुछ और मिले वह अपने आप को धिक्कारने व मलामत करने के सिवा किसी और को कुछ न कहेः

﴿يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِن سُوٓءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُۥٓ أَمَدًۢا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ ٱللَّهُ نَفْسَهُۥ ۗ وَٱللَّهُ رَءُوفٌۢ بِٱلْعِبَادِ ﴿٣٠﴾﴾

अनुवादः (जिस दिन प्रत्येक प्राणी ने जो सुकर्म किया है उसे उपस्थित पायेगा, तथा जिस ने कुकर्म किया है वह कामना करेगा कि उस के तथा उस के कुकर्मों के बीच बड़ी दूरी होती, तथा अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता है, और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है)। सूरह आले इमरानः 30।

❒ दण्डों में सोच-विचार करें!

अल्लाह तआला न्यायप्रिय तथा मुंसिफ़ है, चुनाँचे वह अत्याचारी से अत्याचारित के लिये, स्वामियों से उसके दासों के लिये यहाँ तक कि पशुओं से भी क़िसास़ (बदला, प्रतिहिंसा) दिलाये गा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ह़दीस़ हैः "क़्यामत के दिन समस्त प्राणियों को इकत्रित किया जाये गा, चौपाये, पशु, पक्षी, हरेक चीज़, फिर अल्लाह तआला उन के मध्य इस प्रकार से इंसाफ करेगा किः बिना सींग वाले जानवर को सींग वाले जानवर से क़िसास़ दिलायेग"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे ह़ाकिम ने मुसतदरक में रिवायत किया है), एक रिवायत में आया हैः "यहाँ तक कि चींटी को भी क़िसास़ दिलवाया जायेगा"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अह़मद ने मुसनद में रिवायत किया है)।

जब आप को विश्वास हो जाये कि क़्यामत के दिन आप (सभी कार्य का) प्रतिफल देने वाले पालनहार से मिलने वाले हैं, जिस दिन अच्छे व बुरे कर्मों का बदला दिया जायेगा, अल्लाह तआला एक कण के बराबर भी किसी पर अत्याचार नहीं करेगा, लोगों के परस्पर एक दूसरे के संग व्यवहार मतभेद व झगड़े पर आधारित होते हैं, जब्कि बंदा एवं रब के मध्य जो व्यवहार व मामला है उसका आधार क्षमा व माफ़ी पर है, (उस दिन) नेकियों एवं बुराइयों के द्वारा हिसाब किताब चुकाया जायेगा, तुम्हारी नेकियां बाँट दी जायेंगी तथा तुम्हारे कंधे पर

दूसरों के गुनाह डाल दिये जायेंगे, आप पूर्ण विश्वास रखिये कि हर हाल में आप का हिसाब किताब होना है।

इसलिये आप बुद्धिमत्ता से काम लें, इससे पूर्व कि आप का हिसाब किताब हो, आप स्वयं अपना लेखा जोखा निकालिये, जैसाकि कहा गया है किः बुद्धिमान वह है जो अपने इंद्रिय को वश में रख कर मृत्यु पश्चात जीवन के लिये कर्म करता है, तथा बड़ा ही असहाय व हताश व्यक्ति वह है जो अपने इंद्रिय की पैरवी करता है तथा अल्लाह तआला से विभिन्न प्रकार की इच्छायें रखता है!

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से पूछा किः क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस (दरिद्र) कौन है?

स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उत्तर दिया किः हम में मुफ़्लिस (दरिद्र) वह है जिसके पास न रूपया पैसा हो और न ही साज़ो सामान।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मेरी उम्मत का मुफ़्लिस (दरिद्र) वह व्यक्ति है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोज़ा तथा ज़कात ले कर आयेगा, और इस प्रकार से आयेगा कि संसार में किसी को गाली दी होगी, किसी पर बोहतान (आरोप, लांछन) लगाया होगा, किसी का माल खाया होगा, किसी का रक्त बहाया होगा एवं किसी को मारा होगा, तो उस की नेकियों में से इसको भी दिया जायेगा, उसको भी दिया जायेगा, तथा उस के जिम्मे जो हक बाकी है उसको अदा करने के पूर्व ही यदि उसकी सारी नेकियाँ समाप्त हो जायेंगी तो उन लोगों के गुनाहों को उन से ले कर इस पर डाल दिया जायेगा, तत्पश्चात उस को जहन्नम में फेंक दिया जायेगा"। (मुस्लिम)।

उमर बिन ख़त़्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णति है, वह फ़रमाते हैं किः "इस से पहले कि तुम्हारा हिसाब लिया जाये, तुम अपना मुह़ासबा स्वयं कर लो, इससे पहले कि तुम्हारे आमाल (कर्म) तौले जायें तुम स्वयं उन्हें तौल लो, निश्चय ही तुम्हारे कल के हिसाब से सरल यह है कि तुम आज अपना लेखा-जोखा तैयार कर लो तथा बड़ी पेशी (क़यामत के दिन) के लिय उत्तम तैयारी करो"।

﴿يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ١٨﴾

अनुवादः (उस दिन तुम (अल्लाह के पास) उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह जायेगा तुम में से कोई)। सूरह ह़ाक़्क़ाः 18।

تَذَكَّر يومَ تأتِي الله فَرْدًا وقَد نُصِبَت مَوازِينُ القَضَاءِ
وهُتِّكَت السُّتُورُ عَنِ المعَاصِي وجاءَ الذَّنبُ مُنكَشِفَ الغِطَاءِ

अनुवादः उस दिन को याद करो जब तुम अल्लाह के पास अकेले उपस्थित होगे, एवं हिसाब किताब का तराज़ू लगाया जायेगा। गुनाहों से पर्दे उठाये जायेंगे एवं गुनाह बेपर्दा हो कर आ खड़ा होगा।

अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का कथन याद रखें: "नेकी व्यर्थ एवं बेकार नहीं जाती, गुनाह भुलाया नहीं जाता, बदला देने वाला सोता नहीं है, तुम जैसा चाहो वैसा हो जाओ, जैसा करोगे वैसा पाओगे"।

यदि आप मज़लूम (पीड़ित) हैं तो प्रसन्न हो जायें कि (सभी कर्मों का) प्रतिफल देने वाला परवरदिगार मौजूद है, अल्लाह तआला का यह महान नाम हर पीड़ित व अत्याचारित के लिये बड़ी सांत्वना का कारण है।

أَمَا وَالله إن الظُلمَ شُؤْمٌ وما زَالَ الُمسِيءُ هُو الظَّلُومُ
إلى دَيَّانِ يومِ الدِّينِ نَمْضِي وعِندَ اللهِ تَجْتَمِعُ الخُصُومُ

अनुवादः अल्लाह की क़सम! ज़ुल्म (अत्याचार) सरासर अशुभ व अपशगुन है, गुनाहगार (पापी) व्यक्ति ही ज़ालिम व अत्याचारी होता है। क़्यामत के दिन सभी कर्मों का बदला देने वाले परवरदिगार की ओर हम लोग गमन कर रहे हैं, तथा अल्लाह के निकट ही समस्त शत्रुओं को एकत्रित होना है।

हे अल्लाह! हे समस्त कर्मों का बदला व प्रतिफल देने वाले परवरदिगार! हम तुझ से दुआ करते हैं कि तू हम पर अपनी मग़फ़िरत व क्षमा की बरखा बरसा तथा जिस दिन हम तेरे समक्ष उपस्थित किये जायेंगे उस दिन हम पर दया कर।

(93)

(अल-मन्नान जल्ल जलालुहु)

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के एहसान व उपकार असंख्य हैं! कितने दुःख अल्लाह ने दूर कर दिये! कितने रोगों से अल्लाह तआला ने मुक्ति दे कर निरोग कर दिया! कितने संकट अल्लाह तआला ने दूर फ़रमा दिये! कितनी चिंताओं से अल्लाह तआला ने मुक्ति दिला दी?

सबसे बड़ा उपकार जिसकी आशा एक बंदा आख़िरत (परलोक) के विषय में रखता है वह यह किः उसके पाप क्षमा कर दिये जायें, यह मग़फ़िरत व क्षमाः ईमान तथा नेक अमल (सदकर्म) करने से प्राप्त होगी, चाहे उसकी मात्रा कम ही क्यों न हो।

उसैरिम अम्र बिन स़ाबित को ही देख लीजिये कि वह उहुद के दिन इस्लाम स्वीकार करते हैं, उसी दिन शहीद भी कर दिये जाते हैं, वह एक वक़्त की नमाज़ भी नहीं पढ़ पाते, जब स़हाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास उन का उल्लेख करते हैं तो आप फ़रमाते हैं किः “निःसंदेह वह जन्नतियों में से हैं”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अह़मद नें “मुसनद” में रिवायत किया है और हैस़मी ने “मजमअ” में कहा है कि इसके समस्त रावी (वाचक) स़िक़ह (सच्चे तथा तीक्षण स्मरण शक्ति वाले) हैं।

वह व्यक्ति जिसने सौ लोगों का वध किया था, जब अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने उसकी तौबा की सच्चाई व निष्ठा को देखा तो उस को क्षमा कर दिया।

इस जीवन में बंदे पर सबसे बड़ा उपकार यह है किः उसे हिदायत व मार्गदर्शन मिल जायेः

﴿بَلِ ٱللَّهُ يَمُنُّ عَلَيۡكُمۡ أَنۡ هَدَىٰكُمۡ لِلۡإِيمَٰنِ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ﴾

अनुवादः (बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखाई है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो)। सूरह हुजुरातः 17।

अल्लाह तआला ने जिन महान नामों के द्वारा अपनी प्रशंसा की है, उन में से एक (अल-मन्नान, अर्थातः अत्यधिक उपकार करने वाला) है।

सुनन (पुस्तकों) में आया है, अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बैठे हुये थे और एक व्यक्ति नमाज़ पढ़ रहा था, (नमाज़ से फ़ारिग़ होने के पश्चात) उस ने दुआ माँगीः

اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدَ، لا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الْمَنَّانُ، بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ، يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ، يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ

(अर्थातः हे अल्लाह! मैं तुझ से माँगता हूँ इस वसीला से किः समस्त प्रकार की प्रशंसायें तेरे ही लिये हैं, तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, तू ही उपकार करने वाला एवं आकाशों एवं धरा को पैदा करने वाला है, हे महा प्रतापी, उदार एवं दानी, हे अमर व चिरजीवी, हे आकाशों एवं ज़मीनों को थामने वाले), यह सुन कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः इसने अल्लाह तआला से उसके उस इस्म -ए- आज़म (सबसे महान नाम) के वसीला से दुआ माँगी है कि जब उस के वसीला व हवाले से दुआ की जाती है तो वह (अल्ला) दुआ को स्वीकार करता है, तथा माँगा जाता है तो वह प्रदान करता है। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार बड़ी नवाज़िशों, महान पुरस्कार तथा असीमित उपकार वाला है, वह महानतम व सर्वोच्च माँगने के पूर्व ही नवाज़ देता है, वही है जो आरंभ में भी देता है तथा अंत में भी देता है, वह आशा एवं कल्पना से बढ़ कर अनुग्रहित करता है।

चूँकि वह अपनी सख़ावत, उदारता व अनुग्रह के द्वारा सभी बंदों पर एह़सान व उपकार करता है, इसलिये उन समस्त बंदों पर उस के उपकार हैं, किंतु उस पर किसी का एह़सान व उपकार नहीं है, उसका एक बड़ा अनुग्रह यह है कि उसनेः जीवन, बुद्धि-विवेक एवं ज़ुबान व बोलने की शक्ति प्रदान की, रंग-रूप बनाया तो सबसे उत्तम बनाया, अधिकाधिक इनाम व पुरस्कार तथा दया व उदारता से समृद्ध किया।

सभी बंदों पर उस महानतम व सर्वोच्च रब का एक महा उपकार यह भी है कि उस ने उनकी ओर शुभ सूचना देने वाले तथा भयभीत करने वाले रसूलों को अवतरित किया, चुनाँचे अपने उपकार के द्वारा ईमान वाले वलियों (मित्रों) को मुक्ति प्रदान की, उन्हें सीधे मार्ग की हिदायत दी तथा जहन्नम से बचा लिया।

﴿لَقَدْ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا۟ مِن قَبْلُ لَفِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ١٦٤﴾

अनुवादः (अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया है कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन के सामने उस (अल्लाह) की आयतें सुनाता है, और उन्हें शुद्ध करता है तथा उन्हें पुस्तक (क़ुरआन) और हिकमत (सुन्नत) की शिक्षा देता है, यद्यपि वह इस से पहले खुले कुपथ में थे)। सूरह आले इमरानः 164।

﴿بَلِ ٱللَّهُ يَمُنُّ عَلَيۡكُمۡ أَنۡ هَدَىٰكُمۡ لِلۡإِيمَٰنِ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ﴾

अनुवादः (बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखाई है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो)। सूरह हुजुरातः 17।

उसका उपकार ही है कि वह हर युग में दुर्बलों को अहंकारी व अभिमानी तथा उद्दंडों एवं उपद्रवियों से सुरक्षित रखता है, चुनाँचे उन पर अमन, शांति एवं शक्ति तथा प्रभुत्व प्रदान करने के द्वारा उपकार करता हैः

﴿وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى ٱلَّذِينَ ٱسۡتُضۡعِفُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَنَجۡعَلَهُمۡ أَئِمَّةٗ وَنَجۡعَلَهُمُ ٱلۡوَٰرِثِينَ ٥﴾

अनुवादः (हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दें उन्हीं को प्रमुख एवं बना दें उन्हीं को उत्तराधिकारी)। सूरह क़सस़ः 5।

❒ भाग्यशाली लोगः

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह शुक्रिया, धन्यवाद एवं इबादत व पूजा के सबसे अधिक योग्य है, मोमिनों पर उसकी नियामत सदा के लिये है जो जन्नत में प्रवेश करने तक अनवरत जारी रहेगी, इस लोक में अल्लाह तआला औलिया (मित्रों) पर यह अनुग्रह व नेअमत फ़रमाता है किः उन्हें हिदायत व मार्गदर्शन देता तथा उन की सुरक्षा करता है, एवं परलोक (आख़िरत) में उन्हें जहन्नम से मुक्ति दे कर जन्नत में प्रवेश करेगा, तथा अपने सम्मानित व मुबारक मुख का दीदार करायेगा, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿قَالُوٓاْ إِنَّا كُنَّا قَبۡلُ فِيٓ أَهۡلِنَا مُشۡفِقِينَ ٢٦ فَمَنَّ ٱللَّهُ عَلَيۡنَا وَوَقَىٰنَا عَذَابَ ٱلسَّمُومِ ٢٧ إِنَّا كُنَّا مِن قَبۡلُ نَدۡعُوهُۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلۡبَرُّ ٱلرَّحِيمُ ٢٨﴾

अनुवादः (वो कहेंगेः इस से पूर्व हम अपने परिजनों में डरते थे। तो अल्लाह ने उपकार किया हम पर, तथा हमें सुरक्षित कर दिया तापलहरी की यातना से। इस से पूर्व हम वंदना किया करते थे उस की, निश्चय वह अति परोपकारी दयावान है)। सूरह तूरः 26-28।

❐ मोमिनों का तरीका ...

मोमिन जब अपने ऊपर अल्लाह तआला के उपकार का अवलोकन करता है तो उसकी बुद्धि चकित रह जाती है, उसके दिल में प्रसन्नता व ख़ुशी की लहर दौड़ जाती है, वह अपने आक़ा, मौला व स्वामी का मोहताज बंदा हो कर रह जाता है, वह केवल एक महानतम व सर्वोच्च (रब) की प्रशंसा व स्तुतिगान करता है, और यही सबसे बड़ा दरवाज़ा है जिसके द्वारा बंदा अपने रब के पास प्रवेश पाता है, जो किः रब के समक्ष आजिज़ी, विनम्रता एवं श्रद्धा अपनाना है, उससे दुआ व प्रार्थना, आशा व उम्मीद रखते हुये एवं "या मन्नान (हे उपकार करने वाले)" की निदा लगाते हुये।

तब इच्छायें पूर्ण होती हैं, प्रार्थी को अनुग्रहित किया जाता है, पापियों के पाप क्षमा किये जाते हैं, दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं, चिंता के बादल छँट जाते हैं, कैदी को रिहाई मिलती है, रोगी को निरोग प्राप्त होता है, गुमशुदा घर लौट आता है, तथा व्याकुल की व्यथा सुन ली जाती हैः

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ ٱلْأَرْضِ ۗ أَءِلَـٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾﴾

अनुवादः (कौन है जो व्याकुल की प्रार्थना को सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुःख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो)। सूरह नम्लः 62।

वो तत्व व माध्यम जिन्हें आप सौभाग्य का कारण समझते हैं यदि आप के जीवन से पूर्णतः लुप्त भी हो जायें, तब भी विश्वास रखें कि अल्लाह तआला ने उन्हें आप से इसलिये दूर कर दिया है कि वह आप के दुर्भाग्य का कारण न बनें।

❐ उपकार न जतायें!

यदि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने बंदों पर अपने उपकार का उल्लेख करते हुये अपनी ज़ात की प्रशंसा की है तो उन लोगों की निंदा भी की है जो अल्लाह पर अथवा अल्लाह के बंदों पर उपकार जताते हैं, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُل لَّا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُم بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٧﴾﴾

अनुवादः (वो उपकार जता रहे हैं आप के ऊपर कि वो इस्लाम लाये हैं, आप कह दें कि उपकार न जताओ मुझ पर अपने इस्लाम का, बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखाई है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो)। सूरह हुजुरातः 17।

अल्लाह तआला ने हमें सावधान किया है कि हम अपने दान-पुण्य पर उपकार न जतायें, क्योंकि इस से दान-पुण्य व स़दक़ा-ख़ैरात व्यर्थ हो जाते हैं:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ﴾

अनुवादः (हे ईमान वालो! उपकार जता कर तथा दुःख दे कर, अपने दानों को व्यर्थ न करो)। सूरह बक़रहः 264।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उपकार जताने से रोका है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद हैः "तीन लोग ऐसे हैं जिन की ओर अल्लाह तआला क़यामत (प्रलय) के दिन नहीं देखेगा, और न उन्हें गुनाहों से पाक व पवित्र करेगा, एवं उन के लिये कष्टप्रद यातना हैः वह व्यक्ति जो कोई भी चीज़ (किसी को) देता है तो उपकार जताता है, जो झूठ बोल कर अपना सामान बेचता है, तथ जो अहंकार व अभिमान करते हुये तहमद (टख़ने से) नीचे लटकाता है"। (मुस्लिम)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि, आप ने फ़रमायाः "उपकार जताने वाला, माता-पिता की अवज्ञा करने वाला तथा मदिरापान का व्यसनी, ये सभी जन्नत में प्रवेश नहीं पा सकते"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे नसई ने रिवायत किया है)।

أَفسَدتَ بالمنِّ ما أَو لَيتَ من نِعَمٍ — ليسَ الكَرِيمُ إذا أَسدَى بِمَنَّانِ

अनुवादः तू ने जो भी उपकार किये, उपकार जता कर सब को व्यर्थ कर दिया, सख़ी व दाता वह नहीं जो इनाम व उपकार के पश्चात उपकार जताये।

यही कारण है कि नेक, बुज़ुर्ग व साधु-संत लोग परस्पर एक दूसरे को नस़ीह़त व उपदेश दिया करते थे किः तुम जब किसी व्यक्ति को कुछ दो तथा तुम को लगे कि तुम्हारा सलाम करना उस को बुरा लगता है तो उस से सलाम करने से भी बचा करो।

कुलीन, सज्जन एवं सभ्य लोग जब किसी के साथ कोई उपकार करते हैं तो उसे भूल जाते हैं, किंतु उसके साथ यदि कोई भलाई करता है तो वो उसे कभी नहीं भूलते।

وما تَخْفَى المكَارِمُ حيثُ كانَت   ولا أهلُ المكَارِمِ حيثُ كانُوا

अनुवादः न तो शिष्टाचार व सद्व्यवहार गुप्त नहीं रहते, चाहे जहाँ कहीं भी हों, और न ही सम्मानित व दानवीर लोग छिप्त रहते हैं चाहे वो जहाँ कहीं भी रहें।

हे अल्लाह! हे उपकार करन वाले मन्नान! हमारे ऊपर यह उपकार कर कि हमारी स्थिति दुरुस्त कर दे, हमारे वंश को सुधार दे, तथा हमें अच्छा अंत प्रदान कर।

(94)

(अल-जवाद जल्ल जलालुहु)

जब आवश्यकतायें आप को अपने घेरा में ले लें, आपदायें आप पर आक्रमण कर दें, दुःख दर्द आप के आँगन में अपना डेरा डाल दे, ऋण का बोझ आप के लिये असहनीय हो जाये, आजीविका का द्वार आप के लिये तंग हो जाये, तो आप "जवाद, अर्थातः सख़ी व दाता" परवरदिगार की ओर पलटिये, जो दुःख दर्द को दूर करने वाला, रंज क्षोभ को समाप्त करने वाला एवं व्याकुल व व्यथित की प्रार्थना को स्वीकार करने वाला है।

सुनन तिर्मिज़ी में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला जवाद, अर्थातः सख़ी व दाता है, तथा सख़ावत व दानवीरता को प्रिय रखता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

शैख़ सअदी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "अरबी भाषा के शब्द, "जवाद", का अर्थ यह है किः वह व्यापक तथा वृहद रूप से, सख़ी व दाता है, जिसकी दानवीरता समस्त ब्रह्माण्ड को अपनी परिधि में लिये हुई है, उसने अपन फ़ज़्ल, दया व दान तथा विभिन्न प्रकार की नियामतों से सारे संसार को पाट रखा है"।

जो लोग मन की भाषा अथवा ज़ुबान की भाषा से माँगते हैं, उन्हें विशेष रूप से अपनी सख़ावत, उदारता व दानवीरता से अनुग्रहित करता है, यद्यपि वो नेक हों अथवा बद, सज्जन हों अथवा दुष्ट, मुस्लिम हों अथवा काफिर, जो भी अल्लाह तआला से माँगता है अल्लाह तआला उसे अवश्य अनुग्रहित करता है, वह जो माँगता है उससे वह नवाज़ता है, निःसंदेह वह महानतम व सर्वोच्च उपकारी व मेहरबान हैः

﴿وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ ٱللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْـَٔرُونَ ۝٥٣﴾

अनुवादः (तुम्हें जो भी सुख-सुविधा प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है, फिर जब तुम्हें दुःख पहुँचता है तो उसी को पुकारते हो)। सूरह नह़लः 53।

❑ हमारा रब कितना महा दानवीर, दाता व उदार है!

मख़लूक़ात (मानव) उसकी अवज्ञा करती हैं, और वह (अल्लाह) उनकी निगरानी करता है, उनके बिस्तरों पर (और उन के घरों में) उनकी ऐसी सुरक्षा करता है कि मानो उन्होंने उसकी अवज्ञा की ही न हो, वह उनकी ऐसी देख-भाल करता है कि मानो उन्होंने कोई पाप

किया ही नहीं है, वह पापी एवं कुकर्मी को भी अपनी कृपा व अनुग्रह से नवाज़ता है, तथा तौबा करने वालों पर कृपा करता है।

वह सभी बंदों से बेनियाज़ व निःस्पृह है, इसके बावजूद वह अपनी नियामत व नवाज़िश, दयालुता व दानवीरता तथा मोहलत के द्वारा उन से अपना प्रेम प्रकट करता है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के कोष भरे हुये हैं, ख़र्च एवं व्यय से उन में कोई कमी नहीं होती है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है, आप ने फ़रमायाः

يَدُ اللهِ مَلْأَى لاَ تَغِيضُهَا نَفَقَةٌ سَحَّاءُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ، وَقَالَ: أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ، فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِي يَدِهِ،

"अल्लाह तआला का हाथ भरा हुआ है, दिन-रात तथा लगातार व्यय करने से भी उसमें कोई कमी नहीं आती, तुम ने देखा नहीं कि जब से अल्लाह तआला ने आकाश व धरा को उत्पन्न किया है निरंतर खर्च किये जा रहा है, इसके बावजूद जो कुछ उस के हाथ में है उस में कोई कमी नहीं आती"। (इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है, तथा उपरोक्त शब्द उसी के हैं, इसके अतिरिक्त मुस्लिम ने भी इसे रिवायत किया है)।

हदीस़ में "سَحَّاءُ, सह्हाअ" का शब्द आया है जिसका अर्थ हैः सतत बरसने वाला।

तथा "غيض, ग़ैज़" का अर्थ हैः कमी आना।

जो बंदे अल्लाह तआला से अपनी उम्मीद व आशा रखते हैं तथा उससे माँगते हैं, अल्लाह तआला उन्हें प्रिय रखता है, ताकि उन पर और अधिक इनाम, पुरस्कार व दान की बरखा बरसाये, उसकी सख़ावत व दानवीरता की पराकाष्ठा यह है किः वह उस व्यक्ति पर क्रोधित होता है जो उससे माँगता नहीं है। सुनन तिर्मिज़ी में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जो अल्लाह तआला से नहीं माँगता अल्लाह तआला उससे क्रोधित व अप्रसन्न होता है"। (यह हदीस़ हसन है)। एक दूसरी हदीस़ में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला के निकट दुआ से बढ़ कर कोई चीज़ सम्मानित नहीं है"। (यह हदीस़ हसन है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है)।

وهُو الجْوَادُ فَجُودُه عَمَّ الوُجُودَ   جَمِيعَهُ بِالفَضلِ والإِحسَانِ
وهُوَ الجْوَادُ فلا يُخَيِّبُ سائِلًا   ولو أَنَّهُ مِن أُمَّةِ الكُفرَانِ

अनुवादः वह सख़ी व दाता है, उसकी दानवीरता व उदारता, तथा फ़ज़्ल, एहसान व उपकार सभी प्राणियों के लिये आम व व्यापक हैं। वह दानी व उदार है, किसी माँगने वाले को निराश नहीं करता, चाहे वह काफिर समुदाय से ही क्यों न हो।

ईमान, यक़ीन एवं विश्वास वाला बंदा वह है जोः सख़ावत व दानवीरता की विशेषता से विशेषित हो, तथा अल्लाह तआला की सख़ावत, दानशीलता एवं उदारता का इच्छुक व अभिलाषी हो, और यह विश्वास रखता हो कि अल्लाह तआला जो सख़ी, दाता व उदार है वह कई गुणा बढ़ा कर उस पर अपने उपकार व दानवीरता की बरखा बरसायेगाः

﴿مَّن ذَا ٱلَّذِي يُقۡرِضُ ٱللَّهَ قَرۡضًا حَسَنٗا فَيُضَٰعِفَهُۥ لَهُۥ وَلَهُۥٓ أَجۡرٞ كَرِيمٞ ١١﴾

अनुवादः (कौन है जो ऋण दे अल्लाह को अच्छा ऋण? जिसे वह दुगुना कर दे उस के लिये और उसी के लिये अच्छा प्रतिदान है)। सूरह ह़दीदः 11।

﴿وَعۡدَ ٱللَّهِۖ لَا يُخۡلِفُ ٱللَّهُ وَعۡدَهُۥ﴾

अनुवादः (यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन के)। सूरह रूमः 6।

हमारे नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सभी प्राणियों में सर्वाधिक सख़ी, दानी व उदार थे, आप ख़ैर, भलाई व अच्छाई में सबसे आगे थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दानशीलता तीव्रतम घोड़े से भी अधिक थी, आप की दानवीरता सबसे अधिक रमज़ान में बढ़ जाया करती थी।

स़ह़ीह़ मुस्लिम में आया है किः "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से, इस्लाम लाने पर जो चीज़ भी माँगी जाती आप वह प्रदान कर देते, कहाः एक व्यक्ति आप के पास आया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो पहाड़ों के बीच (चरने वाली) बकरियाँ उसे दे दीं, वह व्यक्ति अपने समुदाय की ओर लौट कर गया और कहने लगाः मेरे समुदाय (के लोगों)! मुसलमान हो जाओ, निःसंदेह मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतना (अधिक) प्रदान करते हैं कि निर्धनता व दरिद्रता का अंदेशा तक नहीं रखते"। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जब भी कोई चीज़ माँगी गई तो आप ने "ना" कभी नहीं कहा।

تَرَاهُ إِذا مَا جِئتَهُ مُتَهَلِّلًا　　كَأَنَّكَ تُعطِيهِ الَّذِي أَنتَ سائلُه

अनुवादः जब आप उन से कुछ माँगने आयें तो आप उन को ऐसा पायेंगे कि मानो आप ही उन को वह चीज़ देने आये हों जो आप उन से माँग रहे हों।

❒ किसी ने कहा है किः

सख़ावत व दानवीरताः हर दोष पर पर्दा डाल देती है।

تَستَّر بالسَخَاءِ فَكُلُّ عَيبٍ   يُغَطِّيهِ كما قِيلَ السَّخاءُ

अनुवादः सख़ावत एवं दान के द्वारा अपना पर्दा व भ्रम बनाये रखिये क्योंकि कहा गया है कि सख़ावत एवं दान हर ऐब को छुपा देती है।

لَو لَا الْمَشَقَّةُ سادَ الناسُ كُلُّهُم   الجُـودُ يُفقِر والإقدامُ قَتَّالٌ

अनुवादः यदि कठिनाई नहीं होती तो सारे लोग ही सरदारी करने लग जाते, सख़ावत एवं दानवीरता (लोगों की दृष्टि में) निर्धनता का कारण तथा पहल (करना) जानलेवा होती है।

हे अल्लाह! हे दानी व सख़ी! हमारे ऊपर अपनी बरकतों व अनुग्रहों की बरखा बरसा।

(अल-रफ़ीक़ जल्ल जलालुहु)

स़ह़ीह़ैन में आया है कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और कहाः "السَّامُ عَلَيْكُمْ, अस्सामु अलैकुम" (अर्थातः तुम्हें मृत्यु आये), आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान किया है कि मैं इसका अर्थ समझ गई तथा मैंने प्रतिउत्तर देते हुये कहा किः "व अलैकुमुस्साम वल्लानत" (وَعَلَيْكُمْ السَّامُ وَاللَّعْنَةَ, अर्थातः तुम्हें मृत्यु आये एवं धिक्कार हो तुम पर), कहती हैं कि इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ठहरो, हे आइशा! अल्लाह तआला सभी मामलों में रिफ़्क़, नम्रता एवं कोमलता को पसंद करता है, मैंने कहा किः हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! क्या आप ने सुना नहीं कि उन्होंने क्या कहा था, नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया किः मैंने उसका उत्तर दे दिया था कि "وَعَلَيْكُمْ, व अलैकुम" (अर्थातः और तुम्हें भी)।

صَفُوحٌ عن الإجرامِ حتىٰ كأنَّه   مِن العَفوِ لم يَعرِف مِنَ النَّاسِ مُجْرِمًا

अनुवादः वह हर जुर्म को क्षमा कर देता है, वह इतना क्षमा करता है कि मानो उसकी दृष्टि में कोई मुजरिम ही न हो।

हमारे प्रियतम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस ज़ात ने इस महान नैतिकता व शिष्टाचार से अनुग्रहित किया वह "रफ़ीक़" (अर्थातः स्नेही, दयालु व मेहरबान अल्लाह) है, जो दुःख दर्द को दूर करता, रोगी को निरोग करता, आज़माइश व परीक्षा को समाप्त करता, गुमशुदा को वापस लाता, कैदी को रिहाई दिलवाता तथा टूटे हुये को जोड़ता एवं सहारा देता है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला रफ़ीक़ (मेहरबान, दयालु व स्नेही) है तथा रिफ़्क़ (मेहरबानी, दयालुता एवं स्नेह) को प्रिय रखता है"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार अपनी तक़दीर (भाग्य), निर्णय एवं सभी अफ़आल (कर्मों) में रफ़ीक़, मेहरबान, स्नेही एवं दयालु है।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपने अह़काम (धार्मिक प्रावधान), आदेश एवं धर्म व शरीअत में रफ़ीक़, मेहरबान, स्नेही एवं दयालु है।

अफ़आल (कर्म) में उसकी रिफ़्क़, मेहरबानी व नम्रता यह है किः उस महानतम व सर्वोच्च ने अपनी हिकमत (तत्वदर्शिता) एवं मेहरबानी के कारण समस्त सृष्टि को क्रमबद्ध तरीके से उत्पन्न किया, हालाँकि वह एक ही बार बल्कि एक क्षण में उन्हें उत्पन्न करने में सक्षम था।

हमारा महानतम व सर्वोच्च पालनहार अपनी शरीअत (धार्मिक प्रावधान) में रफ़ीक़ व मेहरबान हैः चाहे अवामिर (आदेशों) का मामला हो अथवा नवाही (वर्जनाओं) का, वह अपने बंदों पर कभी भी उनकी क्षमता से अधिक का कार्यभार नहीं डालता, तथा न ही कष्टकारी व कठिन अहकाम (धार्मिक प्रावधानों) पर बंदों की पकड़ करता है, बल्कि उन पर रिफ़्क़, मेहरबानी, दया व स्नेह करते हुये उन के लिये ऐसे अहकाम में छूट दे रखी है, बंदों पर सहसा व अचानक सभी अहकाम लागू नहीं करता वरन क्रमबद्ध ढ़ंग से एक स्थिति से दूसरी स्थिति की ओर स्थानांतरण करता है, ताकि हृदय उससे परिचित एवं मन-मस्तिष्क उसे स्वीकार करने के लिये तैयार हो जाये।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की दया, मेहरबानी व स्नेह है किः वह पापियों को मोहलत देता है, उन्हें शीघ्र ही दण्ड नहीं देता ताकि वह अल्लाह तआला की ओर पलट कर आजायें तथा अपने पापों का प्रायश्चित्त करें।

उसकी मेहरबानी व दया है किः उस ने ख़ैर, भलाई एवं अच्छाई के सभी मार्ग व माध्यम प्रशस्त कर दिये, और वह उन मार्गों व माध्यमों के द्वारा बंदों पर फ़ज़्ल, एहसान व उपकार करता है, सबसे बड़ी आसानी व सरलता यह है कि उस नेः अपनी किताब को याद व कंठस्थ करना सहज व सरल कर दिया हैः

﴿وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝١٧﴾

अनुवादः (और हमने सरल कर दिया है क़ुरआन को शिक्षा के लिये, तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?)। सूरह क़मरः 17।

وهُوَ الرَّفِيقُ يُحِبُّ أَهلَ الرفقِ بَل   يُعطِيهِم بِالرِّفقِ فَوقَ أَمَانِ

अनुवादः वह रफ़ीक़, मेहरबान, दयालु व स्नेही है तथा रिफ़्क़, मेहरबानी, दयालुता व स्नेह करने वालों को प्रिय रखता है, अपितु रिफ़्क़, मेहरबानी, दयालुता व स्नेह के बदले उन्हें उन की इच्छा व कामना से बढ़ कर नवाज़ता है।

❐ रफ़ीक़, मेहरबान, दयालु व स्नेही लोगः

जो व्यक्ति यह जान ले कि अल्लाह तआला रफ़ीक़, मेहरबान, दयालु व स्नेही है, अल्लाह तआला से उसका प्रेम और प्रगाढ़ हो जाता है, इसके अतिरिक्त आदर सत्कार, प्रशंसा व स्तुतिगान तथा शुक्र व धन्यवाद अदा करने का भाव और अधिक होने लगता है, अल्लाह तआला अपने महान नामों को पसंद करता एवं उनसे विशेषित बंदों को प्रिय रखता है -सिवाय उन नामों के जिन को वह अपने बंदों के लिये अप्रिय रखता है- चुनाँचे अल्लाह तआला रहीम व दयालु है तथा रहम व दया करने वालों को प्रिय रखता है, वह करीम व दाता है तथा करम व दान करने वालों को प्रिय रखता है, वह रफ़ीक़ व मेहरबान है तथा रिफ़्क़ व मेहरबानी को प्रिय रखता है।

इस अख़लाक़ व आचरण (रिफ़्क़ व नम्रता) के सर्वाधिक योग्य अम्बिया -ए- किराम अलैहिमुस्सलाम थे, जिनमें शीर्ष पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, लोगों के साथ आप ने जो जीवन बिताया वह रिफ़्क़, मेहरबानी, दयालुता व स्नेह से परिपूर्ण था, आप ने अपने आप के लिये कभी भी (किसी पर) क्रोध नहीं किया, न लोगों की मानवी दुर्बलताओं व कोताहियों पर आप का हृदय कठोर हुआ, न आप ने इस संसार की कोई वस्तु अपने लिये आरक्षित की, बल्कि जो भी आप के हाथ में होता, अति दयालुता, उदारता, व सख़ावत के साथ लोगों को दे देते, आप की सहनशीलता, एहसान व उपकार तथा दया, कृपा व स्नेह से सभी लोगों ने लाभ उठाया, जो व्यक्ति भी आप की सभा में बैठा वह आप का ही हो कर रह गया, केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्नेह, प्यार, नम्रता एवं दानवीरता तथा दयालुता देख कर।

एक देहाती आता है और मस्जिद के एक कोने में पेशाब करने लगता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम उठते हैं तथा कहते हैं किः क्या कर रहे हो? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं किः "इसे -बीच में- मत रोको, इसे छोड़ दो", जब वह पेशाब से फ़ारिग़ होता है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं किः "ये मस्जिदें इस प्रकार से पेशाब करने अथवा किसी और तरह की गंदगी के लिये नहीं -बनाई गई- हैं, ये तो बस अल्लाह तआला के ज़िक्र (स्मरण, जाप), नमाज़ एवं क़ुरआन की तिलावत (पाठ) के लिये हैं। (मुस्लिम)।

अल्लाह तआला रफ़ीक़, मेहरबान, दयालु व स्नेही है तथा रिफ़्क़, मेहरबानी, दयालुता व स्नेह करने वालों को प्रिय रखता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है, आप ने फ़रमायाः "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल रिफ़्क़, स्नेह एवं मेहरबानी की विशेषता से

विशेषित है, उसे नम्रता एवं मेहरबानी प्रिय है, वह उस पर ऐसी चीज़ें प्रदान करता है जो कठोरता एवं निष्ठुरता पर नहीं देता"। (मुस्लिम)।

अम्बिया -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बाद जो इस विशेषता के सर्वाधिक योग्य हैं वह बादशाह, जिम्मेवार शासक एवं वह उलेमा तथा धर्म प्रचारक हैं जो लोगों को अल्लाह की ओर बुलाते हैं, इसी प्रकार से पिता लोग भी इसके सर्वाधिक योग्य हैं। क्योंकि लोग पीड़ा, दर्द एवं रंज से दुःखी होते हैं, उन्हें ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो उन्हें सांत्वना व दिलासा दे, उनके आँसू पोंछे, न कि उन के संग कठोरता व निष्ठुरता वाला व्यवहार करे। उन्हें दयालु व्यक्ति के शरण की, अति उत्तम निगरानी की, विनम्र स्वभाव की, हर्षोल्लास की, तथा उदारमने एवं असीमित स्नेह की आवश्यकता होती है ... ।

❒ इस सदगुण में आप की भागेदारी ...

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स़ह़ीह़ ह़दीस़ है, आप ने फ़रमायाः "जिसको नरमी व नम्रता दी गई, उस को लोक परलोक की ख़ैर, भलाई व अच्छाई से नवाज़ दिया गया तथा रिश्ता-नाता जोड़ना, शिष्टाचार एवं पड़ोसी के संग अच्छा व्यवहार करना (इत्यादि मामले), घरों (एवं क़बीलों) को आबाद करते, बसाते एवं आयु में वृद्धि करते हैं"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अह़मद ने "मुसनद" में रिवायत किया है)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फ़रमायाः "जब अल्लाह तआला किसी परिवार वाले के साथ ख़ैर व भलाई का इरादा करता है तो, उनके अंदर विनम्रता, नरमी एवं मेहरबानी दाख़िल कर देता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अह़मद ने "मुसनद" में रिवायत किया है)।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान हैः "नम्रता व मेहरबानी जिस चीज़ में भी होती है उस को सुंदर व सुशोभित बना देती है और जिस चीज़ से भी नम्रता व मेहरबानी निकाल दी जाती है उसे कुरूप व अशोभित कर देती है"।

यही कारण है कि मख़लूक़ (प्राणी) की दृष्टि में सर्वाधिक घृणित व्यक्ति वह होता है जो बदज़ुबान एवं कठोर हृदय हो, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ ٱلْقَلْبِ لَٱنفَضُّوا۟ مِنْ حَوْلِكَ﴾

अनुवादः (और यदि आप अक्खड़ तथा कठोर हृदय होते तो वो आपके पास से बिखर जाते)। सूरह आले इमरानः 159।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “जिस व्यक्ति को नम्रता से वंचित कर दिया जाये वह ख़ैर व भलाई से वंचित कर दिया जाता है”। (मुस्लिम)।

हे अल्लाह! हम तुझ से तेरे महान नाम “अल-रफ़ीक़” (अर्थातः स्नेही, दयालु व मेहरबान) के वसीले व हवाले से दुआ करते हैं कि तू हम पर नरमी, दया व मेहरबानी कर एवं हमारे भलाई के सभी कार्य को सरल व सहज कर दे। आमीन।

(96)

(अल-सय्यिद जल्ल जलालुहु)

सुनन अबू दाऊद में अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि:"मैं बनू आमिर के प्रतिनिधि मंडल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया, तथा हमने कहाः

أَنْتَ سَيِّدُنَا، فَقَالَ: «السَّيِّدُ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى»، قُلْنَا: وَأَفْضَلُنَا فَضْلًا، وَأَعْظَمُنَا طَوْلًا، فَقَالَ: «قُولُوا بِقَوْلِكُمْ، أَوْ بَعْضِ قَوْلِكُمْ، وَلَا يَسْتَجْرِيَنَّكُمُ الشَّيْطَانُ»

"आप हमारे सैय्यिद (अधिपति) हैं तो आपने फरमायाः सैय्यिद तो अल्लाह तआला है, हमने कहाः आप हम सब में सब से उत्तम तथा हम में सर्वाधिक कृपालु हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः इस प्रकार की (जायज़ और उचित) बात कहा करो, और ध्यान रहे कि शैतान कहीं तुम्हें अपने फंदे में न फंसाले"।

«لَا يَسْتَجْرِيَنَّكُمُ» का अर्थ है किः कहीं शैतान तुम्हें बहका कर के वहाँ तक न पहुँचा दे कि तुम मुन्कर (बुरी बात) कहने लगो।

अरबी शब्दकोष के अनुसार "सय्यिद" (अर्थातः आक़ा व स्वामी) उसे कहते हैं जो सहनशीलता व बुर्दबारी, धन-सम्पदा, उच्चता व बुलंदी, तथा लाभ व भलाई पहुँचाने में दूसरे से उत्तम व श्रेष्ठ हो, अपना धन अपने अधिकारों में व्यय करता हो, "सय्यिद" (अर्थातः आक़ा व स्वामी) उस को भी कहा जाता है जिस पर क्रोध अपना वर्चस्व व प्रभुत्व स्थापित नहीं कर पाता, "सय्यिद" (अर्थातः आक़ा व स्वामी) उसे भी कहा जाता है, जोः करीम व दाता हो, बादशाह व शासक हो तथा जिम्मेवार व अभिभावक हो।

दास का "सय्यिद" उस का स्वामी होता है, तथा महिला का "सय्यिद" उसका पति होता है, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا ٱلْبَابِ﴾

अनुवादः (दरवाज़ा के पास ही महिला का पति दोनों को मिल गया)। सूरह सूसुफ़ः 25।

अरबी भाषा के शब्द "السُّؤْدَدُ, सुअदद" का अर्थ होता हैः सरदारी, शराफ़त, कुलीनता एवं उच्चता, प्रत्येक वस्तु का सय्यिद वह है जो सबसे कुलीन, सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ हो।

कौन है जो अपनी सरदारी में कमाल व पूर्णता के पद पर विराजमान हो सकता है सिवाय महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के?!

❒ अल्लाह तआला के महान नाम "अल-सय्यिद (स्वामी)" की शीतल छाया में:

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार ही वह सय्यिद (सरदार, स्वामी) है जो अपनी सरदारी व स्वामित्व में कमाल व पूर्णता के पद पर आसीन है, वह कुलीन, शरीफ़, सज्जन एवं सर्वोच्च है जो अपनी शराफ़त में कमाल व पूर्णता के शिखर पर विराजमान है, वह महान व अज़ीम है जो अपनी महानता व अज़मत में सर्वोच्च है, वह सहनशीलता व उदराता की पराकाष्ठा पर है, वह बेनियाज़ व निस्पृह है जो अपनी बेनियाज़ी व निस्पृहता में मुकम्मल व पूर्ण है, वह जब्बार (महाशक्तिशाली) है जो अपनी जबरूत (शक्ति व बल) में सम्पूर्ण है, वह ज्ञानी है जो अपने ज्ञान में पूर्ण व मुकम्मल है तथा ऐसा ह़कीम (तत्वज्ञ) है जो अपनी ह़िकमत व तत्वदर्शिता के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह सय्यिद (स्वामी, सरदार) है जो शराफ़त, सम्मान, सर्वोच्चता एवं सरदारी के सभी प्रकारों में पूर्ण व मुकम्मल है।

यह महानतम व सर्वोच्च (पालनहार) की वो विशेषतायें हैं जिन में कोई उसका शरीक व साझी नहीं, और न कोई प्राणी उन विशेषताओं को उस से छीन सकता है।

وهُو الإلهُ السيِّدُ الصَّمدُ الَّذِي صَمَدَتْ إليهِ الخَلقُ بالإِذعانِ
الكامِلُ الأوصافِ من كُلِّ الوُجُوه كَمالُه ما فِيهِ من نُقصَانِ

अनुवादः वह माबूद व उपास्य, सय्यिद व सरदार तथा बेनियाज़ व निस्पृह (परवरदिगार) ऐसा है कि समस्त प्राणी आजिज़ी, पराधीनता व विवशता के साथ उसकी ओर पलट कर आते हैं। वह चहुँ ओर से अपनी विशेषताओं में कामिल व पूर्ण है, उसके कमाल व पूर्णता में किसी प्रकार का कोई दोष व त्रुटि नहीं है।

समस्त सृष्टि उस महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार के बंदे हैं, वो सभी उसके मोहताज हैं, यद्यपि वो फ़रिश्ते हों, मानव हों अथवा जिन्नात (दानव), कोई भी उस से बेनियाज़ व निस्पृह नहीं, वो समस्त उसके करम, उदारता व दानवीरता, लुत्फ़, मेहरबानी व स्नेह तथा

रिआयत, निगरानी व संरक्षण के मोहताज हैं, इस लिये उस महानतम व सर्वोच्च, जल्ल जलालुहु (अल्लाह) का यह अधिकार है कि वह सय्यिद (स्वामी व सरदार) हो, एवं लोगों के ऊपर यह अनिवार्य है कि वो उसे इस नाम से पुकारें।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह वह है जो समस्त ब्रह्माण्ड में हेर-फेर करने का अधिकार रखता है, उसका कोई शरीक व साझी नहीं है।

वही महानतम व सर्वोच्च अल्लाह इस बात का पात्र है कि केवल उसी की इबादत व पूजा की जाये, उसी के लिये आजिज़ी, पराधीनता, विनम्रता एवं श्रद्धा अपनाई जाये, उसका कोई भागीदार नहीं।

वही सय्यिद, माबूद एवं उपास्य है, उसका कोई साझीदार नहीं:

﴿قُلْ أَغَيْرَ ٱللَّهِ أَبْغِى رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ﴾

अनुवादः (आप उन से कह दें किः क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और पालनहार की खोज करूँ? जब्कि वह (अल्लाह) प्रत्येक चीज़ का पालनहार है)। सूरह अनआमः 164।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं किः "(क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई) उपास्य व माबूद खोजूँ?!"।

❒ गलत विचार!

संभव है कि इंसान को धन-सम्पदा मिल जाये, संतान व घर परिवार से लाभांवित हो जाये, प्रताप व वैभव का स्वामी हो जाये, अथवा उच्च पद व स्थान पर पदासीन हो जाये, बड़ी से बड़ी सरदारी मिल जाये, विशाल साम्राज्य का अधिपति हो जाये, बहुत संभव है कि उसके आस-पास दासों व चाकरों का हुजूम हो, सेना उसे अपने घेरा में ले कर चलती हो, फौज उसकी सुरक्षा में चाक-चौबंद हो, लोग उसके समक्ष शीश नवाते हों, समुदाय उसके सामने पराधीनता स्वीकार करते हों, चुनाँचे वह इस संसार में सरदारी के उच्च स्थान पर विराजमान हो, किंतु यह त्रुटि पूर्ण एवं नष्ट हो जाने वाली है।

خَدَعَتْهُم الأَحلامُ فِي سِنةِ الكَرَى　　　ما أَكذَبَ الأحلامَ والتأويلا!

अनुवादः निद्रा की गोद में स्वप्न ने उन के साथ छल किया, स्वप्न एवं उसकी ताबीर कितनी झूठी प्रमाणित हुई!

जो व्यक्ति इस बात पर विश्वास रखता हो कि अल्लाह तआला ही वास्तविक सय्यिद (स्वामी, सरदार) है, तो उसका दिल केवल उस महानतम व सर्वोच्च से जुड़ा रहेगा, उस जुड़ाव में भय, आशा, सहायता की इच्छा एवं तवक्कुल व भरोसा शामिल होगा, क्योंकि वही (अल्लाह) बंदों के मामलों में हेर-फेर करता है, प्रत्येक प्राणी की पेशानी व ललाट उसी के हाथ में है, एवं सभी बंदे उसी के मोहताज हैं:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ أَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ إِلَى ٱللَّهِ ۖ وَٱللَّهُ هُوَ ٱلْغَنِىُّ ٱلْحَمِيدُ ۝١٥﴾

अनुवादः (हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह के, तथा अल्लाह ही निःस्वार्थ प्रशंसित है)। सूरह फ़ातिरः 15।

अतः अल्लाह, अकेले व तंहा, आक़ा व सय्यिद तथा बेनियाज़ व बेपरवाह परवरदिगार के सिवा किसी अन्य के समक्ष आजिज़ी, पराधीनता एवं विविशत नहीं अपनाई जा सकती।

❒ हे गणमान्य सरदार लोग!

मानव की दृष्टि में सरादारी के स्तंभ व आधार ये हैं: आदर व सत्कार, शराफ़त व कुलीनता, सर्वोच्चता व बुलंदी, अति प्रसिद्धि, ये वो गुण एवं विशेषतायें हैं जो केवल अल्लाह तआला का आज्ञापालन कर के ही प्राप्त की जा सकती हैं, यही कारण है कि अम्बिया एवं औलिया ने (अपने समुदाय की) सरदारी की तथा वो समस्त लोगों के मध्य अग्रणी एवं विशिष्ट थे।

परंतु जो अल्लाह तआला से दूर हो, उसके साथ कुफ्र करता हो, तो ऐसे व्यक्ति को न तो आदर सत्कार मिल सकता है और न ही वह सरदारी के योग्य है, और संयोगवश उसे सांसारिक सरदारी मिल भी जाये तो यह झूठी एवं क्षणिक सरदारी है।

यही कारण है कि मुनाफ़िक़ को सय्यिद (स्वामी, आक़ा, सरदार) कहने को वर्जित किया गया है, अबू दाऊद ने रिवायत किया है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं किः "किसी मुनाफ़िक़ को सय्यिद (स्वामी, आक़ा, सरदार) कह कर मत पुकारो, इसलिये कि यदि वह सय्यिद हुआ तो तुम ने अपने रब को अप्रसन्न कर दिया"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

❒ सय्यिद (स्वामी, आक़ा, सरदार) की परिधि व दायराः

मख़लूक़ (प्राणी) के लिये सय्यिद शब्द का प्रयोग करना जायज़ व उचित है, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने यह़्या अलैहिस्सलाम के बारे में इर्शाद फ़रमाया हैः

﴿وَسَيِّدًا﴾ अनुवादः (वह सरदार हैं)। सूरह आले इमरानः 39।

शफ़ाअत (सिफ़ारिश, अभिस्तावना) वाली ह़दीस़ में आया है किः "क़यामत के दिन मैं समस्त इंसानों का सरदार रहूँगा, तथा मुझे इस पर तनिक भी गर्व व घमंड नहीं है"। (मुस्लिम)।

इसके अतिरिक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में फ़रमायाः "खड़ो हो कर अपने सय्यिद (सरदार) का स्वागत करो"। (बुख़ारी)।

इन दोनों ह़दीस़ों तथा उस ह़दीस़ के मध्य जिसमें है कि "सय्यिद (वास्तविक सरदार) तो अल्लाह तआला है" (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है), कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि मोमिनों के निकट इंसानों के सरदार से अभिप्रायः उनका साम्राज्य व शासन है।

अरब कहते हैं किः अमूक हमारा सय्यिद (सरदार) है, अर्थातः हमारा जिम्मेवार व शासक है, जिनका हम आदर करते हैं।

परंतु महानतम व सर्वोच्च अल्लाह को "सय्यिद" की विशेषता से विशेषित करने का अर्थ यह है किः वह समस्त सृष्टि का मालिक व स्वामी है, तथा समस्त सृष्टि उसके भक्त एवं दास हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (इसी अर्थ का ध्यान रखते हुये, स्वयं को) इस विशेषण से विशेषित करने से रोका था जब आप को कहा गया किः आप हमारे सैय्यिद (सरदार) हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः सैय्यिद (वास्तविक अर्थों में) तो अल्लाह तआला है, ... तुम इस प्रकार की (जायज़ और उचित) बात कहा करो, और ध्यान रहे कि शैतान कहीं तुम्हें अपने फंदे में न फंसा ले (अर्थात कोई ऐसी बात कह दो जो मेरे लिये अनुचित हो)"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है)। इस ह़दीस़ में यह प्रमाण मौजूद है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तौह़ीद की सुरक्षा चहुँ ओर से की, हर प्रकार से उसे सुरक्षित कर दिया तथा शिर्क के सभी (चोर) दरवाज़े बंद कर दिये।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह अप्रिय था कि आप के समक्ष आप की प्रशंसा की जाये, हालांकि आप के प्रशंसकों ने कोई अनुचित बात नहीं कही थी, क्योंकि आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं फ़रमाया है किः “मैं आदम अलैहिस्सलाम की संतति का सरदार हूँ”। (मुस्लिम)। किंतु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (इससे रोका, केवल) इस भय से कि कहीं उन के दिल मख़लूक़ (मानव) से न जुड़ जायें तथा वो उन के समक्ष विवशता व पराधीनता न अपनाने लगें, जो कि एक अकेले महा शक्तिशाली व बलशाली अल्लाह तआला के सिवा किसी और के लिये अनुचित है।

हे अल्लाह! हम तुझ से तेरे महान नाम (अल-सय्यिद, अर्थातः स्वामी व सरदार) के वसीला व माध्यम से यह दुआ करते हैं कि तू हमारे ज़िक्र, यश व कीर्ति को बुलंद कर दे, हमारे बोझ को हल्का कर दे, निःसंदेह तू हरेक चीज़ में क़ादिर व सक्षम है।

(97)

(बदीउस्समावाति वल अर्ज़ि जल्ल जलालुहु)

“मैं इस बात से बहुत प्रभावित हूँ कि क़ुरआन में वास्तविकता को बेनकाब किया गया है!

निःसंदेह यह क़ुरआन -ए- करीम अस्तित्व के उच्चतम बिंदु से ब्रह्मांड (की सूक्ष्मता) का वर्णन करता है।

जो चीज़ हमने देखी है वह किसी मानव स्रोत से सामने नहीं आ सकती, मैंने क़ुरआन -ए- करीम पढ़ने के पश्चात अपने भविष्य को जाना, मैं इस व्यापक दृष्टिकोण पर अपने शोध की योजना बनाऊंगा”। (प्रोफ़ेसरः यूशीदी कोज़ाय)।

تِلكَ الطبيعةُ قِف بِنا يا سَارِي   حتَى أُرِيكَ بَدِيعَ صُنعِ البارِي
الأرضُ حَولَك والسَّماءُ اهتزَّتا   لرَوائِعِ الآياتِ والآثارِ
دَلَّت على مَلِكِ الملُوكِ فلم تَدَع   لأدِلةِ الفُقَهاءِ و الأَحبَارِ
مَن شَكَّ فيهِ فنَظرَةٌ فِي صُنعِهِ   تَمْحُو أثيمَ الشَّكِّ و الإنكارِ

अनुवादः हे रात्रि के यात्री! यह अल्लाह तआला की प्रकृति (स्वभाव, उत्पत्ति) है, तनिक ठहर जा कि मैं तुझे ख़ालिक़ (रचानाकार) की तख़लीक़ (रचना) के अनुपम उदाहरण दिखा सकूँ। तेरे आस-पास की ज़मीन एवं आसमान (उस की) अतुलनीय आयतों एवं निशानियों से थर्रा गये। ये निशानियाँ व आयतें राजाओं के राजा (महाराजा, के अस्तित्व) को प्रमाणित करती हैं, उनके समक्ष सांसारिक धर्मशास्त्रियों एवं प्रकांड विद्वानों की दलीलें निरर्थक हैं। जिसको (अल्लाह तआला के अस्तित्व में) संदेह हो, उसके संदेह एवं इंकार की बुराई, अल्लाह तआला की शिल्पकारी व कारीगरी में सोच-विचार करने से दूर हो जायेगी।

मानव यदि आकाशों एवं धरा की रचना पर गहन चिंतन-मनन करे तो उसे महानतम व सर्वोच्च ख़ालिक़ व रचनाकार की ओर मार्गदर्शन मिल जायेगा, वह ख़ालिक़ व रचनाकार जो स्वयं अपने विषय में फ़रमाता हैः

﴿بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ وَإِذَا قَضَىٰٓ أَمۡرٗا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ١١٧﴾

अनुवादः (वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये बस यह आदेश देता है कि "हो जा" और वह हो जाती है)। सूरह बक़रहः 117।

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह लिखते हैं किः "आकाशों एवं ज़मीन को बिना किसी पूर्व उदाहरण के अनुपम रूप में पैदा करने वाला, अस्तित्व में लाने वाला एवं उसकी रचना करने वाला (वही अल्लाह है)"।

शैख़ सअदी रहिमहुल्लाह लिखते हैं किः "﴿بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ﴾ अर्थातः आकाश व धरा को बिना किसी पूर्व उदाहरण के अति सुंदर रूप, अनुपम रचना एवं सुदृढ़ प्रबंधन एवं व्यवस्था के साथ उत्पन्न करने वाला (अल्लाह)"।

❒ बुद्धिमानों के लिये पुकार!

यदि मामला ऐसा ही है तो किस प्रकार यह दुरुस्त हो सकता है कि उसकी ओर आसमान व ज़मीन की किसी चीज़ को इस तरह समबद्ध किया जाये कि वह उसका बेटा है - अल्लाह तआला इससे पाक, पवित्र एवं अति उच्च है- बल्कि (वास्तविकता यह है कि) उन में जो कुछ भी है वो सभी उसके अविष्कार एवं रचना हैं, तथा अल्लाह के समक्ष नतमस्तक एवं उसकी उपासना में लीन रहते हैं, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह फ़रमाता हैः

﴿وَقَالُوا۟ ٱتَّخَذَ ٱللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَٰنَهُۥ ۖ بَل لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُۥ قَٰنِتُونَ ﴿١١٦﴾ بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَضَىٰٓ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾﴾

अनुवादः (तथा उन्होंने कहा किः अल्लाह ने कोई संतान बना ली, वह इस से पवित्र है, आकाशों तथा धरती में जो भी है, वह उसी का है, और सब उस के आज्ञाकारी हैं। वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये बस यह आदेश देता है कि "हो जा" और वह हो जाती है)। सूरह बक़रहः 116-117।

जब यह प्रमाणित हो गया कि आसमानों एवं धरती में जो कुछ है वह सभी उसकी ईजाद, अविष्कार एवं रचना हैं, तो यह भी प्रमाणित हो गया कि यह सभी उसके बंदे, दास एवं मिल्कियत हैं, अतः यह असंभव है कि कोई उसका पुत्र हो।

जब वास्तविकता यह है तो इंसानों के लिये अनिवार्य है कि वह उस (ख़ालिक व सृष्टि रचयिता) के आदेशों का अनुपालन करें तथा उसके द्वारा वर्जित की गयी चीज़ों से दूर रहें, न कि उस के लिये संतान एवं पत्नी होने की बात करें।

इस से बढ़ कर यह भी देखें कि अल्लाह तआला ने हमें यह आदेश दिया है कि हम ब्रह्माण्ड एवं उसकी अनुपम व अतुलनीय शिल्पकारी व कारीगरी में सोच-विचार करें, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿إِنَّ فِي خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱخْتِلَٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ لَءَايَٰتٍ لِّأُو۟لِى ٱلْأَلْبَٰبِ ١٩٠﴾

अनुवादः (वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना, और रात्रि तथा दिवस के एक के पश्चात एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (प्रतीक) हैं)। सूरह आले इमरानः 190।

समस्त ब्रह्माण्ड ईमान की दलीलों से भरी पड़ी है, तथा अपने उस ख़ालिक़ व रचयिता को इंगित करती है जो अति उत्तम सुनने वाला एवं हर चीज़ को देखने वाला है।

تَأَمَّل سُطُورَ الكَائِنَاتِ فَإِنَّهَا مِنَ المَلِكِ الأَعلَى إِلَيكَ رَسَائِل

وَقَد خُطَّ فِيهَا لَو تَأَمَّلتَ خَطَّهَا أَلا كُلُّ شيء مَا خلا الله بَاطِلُ

شُهُودٌ على فَضلِ الإلهِ ومَنِّه لسانٌ فصيحٌ صامِتٌ وهو قَائِل

अनुवादः ब्रह्माण्ड में (अल्लाह की लिखी हुई) पंक्तियों में विचार करें, क्योंकि वह सर्वोच्च बादशाह की ओर से आपके लिए संदेश हैं। यदि आप चिंतन-मनन करेंगे तो उसके अंदर आपको यह लिखा हुआ मिलेगा किः अल्लाह के सिवा हरेक चीज़ (पूज्य, माबूद, उपास्य) बातिल, मिथ्या, व निराधार है। वह अल्लाह के फ़ज़्ल, एहसान व उपकार पर गवाह है, उसकी ज़ुबान बड़ी चपल व प्रवाहशील है, किंतु वह मौन रह कर बोल रही है।

❒ ब्रह्माण्ड में सोच-विचार करें!

बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास प्रवेश करते हैं कि आप को फज्र के नमाज़ की सूचना दे सकें, सहसा क्या देखते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेटे हुये हैं तथा आप के नयन से अश्रुधारा बह रही है, वह कहते हैं किः आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इतना क्यों रो रहे हैं, हालांकि अल्लाह तआला ने आप

के अगले व पिछले सभी पाप क्षमा कर दिये हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “हे बिलाल! तुम्हारा बुरा हो! मैं क्यों न रोऊँ जब्कि आज रात मुझ पर चंद आयतें अवतरित हुई हैं, उस आदमी का नाश हो जिसने उन को पढ़ा परंतु उन में चिंतन-मनन नहीं किया, आयात (श्लोक) ये हैं:

﴿إِنَّ فِي خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱخْتِلَٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ لَءَايَٰتٍ لِّأُو۟لِى ٱلْأَلْبَٰبِ ١٩٠﴾

अनुवादः (वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना, और रात्रि तथा दिवस के एक के पश्चात एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (प्रतीक) हैं)। सूरह आले इमरानः 190, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूरह के अंत तक पाठ किया”। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ हैं, इसे इब्ने ह़िब्बान ने रिवायत किया है)।

आकाशों के दृश्य, तथा उन के अंदर जो सितारे, चंद्रमा एवं सूर्य हैं, एवं ज़मीन तथा उस के अंदर जो पर्वत, नहरें, समुद्र, जानवर, वनस्पति, निर्जीव व सजीव चीज़ें हैं ... वो समस्त आकाश एवं धरा को बिना किसी पूर्व उदाहरण के उत्पन्न करने वाले (अल्लाह तआला के अस्तित्व) को प्रमाणित करते हैं:

﴿تَبَارَكَ ٱلَّذِى جَعَلَ فِى ٱلسَّمَآءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَٰجًا وَقَمَرًا مُّنِيرًا ٦١ وَهُوَ ٱلَّذِى جَعَلَ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ٦٢﴾

अनुवादः (शुभ है वह जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये तथा उस में सूर्य एवं प्रकाशित चाँद को बनाया। वही है जिस ने रात्रि तथा दिन को एक दूसरे के पीछे आते-जाते बनाया उस के लिये जो शिक्षा ग्रहण करना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे)। सूरह फ़ुर्क़ानः 61-62।

अल-शुब्बान अल-इस्लामी कॉन्फ्रेंस जो रियाज़ में सन 1979 हिजरी में हुई थी, उसमें जब अल्लाह तआला का यह फ़रमान पढ़ा गयाः

﴿أَوَلَمْ يَرَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَنَّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَٰهُمَا﴾

अनुवादः (और क्या उन्होंने विचार नहीं किया जो काफ़िर हो गये कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुये थे, तो हम ने दोनों को अलग-अलग किया)। सूरह अम्बियाः 30।

तो यह सुन कर अमेरीकी प्रोफेसर (पाल्मर) खड़ा हो गया और कहने लगाः "यह बात सत्य है कि ब्रह्माण्ड अपने आरंभ में ऐसे बादल से भरी हुई थी जिसमें धूआँ एवं गैस बड़ी भारी मात्रा में भरे हुये तथा परस्पर एक दूसरे से चिपके हुये थे, तत्पश्चात यह बादल शनैः शनैः मिलियन दर मिलियन सितारों में परिवर्ति होता चला गया जिस ने आकाश को भर दिया, किसी भी परिस्थिति में यह संभव नहीं कि इस कार्य को उस व्यक्ति से जोड़ा जाये जो आज से 1400 वर्ष पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो गये! क्योंकि उन के पास न तो टेलीस्कोप था और न ही अंतरिक्ष यान जो उन की वास्तविकता से पर्दा उठाने में उन की सहायता करतीं, इसलिये अनिवार्य रूप से ज़रूरी है कि जिस ज़ात ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस से सूचित किया वह अल्लाह है", चुनाँचे प्रोफेसर (पाल्मर) ने कॉन्फ्रेंस के अंत में अपने इस्लाम स्वीकार करने का ऐलान कर दिया।

आठवीं मेडिकल कॉन्फ्रेंस जो रियाज़ के अंदर सन 1404 ईस्वी में हुई थी, उस में प्रोफेसर (टाजाट टाजासोन) जो माइ यूनिवर्सिटी थाईलैंड के एनाटॉमी और भ्रूणविज्ञान विभाग के प्रमुख थे, खड़े हुये तथा कहाः "चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पढ़ना लिखना नहीं जानते थे, अतः यह मानना अनिवार्य है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक रसूल थे जो इस वास्तविकता के साथ भेजे गये थे, उन को उस वास्तविकता से वह्य (प्रकाशना) के द्वारा अवगत कराया गया जो उन के पास पैदा करने वाले (ख़ालिक़, रचयिता) तथा हर चीज़ का ज्ञान रखने वाले (सर्वज्ञ, अल्लाह तआला) की ओर से अवतरित होती थी, यह ख़ालिक़ (रचयिता) कोई और नहीं, केवल अल्लाह तआला है।

अतः मेरा मानना है कि अब समय आ गया है कि मैं (यह गवाही दूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं)"।

❒ दवा, औषधि व उपचार ...

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के महान नाम (अल-बदीअ, अर्थातः बिना किसी पूर्व उदाहरण के वस्तुओं को ईजाद व अविष्कार करने वाला) की शान बड़ी निराली, इसकी महिमा अपरम्पार है! जो इस नाम के द्वारा अल्लाह तआला से दुआ करता है, उसकी दुआ स्वीकार की जाती है।

तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है कि अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं किः नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में आये, एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा था, तथा दुआ माँगते हुये अपनी दुआ में कह रहा थाः

"اللَّهُمَّ لَا إله إلاَّ أَنْتَ الْمَنَّانُ، بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ، يَا ذَا الْجَلالِ وَالإكْرَام"

अर्थातः हे अल्लाह! सिवाय तेरे कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू बड़ा एहसान व उपकार करने वाला है, तू ही आसमानों एवं ज़मीन को अनोखे ढ़ंग से उत्पन्न करने वाला है, हे सम्मान एवं प्रताप तथा उपकार वाले!। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह दुआ सुनी तो फ़रमायाः "इसने अल्लाह के उस महान नाम (इस्म -ए- आज़म) के द्वारा दुआ किया है कि जिसके द्वारा यदि दुआ की जाए तो वह स्वीकार करता है एवं जब इसके द्वारा माँगा जाए तो वह देता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

हे अल्लाह! हमें क्षमा कर दे, तथा हम पर दया कर, हे सभी दयालुओं से बढ़ कर (अति) दयालु!

हे आकाशों एवं धरती को पैदा करने वाले! हमें अपनी मग़फ़िरत एवं रह़मत व दया से अनुग्रहित कर, हमारे पापों को क्षमा कर दे, निःसंदेह तू हर चीज़ पर क़ादिर व सक्षम है।

(98)

(अल-मुअती जल्ल जलालुहु)

अता (प्रदान करना): उसकी महान नवाज़िशों एवं अनुग्रहों में से है ...

फ़ज़्ल व करम (उदारता व दानवीरता): उसका एक विशेषण है ...

सख़ावत, दया व दानवीरता उसके महान प्रतीकों में से एक है, उसस बड़ा दानी, दाता, उपकारी एवं अनुग्रह करने वाला कौन हो सकता है?!

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के अस्मा -ए- हुस्ना में से एक सुंदर व प्यारा नाम (अल-मुअती, अर्थातः दाता, प्रदान करने वाला) भी है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस है, आप ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला जिसके साथ ख़ैर व भलाई करना चाहता है उसे धर्म की समझ-बूझ प्रदान करता है, और मैं तो केवल बाँटने वाला हूँ, अता करने तथा प्रदान करने वाला तो अल्लाह ही है"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह हैः जो वास्तविक अर्थों में समस्त सृष्टि को अनुग्रहित करता है, जिसे वह अनुग्रहित करे उसे कोई वंचित नहीं रख सकता, तथा जिसे वह वंचित कर दे उसे कोई अनुग्रहित करने वाला नहीं।

उस पाक, पवित्र व महान (रब) की नवाज़िश प्रत्येक उस मख़लूक़ (रचना) के लिये आम व व्यापक है जो मौजूद है, उसकी नवाज़िश असीमित व अनंत है, वह सख़ावत, दयालुता, उदारता व दानशीलता के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान है।

हमारा परवरदिगार जब किसी को नवाज़ता है तो उसकी नवाज़िश एहसान, उपकार व मसलहत पर आधारित होती है, तथा जब वह किसी चीज़ से वंचित करता है तो यह भी उसकी हिकमत, तत्वदर्शिता एवं मसलहत पर आधारित होती है।

هوَ مانعٌ مُعطٍ فهذا فَضلُه والمنعُ عينُ العدلِ للمَنَّانِ

يُعطِي بِرَحمتِهِ ويَمْنَعُ مَن يَشـ ـاءُ بِحِكْمَةٍ واللهُ ذو سُلطانِ

अनुवादः वही वंचित रखने वाला तथा वही नवाज़ने वाला है, यह उसका एहसान व उपकार है, वंचित व महरूम रखना भी मन्नान (अति उपकारी) का बिल्कुल न्याय व इंसाफ

पर आधारित होता है। वह अपनी रहमत व दया से अनुग्रहित करता है तथा जिसे चाहता है अपनी हिकमत से वंचित रखता है, अल्लाह तआला बादशाहत व शासन वाला है।

❒ अल्लाह तआला की नवाज़िश व अनुग्रह दो प्रकार का होता हैः

1- आम व व्यापक नवाज़िश जो इस संसार में होती हैः

यह नवाज़िश व अनुग्रह समस्त प्राणियों के लिये आम व व्यापक है, चाहे वह मोमिन हो अथवा काफ़िर, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने संसार में उन के मामलों को दुरुस्त फ़रमायाः अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿كُلًّا نُّمِدُّ هَٰٓؤُلَآءِ وَهَٰٓؤُلَآءِ مِنۡ عَطَآءِ رَبِّكَۚ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحۡظُورًا ٢٠﴾

अनुवादः (हम प्रत्येक की सहायता करते हैं, इन की भी और उन की भी, और आप के पालनहार का प्रदान (किसी से) निषेधित (रोका हुआ) नहीं है)। सूरह बनी इस्राईलः 20।

2- विशिष्ट नवाज़िश व अनुग्रह जो लोक परलोक दोनों स्थान के लिये हैः

यह नवाज़िश व अनुग्रह अल्लाह तआला के अम्बिया, रसूल एवं उसके नेक बंदों के लिये है, चुनाँचे अल्लाह तआला उन्हें संसार के अंदर हलाल रोज़ी, नेक व सालेह संतान, ईमान व तक़वा, यक़ीन, विश्वास एवं स्पष्ट हिदायत व मार्गदर्शन से नवाज़ता है, जो कि संसार की सबसे महान नवाज़िश व अनुग्रह है, हाकिम ने "अल-मुसतदरक" में रिवायत किया है एवं ज़हबी ने इसे सहीह कहा है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान हैः "अल्लाह तआला संसार उस व्यक्ति को भी देता है जिसे वह प्रिय रखता है तथा उस व्यक्ति को भी देता है जिसे वह प्रिय नहीं रखता है, किंतु दीन -ए- इस्लाम केवल उसे ही देता है जिसे वह प्रिय रखता है"।

आख़िरत व परलोक की नवाज़िश से अभिप्रायः अल्लाह तआला की उच्च व बुलंद जन्नत में मिलने वाली महान नियामत व नवाज़िश है, उस से बढ़ कर कोई नवाज़िश व नियामत नहीं, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿جَزَآءٗ مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابٗا ٣٦﴾

अनुवादः (यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है)। सूरह नबाः 36।

❒ उपहार, नवाज़िश एवं अनुग्रह की कुंजियाँ:

हमारा परवरदिगार करीम, उदार व दाता है, तथा दानी एवं उदारमने को पंसद करता है, वह नवाज़ने वाला है तथा नवाज़िश करने वालों को प्रिय रखता है, यही कारण है कि नवाज़िश करने वालों को लोगों की सरदारी मिलती रहती है, सुनन अबू दाऊद में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "हाथ तीन प्रकार के हैं: एक अल्लाह का हाथ है जो सबसे ऊपर है, दूसरा हाथ देने वाले का है जो उसके बाद है तथा माँगने वाले प्रार्थी का हाथ सबसे नीचे है, अतः जो अधिक हो वह दे दो एवं अपने नफ़्स (आप) के सामने आजिज़, विवश एवं अपमानित न बनो"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है)।

करम व उपकार करने वालों को अल्लाह की ओर से बड़ा अज्र व पुण्य मिलता हैः

﴿وَأَنفِقُوا۟ مِمَّا جَعَلَكُم مُّسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَأَنفَقُوا۟ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝٧﴾

अनुवादः (और व्यय करो उस में से जिस में उस ने अधिकार दिया है तुम को, तो जो लोग ईमान लायेंगे तुम में से तथा दान करेंगे तो उन्हीं के लिये बड़ा प्रतिफ़ल है)। सूरह ह़दीदः 7।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह वादा किया है कि उन्हें इतना नवाज़ेगा व अनुग्रहित करेगा कि वह राज़ी व प्रसन्न हो जायेंगेः

﴿وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰٓ ۝٥﴾

अनुवादः (और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा कि तू प्रसन्न हो जायेगा)। सूरह ज़ुहाः 5।

अल्लाह तआला अपने रसूल को आख़िरत (परलोक) में जो नवाज़िशें व अनुग्रह प्रदान करेगा, उन में कौस़र नामक नहर भी हैः

﴿إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ ۝١﴾

अनुवादः (-हे नबी!- हम ने आप को क़ौस़र प्रदान किया है)। सूरह कौस़रः 1।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आप ने ह़ौज़ -ए- कौस़र के विषय में फ़रमायाः "वह एक नहर है जिसका मेरे रब अज़्ज़ व जल्ल ने मुझ से वादा किया है, उस पर बहुतेरी भलाइयां हैं, और वह एक ह़ौज़ (नहर) है, जिस पर क़यामत के दिन मेरी उम्मत पानी पीने के लिये आयेगी, उसके बरतन (प्याले) सितारों के समान (असंख्य) होंगे"। (मुस्लिम)।

जब अल्लाह तआला आप को देखेगा और पायेगा कि आप ने उसे अपना मोतमद व विश्वासपात्र तथा आश्रय व शरणस्थली बना लिया है, समस्त प्राणियों से अलग हो कर आप केवल उस से अपनी आवश्यकतायें माँगते हैं, तो वह माँग से बढ़ कर आप को नवाज़ेगा तथा आपकी चाहत व इच्छा से अधिक आप को आदर, सत्कार व सम्मान से अनुग्रहित करेगा।

سُبحَانَ مَن يُعطِي المُنَى بِخواطِرٍ   فِي النَّفسِ لم يَنطِق بِهِنَّ لِسَانُ
سبحانَ مَن لا شَيْءَ يَحجُب علمَه   فالسِرُّ أجمعُ عندَه إعلانُ
سُبحَانَ مَن هُوَ لا يَزالُ وَرِزقُه   للعالَمِينَ بِهِ عَلَيه ضَمانُ

अनुवादः पवित्र है वह ज़ात जो दिल एवं मन-मस्तिष्क में आने वाली आकांक्षाओं को ज़ुबान पर आने के पूर्व ही पूर्ण कर देता है। पाक व पवित्र है वह ज़ात जिसके ज्ञान व सूचना से कोई भी चीज़ छिप्त नहीं, सभी भेद व राज़ उसके लिये प्रकट व स्पष्ट हैं। पाक है वह ज़ात जिसने आरंभ से ही समस्त लोक वासियों के लिए अपनी जीविका की ज़मानत ले रखी है।

हे अल्लाह! हम पर अपनी नवाज़िशें व अनुग्रह कर, हमें महरूम व वंचित न रख, हम पर अपनी सख़ावत, उदारता, दया व उपकार की बरखा बरसा तथा हमें निराश न लौटा, हे सारे संसार के पालनहार!

(99)

(अल-मुह़सिन जल्ल जलालुहु)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फ़रमायाः "जब तुम न्याय व फ़ैसला करो तो न्याय व इंसाफ से काम लो, तथा जब तुम ज़ब्ह़ (वध) करो तो अच्छे ढ़ंग से ज़ब्ह़ करो, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह एह़सान व उपकार करने वाला है एवं एह़सान व उपकार करने वालों को प्रिय रखता है"। (यह ह़दीस़ ह़सन है, इसे त़बरानी ने "अल-मोअजम अल-औसत़" में रिवायत किया है)।

एक दूसरी रिवायत में आया है, जिसे शद्दाद बिन औस ने रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल एह़सान व उपकार करने वाला है तथा एह़सान व उपकार करने वालों को पसंद फ़रमाता है"। (यह ह़दीस़ स़ह़ीह़ है, "अल-जामेअ अल-स़ग़ीर")।

हमारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह अपनी ज़ात, स़िफ़ात व अफ़आल (व्यक्तित्व, विशेषता एवं कर्म) में कमाल व सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान हैः

﴿وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا﴾

अनुवादः (और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो)। सूरह आराफ़ः 180।

अल्लाह तआला से बढ़ कर कोई भी सुंदर व सम्पूर्ण नहीं है!

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार वह हैः

﴿ٱلَّذِىٓ أَحْسَنَ كُلَّ شَىْءٍ خَلَقَهُۥ﴾

अनुवादः (जिस ने सुंदर बनाई प्रत्येक चीज़ जो उत्पन्न की)। सूरह सज्दाः 7।

एह़सान व उपकार अल्लाह तआला की लाज़मी व अनिवार्य विशेषता है, कोई जीव-जंतु व प्राणी ऐसा नहीं जो एक पल के लिये भी उसके एह़सान व उपकार से ख़ाली हो, उसका फ़ज़्ल व एह़सान सभी जीव-जंतुओं को अपने घेरा में लिये हुये है, चाहे वो पापी हों या सदकर्मी, अथवा मोमिन या काफ़िर, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल, एह़सान व उपकार, उदारता व दयालुया तथा इनाम, पुरस्कार व नियामत के बिना उन का अस्तित्व में रहना असंभव है।

बंदे के प्रति अल्लाह तआला के एहसान व उपकार का एक रूप यह भी है कि अल्लाह तआला ही उन्हें अनिस्तित्व से अस्तित्व में लायाः

﴿هَلۡ أَتَىٰ عَلَى ٱلۡإِنسَٰنِ حِينٞ مِّنَ ٱلدَّهۡرِ لَمۡ يَكُن شَيۡـٔٗا مَّذۡكُورًا ١﴾

अनुवादः (क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर युग का एक समय जब वह कोई विचर्चित वस्तु न था)। सूरह दह्रः 1।

﴿وَبَدَأَ خَلۡقَ ٱلۡإِنسَٰنِ مِن طِينٖ﴾

अनुवादः (मानव की बनावट मिट्टी से आरंभ की)। सूरह सज्दाः 7।

तत्पश्चात उनका रंग-रूप बनाया तथा अति सुंदर बनायाः

﴿وَصَوَّرَكُمۡ فَأَحۡسَنَ صُوَرَكُمۡ﴾

अनुवादः (और तुम्हारा रूप बनाया तो सुंदर रूप बनाया)। सूरह मोमिनः 64।

फिर उसे बुद्धि-विवेक से नवाज़ा ताकि ह़क़ व बात़िल (सत्य-असत्य) के मध्य अंतर कर सकेः

﴿وَهَدَيۡنَٰهُ ٱلنَّجۡدَيۡنِ ١٠﴾

अनुवादः (हम ने दिखा दिये उस को दोनों मार्ग)। सूरह बलदः 10।

इसके अतिरिक्त आकाश व धरा एवं उन के मध्य की समस्त चीज़ों को उनके अधीन एवं वशीभूत कर दियाः

﴿أَلَمۡ تَرَوۡاْ أَنَّ ٱللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَأَسۡبَغَ عَلَيۡكُمۡ نِعَمَهُۥ ظَٰهِرَةٗ وَبَاطِنَةٗۗ﴾

अनुवादः (क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया है तुम्हारे लिये जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, तथा पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा?)। सूरह लुक़्मानः 20।

उस पर इतनी नियामतों व अनुग्रहों की बरखा बरसाई कि उन्हें गिना नहीं जा सकताः

﴿وَإِن تَعُدُّواْ نِعۡمَتَ ٱللَّهِ لَا تُحۡصُوهَآۗ إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لَظَلُومٞ كَفَّارٞ﴾

अनुवादः (और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते, वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है)। सूरह इब्राहीमः 34।

❒ मुकम्मल व सम्पूर्ण एहसान, उपकार व भलाईः

बंदे पर (अल्लाह का) सबसे बड़ा एहसान व उपकार यह है किः उसे दीन -ए- इस्लाम की हिदायत व मार्गदर्शन दिया, इस्लाम स्वीकार करने तथा आजीवन उस पर सुदृढ़ व अडिग रहने के लिये उसके हृदय को उदार कर दियाः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَواْ وَّٱلَّذِينَ هُم مُّحۡسِنُونَ ١٢٨﴾

अनुवादः (वास्तव में अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो सदाचारी हैं, और जो उपकार करने वाले हैं)। सूरह नह़्लः 128।

अल्लाह तआला अपने औलिया (मित्रों) को पाकीज़ा, पवित्र एवं शांतिपूर्ण जीवन से अनुग्रहित करता हैः

﴿مَنۡ عَمِلَ صَٰلِحٗا مِّن ذَكَرٍ أَوۡ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤۡمِنٞ فَلَنُحۡيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةٗ طَيِّبَةٗۖ وَلَنَجۡزِيَنَّهُمۡ أَجۡرَهُم بِأَحۡسَنِ مَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ٩٧﴾

अनुवादः (जो भी नेक अमल (सदाचार) करेगा, चाहे वह नर हो अथवा नारी, और ईमान वाला हो तो हम उसे स्वच्छ जीवन व्यतीत करायेंगे, और उन्हें उनका पारिश्रमिक उनके उत्तम कर्मों के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे)। सूरह नह़्लः 97।

औलिया के दुःख दर्द दूर करने का अर्थ यह है किः अल्लाह तआला उन्हें तक्लीफ़, रंज एवं क्षोभ से मुक्ति प्रदान करता है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के संबंध में फ़रमाता हैः

﴿ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٞ لِّمَا يَشَآءُۚ﴾

अनुवादः (वास्तव में मेरा रब जिसके लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है)। सूरह यूसुफ़ः 100।

अल्लाह तआला के एहसान व उपकार का कमाल व अति उत्तम रूप क़यामत (प्रलय) के दिन दिखेगा, और यह सर्वश्रेष्ठ एहसान व उपकार होगा एवं उसके साथ अतिरिक्त इनाम व पुरस्कार भी, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿لِّلَّذِينَ أَحۡسَنُواْ ٱلۡحُسۡنَىٰ وَزِيَادَةٞۖ﴾

अनुवादः (जिन लोगों ने भलाई की, उन के लिये भलाई ही होगी, और उस से भी अधिक)। सूरह यूनुसः 26।

और उससे भी अधिक से अभिप्रायः रब तआला के रौशन व प्रकाशमान मुख का दीदार है, जिससे अधिक सुंदर व मनमोहक न कोई है तथा न उस से बढ़ कर कोई पूर्ण, मुकम्मल व सर्वोच्च है।

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने उन के लिये दोनों स़वाबों व पुण्यों को एकत्रित कर दिया है, लौकिक एवं पारलौकिक, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿فَـَٔاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ ثَوَابَ ٱلدُّنۡيَا وَحُسۡنَ ثَوَابِ ٱلۡأٓخِرَةِۗ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ ١٤٨﴾

अनुवादः (तो अल्लाह ने उन को सांसारिक प्रतिफल तथा आख़िरत (परलोक) का अच्छा प्रतिफल प्रदान कर दिया, तथा अल्लाह सुकर्मियों से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरानः 148।

हमारे महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का एहसान व उपकार बड़ा है, उसने अपनी शरीअत को अति उत्तम बनाया, उसे प्रशंसनीय परिणाम एवं बड़े महान उद्देश्यों पर आधारित बनाया, जिन के अंदर समस्त प्राणियों के लिये ख़ैर, भलाई व अच्छाई निहित हैः

﴿وَمَنۡ أَحۡسَنُ مِنَ ٱللَّهِ حُكۡمٗا لِّقَوۡمٖ يُوقِنُونَ﴾

अनुवादः (और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है उन के लिये जो विश्वास रखते हैं)। सूरह माइदाः 50।

❒ एहसान व उपकार के दो प्रकार हैं:

1- महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की इबादत व उपासना में एहसान से काम लेनाः

यह दीन -ए- इस्लाम का सबसे बुलंद एवं सर्वोच्च स्थान है, जैसाकि ह़दीस़ -ए- जिब्रील में आया है, ह़दीस़ में एह़सान की व्याख्या यह की गई है कि: "तुम अल्लाह तआला की इबादत व उपासना ऐसे करो मानो तुम उसे देख रहे हो, और यदि (मन में) यह भाव उत्पन्न न हो सके तो (कम से कम यह कल्पना करो कि) वह तो तुम्हें अवश्य देख रहा है"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

2- महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के बंदों के साथ एह़सान व उपकार करना:

वह यों कि हर प्रकार की ख़ैर, भलाई व अच्छाई उन्हें पहुँचाई जायें, तथा हर प्रकार की पीड़ा, तक्लीफ़ व दुःख को उन से दूर रखा जाये, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجۡرَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾

अनुवाद: (वास्तव में अल्लाह सत्कर्मियों का फल व्यर्थ नहीं करता)। सूरह तौबा: 120।

हमारा महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार अपने महान व सुंदर नामों को प्रिय रखता है, तथा बंदों के इस कर्म को भी पसंद करता है कि वो उन महान व सुंदर नामों के अर्थों की माँगों के अनुसार उसका सामीप्य प्राप्त करें, चुनाँचे वह मेहरबान व दयालु तथा मेहरबानी व दया करने वालों से प्रेम करता है, वह दाता व सख़ी है तथा दान व सख़ावत करने वालों को पसंद फ़रमाता है, वह एह़सान व उपकार करने वाला है तथा एह़सान व उपकार करने वालों को प्रिय रखता है, महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का फ़रमान है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾

अनुवाद: (निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है)। सूरह बक़रह: 195।

हमारे एह़सान, उपकार व भलाई के सर्वोधिक योग्य हमारे माता-पिता हैं, जैसा अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान है:

﴿وَوَصَّيۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ بِوَٰلِدَيۡهِ إِحۡسَٰنًاۖ﴾

अनुवाद: (और हम ने निर्देश दिया है मनुष्य को अपना माता-पिता के साथ उपकार करने का)। सूरह अह़क़ाफ़: 15।

एक स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿وَأَحۡسِن كَمَآ أَحۡسَنَ ٱللَّهُ إِلَيۡكَۖ﴾

अनुवादः (और उपकार कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है)। सूरह क़सस़ः 77।

إليكَ إله العَرشِ أَشْكُو تَضَرُّعًا   وَأَدعُوكَ فِي الضَّرَّاءِ رَبي لِتَسمَعَا

إلهي فحَقِّق ذا الرَّجَاءِ وكُن بِنَا   رَؤفًا رَحِيمًا مُستجِيبًا لنَا الدُّعا

فَيَا مُحْسِنًا قَد كُنتَ تُحْسِنُ دائِمًا   وَيَا وَاسِعًا قَد كان عَفوُكَ أَوسَعَا

نَعُوذُ بِكَ اللَّهُمَّ مِن سُوءِ صُنعِنَا   فإِنَّ لنَا فِي العَفوِ مِنكَ لَمَطمَعا

أَغِثنَا أَغِثنَا وَارفَعِ الشِّدة الَّتِي   أَصَابَت وصَابَت واكْشِفِ الضُرَّ وارْفَعَا

وجُدْ وتَفَضَّل بالذِي أَنتَ أهلُه   مِن العَفوِ و الغُفرانِ يَا خَيرَ مَن دَعَا

अनुवादः हे अर्श (सिंहासन) के पालनहार! हम गिड़गिड़ा कर तुझ से अपनी शिकायत पेश करते हैं, मेरे परवरदिगार! तंगी, कष्ट व परेशानी में हम तुझ से ही दुआ करते हैं कि तू सुन ले। हे मेरे उपास्य! इस आशा को पूर्ण कर दे, हमारे ऊपर रह़म व दया करते हुये हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर ले। हे हमारे मुह़सिन व उपकारी! तू सदा अपना एह़सान व उपकार करता रहा, हे कुशादगी व उदारता वाले (पालनहार!) तेरा दरगुज़र व क्षमा करना बेहद उदार है। हे अल्लाह! हम अपने कुकर्म से तेरी शरण चाहते हैं, हमें तेरी क्षमा व अनदेखी की इच्छा व अभिलाषा है। हमारी सहायत कर तथा हमें जो कठिनाई व कष्ट का सामना करना पड़ा है उसे दूर कर के हमारे दुःख दर्द को समाप्त कर दे। हमारे ऊपर सख़ावत, उदारता व दानवीरता की बरखा बरसा, हे सर्वोत्तम ढ़ंग से प्रार्थनाओं को स्वीकार करने वाले (पालनहार!) हमारे ऊपर अपने उस माफ़ी, क्षमा व मग़फ़िरत की नवाज़िश फ़रमा जिसके तू योग्य व अधिकारी है।

हे अल्लाह! हमें एह़सान व उपकार करने वालों में गिन! हमारे ऊपर एह़सान व उपकार की बरखा बरसा, हमारे, हमारे माता-पिता एवं समस्त मुसलमानों के सदकर्मों व नेक अमल को स्वीकार कर ले।

अल्लाह तआला के सुंदर व प्यारे नामों से संबंधित कुछ अति महत्वपूर्ण बिंदु

1- मोमिन को चाहिये कि अल्लाह तआला के अस्मा व सिफ़ात (नाम व विशेषण) एवं उसके अफ़आल (कर्म) के द्वारा अल्लाह तआला की मारफ़त व पहचान पाने का हर संभव प्रयास करे, किंतु उसकी पहचान में तअ़तील (अस्मा व सिफ़ात को निरर्थक करार देना, निरस्तिकरण), तमसील (अल्लाह तआला की सिफ़ात को मानव की सिफ़ात से उपमा देना, सामान्यीकरण), तहरीफ़ (अस्मा व सिफ़ात को उनके मूल एवं वास्तविक अर्थों से फेर कर उनकी मनमानी व्याख्या करना, हेर-फेर) तथा तकयीफ़ (अल्लाह तआला की सिफ़ात की कैफ़ियत व विवरण बयान करना, वर्णन) की दख़लंदाज़ी न हो।

अल्लाह तआला की मअरफ़त व पहचान तथा उसके विषय में ज्ञान अर्जित करना, क़ुरआन व हदीस, सहाबा -ए- किराम एवं इख़लास व निष्ठा के साथ उनका अनुसरण करने वालों से जो आसार (कथन व कर्म) वर्णित हैं, उन पर आधारित हो।

2- महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के महान नाम तौक़ीफ़ी (अर्थातः शरीअत के नुसूस पर आधारित) हैं (जिन में कमी-बेशी नहीं की जा सकती है), बुद्धि-विवेक की इसमें कोई भूमिका नहीं, इसीलिये उन के विषय में क़ुरआन व हदीस में अवतरित नुसूसों (श्लोकों) पर रुक जाना अपरिहार्य है, उन में कमी अथवा वृद्धि की कोई गुंजायश नहीं है।

3- अस्मा -ए- हुस्ना को शुमार करना एवं उन्हें एक निश्चित संख्या में सीमित करना अनुचित है, क्योंकि महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के बहुतेरे ऐसे अस्मा व सिफ़ात हैं जिन का ज्ञान अल्लाह तआला ने अपने पास ग़ैब (अदृश्य) में गुप्त रखा है, न तो निकटवर्ती फ़रिश्तों को उन का ज्ञान है और न ही किसी अवतरित नबी को, जैसाकि हदीस में आया हैः

أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ، أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ، أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ

(अर्थातः मैं तेरे उन समस्त महान व सुंदर नामों के वसीले से तुझ से प्रार्थनारत हूँ जिन से तू ने स्वयं का नामकरण किया है, अथवा अपनी पुस्तक में नाज़िल फ़रमाया है, या अपनी किसी मख़लूक़ (सृष्टि) को उन की शिक्षा दी है, अथवा अपने पास इल्म -ए- ग़ैब (परोक्ष) में उन्हें गुप्त रखा है ...)। (यह हदीस सहीह है, इसे तबरानी ने "अल-मोअजम अल-कबीर" में रिवायत किया है)।

रही बात उस ह़दीस़ की जिस में है कि: "अल्लाह तआला के निन्यानवे नाम हैं, अर्थातः सौ से एक कम, जिस व्यक्ति ने उन को शुमार किया तो वह जन्नत में प्रवेश पायेगा"। (बुख़ारी व मुस्लिम)।

तो यह एक इज्माली अर्थात संक्षिप्त व गोल-मोल बात है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कहना कि: "जिसने इस को शुमार किया (गिना) तो वह जन्नत में दाख़िल होगा", तो यह एक स़िफ़त (विशेषण) है, न कि स्थाई सूचना, जिसका अर्थ यह है कि: अल्लाह तआला के बहुतेरे नाम ऐसे हैं जिन की यह विशेषता है कि: जो व्यक्ति उनको शुमार करेगा (गिनेगा) वह जन्नत में प्रवेश पायेगा।

यह इस बात के विरुद्ध नहीं है कि इन नामों के अतिरिक्त और भी अल्लाह तआला के नाम हों, बल्कि यह ऐसे ही है कि आप कहें: "अमूक व्यक्ति के पास सौ दास हैं जिन्हें उस ने युद्ध के लिये तैयार कर रखा है", यह इस बात के विरुद्ध नहीं है कि उस के पास इन के अलावा और भी दास हों जिन्हें उस ने युद्ध के लिये तैयार नहीं किया है। इस में उलेमा के बीच कोई मतभेद नहीं है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमानः "जिस व्यक्ति ने इन को शुमार किया तो वह जन्नत में प्रवेश पायेगा" का अर्थ यह है कि: जो व्यक्ति उन्हें याद करे, उन के अर्थों को समझे तथा उन के द्वारा महानतम व सर्वोच्च अल्लाह पाक की बड़ाई व महिमा का बखान करे, ये तीन श्रेणियाँ हैं, जिस व्यक्ति को इन में से कोई एक श्रेणी भी प्राप्त हो गई और उस की नीयत ठीक व दुरुस्त हो एवं वह उन नामों के तक़ाज़ों व माँगों के अनुसार कर्म करे, तो वह उन को शुमार करने तथा गिनने वाला माना जायेगा, जैसाकि क़ुर्तुबी, ख़त्ताबी एवं इब्नुल क़ैयिम रहिमहुमुल्लाह ने उल्लेख किया है।

4- अल्लाह तआला के समस्त नाम सुंदर व मनमोहक हैं, तथा उन के चार भेद हैं:

पहलाः अस्मा -ए- जमाल (सौंदर्य व मनमोहकता से परिपूर्ण नाम):

ये नाम बंदे के दिल में महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के प्रेम, उस से लगाव, उस से भेंट करने की इच्छा एवं चाहत उत्पन्न करते हैं, उस के अंदर शांति व राहत का भाव उत्पन्न करते हैं, मख़लूक़ (प्राणी) के लिये आशा व उम्मीद के द्वार खोल देते हैं, चुनाँचे वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की रह़मत व दया से निराश नहीं होता, उदाहरणस्वरूप ये नामः (अल-

रहमान, अल-रहीम, अल-करीम, अल-अफ़ूव्व, अल-हलीम, अल-ग़फ़ूर, अल-तव्वाब) इत्यादि।

दूसराः अस्मा -ए- जलाल (प्रताप एवं तेज से परिपूर्ण नाम):

ये नाम महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की ख़शीअत, डर, भय, धाक, त्रास एवं हैबत उत्पन्न करते हैं, तथा अल्लाह तआला के आदर, सम्मान एवं सत्कार का भाव उत्पन्न करते हैं।

ये वो नाम हैं जिन के अंदर प्रभुत्व, शक्ति, बल, सामर्थ्य, क्षमता, महानता एवं प्रबलता के अर्थ पाये जाते हैं, जैसे ये नामः (अल-अज़ीज़, अल-जब्बार, अल-क़ह्हार, अल-क़वी, अल-कबीर, अल-मुतकब्बिर) इत्यादि।

तीसराः अस्मा -ए- रुबूबियत (पालनहारिता व अभिभावकता को दर्शाने वाले नाम):

ये वो नाम हैं जिन सेः मोमिन बंदा के अंदर विनम्रता, श्रद्धा एवं विवशता का भाव उत्पन्न होता है, और यह अनुभूति जाग्रत होती है कि वह महानतम व सर्वोच्च अल्लाह की मख़लूक़ (रचना) तथा उसके अधीन एवं निगहबानी में है।

ये ऐसे नाम हैं जो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की रुबूबियत को प्रमाणित करते हैं, जैसेः (अल-रब्ब, अल-सय्यिद, अल-मलिक, अल-मालिक, अल-ख़ालिक़, अल-बारी, अल-रज़्ज़ाक़)।

चौथाः अस्मा -ए- उलूहियत (भक्ति व बंदगी को केवल अल्लाह तआला के लिये प्रमाणित करने वाले नाम):

य वो नाम हैं जो मोमिन बंदा के अंदर यह भाव उत्पन्न करते हैं कि वहः महानतम व सर्वोच्च अल्लाह का बंदा व भक्त है, और एक अकेला अल्लाह तआला ही सभी प्रकार की इबादतों व उपासनाओं के योग्य है।

ये वो नाम हैं जिन के अंदर उलूहियत के अर्थ पाये जाते हैं, जैसेः (अल-इलाह, अल-स़मद) इत्यादि।

यह विभाजन अर्थ के आधार पर है, अन्यथा अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला के समस्त नाम सुंदरता व मनमोहकता, महानता व प्रताप, कमाल, पूर्णता व उच्चता के सर्वोत्तम अर्थों को अपने अंदर समोये हुये हैं, अल्लाह तआला के समस्त नाम सर्वश्रेष्ठ ज़ात (व्यक्तित्व) एवं महानतम हस्ती (अस्तित्व) को प्रमाणित करते हैं।

5- अल्लाह तआला का प्रत्येक नाम महानतम व सर्वोच्च परवरदिगार की स़िफ़त -ए- कमाल (सम्पूर्ण व कामिल विशेषण) के साबित होने को प्रमाणित करता है, इसीलिये उन का नामकरण अस्मा -ए- हुस्ना (सुंदर व प्यारे नामों) के द्वारा किया गया है, इसी प्रकार से महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के सभी स़िफ़ात (गुण, विशेषण) कामिल व पूर्णता से विशेषित हैं, उस के सभी औस़ाफ़ (विशेषतायें) महानता व प्रताप की आभा हैं, उसके समस्त अफ़आल (कर्म) ह़िकमत (तत्वदर्शिता) व रह़मत, मसलहत एवं न्याय पर आधारित होते हैं।

6- महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के महान नामों में कोई ऐसा नाम नहीं जो बुराई, दुष्टता, कुटिलता, क्रूरता एवं निष्ठुरता को प्रमाणित करता हो।

क्योंकि अल्लाह तआला की ओर बुराई व दुष्टता की निसबत करना उचित नहीं है, इसलिय कि बुराई न तो उस की विशेषता व स़िफ़त में दाख़िल हो सकता है, न उस की ज़ात (व्यक्तित्व) से संबद्ध हो सकता है, एवं न ही उस के किसी कर्म में उस की दख़लंदाज़ी हो सकती है, अतः उस की ओर बुराई व दुष्टता की निसबत न तो फ़ेअल (कर्म) के रूप में की जा सकती है और न ही स़िफ़त (विशेषण) के रूप में।

7- महानतम व सर्वोच्च अल्लाह ने अपने बंदों व भक्तों को यह आदेश दिया है कि वो उन महान व सुंदर नामों के द्वारा उस से दुआ करें, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ﴾

अनुवादः (और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो)। सूरह आराफ़ः 180।

इस दुआ में दुआ -ए- इबादत (भक्ति से संबंधित प्रार्थना) एवं दुआ -ए- ह़ाजत (आवश्यकताओं से संबंधित प्रार्थना) दोनों सम्मिलित हैं।

यह महानतम आज्ञापालन एवं निकटता है।

8- अस्मा -ए- हुस्ना की विस्तारित व्याख्या से संबंधित कोई ह़दीस़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित नहीं है।

इस विषय में नियम व कायदा यह है किः "महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के क़ुरआन व ह़दीस़ से लिये गये नाम ही सर्वमान्य होंगे"।

9- मैंने पुस्तक के द्वितीय संस्करण में अल्लाह तआला के निन्यानवे अस्मा -ए-हुस्ना की व्याख्या एवं वर्णन में केवल उन्हीं नामों को आधार बनाया है जिनके संबंध में शैख़ मुहम्मद बिन सालेह उसैमीन, शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़, डॉक्टर सुलैमान अल-अशक़र सभी, अथवा कम से कम उन में से दो, उन नामों पर एकमत हैं, अल्लाह तआला उन सब पर अपनी रहमत व दया नाज़िल फ़रमाये।

अंतिम बात ...

महानतम व सर्वोच्च अल्लाह के लिये बेपनाह व असीमित ह़म्द, प्रशंसा व स्तुति है कि इस पुस्तक में उपरोक्त जानकारी व ज्ञान संग्रहित करना संभव हो सका, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल से प्रार्थनारत हूँ कि मेरे इस प्रयास को स्वीकार कर ले, तथा इसे अपने समस्त बंदों के लिये लाभप्रद बनाये। आमीन।

وصلى الله وسلم وبارك على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين.

والحمد لله رب العالمين.

विषय सूची